



## निर्णयसिन्धु

नितमं

देवप्रतिष्ठा, संक्रांति, मलमास, तिथि, पक्ष, प्रदोष, संध्या, ग्रहण, व्रत, उद्यापन, सूतक, और गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तादि सबकर्मों और ब्राह्मणदि चारोंवर्णों और गृहस्थादि चारोंआश्रमों के लक्षण कर्मादि तथा औरभी जिन वस्तुओंकी मनुष्यों को सदैव आवश्यकता होतीहै उन सबका निर्णय विस्तार पूर्वक वर्णन किया है

नितको

विद्वद्भ्यं शिरोमणि श्रीमद्रामलोककरजनि अत्यन्त परिश्रमसे नीति प्रणालीके अनुगमार्थ रचनाकिया था ॥

लखनऊ

गुणनवनकिशोर के अधिपताने मे रूपे

सितम्बर सन् १८८८ ई०

दूसरीबार १००

2/



इस मतबेमें जो संस्कृत की पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी हैं ॥

### लघुसिद्धान्तकौमुदी, सफे १८४ जुज ११ वर्क ४ क्रीमत ॥

व्याकरणवरदराजकृत वृत्तिसहित यह पुस्तक सिद्धान्त कौमुदीसे सुगमताकेलिये चुनकर बालों के प्रथमपाठ के लिये बनी हुई है इसके पोछे मध्य कौमुदी और फिर सिद्धान्तकौमुदी पढ़ाई जाती है ल-  
बानमें १० इंच और चौड़ान में ६½ है कागज सफेदचिकना मोटे अक्षर बहुत सुन्दर छपी हुई  
सन् १८८२ ई० और जानना चाहिये कि एक जुज १६ सफे का और वर्क दो सफे का होता है ॥

### सिद्धान्तचन्द्रिका, सफे २३६ जुज १४ वर्क ६ क्रीमत ॥

व्याकरण रामाश्रमाचार्यकृत व्याकृति, काव्य, तर्क, अलंकार, कृदन्त प्रकरण, शब्द साधनरीति आदि  
का वर्णन है- पैमाना १०+६½ छपी हुई सन् १८९५ ई० ॥

### समासचक्र, सफे १६ जुज १ क्रीमत ॥

प्रसिद्ध व्याकरणका एक भाग है पैमाना १०+६½ ॥

### रूपावली, सफे २४ जुज १ वर्क ४ क्रीमत ॥

संस्कृत व्याकरण का भाग है इसके पढ़नेसे समास और पदके रूपका ज्ञान होता है पैमाना ५+३½  
छपी हुई सन् १८८३ ई० ॥

### सन्ध्योपासन पंचमहायज्ञ, सफे ४२ जुज २ वर्क ५ क्रीमत ॥

श्रीमद्भयानन्दजी स्वर्गवासी संग्रहीत जिसमें स्थानपर इसकी क्रिया भी संयुक्त की गई है पैमाना १०+६½  
छपी हुई सन् १८८५ ई० छपाटेप ॥

### संग्रहशिरोमणि, सफे ५३६ जुज ३३ वर्क ४ क्रीमत १

नौराही ग्रामनिवासि पण्डित सरयूप्रसाद संग्रहीत जिसमें ज्योतिष और पुराणस्मृतिके अनेक ग्रन्थों से  
अयन, तिथि, बार, नक्षत्र, योग, ताराका शुभाशुभ ज्ञान और उनका फल, लग्नगोचर, विवाह, यात्रा  
गृहप्रवेश, मिश्रतिथि, निर्णयादिप्रकरण व ज्ञातिका परिहार आदि अनेक विषय हैं इसमें वर सव रोजम-  
रहकी बातें हैं जिनका काम पढ़ने पड़ता है जिनके पास यह छोटी पुस्तक है उनको हर समय बड़ी पुस्तक  
के देखनेकी आवश्यकता नहीं है पैमाना ६+४½ छपी हुई सन् १८९५ ॥

### लग्नचन्द्रिका सटीक ॥

उन्नाम प्रदेशान्तर्गत तारगांव निवासि पण्डित राजबिहारी सुकुलकृत भाषाटीका सहित ॥

### मार्कण्डेयपुराण मूल, सफे ३०४ जुज १६ क्रीमत १

जो बहुत पुस्तकोंसे शुद्ध की गई जिसमें ब्रह्माजीकी उत्पत्ति और पृथ्वीके सातों द्वीप और पर्वत और  
समुद्र और नदियां और मन्वन्तर और वर्षों का वृत्तान्त और देवोंकी माहात्म्य विस्तार पूर्वक कहा  
है और दुर्गापाठ भी संयुक्त है पैमाना ११+०½ छपी सन् १८८० ई० ॥

# अथ निर्णयसिंधोरनुक्रमणिका ।

—\*—



| पृष्ठ | विषय                   | पृष्ठ | विषय                      | पृष्ठ | विषय                  | पृष्ठ | विषय                     |
|-------|------------------------|-------|---------------------------|-------|-----------------------|-------|--------------------------|
| १     | मंगलाचरणम्             | ६     | स्नानविशेषः               | १४    | युग्मवाक्यलक्षणद्वैधे | १८    | भद्रापुच्छनिर्णयः        |
| १     | षोढाकालभेदः            | ६     | कुत्रचित्सायं संध्या      |       | निर्णयः               | १६    | भद्रासर्पिणीवृश्चिकी     |
| १     | अब्दः पंचधा            |       | निषेधः                    | १५    | सामान्यतोद्देशमी      | १६    | दिनभद्रारात्रिभद्रा      |
| १     | चांद्रोद्दः षष्टिभेदः  | ६     | चांद्रादिमासभेदाः         | १५    | त्रयोदशी              | १६    | व्रतारम्भविशेषः          |
| २     | संवत्सरनामानि          | ६     | ब्राह्मणादीनां मास        | १५    | प्रतिपदा              | १६    | खण्डतिथिलक्षणम्          |
| २     | संवत्सरप्रवृत्तिः      |       | निर्णयः                   | १५    | खर्वदर्पादिलक्षणं     | १६    | व्रतारम्भधर्माः          |
| २     | अयनस्वरूपं             | ६     | मलमास क्षयमास             | १५    | एकभक्तम्              | १६    | व्रतस्थधर्माः            |
| २     | अयनयोर्विनियोगः        |       | निर्णयः                   | १६    | कालः पंचधा            | १६    | व्रतेब्राह्मणभोजनम्      |
| २     | तत्रदेवता प्रतिष्ठा नि | ७     | मलमासे कार्याकार्य        | १६    | अथनक्तं               | १६    | सहस्रभोजने विशेषः        |
|       | र्णयः                  |       | निर्णयः                   | १६    | प्रदोषलक्षणं          | २०    | द्वित्रियजमानकर्तृके     |
| २     | दक्षिणायनेपिप्रतिष्ठा  | ८     | क्षयमासे कार्याकार्य      | १६    | प्रदोषेनिषेधपदार्थाः  | २०    | शूद्रस्यविप्रद्वाराव्या- |
| २     | नक्षत्रमासभेदाः        |       | निर्णयः                   | १६    | संध्यालक्षणम्         |       | हृतिहोमः                 |
| ३     | संक्रांतिनिर्णयः       | ११    | गुरुशुक्रास्तादौवर्ज्यं   | १६    | यतिनक्तविधवानक्तं     | २०    | प्रतिमास्वरूपम्          |
| ४     | सर्वसंक्रांतिषुदानानि  | १२    | सिंहस्थेवर्ज्यविचारः      | १६    | विधुरनक्तंतल्लक्षणम्  | २०    | अनादेशद्रव्येआज्यं       |
| ४     | संक्रांतौउपवासनि       | १२    | क्षचित्सिंहस्थेभ्यनुज्ञा  | १७    | सौरनक्तं              | २०    | अनादेशमंत्रेसमस्त-       |
|       | र्णयः                  | १२    | गुरुशुक्रयोर्बालवृद्धत्वं | १७    | हरिनक्तं              |       | स्याहृतः                 |
| ४     | संक्रांतौकेषुचिदुप-    | १३    | अतिचारगतेजीवे             | १७    | नक्तेधर्माचरणम्       | २०    | अनादेशेदेवताप्रजा-       |
|       | वासनिर्णयः             | १३    | अस्तस्यदेशपर व्य-         | १७    | अयाचितनिर्णयः         |       | पतिः                     |
| ४     | संक्रांतौश्राद्धम्     |       | वस्था                     | १७    | नक्षत्रव्रतकालः       | २०    | ग्रहादिपूजायां होम       |
| ५     | विष्णुपदादिस्वरूप      | १३    | अस्तादेरपवादः             | १७    | व्रतपरिभाषा           |       | संख्या                   |
|       | षडशीत्याख्यम्          | १३    | मलमासव्रतम्               | १७    | तदधिकारिणः            | २०    | अनुक्त संख्यायां         |
| ५     | विषुवलक्षणम्           | १३    | पक्षनिर्णयः               | १७    | शूद्रवैश्य वर्णधर्माः |       | निर्णयः                  |
| ५     | कुत्रचित्पिंडरहितं     | १४    | तिथिनिर्णयः               | १८    | स्त्रीणामनुज्ञैव      | २०    | व्रतोद्यापनानुक्तौ       |
|       | श्राद्धम्              | १४    | तिथेर्वैधनिर्णयः          | १८    | स्त्रीणांस्नानविशेषः  | २०    | व्रतोद्यापनाशक्तौ        |
| ५     | कुत्रचिद्रात्रौज्ञानं  | १४    | सायंप्रातर्वेधलक्षणम्     | १८    | व्रतग्रहणप्रकारः      | २०    | बृथाविप्रवचनग्रहणं       |
| ५     | जन्मर्क्षसंक्रांतिश्चे | १४    | तिथिविशेषवेधविशेषः        | १८    | व्रतारम्भकालः         | २०    | दक्षिणानिर्णयः           |
|       | त्तर्हितत्र            | १४    | कर्मकालव्यापिनीति         | १८    | भद्रानिर्णयः          | २०    | रजतदक्षिणानिषेधः         |



| पृष्ठ | विषय                       | पृष्ठ | विषय                    | पृष्ठ | विषय                      | पृष्ठ | विषय                   |
|-------|----------------------------|-------|-------------------------|-------|---------------------------|-------|------------------------|
| २०    | परान्नभोजननिषेधः           | २४    | कुत्र चित्प्रति निधि    | ३३    | एकादशी व्रतोधि का         | ३६    | अष्टौष्टिकालः          |
| २०    | क्षारपदार्थनिषेधः          |       | निषेधः                  |       | रिणः                      | ३६    | इष्ट्याद्यारंभः पौर्ण- |
| २१    | क्षारस्वरूपनिर्णयः         | २४    | व्रतादयश्चिन्ताते       | ३४    | एकादशी व्रताकरणे          |       | मास्यामेव              |
| २१    | गोधूमप्रतिप्रसवः           | २४    | शिवरात्रौ प्रातः पारण   |       | प्रायश्चित्तम्            | ४०    | अमायां विशेषः          |
| २१    | व्रतेशाह्यधान्यानि         | २४    | भूतोष्टम्यादौ दिवा      | ३५    | काम्यव्रतविधिः            | ४१    | मन्वमासः दैनप्रथमा     |
| २१    | कूष्मांडादि निषेधः         |       | भोजननिषेधः              | ३५    | दशमीनियमः                 |       | रम्भदृष्टः             |
|       | प्रतिपदादिषु               | २४    | संक्रांत्यादौ रात्रिभो- | ३५    | व्रतघ्नानि तस्य प्राय     | ४१    | मतः तरेकर्तव्यम्       |
| २१    | हविष्यपदार्थाः             |       | जननिषेधः                |       | श्चित्तम्                 | ४१    | अथ विकृतिः             |
| २१    | गृहीतव्रतत्यागे प्राय      | २४    | चंद्रायणे एकादश्यां     | ३५    | एकादश्यां आहुप्राप्तौ     | ४२    | आग्रयणविशेषः           |
|       | श्चित्तं                   |       | भोजनं कार्यम्           | ३६    | अव्रतघ्नानि               | ४२    | पशुयोगकालाः            |
| २१    | उपवासप्रत्याम्नायाः        | २५    | प्रतिपदादितिथिनि-       | ३६    | सर्वव्रतेषु नियमः         | ४२    | आधानकालाः              |
| २१    | व्रतेनियमाः                |       | र्णयः                   | ३७    | उपवाससंखल्पः              | ४३    | आधाननक्षत्राणि         |
| २१    | स्त्रीव्रते विशेषः         | २५    | सर्वतिथिषु वर्ज्यानि    | ३७    | द्वादश्यां वर्ज्यपदार्थाः | ४३    | सामयागकालः             |
| २२    | विधवा विशेषः               | २५    | द्वितीयादिनिर्णयः       | ३७    | द्वादश्यां निवेदनमंत्रः   | ४३    | अमावास्या आहुका        |
| २२    | एकादश्यां ताम्बूल          | २५    | तृतीयादिनिर्णयः         | ३७    | रजस्वलाया एकादशी          | ४४    | पिण्डपितृयज्ञकालः      |
|       | निषेधः                     | २५    | चतुर्थीनिर्णयः          | ३७    | अष्टौमहाद्वादशयः          | ४४    | पिण्डपितृ यज्ञाकरणे    |
| २२    | अशुपातादिनिषेधः            | २६    | पंचमीनिर्णयः            | ३८    | अथ द्वादशीनिर्णयः         |       | प्रायश्चित्तम्         |
| २२    | सूतकादौ निर्णयः            | २६    | षष्ठीनिर्णयः            | ३८    | आह्निकापकर्षः             | ४७    | वैश्वदेवाकरणे प्राय०   |
| २२    | जाताशौचे निर्णयः           | २७    | सप्तमीनिर्णयः           | ३८    | प्रदोषादिसंकटे नि०        | ४७    | प्रतिपदाभोजने प्राय०   |
| २३    | मृताशौचे निर्णयः           | २७    | अष्टमीनिर्णयः           | ३८    | हरिवासरलक्षणं             | ४७    | निरग्निकस्य अमा-       |
| २३    | क्षतजाशौचे निर्णयः         | २७    | नवमीनिर्णयः             | ३८    | उपवासातिक्रमे             |       | निर्णयः                |
| २३    | गर्भिण्यादीनां व्रते प्रति | २७    | दशमीनिर्णयः             | ३८    | द्वादशीनिर्णयः            | ४७    | साग्निकस्यामा निर्ण०   |
|       | निर्णयः                    | २७    | एकादशीनिर्णयः           | ३८    | त्रयोदशीनिर्णयः           | ४७    | स्त्रीशूद्राणाममा नि०  |
| २३    | पूर्वसंकल्पितव्रते         | २७    | एकादशीनित्यकाम्य        | ३८    | चतुर्दशीनिर्णयः           | ४७    | आहुतांतरसन्निपाते      |
| २३    | रजस्वलासु                  |       | उपवासनिषेधे फला-        | ३८    | पूर्णिमा ऽमावास्या        | ४७    | सिनीवा नीलक्षणम्       |
| २३    | प्रतिनिधयः                 |       | हाराभ्यनुज्ञानिर्णयः    |       | निर्णयः                   | ४७    | कुहूलक्षणम्            |
| २३    | स्त्रीशूद्रयोर्व्रतादौ नि० | २८    | एकादश्यां अष्टादशमे०    | ३८    | अमायां सोमवारार्द         | ४७    | कुतुपकाललक्षणम्        |
| २४    | ब्राह्मणस्य हीनवर्ण        | ३१    | एकादशी व्रतोपयुक्त      | ३८    | योगसंयोग लक्षणं           | ४७    | तुलादानम्              |
|       | कर्मकरणनिषेधः              |       | धर्माः                  |       | यतीपातः                   | ४७    | अमा आहुतातिक्रमे प्र०  |



# निर्यायसिंधोरनुक्रमणिका

| पृष्ठ | विषय                  | पृष्ठ | विषय                          | पृष्ठ  | विषय                    | पृष्ठ | विषय                      |
|-------|-----------------------|-------|-------------------------------|--|-------------------------|-------|---------------------------|
| ४८    | ग्रहणनिर्यायः         | ५२    | सूतकेग्रहणे च                 |  | स्नाननिषेधः             |       | जयन्त्यः                  |
| ४८    | वेधनिर्यायः           | ५२    | कर्तव्यविशेषः                 | ५६   | अपवाणिस्नाननिषेधः       | ६४    | जन्माष्टम्यादौ विशेषः     |
| ४८    | चंद्रग्रहणे विशेषः    | ५२    | रजस्वलास्नानं                 | ५६   | सेतुबन्धादौ न निषेधः    | ६४    | तत्रैव शुक्लपंचमीक        |
| ४८    | चंद्रग्रस्तोदये       | ५२    | रात्रावपि आहुति               | ५६   | समुद्रस्नानविधिः        |       | त्पादिः                   |
| ४८    | चंद्रसूर्यग्रस्तास्ते | ५२    | चंद्रग्रहणदिवा चेत्           | ५६   | समुद्रार्घ्यमन्त्रः     | ६४    | चैत्रशुक्लाष्टम्यां भवा-  |
| ४६    | ग्रहणे संध्या होमादौ  | ५२    | ग्रहणदिने वार्षिक             | ५६   | समुद्रतर्पणम्           |       | न्युत्पत्तिः              |
| ४६    | बालवृद्धातुराणां      |       | आहुतिप्राप्ति चेत्            | <b>अथ द्वितीयपरि-<br/>च्छेदानुक्रम-<br/>णिका</b> |                         |       |                           |
| ४६    | श्रुतान्ननिषेधः       | ५३    | तत्र मंत्रदीक्षाकाल           |  |                         |       |                           |
| ४६    | तक्रघृत पाचितानां     | ५३    | जन्मराश्यादौ ग्रहणं           |  |                         | ६५    | अन्नभवानोयात्रा           |
|       | निर्यायः              | ५३    | ग्रहणे इष्टानिष्टफलं          |  |                         | ६७    | अन्नैव अशोककलिका          |
| ४६    | वेधे भोजनादिप्रायः    | ५४    | नागबिम्बदाने मन्त्रः          | ६१   | अथ ससंबत्सरप्रतिपदा     |       | प्राशनम्                  |
| ४६    | ग्रहणकाले भोजने       | ५४    | अचक्षांतिशक्ता                | ६१   | मीनसंक्रांतिनिर्यायः    | ६८    | चैत्रशुक्ल नवमीराम        |
|       | प्रायश्चित्तम्        | ५४    | ग्रहणे होमादि कर्त-           | ६१   | अथ तिथिनिर्यायः         | ६८    | चैत्रशुक्लैकादश्यादौ-     |
| ४६    | उपवासो ग्रहणे कैः     |       | व्यता                         | ६१   | अपितुसंबत्सरारम्भः      |       | लोत्सवः                   |
|       | कार्यः                | ५५    | होमाशक्तौ चतुर्गुणो           | ६२   | अस्यामेव न वरात्रा      | ६६    | चैत्रशुक्लादश्यादम        |
| ५०    | पुत्रवत् उपवासनि०     |       | जपः                           |  | रम्भः                   |       | नोत्सवः                   |
| ५०    | ग्रहणे चूडामणियो०     | ५५    | गर्भिण्याग्रहणावलो            | ६२   | अन्नप्रपादानम्          | ७०    | अथागमोक्तदीक्षावतां       |
| ५०    | स्नानदानादि काल       |       | कननिषेधः                      | ६२   | कुम्भदानम्              |       | दमनोत्सवविधिः             |
|       | निषेधः                | ५५    | मंगलकृत्येषु वेधवि-           | ६२   | चैत्रशुक्ल तृतीयायां    | ७०    | चैत्रशुक्ल त्रयोदश्यां    |
| ५०    | मुक्तिज्ञानाकरणे दोष  |       | चारः                          | ६२   | गौरीदोलोत्सवः           |       | मनंगव्रतम्                |
| ५०    | ग्रहणस्नाने तीर्था    | ५६    | मंत्रदीक्षा होमतर्पणं         | ६२   | अन्नैव सौभाग्य शयन      | ७०    | चैत्रशुक्ल चतुर्दशीपूर्वा |
|       | निषेधः                | ५६    | कुरुक्षेत्रे प्रतिग्रहे प्रा० |  | व्रतम्                  |       | ग्राह्याः                 |
| ५१    | उष्णोदकस्नानेतार      | ५६    | पूर्वसंकल्पित द्रव्योप        | ६२   | इयं मन्वादिः            | ७०    | चैत्रशुक्ल पूर्णिमा       |
|       | तमयं                  |       | ग्रहणे विशेषः                 | ६२   | प्रसंगात्सर्व मन्वादि   | ७०    | अन्नविशेषो निर्यायाभृते   |
| ५१    | तीर्थविशेषे दानवि     | ५६    | मेघाच्छादने अन्धा-            | ६२   | निर्यायः                | ७०    | अन्नसर्वदेवदमनपू-         |
|       | शेषः                  |       | दीनाम्                        | ६३   | अन्नैव आहुमुक्तमात्स्ये |       | जोक्ता                    |
| ५१    | ग्रहणे आहुविधिः       | ५६    | इति ग्रहणनिर्यायः             | ६३   | चैत्रशुक्ल तृतीयायां    | ७०    | इयं मन्वादिः              |
| ५२    | ग्रहणे आहु भोजने      | ५६    | अथ समुद्र स्नानम्             |  | मत्स्यजयन्ती            | ७१    | इति चैत्रः                |
|       | दोषः                  | ५६    | भृगु भौमवारि समुद्र           | ६४   | अन्नैव प्रसंगादृशावतार  | ७१    | अथ वैशाखः मेषसंक्रमः      |
|       |                       |       |                               |  |                         | ७२    | अथ वैशाखस्नं ना           |



| पृष्ठ | विषय                       | पृष्ठ | विषय                   | पृष्ठ | विषय                      | पृष्ठ | विषय                    |
|-------|----------------------------|-------|------------------------|-------|---------------------------|-------|-------------------------|
| ७३    | एवंसम्पूर्णस्नानाशक्तौ     | ८०    | अत्रविशेषः काशीखंडे    | ११०   | पूर्वयुता                 | ११०   | अत्रैवउद्येषा पूजाक्ता  |
| ७३    | वैशाखशुक्ल तृतीया          | ८०    | अस्यामेवसेतुबन्धुरा-   | ११२   | अथोपाकर्म                 | ११२   | भाद्र शुक्ल द्वादश्यां  |
|       | अक्षय्यतृतीया              |       | मेश्वरपूजा             | ११३   | अत्रैवहयग्रीवोत्पत्ति     |       | पारणम्                  |
| ७३    | इयंयुगादिरपि               | ८०    | उद्येषशुक्लैकादशीनि-   | ११३   | आवण्यांपौर्णमास्यः        | ११३   | इयमेव अवणद्वा-          |
| ७५    | अत्रश्राद्धमुक्तं मात्स्ये |       | र्जला                  | ११४   | अवणाकर्म                  |       | दशी                     |
| ७५    | अत्रदानविशेषस्तत्रैव       | ८१    | उद्येषपौर्णमास्यांसा-  | ११४   | इतिआवणः अथभाद्र           | ११४   | बामनावतारनिमित्तो       |
|       | भविष्ये                    |       | वित्रीव्रतम्           |       | पदः                       |       | पवासव्रतम्              |
| ७५    | अत्ररात्रिभोजनेप्रायः      | ८१    | इयमन्वादिदरपि          | ११५   | सिंहपराषोडशः              | ११५   | भाद्र शुक्लचतुर्दश्या   |
| ७६    | अत्रश्राद्धाकरणेप्रा०      | ८१    | इतिउद्येषः अथाषाढः     | ११५   | अत्रगो प्रसवेद्वतसार      |       | मनन्तव्रतम्             |
| ७६    | अत्रसमुद्रस्नानप्रशंसा     | ८२    | मिथुनसंक्रांतौपरा      | ११६   | नारदः                     | ११६   | अगस्त्यार्घः            |
| ७६    | इयमेवतृतीया परशु           | ८२    | आषाढशुक्ल दशमी         | ११७   | भाद्रपदकृष्णतृतीया        | ११७   | भाद्रपदपौर्णमास्यां     |
|       | रामजयन्ती                  |       | पौर्णमासीचमन्वादिः     |       | कञ्जलीसंज्ञा              |       | प्रपितामहात्परां स्त्री |
| ७६    | वैशाखशुक्ल सप्तम्या        | ८२    | अत्रैव विष्णुशयनो-     | ११७   | भाद्रपदकृष्णचतुर्थी       |       | नुद्विश्यश्राद्धम्      |
|       | गंगोत्पत्तिः               |       | त्सवः                  |       | बहुलसंज्ञा                | ११७   | इतिभाद्रपदः             |
| ७६    | वैशाखशुक्ल द्वादश्यां      | ८३    | आषाढशुक्लैकादशी        | ११७   | अत्रगोः पूजा              | ११७   | अथाश्विनः               |
|       | योगविशेषः                  | ८३    | अत्रैवचातुर्मास्यारंभः | ११७   | अथजन्माष्टमी              | ११७   | कन्यासंक्रमेपराःषो-     |
| ७७    | वैशाखशुक्ल चतुर्दशी        | ८८    | अथनदीनारजोदोषः         | ११७   | भाद्र कृष्णामावस्यां      |       | डश                      |
|       | नृसिंहजयन्ती               | ८८    | इत्याषाढः              |       | कुशग्रहणम्                | १२३   | अथमहालयः                |
| ७८    | अथान्नविशेषः               | ९०    | अथआवणः                 | १०८   | भाद्रशुक्लतृतीयाह-        | १२३   | कपिलाषष्ठी              |
| ७८    | वैशाखपौर्णमास्यांवि        | ९०    | आवणशुक्ल तृतीयः        |       | रितालिका                  | १२४   | इयमेवचंद्र षष्ठी        |
|       | शेषोपारके                  |       | मधुस्नवा               | १०८   | भाद्रशुक्लचतुर्थीवरद      | १२४   | अष्टम्यांमहालक्ष्मी     |
| ७८    | अत्रकृष्णाजिनदानम्         | ९०    | आवणशुक्लचतुर्थी        |       | चतुर्थी                   | १२६   | नवम्यामन्वष्टका         |
| ७८    | इतिवैशाखः                  | ९०    | आवणशुक्ल पंचमी         | १०८   | अत्रचन्द्रदर्शननिषि       | १२८   | अथत्रयोदशीश्राद्धम्     |
| ७८    | अथउद्येषः                  | ९०    | नागपंचमी               |       | द्धम्                     | १३०   | अथचतुर्दशी              |
| ७८    | वृषसंक्रांतौपुण्य०         | ९०    | अत्र विशेषो हेमाद्रौ   | १०८   | भाद्र शुक्ल पंचमी         | १३०   | अमायांविशेषः            |
| ७८    | उद्येषशुक्ल तृतीयायां      |       | भविष्ये                |       | षिपंचमी                   | १३०   | आश्विनशुक्ल प्रतिप-     |
|       | रम्भाव्रतम्                | ९२    | अत्रैवविष्णोः पवित्रा  | १०८   | भाद्रशुक्लषष्ठीसूर्यषष्ठी |       | दिदैः हित्र श्राद्धम्   |
| ७८    | उद्येषशुक्ल दशमीदश-        |       | रोपणम्                 | ११०   | भाद्रशुक्लाष्टमीदुर्वा    | १३०   | इतिमहालयनिर्णयः         |
|       | हराख्या                    | ९२    | आवणशुक्लचतुर्दशी       |       | ष्टमी                     | १३५   | अथाश्विनप्रतिपदि        |



# निर्यासिन्धोरनुक्रमिका ।

| पृष्ठ | विषय                    | पृष्ठ | विषय                 | पृष्ठ | विषय                   | पृष्ठ | विषय                   |
|-------|-------------------------|-------|----------------------|-------|------------------------|-------|------------------------|
| १३८   | नवरात्रारंभः            | १६३   | कार्तिकामावास्या     | तथा   | अत्रवृषोत्सर्गोति प्र- | १७८   | पुण्यकालाः             |
| तथा   | अथपूजाविधिः             | १६४   | माश्वयुजीकर्म        | तथा   | शस्तः                  | १७९   | मकरसंक्रान्तौ          |
| तथा   | आश्विनशुक्लपंचम्या      | १६५   | तत्रैवभीष्मव्रतम्    | तथा   | अत्रकार्तिकेय दर्शनं   | १८०   | दानविशेषः              |
| तथा   | मुपांगललिता व्रतं       | १६६   | कार्तिक शुक्लप्रति-  | तथा   | इतिकार्तिकः            | १८१   | माघमायां योगवि-        |
| तथा   | सरस्वतीस्थापनं          | १६७   | पदगोःक्रोडा          | तथा   | अथमार्गशीर्षः          | १८२   | शेषः                   |
| तथा   | अथषष्ठी                 | १६८   | बलिप्रतिपद           | तथा   | वृश्चिके पूर्वाःषोडश   | १८३   | माघकृष्ण चतुर्दश्यां   |
| १३९   | अस्यामेव देवोत्रिरात्रं | १६९   | मार्गबालीबन्धनं      | १७०   | मार्गकृष्णाष्टमीका-    | १८४   | यमतर्पणं               |
| १४०   | सप्तमीपूजाविधिः         | १७०   | यमद्वितीया           | तथा   | लाष्टमी                | १८५   | माघ शुक्ल चतुर्थी      |
| १४१   | अथमहाष्टमी              | १७१   | कार्तिकशुक्लनवमी     | तथा   | अत्रकालभैरवपूजा        | १८६   | तिलचतुर्थी             |
| १४२   | महानवमी                 | १७२   | युगादिः              | तथा   | मार्गशीर्षशुक्ल पंच    | १८७   | इयमेवकुन्दचतुर्थी      |
| तथा   | अथबलिदानम्              | १७३   | अत्रैवविष्णुचिरात्रं | तथा   | म्यांनागपूजा           | १८८   | माघशुक्लपंचमीश्री      |
| १४३   | अथसहस्रचंडो             | १७४   | कार्तिकशुक्लदशमी     | तथा   | मार्गशीर्ष शुक्लषष्ठी  | १८९   | पंचमी                  |
| १४४   | अथनवरात्रपारणम्         | १७५   | भीष्मपंचमकव्रतम्     | तथा   | चम्पाषष्ठी इयमेवस्क    | १९०   | रथसप्तमी               |
| १४५   | विजयादशमी               | १७६   | कार्तिक शुक्लद्वाद-  | १९१   | न्दषष्ठीः              | १९१   | अत्रदानविशेषः          |
| तथा   | आश्विनपौर्णमासी         | १७७   | श्यारेवती योगरहि-    | १९२   | मार्ग पूर्णिमायां द-   | १९२   | इयमन्वादिः             |
| १४६   | कोजागरी                 | १७८   | तायांपारणं           | १९३   | तोत्पत्तिः             | १९३   | माघशुक्लाष्टमीभी-      |
| १४७   | अत्रैवाश्वयुजीकर्म      | १७९   | अस्यामेव देवोत्था-   | १९४   | इतिमार्गशीर्षः         | १९४   | ष्माष्टमीः             |
| तथा   | इत्याश्विनमासः          | १८०   | पनम्                 | १९५   | अथपौषः                 | १९५   | माघ शुक्ल द्वादशी      |
| तथा   | अथकार्तिकः              | १८१   | चातुर्मास्य व्रत स-  | १९६   | धनुःसंक्रमेपराःषोडश    | १९६   | भीष्मद्वादशी           |
| तथा   | तुलासंक्रमेपराःषोडश     | १८२   | माप्तिः              | १९७   | पौष शुक्लैकादश-        | १९७   | शिवरात्रिः             |
| १४८   | अथकार्तिकस्नानम्        | १८३   | बारहोक्तो बोधनवि-    | १९८   | मन्वादिः               | १९८   | माघीपूर्णिमा           |
| १४९   | अथमालाधारणम्            | १८४   | धिः                  | १९९   | पौषा मावास्या यां      | १९९   | इतिमाघः                |
| १५०   | आकाशदीपः                | १८५   | कार्तिकशुक्ल द्वा-   | २००   | अर्धादयः               | २००   | अथफाल्गुनः कुम्भे      |
| तथा   | कार्तिक शुक्लचतुर्थी    | १८६   | दशी पौर्णमासीच       | २०१   | अत्रदानविशेषः          | २०१   | षोडश                   |
| तथा   | करकचतुर्थी              | १८७   | मन्वादिः             | २०२   | इतिपौषः                | २०२   | फाल्गुन कृष्णाष्टम्यां |
| तथा   | कार्तिककृष्णद्वादशी     | १८८   | बैकुण्ठचतुर्दशी      | २०३   | अथमाघः                 | २०३   | वि०                    |
| १५१   | गोवत्सपूजा              | १८९   | कार्तिकव्रतोद्यापनं  | २०४   | माघस्नानम्             | २०४   | अस्यामेवग्रहणो वि-     |
| १५२   | कार्तिक कृष्णचतुर्द-    | १९०   | कार्तिकपौर्णमासी     | २०५   | मकरसंक्रान्तौपरतश्च    | २०५   | चारः                   |
| १५३   | शीनरक चतुर्दशी          | १९१   | अत्रचिपुरोत्सवः      | २०६   | त्वारिश्चत घटिकाः      | २०६   | इयमन्वादिः             |



| पृष्ठ | विषय                    | पृष्ठ | विषय                 | पृष्ठ | विषय                     | पृष्ठ | विषय                     |
|-------|-------------------------|-------|----------------------|-------|--------------------------|-------|--------------------------|
| १८७   | चैत्रकृष्ण प्रति पदि    |       | संख्याः              | तथा   | तत्रप्रतिगर्भकर्तव्या    | २०२   | बालत्रयजनने              |
|       | वसन्तोत्सवः             | तथा   | ऋतौगमनेतिथ्यादि      | तथा   | सोमन्ता भावे             | तथा   | षष्ठीपूजा                |
| तथा   | अत्रविशेषोहेमाद्रौ      |       | नियमाः               | तथा   | भोजनप्रायश्चित्तं        | २०३   | दत्तपुत्रपरिग्रहविधिः    |
| तथा   | अत्रचूतकुसुमप्रकाश      | १८९   | श्राद्धादौ स्त्रगमने | १८६   | गर्भिणीप्रतिधर्माः       | तथा   | स्त्रीशूद्रयोर्दत्तकेवि० |
|       | नमुक्तम्                |       | निषेधः               | १८७   | पत्युः श्राद्ध भोजन      | तथा   | शूद्रकर्तक होमेवि-       |
| तथा   | चैत्रामावास्यामन्वा-    | १८२   | अनेकमार्यस्यर्तुगमनं |       | निषेधः                   |       | चारः                     |
|       | दिः                     | तथा   | ऋतावगमनेदोषः         | तथा   | सूतिकागृहप्रवेशः         | २०४   | दत्तकेविशेषः             |
| तथा   | इतिफाल्गुनः             | तथा   | गर्भाधानविध्यकरणे    | तथा   | जातकर्म                  | तथा   | यमयोर्ज्येष्ठ कनिष्ठ     |
| तथा   | इतिद्वितीयपरिच्छे-      | तथा   | मलमासशुक्रास्तादौ    | १८८   | वृद्धिश्राद्धे आमहेमावि  |       | विचारः                   |
|       | दःसमाप्तः               | १८३   | स्त्रीगमनेशुद्धिः    |       | चारः                     | तथा   | सूतिकास्नानम्            |
|       | <b>अथतृतीयपरि-</b>      | तथा   | रात्रावाशौचैरजसि     | तथा   | आशौचांतरपातवृद्धि        | २०५   | नामकर्म तत्काल           |
|       | <b>च्छेदःप्रारभ्यते</b> | तथा   | सप्रदशदिनमध्येरज     |       | श्राद्धेविचारः           |       | विधिः                    |
| १८८   | मंगलाचरणम्              | तथा   | सिचेत्               | तथा   | जन्मदुष्ट कालगण्डां      | तथा   | खट्वारोहप्रेखारोहौ       |
| तथा   | प्रथमरजोदर्शने          | तथा   | रोगजेरजसि            |       | तस्तद्गानंच              | २०६   | दुग्धपानम्               |
| तथा   | दुष्टतिथ्यादयः          | तथा   | रजस्वलानामन्योन्य    | तथा   | आश्लेषाफलम्              | तथा   | ताम्बूलभक्षणम्           |
| तथा   | दुष्टवाराः              | तथा   | स्पर्श               | १८६   | उज्येष्ठाफलम्            | २०७   | निष्क्रमणम्              |
| तथा   | नक्षत्रफलम्             | १८४   | सर्वर्णानांविशेषः    | तथा   | मूलफलम्                  | तथा   | अथोपवेशनम्               |
| तथा   | लग्नफलम्                |       | रजस्वलायाश्चांडां    | तथा   | लग्नभेदात्फलम्           | तथा   | अन्नप्राशनम्             |
| तथा   | वस्त्रफलम्              | तथा   | लादिस्पर्श           | तथा   | विशाखाफलम्               | २०८   | अद्वयपूर्तिः             |
| तथा   | सधिर विन्दुफलम्         | तथा   | रजस्वलायानैमित्तिक   | २००   | चित्राफलम्               | तथा   | उष्णादिकक्षाननिषेधः      |
| तथा   | प्रथमतो दोषः स्त्री     | तथा   | स्नानं               | तथा   | व्यतीपातादिफलम्          | तथा   | कटिसूत्रम्               |
|       | गमने                    | तथा   | रजस्वलायांरजसिज्व    | तथा   | विकृतांग सहदन्त          | २०९   | चौलम्                    |
| तथा   | योगफलम्                 | तथा   | रोत्प०               |       | जातफलम्                  | तथा   | मातरिगर्भिण्यां नि०      |
| १८९   | दुष्टप्रथमतोशांतिः      | तथा   | रजसोज्ञाने           | तथा   | पितृश्चात्रैकनक्षत्रजाते | २१०   | ज्वरोत्पत्तौ मातूर-      |
| १९०   | प्रथमतोविशेषः           | तथा   | पुंसवनानवलोभनम्      | २०१   | ग्रहणजननेशांतिः          |       | जसि                      |
| तथा   | प्रथमतोप्राक्स्त्री ग-  | १९५   | पुनश्चक्राणि         | तथा   | अकालप्रसवस्त्री युग      | तथा   | संकटेमुंडनोत्तरं वि-     |
|       | मने निषेधः              | तथा   | पुंसवनेतिथ्यादि      |       | लक्षणम्                  |       | चारः                     |
| तथा   | ऋतौगमने दिन             | तथा   | अनवलोभनम्            | तथा   | उपरिदन्तजनने             | तथा   | सोदरयोराशौचं             |
|       |                         | तथा   | सोमन्तोन्नयनं        | तथा   | त्रिकशांतिः              | तथा   | चौलभोजने प्राय०          |

# निर्यायसिन्धोरनुक्रमशिका ।

७

| पृष्ठ | विषय                 | पृष्ठ | विषय                      | पृष्ठ | विषय                    | पृष्ठ | विषय                    |
|-------|----------------------|-------|---------------------------|-------|-------------------------|-------|-------------------------|
| २११   | शिखाविचारः           | तथा   | अतीत संस्काराणां          | २२६   | सापिंड्यनिर्णयः         | तथा   | अकालवृष्ट्यादौ          |
| तथा   | चौलचौलशास्त्रार्थश्च | तथा   | युगपदुपनीत्यासहचौ         | तथा   | त्रिगेत्रात्ययेविशेषः   | तथा   | भूकंपादौ                |
| तथा   | विद्यारम्भः          | तथा   | लकरणम्                    | तथा   | मातुलकन्यापरिणयः        | २४५   | नांदीश्राद्धेभूकंपादे   |
| तथा   | धनुर्विद्या          | तथा   | युगपत्संस्कारे नांदी      | २३२   | जीवत्पित्रादित्रिकसा    | २५०   | रप०                     |
| २१२   | अनुपनीतस्य विशेषः    | तथा   | आद्रुम्                   |       | पिंड्यः                 | तथा   | कन्यावैधव्ययोगे         |
| तथा   | उपनयनशिथुलक्षणं      | तथा   | उपनयनाग्निः               | २३३   | कन्यासापिंड्यं          | तथा   | कुम्भविवाहादि           |
| तथा   | उपनयनगौणकालः         | तथा   | उपनयने मध्याह्न           | २३७   | सापन्नभ्रातामहकुले      | तथा   | विष्णुमूर्तिदानमुक्तम्  |
| तथा   | जन्ममासादि           | तथा   | सन्ध्या                   | २३८   | दत्तकस्यसापिंड्यम्      | २४६   | कार्यप्रतिकूलादि        |
| २१३   | उपनयनेगुरुबलम्       | तथा   | ब्रह्मयज्ञारम्भः          | २३९   | अनाचारः                 | तथा   | पित्रादौमृतेविशेषः      |
| २१४   | गलग्रहाः नैमित्तिकाः | २१८   | ब्रह्मचारीधर्माः          | २४०   | गोत्रप्रवरनिर्णयः       | २४७   | तत्रविनायकशान्तिः       |
| तथा   | उ्येष्टमासादिविचारः  | तथा   | गुरुच्छिष्टं              | तथा   | द्विगोत्राद्यज्ञाते     | तथा   | प्रतिकूलापवादः          |
| २१५   | अचर्यतृतीयादौपुन     | तथा   | मेखला                     | २४१   | मातृगोत्रनिर्णयः        | तथा   | मातूरजोदर्शने           |
| तथा   | रूपनयनम्             | २१९   | दण्डाः                    | तथा   | कन्याविवाहकालः          | तथा   | नांदीश्राद्धानंतरम्     |
| तथा   | सोपपदाः              | तथा   | अजिनम्                    | तथा   | गुर्वर्कबलम्            | तथा   | एकमातृकयोः क्रिया       |
| तथा   | प्रदोषस्वरूपम्       | तथा   | यज्ञोपवीतम्               | २४२   | वृहस्पतिशान्तिः         | तथा   | श्रीपूजनम्              |
| तथा   | भूकंपादौ             | तथा   | तत्संख्या                 | तथा   | शुक्रास्तादिनिमित्तं    | तथा   | तदपवादः संकटे           |
| तथा   | शाखाधिपाः            | तथा   | ब्रह्मचारीधर्मलोपे        | तथा   | सिंहस्थगुरोरपवादः       | २४८   | विवाहमध्येश्राद्ध०      |
| तथा   | प्रातःसंध्यागर्जिते  | तथा   | अग्निकार्यलोपे            | तथा   | कन्यादातारः             | तथा   | मुण्डनविचारः            |
| तथा   | सायंसंध्या गर्जने    | २२१   | सन्ध्यालोपे               | तथा   | भ्रातृणांसंस्कृतानां    | २४९   | मासिकापकर्षः            |
| तथा   | शान्तिः              | २२३   | उपवीतनाशे                 | तथा   | स्वयवरनांदीश्राद्रुम्   | तथा   | भिन्नमातृजयोर्वि-       |
| तथा   | उपनयनेनक्षत्राणि     | तथा   | पुनरुपनयनम्               | २४३   | मातुर्दातृत्वेनांदीश्रा |       | वाहः                    |
| तथा   | उपनयनादि कार-        | २२४   | अनध्यायाः                 |       | द्रुम्                  | तथा   | प्रत्युद्वाहेविधिनिषेधौ |
|       | रणः                  | तथा   | महाग्न्यादिब्रतम्         | तथा   | परकीयकन्यादानम्         | २५०   | कन्यारजोदर्शने          |
| २१६   | षट्मूकादीनांविशेषः   | तथा   | समावर्तनम्                | तथा   | गौर्यादिदानफलम्         | तथा   | तत्रप्रायश्चित्तम्      |
| तथा   | कुण्डगोलाकयोगाद्य-   | तथा   | बटोः पूर्वमृतानां त्र्यहा | तथा   | मासनिर्णयः              | तथा   | तद्विवाहेवरस्यप्राय-    |
|       | त्रयुपदेशः           |       | शौचं                      | २४४   | उ्येष्टमासनिर्णयः       |       | श्चित्तम्               |
| तथा   | भिचार्याविचारः       | २२५   | स्नातव्यव्रतानि           | तथा   | दशदोषाः                 | तथा   | गांधर्वादिविवाहाः       |
| २१७   | संस्कारलोपेप्रायश्चि | तथा   | कूरिकावन्धः               | तथा   | गुर्वीतिचारे            | तथा   | बलादपहरणे कन्या         |
|       | तम्                  | तथा   | अथविवाहः                  | तथा   | घातचंद्रे               | २५१   | याः                     |



| पृष्ठ | विषय                  | पृष्ठ | विषय                        | पृष्ठ | विषय                 | पृष्ठ | विषय                       |
|-------|-----------------------|-------|-----------------------------|-------|----------------------|-------|----------------------------|
| तथा   | विवाहमध्येआशौचे       |       | कार्यः                      |       | दिनाचरेत्            | तथा   | मूर्तिप्रतिष्ठा            |
| तथा   | आशौचे नांदीश्राद्ध    | २५५   | दातरिनिर्णयंरिष्टरत्न       | २५७   | द्विरागमनम्          | २६५   | मासक्षणि                   |
|       | विधिः                 |       | क्षयम्                      | तथा   | पुनर्विवाहेकारणम्    | तथा   | प्रतिष्ठातिथयः             |
| तथा   | अन्नादौविशेषः         | तथा   | कन्यादानविधिः               | २५८   | स्त्रीबाहुल्येकस्यध- | २६६   | नक्षत्राणि                 |
| तथा   | धर्मार्थविवाहकरणे     | तथा   | गृहप्रवेशनीयहोमेवि          |       | र्माधिकारः           | तथा   | वारायनम्                   |
| तथा   | कन्यागृहभोजने         |       | शेषः                        | तथा   | पुनर्विवाहेअग्निः    | तथा   | प्रतिष्ठाधिकारिणः          |
| २५२   | नूतनवस्त्र धारणेश्च   | तथा   | औपासनेविशेषः                | तथा   | पुनर्विवाहे निषिद्ध  | तथा   | शूद्रादिस्थापनंलिंगा       |
|       | दोषः                  | तथा   | देवक्रोत्थापनम्             |       | कालः                 |       | दीनाम्                     |
| तथा   | स्त्रियासहभोजनेश्च    | तथा   | नांदीश्राद्धोत्तरं सर्वेषां | २५९   | अग्निद्वयसंसर्गः     | २६७   | स्त्रीशूद्रैर्विष्णुशिवपु- |
|       | दोषः                  |       | सपिण्डानांनियमा             | तथा   | तृतीयविवाहनिषेधः     |       | जननकार्यम्                 |
| तथा   | विवाहनक्षत्राणि       | तथा   | स्पष्टारपृष्टदोषाभावः       | तथा   | अर्कविवाहकालः        | तथा   | प्रतिमाकस्यपदार्थस्य       |
| तथा   | विरुद्धनक्षत्रेदानानि | तथा   | उपनयनविकाहोत्तर             | तथा   | आधानतन्त्रत्रादि     | तथा   | प्रतिमायांप्राणप्रतिष्ठा   |
| तथा   | विवाहमण्डपहरिद्रा     |       | स्नानम्                     | २६०   | उदितानुदितलक्षणं     | तथा   | लिंगभेदेनार्चभेदः          |
|       | लेपः                  | तथा   | अपूर्वतीर्थयात्रानि-        | तथा   | अग्निहोत्रकालः       | २६८   | लिंगकस्यपदार्थस्य          |
| तथा   | विवाहवेदिका           |       | षेधः                        | २६१   | आवस्ययाधानम्         |       | कार्यम्                    |
| तथा   | चुल्यर्थमृत्तिकाहरणं  | तथा   | प्रथमवर्षे वध्वापितृ        | २६२   | उपेष्टभ्रातरिपितरिवा | तथा   | अथपंचसूत्रीनिर्णयः         |
| २५३   | वरवरणम्               |       | गृहे                        |       | साग्निके             | तथा   | गृहेलिंगशालग्रामा-         |
| तथा   | वाग्दानम्             | तथा   | गोपीचन्दनधारणानि            | तथा   | कनिष्ठस्याभ्यर्चनं   |       | दिकाः                      |
| तथा   | वाग्दानोत्तरंवरमृतौ   |       | षेधः                        |       | दोषः                 | २६९   | कतिपूजनीयाः                |
| तथा   | वरस्यदेशांतरगते       | तथा   | उपनयनविवाहोत्तरं            | तथा   | उपेष्टे अकृताधानेआ   | तथा   | स्त्रीभिः शिवविष्णु-       |
| तथा   | वाग्दानोत्तरं मरणे    |       | मुण्डननिषेधः                |       | धानंकार्यम्          |       | स्पर्शनकार्यः              |
| तथा   | वरस्य                 | तथा   | भर्तृगृहेमासनिषेधः          | तथा   | परिवेत्तादिविचारः    | तथा   | ब्राह्मणादिभिः कति         |
| तथा   | दोषस्तत्वे अनेकेभ्यो  | २५६   | विवाहोत्तरं पिण्डदानं       | तथा   | परिवेत्ताद्यपवादः    |       | संख्याप्रतिमापूज्यः        |
|       | बरेभ्यो               | तथा   | तिलतर्पणनिषेधः              | २६३   | शूद्रस्यसंस्कारः     | तथा   | नवधाद्रव्यस्यप्रतिमा       |
| २५४   | दत्वाचनिर्णयः         | तथा   | वधूप्रवेशेवर्षनियमाः        | तथा   | अथशूद्रकालाः         | तथा   | शालग्रामशिवनाभिः           |
| तथा   | द्वितीयविवाहेनांदी    | तथा   | मासदिवसनियमाः               | तथा   | जलाशयस्यकालः         |       | परी०                       |
|       | श्राद्धम्             | तथा   | प्रतिशुक्रविचारः            | तथा   | कूपदेशः              | तथा   | अथपार्थिवपूजा              |
| तथा   | लग्नघटिकास्थापनम्     | तथा   | ग्रहशुक्रास्तविचारः         | तथा   | कूपस्योत्सर्गविधिः   | तथा   | अमुकदेवेअमुकवाद्य          |
| तथा   | मधुपर्कान्यशाखीय      | तथा   | मांगलिकेप्राप्तश्राद्धा     | २६४   | वृत्तारोपणम्         |       | निषेधः                     |

## निर्णयसिन्धोरनुक्रमणिका ।

| पृष्ठ | विषय                      | पृष्ठ  | विषय                 | पृष्ठ         | विषय                    | पृष्ठ | विषय                     |
|-------|---------------------------|--------|----------------------|---------------|-------------------------|-------|--------------------------|
| २६६   | शिवस्यपुष्पादिकम-         | तथा    | तर्पणम्              | २६८           | सप्तगोत्राणि            |       | देग्नधिकारः              |
|       | पणीयम्                    | तथा    | अथकृषिः              | तथा           | एकोत्तरशतकुलं           | ३०६   | ब्रह्मचारिणः पित्रो      |
| २७०   | त्रिपुण्ड्रधारणंरुद्राक्ष | तथा    | राजदर्शनम्           | तथा           | श्राद्धनिषिद्धदेशाः     |       | श्राद्धाधिकारः           |
|       | धारणम्                    | तथा    | श्मश्रुकर्म          | २६९           | परगृहेश्राद्धं निषि-    | तथा   | विभक्तानां भ्रातृणां     |
| तथा   | रुद्राक्षमहिमा            | तथा    | इन्धनसंग्रहः         | दुम्          |                         |       | विचारः                   |
| तथा   | रुद्राक्षाभिर्मन्त्रणम्   | २८६    | नवान्नग्रहणम्        | तथा           | श्राद्धकालः             | तथा   | चारजानांविशेषः           |
| तथा   | कृतिरुद्राक्षाणामाला      | तथा    | नवभोजनपात्रम्        | तथा           | नवान्नश्राद्धम्         | ३१०   | धर्मार्थश्राद्धकरणे      |
| तथा   | रुद्राक्षमालादानम्        | तथा    | नवपर्ण फलादिल-       | तथा           | शंखपद्मादियोगः          | तथा   | गयायामपित्तत्रैव         |
| २७१   | रुद्राक्षमालाधारणं        | क्षणम् |                      | ३०९           | प्रतिकृष्णपक्षश्राद्धम् | ३११   | अन्नस्तीशूद्राणांम       |
| २७२   | शिवमहास्नानं पंचा         | तथा    | होमेश्राहुतिपातः     | तथा           | व्यतीपातेश्राद्धम्      |       | मन्त्रकंशूद्राणां गोत्रा |
|       | मृतंच                     | तथा    | अन्नशांतिस्तुक्ता    | तथा           | तिथिविशेषश्राद्धम्      |       | भावकाश्यप गोत्रम्        |
| २७३   | विष्णवादीमहास्ना-         | तथा    | ज्वरादीफलम्          | तथा           | नक्षत्रश्राद्धयोग आ-    | तथा   | राजकार्यं नियुक्तादी     |
|       | नपंचामृतस्य               | २८७    | अन्नशांतिः           | दुम्          |                         |       | नांश्राद्धनिर्णयः        |
| २७५   | विश्वक्सेनादीनांनैवे      | तथा    | मेघजम्               | तथा           | श्राद्धाविकारिणः        | तथा   | यवनादीनांश्राद्धनि-      |
|       | द्यादि                    | २८९    | आरोग्यस्नानम्        | ३०२           | द्वादशपुत्रभेदाः        |       | र्णयः                    |
| २७८   | पंचायतनस्थापनम्           | २९०    | दन्तधावनम्           | ३०३           | अनुपनीतिश्च पुत्रो-     | तथा   | इतिश्राद्धाधिकारिणः      |
| २७९   | केशवादिमूर्तीनांल-        | २९३    | प्रोषितभर्तृकानियमाः | धिकारी        |                         | तथा   | अथपितरः                  |
|       | क्षणम्                    | २९४    | आमलकस्नानम्          | ३०५           | अपुत्रक्रियादि व्यव-    | तथा   | पितृणांश्राद्धार्थयथा    |
| तथा   | लिंगप्रतिष्ठा             | तथा    | तैलस्नाननिषेधः       | स्था          |                         |       | उपतिष्ठति                |
| २८०   | केशवादि मूर्तीनांप्र-     | २९५    | गृहारम्भः            | ३०६           | भगिनीतत्सुतयोर्वि-      | तथा   | वसुश्रुतादित्यस्वरूपं    |
|       | तिष्ठा                    | तथा    | गृहप्रवेशः           | शेषः          |                         | ३१२   | ब्राह्मणादि वर्णभरः      |
| २८१   | सर्वतोभद्रदेवतास्था       | तथा    | कलिबज्र्यानि         | ३०७           | ब्राह्मणस्यान्यक्रिया   | तथा   | पितरः                    |
|       | पनम्                      | २९६    | अथश्राद्धनिर्णयः     | निषेधः        |                         |       | विश्वेदेवाः              |
| तथा   | पुनःप्रतिष्ठा             | तथा    | श्राद्धलक्षणम्       | ३०८           | दत्तक्रीतकृत्रिमपुत्रा- | तथा   | श्राद्धेकतूदक्षौदेवौ     |
| २८२   | अथजीर्णाहारः              | तथा    | श्राद्धभेदाः         | णांश्राद्धादि |                         | तथा   | नांदीमुखश्राद्धेसत्यौ    |
| २८३   | मूर्तिप्रासादभेदे         | तथा    | घृतश्राद्धम्         | तथा           | पत्न्यादेःसपिण्डना      | तथा   | नैमित्तिकेकामकालौ        |
| २८४   | अथतुलसी ग्रहणम्           | तथा    | श्राद्धदेशाः         |               | दावधिकारः               | ३१३   | काम्येधूरिलोचनौ          |
| २८५   | पुष्पादेःपर्युषितत्वम्    | २९७    | गयाश्राद्धम्         | तथा           | सपिण्डनाधिकारिणः        | तथा   | पार्वणेपुहुरवाद्रौ       |
| तथा   | शिवमाह्वयनिर्णयः          | तथा    | गयाशिरःप्रमाणम्      | तथा           | पुत्रक्रियाकरणेपुत्रा-  | तथा   | श्राद्धत्रिविधम्         |



| पृष्ठ  | विषय                      | पृष्ठ | विषय                   | पृष्ठ | विषय                           | पृष्ठ | विषय                   |
|--------|---------------------------|-------|------------------------|-------|--------------------------------|-------|------------------------|
| ३१४    | विश्वदेवापवादः            | तथा   | पिण्डदानांप्राक्स्वगृ- | तथा   | वस्त्रेविशेषः                  | तथा   | मन्त्रोच्चविचारः       |
| तथा    | आहुविप्राः                |       | हेवालानांभोजनेनि०      | तथा   | ऊर्ध्वपुंड्रादिधारणम्          | ३३६   | वृद्धौविशेषः           |
| ३१५    | द्वयोर्भात्रोरेक आहु-     | तथा   | अथआहुवस्तूनि           | तथा   | कर्तुर्भाक्तुर्ऊर्ध्वपुंड्रनि- | ३४०   | आपस्तंबानांतु          |
| निषेधः |                           | ३२२   | तत्रदर्भग्रहणप्रकारः   |       | विधेः                          | ३४१   | मंडलादिपाद्यकर्तव्यं   |
| तथा    | आहुभोजने निषि-            | तथा   | पवित्रदर्भसंख्या       | तथा   | गृह्हरंगवल्लीनिषेधः            | तथा   | कस्यागौर्गामयंशाह्यं   |
| दुम्   |                           | तथा   | दर्भग्रहणमन्त्रः       | तथा   | तिलक करणसमये                   | तथा   | विप्रनियमाः            |
| ३१६    | मध्यमाः                   | ३२३   | दशदर्भाः               |       | दर्भधारणनिषिद्धम्              | ३४२   | आसनानिकीदृशानि         |
| तथा    | अत्रविशेषः                | ३२४   | निषिद्धदर्भाः          | तथा   | आहुारम्भकालः                   | ३४३   | अर्घ्यपात्रम्          |
| ३१७    | वज्र्याविप्राः            | ३२५   | सुवर्णपवित्रंश्रेष्ठम् | तथा   | आहुपरिभाषा                     | तथा   | उत्तमान्यर्घ्यपात्राणि |
| तथा    | लम्बकर्णलक्षणम्           | तथा   | आहुहविः                | ३३५   | जानुपातनम्                     | तथा   | अधमान्यर्घ्यपात्राणि   |
| तथा    | सप्तविधाषण्डाः            | ३२६   | शाकादिवस्तूनि          | तथा   | गोत्रानामोच्चारः               | तथा   | विश्वदेवावाहने         |
| ३१८    | कुष्ठिकाणादेरपवादः        | ३२७   | आहुमधुमांसग्रहणम्      | तथा   | सम्बन्धि गोत्रोच्चार-          | ३४४   | ऊर्ध्वपुंड्रनिषेधः     |
| तथा    | गयास्थब्राह्मणः           | ३२८   | आहुमांसनिषेधः          |       | णम्                            | तथा   | तुलसीनिषेधः            |
| तथा    | विप्रनिमंत्रणम्           | तथा   | कालदेशाचारतोय-         | तथा   | सकारातोगोत्रोच्चारः            | तथा   | षुष्पाणिग्राह्याणि     |
| तथा    | विप्रसंख्या               |       | व्यस्था                | तथा   | गोत्रपरिज्ञानेकाश्रयं          | तथा   | वज्र्यानिपुष्पाणि      |
| ३१९    | ब्राह्मणाभावेऽकोब्रा-     | ३३०   | चीरादौविशेषमाह         | ३३६   | नामोच्चारणविशेषः               | तथा   | उत्तमोधूपः             |
| ह्मणः  |                           | तथा   | आहुवज्र्यवस्तूनि       | तथा   | पुत्रादिनामाज्ञाने             | तथा   | वज्र्यधूपाः            |
| तथा    | एकविप्रसामेर्विशेषः       | तथा   | ताम्रपात्रस्थवज्र्यची  | तथा   | विभक्तविचारः                   | तथा   | अथदीपः                 |
| ३२०    | ब्राह्मणाभावेचटश्रा०      |       | रादि                   | तथा   | अनुपनीतस्तोशूद्रा-             | तथा   | वस्त्रम्               |
| तथा    | आहुकर्तुर्भाक्तुर्निर्णयः | ३३१   | वज्र्यजलम्             |       | देस्तरीयेणसत्यापस-             | ३४५   | यज्ञोपवीतम्            |
| तथा    | निर्मन्त्रितातिकरणे       | तथा   | शूद्राहतंजलंवज्र्यम्   | व्यम् |                                | तथा   | दीपिकादिदानम्          |
| तथा    | गृहीतामन्त्रणत्यागे       | तथा   | आहुतेजादिकुतुपाः       | तथा   | सत्यापसत्यविचारः               | तथा   | स्त्रीआहु              |
| ३२१    | आहुभोजनेप्रायश्चि-        | ३३२   | दौहित्रलक्षणम्         | तथा   | आचमनविचारः                     | तथा   | कमण्डलवादिदानम्        |
| त्तम्  |                           | ३३३   | आहुदेशवज्र्यानि        | ३३७   | दानाध्ययनादिवज्र्यं            | तथा   | स्वर्णादि भोजनपात्रं   |
| तथा    | अमायांनिषिद्धप्रकारः      | तथा   | आहुदिनकृत्यं           | तथा   | पिण्डदानात्प्राक्नै-           | ३४८   | वंदीगृहस्थमोचनेफलं     |
| तथा    | वनस्पति गतस्वरूपम्        | तथा   | आहुपाकः केनकार्यः      |       | वेद्यः                         | तथा   | पिच्यकाण्डेअर्चा       |
| तथा    | कर्तुरशक्त्या प्रति-      | तथा   | आहुपाकभांडानि          | तथा   | विश्वदेव पितृणांपू-            | तथा   | अथाध्ययदानम्           |
| निधिः  |                           | ३३४   | आहुपाकाग्निः           | जनम्  |                                | तथा   | अर्घ्यसत्यापसत्यम्     |
| तथा    | स्त्रीनियमाः              | तथा   | आहुपाकक्रमः            | ३३८   | दर्भविसर्जनं कतिधा             | तथा   | अर्घ्यपाचस्थापनम्      |

# निर्णयसिन्धोरनुक्रमिका ।

११

| पृष्ठ | विषय   | पृष्ठ | विषय                                 | पृष्ठ | विषय                               | पृष्ठ | विषय                            |
|-------|--|-------|--------------------------------------|-------|------------------------------------|-------|---------------------------------|
| ३४६   | मण्डलानिपात्राणि च                           | तथा   | अगुष्ठनिवेशनं                        | ३६२   | मासिकेपिण्डप्रमाणं                 | तथा   | नित्यकर्मरात्रौ कार्यं          |
| तथा   | भाजनेकांस्यपात्रम्                           | ३५०   | आपोशनं                               | तथा   | तीर्थेपिण्डप्रमाणं                 | तथा   | पात्राभावे                      |
| तथा   | श्राद्धेकांस्यपात्रनिषेधः                    | तथा   | आत्धानसंकल्पः कुत्र चित्राहुतिनिषेधः | तथा   | दर्शपिण्डप्रमाणं                   | ३५०   | श्राद्धशेषभोजनं तन्निषेधः       |
| ३५०   | श्राद्धभोजनेपवित्रपात्राणि                   | तथा   | भोजनेलवणादिनपृच्छेत्                 | तथा   | महालयपिण्डप्रमाणं                  | तथा   | विप्रस्थ श्राद्धावशेषभोजननिषेधः |
| ३५१   | कदलीपत्रनिषेधः                               | तथा   | अभिवश्रवणं                           | तथा   | पत्न्यापिण्डः करणीयः               | तथा   | कुत्रचिच्छाद्वावशेषभोजननिषेधः   |
| ३५२   | भस्ममयादा                                    | तथा   | भोक्तृनियमाः                         | तथा   | पित्रादीनां नामनोत्राज्ञाने        | तथा   | कुत्रचिच्छाद्वावशेषभोजननिषेधः   |
| तथा   | अग्नौकरणम्                                   | ३५८   | ब्राह्मणप्रार्थना                    | ३६४   | मात्रादीनां पिण्डदेशाः             | ३५१   | श्राद्धदिननियमाः                |
| ३५३   | पाणिहोमश्राद्धे महालये                       | तथा   | ब्राह्मण परस्परस्पर्शे               | तथा   | महालयश्राद्धे सर्वेषां पिण्डादेशाः | तथा   | शूद्रस्य श्राद्धावशेषन-देयं     |
| ३५४   | तीर्थश्राद्धे पाणिहोमः                       | ३५६   | विप्राणांगुदसावे                     | तथा   | पश्चिमेदर्भलेपादि                  | तथा   | इतिपर्वणश्राद्धम्               |
| तथा   | विधुरस्य पाणिहोमः                            | ३६०   | विप्राणां वमने                       | तथा   | पिण्डपूजनादि                       | तथा   | श्राद्धानुकल्पः                 |
| तथा   | पाणिहोमे प्रश्नादि                           | तथा   | एवंविधे जपः पुनः श्राद्धं च          | ३६५   | पिण्डानां सर्वाक्षस्य नैवेद्यः     | तथा   | विप्राभावे दर्भवटुः             |
| तथा   | पिच्यविप्रकरे हुतं सर्वपितृपात्रेषु निक्षेपः | तथा   | तृप्तिप्रश्नः                        | तथा   | उच्छिष्टपात्रचालनम्                | तथा   | आमश्राद्धं द्विदानां            |
| तथा   | आपस्तम्बानामग्नौ करणम्                       | ३६१   | पिण्डदानात्प्राग्वमने                | तथा   | उच्छिष्टपात्राणि कर्त्तव्याः       | तथा   | शूद्रस्यामश्राद्धम्             |
| ३५५   | अथपरिवेषणम्                                  | तथा   | विकिरं                               | ३६६   | उच्छिष्टपात्राणि कर्त्तव्याः       | तथा   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
| तथा   | तत्स्वयं भार्यया कार्यं                      | तथा   | उच्छिष्टपिण्डः                       | तथा   | हस्तप्रचालनं गण्डूषकरणं            | तथा   | कुत्रचिदामश्राद्धनिषेधः         |
| तथा   | आयसपात्रनिषेधः                               | तथा   | अथपिण्डदानं                          | ३६७   | पिण्डप्रचालनं गण्डूषकरणं           | तथा   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
| तथा   | पवित्रपात्राणि                               | तथा   | पिण्डदानं कुत्रकर्त्तव्यं            | ३६८   | पिण्डप्रतिपत्तिः                   | तथा   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
| तथा   | पंक्त्यां विषमानदानं                         | तथा   | अष्टांगः पिण्डः                      | तथा   | पिण्डोपघाते प्रायश्चित्तम्         | ३७२   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
| तथा   | भोजनपात्रे तिलपतने निषिद्धम्                 | तथा   | पिण्डेषु माषावज्याः                  | तथा   | पिण्डनिषेधकालः                     | तथा   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
| ३५६   | हस्तेन स्नेहलवणादि नदेयं                     | तथा   | अथपिण्डप्रमाणं                       | ३६९   | महालयादौ पिण्डदानं                 | तथा   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
| तथा   | घृतपात्रस्थापनं                              | तथा   | एकोद्विष्टेपिण्डप्रमाणं              | तथा   | क्षयाहेविशेषः                      | तथा   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
| तथा   | पात्रालम्भनं                                 | तथा   | सपिण्डीकरणे पिण्डप्रमाणम्            | तथा   | उच्छिष्टोद्वासनं                   | तथा   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
|       |  | तथा   | प्रत्यङ्गपिण्डप्रमाणं                | तथा   | श्राद्धदिनैश्वदेवादि               | तथा   | आमश्राद्धेऽपि कर्त्तव्यं        |
|       |  |       |                                      | तथा   | अथानित्यश्राद्धम्                  |       | कथं                             |



| पृष्ठ | विषय                        | पृष्ठ | विषय                        | पृष्ठ | विषय                      | पृष्ठ | विषय                      |
|-------|-----------------------------|-------|-----------------------------|-------|---------------------------|-------|---------------------------|
| तथा   | एकोद्दिष्टमध्याह्ने         | तथा   | अमायां प्रेतपक्षे           | तथा   | क्षयेदिनमासाज्ञाने        | ३६८   | तिलतर्पणनिषेधकालः         |
| तथा   | पार्वणमपराह्णे              | तथा   | तक्षयः                      | ३६८   | श्राद्धविधेर्निर्यायः     | ३६९   | पित्रोर्वार्षिकेनित्यत-   |
| ३७३   | वृद्धिश्राद्धं प्रातः       | तथा   | संन्यासिनः किं कार्यं       | ३६९   | श्राद्धादि प्रारम्भेन     |       | र्पणोत्तिलनिषेधः          |
| तथा   | शूद्राणामपराह्णे            | ३७८   | संग्रामे मृतानां कदा        |       | दोषः                      | तथा   | श्राद्धदिनेपिनित्यत-      |
| तथा   | हेमश्राद्धम्                |       | श्राद्धं                    | ३६९   | श्राद्धभोजनसमयेदा         |       | र्पणम्                    |
| तथा   | हेमश्राद्धं कस्मिंस्थले     | तथा   | उद्येष्टभ्रातुः कनिष्ठेन    |       | तुराशौचं चेत्             | ४००   | कार्यप्रत्यंजलिम-         |
| तथा   | हेमश्राद्धं पिंडाः कथं      |       | कथं कार्यं                  | ३६९   | दार्तृभोक्त्रेराशौचं चेत् |       | चाश्च                     |
|       | कार्याः                     | ३७९   | उद्येष्टेन कनिष्ठस्य कथं    | तथा   | तत्र भोजने प्रायश्चित्तं  | तथा   | अथतर्पणनिषेधः             |
| तथा   | हेमश्राद्धं पिण्ड नि-       | तथा   | अपुत्रस्य पित्र्यव्यस्य किं |       | तम्                       | तथा   | अथ वृद्धिश्राद्धम्        |
|       | षेधः                        | ३८०   | पत्न्याः कर्तृत्वप्राप्ते   | ३८८   | आशौचमध्यश्राद्धं चेत्     | तथा   | अत्राधिकारिणः             |
| ३७४   | हेमश्राद्धं निषिद्धप-       | तथा   | अपुत्राणां किं कार्यम्      | तथा   | अथ भार्यारजोदर्शने        | ४०१   | जीवत्पितृ कस्य वृद्धि     |
|       | दार्थाः                     | तथा   | एकोद्दिष्टे केषां कार्यम्   | तथा   | अन्तरितश्राद्धम्          |       | श्राद्धम्                 |
| ३७५   | शूद्रवेश्मनि भोजना          | तथा   | क्षयाहृद्द्वेर्निर्यायः     | तथा   | अन्वारोहणनिर्यायः         | तथा   | द्वितीयविवाहे वृद्धि      |
|       | दिति                        | तथा   | एकोद्दिष्टेर्तिथिन-         | ३८९   | एकसमये मृताः स्वामि       |       | श्राद्धं केन कर्तव्यम्    |
| तथा   | शूद्र गृहाद्ब्राह्मण        |       | र्यायः                      |       | सेवकास्तु स्त्रोभिः सह    | ४०२   | वृद्धिश्राद्धे इति कर्त-  |
|       | गृहे आमंशमागतं चे-          | तथा   | पार्वणेतिथिनिर्यायः         |       | गमनं भर्तुराशौचम्         |       | व्यता                     |
|       | च्छुचि                      | तथा   | आर्द्धिकेतिथिनिर्यायः       | तथा   | स्तोगमनं चेदनुगमनं        | ४०४   | वृद्धिश्राद्धे दर्भस्थाने |
| ३७६   | पात्रांतर्गतं द्रुग्धं शुचि | ३८१   | मृताहातिक्रमे दोषः          | ३८९   | देशांतरे भर्तृमरणं शु-    |       | दूर्वाः                   |
| ३७७   | सांकल्पश्राद्धम्            | तथा   | ग्रहणदिने श्राद्धप्राप्तौ   |       | त्वासहगमनं चेत्           | ४०५   | वृद्धिश्राद्धे विप्राभावे |
| तथा   | सांकल्पश्राद्धं किं कार्यं  | तथा   | अपुत्राणां रात्रौ कार्यम्   | ३८२   | सुवासिनो भोजनम्           | तथा   | नांदीश्राद्धकरणे क्रमा    |
| तथा   | द्रव्याभावद्विजाभावे        | तथा   | अधिकमासप्राप्तेश्रा-        | ३८३   | अथ श्राद्धसम्पात्ते नि-   | ४०६   | वैश्वदेवः कदा कर्तव्यः    |
|       | अनुकल्पाः                   |       | दुनिषेधः                    |       | र्यायः                    | तथा   | जीवत्पितृकश्राद्धम्       |
| तथा   | अथ श्राद्धभोजने प्राय       | ३८२   | एकादिने दर्शश्राद्धं च      | तथा   | गृहदाहादिनायुषं           | ४०८   | जीवत्पितृकस्य गयायां      |
|       | श्चित्तं                    |       | याहश्राद्धं चेन्निर्यायः    |       | मरणे                      | तथा   | जीवत्पितामहश्राद्धं       |
| तथा   | क्षयाहश्राद्धं तद्रूपं च    | तथा   | वृषोत्सर्गकालः              | ३८४   | एकस्मिन्दिने श्राद्ध-     | तथा   | विभक्ता विभक्तानि-        |
| तथा   | अकरणे दोषमाह                | तथा   | अथ शुद्धिश्राद्धम्          |       | त्रयम्                    | तथा   | र्यायः                    |
| तथा   | तत्रैकोद्दिष्टं पार्वणं च   | तथा   | प्रथमवर्षादारभ्य वर्ष       | ३८५   | अस्य देवताभेदे अप-        | तथा   | अविभक्तानां वैश्वदेवः     |
| तथा   | श्राद्धे देश धर्मावश        |       | त्रयपर्यंतं श्राद्धभोजनं    |       | वादः                      |       | विभक्तानां वर्षपर्यंतं    |
|       | धर्माः                      | ३८३   | क्षयाहाज्ञाने               | ३८६   | श्राद्धांगतर्पणम्         | ४०९   | श्राद्धनिर्यायः           |

| पृष्ठ         | विषय                     | पृष्ठ | विषय                 | पृष्ठ         | विषय                    | पृष्ठ                 | विषय                   |
|---------------|--------------------------|-------|----------------------|---------------|-------------------------|-----------------------|------------------------|
| ४०६           | अथतीर्थश्राद्धम्         | ४१७   | प्रथमषष्ठदशमदिने०    | तथा           | पुनर्भूषुस्त्रीपुदतस्य  | तथा                   | रोदनेआशौचम्            |
| तथा           | विधवायाःपुत्राद्यनु      | तथा   | अथमृताशौचं           | तथा           | पूर्वापित्रीः           | तथा                   | आशौचान्नभक्षणं         |
| तथा           | तीर्थयात्रा विधिःकथं     | तथा   | दशाहमध्येबालोमृत     | तथा           | दतकस्यसापिंड्यं         | तथा                   | दासीदासाशौचम्          |
| तथा           | यात्रामध्येआशौचे         | ३३८   | श्चेत्               | तथा           | परपूर्वा भर्तृपत्न्योः  | ४३०                   | दास्याविशेषः           |
| तथा           | यात्रामध्येतीर्थान्तर    | तथा   | अदंतमृताशौचंदाहे     | तथा           | पुत्रयोश्च              | तथा                   | द सभेदाःपंचदश          |
| प्राप्ते      | तथा                      | तथा   | सदंतमृताशौचंदाहे     | तथा           | ऊढकन्याप्रसवमरणे        | तथा                   | रात्रौजननमरणे          |
| तथा           | वाणिज्यार्थगतेसति        | तथा   | शूद्रबालाशौचं        | तथा           | श्वशुरमातुलादीनां       | तथा                   | अतिक्रांताशौचम्        |
| ४१०           | मार्गमहानदीप्राप्तौ      | ४१८   | पितृवेश्मनिकन्याअ-   | ४२४           | पितृमरणेकन्यानामा       | तथा                   | देशांतरेअतिक्रांता     |
| तथा           | प्रथमतीर्थप्राप्ते प्रा- | तथा   | नूढारजस्वलामृताचेत्  | तथा           | शौचं                    | तथा                   | शौचम्                  |
| थना           | तथा                      | तथा   | अथानुपनीते           | तथा           | भातृभगिन्योःकन्या       | तथा                   | दशदिनमध्येश्रुतम्      |
| तथा           | तीर्थप्राप्तौ उपवास      | तथा   | त्रयहाशौचेपिण्डदान   | तथा           | याःपरस्परम्             | तथा                   | दशाहमध्येमासत्रयं      |
| मुण्डनम्      | तथा                      | विधिः | तथा                  | मातामहादिमृतौ | तथा                     | षण्मासमध्येश्रुतंचेत् |                        |
| ४११           | वर्षमध्ये पुनस्तीर्थे    | १६    | नाम्नःपूर्वखननम्     | तथा           | स्वगृहेपरमृतौ           | ४३१                   | नवमासमध्येश्रुतंचे     |
| प्राप्तौ      | तथा                      | तथा   | गर्भपातेसति          | ४२६           | बन्धुत्रयमृतौ           | तथा                   | दूर्ध्वश्रुतंचेत्      |
| तथा           | जीवत्पितृकस्यमुंडनं      | ४२०   | शिशुलक्षणं           | तथा           | जामातृमृतौ              | तथा                   | जननेअतिक्रांताशौ-      |
| तथा           | तीर्थप्राप्तौसूतकंचेत्   | तथा   | बाललक्षणं            | तथा           | श्वशूद्रपतित द्विजगृ    | तथा                   | चंश्रुतंचेत्           |
| ४१२           | तीर्थश्राद्धे अर्घ्यादि  | तथा   | कुमारलक्षणं          | ४२७           | हे मृतौगृहशुद्धिः       | तथा                   | देशांतरलक्षणम्         |
| वर्ज्यं       | ४२१                      | तथा   | पौगण्डलक्षणं         | तथा           | ग्राममध्येश्वस्तिष्ठति  | तथा                   | मातापित्रोर्विशेषः     |
| ४१३           | पिण्डाःसक्तवादिभिः       | तथा   | बालानामनुपनीता       | तथा           | चेदाशौचं                | तथा                   | स्त्रीपुत्रयोःपरस्परमा |
| कार्याः       | तथा                      | तथा   | नांचक्रियाविधिः      | तथा           | क्रियाकर्तुर्दशाहादि    | तथा                   | शौचम्                  |
| तथा           | यतीनांगयायांविशेषः       | तथा   | चतुर्वर्णेषु दशाहादि | तथा           | युद्धमृतेआशौचं          | तथा                   | सापन्नमातुरा शौचं      |
| ४१४           | अथजननाशौचं               | तथा   | महागुरवः             | तथा           | श्वस्पर्शेआशौचं         | तथा                   | आशौचसन्निपाते          |
| ४१५           | स्नावाशौचं               | ४२२   | सपिण्डलक्षणम्        | ४२८           | दंष्ट्रिकाभिर्मृतश्चेत् | तथा                   | जननेजननाशौचम्          |
| तथा           | पाताशौचं                 | तथा   | मोदकलक्षणम्          | तथा           | निर्हराद्याशौचम्        | ४३२                   | मरणेमरणाशौचम्          |
| तथा           | पूर्णाशौचं               | तथा   | गोत्रजलक्षणं         | तथा           | प्रेतालंकरणकृते         | तथा                   | जननाशौचेमरणा           |
| ५१६           | जाताशौचेविप्रादीनां      | ४२३   | दतक्रीतपुत्राणामा    | तथा           | अनाथप्रेतहरणे           | तथा                   | शौचम्                  |
| सतिकोयाविशेषः | तथा                      | तथा   | शौचं                 | ४२६           | ब्रह्मचारिणोनिर्हरणे    | ४३३                   | मरणाशौचेजननाशौ०        |
| तथा           | कन्यापुत्रप्रसवे आ-      | तथा   | व्याभिचारिणीमृतौ     | तथा           | समात्कृष्टानुगमने       | ४३४                   | स्वल्पाशौचमध्येदी-     |
| शौचं          | ४२४                      | तथा   | अनौरसेषुपुत्रेषु     | तथा           | हीनवर्णस्यदाहादौ        | तथा                   | र्थाशौचम्              |



| पृष्ठ | विषय  | पृष्ठ | विषय                                     | पृष्ठ | विषय                              | पृष्ठ | विषय                                   |
|-------|---|-------|--|-------|-----------------------------------|-------|--|
| ४३५   | दीर्घाशौचमध्ये स्व-<br>ल्पाशौचम्                | तथा   | गृह्याग्निहोमे आशौ-<br>चसंख्यादीनामपवादः | तथा   | सर्पहतेनागपूजनम्                  | तथा   | घटस्फोटविधिः                           |
| ४३६   | जननाशौचस्यगुस्त्व-<br>तथा दशमेहनाशौचांतर        | तथा   | आशौचे सतिग्रहणे<br>श्राद्धम्             | तथा   | उदकमृतानां विशेषः                 | तथा   | पतितसंस्कारविधिः                       |
| ४३७   | पाते  | तथा   | भोजने आशौचश्रवणे                         | तथा   | युच्छिन्नसंततेर्विशेषः            | तथा   | कृतघटस्फोटस्यापि<br>पुनः संस्कारविधिः  |
| ४३८   | पित्राशौचमध्येमात्रा-<br>शौचम्                  | ४४२   | लवणादिद्रव्ये आशौ-<br>चाभावः             | ४५३   | संन्यासिमृतौ संस्कारः             | ४५६   | पतितानां चरितव्रता<br>नांप्रत्युद्धारः |
| ४३९   | मात्राशौचमध्येपित्रा-<br>शौचम्                  | तथा   | सचे आमन्वे दोषा-<br>भावः                 | तथा   | अपरोनारायण बलि-<br>विधिः          | तथा   | अन्यक्रियाविधिः                        |
| तथा   | अन्वारोहणविशेषः                                 | ४४३   | विवाहेसूतकंचेत्                          | तथा   | कृतजीवच्छादु मृते                 | तथा   | तत्राधिकारिणः                          |
| तथा   | भर्तुराशौचांतरमन्वा-<br>रोहणेपुत्रजनादिप्राप्ते | तथा   | पुस्तकशुद्धिः<br>आत्मघाते                | तथा   | कृतजीवच्छादु जी-<br>वति           | तथा   | धर्मपुनः                               |
| ४४६   | आशौचापवादः                                      | ४४४   | प्रमादमरणे                               | तथा   | आहिताग्नौ प्रोषिते<br>मृते        | तथा   | योमिदः सदशाहप-<br>र्यंतं               |
| तथा   | अथाशौचापवादः                                    | ४४५   | चांडालादिभ्योमरणे                        | तथा   | पालाशविधिरस्थना<br>भावे           | तथा   | मोक्षधेनुदानमंत्रः                     |
| तथा   | पत्यादीनामा शौचा-<br>भावः                       | तथा   | पतितानां क्रिया-<br>नास्ति               | ४५५   | पालाशविधिसामग्री                  | तथा   | ऋणधेनुदानमंत्रः                        |
| तथा   | ब्रह्मचारिणा माता-<br>पित्रोर्ध्वदेहिकं कार्यम् | तथा   | आहिताग्नेर्विशेषमाह                      | तथा   | प्रोषितस्यकाल वि-<br>चारः         | तथा   | पापधेनुदानमंत्रः                       |
| ४४०   | संख्यादिलोपाभावश्च                              | ४४६   | प्रमादमरणे                               | तथा   | प्रोषितसंस्कारेकालः               | तथा   | मरणस्यपुण्यकालः                        |
| तथा   | समावर्तनोत्तरं च यहा-<br>शौचम्                  | ४४७   | सर्पहतेविशेषः                            | तथा   | प्रेतसंस्कारेकालः                 | तथा   | वैतरिणोधेनुः                           |
| ४४१   | आपद्गतस्य सूतका-<br>भावः                        | ४४८   | दुर्मरणेदानादि                           | ४५६   | आशौचमध्येसंस्कारः                 | ४६०   | उत्क्रांतधेनुः                         |
| तथा   | आशौचे आकस्मिक-<br>तोर्थप्राप्तौ                 | ४४९   | अवैधमरणे                                 | तथा   | अभ्यापवादमाह                      | तथा   | दशदानानि                               |
| तथा   | सूतकिनः पूजाधि-<br>कारः                         | ४५०   | तोर्थमरणे                                | ४५७   | निषिद्धकालेदाहेदा-<br>नानि        | तथा   | तिलपात्रदानम्                          |
| तथा   | श्रौतकर्मणि विशेषः                              | तथा   | अमृशनविधिः                               | तथा   | कृतौर्ध्वदेहिके जीव-<br>चागच्छेत् | तथा   | मरणसमये पुण्यमं-<br>चादिश्रवणम्        |
| तथा   | श्राद्धादौविशेषः                                | तथा   | पतितानांविशेषः                           | तथा   | अमृतस्यदाहादि                     | तथा   | अष्टौदानानि                            |
|       |   | तथा   | आत्मघातप्रायश्चित्त-<br>तम्              | ४५८   | स्त्रोसहगमने                      | तथा   | क्रियाकर्तुरधिकार-<br>प्राप्तिः        |
|       |   | तथा   | नारायणबलिः                               | तथा   | सर्पसंस्कारविधिः                  | ४६१   | मुमूर्षामधुपर्कदानम्                   |
|       |   | तथा   | पतितोदकविधिः                             | तथा   | नागबलिविधिः                       | तथा   | दुर्मरणेप्रायश्चित्तम्                 |
|       |   | तथा   | नारायणबलि प्रयोगः                        | तथा   |                                   | तथा   | अपृश्यस्पर्शने प्राय-<br>श्चित्तम्     |
|       |   |       |  |       |                                   | तथा   | रात्रौप्रेतदाहनिर्णयः                  |

| पृष्ठ | विषय                    | पृष्ठ | विषय                   | पृष्ठ | विषय                         | पृष्ठ | विषय                       |
|-------|-------------------------|-------|------------------------|-------|------------------------------|-------|----------------------------|
| तथा   | रात्रौवपननिषेधः         |       | नमु०                   | ४७२   | येनकेनापिक्रियाकृ-           |       | दार्थावज्यः                |
| तथा   | प्रेतस्यवपनक्रिया       | ४६८   | शवस्यस्नानादल-         |       | ताचेत्                       | तथा   | प्रतप्राद्धेअत्रादि        |
| ४६२   | आशौचांते पुनर्वपनं      |       | काराः                  | तथा   | पुत्रादिभिः पुनःकु           | तथा   | अन्वारोहणे विशेषः          |
| तथा   | रात्रयुषितेप्रेतेप्राय० | तथा   | अग्निनाशे              |       | र्यात्                       | ४८०   | आशौचांत्यदिनेकृत्यं        |
| तथा   | साम्प्रैव शेषः          | तथा   | पर्णशरदधेतद्देहला०     | तथा   | पिण्डः केनद्रव्येणक-         |       | दशमदिने                    |
| तथा   | प्रेताधानम्             | तथा   | दम्पत्योरेकदामृतौ      |       | र्तव्यः                      | तथा   | एकादशाहः                   |
| ४६३   | वृष्ट्यादिनाअग्निनाशे   | ४६६   | उदकदानविधिः            | ७३    | दशपिण्डैर्देहोत्पत्तिः       | ८१    | विप्रादीनांमेतैः पदा-      |
| तथा   | पत्नीपरमरणे             | तथा   | प्रेतस्नानेविशेषः      | था    | दशदिनपर्यंतं पात्रद्वये      |       | र्यैः शुद्धिः              |
| तथा   | प्रथमायां जीवत्यां      | तथा   | क्लीवादिभिर्नैदकं      |       | उदकं देयम्                   | तथा   | आद्यश्राद्धं मेका-         |
| ४६४   | द्वितीयायां मृतायां वै- |       | देयं                   | तथा   | मृतस्थानेतैलदीपः             |       | दशैहनि                     |
|       | तानाग्निनादाहः          | तथा   | आशौचेनियमाः            | तथा   | ओदनपिण्डो देयः               | तथा   | विधौ नैऋणकालः              |
| तथा   | दम्पत्योर्मध्ये प्रथमं  | ४७०   | प्रेतदाहानंतरंगृहे     | ४७४   | दशहमध्येदर्शश्चेत्           | तथा   | अग्नैः एकोद्दिष्टं विप्रा- |
|       | मृतस्य वैतानामाग्नि     |       | आगत्य किं कर्तव्यम्    | तथा   | मातापित्रोस्तुविशेषः         |       | भावे                       |
|       | भिर्दाहः                | तथा   | क्रौतलव्यमन्नं भक्ष    | तथा   | अथास्थिसंचयनम्               | तथा   | अथवृषोत्सर्गः              |
| तथा   | पश्चान्मृतस्यलौकि-      |       | णोयं                   | ४७५   | वर्णपरं अस्थि संचय-          | ४८२   | नीलवृषलक्षणम्              |
|       | काग्निनादाहः            | तथा   | प्रत्यहं जाति भोजनं    |       | नम्                          | तथा   | मृदादिनावृषोत्सर्गः        |
| तथा   | अपत्नी कस्याधानम्       |       | कार्यम्                | तथा   | अस्थिसंचयने श्राद्ध-         | ४८३   | पतिपुत्रवत्या स्त्रिया     |
| तथा   | विधुरस्याग्नि स्तस्य    | तथा   | मृत्युस्थाने प्रत्यहं  |       | त्रयम्                       |       | न०                         |
|       | नाशः                    |       | बलिः                   | ४७६   | चतुर्थदिवसेश्मशान            | ४८४   | सूतकप्राप्तौ इदं कर्मक०    |
| तथा   | ब्रह्मचारिपत्योर्दहि    | तथा   | नग्नप्रच्छादन श्राद्धे |       | यागः तद्विधिश्च              | तथा   | पददानं पदलक्षणं च          |
|       | ग्निनाशे                |       | दानानि                 | तथा   | तोर्थे अस्थिक्षेपः           | तथा   | शय्यादानम्                 |
| ४६५   | उत्पनान्नेर्लक्षणम्     | तथा   | अथप्रेतपिण्डाः         | तथा   | परस्यास्थिनयने दोषः          | तथा   | ललाटास्थि भोजने            |
| तथा   | निषिद्धाग्निः           | तथा   | वर्णभेदेन पिण्डदानं    | तथा   | अस्थिक्षेपं गंह्ये मश्राद्धं |       | दोषः                       |
| तथा   | साम्प्रैः पात्रन्यासादि |       | संकल्पः                | ४७७   | अथास्थिशुद्धिः               | ४८५   | उदकुम्भदानम्               |
| तथा   | शवनिर्हरणेनियमाः        | तथा   | उत्तरोयशिलापात्रम्     | तथा   | अथनवश्राद्धम्                | तथा   | अन्नदानं दीपदानं च         |
| तथा   | शवनिर्हरणप्रकारः        | ४७९   | कर्तृद्रव्यविपर्यये    | ४७८   | नवश्राद्धकरणदोषः             | ४८६   | अथमासिकानि                 |
| ४६६   | शवसंस्कारविधिः          | तथा   | क्रियाकर्तुर्नाशे      | तथा   | अत्रशाखाभेदाद्व्य-           | ४८७   | त्रिपुष्करलक्षणम्          |
| ४६७   | शअवेग्निदानमंत्रः       | तथा   | असंस्कृतानां पिण्डः    |       | वस्था                        | ४८८   | षोडशश्राद्धानि             |
| तथा   | शवस्यषट्पिण्डदा-        |       | कुत्रदे०               | ४७९   | प्रेतश्राद्धे अष्टादश प-     | तथा   | ऊनमासिकानि                 |



| पृष्ठ | विषय                                     | पृष्ठ             | विषय                                      | पृष्ठ      | विषय                            | पृष्ठ            | विषय                    |                   |
|-------|--|-------------------|---|------------|---------------------------------|------------------|-------------------------|-------------------|
| ४८६   | एककालेषोऽङ्ग आद्वानि                     | तथा               | सपिण्डी                                   | ५०२        | ब्रह्मचारिमृतौ                  | तथा              | विधवायास्तर्पणवि०       |                   |
| तथा   | उनमासिकानिच                              | तथा               | अपुत्राणां सपिण्डनं                       | तथा        | कुष्ठिमृतौ                      | तथा              | वृषारोहणकंचुकिनि०       |                   |
| ४९०   | वृद्धिआद्वैसतिमासिकापकर्षः               | ४९०               | ब्रह्मचारिणा मनपत्यानां स्त्रिया सपिण्डनं | ५०३        | अष्टौमहारोगाः                   | तथा              | अथसंन्यासः              |                   |
| ४९१   | अथसपिण्डीकरणम्                           | तथा               | नकार्यम्                                  | ५०४        | रजस्वलामरणे                     | तथा              | ब्राह्मणस्याधिकारः      |                   |
| ४९२   | साग्निकानिर                              | तथा               | यतिमृतौ पार्वणम्                          | तथा        | सूतिकामृतौ                      | तथा              | संन्यासश्चतुर्धा        |                   |
| तथा   | सपिण्डी करणं ग्नि                        | तथा               | सपिण्डीकरणविधिः                           | ५०५        | गर्भिणीमृतौ                     | तथा              | कुटीचकस्तल्लक्षणम्      |                   |
| कयोः  | ४९८                                      | ततः पुण्या हवाचनं | ५०५                                       | अन्वारोहणे | ५०६                             | अन्वारोहणप्रयोगः | तथा                     | बहुदकस्तल्लक्षणम् |
| तथा   | अन्तरितसपिण्डीकरणनक्षत्रम्               | तथा               | वृद्धिआद्वैच                              | तथा        | अन्वारोहणप्रयोगः                | तथा              | स्त्रिदण्डीतल्लक्षणम्   |                   |
| तथा   | सपिण्डीकरणे अष्टौकालाः                   | तथा               | पितृमृतौ प्रथमाद्वैनिषिद्धानि             | तथा        | वायनमंत्रः                      | तथा              | संन्यासविधिः            |                   |
| ४९३   | सपिण्डीकरणं ज्येष्ठस्याधिकारः            | तथा               | दैवपितृकर्मणि अशुचिः                      | तथा        | पंचरत्नानि मुखदिस्थाने          | तथा              | तत्रादौ प्रायश्चित्तविः |                   |
| तथा   | वर्षाते सपिण्डीकरणं                      | तथा               | संघातमरणे                                 | तथा        | ततोऽग्निसिद्धिः                 | तथा              | अष्टौमृतौ तद्विधयः      |                   |
| तथा   | पितरि देशांतरमृते सतिपुत्रैः किं कार्यम् | ४९६               | पितृवदमाशौचम्                             | ५०६        | पृथक्चित्तिरोहणे निषेधः         | तथा              | संन्यासग्रहणसामग्री     |                   |
| तथा   | सपिण्डीकरणे कनिष्ठस्याधिकारः             | तथा               | मातुः षण्मासमाशौचम्                       | तथा        | पृथक्चित्तिः क्षत्रिय           | तथा              | पूर्वनादी आद्वैकार्यं   |                   |
| ४९४   | पुनः सपिण्डी करणं विशेषः                 | ५००               | भ्रातृपुत्रयोः षण्मासं                    | तथा        | स्त्रियाः                       | ५१०              | नवआद्वैषोऽङ्ग आद्वै     |                   |
| ४९५   | व्युत्क्रममृतौ सपिण्डनेगीत्रादिः         | तथा               | प्रथमाद्वै गया आद्वै निषेधः               | ५०७        | पत्यौ देशांतर मृते गमनविधिः     | तथा              | सपिण्डीनामानि           |                   |
| तथा   | सपिण्डनाधिकारः                           | तथा               | पंचकमृते विधानम्                          | तथा        | अस्थिदाहे पलाशदाहे              | तथा              | संन्यासग्रहणसंकल्पः     |                   |
| तथा   | स्त्रीसपिण्डने विशेषः                    | ५०१               | त्रिपादक्षमरणे                            | तथा        | उदक्या अन्वारोहणे               | तथा              | ततोऽग्निसिद्धिः         |                   |
| तथा   | आसुरादिविवाहे सपिण्डनम्                  | तथा               | पंचरत्ननामानि                             | ५०८        | चित्तिभ्रष्टायां प्रायश्चित्तम् | ५११              | विरजाहोमादिः            |                   |
| ४९६   | कोकिल मतानुसारितथा                       | तथा               | त्रिपादक्षमरणे                            | तथा        | अन्वारोहणे गर्भिण्या            | ५१२              | अथयतिधर्माः             |                   |
|       |  | तथा               | शमशानाज्जीवन्पुन                          | तथा        | दीनानिषेधः                      | ५१३              | अथभिक्षा                |                   |
|       |  | तथा               | रागमने                                    | तथा        | सहगमने रजस्वला                  | ५१४              | यतिभिक्षादाने फलं       |                   |
|       |  | तथा               |   | तथा        | गुट्टिः                         |                  | यतीनां षट्कर्माणि       |                   |
|       |  | तथा               |   | तथा        | विधवाधर्माः                     |                  | निषिद्धानि              |                   |
|       |  |                   |   |            |                                 |                  | यतीनां षट्कर्माणि       |                   |
|       |  |                   |   |            |                                 |                  | पतनम्                   |                   |
|       |  |                   |   |            |                                 |                  | अन्यानि षट्बन्धकाराणि   |                   |

# निर्णयसिन्धोरनुक्रमशिका ।

१७

| पृष्ठ | विषय                | पृष्ठ | विषय                  | पृष्ठ | विषय                   | पृष्ठ | विषय                     |
|-------|---------------------|-------|-----------------------|-------|------------------------|-------|--------------------------|
| तथा   | यतिपात्राणि         | तथा   | विरजाहोमकर्तुमश-      | तथा   | यथास्थानं दण्डादि      | तथा   | एकादशेहनिपार्वणं         |
| तथा   | यतीनांनिषिद्धम्     |       | क्तश्चेदिष्टदेवताहोमः |       | दानम्                  | तथा   | परमहंसानांपार्वणं        |
| तथा   | यतीनांपुत्रादिनिधने | तथा   | समाधिसंस्कारादि       | तथा   | प्रोक्षणस्नानम्        | तथा   | द्वादशेहनिनारायण         |
|       | आशौचाभावः           | तथा   | कुटीचकस्य दहनम्       | तथा   | शंखेनमस्तकभेदनम्       |       | बलिः                     |
| तथा   | अथयतिसंस्कारः       | तथा   | बहूदकस्यपूरणम्        | तथा   | लवणेनगर्तापूरणम्       | तथा   | वर्षातेपार्वणश्राद्धं क० |
| तथा   | संन्यासग्रहणे फलम्  | तथा   | हंसस्यजलेनिक्षेपः     | तथा   | कुटीचकस्य दहन          |       | इति तृतीयपरि             |
| तथा   | आतुरसंन्यासः        | ५१    | परमहंसंपूरयेत्        |       | विधिः                  |       | च्छेदस्यानुक्र-          |
| तथा   | आतुरसंन्यासप्रयोगः  | तथा   | पलाशमूलेनदीतीरे       | तथा   | अस्थीनांतोर्थेनिक्षेपः |       | मशिका ॥                  |
| तथा   | आतुरेअप्सुहोमः      |       | पूरणम्                | तथा   | अस्यसूतकाभावः          |       |                          |

इति निर्णयसिन्धोरनुक्रमशिकासमाप्ता ॥









## निर्णयसिंधुः प्रारभ्यते ॥

— \* —

कास्तुरायेकनिकेतंरामंसीतालतायुक्तम् ॥ विश्वामित्रान्ववायव्रततिसमालंविशा  
खिनंवंदे १ लक्ष्मीसहायंकल्पद्रुतरलंजितगोकुलम् ॥ बर्हापीडंघनश्यामंमहःकिं  
चिदुपास्महे २ वेदार्थधर्मरक्षायैमायामानुषरूपिणाम् ॥ पितामहंहरिंवंदेभट्टना  
रायणाह्वयम् ३ यत्पादसंस्मृतिःसर्वसंगलप्रतिभर्मता ॥ तान्भट्टरामकृष्णाख्या  
नग्रीतातचरणा\*नुमः ४ सर्वकल्याणसंदोहनिदानंयत्पदद्वयम् ॥ द्युनदीसोदरी  
संभ्रामुमाख्यांनौमिसादरम् ५ विंदुमाधवपादाब्जलोलंबीकृतविग्रहम् ॥ ज्यायां  
संभ्रातरंभट्टादिवाकरमुपास्महे ६ हेमाद्रिमाधवमतेप्रविचार्यसम्यगालोच्यतत्त्व  
मथतीर्थकृतांपरेयाम् ॥ श्रीरामकृष्णातनयःकमलाकराख्यःकालेयथामतिवि  
निर्णयमातनोति ७ संतियद्यपिविद्वांसस्तन्निबन्धाप्रचकोटिशः ॥ तथाप्यमुख्यवै  
दग्धींकेचिद्विज्ञातुमीशते ८ (तत्रसंक्षेपतःकालःश्रीढा) अद्दोयनमृतुर्मासःपक्षो  
दिवसइति (तत्राद्दोमाधवमतेपंचधा) सावनःसौरप्रचांद्रोनाक्षत्रोबार्हस्पत्यइति  
शुभोर्मध्वमराशिभोगेनबार्हस्पत्यः सचज्योतिःशास्त्रेप्रसिद्धः हेमाद्रिस्त्वंत्ययो  
धर्मशास्त्रेऽनुपयोगात्तिस्रग्विधाआह तत्रवक्ष्यमाणैःसावनादिद्वादशमासेस्त  
त्तद्वत्स मलमासेतुसतिषष्टिदिनात्मकएकोमासइतिद्वादशमासत्वमविरुद्धम् ॥  
तथाचयानः ॥ यद्यद्यातुदिवसैर्मासःक्रथितोवादरायणैरिति (तत्रवांद्रोब्दःषष्टि

\* इदं व राजसिंहइतीवपूर्वपदार्थगतश्रैष्ठ्यताःपर्यग्राहकं ॥



भेदः । तदाह गार्ग्यः ) प्रभवो विभावः शुक्लः प्रसोदोऽथ प्रजापतिः ॥ अंगिराग्नीमुखो  
भावो युवाधातेऽथ रस्तथा ॥ बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमोऽथ वृषस्तथा ॥ चित्रभानुः  
सुभानुश्च तारणाः पार्थिवोऽव्ययः ॥ सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ॥  
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ हेमलंबो विलंबोऽथ विकारी शार्वरीश्वरः ॥  
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसु पराभवौ ॥ स्रवंगः कीलकः सौम्यः साधारणा  
विरोधकृत् ॥ परिधावी प्रमादी च आनंदो राक्षसो नलः ॥ पिंगलः कालयुक्तश्च  
सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती । दुंदुभीरुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षय इति (यद्यपि  
ज्योतिषे गुरोर्मध्यम \* राशिभोगेन प्रभवादीनां माघादौ प्रवृत्तिरुक्ता तथापि प्रभ  
वादीनां चांद्रत्वमप्यस्ति) चांद्राणां प्रभवादीनां पंचके पंचके युगे इति माधवोक्तेः ते  
न चांद्रः प्रभवादिश्चैव सिते प्रवर्तते बार्हस्पत्यस्तु माघादौ (तयोर्विनियोगो ज्योति  
निबंधे ब्रह्मसिद्धांते) व्यावहारिकसंज्ञोऽयं कालः स्मृत्यादिकर्मसु ॥ यीज्यः सर्वव्रत  
त्रापि जैवो वानर्मदोत्तरे ॥ आर्षिषेणः ॥ स्मरेत्सर्वव्रतकर्मादौ चांद्रं तंवत्सरं सदा ॥ नान्यं  
यस्माद्वत्सरादौ प्रवृत्तिस्तस्य कीर्तितेति (अयनंतु सौरर्तुत्रयात्मकं) सौरर्तुत्रितयं  
प्रदिष्टमयनमिति दीपिकोक्तेः तत्तद्विविधसदक्षिणामुत्तरंचेति कर्कसंक्रांतिर्दक्षि  
णायनं मकरैत्यस्य (अनयोर्विनियोगमाह मदतरत्ने सत्यव्रतः) देवतारामवाप्यादि  
प्रतिष्ठोदङ्मुखैरवौ ॥ दक्षिणाशामुखे कुर्वन्तत्फलमवाप्नुयात् ॥ वैखानसः ॥ मा  
तृभैरव वाराहनरसिंहत्रिविक्रमाः ॥ महिषासुरहंज्यश्च स्याप्या वै दक्षिणायने ॥  
वैशब्दोऽप्यर्थे न तु दक्षिणायनस्येति नियमः पूर्ववचने दक्षिणायने निश्चिद्धाया देव  
प्रतिष्ठाया देवविषये प्रतिप्रसवमात्रात् ॥ रत्नमालायाम् ॥ गृहप्रवेशास्त्रिदशप्रतिष्ठा  
विवाहचौलव्रतबंधपूर्वम् ॥ सौम्यायने कर्मशुभं विधेयं यद्गार्हितं तत्तत्खलु दक्षिणे  
चेति ॥ अस्यापवादः कौशोखंडे ॥ सदा कृत्युगं चास्तु सदा चास्तुत्तरायणम् ॥ सदा  
महोदयश्चास्तु काश्यां निवसतां सतां ॥ इत्ययनं (ऋतुर्मासद्वयात्मा) मलमासे तु मा

\* गोक्षिप्रागजारविर्गतिः शाश्वतो भ्रमोऽश्वः पंचाग्नयोऽथ षड्विंशत्युच्चभुक्तिः ॥ राहोस्त्वयं कुशोऽश्वो नृज  
इंदुरामास्तर्काश्विनोच्चलकेन्द्रजयोऽर्थाहिहमाः ॥ लिप्ताजिना विकल्पिका यमुरोः शराः खं शुक्राशुकेन्द्रगतिरद्रि  
गुणाः शनेर्द्वे ॥



संख्यात्मककणकोमासस्तेन मासद्वयात्मकत्वमविरुद्धम् सवेधा चांद्रः सौरश्च  
 चैत्रारंभो वसंतादिश्चांद्रः मीनारंभो मेघारंभो वा सौरः मीनमेघयोर्मेषवृषयोर्वा वि  
 संतइति बौधायनोक्तेः ॥ अनयोर्विनियोगमाह त्रिकांडमंडनः ॥ ग्रौतस्मार्तक्रियाः सर्वाः कु  
 र्याच्चांद्रमसर्तुषु ॥ तदभावे तु सौरर्तुष्विति ज्योतिर्विदां मतम् ॥ स द्विविधोऽपि योऽढा  
 वसंतोऽश्रीठमौ वर्षाः शरद्वे संतः शिशिरः इत्युतः मासश्चतुर्द्धा सावनः सौरश्चांद्रो ना  
 क्षत्रइति त्रिंशद्दिनः सावनः अर्कसंक्रांतिः संक्रांत्यवधिः सौरः यद्यपि हेमाद्रिमाधवका  
 लादशाद्यालोचनेन मेघसंक्रांत्या समाप्ता मावा स्य कत्वं चैत्रत्वमितिलक्षणाच्च मेघ  
 संक्रांतेऽप्येव त्वं प्रतीयते तथापि मेघसंक्रमे दर्शयेत्तति वैशाखस्यैवाधिक्यात्तत्पूर्व  
 भावित्वेन मीनस्यैव चैत्रत्वं युक्तं सर्वमेघादयो वैशाखाः अतो मीनसंक्रान्त्यस्यैव  
 पौर्णमासिकत्वमत्राद्यतिथिकत्वं वा चैत्रत्वमितिलक्षणात् मीनस्य सौरश्चैत्रः वै  
 श्ववैशाखादयोऽपि मेघाद्याज्ञेयाः (सौरमासप्रसंगात्संक्रांतिर्निर्णाय उच्यते) तत्र पूर्व  
 तोऽपि परतोऽपि संक्रमात्पुरायकालघटिकास्तु योऽंशोऽति सामान्यतः पुरायकालः सर्व  
 रुक्तः विशेषस्तच्च्यते अत्र मासकाः संग्रहप्रलोकाः ॥ प्रागध्वं दिशः पवतः षड्वनिस्त  
 दत्पराः पूर्वाः तस्त्रिंशत् योऽंशः पूर्वतोऽथ परतः पूर्वाः पराः स्युर्दश ॥ पूर्वाः योऽंशः चोत्त  
 राः ऋतुभुवः पश्चात्तत्वेदाः पुनः पूर्वाः योऽंशः चोत्तराः पुनरयोऽप्युत्तरास्तु मेघादितः  
 अस्यार्थः ॥ मेघे प्रागध्वं च दशघटिकाः पुरायकालः वृषे पूर्वाः योऽंशः मिथुने पराः यो  
 ऽंशः कर्कषूर्वाः तस्त्रिंशत्सिंहे पूर्वाः योऽंशः कन्यायां पराः योऽंशः तुलायां प्रागध्वं दि  
 शः पश्चिचके पूर्वाः योऽंशः धनुषि पराः योऽंशः मकरे चत्वारिंशत्पराः इदंच हेमाद्रि  
 मतेनोक्तम् माधवमते त्वत्र परात्रिंशतिः पुरायाः कुंभे पूर्वाः योऽंशः मीने पराः यो  
 ऽंशोऽति याप्युत्तरा पुरायतमासयोक्ता सायं भवेत्सायं दिसाऽपि पूर्वा ॥ पूर्वा तु योक्ता  
 यदि सा विभाते साप्युत्तरा रात्रिनिधेयः स्यात् ॥ अर्वाङ् निशीथोऽद्यदिसंक्रमः  
 स्यात्पूर्वेऽहनि पुरायं परतः परेऽहनि ॥ आसन्न\*यामद्वयमेव पुरायं निशीथसद्येतु दिन  
 द्वयं स्यात् ॥ कर्कभयेऽप्येवमिति ह्युवाच हेमाद्रिसरिप्रचतया परार्कः ॥ भयः प्रदोषे  
 यदि वार्धरात्रे परेऽहनि पुरायं त्वथ कर्कटप्रचेत् ॥ प्रभातकाले यदि वानिशीथे पूर्वेऽहनि

\* आदौ पुरायं विज्ञानोपायश्च द्विभातिथिर्भवेदिति वाक्यैकवाक्यतया र्थो बोध्यः इदमप्यनव्यतिरिक्तमेव ॥



पुरायत्विर्तिमाधवार्यः ॥ अत्रमलवचनानिमाधवापरार्कहेमाद्यादियुद्धव्यानि  
 (सर्वासंक्रांतियुदानविशेषोहेमाद्रौदानकांडेउक्तः।विश्वामित्रः)मेघसंक्रमणोभा  
 नोर्मेषदानंमहाफलं ॥ वृषसंक्रमणोदानं गवांप्रोक्तंतथैवच ॥ वस्त्राक्षपानदानानि  
 मिथुनेविहितानितु ॥ घृतधेनुप्रदानंचक्रकर्तेपि विशिष्यते समुवर्गाश्चदानंमिं  
 हेपि विहितंसदा ॥ कन्याप्रवेशेवस्त्राणांविप्रमनांदानमेवच ॥ तुलाप्रवेशेति लानां  
 गोरसानामपीष्टदम् ॥ अन्नकीचलितेभानौदीपदानंमहाफलम् ॥ अन्नकीटुप्रिच  
 कःत्रनुःप्रवेशेवस्त्राणांयानानांचमहाफलम् ॥ भक्षप्रवेशेदारूणांदानमग्नेस्तथैव  
 च ॥ कुंभप्रवेशेदानंतुगवासंबुत्तरास्यच ॥ मीनप्रवेशेस्थानानांमालानामपिचोत्त  
 ममिति(अत्रोपवासमाहहेमाद्रौवापस्तंबः)अयनेवियुवेचैवविरात्रोपोयितोनरः॥  
 स्नात्वायस्त्वर्चयेद्भानुं सर्वकामफलंलभेत् (अशक्तौतुवृद्धवशिष्टः) अयनेसंक्रमेचै  
 वग्रहरोचंद्रसूर्ययोः ॥ अहोरात्रोयितःस्नात्वासर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ अत्रोपवासः  
 संक्रमदिनेदानादितुपुरायकालदिनइत्याचार्यचंडामणिःविधिलाघवात्पुरायका  
 लदिनसंबोभयमितिदृष्ट्वाःइदंचपुत्रिगृहस्थातिरिक्तविययम् ॥ आदित्येहनिसं  
 क्रान्तिग्रहरोचंद्रसूर्ययोः ॥ उपवासोनकर्तव्यःपुत्रिणागृहिणातथेतिजैमिनिवच  
 नात् (अत्रश्राद्धमुक्तंहेमाद्रौविष्णुधर्म) श्राद्धसंक्रमणोभानोःप्रशस्तंपृथिवीपते  
 अपराकेपविष्णुः ॥ आदित्यसंक्रमंचैववियुवंचायनद्वयम् ॥ व्यतीपातोथजन्मर्क्षंच  
 द्रसूर्यग्रहस्तथा ॥ इतिकालादर्शेधिकं ॥ जन्मभक्षभ्युदयश्चरतांस्तुश्राद्धका  
 लान्धैकाम्यानाहप्रजापतिरितिद्वादशादिदिनैरर्वागयनांशप्रवृत्तावपिपुरायंवक्तु  
 मयनग्रहणम् अन्यथासंक्रमणोसिद्धेरयनग्रहणान्यर्थस्यादित्यपरार्कः ॥ हेमाद्रौव  
 पिगालवः ॥ अयनांशकतुल्येनकालेनैवस्फुटंभवेत् ॥ मृगकर्कादिगोसूर्येयास्योदग  
 यनेसति ॥ तदासंक्रांतिकालेस्युरुक्ताविष्णुपदादयइति ॥ अयनांशच्युतिरूपेसं  
 क्रान्तिकालेपिविष्णुपदादयः प्रवर्ततेतेनतत्प्रयुक्तंपुरायकालादितत्रापिज्ञेयमिति  
 सप्तव्याचख्यौ तच्चमेयायनंवृषायनमित्यादिसर्वज्ञेयं ॥ माधवोयोपिजाबालिः ॥

\* अयनभिःपुत्रीतरैःसंक्रमे ॥ प्राच्यनुहात्रितयेश्वरोपवसनंकार्यमितिदोषिकातोयमुपवासःपूर्वमायति ॥  
 २, अतएवाभ्युदयिकमित्याचक्षते ॥ ३ मकरः सर्वविष्णुपदाद्युक्तविद्यादिहयथान्यथेति तत्रैवाधिकं ॥

संक्रांतियुयथाकालस्तदीयेष्ययनेतथा ॥ अयनेविंशतिःपूर्वामकरेविंशतिः प  
रेति ॥ मकरायणोपूर्वाः विंशतिघटिकाःपुरायाःमकरसंक्रांतौतुपश्चाद्विंशतिपु  
रायाः अत्रायनेतत्संक्रांतिवदित्यर्थः (विष्णुपदादिस्वरूपं पंचदीपिकायामुक्तम्) ह  
र्यघ्निर्यसिंहवृश्चिकघटेठवर्कस्ययः संक्रमः कन्यामीनधनुर्नयुसुषडशीत्याख्यंतु  
लामेषयोः ॥ प्रोक्ततद्वियुवंभवेयन्मुदककर्तृकेदसिरामिति ॥ हर्यघ्निर्यविष्णुपदस  
नयुक्मिथुनंअत्रचपिंडरहितंश्राद्धं कुर्यात् (तथाचापरार्कमात्स्ये) अयनद्वितयेष्टा  
द्विवियुवद्वितयेतथा ॥ संक्रांतियुचसर्वासुपिंडनिर्वपणादुतइति ॥ आद्वंशुलपाणि  
रत्वस्यनिर्मूलत्वात्समूलत्वेपि ॥ ततः प्रभृतिसंक्रांतावुपरागादिपर्वसु । त्रिपिंडमा  
चरेच्छ्राद्धमेकोऽस्यमृताहनि ॥ इतिमात्स्योक्तेर्ग्रहणाग्रहणावद्विकल्पसवेत्याहत-  
न्न (अस्यपार्वणानुवादकत्वेनपिंडविधायकत्वात्पिंडोव्यक्तिः) अन्यथैकपदेपिं  
डनुवादेवित्त्रिविधौचयत्कर्तुः प्रथमपक्षवद्वैलप्यापत्तेः (तथाचोभयसमलत्वेपिंड  
रहितंपार्वणां कर्तव्यमित्युभयवचनयोरर्थः) त्रिपिंडशब्देनैकोद्विष्टव्यावर्तनमात्रं  
(संगलकृत्येषुविशेषमाहज्योतिर्निबन्धेनारदः) त्याज्याःसूर्यस्यसंक्रांतेःपर्वतःपर  
तस्तथा ॥ विवाहादियुकार्येषुनाड्यःषोडशयोडशेति ॥ सततपुरायकालोपलक्ष  
णं ॥ भानोःसंक्रांतिभोगप्रचकुलिक\*प्रचाद्वयामकइति ॥ ज्योतिःप्रकाशेवज्येषु  
परिगणानात् (अयनव्यतिरिक्तासुदशसुसंक्रांतियुरात्रौस्नानश्राद्धादिनकार्यं) अ  
ह्निसंक्रमणोक्तस्नमहःपुरायंप्रकीर्तितम् ॥ रात्रौसंक्रमणोभानोर्दिनार्धस्नानदान  
योः ॥ अर्धरात्रादधस्तस्मिन्मध्याह्नस्योपरिक्रिया ॥ ऊर्ध्वसंक्रमणोचोर्ध्वमुद  
यात्प्रहरद्वयम् ॥ पूर्णोचेर्धरात्रेतुयदासंक्रमतेरविः । प्राहुर्दिनद्वयंपुरायमुक्त्वामक  
रकर्कटौ ॥ इतिवृद्धवशिष्टादिवचनैरहःपुरायत्वोक्त्या रात्रौसंक्रमणोभानोर्दिवा  
कुर्यात्तुतत्क्रियाम् ॥ पर्वस्मात्परतोवापिप्रत्यासन्नस्यतत्फलमिति वशिष्टवचनाच्चा  
र्याद्रात्रौस्नानादिनियेधप्रतीतेःयानितु ॥ विवाहव्रतसंक्रांतिप्रतिष्ठाऋतुजन्मसु ॥  
तथोपरागपातादौस्नानेदानेनिशाशुमेति ॥ राहुदर्शनसंक्रांतिविवाहात्ययवृद्धि  
यु ॥ स्नानदानादिकंकुर्युर्निशिकाम्यव्रतेषुचेत्यादीनिविष्णुगोभिलादिवचनानि

\* कुलिकः कालवेलाचयमघटप्रचकण्टकः ॥ वारात् द्विघ्नेक्रमान्मंदेबुधेजीवेकुजेक्षणाः ॥



तानिमकरकर्कसंक्रांतिविषयागामुक्त्वा मकरकर्कटा वितितयोर्दिवानुष्ठानस्य  
पर्युदस्तत्वादिति हेमाद्रिमाधवादयः वस्तुतस्तु प्रागुक्तवचनेन तयोर्दिनद्वयपुराय  
त्वादेरेव पर्युदासान्मकरकर्कटयोरपि स्नानं दानं परेहनीत्यादिभिरहः पुरायत्वो  
क्तेऽहः पुरायत्वानुपपत्त्या कल्परान्विनियेधस्य च प्रत्यक्षरात्रिविधिना बाधात्सर्व  
संक्रांतियुरात्रावनुष्ठानविकल्पः स च देशाचाराद्व्यवतिष्ठत इति युक्तः पंथाः अयन  
योस्तु वक्तव्यो विशेषः आग्रहो माघे च वक्ष्यते (ज्योतिर्निबंधेर्गर्गः) यस्य जन्मर्क्षमा  
साद्य रविसंक्रमणं भवेत् ॥ तन्मासाभ्यन्तरे तस्य वैरक्लेशधनक्षयाः ॥ तगरसरारुह  
पत्रैरंजनीसिद्धार्थलोध्रसंयुक्तैः ॥ स्नानं जन्मर्क्षगते रविसंक्रमणे नृणां शुभदम् ॥ हे  
माद्रौ ॥ अह्नि चेद्रात्रियुष्मं स्याद्रात्रौ चेद्वासरद्वयं ॥ संक्रांतिः पक्षिणां ज्ञेया दाना  
ध्ययनकर्मसु ॥ (यत्तु गौडाः) संक्रांत्यां पक्षयोरन्ते द्वादश्यां आह्वासरं ॥ सायं संध्यां  
न कुर्वीत कुर्वश्च पितृहा भवेदिति ॥ कर्मापदेशिन्यां व्यासोक्तेः सायं पुरायकाले  
संध्यानियेधमाहुस्तन्निर्मूलम् अन्यच्च बहुवक्तव्यं विस्तरभीतेर्नोच्यते इति संक्रां  
तिनिर्यासः ॥ पक्षयुगजप्रचंद्रो मासः स द्वेधा शुक्लादिरमांतः कृत्वादिः पक्षिमांत  
श्चेति (तथा च विक्रांडमंडनः) चांद्रोऽपि शुक्लपक्षादिः कृत्वादिर्वैतिच द्विधा ॥ इ  
त्युक्त्वा देशभेदेन तद्व्यवस्थामाह ॥ कृत्वा पक्षादिकं मासं नांगीकुर्वति केचन ॥ येषां  
चर्चंति न ते यामपीष्टो विंध्यस्य दक्षिणोऽति ॥ विंध्यस्य दक्षिणो कृत्वादिनियेधादुत्तर  
तो द्वयोरभ्यनुज्ञागम्यते तथा पि शुक्लादिमुख्यः कृत्वादिर्गौराः शास्त्रे युचैव शुक्ल  
प्रतिपदे च चांद्रसंवत्सरारंभोक्तेः तदुक्तं दीपिकायां ॥ चांद्रोऽब्दो मधुशुक्लप्रतिप  
दारंभ इति न हि ये कृत्वादिमन्यन्ते ते यां वत्सरारंभो भिद्यते अतः शुक्लादिमुख्यः कृ  
त्वादिनामलमासा संभवाच्च चंद्रस्य सर्वनक्षत्रभोगेन नाक्षत्रो मासः सावनादीनां व्य  
वस्थोक्ता हेमाद्रौ ब्रह्मसिद्धांते ॥ अमावास्यापरिच्छिन्नो मासः स्याद्ब्राह्मणस्य  
तु ॥ संक्रांतिपौर्णिमासीभ्यां तथैव नृपवैश्ययोः (अत्र ब्राह्मणादीनां यत्र कर्मवि  
शेषे वचनांतरेणावसन्ते ब्राह्मणोऽग्नीनादधीतेत्यादिवन्मास उक्तस्तत्र दर्शां तत्त्वमात्रं  
नियम्यते) न तु सर्वकर्मसु दर्शां तत्वेति वृष्ट्याद्यर्थसौभरे हीयादिनिधननियमवद्वि  
धिलाघवात् त्रैवर्णिकानां सर्वकर्मसु मासविशेषविधेः सावनादीनां शुद्धानुलोमा

दिपरत्वापत्तेश्चेतिशुचरणाः ज्योतिर्गर्गः ॥ सौरमासो विवाहादौ यज्ञादौ सावनः स्मृतः ॥ आर्द्धिके पितृकार्ये च चान्द्रो मासः प्रशस्यते ॥ ऋष्यशृंगः ॥ विवाहव्रतयज्ञेषु सौरमासं प्रशस्यते ॥ पार्वणोत्पद्यकाश्चाद्धे चान्द्रमिष्टं तथा र्द्धिके ॥ स्मृत्यन्तरे ॥ सकोटिष्ठविवाहादौ ऋणादौ सौरमासवर्गः ॥ ज्योतिर्गर्गः ॥ आयुर्दीयविभागश्च प्राथमिचत्तक्रिया तथा ॥ सावनेनैव कर्तव्या शूराणां चाप्युपासना ॥ विष्णुधर्म ॥ नक्षत्रसंवासाय यानि चंदो मसि न कुर्याद्भिगणात्मकेनेति ॥ ब्राह्मे ॥ तिथिक्रये च कृष्णादिं व्रतेशु कृष्णादिमेव च ॥ विवाहादौ च सौरादिमासं कृत्ये विनिर्दिशेत् (अथ मलमासः) तत्रैकमाससंक्रांतिरहितः सितादिप्रचान्द्रो मासो मलमासः एकमाससंक्रांतिराहित्यमसंक्रांतत्वेन संक्रांतिद्वयत्वेन च भवतीति मलमासो द्वेधा अधिमासः स यमासश्चेति ॥ तदुक्तं काठकगृह्ये ॥ यस्मिन्मासे न संक्रांतिः संक्रांतिद्वयमेव वा ॥ मलमासः स विज्ञेयो मासः स्यात्तु त्रयोदश इति ॥ सत्यव्रतोपिराशिद्वयं यत्र मासे संक्रमेत्तदिवाकरः ॥ नाधिमासे भवेद्देयमलमासस्तु केवलमिति ॥ अधिकमासस्य कालनियममाह वशिष्ठः ॥ द्वाविंशद्भिर्मितैर्मसैर्दिनैः षोडशभिस्तथा र्द्धिकाराणां च तुल्येणापत्त्यधिकमासक इति ॥ एतच्च सावनादिमानेन संभवार्थं न तु नियमार्थं स अन्यथा षोडशदिनाधिकद्वाविंशन्मासानंतरं कृष्णापक्षनियमेन शुक्लादित्वभंगापत्तेः तेन न्यनाधिककाले मलमासपातेऽपि न दोषः अतएवोक्तं माधवीये मासे विंशत्तमे भवेदिति सयस्याधिज्योतिः शास्त्रे असंक्रांतिमासोधिमासः स्फुटं स्यात्तद्विसंक्रांतिमासः सयारव्यः कदाचित् ॥ सयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्तदावर्षमध्ये धिमासद्वयं च ॥ एकः सयात्पूर्वपरतश्चैक इत्यधिमासद्वयं भवतीत्यर्थः अत्र विशेषमाह ॥ जावलिः ॥ मासद्वयेऽर्द्धमध्ये तु संक्रांतिर्न यदा भवेत् ॥ प्राकृतस्तत्र पूर्वः स्यादधिमासस्तथोत्तर इति ॥ उत्तरसवकालाधिक्यं न पूर्वस्मिन्नित्यर्थः ॥ यत्तु ब्रह्मसिद्धांते ॥ चैत्रादर्वाङ्नाधिमासः परतः स्त्वधिको भवेदिति तत्र चैत्रात्पूर्वमसंक्रांतद्वये पूर्वो नाधिकः किंतु

\* सौरसंवत्सस्यांते मानेन शशिजेन तु ॥ एकादशातिरिच्यते दिनानि भृगुनंदनः ॥ मासद्वये सावृमासे तस्मान्मासोतिरिच्यते इति तु तत्त्वम् ॥ यदि द्वाविंशन्मासानंतरमधिकस्तदा एकस्मिन्नपि वर्षे द्वौ मासावधिमासौ शुद्धः कर्माहः † वक्ष्यमाणरीत्या च चैत्रात्पूर्वमसंक्रांतमसद्वये प्रथमो नाधिमासः किंतु पर इत्यर्थः ॥



पर इत्यर्थः यच्च ॥ ज्योतिः सिद्धांते ॥ घटकन्यागते सूर्ये च प्रचकेवायधन्विनि ॥ सक  
रेवायकुंभेवानाधिसासो विधीयते इति ॥ तत्तृचिकादि चतुष्टये मलमासे सति पूर्व  
स ॥ तुलाकन्यागते सूर्ये स्यात् पूर्वकालाधिक्यनियेधार्थं न त्वधिकमात्रस्य दशानां  
फाल्गुनादीनां प्रायोमाधस्य च क्वचित् ॥ नपुंसकत्वं \* भवतीत्येष शास्त्रविनिश्च  
य इति हेमाद्रौ विष्णुधर्मविरोधात् मलमासेषु कादिनियेधानुपपत्तेश्च सकरेवा  
यकुंभेवेति दृष्टांतार्थं प्राप्त्यभावाच्च स्यस्यागमनकाल उक्तः ॥ सिद्धांतशिरोमणौ ॥ ग  
तोऽथ दिनदैर्गतिशाककाले तिथीशैर्भविष्यत्यथांगाक्षसूर्यैः ॥ गजाद्यग्निभूभिस्त  
थाप्रायशो यंकुवेदेदुर्वयैः कचिद्गोकुभिश्चोति ॥ अद्वयप्रचत्वारः अद्रयः सप्त  
नंदाः नवस्य प्रातिलोभ्येन पाते ६ ७४ तैर्मितेर्वर्षे कश्चिच्चतस्रसासः पूर्वजात इत्य  
र्थः तिथयः पंचदश १५ ईशासकादश १२ १५ एवं मितेयाते कश्चिच्च विष्यतीत्यर्थः  
अंगा ६ स ५ सूर्याः १२ एकत्र १२ ५६ गजाः ८ अद्रयः ७ अग्रनयः ३ भः १  
एकत्र १३ ७८ कुः १ वेदाः ४ इंदुः १ एकत्र १ ४ १ गावः ६ कुः १ एकत्र १ ६ सतै  
र्मितेर्वर्षे याते कश्चिच्च विष्यतीत्यर्थः (अथ मलमासे कार्याकार्या निरूप्यते । तत्र जा  
वातिः) नित्यनैमित्तिके कुर्याच्छ्राद्धं कुर्यान्मलिम्लुचे ॥ तिथिनक्षत्रवारोक्तं काश्यं  
नैव कदाचन ॥ अयंच काश्यनियेधः आरंभसमाप्तिविषयः ॥ असूर्यानामयेमासान  
तेषु समसंमताः ॥ वृत्तानां चैव यज्ञानां आरंभप्रचसमापनमितिते नैवोक्तत्वात् अस  
ूर्याधिकमासा इत्यर्थः तत्र मंडलं तपते रविरिति वचनात् कारीयादेः काश्यस्य त्वा  
रंभसमाप्ती भवत एवेत्यादिरस्य न्यत्र विस्तरः काठकगृह्येऽपि मलेऽन्य गतिकुर्या  
न्नित्यनैमित्तिकीं क्रियामितितानि नैमित्तिकानि दीपिकायामुक्ताः । नित्यनैमित्तिक

\* पुंसः सूर्यस्य भावान्नपुंसकत्वं ॥ अरुणः सूर्याभानुस्तपनश्चंद्रो रविर्गर्भस्तिश्च ॥ अर्थमाहिरण्यरेता  
दिवाकरो मित्रविद्युच्च ॥ एते द्वादश सूर्यामायाद्येषु दयंति मासेषु ॥ निःसूर्ये अधिकमासो मलिम्लुचाख्यस्ततः  
पापः ॥ मासेषु द्वादशादित्यास्तपंति हिययाक्रमं ॥ नपुंसकेधिके मासिमंडलं तपते रवेरित्युक्तः ॥ १ यत्तु ॥  
प्रवृत्तं मलमासात् प्राक्काश्यं कर्म समापितं ॥ आगते मलमासे पितृसमाप्तिर्न संशय इति तत्सावनमासप्रवृत्तकृच्छ्र  
चांद्रायणादिपरिमितिमाधवः १, यस्यान्यमासे नुष्ठाने कालाति क्रमनिमित्तं प्रायश्चित्तार्पणविहितकाला  
लाभेन लोपो वा तदित्यर्थः ॥

कमग्निनठत्यनुगताग्न्याधानमर्चासुवा संस्कारादिविलोपनेसत्पुनः प्रोक्तं प्रवि  
 षादिकमिति गत्यंतरयुतंतुसोमादिकेयमेवतत्रकर्तव्यान्युक्तानि ॥ कालादर्श ॥ द्वा  
 दशाहंसपिंडांतं कर्मग्रहणाजन्मनोः ॥ सीमान्तेपुंसवेष्ट्राद्धं द्वावेतौजातकर्मच ॥  
 रोगेशांतिरलभ्येच योगेशाद्धवृत्तानिच ॥ प्रायश्चित्तनिमित्तस्य वशात्पर्वेप  
 रवच ॥ अद्दोदकुंभमन्वादिमहालययुगादियु ॥ आद्धंदर्शेप्यहरहः आद्धमनादि  
 मासिकं ॥ मलिम्लुवान्प्रमासेयुमृतानां आद्धमाद्धिकं ॥ आद्धनुपर्वदृष्टेयुतीर्थे  
 ठवेवयुगादियु ॥ मन्वादिद्युचयदानं दानंदैनंदिनंचयत् ॥ तिलगोभहिराया  
 नांसंध्योपासनयोः क्रिया ॥ पर्वहोमप्रचाग्रयांसाग्नेरिष्टिप्रचपर्वणि ॥ नि  
 त्याग्निहोत्रहोमप्रच देवतातिथिपजनं ॥ स्नानंचस्नानविधिनाप्यभक्ष्यापेयव  
 जनं ॥ तर्पणांवा निमित्तस्य नित्यत्वादुभयवचेति ॥ एतौपुंसवनसीमंतौगतच  
 गर्भाधानाद्यन्नप्राशनांतसंस्कारोपलक्षणां ॥ तदुक्तं शीपिकायां ॥ गर्भाधानमुखंच  
 चौलविधितः प्राग्जातयागांविना कृच्छ्रेष्वाग्रयां गर्जेंद्रपुरतच्छायासधानंग  
 योः ॥ तीर्थेन्दुसययोश्चपिच्यमधिकेमास्येवमाद्याचरेदितिअलभ्ययोगेऽर्धाद  
 यपक्षकादौकाग्रान्यपि वृतादीनिकार्याणीत्यर्थः पूर्वपरवमलेगुहेचेत्यर्थः म  
 हालप्रशब्देनमवावयोदशयुच्यतइतिमाधवः दर्शआद्धमलेपिकार्यं (यत्तुमृग्यशृ  
 ङ्गः) संवत्तरातिरेकेणामासोयःश्चान्मलिम्लुचः ॥ तस्मिंस्त्रयोदशेष्ट्राद्धंनकुर्या  
 दिंदुसंसयइति ॥ तत्तत्काग्र्यदर्शआद्धविप्रयं । काग्र्यंनैवकदाचनेतिनवचनात् ।  
 दर्शचकाग्र्यंष्ट्राद्धंकन्यांकन्यावेदिनप्रचेद्यादिनायाज्ञवल्क्येनोक्तं । नित्यंतुम  
 लेपिभवत्येव । दर्शेप्यहरहःष्ट्राद्धंदानंचप्रतिवासरं ॥ गोभतिलहिरायाणांमासे  
 पिस्यान्मलिम्लुचे ॥ इतिमात्स्योक्तेरितिहेमाद्यादयः (दिवोदासीयेपि) अं  
 निंदुरिंदुपूजाचहरिवारोबुधाष्टमी ॥ नाधिमासेपरित्याज्याः सीमंताच्चाशनेशि  
 शोरिति ॥ अनिंदुर्दर्शः । द्विविधमप्यमाष्ट्राद्धंनकार्यमित्यपरार्कः । अत्रयद्वि  
 हितंकर्मउत्तरेमासिकारयेदित्युक्तेः । यस्यातुदिवसैर्मासैरितिशुक्लमासकरगो  
 पिशास्त्रार्थोपपत्तेर्दर्शआद्धं मलेनकार्यमितिप्राचीनगौडाः (शालपाणिश्चसंव  
 त्तरप्रदीपेपि) एकराशिस्थितेनूर्येयदादर्शद्वयंभवेत् ॥ दर्शआद्धंतदादौस्यान्नपर



त्र\*मलिम्लुचे ॥ अत्रापि नित्यकार्यभेदेन प्राग्व्यवस्था । यद्यपि कालादर्शसर्ववा  
 र्थिकं मासद्वये कार्यमित्युक्तं तथापि हेमाद्रिमाधवापराकर्णिसमाप्तप्रथमाब्दिकं  
 त्रयोदशे मलमासे द्वितीयाद्याब्दिकं शुद्धमाससर्वकार्यं । असंक्रान्तेऽपि कर्तव्यमा  
 ब्दिकं प्रथमं द्विजैः ॥ तथैव मासिकं श्राद्धं संपिंडीकरणांत्येति हारीतोक्तेः । आ  
 ब्दिकं प्रथमं यत्स्यात्तत्कुर्वीतमलिम्लुचे ॥ चतुर्दशे तु संप्राप्ते कुर्वीत पुनराब्दिकमि  
 ति स्मृत्यंतरोक्तेषु च पुनराब्दिकं द्वितीयादि वार्थिकं त्रयोदशे मासेऽतीते चतुर्दशाद्य  
 दिने कुर्यादित्यर्थः (यत्तु सत्यव्रतः) वर्षे वर्षे तु यच्छ्राद्धं मातापित्रोर्मृतेहनि ॥ मलमा  
 से न तत्र कार्यं न्याग्रस्य वचनं यथेति तद्द्वितीयादि वार्थिकविषयम् । आब्दिकं प्र  
 थमं यत्स्यात्तत्कुर्वीतमलिम्लुचे ॥ इति पूर्वाक्तवचनात् । यत्र द्वादशमासिकं शुद्धमा  
 से भवति तत्र त्रयोदशे अधिकस्रवाद्याब्दिकं कार्यं । यत्र त्वधिकमध्ये द्वादशमासिकं  
 तत्र तस्याद्विराट्तिष्ठत्वा चतुर्दशे शुद्धस्रवप्रथमाब्दिकमिति निष्कर्षः (तेन द्विती  
 यादि शुद्धमासस्रवपृथ्वीचंद्रोदये दिवोदासीये मदनपारिजाते चैवं) मलमासमृता  
 नांत्यदास्रवाधिकः स्यात्तदा तत्रैव कार्यं (यथापैथीनसिः) मलमासमृतानांतु श्रा  
 द्धं यत्प्रतिवत्सरम् ॥ मलमासेऽपि कर्तव्यं नान्येषां तु कथंचनेति (हेमाद्रौ व्यासो  
 पि) मलमासमृतानांतु सौरमानं समाश्रयेत् ॥ स्रवादिव सस्तस्य श्राद्धपिंडोदका  
 दिषु ॥ अत्राधिकमृतस्य न द्वितीयाद्यब्देऽपि सौरविधिः द्वितीयादावग्राधिकेया  
 पूर्वनियमविधिवैरूप्यात् किंतु प्रथमाब्दिकस्य मले नियमात् । सत्यव्रते न तद्विज्ञ  
 स्य सर्वस्याधिके प्रतिप्रसवमात्रं लाघवात् । अतो न द्वितीयादौ सौरमासप्रसंगः ।  
 चांद्रसिद्धंत्याब्दिके मासप्रसार्तिथिस्पष्टे इत्यादि विरोधाच्च (यत्तु चतुर्दशायः)  
 श्राद्धीयाहनि संप्राप्ते अधिमासो भवेद्यादि ॥ मासद्वयेऽपि कुर्वीत श्राद्धमेवं न मुह्यति  
 (यच्च व्यासः) उत्तरे देवकार्याणि पितृकार्याणि चोभयोरिति तन्मासिकादिवि  
 ययं ॥ यौगादिकं मासिकं च श्राद्धं चापरपक्षिकं । मन्वादि कर्तैर्यथैकं च कुर्यान्मासद्व  
 येऽपि चेति स्मृतिर्चांद्रिकोक्तेः । तैर्यथैकं तीर्थश्राद्धं तच्च मासद्वयेऽपि कार्यमिति त्रिस्थ

\* मेषाधिस्ये सवितरियो यो मासः प्रपूर्यते ॥ चांद्रश्चैत्राद्यः संचेपः पूर्तिद्वित्वेऽधिमासोऽत्यइति ज्योतिःपिता  
 महोक्तेर्मेषाद्यधिकरणदर्शात्तत्त्वादिरूपस्य चैत्रत्वादेर्दृश्ये सत्वेऽप्यधिमासइति तदभिप्रायकमेतत् ॥

लोसेतौभट्टः(केचित्तु)प्रतिमासंमृताहेचआद्यंयत्प्रतिवत्सरम् । सन्वादौचयुगादौ  
चतन्मासोरुभयोरपीतिमरीचिवचनात् ॥ वर्षेवर्षेतुयच्छाद्वंमातापित्रोर्मृतेह  
नि ॥ मासद्वयेपितत्कुर्याद्व्याघ्रस्यवचनंयथेतिगालवोक्तेश्च । प्रत्यान्दिकंमा  
सद्वयेकार्यमित्याहुः । तत्तुच्छंप्रतिमासं मृताहेक्रियमाणांमासिकं । प्रतिसंवत्स  
रंक्रियमाणां कल्पादि\*आहमितिमरीचिवचसोमदनरत्नेनव्याख्यानात् । गा  
लवीयस्यचमासद्वयात्मकेक्षयमासइतिमाधवेनव्याख्यानात् । यच्चकौशिकदुक्त  
म् । प्रथमान्दिकंमासद्वयेकार्यं । आन्दिकंप्रथमंयत्स्यात्तत्कुर्वीतमलिस्तुचे । व  
योदशेचसंप्राप्ते कुर्वीतपुनरान्दिकमितियमोक्तेःतदपिचिंत्यंपुनरान्दिकंद्विती  
यादिवार्यिकंवयोदशे०तीतेचतुर्दशेकुर्यात् । अन्यथा । सांवत्सरंनवर्धेतआद्यंतत्र  
मृतेहनीति पैथीनसिंविरोधःस्यादिति (हेमाद्रौपृथ्वीचंद्रोदयेच) एतेननवर्धेतन  
हिंद्याच्छुद्धेपिकुर्यादेवेत्यनंतभट्टव्याख्यामानाभावात्तत्परस्तापूर्वव्याख्यायां  
तुहारीतीयेप्रथमग्रहणमवसानंयदपिनिर्णयामृतेपूर्वा कालादर्शवचनात् । म  
लमासेआहदिनस्यबंध्यत्वनिरासार्थंपिबुद्देशेनब्राह्मणान्भोजयित्वाशुद्धमासेस  
पिंडकंआहंकुर्यात् । पिंडवर्जमसंक्रांतिसंक्रांतौपिंडसंयुतं ॥ प्रतिसंवत्सरंआहमे  
वंमासद्वयेपिचेतिवृद्धपराशरोक्तेः । तदपिचिंत्यम् । पूर्वाक्तवचनस्यक्षयपूर्वभा  
व्यधिकमासविषयत्वात् । तत्रहिमासद्वयेआहृत्तं (तदाहसत्यतपाः) एकस्यवय  
दामासःसंक्रांतिद्वयसंयुतः ॥ मासद्वयगतंआहंमलमासेपिशस्यतइति॥ मासद्वयग  
तंपूर्वासंक्रांतिगतंक्षयगतंच । मलमासेक्षयमासे (अपिशब्दात्पूर्वाधमासेचेतिहे  
माद्रिःदीपिकायामपि) तत्प्राक्संख्यधमासकोयदिभवेत्तत्रत्यसांवत्सरं तस्मिं  
न्कुद्धतयाक्षयेचवचनात्कुर्याद्व्याघ्रयोःकोविदइति (कालादर्शयेतद्विषयस्येत्यलं  
बहुना । मलमासेवर्जान्युक्तानिकालादर्शे)अनित्यमनिमित्तंचदानंचसहदादिकं ॥  
अग्न्याधानाध्वरापूर्वतीर्थयात्रामरेक्षणां ॥ देवारामतडागादिप्रतिष्ठाभौजिवंधन  
म् ॥ आश्रमस्वीकृतिःकाम्यवृथोत्सर्गप्रचनिष्ठक्रमः॥राजाभिषेकःप्रथमप्रचूडा

\*स्युःपक्षहयगाःक्रमात्प्रतिपदाद्याश्चैत्रमासक्रमात् ॥ भूतौमाधवगौमधौतुमदनौज्येष्ठस्थितेपर्वणी ॥  
आहुत्रिंशदमीशुभाःशुभतराःकल्पादयःशुक्लगाइतिदीपिका ॥



कर्मव्रतानिच ॥ अन्नप्राशनमारंभोगृहाणांचप्रवेशनं ॥ स्नानंविवाहोनामातिपन्न  
 देवमहोत्सवः ॥ व्रतारंभसमाप्तीचकर्मकाश्यांचपाप्मनास ॥ प्रायश्चित्तन्तुसर्व  
 स्यमलमासेविवर्जयेत् ॥ उपाकर्मोत्सर्जनंच पवित्रदमनार्पणास ॥ अवरोहप्रचहै  
 मंतःसर्पाणांवालिखकाः ॥ ईशानस्यबालिर्विष्णोःशयनंपरिवर्तनं ॥ दुर्गेन्द्रस्था  
 पनोत्थानेध्वजोत्थानंचवज्रिणाः ॥ पर्वत्रप्रतिषिद्धानिपरवान्यच्चदैविकमिति ॥  
 अन्नमलवचनानिहेमाद्रिमाधवादिभ्योज्ञेयानि (दिवोदासीर्येपि) यात्रोत्सवंच  
 देवादिशपथंदिव्यमेवच ॥ मलमासेनकुर्वीतव्याघ्रस्यवचनंयथेति (अयंनिर्ण  
 यःक्षयमासेपिज्ञेयः) रविमंक्रमहीनेयोवज्र्याविज्याविधिःस्मृतः ॥ सप्तवर्तुहि  
 संक्रांते मलमासेषुदीरितइति ॥ काठकगृह्योक्तेः (क्षयमासमृतानांप्रत्याह्दि  
 केविशेषोहेमाद्रौ) तिष्ठग्रधे\*प्रथमेपूर्वा द्वितीयेर्द्धेतथोत्तरः ॥ मासावितिवुधे  
 प्रचंत्यौ क्षयमासस्यमध्यगौ ॥ आह्दिक्कवर्धपनेपिज्ञेयं । यन्मलमासेवज्र्य  
 मुक्तं तच्छुक्रगुर्वारस्तादिष्वपिज्ञेयं (तदावृहस्पतिः) बालेवायदिवावृद्धे शु  
 क्रेवास्तंगतेगुरौ ॥ मलमासद्वैतानि वर्जयेद्देवदर्शनमिति ॥ अनादिदेवतां  
 दृष्ट्वा शुचःरघुर्नष्टभार्गवे ॥ मलमासेष्यनावृत्ततीर्थयात्रांविवर्जयेत् ॥ आवृत्त  
 तीर्थदोषाभावमात्रं नतुफलमितिवाचस्पतिमिश्राः । तन्न । अस्तिबाधकेफल  
 हेतुत्वास्तेः (ललोपि) नीचस्थेवक्रसंस्थेप्यतिचरणागते बालवृद्धास्तयोवा सं  
 न्यासोदेवयात्राव्रतनियमविधिः कर्णवेधस्तुदीक्षा ॥ मौजीबंधांगनानांपरिणा  
 यनविधिवस्तुदेवप्रतियु वज्र्याःसद्भिःप्रयत्नात्त्रिदशपतिगुरौसिंहराशिस्थिते  
 चेति ॥ दीक्षायागदीक्षाआगमदीक्षाचतथा ॥ उद्यानचडाव्रतबंधदीक्षा वि  
 वाहयात्राचवधप्रवेशः ॥ तडागकूपत्रिदशप्रतियुवृहस्पतौसिंहगतेनकुर्यात् ॥  
 (दिवोदासीये) गुर्वीदित्येगुरौसिंहेतद्ये शुक्रमलिलुच ॥ गृहकर्मव्रतंयात्रांमन  
 सापिर्नचिंतयेत् (अस्यापवादस्तत्रैवब्राह्मो) मुंडनंचोपवासश्च गौतम्यांसिंहगे

\* यत्तु ॥ मासःसंक्रांतिहीनोधिकइति कथिताशुभिवक्तृप्रचारैःसंसर्गोहस्पतिःस्यात्समविषमतयाचालनं  
 तत्तुयस्य ॥ पूर्वचन्द्रार्कयोगैर्विरहितसंक्रांतितश्चालनस्यादृक्स्यात्कस्यमासेयदिनचइतिवैमासयुग्मंवि  
 चिंत्यमिति वटेश्वरसिद्धांतात् स्थलनसंस्कारपक्षे बोध्यम् ॥



गुरौ ॥ कन्यागतेतुक्कथायां नतुत्तीरवासिनां (तथा) आद्यासौगौतमीगंगादि  
तीयाजाहनवीस्मृता ॥ सर्वतीर्थफलंस्नानादगौतम्यांसिंहगुरौ (संहिताप्रदीपे)  
स्यात्सप्तरात्रंगुरुशुक्रयोश्चबालत्वमहनांदशकंचवार्धस ॥ वृद्धौसितेज्यावशुभौ  
शिशुत्वेशस्तौयतस्तावुपचीयमानौ (वशिष्टः) अतिचारगतेजीवेवर्जयेत्तदनंत  
रम ॥ व्रतोद्वाहादिकार्येषुअष्टाविंशतिवासरात्र (बाल्यादिलक्षणासुक्तंब्रह्मसिद्धां  
ते)रविणासतिरन्येषांग्रहाणामस्तउच्यते ॥ ततोऽर्वाग्वार्धकंप्रोक्तमूर्ध्वबाल्यंप्र  
कीर्तितमिति (बाल्यादिपरिमाणांचवृत्तशते) बालःशुक्रोदिवसदशकंपंचकंचै  
ववृद्धः पञ्चदहनांत्रितयमुदितःपक्षमैद्यांक्रमेण ॥ जीवोवृद्धःशुचिरपितथापक्ष  
मन्यैःशिशुतौवृद्धौप्रोक्तौदिवसदशकंचापरेःसप्तरात्रम ॥ पश्चिमतउदयेदशदि  
नानिबालः । अस्तेपंचदिनानिवृद्धः । पूर्वतोदिनत्रयंबालःपक्षंचवृद्धइत्यर्थः ।  
जीवोगुरुः (अन्यत्रत्वन्यथोक्तं) प्राक्पश्चादुदितःशुक्रःपंचसप्तदिर्नाशिशुः ॥  
विपरीतंतुवृद्धत्वंतद्वदेवगुरोरपीति (सयांचपक्षाराण्यवस्थामाहमिहिरः)  
बहवोदर्शिताःकालायेबाल्येवार्धकेपिवा ॥ ग्राह्यास्तत्राधिकाःशेषादेशभेदादु  
तापदीति (देशभेदप्रचमदनरत्नेगार्ग्यः) शुक्रोगुरुःप्राक्पराक्बालोविध्योदशाव  
तिषुसप्तरात्रम ॥ वंगेषुहूणेषुचयट्चपंचशेषेचदेशेविदिनंवदंतीति ॥ अस्तादेरप  
वादःकाशीखंडे-नग्रहास्तोदयकृतौदोयोविश्वेश्वरालये ॥ त्रिस्थलीसेतौवायवी  
ये-गोदावर्यागयायांचश्रीशैलेग्रहाद्वये ॥ सुरासुरगुरुणांचमौह्यदोयोनविद्य  
ते ॥ ग्रहाद्वयेतन्निमित्तककुरुक्षेत्रयात्रादानादावित्यर्थः । तदाहत्रिस्थलीसेतौ  
ललः- उपप्लवेशीतलभानुभान्वोरर्धादयेवैकपिलाख्ययठ्यां ॥ सुरासुरेज्या  
स्तमोपितीर्थयात्राविधिःसंक्रमणोचशस्तः ॥ नमूढदोयोनचरात्रिदोयोनचा  
धिसासीनमृतिर्नसतिः ॥ सवसप्युत्तरार्द्धपठंति । इत्यलंबहुना । (मलमासेचव्रतवि  
शेषउक्तोहेमाद्रौपात्रे) अधिसासेतुसंप्राप्तेण्डसर्पियुंतानिच ॥ त्रयस्त्रिंशदपपा  
निदातव्यानिदिनेदिने ॥ साज्यानिण्डमिश्राणिअधिसासेनृपोत्तम ॥ अधिसासे  
तुसंप्राप्तेवय \* त्रिंशत्तुदेवताः ॥ उद्दिष्ट्यापपदानेनपृथ्वीदानफलंलभेत ॥

\*अष्टौवसवकादशरुद्राद्वादशाहित्याःप्रजापतिश्चवषट्कारश्च



त्रयस्त्रिंशदपपान्नंक्रांस्यपात्रेनिधाय च ॥ सधृतंसाहिरायंचब्राह्मणायनिवेद  
येत ॥ विष्णुरूपीसहस्रांशुःसर्वपापप्रणाशनः ॥ अपपात्रप्रदानेनममपापं  
व्यपोहतु ॥ नारायणजगद्बीजभास्करप्रतिरूपक ॥ व्रतेनानेनपुत्रांश्चसंपदंचा  
भिवर्धय ॥ यस्यहस्तेगदाचक्रोगुरुडोयस्यवाहनं ॥ शंखःकरतलेयस्यसमेविष्णुः  
प्रसीदतु ॥ कलाकाष्ठादिरूपेणानिमेघघटिकादिना ॥ योवंचयतिभतानितस्मै  
कालात्मनेनमः ॥ कुरुक्षेत्रमयंदेशःकालःपर्वद्विजोहरिः ॥ पृथ्वीसैममिदंदानं  
गृहाणपुरुषोत्तम ॥ मलानांचविशुद्ध्यर्थपापप्रशमनायच ॥ पुत्रपौत्राभिवृध्य  
र्थतवदास्यामिभास्कर ॥ संवेणानेनयोदद्यात्तत्रयस्त्रिंशदपपकान ॥ प्राप्नोति  
विपुलालक्ष्मींपुत्रपौत्रादिसंपदइति ॥ इति निर्यायसिन्धौमलमासनिर्यायः ।  
(पक्षनिर्यायस्तु) दैवेमुख्यःशुक्लपक्षः कृष्णःपित्र्येविशिष्यतइतिमाधवेनोक्तः  
(अथतिथिनिर्यायः) तत्रतिथिर्द्वेधा । शुद्धाविद्धाच । दिनेतिथ्यंतरसंबंधरहिता  
शुद्धा । तद्रहिताविद्धा (तत्रशुद्धायामसंदेहाद्विद्वानिर्यायते) तत्रसामान्यतो  
वेधमाहमाधवीयेपैङ्गोनसिः । पक्षद्वयेपितिथयस्तिथिंपूर्वातथोत्तराम ॥ त्रिभि-  
र्मुहूर्तैर्विध्यंतेसामान्योयंविधिःस्मृतइति ॥ हेमाद्रिमदनरत्नादौतुद्दिमुहूर्तौप्यु-  
क्तः । उदितेदैवतंभानौपित्र्यंवास्तमितेरवौ ॥ द्विमुहूर्तत्रिरह\*श्चसातिथिह  
व्यकच्ययोरिति विष्णुधर्मोक्तेः द्विमुहूर्तत्वंचानुकल्पः द्विमुहूर्तपिकर्तव्याया  
तिथिर्द्विगामिनीतिदक्षेणापिशब्दोक्तेः (अयंवेधःप्रातरेव । सायंतुत्रिमुहूर्तौ  
वेधसव)यांतिथिंसमनुप्राप्ययात्यस्तंपश्चिनीपतिः॥सातिथिस्तद्दिनेप्रोक्तात्रिमुहू-  
र्त्तवयाभवेदितिस्कांदोक्ते दीपिकापि—त्रिमुहूर्तगातुसकलासायेति । यानितु  
—ब्रह्मोपवासस्नानादौघटिकैकापियाभवेत् ॥ उदयेसातिथिर्ग्राह्याविपरीतातुपै-  
तृका ॥ इत्यादीनिस्कांदादिवचनानितानिर्वैश्वानराधिकरणान्यायेनावयवस्तु-  
त्यात्रिमुहूर्तप्रशंसापराणा । (तिथिविशेषेवेधविशेषःस्कांदे) । नागोद्वादश  
नाडीभिर्दिकंपंचदशभिस्तथा ॥ भूतोद्वादशनाडीभिर्दूर्ययत्युत्तरांतिथिमिति ॥  
अयंचोपवासातिरिक्तविषयइतिवक्ष्यतं । इतिवेधः (तत्रसर्वातिथिर्यदहःकर्म

\* अस्तामतरवौचइस्त्रिमुहूर्तपित्र्यामित्यर्थः । पंचमी

निर्णायसिन्धुः प० १ ।

१५

कालव्यापिनीसैवग्राह्या) कर्म\*गोयस्ययः कालस्तत्कालव्यापिनीतिथिः ॥ त  
याकर्माणि कुर्वीत हासः वृद्धीनकारणमिति विष्णुधर्मोक्तेः (दिनद्वयेतद्व्याप्तावेक  
देशव्याप्तोवायुगमवाक्यान्निर्णायः) तस्य पूर्वाभावेनोपपत्तेः । कर्मकालस्य प्रधानां  
गत्वाच्च । युगमवाक्यं तु निगमः । युगमार्गिण्युगभूतानां यरामुन्योर्वसुरंध्रयोः ॥ रुद्रे  
राद्वादशीयुक्ता चतुर्दश्याच पूर्णिमा ॥ प्रतिपद्यप्यमावास्यातिथ्योर्युगसंमहा  
फलं ॥ सतद्वयस्तं महादोषं हंति पुरायं पुरा कृतमिति ॥ अत्र रंध्रांताः शब्दाः द्वितीया  
दिनवस्यंति तिथिवाचकाः रुद्रसकादशी द्वितीया तृतीया युता सा च द्वितीया युते  
तिसप्तयुग्मानीत्यर्थः । इदं च शुक्लपक्षे । अमा प्रतिपद्युगमस्य पूर्णिमायाश्च तत्रै  
व सत्त्वादिति केचित् । तत्त्वं वमावास्या प्रतिपद्युग्मात् कृष्णा पक्षलिंगात् पक्षद्वयपर  
मिदं तत्तद्विशेषवाक्यैः कृष्णो तिथिविशेषो ह्यत इति । (दशमीतुक्ता पुराणा समु-  
चये) — संपूर्णो दशमीकार्या मिथिता पूर्वयाथवेति ॥ (संपूर्णो शुक्लपक्षे त्रयोदशी  
तसु संतु नोक्ता) — त्रयोदशी तु कर्तव्याद्वादशी सहिता मुने इति । (कृष्णपक्षे त्वाप  
स्तंबः) प्रतिपत्स द्वितीया स्यात्त द्वितीया प्रतिपद्युता ॥ चतुर्थी संयुताया च सा तृतीया  
फलप्रदा ॥ पंचमी च प्रकर्तव्या यद्युक्ता तु नारद ॥ कृष्णपक्षे षष्ठी चैव कृष्णा  
पक्षे चतुर्दशी ॥ पूर्वविद्धा प्रकर्तव्या परविद्धान कुर्वचि ॥ दशमी च प्रकर्तव्या  
सुदुर्गा द्विजसत्तम ॥ यद्यष्टमी अमावास्या कृष्णपक्षे त्रयोदशी ॥ सताः परयुताः  
पुज्याः पराः पूर्वेण संयुता इति ॥ (यत्तु व्याघ्रः) — खर्वो दर्पस्तथा हिंसा त्रिविधाति  
थिलक्षणा ॥ खर्वदर्पो परौपज्यौ हिंसा स्यात्तत्पूर्वकालिकीति ॥ खर्वः साम्थ्यम् ।  
दर्पो वृद्धिः । तयोः परा हिंसा क्षयस्तत्पूर्वत्यर्थः । सत्तच्छाब्दादिविषयम् । द्वितीया  
दिषु युग्मानां पुज्यतानियमादिषु ॥ एकोदिष्टादिवृद्ध्यादौ हासवृद्ध्यादिचोदनेति  
व्यासोक्तेः ॥ नियमादिषु ब्रतदानादिकर्मसु । एकोदिष्टादिति ये वृद्ध्यादावित्यर्थः क  
र्मकालव्याप्यभावे तु कर्मोपक्रमकालगैवग्राह्या-कर्मोपक्रमकालगातु कृतिभिर्ग्रा

\* एवं च । दिवारात्रिब्रतयश्च एकमेव तिथौ गतं ॥ तस्यामुभयगामिन्यामारभेत ब्रतं ब्रतो व्यनु-वाटः  
तिथेः परस्यावटिकाश्च याभ्यु-र्युनास्तथाचाभ्यधिकाश्च तासां । अर्द्धवियोज्यं च तथा प्रयोज्यं ह्यसौ च वृद्धौ  
प्रथमे दिने स्यात् ॥



ह्यानयुग्मादरइतिदीपकोक्तेः।यानितु-यांतिथिसमनुप्राप्यउदयंयातिभास्करः॥  
 सार्तिथःसकलाज्ञेयादानाध्ययनकर्मसु ॥ इत्यादीनितानिब्रिमुहूर्त्तादिस्तुतिरि  
 तिनिर्णयशैली (अथैकभक्तंतत्कालःप्राप्ते) मध्याह्नव्यापिनीग्राह्याएकभक्तेस  
 दातिथिरिति (मध्याह्नश्चपंचधाविभक्तदिनतृतीयांशः) तेनयद्यपिद्वादशदंडा  
 नंतरंप्राप्यतेतथापिदिनार्धसमयेतीतेभुज्यतेनियमेनयत् ॥ एकभक्तमितिप्रोक्त  
 मतस्तस्यादिवैवहोतिस्कांदोक्तेः । योडशसप्तदशादिदंडामुख्यःकालः (दीपि  
 कायांतु)मध्याह्नांत्यदलेत्रिभागादिवसेस्यादेकभक्तमिति । ततःसर्वास्तपर्यंतंगौ  
 राः । दिवैवहोत्यस्यवैयर्थ्यापत्येतत्परत्वात् अत्रपूर्वेद्युर्व्याप्तिःपरेद्युरुभयेद्यु  
 व्याप्तिस्तदभावोऽव्याप्तिस्तत्रापिसाम्यं वैयर्थ्यंचेतियदुपस्थाः । तत्राद्ययोरसंदेह  
 सवत्तीयेतुपूर्वेह्निगौरामुख्यप्राप्तेःसत्त्वात्पूर्वतिसमाधवः । युग्मवाक्यानिर्णयइ  
 तिहेमाद्रिः । चतुर्थपक्षेपूर्वेवगौराकालव्याप्तेःसत्त्वात् । वैयर्थ्येणांशव्याप्तौया  
 धिकासाग्राह्या । सोम्येपूर्वाश्रयंचस्वतंत्रैकभक्तनिर्णयः । अन्यंगोउपवासप्रति  
 षेधस्तदनुसारेणानिर्णयः (अथनक्तं) तच्चदिनानशनपूर्वरात्रिभोजनं । तत्रप्रदोष  
 व्यापिनीग्राह्या । प्रदोषव्यापिनीग्राह्यातिथिर्नक्तव्रतसदेतिवत्सोक्तेः (प्रदोष  
 स्तु) ब्रिमुहूर्त्तप्रदोषःस्याज्ञानावस्तंगतेसति ॥ नक्तंतत्रतुकर्तव्यमितिशास्त्रवि  
 निश्चयइतिमदनरत्नेव्यासोक्तेः । तत्रापिदंडोत्तरंकार्यसायंसंध्याविघटिकाअ  
 स्तादुपरिभास्वतइति (स्कांदोक्तेर्दंडत्रयस्यसंध्यात्वात्तत्र) चत्वारिमानिकर्मा  
 णिसंध्यायांपरिवर्जयेत् आहारंमैथुनंनिद्रास्वाध्यायंचचतुर्थकमिति ॥ मार्कंडेये  
 नभोजननिषेधात् । मुहूर्त्तानंदिनंनक्तं प्रवदंतिमनीषिणाः ॥ नक्षत्रदर्शनाच्चक्तम  
 हंसन्येगणाधिपेतिमाधवीयेभविष्योक्तेश्च ॥ गौडास्तु ॥ प्रदोषोस्तमयादूर्ध्व  
 घटिकादयमिष्यत इतिवत्सोक्तःप्रदोषः (संध्याचदिनरात्र्योःसंधौमुहूर्त्तः) अ  
 धास्तिमयासंध्याव्यक्तीभितानतारकायावत् ॥ तेजःपरिहानिवशाज्ञानोर्ध्वादयं  
 यावदितिवराहोक्तेरित्याहुः ॥ तन्नअस्यसंध्यावंदनानध्यायादिपरत्वात् । अत  
 सवत्त्रयंदंडमंडलस्यसंध्यात्वमुक्तं विज्ञानेश्वरेणा । (यच्चमदनरत्ने)- नक्तस्यवैध  
 त्वाद्रागप्राप्तभोजनगोचरोनिषेधइत्युक्तं । तन्न।(विधेर्निषेधाविरोधात्अन्यथा

कपिंजलानित्यत्रविभ्योर्विकानांहंसनस्यात्) सायंकालेनक्तन्तु दिनद्वयेप्रदो  
यस्पर्शज्ञेयं (अतथात्वेपरत्रस्यादस्तादवर्ग्यतोहिसेतिजाबालिवचनात्) प्रदो  
यव्यापिनीनस्यादिवानक्तविधीयते ॥ आत्मनोद्विगुणाच्छायासंदीभवतिभास्क  
रे ॥ तन्नक्तनक्तमित्याहुर्नक्तान्निशिभोजनमिति (स्कांदाच्च । यत्यादीनामपि  
सायाहने) नक्तान्निशायांकुर्वीतगृहस्थोविधिसंयुतः ॥ यतिप्रचविधवाचैवकुर्या  
त्तत्सदिवाकरमितितत्रैवस्मृत्यंतरात् । इदमपुत्रविधुरोपलक्षणां । पुत्रवतस्तुरा  
वावेव ॥ अनाग्रमोप्याग्रमीस्यादपत्नीकोपिपुत्रवानितिसंग्रहोक्तेः ॥ (सौरन  
क्तन्तुद्वैव) त्रिमुहूर्तस्पृगेवाहनिनिशिचैतावतीतिथिः ॥ तस्यांसौरंभवेन्नक्त  
महन्येवतुभोजनमितिसुसंतक्तेः (हरिनक्तेविशेषः कालादर्शेस्कांदे) उदयस्था  
सदापूज्याहरिनक्तव्रतेतिथिरिति ॥ अन्यनक्तन्तुसंक्रात्यादावपिरावावेवनिषेध  
स्यरागप्राप्तंभोजनगोचरत्वेनवैधावाधकत्वात् । दिनद्वयव्याप्तौपरा । उभयोर्य  
दिवातिष्ठयोः प्रदोयव्यापिनीतिथिः ॥ तत्रोत्तरत्रनक्तंस्यादुभयत्रापिसायतइ  
ति ॥ कालादर्शेजाबालिवचनात् । अन्यपक्षेयुगकभक्तवर्त्तिर्णयः (अत्रविशेषो  
मदनरत्नेगारुडे)हविष्यभोजनंस्नानंसत्यमाहारलाघवं ॥ अग्निकार्यमधःशय्यां  
नक्तभोजीयडाचरेत् ॥ अग्निकार्यव्याहृतिहोमः । इतिनक्तं (अयाचिते\*तुवि  
शेषवचनाभावात्तपक्षेउपवासेप्राप्तेउपवासवर्त्तिर्णयः । अथनक्षत्रव्रतकालनिर्ण  
यः विष्णुधर्मे) उपोषितव्यंनक्षत्रंयस्मिन्नस्तमित्याद्रविः ॥ युज्यतेयत्रवातारानि  
शीयेशनिनासहेति (माधवीयेस्कांदे) तत्रैवोपवसेदृक्षेयन्निशीथादधोभवेत् ॥  
उपवासेयदृक्षंस्यात्तद्विनक्तैकभक्तयोः (अथव्रतपरिभाषातत्राधिकारिणोऽमद  
नरत्नेभविष्ये) — अनरनयस्तुयेविप्रास्तेषांश्रेयोविधीयते ॥ व्रतोपवासनिय  
मैर्नानादानैस्तथानृप (अनरग्निग्रहणामुपवासविषयस्य ॥ अतएवदेवलः) आहिता  
ग्निनरनङ्गांश्चब्रह्मचारीचतेत्रयः ॥ अप्रनंतसर्वसिद्धांतिनैषांसिद्धिरनप्रनताम् ॥

\* एकभक्तायाचितयोर्विंशघटिकावधिः ॥ सातिथिःसकलाज्ञेयानक्तेसायाहसंगतेतिविशेषवचनानि  
र्णयइतिमयूखे ॥ भृत्यभार्यादिभ्योपिनयाचितव्यमत्यन्यत्रविस्तरः † अयाचितश्चफलभोक्तृत्वसमानाधि  
करणाकर्तृत्वमधिकारः ॥



सकादश्यादौ तु वचनाद्भवतीति वक्ष्यामः (शूद्रस्याप्यधिकारः) शूद्रो वर्गाश्चतुर्थो  
 पि वर्गात्वाद्धर्ममर्हति ॥ वेदमन्त्रस्वधास्वाहावयत्कारादिभिर्विर्नेति व्यासोक्तेः ॥  
 प्राच्यास्तुत्रैश्च शूद्रयोर्द्विरात्राधिकोपवासनिषेधः । वैश्याः शूद्राश्च ये मोहादुप  
 वासं प्रकुर्वते ॥ त्रिरात्रं पंचरात्रं वा ते श्राव्युष्टिर्न विद्यते ॥ चतुर्थभक्तसंप्राप्त्यैश्वर्ये शूद्रे वि  
 धीयते ॥ त्रिरात्रं तु न धर्मज्ञैर्विहितं ब्रह्मवादिभिरिति ॥ हेमाद्रौ वचनादित्याहुः ।  
 यावदुक्तनिषेधइत्यन्ये । तत्त्वंतु निर्मूलमिति प्रकरणान्महातपोविषयइतियुक्तम्  
 (एवं स्त्रीणां अपि यत्तु स्कांदे) नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम् ॥ भर्तृ  
 शुश्रूषयैवैतालोका निश्चान्वर्जंति हि ॥ यदेवैश्वर्यं चापि त्रिकैभ्यः कुर्याद्विती  
 र्भ्यश्च न संत्तिक्यांच ॥ तस्यार्धवैसाफलं नान्यचित्तानारीभुंक्ते भर्तृ शुश्रूषयैव (आ  
 दित्यपुराणो) नारीः खल्वननुज्ञाता भर्त्रावापि सुतेन वा ॥ विफलं तद्वेत्त स्यात्क  
 रीत्यौर्ध्वदेहिकमिति ॥ और्ध्वदेहिकं पारलौकिकं तद्वर्जननुज्ञाविषयम् । धार्या  
 पत्युर्मृतेनैव व्रतादीनां चरेत्सदेति कात्यायनोक्ते (अत्र विशेषो हरिवंशे) स्नानं च  
 कार्यं शिरसस्ततः फलमवाप्नुयात् ॥ स्नात्वा स्त्री प्रातस्तथा यपतिं विज्ञापयेत्सती  
 (तथा) गृहीत्वौदुंबरं पात्रं सकुशं सासतं तथा ॥ गोशृङ्गन्दक्षिणां सिंच्य प्रगृहणीया  
 च तज्जलम् ॥ औदुम्बरं ताम्रमयम् ॥ ततो भर्तुः सती दद्यात्स्नातस्य प्रयतस्य च ॥ आत्म  
 नश्चाभिषेक्तव्यं ततः शिरसि तज्जलम् ॥ उपवासे युक्तव्यमेतद्विव्रतकेषु चेति ॥  
 (सर्वव्रतेषु संकल्पविधिश्च भारते) गृहीत्वौदुंबरं पात्रं वारिपूर्णा मुदङ्मुखः ॥ उ  
 पवासंतु गृहणीयाद्यद्वा संकल्पयेद्बुधः ॥ हस्तेनैवेत्यर्थः (अत्र व्रतारंभकालः सदन  
 रत्ने गार्ग्यः) अस्तगे च गुरौ शुक्रे बाले रृद्धे मलिम्लुचे ॥ उद्यापनमुपारंभं व्रतानां नैव  
 कारयेत् ॥ (रत्नमालायां) सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवंति सिद्धिदाः ॥  
 भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्मसिद्धयति (तथा) विरुद्धसंज्ञा इह ये  
 च योगास्तेषां निष्ठः खलु पादत्राद्यः ॥ सर्वैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वाप्यरिष्टः  
 परिधस्य चार्द्धम् ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे सवज्जे व्याघातसंज्ञेन वपंचशले ॥ गंडेऽति  
 गंडे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः (संग्रहे) कृष्यो गिर्निदिशयो हर्षसप्त

\*नारीकर्तृककर्मणो यथावैफल्यं अकरणयोग्यता वच्छेदकं समायातितयैतस्यार्थवर्णयतामिति भावः ॥

भीमतयोरधः॥ शुक्ले वेदेशयोस्तुर्ध्वं भद्रा प्राग्वसुपूर्गायोः (श्रीपतिः) नसिद्धिमाया  
 तिक्रतंच विद्यां विचारिघातादिकमत्रासिद्धम् (व्यवहारसमुच्चये) दशम्यामष्टम्यां  
 प्रथमघटिकापंचकपरं हरिद्युः सप्तम्यां द्विदशघटिकांते विघटिकं ॥ तृतीयाराका  
 यां खयमघटिकाभ्यः परभवं शुभं विद्येः पुच्छं शिवतिथिचतुर्थ्यास्तु विरमे (तत्रैव)  
 सर्पिणीतुसितेपक्षे कृष्णौ चैव तृष्टिचकी ॥ सर्पिण्यास्तुमुखंत्याज्यंतृष्टिचक्याः  
 पुच्छमेव च (माधवीये) विष्टिर्यदाह नितिथेरपरार्द्धजाता पूर्वार्द्धजानि शतदाशु  
 भदा च पुच्छे (ब्रह्मयां मले) दिनभद्राय दारात्रौरात्रिभद्राय दार्दिवा ॥ नत्याज्याशु  
 भकार्येषु प्राहुरेवं पुरातनाः (श्रीपतिः) यत्पौष्णातोद्वादशशांकराच्च पौरंदराद्वा  
 निनवक्रमेणा ॥ पूर्वार्द्धमध्यापरभागयुं जिचिरंतनं ज्योतिषिकैः स्मृतानि (व्रतारंभे  
 च विशेषः सदनरत्ने सत्यव्रतेनोक्तः) उदयस्थितिथिर्याहिनभवे द्विनमध्यभाक् ॥ सा  
 खंडानव्रतानां स्यादारंभश्च समापनमिति (देवलः) अभुक्त्वा\* प्रातराहारं स्नात्वा  
 चम्यसमाहितः ॥ सूर्याय देवताभ्यश्च निवेद्य व्रतमाचरेत् ॥ (सदनरत्ने भविष्ये) स  
 मासत्यंदयादानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥ देवपजारिहवनं संतोषः स्तेयवर्जनं ॥ सर्व  
 व्रतेष्वयंधर्मः सामान्यो दशधा स्मृतः ॥ अग्निहोमस्तद्वैवत्यः । व्याहृतिहोमो वे  
 तिवर्धमानः । यत्तु तेनोक्तम् सर्वपदमेतत्पुराणोक्तप्रकृतव्रतपरम् । व्रतांतरे तु विध्यंत  
 रसत्वे होमोऽन्यथान् । अतस्त्वैकादश्यां शिष्टानां होमानाचरणमिति । तन्न । ज  
 पोहोमश्चेति वक्ष्यमाणौ कवाक्यत्वेनास्य कास्यव्रतसमाप्तिपरत्वात् । तत्त्वं तु साप्त  
 दश्यस्य पशुभिर्विंदादिप्रकरणास्थेनेव तत्तद्व्रतविशेषहोमविधिभिरस्योपसंहा  
 रयति (विष्णुधर्म) तज्जप्य जपनंध्यानं तत्कथाश्रवणादिकम् ॥ तदर्चनंच तन्नामको  
 र्त्तनश्रवणादयः ॥ उपवास\* कृतमेतेषु गणाः प्रोक्ता मनीषिभिः (कौर्मै) वहिर्गमिंत्य  
 जान्मूर्तिपतितंचरजस्वलास ॥ नस्पृशेन्नाभिभायेतनेसेतव्रतवासरे (पृथ्वीचंद्रोदये  
 अग्निपुराणो) स्नात्वा व्रतवता सर्वव्रतेषु व्रतमूर्त्तयः ॥ पूज्या सुवर्गामष्टयाद्याः शक्त्या  
 वैभूमिशाधिना ॥ जपोहोमश्च सामान्यं व्रतांतेदानमेव च ॥ चतुर्विंशद्वादशवा

\* अशक्तस्यानुज्ञाते द्वादिभक्षणनिषेधः प्रातरितिक्रियान्वयि ॥ \* उपावृतस्य पापेभ्यो यस्तु वासोगुणैः सह ॥ उपवासः सविज्ञेयः सर्वभोगविवर्जित इति ॥



पंचवात्रयसवच ॥ विप्राभोज्यायथाशक्तितेभ्योदद्याच्चदक्षिणास ॥ अत्रविप्राइ  
 तिपुल्लिंगनिर्देशात्पुमांससवभोज्याः नतुस्त्रियः (एवंसहस्रभोजनादावपि) विरू  
 पैकदेशस्यप्रमाणांतरंविनायुक्तत्वात् (अतसवद्वयोर्यजमानयोःप्रतिपदंकुर्यात्)  
 बहुभ्योयजमानेभ्यइत्यादौविरूपैकशेधायोगात् । पत्न्यभिप्रायंहित्वंबहुत्वंवा  
 नसंभवतीत्युक्तमाचार्यैः । पार्थसारथिनाच । एतेनैकस्यब्राह्मणास्यावृत्त्याभोज  
 नंपरास्तंबहुत्वस्यैकपदश्रुत्याब्राह्मणान्वितत्वेन भोजनान्वयाभावादित्यन्यत्र  
 विस्तरः शुद्धस्यतुप्रतिष्ठादिर्बाह्विप्रहाराव्याहृतिहोमइतिवर्धमानः व्रतमर्तयोव्रतदे  
 वताप्रतिमाः (प्रतिमास्वरूपंपंचमदनरत्नेभविष्ये) अनुक्तद्रव्यतत्संख्यादेवताप्रति  
 मानृप ॥ सौवर्णीराजतीताम्रीवृक्षजामार्तिकीतथा ॥ चित्रजापिष्टलेखोत्थानि  
 अवित्तानुरूपतः ॥ आमायात्पलपर्यंतं कर्तव्याशाठ्यवर्जितैः (तत्रैवब्राह्मे)  
 आज्यद्रव्यमनादेशे जुहोतियुविधीयते ॥ मंत्रस्यदेवतायाश्च प्रजापतिरिति  
 स्थितिः । मंत्रानुक्तो समस्तव्याहृतिरूपोमंत्रः प्रजापतिश्चदेवतेतिकल्पतरुः ।  
 (वर्द्धमानधृतदेवीपुराणो) होमोग्रहादिपूजायांशतमष्टाधिकंभवेत् ॥ अष्टाविंशति  
 रष्टौवा यथाप्राप्तिविधीयते (मदनरत्ने) अनुक्तसंख्यायत्रस्याच्छतमष्टोत्तरं  
 स्मृतम् (वर्द्धमानधृतवृद्धशातातपः) उपवासं द्विजः कृत्वा ततोब्राह्मणाभोजनम् ॥  
 कुर्यात्तेनास्यसगुणा उपवासोऽभिजायते (व्रतोद्यापनानुक्तो पृथ्वीचंद्रोदयेचंदि  
 पुराणो) कुर्यादुद्यापनंतस्यसमाप्तौयदुदीरितम् ॥ उद्यापनंविनायत्तुतद्भूतंनिष्फ  
 लंभवेत् ॥ यदिचोद्यापनंनोक्तंव्रतानुगुणतश्चेत् ॥ वित्तानुसारतोदद्यादनुक्तो  
 द्यापनेव्रते ॥ गाश्चैवकांचनंदद्याद्वतस्यपरिपूर्यते (अशक्तौनारदीये) सर्वथा  
 सप्यलाभेतुयथोक्तकरणांविना ॥ विप्रत्राक्यंस्मृतंशुद्धंव्रतस्यपरिपूर्यते ॥ यथा  
 विप्रवचोयस्तुगृह्णातिमनुजः शुभम् ॥ अदत्त्वादक्षिणांपापः सयार्तिनरकंध्रुवम् ॥  
 (भारते) वेदोपनिषदेचैवसर्वकर्मसुदक्षिणा ॥ सर्वव्रतमयोहिष्ठा भूमिर्गावोथ  
 कांचनम् (वैजवापः) शिवनेत्रोद्भवयस्माद्रजतंपितृवल्लभम् ॥ असंगलंतद्यत्ने  
 नदेवकार्येषुवर्जयेत् (टोडरानंददेवीपुराणो) व्रतेचतीर्थेऽध्ययने आद्वेपिचविशे  
 यतः ॥ परान्नभोजनादेवियस्यान्नंतस्यतत्फलम् ॥ (पृथ्वीचंद्रोदयेऽग्निपुराणो)

नित्यस्नायीमिताहारोगुरुदेवद्विजार्चकः॥सारंक्षौरंचलवरांसधुमांसंचवर्जयेत्॥  
 (सारास्तुतत्रैवोक्ताः) । तिलमुद्गादृते शैव्यं सस्ये गोधूमकोद्रवौ ॥ धान्यक्रंदेव  
 धान्यंच शमीधान्यंतथैसवः ॥ स्विन्नधान्यंतथापुण्यंमूलंसारगणाःस्मृतः ॥ (गो  
 धूमानांतुतत्रैवप्रतिप्रसवः) - ब्रौह्मिषट्कमुद्गाप्रचकलापःसतिलंपयः ॥ प्रया  
 माकाप्रचैवनावारागोधूमाद्याव्रतेहिताः ॥ कूटमांडालंबुवात्तकिपालंकीज्यो  
 त्स्निक्कास्त्यजेत् ॥ चतुर्भेसंसक्तुकराःशाक्रंद्विधृतंमधु ॥ प्रयासाकाःशालिनी  
 वारायावकंसलतंदुलम ॥ हविष्यव्रतनक्तादावगिनकार्यादिकेहितं॥मधुमांसंविहा  
 यान्यव्रतेर्वाहितमीरितमिति ॥ शमीधान्यंसायादि । पालंकीमध्यदेशेपोर्द्वेइति  
 प्रसिद्धः । ज्योत्स्निकाकोशातकी । (मितासरायांगौतमः) । चतुर्भेसंसक्तुकरा  
 यावकशाकपयोदधिघृतमूलफलोदकानिहवींशुत्तरोत्तरं प्रशस्तानिपयोदधि  
 घृतंचगव्यमिति । (अन्येचविशेषासकादशीचातुर्मास्यादिप्रकरणेवक्ष्यंते) (गृही  
 तव्रतत्यागेतुमदनरत्नेच्छागलेयः) पूर्वव्रतंगृहीत्वायोनचरेत्काममोहितः ॥ जी  
 वन्भवतिचांडालोमृतःप्रवाचाभिजायते ( तत्रप्रायश्चित्तमुक्तंपृथ्वीचंद्रोदयेअ  
 गिनगासुडपुराणयोः) क्रोधात्प्रसादालोभाद्वाव्रतभंगोभवेद्यदि ॥ दिनत्रयंनभं  
 जीतमुंडनंशिरसोयवेति ॥ प्रायश्चित्तान्नानादतिक्रान्तव्रतानुद्यानंनस्तीतिगम्य  
 ते (यत्तु) प्रायश्चित्तंततःकृत्वापुनरेवव्रतीभवेदितिवचनात् । यच्चातिक्रान्तमपि  
 व्रतंकार्यमेवेतिशालपाणिः । तन्मध्येलोपेव्रतशेषसत्त्वेजेयं । एतच्चशक्तविययं(अ  
 शक्तौतुकालहेमाद्रौपुराणांतरे) उपवासासमर्थप्रचेदेकंविप्रंतुभोजयेत् ॥ तावद्धना  
 दिवादद्याद्भुक्तस्यद्विगुणांतथा ॥ भुक्तःकृतभोजनः । ब्राह्मणभोजनंविनेतिशेषः ।  
 सहस्रसंमितांदेवींजपेद्वाप्राणासंयमान् ॥ कुर्यात्तद्वादशसंख्याक्रान्त्यथाशक्त्यातु  
 रोनरइति (शुद्धितत्त्वेसात्स्ये) उपवासेष्वशक्तानांनक्तंभोजनमिष्यते(मदनरत्ने  
 वायवीये)द्रव्यदातोपवासस्यफलंप्राप्नोत्यसंशयम्(तथापरार्कदेवलः)ब्रह्मचर्य\*

\* स्त्रोणांतुपेक्षणात्स्पर्शताभिस्संक्रयनादपि ॥ विपश्यतेब्रह्मचर्यंस्वदारेष्वृतुसंगमात् ॥ स्त्रोणांपुंश्च  
 लीनांदित्यादि ॥



तथाशौचसत्यमा\*मियवर्जनम् ॥ ब्रतेष्टवेतानिचत्वारिवरिष्ठानोतिनिप्रचयः ॥  
 (मात्स्ये) तस्मात्कृतोपवासेन स्नानमभ्यंगपर्वकम् ॥ वर्जनीयंप्रयत्नेनरूपधनं  
 तत्परं नृप ॥ अन्ये चनियमास्तत्रतत्रान्वेषणीयाः (अथस्त्रीब्रतेयुविशेषउच्य  
 ते) तत्रहेमाद्रौब्रतकांडेगासुडे) गंधालंकारतांबूलपुष्पमालानुलेपनम् ॥ उपवा  
 सेनदुष्टयंतिदन्तधावनमंजनमिति (इदंचसभर्तृकोपवासविषयम्) अंजनंचसतां  
 बूलंकुंकुमंरक्तवाससी ॥ धारयेत्सोपवासापिअवैधव्यकरंयतः ॥ विधवायतिमा  
 गैराकुमारीधायदृच्छयेतितत्रैवभविष्योक्तेः(तथाविष्णुधर्मे) सर्वेषुतपवासेषुपुमा  
 न्वायसुवासिनी ॥ धारयेद्रक्तवस्त्राणिगन्धधूपानुलेपनम् ॥ विधवाशुक्लवसनमे  
 कमेवहिधारयेत्(मनुरपि) पुष्पांलंकारवस्त्राणिगन्धधूपानुलेपनम् ॥ उपवासेन  
 दुष्टयंतिदन्तधावनमंजनम् (मदनरत्नेव्यासः) दन्तधावनपुष्पादिब्रतेष्यस्यानदुष्य  
 तोति॥ यद्यपीदंसर्वोपवासविषयंप्रतीयतेतथापिशिष्टाचारात्सौभाग्याद्यर्थक्रिय  
 मारानवरात्रिं विरात्राद्युपवासविषयमेव (नत्वेकादश्यादिविषयम्) असकृज्जल  
 पानाच्चसकृत्तांबूलचर्वणात् ॥ उपवासः प्रणय्येतादिवास्त्रापाचमैथुनादित्यपरार्कदे  
 वलेनतन्निषेधात् । नचास्यपुंविषयत्वेनसावकाशत्वात्स्त्रीणांतांबलादिप्राप्नोती  
 तिवाच्यम् । तांबलादिप्रापकस्यैवैकादशीतरविषयत्वेनवैपरीत्यस्यापिसुवचत्वा  
 त्(यत्तुहरिवंशे) अंजनंरोचनंचैवगन्धांसुमनसस्तथा ॥ ब्रतेचैवोपवासेचनित्यमे  
 वविवर्जयेत् । शिरसोभ्यंजनंसीम्येनैवमेतत्प्रशस्यते ॥ नपादयोर्नगात्रस्यस्नेहेनेति  
 स्थितिःस्मृतेतितत्तत्रैवोक्तपुरायकब्रतविषयम् ॥ नतुसर्वत्र । पूर्वोक्तविरोधादिति  
 (मदनरत्नेउक्तं । तत्रैव) अशुप्रपातोरोषप्रचकलहस्यकृतिस्तथा ॥ उपवासा  
 इब्रताद्यापिसद्योभ्रंशयतिस्त्रियम् ॥ स्त्रियमित्युपलक्षणां (मदनरत्नेशिवधर्मे)  
 दानब्रतानिनियमाज्ञानंध्यानंहृतंजपः ॥ यत्नेनापि कृतंसर्वक्रोधितस्यवथाभवेत्  
 (अथ सूतकादौनिर्यायः) तत्रशावसूत्याशौचयोः सर्वस्मार्तकर्मनिवृत्तिनिबंधेषु

\* आमिषंमांसं ॥ आमिषंदृतिपानीयंगोवज्यंक्षीरमामिषं ॥ मसूरमामिषंसस्येफलेजंक्षीरमामिषं । आमि  
 षंशुक्तिकाचूर्णमारनालंतथामिषमितिस्मृत्यंतरोक्तं च । स्मरणंकीर्तनंकेलिप्रेक्षणं गुह्यभाषणं ॥ संकल्पोऽथ  
 वसायश्चक्रियानिवृत्तिरेवच ॥ एतन्मैथुनमष्टांगंप्रवदतिमनीषिणः ॥

स्पष्टैव (गौडास्तुशौचादावपितामाहुः) जानूध्वंसतजेजातेनित्यकर्मनचाचरेत् ॥  
 नैमित्तिकंचतदधःस्रवद्रक्तोनवाचरेत् ॥ लौतकेचसमुत्पन्नेज्वरकर्मणिमैथुने ॥  
 धूमोदगारेतथावांतौनित्यकर्माणिशस्यजेत् ॥ द्रव्येभुक्तेत्वजीर्णंचनैवभुक्त्वापि  
 किंचन ॥ कर्मकुर्यान्नरोनित्यंसतकेमृतकेतथेतिकालिकापुराणात् ॥ वस्तुतस्तु  
 पर्वदेवीपूजोपक्रमात्तन्मात्रविषयत्वमस्येतियुक्तं प्रतीमः ( तथाहेमाद्रौपात्रे )  
 गर्भिणीमितिकादिप्रच कुमारीवाथरोहिणी ॥ यदाशुद्धातदान्येनकारयेत्प्रय  
 तास्त्रयमिति ॥ पुंसोप्येषविधिः । लिङ्गस्याविवक्षितत्वात् । तेनयस्मिन्ब्रतेय  
 त्पूजाद्युक्तंतदन्येनकारयेत् । शारीरनियमान्स्त्रयंकुर्यादितिहेमाद्रिव्याचख्यौः  
 नव्रतिनावृतेइतिविष्णोक्तेप्रच । आरम्भस्तुनभवत्येव ( शुद्धितत्वेविष्णुः ) बहुका  
 लिकसंकल्पोगृहीतप्रचपुरायदि ॥ सतकेमृतकेचैवव्रतंतन्नैवदुष्टयति ॥ एतत्काम्य  
 परंनित्यंत्वनारब्धमपिकार्यमितिगौडाः ( सदनरत्ने ) पर्वसंकल्पितंत्यचव्रतंसुनि  
 यतव्रतैः ॥ तत्कर्तव्यंनरैःशुद्धंदानार्चनविर्वर्जितम् ( मोधवीयेकौर्ने ) काम्यो  
 पवासंप्रकांतेत्वंतरामृतसतके ॥ तत्रकाम्यं ब्रतंकुर्याद्दानार्चनविर्वर्जितमिति ॥ एते  
 नसांगेविकाराद्ब्रतांगदेवपूजादिकार्यमितिबर्धमानोक्तिः परास्ता । प्रारब्धपूजा  
 दिकार्यमेव । नवरत्रेतुतत्रैवविशेषंवक्ष्यामः । एवंरजस्वलापि ( यतुसत्यव्रतः )  
 प्रारब्धदीर्घतपसांनारीणांयद्रजोभवेत् ॥ नतत्रापिव्रतस्यस्यादुपरोधःकथंच  
 नेति ॥ तत्प्रतिनिधिनाकारयेदित्येतत्परं । ( तदुक्तं सदनरत्नेमात्स्ये ) अन्तरा  
 तुरजोयोगेपूजासन्येनकारयेदिति ( प्रतिनिधयप्रचनिर्णयामृते पैठीनसिः )  
 भार्यापत्युव्रतंकुर्याद्भार्यायाप्रचपतिव्रतम् ॥ असामर्थ्येपरस्ताभ्यांव्रतभंगीनजाय  
 ते ( स्कांदेपि ) पुत्रंवाविनयोपेतंभगिनींभ्रातरंतथा ॥ सधामभावसवान्यंवाह्मणं  
 वानियोजयेत् ( कात्यायनः ) पितृमातृभ्रातृपतिगुर्वर्थेचविशेषतः ॥ उपवासं  
 प्रकुर्वीताःपुरायंशतगुणालभेत् ॥ मातामहादीनुद्दिश्यएकादश्यामुपोष्यते ॥ कृते  
 तेतुफलंविप्राःसमग्रंसमवाप्नुयुः ( सदनरत्नेप्रभासखण्डे ) भर्तापुत्रःपुरोधश्च  
 भ्रातापत्नीसखापिच ॥ यात्रायांधर्मकार्येयुजायंतेप्रतिहस्तकाः ॥ सभिःकृतंमहा  
 देविस्त्रयमेवकृतंभवेत्(तत्रैववायवीये ) स्वयंकर्तुमशक्तप्रचेत्कारयितपुरोधसा ॥



इदंच सर्ववर्णसाधारणं । अविशेषात् ( यत्तु कश्चिन्महोत्सवाह ) शूद्रस्य ब्राह्म-  
णादिरेव प्रतिनिधिर्युक्तो न शूद्रः । जपस्तपस्तीर्थसेवाप्रव्रज्यामन्त्रसाधनम् ॥ विप्रैः  
सम्पादितं तस्य सम्पन्नं तस्य तत्फलमिति ॥ मरीचिवचनादिति । तत्तुच्छम् । प्रव-  
्रज्यादीनां शूद्रेऽसम्भवाद्विषये प्रायदर्शनादिति न्यायेनास्य ब्राह्मणादिगोचरत्वा-  
त् । यदापि उपवासो व्रतं होमस्तीर्थस्नानजपादिकमिति पर्वार्द्धे पाठस्तदापि स  
वदोषः । स्त्रीशूद्रपतनानिषाडिति मानवीये जपनिषेधात् । वस्तुतस्तु । सम्पर्गात्ता  
वाचनमात्रमत्रोच्यत इति प्रतिनिधेः कावार्त्तं त्यज्यम् ( अत्र विशेषमाह त्रिकांडमं  
डनः ) काम्ये प्रतिनिधिर्नास्ति नित्ये नैमित्तिके च सः ॥ काम्येषु प्रक्रमादूर्ध्वं के-  
चित्प्रतिनिधिर्विदुः ॥ न स्यात्प्रतिनिधिर्मन्त्रस्वामिदेवाग्निर्कर्मसु ॥ सदृशका-  
लयोर्नास्ति नारगोरग्निरेव सा । नापि प्रतिनिधातव्यं निषिद्धं वस्तु कुत्रचित् ( हि-  
रण्यकेशिसूत्रेऽपि ) न स्वामित्वस्य भार्यायाः पुत्रस्य देशस्य कालस्याग्नेर्देवतायाः  
कर्मणाः शब्दस्य च प्रतिनिधिर्विद्यत इति ( अथ व्रतादिसन्निपाते निराधिसिन्धुः ) तत्र  
तिथिद्वयसन्निपाते तत्रोक्तं दानं हेमादिक्रमेणानुष्ठेयम् । अविरोधात् । इदं पर्वार-  
ब्धेऽवेव । एकमध्येन्यक्राम्य कर्मारंभस्तु भवत्येव गुणफलादुत्तेयस्य यज्ञे प्रतितं  
रायज्ञस्तायतेतं यज्ञं निश्चरति गृह्णातीति रागाकथ्यतेऽयुतेः । यज्ञः व्रतादिकर्मसा-  
धनम् । अनङ्गेन व्यवधानदोषस्य सर्वत्र साम्यात् । शिष्टास्तु माधकात्ति कस्मान्ना-  
दिसम्ये लसहोमतुलाभारतश्रवणाद्याचरंति तन्नित्यमध्ये तु । काम्यमध्ये तु चिंत्य-  
म् । यत्र तु न तौ कर्मक्तादौ विरोधस्तत्र प्राथम्यादेकभक्तं कार्यम् । नक्तं तु परेद्युस्तत्ति-  
थौ गौणाकाले कार्यम् । समकालीन विरुद्धव्रतादौ त्वेकं स्वयं कृत्वा न्यङ्कार्यादिना  
कारयेदिति साधवः । यत्तु शिवराज्यादौ तिथिमध्ये पारगायाऽह्निभोजनं प्राप्त-  
म् । भूताष्टम्योर्दिवाभुक्त्वा रात्रौ भुक्त्वा च पर्वणा ॥ एकादश्यामहोरात्रं भुक्त्वा  
चांद्रायणां चरेदिति तन्नियेधश्च ॥ तत्र पारगायावैधत्वादि वैधभोजनम् । नियेध-  
स्तुरागप्राप्तभोजनविषयः । एवमष्टम्यादिनक्तव्रते संक्रांत्यादौ रवौ संकष्टचतुर्थ्या  
च रात्रौ भोजनम् । यत्र त्वष्टम्यादौ दिवाभुजि नियेधः संक्रमे च रात्राविति नियेधश्च  
यंतत्रोपवाससर्वकार्यः । यद्यपि पुत्रिणा उपवासो निषिद्धस्तथाप्युपवासनियेधे तु

भक्ष्यं किञ्चित्प्रकल्पयेदिति वचनात् किञ्चिद्वसयित्वोपवासः कार्यः । चांद्रायणं  
मध्ये एकादश्यादौ तु भोजनं कार्यमेव । चांद्रायणस्य कास्यत्वेन नित्यबाधकत्वात् ।  
अबाधेन गत्यसंभवाच्च । सकादश्यामेकांतरोपवासादिपारणायां जलपारणां कृ-  
त्वोपवसेत् । आपोवा अशितमनशितं चेति श्रुतेः । एवं द्वादश्यां मासोपवासश्चाद्वदो-  
यादियुजेयम् । एवं कास्यनैमित्तिकं नित्यत्वादिकृतं बलाबलं स्वयमूह्यमिति दिक् ।  
इति कमलाकरभट्टकृते निर्णयसिन्धौ परिभाषा समाप्ता ॥

(अथ प्रतिपदादि निर्णयः) शुक्लप्रतिपदपराह्णव्यापित्वेर्वाग्राह्या । युरम-  
वाक्यात् । प्रतिपत्संमुखीकार्यायाभवेदापराह्णिकीति स्कांदोक्तेः ॥ शुक्लास्या-  
तप्रतिपत्तिथिः प्रथमतः चेत्सापराह्णे भवेदिति दीपिकोक्तेः । अपराह्णश्च पं-  
चमाभक्ते दिने चतुर्थो भागः । तदभावे सायाह्नव्यापिनी ग्राह्या । तदभावे तु सायाह्न-  
व्यापिनी परिगृह्यतामिति साधवोक्तेः । कृष्णा तु परा । कृष्णात्तरतोऽखिलेति दी-  
पिकोक्तेः (कृष्णापि पूर्वैवेत्यनंतभट्टाः सर्वातिथियुवर्ज्या न्युक्ता निमुहूर्तदीपिका-  
यां) कूठमांडं वृहती फलानिलवर्णां वर्ज्यं तिलांस्तं तथा तैलं चामलकं दिवं प्रवसता-  
शीर्षकपालां चक्रम् ॥ निठपावां प्रचमसूरिकान् फलमथो वृन्ताकसंज्ञं मधुद्यूतं स्त्री-  
गमनं क्रमात् प्रतिपदादि षट्त्वेव माघोडश ॥ शीर्षं नारिकेलम् । कपालं अलावु ।  
अंत्रं पटोलकं (भूपालः) कूठमांडं वृहती सारं मलकं पनसं फलम् ॥ धात्री शिरः क-  
पालां वनखर्चमं तिलानि च ॥ सुरकर्मांगनासेवां प्रतिपत्प्रभृत्यजेत् ॥ नखं शिंवी ।  
चर्ममसरिका । द्वितीया तु कृष्णा पूर्वा शुक्लोत्तरेति हेमाद्रिः । कृष्णा द्वितीयादि-  
मापूर्वाह्णे दिसासिता तु परतः सर्वेति दीपिकोक्तेः । साधवानंतभट्टमते तु सर्वापि-  
द्वितीया परा (तथा च साधवः) पूर्वैश्चुरसती प्रातः परेद्युस्त्रिमुहूर्तगा ॥ सा द्विती-  
या परोपोठ्या पूर्वविद्धा ततो न्यर्थेति ॥ तृतीया तु सर्वमते रंभाव्यातिरिक्ता परैव ॥  
तेन युरमवाक्यं रंभाव्रतविषयम् ॥ रंभाख्यां वर्जयित्वा तु तृतीयां द्विजसत्तमम् ॥ अ-  
न्येषु सर्वकार्येषु गणायुक्ता प्रशस्यत इति ब्रह्मवैवर्तम् (गौरीव्रते तु विशेषमाह साध-  
वः) मुहूर्तमात्रमत्रोपदिने गौरीव्रतं परे ॥ शुद्धाधिकाया मध्ये वंगगायोगप्रशंस-  
नादिति ॥ चतुर्थ्यापि सर्वमते गणेशव्रतातिरिक्ता परैव । युरमवाक्यात् । सकादशी



तथायसीत्रमावास्याचतुर्थिका ॥ उपोठ्याः परसंयुक्तापराः पूर्वेणसंयुताइतिमा  
 धवीये ॥ बृहद्वाशिष्ठोक्तेच । नागचतुर्थीतुमध्याह्नव्यापिनीपंचमीयुताचग्राह्येति  
 निर्णयामृतैमाधवीयेचोक्तं । युगंमध्यंदिनेयत्रतत्रोपोठ्यफराप्रवरान् ॥ क्षीरेणा  
 प्यायपंचस्यांपूजयेत्प्रयतो नरः ॥ विघातितास्यनप्रयंतिनतान्हिसंतिपन्नगाः ॥  
 इतिमाधवीयेदेवलोकतेः । युगंचतुर्थीपर्वत्रमध्याह्नव्यापिनीपूर्वा । अन्यपक्षेषुपरैव  
 पंचस्यांपूजोक्तेः । गणेशव्रतेतृतीयायुतैवचतुर्थी । चतुर्थीतुतृतीयायांमहापुराय  
 फलप्रदा ॥ कर्त्तव्याव्रतिभिर्वत्सगरानाथसुतोयिणीति ॥ हेमाद्रौब्रह्मवैवर्तित् ।  
 माधवीयेतुगणेशव्रते । मध्याह्नव्यापिनीमुख्या । चतुर्थीगरानाथस्यमातृविद्याप्र  
 शस्यते ॥ मध्याह्नव्यापिनीचेत्स्यात्परतश्चेत्परैहनीति (वृहस्पतिवचनात्) प्रातः  
 शुक्लतिलैः स्नात्वा मध्याह्ने पूजयेच्चूपेतितत्कल्पेभिधानाच्च । तेनपरदिनेतत्त्वेपरा  
 (अन्यथापूर्वेत्युक्तम् । वस्तुतस्तु) यत्रभाद्रशुक्लचतुर्थ्यादौगणेशव्रतविशेषे मध्या  
 ह्नपूजोक्तातद्विषयारायेवप्राशुक्तवचनानिनतुसार्वत्रिकाणि । संकष्टचतुर्थ्यादौबहु  
 नांकर्मकालानांवाधायतेः । तेनसर्वत्रगणेशव्रतेपूर्वेवेतिसिद्धम् । संकष्टचतुर्थीतुचंद्रो  
 दयव्यापिनीग्राह्या । दिनद्वयेतत्त्वेमातृयोगस्यसत्त्वात्पूर्वतिकेचित् । अन्येतुदिनेमु  
 हूर्त्तत्रयादिरूपस्यतृतीयायोगस्याभावात्परदिने माधवोक्तमध्याह्नव्यापिसत्त्वा  
 त्संपूर्णात्वाच्च परेत्याचक्षते (दिनद्वयेतदभावेतुपरैव । गौरीव्रतेतुपूर्वैव) गणेशगौ  
 रीबहुलाव्यातिरिक्ताः प्रकीर्तिताः ॥ चतुर्थ्यः पंचमीविद्यादेवतांतरयोगतइतिम  
 दनरत्नेब्रह्मवैवर्तित् (पंचमीतुमाधवमतेसर्वापिपूर्वा) चतुर्थीसंयुताकार्यापंचमी  
 परयानतु ॥ दैवेकर्मणिपिष्येच्चशुक्लपक्षेतथासितैतिहारितोक्तेः (हेमाद्रिमतेतु  
 कृष्णापूर्वासितापरा) कृष्णापूर्वयुतासितापरयुतास्यात्पंचमीतिदोषिकोक्तेः ।  
 (वस्तुतस्तुहारीतोक्तिरुपवासविषया) । प्रतिपत्पंचमीचैवसावित्रीभतपर्णिमा ॥  
 नवमीदशमीचैव नोपोठ्याः परसंयुता इतिब्रह्मवैवर्तित् (यत्तु) पंचमीतुप्रक  
 र्तव्या यस्यायुक्तातुनारदेत्यापस्तंबीयम् (तत्स्कंदव्रतपरम्) स्कंदोपवासेस्वीका  
 र्यापंचमीपरसंयुतेतिवाक्यशेषादितिमाधवः । तन्नागपूजाविषयमित्यनंतभट्टनि  
 र्णयामृतादयः (चमत्कारचिंतामणौच) पंचमीनागपूजायांकार्यायसीसमन्विता

तस्यांतुतुषितानागाइतरासुचतुर्थिकेति ॥ तेननागपूजादौपरैव (यत्तुमदनरत्न  
दिवोदासीययोः । आवगापंचम्यतिरिक्तापूर्वयुक्तम्) आवगापंचमीशुक्लासंप्रो  
क्तानागपंचमी । तांपरित्यज्यपंचम्यप्रचतुर्थीसहिताहिताइतिसंग्रहहोक्तेःगगो  
शस्कंदयोगाभ्यांक्रमात्तागःशुभाशुभः ॥ मित्रामित्रेतयोःपत्रेनागानामाखुर्बहि  
र्गाँ ॥ इतिषट्त्रिंशन्मताच्चआवगापंचम्यतिरिक्तायाः नागपंचम्याप्रचतुर्थीयुत  
त्वमुक्तंतदुपवासादिविषयम्(पत्रेवाहने । अष्टीसर्वमतेस्कंदव्रतातिरिक्तापरैव ।  
युग्मवाक्यात्) नागविद्वानकर्तव्यायष्टीचैवकदाचनेतिस्कांदाच्च (निर्गायामृते)  
यष्टीचसप्तमीचैववारप्रचेदंशुमालिनः ॥ योगोयंपञ्चकोनामसूर्यकोटिग्रहैःसमः  
(सप्तमीपूर्वयुग्मवाक्यात्) अष्टयायुतासप्तमीचकर्तव्यातातसर्वदेतिस्कांदाच्च  
(अष्टमीतुसर्वमतेकृष्णापूर्वासितापरा) व्रतमात्रेष्टमीकृष्णापूर्वाशुक्लाष्टमीपरेति  
माधवोक्तेः ॥ परयुक्शुक्लाष्टमीपूर्वयुक्कृष्णोतिदीपिकोक्तेप्रच (शिवशक्त्युत्स  
वेचकृष्णाप्युत्तरापक्षद्वयेप्युत्तरैर्वाशिवशक्तिमहोत्सवइतिमाधवोक्तेः (दिवो  
दासीयेभविष्ये)यदायदासिताष्टम्यांबुधवारोभवेत्कचित् ॥ तदातदाहिसाग्राह्या  
सकभक्ताशनेनृप ॥ संध्याकालेतथाचैत्रे प्रसुप्तेचजनार्दने ॥ बुधाष्टमीनकर्तव्याहं  
तिपुरायंपुरातनम् ॥ अंत्यंपद्यहेमाद्रौनधृतम् । नवमीतुसर्वमतेपूर्वा(युग्मवाक्यात्)  
नकुर्यान्निवसींतातदशम्यातुकदाचनेतिस्कांदाच्च(दशमीतुपूर्वापरार्वेतिहेमाद्रिः)  
कृष्णापूर्वात्तराशुक्लादशम्येवंव्यवस्थितेतिमाधवः (वस्तुतस्तुमुख्यानवमीयुतैव  
ग्राह्या) दशमीतुप्रकर्तव्यासदुर्गाद्विजसत्तमेत्यापस्तंबोक्तेः (यत्तु) संप्रदादश  
मीकार्यापूर्वयापरयाथवेत्यंगिरसोक्तम् ॥ तन्नवमीयुक्तालाभेऔदयिकीग्राह्ये  
त्येवंनेयम्(अथैकादशी । तत्रैकादश्युपवासोद्देशा निषेधे परिपालनात्मको  
व्रतरूपप्रच । तत्राद्यः) नशांखेनपिबेत्तोयंनखादेत्कूर्मसकरौ ॥ सकादश्यांनभुं  
जीतपक्षयोरुभयोरपीति कौर्मदेवलाद्युक्तेः (अग्निपुराणोपि) गृहस्थोब्रह्म  
चारीचआहिताग्निस्तथैवच ॥ सकादश्यांनभुंजीतपक्षयोरुभयोरपीति ॥ नचा  
त्रपर्युदासेन\*व्रतविधिः तद्धेतुव्रतादिशब्दाभावात् (व्रतरूपस्तुब्रह्मवैवर्ते) प्राप्तेह

\* पर्युदासः सविज्ञेयोयत्रोत्तरपदेननज्जुत्युक्तेरेकादश्यामभोजनसंकल्परूपव्रतमिति ॥



रिदिनेत्यग्निरिवधायनियमंतिश ॥ दशम्यामुपवासस्यप्रकुर्याद्वैष्णवंव्रतमिति  
 (इदंचशिवभक्तादिभिरपिकार्यम्) वैष्णवोवाथशैवोवाकुर्यादेकादशीव्रतमिति  
 शिवधर्माक्तेः । वैष्णवोवाथशैवोवासौरोप्येतत्समाचरेदितिसौरपुराणाच्च (सो  
 पिदेवानित्यःकाश्यप्रच)उपोठ्यैकादशीनित्यंपक्षयोरुभयोरपीतिगारुडोक्तेः ।  
 पक्षेपक्षेचकर्तव्यमेकादश्यामुपोषणमिति नारदोक्तेप्रचनित्यता ॥ यदीच्छेद्वि  
 ष्णुसायुज्यंश्रियंसंततिमात्मनः ॥ सकादप्रयानंभुंजीतपक्षयोरुभयोरपि ॥ इति  
 कौर्मिदियुफलश्रुतेप्रचकाश्यता । उभयैकादशीव्रतंगृहस्थातिरिक्तानामेव नित्य  
 म् । गृहस्थस्यतु शुक्लायामेवव्रतंनित्यंनक्षत्रायां । सकादप्रयानंभुंजीतपक्षयोरु  
 भयोरपि ॥ वनस्थयतिधर्मायंशुक्तामेवसदागृहीतिदेवलोक्तेः ॥ नचानेननियेध  
 पालनमेव वनस्थयतिविषयेउपसंह्रियतेनतुव्रतमितिवाच्यम् । अस्यपर्युदासेनव्र  
 तविधिपरत्वात् । अन्यथापूर्वाक्ताग्निपुराणावचने नियेधपालनेगृहस्थस्या  
 धिकारोक्त्याविरोधःस्यात् । नियेधस्यनिवृत्तिमात्रफलत्वेनविशेषानपेक्षणा  
 दुपसंहारायोगात् । अभावस्यधर्मत्वाभावाच्च । तस्मादनेनसर्वेषामेकादशीव्रतवि  
 धायिनांसामान्यवाक्यानांवनस्थयतिविषये उपसंहारान्नगृहस्थस्यकृष्णायांनि  
 त्यव्रतप्राप्तिः (कथंतर्हि) संक्रांत्यामुपवासंचकृषौकादशिवासरे ॥ चन्द्रसूर्यग्रहे  
 चैवनकुर्यात्पुत्रवान्नगृही (इतिनारदादिवचनेषुकृष्णानियेधः प्राप्त्यभावादिति  
 चेच्छ्रूयताम् ॥ शयनीबोधिनीमध्ये याकृषौकादशीभवेत् ॥ शैवोपोठ्यागृह  
 स्थेननान्याकृष्णाकदाचनेतिपात्रे ॥ गृहस्थस्यआयादोकार्त्तिकीमध्यस्थाया  
 कृष्णाविहितासापुत्रवतोनिषिध्यते । अन्यकृष्णायांतुनविधिः । सर्वविधीनांवन  
 स्थयतिसुपसंहारान्ननियेधः प्राप्त्यभावात्शयन्यादिवाक्यंत्वपुत्रगृहिणोचरमि  
 त्यनंतभट्टहेमाद्यादिग्रन्थाः (दीपिकापि) असितातुशयनी बोधांतरस्याध्यथोन  
 स्यात्सात्मजिनोपीति (मदनरत्नेभविष्ये) यथाशुक्लातथाकृष्णाद्वादशीमेसदा  
 प्रिया ॥ शुक्लागृहस्थैःकर्तव्याभोगसंतानवर्धिनी ॥ मुमुक्षुभिस्तथाकृष्णानतेते  
 जोपदर्शितेति ॥ नियेधपालनंकाश्यव्रतंच सर्वकृष्णायांसर्वगृहिणांभवत्येव ।  
 पुत्रवांप्रचसभार्यप्रचबंधुयुक्तस्तथैवच । उभयोःपक्षयोःकाश्यव्रतंकुर्यात्तुवैष्णव

मिति ॥ नारदोक्तेः (सतचसर्वकालादर्शोक्तम्) विधवायावनस्थस्ययतेप्रचैका  
दशीद्वये ॥ उपवासो गृहस्थस्य शुक्तायामेव पुत्रिणाः ॥ भुजेर्निषेधः कृष्णायांसि  
द्विस्तस्य ततो व्रते इति ॥ प्राच्यास्तु वैशाखगृहस्थानां कृष्णापिनित्या । नित्यं भक्ति  
समायुक्तेनैर्विठ्ठाणुपरायणैः ॥ पक्षे पक्षे च कर्त्तव्यमेकादश्यामुपोषणम् ॥ सपुत्र  
प्रचसभार्यप्रचसुजनो भक्ति संयुतः ॥ एकादश्यामुपवसेत् पक्षयो रुभयो रपीति नार  
दोक्तेरित्याहुः ॥ पुत्रशब्दप्रचापत्यमात्रवचनः (नारायणावृत्तौ) पुमांससवमे पुत्रा  
जायेरन्नियत्रापत्यमात्रवाचित्वोक्तेः । जनयद्बहुपुत्राणीति लिंगात् । पौत्री  
मातामहस्तेनेति मनक्तेः । पुत्र्या अपत्यमित्यर्थे तु स्त्रीभ्यो ढगिति पौत्रेय इत्या  
पत्तेः । पुमान्पुत्री जायत इति च (उपवासनिषेधे विशेषो वायवीये उक्तः) उप  
वासनिषेधेतु भक्ष्यं किंचित् प्रकल्पयेत् ॥ नदुष्यत्युपवासेन उपवासफलं लभेत (भक्ष्यं  
चतत्रैवोक्तम्) नक्तं हविष्यान्नमनोदनं वा फलं तिलाः क्षीरमथांबुचाज्यम् ॥ यत्पंच  
गव्यं यदि वा पिवायुः प्रशस्तमत्रोत्तरमुत्तरं चेत्यलम् ॥ तत्र दशमीवेधो द्वेधा अरु  
णोदयवेधः सूर्योदयवेधश्चेति (आद्योगारुडे) दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्याद  
रुणोदयः ॥ नैवोपोष्यं वैशाखेन तद्विनैकादशीव्रतमिति (अरुणोदयस्वरूपं पंच  
माधवीयेस्कांदे) उदयात् प्राक् च तस्मिन् घटिका अरुणोदय इति (यदापि) उदया  
त्प्राग्यदा विप्रमुहूर्तद्वयसंयुता ॥ संपूर्णोकादशीनामतत्रैवोपवसेद्गृहीति गारुड  
सौरधर्मादिवचनम् (यच्च भविष्ये) आदित्योदयवेलायाः प्राङ्मुहूर्तद्वयान्विता ॥  
एकादशीतु संपूर्णा विज्ञान्यापरिकीर्तितेति ॥ तदप्युपसंहारन्यायेन दंडचतुष्टय  
परमेव । हेमाद्रौ वप्येवं (यत्तु ब्रह्मवैवर्ते) चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदयनिप्रच  
यः ॥ चतुष्टयविभागोत्रवेधादीनां किलोदितः । अरुणोदयवेधः स्यात्सार्द्धं तु  
घटिकात्रयम् ॥ अतिवेधो द्विघटिकः प्रभासंदर्शनाद्वेधः ॥ महावेधोऽपि तत्रैव दृश्य  
तेर्को न दृश्यते ॥ तुरीयस्तत्र विहितो योगः सूर्योदये बुधैरिति ॥ तदप्यवयवद्वारा  
रुणोदयवेधविशेषपरमेवेति माधवीये मदनरत्ने च । अंत्यस्तु दयवेधः (तथा\*न्ये

\* एवं द्विविधमपि वेधं श्रवणस्थाय्यत्र द्वैतेव च्यमाणव्रतानां दूषणाय प्रथमत उपन्यासे प्रस्तुते व्यवस्थापनी  
यत्वात्परेषामहेतुत्वाच्चान्यान्यपि वेधवचांस्युपन्यसिततथेति ॥



पिवेधाः हेमाद्रौमाधवीयेचगारुडे) उदयात्प्राक्त्रिघटिका व्यापिन्येकादशी  
यदा ॥ संदिग्धैकादशीनामवर्ज्येयं धर्मकांक्षिभिः ॥ उदयात्प्राङ्मुहूर्त्तं नव्यापि  
न्येकादशीयदा ॥ संयुक्तैकादशीनामवर्ज्येयं धर्मवृद्धये (हेमाद्रौ) रात्रेरंत्योष्टमो  
भागोऽप्यरुणोदयउक्तः । निशः प्रांतेतुयामार्द्धदेववादित्रवादे ॥ सारस्वतानध्य  
यनेचारुणोदयउच्यतइतिस्मृतेः (अत्रैके) स्यांसर्वप्रसारांमुहूर्त्तद्वयेन क्रोडी  
कारात्रिशः प्रांते इतिवचनाच्च रात्रिमानवशात्सार्द्धविदंडादयोनेकेरुणोदयाः  
(तदाहहेमाद्रिः) सार्धघटिकात्रयोक्तिरष्टाविंशतिघटीमितरात्रिविषया । महत्त  
रास्तुरात्रीरपेक्ष्यचतस्रोघटिकाइत्युक्तमितीत्याहुः । तन्न । अरुणोदयशब्दस्यने  
कार्यत्वापत्तेः । नचमुहूर्त्तद्वयमर्थः । दंडद्वयैकमुहूर्त्तादिवेधानांतथाप्यनुपपत्तेः ।  
नहितेषांयामार्धत्वमरुणोदयत्वंचास्ति । मुहूर्त्तद्वयस्ययामार्द्धस्यच चतस्रोघटि  
काइत्यनेनोपसंहाराद्यतदर्थः । नचसार्द्धतुर्घटिकात्रयमित्यनेनापितदापत्तिः शं  
क्या । तेनचतुर्दंडवेधस्यैवोक्तेः । चतुर्दंडेर्धघटीदशमीसत्त्वेहिबेधस्तदर्थः ॥ द्विघ  
टिकादौतद्योगाच्च । यत्तुमत्तम् । कियतारुणोदयवेधइत्यपेक्षायांसार्द्धघटिकात्र  
यनियमादरुणोदयेर्धघटिकातोऽन्यतदशमीसत्त्वेनदोषइति । तत्तुच्छम् । द्विद  
ण्डादौवपितदापत्तेः । दशमीशेषसंयुक्तोयदिस्यादरुणोदयः । नैवोपोऽयं वैशावे  
नतद्विनैकादशीवतमितिगारुडेभविष्येचयोगमात्रनिषेधात् (नारदीयेपि) लववे  
धेपि विप्रदशम्यैकादशीत्यजेत् ॥ सुरायाविन्दुनास्पृष्टं गंगांभइवनिर्मलम् (स्कां  
देपि) कलाकायादिगार्थेवदृश्यतेदशमीविभो ॥ एकादश्यांनकर्तव्यंवत्तंराजचक्रदा  
चनेतिमाधवोप्याह । सोऽयंकलादिवेधोऽरुणोदयवेधेसूर्योदयवेधेचसमान इति  
( निर्गमेपि ) सर्वप्रकारोवेधोऽयमुपवासस्यदूषकइति ॥ अतस्त्वमाधवेवअरुणो  
दयाद्यदंडेऽल्पदशमीस्पर्शेसंपृक्ताकृत्स्नघटीयोगेसंदिग्धा । मुहूर्त्तन्याप्तौसंयुक्ता  
उदयेसंकीर्णोत्पुक्ता । अरुणोदयवेलायांदशमीयदिसंगता ॥ संपृक्तैकादशींतांतु  
सोहिम्यैदत्तवानप्रभुरिति ॥ गोभिलाद्युक्तेः । पूर्वोक्तगारुडादेश्च । सामान्यतो  
विशेषतश्चारुणोदयवेधोनिषिद्धः । यत्त्वयसभागोरुणोदयइतिहेमाद्रिणोक्तम्  
यच्चमहत्तरात्रीरितितत्परमतस्त्वयमेवदूयितम् । अन्तेप्युक्तम् । वेधतारतम्यं

दोषतारतम्यादुपपद्यतइति । दोषतारतम्यंच प्रायश्चित्ततारतम्यादवगम्यते  
( तच्चोक्तं हेमाद्रौ स्मृत्यंतरे ) अज्ञानाद्यदिवासो हात्कुर्वन्नेकादशीं नरः ॥ ( दशमी  
शेषसंयुक्तां प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥ कृच्छ्रपादं नरप्रचीर्त्वा गांच दद्यात्सवत्सकान् ॥  
सुवर्गास्यार्धकंदेयं तिलद्रोणसमन्वितम् ( विधानांतरं तत्रैव ब्राह्मणान्नभोजयेत्त्रिंश  
दगांच दद्यात्सवत्सकान् । धरणा \* स्यार्धकंदेयं तिलद्रोणमथार्पयेत् ॥ अत्र वेधतार  
तम्यादवगम्यते हेमाद्रिः । निशः प्रांत इत्यपि दोषाधिक्यार्थमेव । तस्माच्चतुर्थदिकात्स  
कस्य वासुगोदय इति सिद्धम् । तेन च द्वापंचाश्वत्थानंतरं दशमी प्रवेशे रुगोदयवेध उ  
क्तो भवति ( अंत्योपितत्रैव कणवेनोक्तः ) उदयोपरिविद्धा तु दशम्येकादशी यदि ॥  
दानवेभ्यः प्रीणानार्थं दत्तवान्पाकशासन इति ( स्मृत्यंतरेपि ) दशम्याः प्रांतमादाय य  
दोदेति दिवाकरः ॥ तेन स्पृष्टं हरिदिनं दत्तं जंभासुराय तदिति ॥ तत्रासुगोदयवेधो  
वैशाखविषयः । तद्वाक्ये बुधवैशाखग्रहणात् ( तत्स्वरूपं तु माधवीयेस्कांदे ) परमापद  
मापन्नो हर्षवासमुपस्थिते ॥ नैकादशीं त्यजेद्यस्तु तस्य दीक्षास्ति वैशाखी ॥ विष्टाव  
र्पिता खिलाचारः सह वैशाख उच्यते इति ॥ यद्यपि पित्रादेरागमदीक्षायां तन्मात्र  
स्य वैशाखत्वं न तु पुत्रादेशस्तथापि स्व पारंपर्यप्रसिद्धमेव वैशाखत्वं स्मार्त्तत्वं च मन्यं  
तैवृद्धाः ( तत्त्वसागरे भविष्ये ) यथा शुक्ला तथा कृष्णायथा कृष्णा तथेतरा ॥ तुल्येते  
मन्यते यस्तु सर्वे वैशाख उच्यते ॥ केचित्तु दशम्यां न वसीवेधमपित्यजं तितत्रमलं  
सूच्यम् । उदयवेधस्तु परिशेषात्स्मार्त्तगोचरः ( तदाह माधवः ) असुगोदयवेधो  
ववेधः सूर्योदये तथा ॥ उक्तौ द्वौ दशमीवेधौ वैशाखस्मार्त्तयोः क्रमात् ( हेमाद्रिस्तु  
केयांचिदधरात्रेपि दशमीवेधमाह ) अर्द्धरात्रे तु केयांचिदशम्यावेध उच्यते ॥  
कपालवेध इत्याहुराचार्या ये हरिप्रियाः ॥ नैतन्मसमतस । यस्मात्त्रिंशत्तारावि  
रिष्यत इति ब्रह्मवैवर्तम् । अस्यार्थः अनद्यतने लङ् । इत्यवातीतायाः रात्रेः प्रविचम  
यामद्वयमागामिन्याः रात्रेः पूर्वया सद्यं दिवसश्च सकाल एवोद्यतनः ( सकाल  
इत्युक्तं महाभाष्ये ) सद्य एवर्तमानः काल एकादश्यहोरात्र उपोष्यः । तन्मध्ये दशमी

\* तुल्यायवाभ्यां कथिता अमुञ्जा वल्लस्ति गुञ्जो धरणां च तेष्टौ ॥ गद्याणकस्तत्तद्वयमिन्द्रतुल्यैर्वल्लैस्तथै  
को घटकः प्रदिष्ट इति लीलावती ॥ अतएवेत्यादिना माधवसंमते हेमाद्रिसंमते च सत्वात् ॥



प्रवेशे विद्वासात्याज्या (अतस्वहेमाद्रौ) दशम्याः संगदोषेणाञ्जरात्रात्तपरेणातु ॥  
वर्जयेच्चतुरोयामान्संकल्पार्चनयोः सदेतिदोषउक्तः । चतुरोयामानदिवसस्ये  
त्यर्थः । स्वमतेतुरात्रेस्त्रियामत्वात्प्रहरत्रयंपर्वशेषः । तेनचतुर्थप्रहरमववेधोयु  
क्तः । सोप्यरुणोदयसव । सूर्योदयं विनानैवस्नानदानादिकः क्रमइति ॥ मार्कंडेय  
पुराणात् । प्रत्युषोऽहर्मुखंकल्यइतिकोशादरुणोदयमारभ्यसूर्याशुप्रवृत्तेस्तत्रैव  
निषेधः । तेनमतभेदाद्वयवस्थेतिकेचित् । कैमुतिकन्यायेनारुणोदयवेधस्यैवेयं  
स्तुतिरितितुमाधवः । यस्तुदिक्पंचदशभिस्तथेतिवेधः सउपवासातिरिक्तवि  
ययइतिमाधवः सर्वप्रकारवेधोयमुपवासस्यदूषकः ॥ सार्द्धसप्तमुहूर्तस्तुयो  
गोयं बाधतेव्रतमितिनिगमादित्यलम् । अत्रमाधवमतेवैष्णवैरुणोदयविद्वा  
त्याज्या । यदात्वेकादश्येवशुद्धासतीवर्द्धते द्वादशीवाउभयंवातदापरोपोष्या ।  
एकादशीद्वादशीवाधिकाचेत्यज्यतांदिनम् ॥ पूर्वग्राह्यंतुत्तरं स्यादिति वैष्णवः  
निर्णयः । इतिमाधवोक्तेः (स्मार्तैस्तु) सूर्योदयविद्वात्याज्या । यदात्वेकादशी  
शुद्धासतीवर्द्धतेद्वादशीचसमान्यनावातदागृहस्थैः पूर्वायतिभिरुत्तराकार्या । प्र  
थमेहनिसंपूर्णा व्याप्याहोरात्रसंयुता ॥ द्वादश्यांचतथातातदृश्यतेपुनरेवच ॥  
पूर्वाकार्यागृहस्थैश्चयतिभिश्चोत्तराविभोइतिस्कांदोक्तेः (वर्धमानोप्येवमे  
वाह उभट्टौतुशुद्धाविद्वावासर्वेषांपरैव) संपूर्णोकादशीयत्र प्रभातेपुनरेवसा ॥  
सर्वरेवोत्तराकार्यापरतोद्वादशीयदोतिनारदोक्तेः ॥ द्वादशीमात्रवृद्धौतुशुद्धा  
यां पूर्वव । नचेदेकादशीविष्णोद्वादशीपरतःस्थिता ॥ उपोष्यैकादशीतत्र  
यदीच्छेत्परसंपदमिति नारदोक्तेः । द्वादशीमात्रवृद्धौतुशुद्धाविद्व्यवस्थिते ॥  
शुद्धापूर्वोत्तराविद्वास्मार्तनिर्णयइदृशइतिमाधवोक्तेष्वच (मदनरत्नेप्येवमयत्तु)  
विद्वाप्यविद्वाविज्ञेया परतोद्वादशीनचेत् । अविद्वापिचविद्वा स्यात्परतोद्वा

\* शुद्धैकादशीद्विधा ॥ आधिक्येनयुक्तारहिताच ॥ आधिक्यंचैकादश्याद्वादश्याउभयस्यवा ॥ तत्रा  
रुणोदयमारभ्यप्रवृत्तांशुद्धामप्यैकादशींविहायपरद्वयुपोषणभेदेषुपक्षेषु ॥ यदिनाधिःयंकस्यापितदाशुद्धाया  
मेवोपोषणमसंदेहात् \* अयंचपांचरात्राद्यागमदीक्षायागवैष्णवानांतर्निर्णयइतिमाधवः शुद्धसमायांशुद्धन्यू  
नायांवा । तेनोत्तरग्रंथासंगतिः ॥

दशीयदीतिहेमाद्रौपात्रवचनंतदेकादश्यावृद्धौज्ञेयम् (तदुक्तंमाधवेन) सका  
दशीद्वादशीचेत्युभयंवर्द्धतेयदा ॥ तदापर्वदिनंत्याज्यंस्मार्तैर्ग्राह्यंपरंदिनमिति ॥  
विद्वेकादश्यांद्वादशीमात्रवृद्धौचसर्वेषांपरैरेवतत्रैवेकादशीमात्रवृद्धौगृहिणाःपर्व  
यतेरुत्तरा । पूर्वोक्तपात्रोक्तेः । सकादशीविवृद्धौचेच्छुक्लेकशोविशेषतः ॥  
उत्तरांतुयतिःकुर्यात् पूर्वमुपवसेद्गृहीतिप्रचेतसोक्तेः । एतच्छुद्धाविद्धातुल्य  
मितिमाधवः । त्रयोदश्यांनलभ्येतद्वादशीयदिकंचन ॥ उपोष्यैकादशीतत्रदश  
मीमिश्रितापिचेतिस्कांदात् ॥ अविद्वानिनिविद्वैश्चनलभ्यंतेदिनानितु ॥ सुह  
र्तैःपंचभिर्विद्धाग्राह्यैवेकादशीतिथिरित्युच्यगृहोक्तेष्वच ॥ सुहर्तपंचक्रमरुणा  
दयमारभ्यज्ञेयम् । अन्यथोत्तरेऽह्निककादश्यभावासंभवात् (यदिपिहेमाद्रिणा)  
शुद्धसमाशुद्धन्यूनावाअधिकद्वादशिकाचेत्सर्वेषांपरैरेवेत्युक्तं तदपिबैशावविय  
यम् । स्मार्तानांतु पूर्वैवेत्यविरोधः (हेमाद्रिमतेतूच्यतेतत्र) शुद्धाविद्धादयनिं  
दात्रेधान्यूनसमाधिकैः ॥ यत्प्रकाराःपुनस्त्रेधाद्वादश्याूनसमाधिकैरित्यष्टादशैका  
दशीभेदाः ॥ तत्रशुद्धाधिकन्यूनद्वादशिकाशुद्धाधिकसमद्वादशिकाचसकामैःप  
र्वानिठकामैरुत्तराकार्या । प्रथमेहनिसंपूर्णोतिपूर्वोक्तस्कांदात् । ऊनद्वादशिका  
यांतुविष्णुप्रीतिकामैरुपवासद्वयंकार्यम् । संपूर्णोकादशीयत्रप्रभातेपुनरेवसा ॥  
लुप्यतेद्वादशीतिस्मिन्नुपवासःकथंभवेत् ॥ उपोष्यैवेतिथीतत्रविष्णुप्रीतानतपरैरि  
तिवृद्धवशिष्टोक्तेः ॥ शुद्धन्यूनाशुद्धाधिकाशुद्धसमाविद्धन्यूनाविद्धसमावाधि  
कद्वादशिकाचेत्सर्वेषांपरैरेतिहेमाद्रिः । मदनरत्नेतुशुद्धाधिकापरा । संपूर्णो  
कादशीयत्रेतिपूर्वोक्तः । अन्यापूर्वा । शुद्धायदासमाहीनासमाहीनाधिकोत्तरा ॥  
सकादशीमुपवसेन्नशुद्धावैशावीमपीतिस्कांदात् ॥ शुद्धासकादशीउत्तराद्वादशी  
नचेदेकादशीविष्णोर्इतिनारदोक्तेष्वच (यत्तु) अविद्धापिचविद्धास्यादितिपात्रं  
तच्छुद्धाधिकापरम् (यत्तु) संपूर्णोकादशीत्याज्यापरतोद्वादशीयदि ॥ उपोष्या  
द्वादशीशुद्धाद्वादश्यामेवपारणामित्यादितद्वैशावपरम् । स्मार्तानांतु पूर्वैवेत्युक्तं  
विद्धन्यूनासमद्वादशिकातुमुसूणांपुत्रवतांचपरा । अन्येषांपूर्वा (पुत्रवतीपि  
पूर्वोतिमदनरत्ने) विद्धन्यूनान्यूनद्वादशिकासैवसर्वैःकार्येतिहेमाद्रिः (मुसूणां



परान्येषां पूर्वतिमदनरत्ने) विद्वत्समासमद्वादशिकोनद्वादशिकाचमुमुक्षुभिः परा  
 २ न्यैः पूर्वाकार्या । दशमीमिश्रितापूर्वा द्वादशीयदिलुप्यते ॥ शुद्धवद्द्वादशीरा  
 जन्नोपोष्यामोक्षकांसिभिरितिव्यासोक्तेः । मोक्षकांसिग्रहणादन्येषां पूर्वव ।  
 सर्वत्रैकादशीकार्याद्वादशीमिश्रितानरैः ॥ प्रातर्भवतुवामावायतो नित्यमुपोषणा  
 मिति पाओक्तेः ॥ विद्वाधिकासमद्वादशिकाचसर्वेषां पूर्वव । पारणाहेनलभ्ये  
 तद्वादशीकलयार्पचेत् ॥ तदानीं दशमीविद्वाप्युपोष्यैकादशीतिथिरिति ऋष्यश  
 ङ्गोक्तेश्च (माधवमतेतु) अत्रगृहिणाः पूर्वायतेरुत्तरा विद्वाधिकान्यूनद्वादशि  
 कासोक्षपापक्षयविष्णुप्रीतिकामैः पराकार्या । गृहस्थेन तु नक्तं कार्यम् । सकाद  
 शीद्वादशीचरात्रिशेषे त्रयोदशी ॥ उपवासं न कुर्वीत पुत्रपौत्रसमन्वित इति ॥ कौ  
 र्मेदिनक्षये उपवास निषेधात् । दशम्यैकादशीविद्वाद्वादशीचस्यंगता ॥ क्षीणा  
 साद्वादशीज्ञेयानक्तंतुगृहिणाः स्मृतमिति वृद्धशातातपोक्तेश्च । गृहिणाः पूर्वत्रो  
 पवासः सकादश्याः । शुद्धन्यूनत्वे शुद्धसमत्वे वाद्वादश्याः । न्यूनसमत्वयोरेका  
 दश्यामुपवासः (यानितु) दशम्यनुगताहंतिद्वादशद्वादशीफलम् धर्मापत्यधना  
 यं चित्रयोदश्यांतु पारणामिति कौर्मदीनि दशमीवेधत्रयोदशी पारणायोः निषे  
 धकानितानि विहितभिन्नपराणि । अत्रमुलवचनानितद्वयवस्थाचाकरेज्ञेया (य  
 तु कालहेमाद्रौ बहुवाक्यविरोधेन संदेहो जायते यदा ॥ द्वादशीतु तदा प्राह्यात्रयोदश्यां  
 तु पारणामिति मार्कंडेयोक्तेः ॥ संदिग्धेषु च वाक्येषु द्वादशीं समुपोषयेत् ॥ तथा विवा  
 देषु च सर्वेषु द्वादश्यां समुपोषणम् ॥ पारणां च त्रयोदश्यामाज्ञेयं सामकीमुने इति  
 पाओक्तेश्च वेधसंदेहे ज्योतिर्विदां प्रतिपत्तौ वा पराकार्येत्युक्तम् । तद्वैष्णवविषय  
 मित्यलंबहुना । अथात्रोपयुक्तं किंचिदुच्यते । तत्र दशम्यामेकादशीयोगे दशमी  
 मध्ये ऋग्वभोजनं कार्यम् । सकादश्यां न भुंजीतेति तस्यासर्वनिमित्तत्वात् । निषे  
 धस्तु निवृत्तात्मा कालमात्रमपेक्षेत इति देवलोकतेश्च । केचित्तु सकादशीवृतां  
 गत्वेन पूर्वद्युरेकभक्तविधानाद्विधिस्पष्टे च निषेधानवकाशान्न काम्यवृतांगे भोज  
 ननिषेधः प्रवर्तते । तेनैकादशीमध्येऽपि पूर्वादिने भोजनमित्याहुः (अत्राधिकारी  
 माधवीयेकात्यायनोक्तः) अष्टवर्षाधिको मर्त्याह्यशीतिन्यूनवत्सरः ॥ सका

दश्यामुपवसेत्पक्षयोस्तभयोरपीति ( भविष्ये ) ब्रह्मचारीचनारीचशुक्तामेव  
सदागृहीति ( यत्तुविष्णाः ) पत्यौजीवतियानारीउपोष्यवत्साचरेत् ॥ आयुष्यं  
हरतेभर्तुर्नरकंचैवगच्छतीति ॥ तद्वर्जननुज्ञाविषयमितिप्रागुक्तम् ( उपवासा  
सामर्थ्यतुमाकडेयकौर्मयोः ) एकभक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच ॥ उपवासेन  
दानेनननिर्वादिशिकोभवेत् ॥ अत्रएकभक्तेनयोमर्त्यउपवासवतंचरेदित्येकभक्ता  
दिष्यपवासशब्दस्तद्वर्मातिदेशार्थः । तेनतत्प्रयुक्ताःसर्वधर्माः संकल्पमन्त्रेचैक  
भक्तादिपदेनोहःकार्यइतिमदनरत्ने । तथाऽसामर्थ्यप्रतिनिधिनाकारयेदिति  
प्रागुक्तम् ( वताकरगोप्रायश्चित्तमाहसाधवीयेकात्यायनः ) अर्कपर्वद्वयेरात्रौ  
चतुर्दश्यष्टमीदिवा ॥ एकादश्यामहोरात्रंभुक्त्वाचांद्रायणांचरेदिति ॥ अथ  
काम्यव्रतविधिः ( लघुनारदीये ) दशम्यादिसहोपालत्रिदिनंपरिवर्जयेत् ॥  
गन्धतांबूलपुष्पादिस्त्रीसम्भोगंसहायशाः ( तत्रदशम्यांविधिकौर्मै ) काश्यंसां  
संसूरांश्चचराकान्कोरदूयकान् ॥ शाकंसधुपरान्नंच त्यजेदुपवसन्नस्त्रियम्  
( तथा ) शाकंसांसंसूरांश्चपुनर्भोजनमैथुने ॥ द्यूतमत्यंबुपानंच दशम्यांदैशाव  
स्त्यजेत् ( मदनरत्नेनारदीये ) अक्षारलवणाःसर्वेहविष्यान्ननियेविगाः ॥ अवनी  
तल्पशयनाःप्रियासंगमवर्जिताः(व्रतद्वनान्याहहेमाद्रौदेवलः)असकृज्जलपानाच्च  
सकृत्तांबूलचर्वणात् ॥ उपवासःप्रणश्येत्तदिवास्वापाचमैथुनात् ॥ अशक्तौतुमदन  
रत्नेदेवलः(अत्ययेचांबुपानेननोपवासःप्रणश्यति ॥ अत्ययेकष्टे ( विष्णुरहस्ये)  
गात्राभ्यंगंशिरोभ्यंगंतांबूलंचानुलेपनम् ॥ व्रतस्थोवर्जयेत्सर्वयचन्यन्निरा  
कृतम् ( सधुप्रायश्चित्तमुक्तंनिर्णायामृतेसंग्रहे ) स्तेनहिंसकयोःसख्यंकृत्वा  
स्तैन्यंचहिंसकम् ॥ प्रायश्चित्तंव्रतीकुर्याज्जपेन्नामशतत्रयम् ॥ सिध्यावादेदि  
वास्वापेबहुशौबुनियेवगो ॥ अष्टाक्षरंव्रतीजप्त्वाशतमष्टोत्तरंशुचिः ॥ ओन्नमो  
नाराणायेत्यष्टाक्षर ( तत्रैवपैठोनासिः ) तांबूलचर्वणोस्त्रीसम्भोगेसांसनियेवगो ॥  
व्रतलोपोनचेत्कुर्यात्कृष्णावद्भुजिवर्जनमिति ॥ कृष्णौकादशीवद्धो जननियेध  
मात्रपरिपालनेतुतांबूलचर्वणादावपिनदोषइत्यर्थः । सम्भोगोऽतुकालादन्यत्र



रेतःसेकात्मसम्भोगमृतेऽन्यत्रक्षयः स्मृतइतिकात्यायनोक्तेः ( हेमाद्रौवशिष्यः )  
 उप<sup>१</sup>वासेतथाग्राह्येनकुर्यादन्तधावनम् ॥ दंतानांकायसंयोगोदहत्यासप्तसंकुलम् ॥  
 कायग्रहणान्मृलोद्याद्यनिषेधइतिहेमाद्रिः ( विष्णुरहस्ये ) ग्राह्योपवासदिवसे  
 खादित्वादन्तधावनम् ॥ ग्राह्याशतसम्पत्तमंबुप्राश्यविशुध्यति ( निर्णयामृते  
 व्यासः ) वर्जयेत्पारगोमांसं व्रताहेष्यौषधंसिदेति ( सकादश्यां ग्राह्यप्राप्तौमाधवी  
 येकात्यायनग्राह ) उपवासोयदानित्यः ग्राह्येनैमित्तिकंभवेत् ॥ उपवासंतदाकुर्या  
 दाघ्रायपितृसेवितम् ॥ मातापित्रोःक्षयेप्राप्तेभवेदेकादशीयदि ॥ अभ्यर्च्यपितृ  
 देवांश्चग्राहिघ्रेत्पितृसेवितमिति ॥ हेमाद्र्यादिसर्वनिबंधेवैवम् ॥ एतेनसकाद  
 शीनिमित्तकंग्राह्येकादश्यांकार्यमिति वदन्तः परास्ताः ( किंचमहालये ) सपक्षः  
 सकलः पूज्यः ग्राह्योऽशकंप्रतीतिश्रुतं योऽशकं । पौर्णमासीकादश्यांचमन्वादिग्राह्यं  
 सयाहापरिज्ञानेचतत्पक्षैकादश्यांविहितंग्राह्यंवाधितमेवस्यात् । यदापिस्मृति  
 चन्द्रिकास्थं पठति । अक्षाश्रितानिपापानितद्भोक्तुर्दातुरेवच ॥ सज्जन्तिपित  
 रस्तस्यनरकेशाश्वतीः समाइति ॥ तस्यापिरागप्राप्तभुजगोचरस्यवैधंग्राह्यंगो  
 चरयतांमहत्साहसमित्यलम् । योप्यश्रुतग्राह्यनिचयाजलपिंडंविनाकृताइति  
 लघुनारदीयेसकादश्यांग्राह्यादिनिषेधः । समातापितृभिन्नविषयः । पूर्ववाक्ये  
 तत्प्रहणात् । निचयः प्रतिग्रहः ( व्रतघ्नान्याहमदनरत्नेदेवलः ) सर्वभूतभयंव्या  
 धिः प्रमादोगुरुशासनम् ॥ अव्रतघ्नानिपद्यन्तेसकृदेतानिशास्त्रतः ( स्कांदेपि )  
 अष्टौतान्यव्रतघ्नानिआपोमूलंफलंपयः ॥ हविर्वाह्यणाकाम्याचगुरोर्वचनमौष  
 धम् ॥ इदं चार्तिसंकटविषयम् ( नारदीये ) अनुकल्पोनृणांप्रोक्तः क्षीणानां  
 वरवर्णिनि ॥ मूलंफलंपयस्तोयमुपभोज्यंभवेच्छुभे ॥ नत्वेवंभोजनंकौशिकदे

१± रेतःसेकात्मसम्भोगः ऋतुकालः क्षयोव्रतभ्रंशः रेतःसंक्रमणाद्भोगभागेन्यत्रेत्यादिपाठेरेतःसंक्रमणं  
 गर्भकोशेतद्योग्यंगमनामितिसण्वार्थः २+ पैठीनसिः ॥ अलाभेवानिषेधवाकाष्ठानांदन्तधावने ॥ पण्णादिना  
 विशुद्ध्येतजिह्वोत्तलेखंसदैवच ॥ व्यासः ॥ अलाभेदन्तकाष्ठानानिषिद्धायांतिथौतथा ॥ अपांद्वादश  
 गंडूषैर्विदध्यादन्तधावनमितिमयूखः ॥

कादश्यांबुधैः स्मृतमिति ( अस्यापवादः ) शयनेचमदुत्थानेसत्पार्श्वपरिवर्तने ॥  
नरोमलफलाहारी हृदिशल्यं समर्पयेत् ॥ एतेचाविरोधिनो निर्णयाः सर्व  
वृत्तेषु ज्ञेयाः ( तत्रैकादश्यांसंकल्पः ) गृहीत्वौदुंबरं पात्रं वारिपूर्णमुदङ्मुखः ॥  
उपवासंतु गृहणीयाद्यद्वावार्थेववधयेदिति ॥ साधवीये वाराहोक्तेः ( मंत्रस्तु  
विठ्ठाक्तः ) एकादश्यां निराहारः स्थित्वा ह्रमपरेहनि ॥ भोक्ष्यामि पुंडरीका  
क्ष शरणां मे भवाच्च्युतेति ( शैवादोनांतु हेमाद्रौ सौरपुराणे ) सावित्र्याप्यथवाना  
म्नासंकल्पंतु समाचरेत् ( शिवादेगायत्र्योयजुर्वेदे प्रसिद्धाः वाराहे ) इत्युच्चार्य  
ततो विद्वान्पुष्टपांजलिमथार्पयेत् ॥ ततस्तज्जलं पिबेत् । अष्टाक्षरेण मंत्रेण विजिज्ञे  
नाभिर्मंत्रितम् ॥ उपवासफलं प्रेक्षुः पिबेत् पात्रगतं जलमिति कात्यायनोक्तेः ।  
मध्यरात्रे उदये वा दशमीवेधे रात्रौ संकल्प इति माधवः । दशम्याः संगदोषेण अर्ध  
रात्रात्परेणातु ॥ वर्जयेच्चतुरीया मांसं संकल्पार्चनयोस्तदा ॥ विद्वोपवासेन अंस्तु दिनं त्य  
क्त्वासमाहितः ॥ रात्रौ संपूजयेद्द्विष्णां संकल्पं च तदाचरेदिति नारदीयोक्तेः ॥ तत्रैव  
पूजामभिधाय । देवस्य पुरतः कुर्याज्जगारं नियतो वृत्ती ( द्वादश्यानिवेदनमंत्रउक्तः  
कात्यायने ) अज्ञानं तिमिरांधस्य वतेनानेन केशव ॥ प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टि  
प्रदो भवेति ॥ नारदीये—वाह्येणानभोजयेच्छक्त्या दद्याद्द्वैदसिगांततः ( स्कांदेपि )  
कृत्वा चैवोपवासंतु श्रीयाद्वादशीदिने । नैवेद्यंतु लसीमिश्रं हत्याकोटिविनाश  
नम् ( द्वादश्यांचवज्र्यान्व्याहृहस्यतिः ) दिवा निद्रा पराचंच पुनर्भोजनमैथुने ॥ स्कौद्रं  
काश्यामिद्यं तैलं द्वादश्यामष्टवर्जयेत् ( हेमाद्रौ बृह्मांडपुराणे ) पुनर्भोजनमध्यायोभा  
रआयासमैथुने ॥ उपवासफलं हन्युर्दिवा निद्राच पंचमी ( स्कांदे ) परा\* चंकाशयतांबू  
ले लोभं वितथ भाषणम् ॥ वर्जयेदिति शेषः ( विष्णुधर्म ) असंभाठ्या हिसंभाठयतु  
लस्यतसि कादलम् ॥ आमलक्याः फलं वारिपापराणो प्राशय शुद्धयति ( बृहन्नारदी  
ये ) रजस्वलांच चांडालं महापातकिनंतथा ॥ सूतिकां पतितं चैव उच्छिद्यं रजका  
दिकम् ॥ ब्रतादिसध्ये शृगायाद्यद्येयांश्च निमुत्तमः ॥ अष्टोत्तरसहस्रंतु जपेद्देवेद  
मातरम् ॥ एतत्तत्र तं सतकेपि कार्यम् ॥ सूतके मृतके चैव न त्याज्यं द्वादशीव्रतमिति

\* श्वशुरानंगुरीरन्नमातुलान्तथैव च ॥ पितृव्यभ्रातृपुत्राणां परान्नैव दोषकृदीते तु निर्मूलम् ॥



विष्णुक्तेः ॥ तत्रत्यक्तं दानादिसत्कांते कार्यम् । सत्कांतेनरः स्नात्वा पर्जा चित्वा  
 जनार्दनम् ॥ दानं दत्त्वा विधानेनैव तस्य फलमश्नुत इति मात्स्योक्तेः ॥ रजोदर्शने  
 पिकार्यम् । एकादश्यां नभं जीतनारी दृष्टेरजस्य पीतिपुलस्त्योक्तेः ॥ यदा द्वादश्यां  
 अवगाक्षतदा शुद्धामप्येकादशीं त्यक्त्वा तत्रैवोपवासः कार्यः । शुक्लावायदिवाह  
 णाद्वादशी अवगान्विता ॥ तयोरेवोपवासश्च योदश्यां च पारणामिति नारदी  
 योक्तेः ॥ एते च नियमाः कास्यव्रते नियताः । नित्यव्रते सति संभवे कार्याः । शक्ति  
 मांस्तु पुनः कुर्यान्नियमं सविशेषां मितिकात्यायनोक्तेः ( अशक्तौ तु माधवीये  
 ब्रह्मवैवर्ते ) इति विज्ञाय कुर्वीतावश्यमेकादशीव्रतम् ॥ विशेषनियमाशक्तोऽ  
 होरात्रं भुवि वर्जित इति ॥ अथाष्टौ महाद्वादश्याः । तत्र शुद्धाधिकैकायुताद्वादशी  
 उन्मीलिनी संज्ञा । द्वादश्येव शुद्धाधिके वर्धते चेत्तावज्जुती ॥ वासरत्रयस्पर्शनी  
 विस्पृशा । अग्रे पर्वणाः संपूर्णाधिकत्वे पक्षवर्धिनी । पुढ्यस्य युताजया ॥ अवगायु  
 ताविजया । पुनर्वसुयुताजयंती । रोहिणीयुतापापनाशिनी । मृताः पापक्षयमु  
 क्तिकाम उपवसेत् । अवसुतं हेमाद्रौ ज्ञेयम् ॥ एकादशीद्वादश्योरेकत्वे तत्रैवोप  
 वासः । पार्यक्ये तु शक्तस्यैवोपवासद्वयम् । एकादशीमुपोष्यैव द्वादशीं समुपोष्ये  
 दिति विष्णुरहस्यात् । अशक्तौ तु द्वादश्यामेव । एवमेकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समु  
 पोषयेत् ॥ पर्ववासरजंपुरायं सर्वप्राप्नोत्यसंशयमिति तत्रैवोक्तेः ( यदा त्वल्पा  
 द्वादशी तदुक्तं मात्स्ये ) यदा भवति अल्पापि द्वादशी पारणादिने ॥ ऊयः काले  
 द्वयंकुर्यात् प्रातर्मध्याह्निकं तदा ( नारदीयेपि ) अल्पायामथ विप्रैर्द्वादश्या  
 मरुणोदये ॥ स्नानार्चनक्रियाः कार्या दानहोमादिसंयुता इति ( संकटे तु माध  
 वीये देवलः ) संकटे विद्यमे प्राप्ते द्वादश्यां पारयेत्तत्रयम् ॥ अङ्घ्रिस्तु पारणां कुर्या  
 त्पुनर्भुक्तं न दीयद्वा इति ॥ संकटे योदशी श्राद्धप्रदोयादौ ( अवक्रे चिदाहुः )  
 अपकर्षवाक्यान्यनाहिताग्निविषयाणि । अग्निहोत्रादीनां श्रौतत्वेनापकर्षा  
 योगादिति । द्वादश्यां च प्रथमपादमतिक्रम्य पारणां कार्यम् । द्वादश्याः प्रथमः पा  
 दो हरिवासरसंज्ञितः ॥ तमतिक्रम्य कुर्वीत पारणां विष्णुतत्पर इति निर्णयामृते म  
 दनरत्ने च विष्णुवर्मोक्तेः । अवक्रे चित्संगिरंते । यदा भूयसी द्वादशी तदापि प्रात

मुहूर्तत्रयेपारणाकार्यम् । सर्वेषामुपवासानांप्रातरेवहिपारणामितिवचनात् ( अ  
स्मद्गुरवस्तु ) बहूनांकर्मकालानांविनाकारणांवाधापत्तेः । प्रागुदग्वचनैश्च ।  
अल्पद्वादश्यामेवापकर्षं विधानादपराल्लग्नकार्यम् । प्रातःशब्दस्तुसायंप्रात  
र्द्विजातीनामशनंश्रुतिचोदितमिति वदपराल्लवाचित्वेप्युपपन्नः । नचवाक्य  
वैद्यर्थ्यपुनर्भोजनं सायंपारणानिवृत्यर्थत्वात्तस्येत्याहुः ( प्रसादेनसकादश्याप  
वासातिक्रमेअपरार्कवाराहे ) सकादशीविप्लुताचेद्द्वादशीपरतःस्थिता ॥ उ  
पोठ्याद्वादशीतत्रयदीच्छेत्परमंपदमिति ॥ कौष्ठीचतुर्विंशानाचेदितिपठितम् ।  
अत्राविरोधिनोनियमाःसर्ववृत्तेषुबोद्धव्याः । अन्येचनवरात्रेवस्यंतेइतिदिक् ॥

इति श्रीरामकृष्णभट्टात्मजकमलाकरभट्टकृतेनिर्णयसिन्धौएकादशीनिर्णयः ॥

—\*—

द्वादशीतुपूर्ववयुरमवाक्यात् । द्वादशीतुप्रकर्तव्यासकादश्यायुताप्रभोऽतिस्कां  
दाच्च । त्रयोदशीतुसर्वमतेशुक्लापूर्वाह्णोत्तरा । त्रयोदशीतिथिःपूर्वःसितो  
त्यार्थासतःपश्चादितिदीपिकोक्तेः । शुक्लात्रयोदशीपूर्वापरारह्णोत्तरात्रयोदशी  
तिमाधवाच्च । चतुर्दशीसर्वमतेह्यष्टापूर्वाशुक्लोत्तरा । उपवासेतुद्वाविपरे  
तिमदनरत्ने । पौर्णमास्यमावास्येतु सावित्रीव्रतंविनापरेशाहो । भूतविघ्नेन  
कर्तव्येदर्शपूर्णोक्तदाचन ॥ वर्जयित्वामुनि श्रेष्ठसावित्रीव्रतमुत्तममिति । ब्रह्म  
वैवर्त ( अमायायोगविशेषमाहापरार्कं शातातपः ) अमावास्यांभवेद्द्वारो  
यदाभमिसुतस्यवै ॥ जाह्नवीस्नानमात्रेणागोसहस्रफलंलभेत ॥ अमावैसोमवा  
रेणारविवारेणसप्तमी ॥ चतुर्थीभौमवारेण विष्णुवत्सदृशंफलम् ( तत्रैवव्या  
सः ) सिनीवालीकुहूर्वापि यदिसोमदिनेभवेत् ॥ गोसहस्रफलंदद्यात्स्नानं  
सौनिनाहृतम् ( हेमाद्रौबृहन्मनुः ) अथगात्रिवर्धनिष्टार्द्रानागदैवतमस्तके ॥ य  
द्यमारविवारेणव्यतीपातःसुच्यते ॥ नागदैवतंआप्लेखा । मस्तकोमृगाशिराः  
प्रथमपादइत्यन्ये । सचसर्वेषां ( अर्थेष्टिकालःगोभिलः ) पक्षांताउपवस्तव्याः



पक्षादयोऽभियष्टव्या इति । उपवासोऽन्वाधानम् । तत्र मध्याह्ने तत्पूर्ववापर्व  
 प्रतिपत्संधोर्तद्दिने यागः । पूर्वाह्णे वायमध्याह्ने यदि पर्वसमाप्यते ॥ उपोष्य तत्र  
 पूर्वद्युस्तदहर्याग इत्यत इति लौगाक्षिवचनात् ( तत्र द्वेधा विभागः ) आवर्तनात्  
 पूर्वाह्णेऽपराह्णस्ततः परः ॥ मध्याह्नस्तु तयोः संधिर्यदावर्तनमुच्यत इति ॥ स  
 दनरत्नेव चनात् । मध्याह्नादूर्ध्वसंधौ साधवमते परेऽह्नियागः । अपराह्णेऽथ वा  
 रात्रौ यदि पर्वसमाप्यते ॥ उपोष्य तस्मिन् न हनिष्वोभूते याग इत्यत इति लौगाक्षि  
 शोक्तेः ॥ हेमाद्रिस्त्वपराह्णसंधावपि परदिने प्रतिपच्चतुर्थ्यां शेचंद्रोदये च प्रतिदि  
 तीयादिठक्त्वं तस्येति पूर्वद्युर्यागः । पर्वशोऽद्वितीये तु यद्युच्येतु द्विजातिभिः ॥  
 द्वितीयासहितं यस्मादूर्ध्वयत्याश्वलायना इति ॥ द्वितीये त्विति कैमुतिकन्यायेन  
 तुर्यांशपरमतुरीये त्विति शूलपाणौ । पाठः स्पष्टार्थस्य ( तथा ) भूतापंचदशीप  
 र्णाद्वितीयाक्षय्यामिनी ॥ चरुरिष्टिरमायां स्याद्भूते कव्यादिकीं क्रियेति बौधाय  
 यनवचनाच्चेत्युचिवान् ( सदनरत्नेऽपि ) चतुर्दशी चतुर्योमा अमावास्या न दृश्यते ॥  
 श्वोभूते प्रतिपच्चेत्स्यात्पूर्वा तत्रैव कारयेदिति ( यत्तु साधवः ) यस्तु वाजसनेयी  
 स्यात्तस्य संधिदिनात्पुरा ( नक्वाप्यन्वाहितिः किंतु सदा संधिदिने हि सेत्याहयच  
 कालादर्शेष्युक्तम् ) आवर्तनादधः संधिर्यद्यन्वाधाय तद्दिने ॥ परेद्यु रिरिष्टिरित्या  
 हुर्वि प्रावाजसनेयिन इति ( यच्च सदनरत्ने ) मध्यादिनात्स्यादहनीहयस्मिन्  
 प्राक् पर्वणाः संधिरियं तृतीया ॥ साखर्विकावाजसनेयि सत्या तस्यामुपोष्याथ परे  
 द्युरिष्टिरिति ॥ एतत्तपोर्णमासीपरमिति तत्रैव ॥ आवर्तनोर्ध्वसर्वागस्ताद्रात्रौ  
 वासमाप्तौ हे । मध्याह्नादूर्ध्वसमाप्ता तृतीयेत्यर्थः । तत्कर्कभाष्यादेव जानी  
 चानंत भाष्यादिसकलतच्छाखीयग्रन्थविरोधात् वृद्धानादराचोपेक्ष्यम् ।

१+ इधमावर्हिः संपादनमग्निपरिशुद्धित्यादिप्रयोगप्रारम्भः संधाविति ॥ तत्स्वरूपं भगवतोपुराणे ॥  
 अनुमत्याश्चराकायाः सिनोवाल्याः कुहूविना ॥ एतस्यां द्विलवः कालः कुहूमात्रा कुहूः स्मृतेति ॥ लवश्च  
 स्मृत्यंतरे ॥ लवाक्षरचतुर्भागस्त्रुटिरित्यभिधीयते ॥ त्रुटिद्वयं निमेषोक्तो निमेषस्तुलवद्वयं ॥ तथा चैकलब्ध  
 चरोच्चरणपरिमिते काले एकः पर्वणोपयः प्रतिपदस्तदुभयं मिलितं संधिः कुक्कितिको किलेनोक्त्यावान्कालः स-  
 माप्यते तत्कालसंज्ञिताच्चैषा अमावास्या कुहूः स्मृतेति मात्स्यात्कुहूप्रतिपदोः सन्धिद्विगुण इति पुरुषार्थचिन्ता  
 मणिः ॥

( पौर्णिमास्यांविशेषमाहकात्यायनः ) संधिश्चेत्संगवाद्ध्वं प्राक्पयवर्तना  
 द्रवेः ॥ सापौर्णिमासीविज्ञेयासद्यस्कालविधीनरैः ( अमायांविशेषमाहबौधाय  
 नः ) द्वितीयात्रिमुहूर्ताचेत्प्रतिपद्यापराह्णिकी ॥ अन्वाधानंचतुर्दश्यांपरतःसो  
 मदर्शनात् ( कात्यायनप्रच ) यजनीयेऽह्निसोमप्रचेद्वारुण्यादिशिदृश्यते ॥ त  
 त्रव्यात्हतिभिर्हुत्वादंडंदद्याद्द्विजातयइति ॥ इतश्चबौधायनवाजसनेयिविषयस  
 तैत्तिरीयश्रुतौतुचंद्रदर्शनेऽपियागउक्तः । स्यावैशुमनानामेष्टिर्यामिभ्यजानन् ।  
 पप्रचाचंद्रमाअभ्युदेत्यस्मिन्नेवास्मैलोकेर्धुकंभवतीति । श्रुत्यंतरेऽपि । यदहः  
 पप्रचाचंद्रमाअभ्युदेतितदहर्यजन्निमांलोकानभ्युदेतीति । इदं बह्वचापस्तंब  
 विषयम् । सदनरत्नेप्येवम् । आपस्तंबभाष्यार्थसंग्रहेप्येवम् । अतः पक्षद्वय  
 स्यस्वस्वसत्राद्वयवस्थेति तत्त्वम् । दूययंत्याश्चलायनाइतितुपर्वाह्णिकसंधिविषय  
 मितिमाधवः ( शेषपर्वणीष्टौविशेषमाहमाधवीयेगार्ग्यः ) प्रतिपद्यप्रविष्टायां  
 यदिचेष्टिःसमाप्यते ॥ पुनःप्रणीयकृत्स्नेष्टिःकर्तव्यायागवित्तमैः† ॥ गृह्याग्नेर्ना  
 यंनियमइतिसदनपारिजातः । एवंपर्वात्यांशःप्रतिपदश्चत्रयोऽंशायामागकालः  
 उक्तः । क्वचित्प्रतिपत्तुर्याशेऽपियागः । संधिर्यद्यपराह्णिकस्याद्यागंप्रातःपरेह्नि  
 कुर्वाणःप्रतिपद्वागेचतुर्थेपिनदुष्यतीतिवृद्धशातातपोक्तेः । एतत्तपर्णिमापरमि  
 तिसदनरत्ने । पर्वाणिप्रतिपदःस्यस्यवृद्धेप्रचार्द्धप्रक्षिप्यसंधिर्ज्ञेयः ( तदाहमा  
 धवः ) वृद्धिःप्रतिपदोयास्ति तदर्थंपर्वाणिसिपेत् ॥ स्यस्यार्द्धतथासिपत्वासंधि  
 निर्णयितांसदेति ( कात्यायनोपि ) परेह्णिकान्यनास्तथैवाभ्यधिकाश्च  
 याः ॥ सिपत्वात्तदर्थपूर्वस्मिन्हासवृद्धीप्रकल्पयेदिति ॥ एवंस्मार्तस्थालीपाके  
 पिज्ञेयम् । तत्रेष्टिस्थालीपाकावाधानगृहप्रवेशनीयहोमानंतरभाविन्यांपौर्णा  
 मास्यांप्रारंभणीसौनतुदर्शे । यद्यारंभेसलमासपौषमासशुक्लशुक्रास्तादिभवतित  
 दाप्यारंभःकार्यः ( यान्ति ) उपरागोधिसासश्चयदिप्रथमपर्वणि ॥ तथास  
 लिम्बुचेपौषेनान्वारंभणमिष्यते ॥ गुरुभार्गवयोर्मौढ्ये चंद्रसूर्यग्रहेतयोतिसंग्रह

† तथाचापराहणसंधावपिब्राह्मणभोजनातिरेकःपदार्थःप्रतिपदिकर्तव्यइतिहेमाद्रौ ± पर्वणियावंत्यो  
 घटिकस्तद्वेद्यप्रातिपदोवृद्धिश्चेत्तदातदर्थपर्वणिसंयोज्यसंधिर्ज्ञेयः ॥ एवंहासेपि- ॥



वचनानितानिआलस्यादिनातिक्रान्तिशुद्धकालप्रारंभविषयाणि । नामकर्मचद  
 र्शेष्टिग्रथाकालसमाचरेत् अतिपातेस्तितयोः प्रशस्तेमासिपुण्यभङ्ग्यपराङ्म  
 र्गवचनादितिप्रयोगपारिजाते । उक्तं चैतत्प्रयोगरत्नेभट्टैः कालादर्शेतु । नाम  
 कर्मचजातेष्टिमितिपाठः (याज्ञिकास्तु) आधानानंतरापौर्णमासीचेन्मलमास  
 गा ॥ तस्यामारंभणीयादीन्नकुर्वीतकदाचनेतित्रिकांडसंडनवचनाच्छुद्धकाल  
 वविप्रष्टेष्टिकृत्वारंभंकुर्यादित्याहुः (कालादर्शेस्मृतिसंग्रहेपि) आरंभेदर्शपौर्  
 ण्योरग्निहोत्रस्यचादिमस ॥ प्रतिष्ठाः पंचकर्मद्यामलमासेविवर्जयेदिति ॥ अ  
 थविह्वतीष्टि (तत्रापस्तंबः) यदीक्ष्यादिपशुनायदिसोमेनयजेतसोमावास्या  
 यांपौर्णमास्यावेति । अत्रप्रकृतितःकालेसिद्धेपिसद्यस्कालताविवेया । तृतीया  
 यांसांगत्वेनोक्तेः । अत्रपौर्णमास्यमावास्याशब्दाभ्यांतदन्त्यसरागृह्यते । ते  
 नतद्वत्यहोरात्रइत्यर्थमाहरामांडारः (साधवोपि) इक्ष्यादिविह्वतिःसर्वापर्व  
 परायेयवेतिनिर्णयइति(अत्रविशेषमाहत्रिकांडसंडनःकात्यायनश्च) आवर्तना  
 तप्रार्थ्यादिपर्वसंधिःकृत्वातुतस्मिन्प्रकृतिविह्वत्याः॥ तदैवयागःपरतीर्थदिस्थात्त  
 स्मिन्विह्वत्याःप्रकृतेपरेद्युरिति ॥ धृतस्वान्यादयोप्येवमाहुः । यदीक्ष्येतिसांगा  
 याविह्वतेपर्वकालत्वादावर्तनात्प्राक्संधौसंधिसभितोयजेतेतिप्रकृतेःप्रतिपदि  
 समाप्तिनियमात्प्रकृत्यनंतरप्रति पादावह्वययोगात्पूर्वेद्युर्विह्वतिरितुक्तंअत्र  
 त्नेपार्थसारथिना)यद्यपिप्रकृतेःपर्वत्वादपर्वमंतेस्यादित्यापस्तंबेनोक्तम् । तथा  
 पिहेतुवादेनश्रुतिसूत्रत्वाभावादंगंवासमभिव्याराहादितिवदप्रामाण्यमितितदा  
 शयः (आग्रयणोतु विशेषंबद्ध्यामः) अन्वारंभणीयातुचतुर्दश्यांकार्येतिहिर  
 रायकेशिवृत्तोमातृदत्तीयोअन्येषांपर्वरायेव । पशौसोमेचकालांतरमप्याहवौ  
 धायनः । अमावास्येनवाहविषेष्ट्वानक्षत्रेचेति । शुक्लपक्षेकृत्तिकादिविशाखां  
 तेषुदेवनक्षत्रेठ्वतिकेशवस्वामीव्याचख्यौ । चातुर्मास्येठ्वपिद्वादशाहयथाप्र  
 योगपक्षयोर्नक्षत्रेठ्वप्यारंभः । यावज्जीवत्सांवत्सरप्रयोगयोस्तुफाल्गुन्यांचैत्र्यां  
 वारंभः(पशौतुविशेषमाहकात्यायनः) अर्धादहनोभवतिनियतंपर्वसंधिःपरस्ता  
 त्कृत्वातस्मिन्नहनिनुपशंसद्यत्तवद्व्यहंवा ॥ आरभ्याथप्रकृतिरथचेत्पर्वसंधिः

पुरस्तात्कृत्वा तस्मिन् प्रकृतिमथ तु स्यात्पशुः सद्यसव ॥ अधिकारपशुस्त्वग्नौ  
 योमीयेण सवनीयेन वा समानतंत्रोवाकार्य इति त्रिकांडमंडनः ( सोमेत्वाहापस्तं  
 बः ) अमावास्यायादीक्षा यजनीयेवामावास्याया यजनीयेवासुत्यमहः पौ  
 र्णमास्यादीक्षायजनीयेवापौर्णमास्यायजनीयेवाहुत्यमहर्हिति ( लाघायनस  
 त्रेपि ) पूर्वपक्षस्य प्रथमेह निदोक्षे तदुष्टवावानक्षत्रयोगे चेति पूर्वपक्षः शुक्लपक्षः ।  
 नक्षत्रयोगे चेत्ययमर्थः । चैत्र्यादिपूर्णिमायाश्चित्रानक्षत्रयोगे दीक्षेतेति । आवा  
 नंतु पूर्वगिणक्षत्रेषु चोक्तम् । तत्र पर्वनक्तं गार्हपत्यमादधीतेत्यादिकर्मकालव्या  
 पिग्राह्यम् । दिनद्वये तत्त्वे परं ग्राह्यम् । संकल्पस्य पर्वगिणलाभात् । पर्वनक्षत्रयोगे  
 तदेव ग्राह्यम् । यत्र ग्रीणिगसन्निपातितान्यृतुर्नक्षत्रचपर्वतत्समृद्धं विप्रतिषेधे ऋतुर्नाक्ष  
 त्रचबलीय इति । हिरण्यकेशि सत्रात् । ऋतुर्वसंते ब्राह्मणो गनीनादधीतेत्यादिः  
 ( रेणुारिकायांतु ) मायादिपंचमासेषु श्रावणोवाश्विने तथा ॥ मार्गशीर्षे शुक्लप  
 क्षे आधानमथ कारयेदित्युक्तम् । अत्र मूलं नृग्यम् । आधाननक्षत्राणि त्वापस्तंबसू  
 त्रे कृत्तिकारोहिणीमृगशीर्षपुनर्वसुपुष्यपूर्वात्तरापूर्वाधादोत्तरायाह्वाहस्तचित्रा  
 विशाखाऽनुराधाश्रवणोत्तराभाद्रपदा इति । सोमपूर्वाधाने विशेषमाहापस्तंबः  
 ( सोमेन यद्वयमणा आदधानो न तून्सूक्ष्मं नक्षत्रमिति ) अत्र प्रकरणादाधानकाल  
 बाधः । तेन सोमस्य वसंतकालतानवाध्यत इति रुद्रदत्तवृत्तौ नारायणवृत्तौ चोक्त  
 म् । तंत्ररत्नेवार्तिके च । तेवायते उभये अपहतपाप्मानो ऋतवः । सयवा उद्यन्ना  
 दित्यस्यां पाप्मानो पंहता । यदेवैनं क्रदाचन यज्ञमुपनमेदथा दधीतेत्यत्रोत्तरायणा  
 रूपं देवं दक्षिणायनरूपं च पित्र्यमित्युभयमृतत्रयं सोमाधाने शतपथे विशिष्य विहि  
 तम् । तदेकवाक्यतया शाखांतरेऽपि न तत्र सूक्ष्मदित्यत्र सोमकालबाधस्य । आधान  
 कालबाधस्य यदेवैनं श्रद्धोपनमेत्तदा दधीतेत्यस्यां शाखायां वाक्यांतरेण सिद्धत्वा  
 त्सोमकालबाधार्थमेवेदमित्युक्तम् । धर्तस्वामी तु सोमस्यापि यऋतुस्तस्यापि न  
 सूक्ष्मदितिलिखनादुभयकालबाधं मन्यते । श्रीरामांडारस्तु कालांतरविधानं वा  
 सर्वकालानादरोवेति पक्षद्वयमुक्तवान् । तत्राद्ये कृत्तिकादिकालांतरस्य यथाधानेव  
 संताद्यबाधेन विधानम् । तथा सोमेष्टुदगायनपूर्वपक्षपुरायाह सन्निपाते यज्ञकाला



नादेशइतिचंदोगसूत्रोक्तोदगयनबाधेनसोमाभिसंधिरूपकालांतरविधानादुदगय  
नत्वपेक्षतइत्युक्तम् । द्वितीयपक्षेतुयदैवैनंयज्ञउपनमेदितिसर्वकालानादरुक्तइ  
तिभारद्वाजसूत्रात्सर्वशब्दस्यचविश्वजित्सर्वपृथइतिवद्वयोरप्रयोगात् सर्वकाल  
बाधइति । तेनदक्षिणायनेपिभवतीत्युक्तम् । यङ्गुरुभाठयेदेववातभाठयेतंत्ररत्ने  
चषट्स्वपिचतुषुभवतीत्युक्तमितिदिक् । आद्वेत्वमावास्यात्रेधाविभक्तदिनतृती  
यांशेयोपराह्णभागस्तद्व्यापिनीसाग्निर्कैर्ग्राह्या । पिंडान्वाहार्यक\*आह्वंसीरो  
राजनिशस्यते ॥ वासरस्यतृतीयेशेनातिसंध्यासमीपतइतिकात्यायनोक्तेः ॥  
दर्शआह्वंतुयत्प्रोक्तंपार्वणांतत्प्रकीर्तितम् ॥ अपराह्णेपितृणांचतत्रदानंप्रशस्यतइ  
ति ॥ शातातपोक्तेश्च । दिनद्वयेतत्रसत्त्वेसर्वापराह्णव्यापीदर्शोग्राह्यः । यदुभये  
द्युरेषाबिहितः सर्वाऽपराह्णस्थितइतिदीपिकोक्तेः (यत्तुकाष्ठाजिनिः) भूतवि  
ज्ञासमावास्यांसोहादज्ञानतोपिवा ॥ आह्वकर्मणिग्रायेक्युस्त्येयामायुःप्रहीयतेइति  
तदपराह्णेचतुर्दशीवेधपरमितिश्राद्धहेमाद्रिः । अपराह्णव्याप्तिपरमितिसाधवः  
दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्त्यभावेऽशतोव्याप्तौचतिथिस्यपेक्षेतिहेमाद्रिः । यदाचतुर्द  
शीयामंतुरीयमनुपरयेत् ॥ अमावास्यासीयमाणातदैवश्राद्धमिष्टयतइतिकात्या  
यनोक्तेः ॥ चतुर्दश्याप्रचतुर्थयामंदर्शः परयेत् । चतुर्दशीयामत्रयंस्यादित्यर्थः  
सीयमाणापरदिनेऽपराह्णव्यापिनीनेत्यर्थः (व्यतिरेकमाह) वर्धमानाममावा  
स्यांतस्येदपरेहनि ॥ यामांस्त्रीनधिकान्वापिपितृयज्ञस्ततोभवेत् ॥ ततःश्राद्धं  
च (दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्त्यादौतिथिवृत्तौचहारीतः) त्रिमुहूर्ताचकर्तव्यापूर्वा  
खर्वाचब्रह्मवृचैः ॥ कुहरध्वर्युभिःकार्याययेष्टंसामगीतिभिः ॥ त्रिमुहूर्ताभावेतु  
पूर्वनेत्यर्थः । पिंडपितृयज्ञस्तुकात्यायनैर्यागदिनात्पूर्वेद्युःकार्यः । पूर्वावां  
गत्वात्पिंडपितृयज्ञइतितत्तूत्रात् । व्याख्यातंचैतत्कर्त्तव्यंकार्यैः । पूर्वोक्तवदशति  
पिंडपितृयज्ञोनपश्चात् । कुतःअंगत्वात् । तथाचश्रुतिः तस्मात्पूर्वेद्युःपितृ  
भ्यःक्रियतउत्तरमहर्देवान्यजंतइति । पूर्वद्युःपितृभ्योयज्ञं निपृणीयप्रातर्देवे  
भ्यःप्रतनुतइतिचतेनतन्मतेअंगमेवासी । तदुक्तम् । अंगंवासमभिव्यारादिति ।

\* पिंडपितृयज्ञानंतरंक्रियमाणंश्राद्धं ॥

तेन कर्ममते चतुर्दशी युक्तदर्शीपिंडपितृयज्ञ इति । श्रीअनंतभाट्टयेतु परेद्युरि  
त्युक्तम् । अत्र द्वेधाप्याचारो दृश्यते । आपस्तंबानां तु परदिने मुहूर्तमपि दर्शयित्वा  
तत्रैव पितृयज्ञः ( तदाह आपस्तंबः ) अमावास्यायां यदहश्चंद्रमसं न पश्यति तदह  
पिंडपितृयज्ञं कुरुत इति । अस्य रुद्रदत्तौ व्याख्यापिंडैर्युक्तः पितृयज्ञः पिंडपितृ  
यज्ञः स च कर्मांतरं न तु दर्शशेषः ( यथावक्ष्यति ) पितृयज्ञः स्वकालविधानादंगं स्या  
दिति । तंच यदहश्चंद्रमसं न पश्यति पंचदश्यां प्रतिपदि वा तदहः कुरुते । यदहस्त  
योः संधिरतदरहरित्यर्थ इति ( रामांडारोप्याह ) पिंडपितृयज्ञस्तु पर्वसंधिमहो  
रात्रा पराह्णा इति । अतः पर्वसंधिदिने पितृयज्ञः । शतपथश्रुतिरपि यदैवैनपु  
रस्तां पश्चाद्दृश्यते यः पितृभ्यो ददातीति । पर्वसंधिदिने हि पूर्वतः पश्चाद्वा च  
द्रो न दृश्यत सवेत्यर्थः ( सत्यावाढोपि ) पितृयज्ञं प्रक्रम्य दृश्यमाने तूपोऽयश्चोभते  
यजत इत्याह ( हेमाद्रिस्तु ) अमावास्याशब्दस्तिथिवचनस्य । पूर्वोक्तापस्तंब  
सूत्रे यदुक्तमनपश्यंतीति तत्र सयोभिप्रेतः । अतश्चतुर्दश्यां चंद्रमसश्च क्षीरात्वात्  
दुक्तदर्शीपितृयज्ञः । पितृयज्ञं तु निर्वर्त्य विप्रश्चंद्रक्षयेऽग्निमानिति मन्यते । यदु  
क्तं यदहस्तत्रैव दर्शनं नैति चन्द्रमाः । यत्स ग्रापेक्षया ज्ञेयं क्षीरो राजनिचेत्यपीति  
यदुक्तं दृश्यमाने पितृचतुर्दश्यापेक्षयेति च कात्यायनोक्तेः । दृश्यमानेऽप्येक इति  
गोभिलोक्तेः । तस्यां संध्यागतः सोमो मृणालमिव दृश्यते ॥ अपराह्णस्यस्त  
स्यां पिंडानां करणध्रुवमिति हारीतोक्तेश्च ( चंद्रक्षयकालश्चोक्तः कात्यायनेन )  
अष्टमेशे चतुर्दश्याः क्षीरो भवति चन्द्रमाः ॥ अमावास्याष्टमेशे तु पुनः किल भवेद  
गारिति ॥ तेन पूर्वद्युरेव पितृयज्ञ इत्यचि वान् ( कर्काचार्यैरपि ) अपराह्णोऽपि  
पितृयज्ञश्चंद्रादर्शने मावास्यायामिति कात्यायनसूत्रेऽदर्शनेन सयस्योक्तः तस्मिन्  
क्षीरो ददातीति श्रुतेः । अतस्त्वन्मते चतुर्दशी युक्तदर्शीपितृयज्ञे सति परदिने यागो  
र्थस्ति सद्धः । तदेतत्सर्वं तत्कृष्टमपि हेमाद्रिकर्कादिव्याख्याममापस्तंबैरनभ्युपग  
मात्कातीयबौधायनादिविषयम् । आश्वलायनानामपि शेषपर्वणि पिंडपितृय  
ज्ञः ( तथा च सूत्रम् ) अमावास्यायामपराह्णे पिंडपितृयज्ञ इति ( अत्र नारायणावृ  
त्तिः ) अमावास्याशब्दः प्रतिपत्पंचदश्योः सन्धिवचनोप्यत्रा पराह्णाशब्दसम



नव्यात्तद्व्यहोरात्रैवर्तते । तस्यापराक्लेष्टचतुर्थेभागेपिंडपितृयज्ञः कार्यः । श्री  
 पवसथ्ययजनीयेवाहनियदात्वहोरात्रसंधौतिथिसंधिः स्यात्तदौपवसथ्येखाह  
 निक्रियतइति । अतएवमुहूर्तमप्यसावास्याप्रतिपद्यपिचेद्वेत् ॥ तद्वत्तमस्ययज्ञेयं  
 पर्वशेषंतुपर्ववदितिहेमाद्रौवचनंपिंडपितृयज्ञपरमुक्तम् । प्रयोगपारिजातेअयं  
 चस्मात्तर्गिनमतासंपूर्णदर्शेआहव्यतियंगोराकार्यः । व्यतियंगोनासोभयोःसहा  
 नुयानम् । एतत्रस्थालीपाकेनसहपिंडार्यमुत्पृत्येतिसुत्रेवृत्तिकृतोक्तम् ( खंडपर्व  
 णितुकेचिदाहुः ) पूर्वेहपिंडपितृयज्ञव्यतियंगोराआहंकृत्वापरेहिकेवलः  
 पिण्डपितृयज्ञः कार्यः । वृत्तिकृतात्वान्वाष्टक्यंचपूर्वेद्युर्मासिसमास्यथार्वाणां ॥  
 काम्यामाभ्युदयेष्टम्यामेकोद्विष्टमथाष्टममित्युदाहृत्यपूर्वेद्युचतुर्थस्थलीपाकादु  
 त्पृत्यारनौकरणामित्युक्तेदर्शआहस्थालीपाकोनियतइतिगम्यते । स्थालीपा  
 कश्चपितृयज्ञएवेतिपूर्वदिनेव्यतियंगःप्रसिद्धः । प्रयोगपारिजातेतुवार्षिक  
 आह्लादेरपिव्यतियंगउक्तः । किमुतदर्शआहस्य । न्यायविदस्वाहुः । सुत्रस्य  
 वृत्तेप्रचसम्पूर्णादर्शविषयत्वात् खंडपर्वणपर्वदिनेकेवलंआहंपरदिनेचकेवलः  
 पितृयज्ञः कार्यःअतएवोक्तंवृत्तिकृता । नात्रपूर्वस्थालीपाकश्चोद्यतेसर्वआहे  
 युप्रसंगादितिप्रयोगपारिजातोक्तिरप्येतद्विषयैव । पूर्वदिनेचआहरेनौकरणा  
 मेवनपारिणाहोमःचतुर्वाद्येषुसारनीनांवह्नौहोमोविधीयते ॥ पिण्यब्राह्मणा  
 हस्तेस्यादुत्तरेद्युचतुर्वापीतिपरिशिष्टेनियमात् ॥ नचलौकिकारनौपकस्यकथं  
 गृह्यारनौहोमः । नान्यारनौपकमन्यारनौजुहुयादितिनिषेधात् । मैवं । आहस्य  
 गृह्यत्वेनस्मात्तर्गिनौपचनारनौवाकर्तव्यत्वात् । तस्मात्पूर्वेद्युःकेवलंआहंव्यति  
 यंगः । इदमेवचयुक्तंआहिताग्निनातुसर्वाधानिनाधाधानिनावासंपूर्णखंडेवादर्शे  
 श्रीतारनौपृथगेवपितृयज्ञः कार्योऽनतुदर्शआहव्यतियंगोतिविस्तरभीतेर्विरामः  
 ( सम्पूर्णादर्शेचविशेषमाहलौगासिः ) पक्षांतंकर्मनिर्वर्त्यवैश्वदेवंचसाग्निकः ॥  
 पिण्डयज्ञंततःकुर्यात्ततोन्वाहार्यकंबुवइति ॥ पक्षांतंकर्मन्वाधानम् । अन्वा  
 हार्यकंदर्शआहम् । अयमेवसारनेजीवत्पितृकस्यपिण्डपितृयज्ञकालोज्ञेयः । त  
 स्यापिकात्यायनेनहोमांतमनारम्भोवेत्याम्नानात् ( पिण्डपितृयज्ञाकरणोप्रा

यष्टिचत्तमाह पराशरमाधवीयेकात्यायनः ) पितृयज्ञात्ययेचैव वैश्वदेवात्यये  
 पिचभोजनेप्रतितान्नस्यचसर्वे श्वानरोभवेदित्यलम् (प्रकृतमनुसरामः) निरग्नि  
 कादिभिस्त्वमावास्यापराहणाव्याप्त्यभावेतुकुतुपकालव्यापिनीग्राह्या । भूत  
 विहाप्यमावास्याप्रतिपन्निमिथितापिवा ॥ पित्र्येकर्मणाविद्वाद्भिर्ग्राह्याकुतुप  
 कालिक्रीतहारीतोक्तेः इदंचनिरग्निकादिविषयम् । सिनीवालीद्विजैःकार्या  
 साग्निजैःपितृकर्मणास्त्रीभिःशूद्रैःकूहःकार्यातथाचानग्निजैर्द्विजैरिति लौगा  
 सिवचनात्तत्रअवसाग्निरौपासनाग्निरपीतिमदनपारिजातेउक्तम् । कुतपश्चा  
 पराहणाव्याप्त्यलाभेतुकल्पः । अपराहणाद्व्यापीयदिदर्शस्तिथिस्ये ॥  
 आहिताग्नेःसिनीवालीनिरग्न्यादेःकूहमतेतिजावालिनाभावेविधानात् ॥ तेन  
 साग्नीनांनिरग्नीनांवापराहणाव्यापिन्येवमुख्या ॥ तिथिसाम्यवृद्धिस्यैःसम  
 व्याप्तौखर्वादिनानिर्णयः । वैषम्येधिकदिनद्वयेपराहणास्पर्शकुतुपव्यापिनीति  
 माधवः । इदमेवयुक्तम् । हेमाद्र्यादिसतेकुतुपव्यापिन्येवानिरग्न्यादेर्मुख्या ।  
 अवसाग्निरौपासनाग्निरपीतिमदनपारिजातेउक्तम् । सिनीवालीदृष्टचन्द्रा  
 ( तथा दव्यासः ) दृष्टचंद्रासिनीवालीनष्टचंद्राकूहःस्मृतेति ॥ पूर्वदिनेपरदिन  
 सववातद्व्यापित्वेसैवग्राह्या । अंशव्यापित्वेवैषम्येधिककालव्यापिनीग्राह्या ।  
 दिनद्वयेऽतःसमव्याप्तौतिथिस्येपूर्वावृद्धौसाम्येचपरा । तिथिस्येसिनीवाली  
 तिथिवृद्धोकूहःस्मृता ॥ साम्येपिचकूहूर्ज्यावेदवेदांगवेदिभिरितिप्रचेतोवचनात्  
 दिनद्वयेसम्पूर्णकुतुपव्याप्तिस्तुतिथिवृद्धावेवभवतीत्यनन्तरवचनात्परैवेति । कुत  
 पस्त्वहोमुहूर्तविज्ञेयादशपंचचसर्वदा तत्राष्टमोमुहूर्तायःसकालःकुतपःस्मृत  
 इतिमात्स्योक्तेः । तुलादानपितृदेवप्रीत्यर्थापवासादौतुपराग्राह्येत्यन्यत्रविस्तरः  
 दर्शचमासिकवार्षिकादिश्राद्धप्राप्तौकालादर्शविशेषउक्तः ) दर्शस्यचोदकुंभस्य  
 दर्शमासिकयोरपि ॥ नित्यस्यचाद्विदकस्यापिदार्शिकाद्विदकयोरपीत्युक्त्वा ॥  
 सम्पातेदेवताभेदाच्छ्राद्धयुग्मंसमाचरेत् ॥ निमित्तानियतिश्चात्रपूर्वानुष्ठानका  
 रणमिति ( अवक्रमोनिर्णयदीपेउक्तः ) नष्टचन्द्रेयदाकालेक्षयाहदिवसोभवे  
 त् ॥ वैश्वदेवंक्षयश्राद्धंकुर्यात्प्राग्दर्शकर्मणाः ॥ अमाश्राद्धंचानुपनीतोपिकुर्यात्



( आङ्गशूलपाणी ) अमावास्यायुक्ता कृष्णा पक्षपंचदशी युचेत्युपक्रम्य । एतच्चानु  
 यनीतोपिकुर्यात्सर्वेषु पर्वसु ॥ आङ्गसाधारणानामसर्वकामफलप्रदम् ॥ भार्या  
 विरहितोप्येतत्प्रवासस्थोपिनित्यशः शूद्रोप्यमन्त्रवतकुर्यादिनेन विविनावुध  
 इति मात्स्योक्तेः ( अमाश्राद्धातिक्रमे प्रायश्चित्तमुक्तमृग्विधाने ) न्युयुवाचं  
 जपेन्मंत्रं शतवारं दिने दिने ॥ अमाश्राद्धं यदानास्ति तदा सम्पूर्णमेतत्तत् ॥ अत्र पूर्वो  
 क्तसाग्निकपदेनाहिताग्निस्मात्ताग्निमांश्च गृह्यते । विच्छिन्नाग्निक्वादिप्रच  
 निरग्निः ( तथा च हेमाद्रिरग्नौ करणप्रकरणे ) साग्निरग्नावनग्निस्तु द्विज  
 पाणावथाप्सु वा ॥ कुर्यादग्नौ क्रियां नित्यं लौकिकेनेति निश्चितमिति स्मृति  
 वाक्यमुदाहृत्य स्वस्वीकृतौ पासन तथा समुच्छिन्नाग्नि तथा भार्या विधुर तथा वा  
 ग्निरहिस्तस्य द्विजपाणौ जलादौ हेम इति व्याचक्षे ( मदन पारिजातेऽप्येयम् ) इ  
 दमेव साग्निकानग्नि कस्वरूपं सर्वत्र ज्ञेयम् ( अथ ग्रहणां निर्णयते ) तत्र चंद्रग्रहणो  
 यस्मिन् यामे ग्रहणांतस्मात्पूर्वप्रहरत्रयं न भुंजीत । सूर्यग्रहे तु प्रहरचतुष्टये न भुंजीत ।  
 सूर्यग्रहे तु नाश्रियात्पूर्वयामचतुष्टयम् ॥ चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन बालवृद्धातुरैर्विने  
 ति ( माधवीये वृद्धगौतमोक्तेः ) ग्रहणांतु भवेदिंदोः प्रथमादधियामतः ॥ भुंजीता  
 वर्तनात्पूर्वप्रथमे प्रथमादध इति मार्कंडेयोक्तेः च ॥ अधि ऊर्ध्वं नु चंद्रग्रहे यास च  
 तुष्टयानियेध उच्यते न तु सूर्यग्रहे सूर्योदयात् प्राक् भोजना प्राप्तेः । सैवं च न स्य । प्रथ  
 मयामेऽसूर्यग्रहे सति पूर्वद्युः पर्वरात्रे भोजन नियेध परत्वात् ( चंद्रग्रहे विशेषमाह मा  
 धवीये वृद्धवाशिष्ठः ) ग्रस्तोदये विधोः पर्वनाहर्भोजनमाचरेदिति ( द्वयोर्ग्रस्तास्ते  
 तु माधवीये व्यासः ) अमुक्तयो रस्तगयो रद्याद्दृष्ट्वा परेह नोति ( विष्णुधर्मपि ) अ  
 होरात्रं न भोक्तव्यं चंद्रसूर्यग्रहो यदा ॥ मुक्तिं दृष्ट्वा तु भोक्तव्यं स्नानं कृत्वा ततः परं ॥  
 अहोरात्रं नियेधः ( सूर्यग्रस्तास्ते मदनरत्ने गार्ग्यः ) संध्याकाले यदाराहुर्ग्रसते शाशि

\* यामत्रयं च ग्रहणायामावधिकं तथा वचनं ग्रहणां त्विति प्रथममाद्यामतोऽधि ऊर्ध्वं द्वितीयप्रहरे ॥ प्रथमे रा  
 त्रियामेचेत् प्रथमादधः प्रथमयाममध्ये इत्यर्थः । एवं सूर्यग्रहे पौर्णमासीति कालतत्त्वं ॥ + स्नात्वेति शेषः । एवं च  
 ग्रस्ते मुक्तिस्नानमपरेदुरवे ब्रह्मांडे । नाशनीयादयत्तकाले ग्रस्तयोश्चंद्रसूर्ययोः मुक्तयोश्च कृतस्नानः प  
 रचाद्भुज्यात्स्ववेश्मनोति । स्ववेश्मनीति पराचनियेधः

भास्करो ॥ तदहेनैवभुंजीतरात्रावपिकदाचन ॥ सायंसंध्यायांसूर्यग्रस्तास्तेपु  
र्वहनिरात्रौचनभोक्तव्यम् । प्रातःसंध्यायांचंद्रस्यग्रस्तास्तेपूर्वरात्रादुत्तरेहनिचन  
भोक्तव्यमित्यर्थः । चंद्रग्रस्तास्तेउत्तरदिनेसंध्याहोमादौनदीयः (तदाहोशनाः )  
ग्रस्तेचास्तंगतेत्विंदौज्ञात्वामुक्त्यवधारणाम् ॥ स्नानहोमादिकंकार्यंभुंजीतेदूदये  
पुनः ॥ एतदनाहिताग्निविषयम् । अपराह्णेनोपायनीयमस्तीति कात्याय  
नोक्तेर्ब्रतस्यश्रौतत्वेनविहितत्वेनचप्रबलत्वात् ( अद्भिर्ब्रतंकुर्यादिति निर्णयदी  
पः ) रागप्राप्तभोजनेकालनियमोयम् । तेनज्वरादाविवनभोजनमितिकंकानुसा  
रिणाः । बालवृद्धातुराणांतुग्रहयामात्पूर्वमेकयामोनिश्चिद्धः । सायाह्नेग्रहणांचे  
स्यादपराह्णेनभोजनम् ॥ अपराह्णेनमध्याह्नेमध्याह्नेनतुसंगवे ॥ भुंजीतसंग  
वेचेत्स्यान्नपूर्वभोजनक्रियेतिमार्कंडेयोक्तेः । इदंचवालादिविषयम् । बालवृ  
द्धातुरैर्विनेतिपूर्वोक्तेः । वेधकालेग्रहणोवापक्वमन्नंत्याज्यम् । सर्वयामेववर्णानां  
सूतकराहुदर्शने ॥ स्नात्वाकर्मणिग्राकुर्वीतशृतमन्नंविजयेदिति ॥ हैमाद्रौयत्  
त्रिंशन्मतात्श्रुतमितितदंतरितस्योपलक्षणम् । नवश्राद्धेषुयच्छिष्टंग्रहपर्युषितं  
चयदितिमिताक्षरायांवचनात्(भार्गवार्चनदीपिकायांज्योतिर्निबन्धेमेधातिथिः)  
आरनालंपयस्तक्रंदधिसनेहाज्यपाचितम् । मणिकस्थोदकंचैव नदुष्येद्राहुसूतके  
(मन्वर्थमुक्तावल्याम्)अन्नंपक्वमिहत्याज्यंस्नानंसवसनंग्रहे ॥ वारितक्रारनालादि  
तिलदर्भेनेदुष्यति(जलेत्वदोयोगांगविषयः)ग्रहोषितंजलंपीत्वापादकृच्छ्रं समा  
चरेदिति(तत्रैवचतुर्विंशतिमतेऽन्यजलस्यदोयोक्तेः । वेधकालेग्रहणोवाभोज  
नेप्रायश्चित्तमुक्तम् ( माधवीयेकात्यायनेन ) चंद्रसूर्यग्रहेभुक्त्वाप्राजापत्येनशु  
द्धयति ॥ तस्मिन्नेवदिनेभुक्त्वात्रिरात्रेणैवशुद्धयतीति । ग्रहणोचत्रिरात्रमेकरात्रं  
वोषवासःश्रेयोर्थिनाकार्यः । एकरात्रमुपोष्यैवस्नात्वादत्वाचशक्तितः ॥ कंचु  
कादिवसर्पस्यनिवृत्तिःपापकोशतः ॥ त्रिरात्रंसमुपोष्यैवग्रहणोचंद्रसूर्ययोः ॥  
स्नात्वादत्वाचविधिवन्मोदतेब्रह्मणासहेतिहेमाद्रौलैंगोक्तेः(इदंचपुण्यतिरिक्त  
विषयम् ) आदित्येहनिसंक्रातौग्रहणोचंद्रसूर्ययोः ॥ पारणांचोषवासंचनकुर्या  
त्पुत्रवानुगृहीतिजैमिनिवचनात् । यदातुरवेग्रस्तस्तदापुत्रिणाःप्रहरद्वयंहित्वावा



लादिवद्भोजनं नूपवासः । सायाह्नेऽग्रहणां चेत्स्यादिति पूर्वोक्तमार्कण्डेयवचनात्  
 सायाह्नेसंगवेश्नीयाच्चकारदेसंगवादधः ॥ मध्याह्ने परतोऽग्नीयात्नोपवासोरविग्र  
 हइति स्मृतेऽप्येति हेमाद्रिः । शारदोऽपराह्णः । साधवमतेतु पुत्रिणां पितृनोपवा  
 सगव । अहोरात्रं न भोक्तव्यमिति पूर्वोक्तनियेधस्य तेनापि पालनीयत्वात् । उपवा  
 सनियेधस्तु व्रतरूपोपवासपरः । कृत्वा कौकादग्नीनियेधवदिति ( सदनरत्नेऽप्येवम  
 इदमेव च युक्तमवर्धमानस्तु ) अहोरात्रं न भोक्तव्यमिति शातातपीयोक्तेः । सूर्याचं  
 द्रमसौर्लोकां न क्षयान्यातिमानवइति फलश्रुतेर्मुक्त्यदर्शने उपवासः काम्यः । न त्व  
 यं नियेध इत्याह । तन्न । अव्रतत्वेऽपि प्राणुक्तविष्णुधर्मे नियेधावप्रयंभावात्  
 ( तथा च व्यासः ) रविग्रहः सूर्यवारे सोमसोमग्रहस्तथा ॥ चूडामगारितित्व्या  
 तस्तत्र दत्तमनंतकम् ॥ वारेऽवन्त्येषु यत्तु पुरायं ग्रहणो चन्द्रसूर्ययोः । तत्पुरायं कोटि  
 गुणितं योगे चूडामगारौ स्मृतम् ॥ अवचाद्यंतयोः स्नानं कुर्यात् । ग्रस्यमाने भवे  
 त्स्नानं ग्रस्ते होमो विधीयते ॥ मुच्यमाने भवेद्दानं मुक्ते स्नानं विधीयत इति हेमाद्रौ  
 वचनात् । स्नानं स्यादुपरागादौ मध्ये होमः सुरार्चनमिति ब्रह्मवैवर्तचि । सर्वे  
 ग्रामे ववर्गानां सूतकं राहुदर्शने ॥ सचैलंतु भयेत्स्नानं सूतकाक्षं च वर्जयेदिति बृह  
 वशिष्ठोक्तेऽप्यत्र ( सचैलंतु भयेत्स्नानं परमिति सदनरत्ने उक्तम् ) भार्गवार्चन  
 दीपिकायां चतुर्विंशतिमते) मुक्तौ यस्तु न कुर्वीत स्नानं ग्रहणसतके ॥ ससतकीभ  
 वेत्तावद्यावत्स्यादपरोग्रहः ( इदं च स्नानमसंश्रयं कार्यमिति स्मृतिरत्नावल्यास  
 तत्रार्थविशेषो भारते ) गंगास्नानं न कुर्वीत ग्रहणो चन्द्रसूर्ययोः ॥ महानदी युचा  
 न्यासु स्नानं कुर्याद्यथाविधि ॥ महानदीर्वापि मासविशेषे काश्चिच्छ्रेयाः । प्रया  
 गंदेविकारे वा सन्निहत्या च वारणसि ॥ सरस्वती चन्द्रभागा कौशिकी तापिका त  
 था ॥ सिंधुर्गङ्गा किका चैव शरयूः कार्तिकादितः मलं हेमाद्रौ स्पष्टम् ( व्यासः ) इन्द्रो  
 लक्षगुणं पुरायं रवेर्देशगुणं ततः ॥ गंगातोये तु संप्राप्ते इन्द्रोः कोटी रवेर्देश ॥ गवां  
 कोटि सप्तस्य यत्तु फलं लभते नरः ॥ तत्फलं लभते सत्यं ग्रहणो चन्द्रसूर्ययोः ( असं

+ मार्कण्डेये भागैकवर्जनं सायाह्ने इत्यत्र तु भागद्वयवर्जनं मुक्तं ॥ तत्र बालादीनां भागद्वयवर्जनं मुख्यं ॥ स  
 कभागवर्जनं त्वनु कल्पइति ॥

भवेत्तुमाधवीये शंखः ) वापीकूपतडागेषु गिरिप्रस्रवणेषु च ॥ नद्यां न दे देवखाते  
सरसीषूदधृतां बुनि ॥ उष्णोदकेन वा स्नायाद्ग्रहणो चन्द्रसूर्ययोः ( अवतारतम्य  
माहमार्कडेयः ) शीतमुष्णोदकात्पुरायमपारक्यं परोदकात् ॥ भूमिषु मुदधृतात्  
पुरायंततः प्रस्रवणोदकम् ॥ ततोऽपि सारसं पुरायंततः पुरायं नदीजलम् ॥ तीर्थतोयं  
ततः पुरायं महानद्यं बुपावनसाततस्ततोऽपि गंगां बुपुरायं पुरायस्ततोऽबुधिरिति ॥ उष्णो  
दकमातुरविषयम् ( तथा ) गोदावरी महापुराया चन्द्रे राहुसमन्विते ॥ सूर्ये च रा  
हुयाग्रस्ते तसो भूते महामुने ॥ नर्मदा तोयसंस्पर्शो ह्यतः कृत्या भवति हि ( पृथ्वी चन्द्रो  
दये प्रभासखंडे ) गावो नागास्ति लाधान्यं रत्नानि कनकं मही ॥ संप्रदायकुरुक्षेत्रे य  
त्तु कलं लभते नरः ॥ तदिदं ग्रहणं भो धौ स्नानाद्भवति यद्गुणम् ( तत्रैव सौरपुराणो बु  
धिरस्नानमुपक्रम्य ) दानानि यानि लोकेषु विख्यातानि मनीषिभिः ॥ तेषां फलम्  
वाप्नोति ग्रहणो चन्द्रसूर्ययोः ( देवीपुराणो ) गंगाकनखलं पुरायं प्रयागः पृष्ठकरं त  
था ॥ कुरुक्षेत्रं महापुरायं राहुग्रस्ते दिवाकरे ॥ स्नानासंभवे स्मरणां वा कार्यम् ॥  
स्मृत्वा शतक्रतुफलं दृढा सर्वा धनाशनम् ॥ स्पृष्ट्वा गोमेधपुरायं तु पीत्वा सौत्रामणो  
र्लभेत् ॥ स्नात्वा वाजिमखं पुरायं प्राप्नुयादविचारतः ॥ रविचंद्रो परागो च अयने चो  
त्तरे तथेति मार्कडेयोक्तेः ( अवश्याद् \* माह ऋष्यशृङ्गः ) चंद्रसूर्यग्रहे यस्तु श्राद्धं विधि  
वदाचरेत् ॥ तेनैव सकला पृथ्वी दत्ता विप्रस्य वैकरे ( भारते ) स \* वस्वेनापि कर्तव्यं  
श्राद्धं वै राहुदर्शने ॥ अकुर्वाणस्तु नास्ति क्वात्पंके गौरिव सीदति ( विष्णुः ) राहु  
दर्शनदत्तं हि श्राद्धमाचन्द्रतारकम् ॥ इदं चामान्नेन हेम्ना वा कार्यं न त्वन्नेन । आपं  
द्यतग्नौ तीर्थे च चंद्रसूर्यग्रहे तथा ॥ आस श्राद्धं प्रकुर्वीत हेमश्राद्धमथ्यापि वेति ( शा  
तातपोक्तेरिति हेमोद्रिमाधवादयः । अपरार्कस्तु ) एतद्द्विजातीनां पाकाभावे द्र  
ष्टव्यं तीर्थश्राद्धवत् । पाकाभावे द्विजातीनामासश्राद्धं विधीयते ॥ इति सुसंतूक्तेः ।  
सैहिके यो यदा सूर्यग्रसते पर्वसंधिषु ॥ गजच्छाया तु सा प्रोक्ता तस्यां श्राद्धं प्रकल्पयेत्

\* त्रिदशाः स्पर्शसमये तृप्यति पितरस्तथा ॥ मनुष्याः मथ्यकाले तु मोक्षकाले तु राक्षसा इति बृहद्वि  
ष्टोक्तेः स्पर्शकाले कार्यमिति मयूखे ॥ # यदि संचेषेणापि सामग्या संपादने सर्वस्वव्ययो भवति दरिद्रस्य तेनापो  
त्यर्थः ॥



घृतेनभोजयेद्विप्रानघृतंभूमौसमुत्सृजेदिति ( वायवीयोक्तेश्चेत्याह । विज्ञाने  
 श्वरोप्याह ) ग्रहणाश्राद्धेभोक्तुर्दोषोदातुस्त्वभ्युदयइति । सूतकेमृतकेभुक्तेगृही  
 तेशशिभास्करे ॥ छायायांहस्तिनश्चैवनभयःपुस्तयोभवेदित्यापस्तंबनभोजननि  
 येधाच्च । अयंचनियेधःश्राद्धभोक्तुर्हस्तिच्छायासाहचर्यात् । अत्रग्रहणानिमित्त  
 कश्राद्धेनैवामासंक्रांत्यादिनैमित्तिकानांसिद्धिः । दार्शिकालभ्ययोरपीतिकाला  
 दादर्शोक्तेः । अत्राशौचमध्येपिस्नानश्राद्धादिकार्यमेव । सूतकेमृतकेचैवनदो  
 योराहुदर्शने ॥ तावदेवभवेच्छुद्धिर्यविन्मुक्तिर्नदुपयते ॥ इतिमाधवीयेवृद्धवशि  
 षोक्तेः । स्मार्तकर्मपरित्यागोराहोरन्यत्रसूतकइतिव्याघ्रपादोक्तेषुच ( का  
 लादर्शंअंगिराः ) सर्ववर्णाःसूतकेपिमृतकेराहुदर्शने ॥ स्नात्वाश्राद्धंप्रकुर्वीरनुदानं  
 शाठ्यविवर्जितम् ( मदनपारिजातेप्येवम् ) तेनस्नानमात्रंप्रकुर्वीतदानश्राद्धविव  
 र्जितमितिनिर्मूलंवदंतोगोडाःपरास्ताः । इयंचशुद्धिरविशेषान्मंत्रदीक्षापुरश्च  
 रणादिसर्वस्मार्तकर्मविषया । मदनरत्नेप्येवम् । रजस्वलायास्तुभार्गवाचनदी  
 पिकायाम् ( सूर्योदयनिबन्धे ) नसूतकादिदोषोक्तिग्रहेहोमजपादियु ॥ अस्ते  
 स्नायादुदक्यापितीर्थदुद्धृतवारिणीति ॥ अत्रच स्नानेनैमित्तिकेप्राप्तेनारीयदि  
 रजस्वला ॥ पात्रांतरिततोयेनस्नानंकृत्वाव्रतंचरेदित्यादिसिताक्षरोक्तोविधिर्ज्ञे  
 यः(तथाग्रहणोरात्रावपिश्राद्धादिकार्यम्)ग्रहणोद्वाहसंक्रांतियात्रार्तिप्रसवेषुच॥  
 दानंनैमित्तिकंज्ञेयंरात्रावपितदिष्टयतइत्यपरार्कव्यासोक्तेः चंद्रग्रहेतथारात्रौस्ना  
 नंदानंप्रशस्यतइतिदेवलोकतेषुच । यदातुज्योतिःशास्त्रगम्योदिनेचंद्रग्रहोरात्रौ  
 चसूर्यग्रहस्तदास्नानादिनकार्यम् । सूर्यग्रहोयदारात्रौदिवाचंद्रग्रहस्तथा ॥ त  
 वस्नानंनकुर्वीतदद्याद्दानंनचक्वचिदिति ॥ यद्विंशन्मतात्(ग्रहणादिनेवार्यिकश्रा  
 द्धप्राप्तौतुप्रयोगपारिजातेगोभिलः)दर्शेविग्रहेपित्रोःप्रत्याब्दिकमुपस्थितम् ॥  
 अन्नेनासंभवेहेम्नाकुर्यादामेनवासुतइति ॥ अत्रदर्शरविपितृसुतशब्दाःप्रदर्शना  
 र्याः । न्यायसाम्यात् । तेनचंद्रग्रहेपिसंपिंडादिवार्यिकमन्नादिनातद्दिनएवकार्य  
 मिति ( मदनपारिजातेव्याख्यातम् पृथ्वीचंद्रोदयेप्येवम् । तेनयानि ) आमश्राद्धं  
 प्रकुर्वीतमांससंवत्सरादुतइति । अन्नेनैवाब्दिकंकुर्याद्वेम्नावामेननक्वचिदिति

(सरीचिलौगाद्यादिवचनानितानिग्रहणादिनातिरिक्तविषयाणि यानितु) ग्रह  
णात्तु द्वितीयेऽह्निरजोदोषात्तु पंचमे (तथा) ग्रस्तोदयेयदा चंद्रे प्रत्यब्दसमुपस्थितस  
तु द्विनेचोपवासः स्यात्प्रत्यब्दंतु परेहर्नि॥ तथा ग्रस्तावेवास्तमानंतुरवींदू प्राप्नुतो य  
दि ॥ प्रत्यब्दंतु तदा कार्यं परेहन्येव सर्वदा ॥ चंद्रसूर्योपरागे च तथा आह्नं परेहनीत्या  
दीनि वचनानि । तानि महानि बंधेषु क्वाप्यनुलंभाच्चिर्मूलानि । प्रत्युक्तपूर्वाक्तानि  
बंधेषु तद्दिनस्य वा आह्नमुक्तमित्यलम् । ग्रहणादिसप्तदिनपर्यंतं रासगोपालाद्यागम  
दीक्षोक्ता\* ( शिवार्चनचंद्रिकायां ज्ञानार्णवे ) मंत्राद्यारंभणां कुर्याद्ग्रहणे चंद्रसूर्य  
योः ॥ ग्रहणाद्वापि देवेशकालः सप्तदिनावधीति (रत्नसागरे) सत्तीर्थेऽर्कविधु  
ग्रासेतंतु दामनपर्वणा ॥ मंत्रदीक्षां प्रकुर्वीता मासर्क्षादीन् शोधयेत् (अब्रसूर्यग्र  
हणामेव मुख्यम्) सूर्यग्रहणाकाले तु नान्यदन्वेयितं भवेत् ॥ सूर्यग्रहणाकाले न स  
मोनान्यः कदाचन ॥ नमासतिथिवारादिशोधनं सूर्यपर्वणीति ॥ तत्रैव कालो  
त्तरवचनात् । \* चंद्रग्रहे तु यादीक्षायादीक्षाव्रतचारिणां ॥ वनस्थस्य च यादीक्षा  
दारिद्र्यं सप्तजंमस्त्विति तत्रैव योगिनी तंत्रे नियेधाच्च ग्रहणां जन्मराश्यादौ निश्चिद्वस  
(तदुक्तं ज्योतिषे) विषदृशायोपगतं नराणां शुभप्रदं स्याद्ग्रहणं रवींदोः ॥ द्विसप्त  
नंदेषु सुमध्यमं स्याच्छेष्टेऽनियं कथितं मुनींद्रैरिति ॥ आयसकादश । नंदानव ।  
इयुः पंच (मदनरत्नेर्गर्गः) जन्मसप्तारिः फांकदशमस्थेति शाकरे ॥ दृष्टोरिष्टप्र  
दोराहुर्जन्मर्क्षो निधनेपि च ॥ रिः फांदादशम् । अंकानव । निधनं सप्तमतारा  
(पृथ्वीचंद्रोदये विष्णुधर्म) यन्नक्षत्रगतोराहुर्ग्रसतेशशिभास्करो ॥ तज्जातानां  
भवेत्पीडा येनराः शांतिर्वर्जिताः (तत्रैवपुराणांतरे) सूर्यस्य संक्रमोवापि ग्रहणांचं  
द्रसूर्ययोः ॥ यस्य त्रिजन्मनक्षत्रे तस्य रोगोद्यवावृत्तिः ॥ तस्य दानं च होमं च देवार्च  
नं च पौतथा ॥ उपरागाभिषेकं च कुर्याच्छिवांतिर्भविष्यति ॥ स्वर्गो न वाथपिष्टेन कृ  
त्वा सर्पस्य चाकृतिं ॥ ब्राह्मणाय ददेत्तस्य न रोगादिप्रचतत्कृतः ॥ जन्मनक्षत्रंतत्  
पूर्वात्तरे च त्रिजन्मनक्षत्रमित्युच्यते । जन्मदशमैकोनविंशतितारा इति केचित् ।  
सर्पस्य तदाकारस्य राहोरित्यर्थः (अद्भुतसागरे भार्गवः) यस्य राज्ञ्यस्य नक्षत्रे स्व

\* सूर्यग्रहदीक्षायाः प्राशस्त्यपरमिदं अन्यथा ज्ञानार्णवधृतचन्द्रपदवैयर्थ्यपितात् ॥



भनिरुपरज्यते ॥ राज्यभंगं सुहृन्नाशं मरणां चावनिर्दिशेत् ॥ राज्यस्य नक्षत्रं  
 अभिवेकनक्षत्रमिति ॥ तत्रैव व्याख्यातम् (भार्गवार्चनदीपिकायां ज्योतिःसा  
 गरे) सौवर्गाकारयेन्नागं पलेनाथपलार्धतः ॥ तदर्धेन तदर्धेन फणायां मौक्तिकं  
 न्यसेत् ॥ ताम्रपात्रे निधायाथ घृतपूर्वे विशेषतः ॥ कांस्ये वा कांतिलीहेवान्य  
 स्य दद्यात्सदक्षिणाम् ॥ चंद्रग्रहे तु रूप्यस्य विंबं दद्यात्सदक्षिणाम् ॥ नागं रुक्ममयं  
 सूर्यग्रहे विंबं च हेमजम् ॥ तुरंगरथगोभूमितिलसर्पिश्च कांचनम् (कालविवे  
 केऽपि) सुवर्गा निर्मितं नागं सतिलं कांस्यभाजनम् ॥ सदक्षिणां सवस्त्रं च ब्राह्मणा  
 यनिवेदयेत् ॥ सौवर्गा राजतं वापि विंबं कृत्वा स्वशक्तितः ॥ उपरागभवत्क्षोशाच्छिदे  
 विप्राय कल्पयेत् (संवत्सु) तमोमयमहाभीमसोमसूर्यविसर्जनाहेमताराप्रदानेन म  
 मशांतिप्रदो भव ॥ विधुंतु दनमस्तुभ्यं सिंहकानंदनाच्युत ॥ दानेनानेन नागस्य रक्ष  
 सांवेधजादयादिति (अत्र शांतिरप्युक्ता मात्स्ये) यस्य राशिं समासाद्य भवेद्ग्रहणा  
 संभवः ॥ स्नानंतस्य प्रवक्ष्यामि संवैश्वस्य समन्वितम् ॥ चंद्रोपरागं संप्राप्य कृत्वा  
 ब्राह्मणावाचनम् ॥ संपूज्य चतुरो विप्रांश्च कुलमाल्यानुलेपनैः ॥ पूर्वमेवोपरागस्य  
 समानीयौषधादिकम् ॥ स्थापयेच्चतुरः कुंभान् ब्रह्मणश्च लिलान्वितान् ॥ गजा  
 श्वरथ्यावल्मीकसंगमाद्भद्रगोकुलात् ॥ राजद्वारप्रदेशाच्च मृदसानीयानि क्षिपेत् ॥  
 पंचगव्यं पंचरत्नं पंचत्वक्पंचपलवम् ॥ रोचनं पद्मकं शंखं कुंकुमं रक्तचंदनम् ॥  
 शुक्तिस्फटिकतीर्थान्बु सितसूर्यपगुरगुलून ॥ मधुकंदेवदारुं च विष्णुक्रांतांश  
 तावरीं ॥ बलांच सहदेवींच निशाद्वितयमेव च ॥ गजदंतं कुंकुमं च तथैवोशीरचंद  
 नम् ॥ सतत्सर्वानि निक्षिप्य कुंभेष्वावाहयेत् सुरान् ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जल  
 दानदाः । आयांतु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः । यो सौवर्जधरो देव आदित्या  
 नां प्रभुर्मतः ॥ सहस्रनयनः शक्रो ग्रहपीडां व्यपोह तु ॥ मुखं यः सर्वदेवानां सप्तार्चि  
 रमितद्युतिः । चंद्रोपरागसंभूता मग्निः पीडां व्यपोह तु ॥ यः कर्मसांसी लोकानां  
 धर्मासिंहववाहनः ॥ यमश्च चंद्रोपरागोत्थां ग्रहपीडां व्यपोह तु ॥ रक्षोगणाधिपः  
 साक्षात्नीलांजनसमप्रभः ॥ खड्गहस्तोतिभोमश्च ग्रहपीडां व्यपोह तु ॥ नागपाश  
 धरो देवः सदा मकरवाहनः ॥ सजलाधिपतिर्देवो ग्रहपीडां व्यपोह तु ॥ प्राणारूपो हि

लोकानांसदाकृष्णामृगप्रियः ॥ वायुश्चंद्रोपरागोत्थाग्रहपीडांव्यपोहतु ॥ यो  
 सौनिधिर्पतिर्देवः खड्गशूलगदाधरः ॥ चंद्रोपरागकलुषंधनदोत्रव्यपोहतु ॥ यो  
 साविंधुधरोदेवः पिनाकीवृषवाहनः ॥ चंद्रोपरागपापानिसनाशयतुशंकरः  
 त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणिचराणिच ॥ ब्रह्मविष्णवर्कसुद्राश्चदहंतुसमपा  
 तकम् ॥ सप्तमावाहयेद्देवान्संत्रैरेभिश्चवारुणैः ॥ एतानेवतथासंत्रांस्वर्गापद्देविले  
 खयेत्ताम्रपद्मेयवालिख्यनववस्त्रेतथैवच ॥ सस्तकेयजमानस्यनिदध्युस्तेद्विजोत्त  
 माः । कलशान्द्रव्यसंयुक्ताज्ञानारूपसमन्वितान् ॥ गृहीत्वास्नापयेद्रूढंभद्रपीठो  
 परिस्थितम् ॥ पूर्वैरेवतुसंत्रैश्चयजमानंद्विजोत्तमाः ॥ अभियेकंततः कुर्यान्मंत्रैर्वा  
 रुणसूक्तकैः ॥ आचार्यवरयेत्पश्चात्स्वर्गापद्निवेदयेत् ॥ आचार्यदक्षिणां द  
 द्याद्गोदानंचस्वशक्तितः ॥ होमंवापिप्रकुर्वीततिलैर्व्याहृतिभिस्तथा ॥ दानंचशक्ति  
 तोदद्याद्यदीच्छेदात्मनोहितम् । सूर्यग्रहेसूर्यनामयुक्तानसंत्रांश्चकीर्तयेत् ॥ अने  
 नविधिनायस्तुग्रहोस्नानमाचरेत् ॥ नतस्यग्रहोदोषः कदाचिदपिजायते ॥  
 (इतिग्रहशांतिः ॥ भार्गवार्चनदीपिकायांब्रह्मसिद्धांते) सर्वैः पटस्थितंवीक्ष्य  
 खस्यंतैलांबुदर्पणैः ॥ ग्रहाण्युर्विणीजातुनपश्येत्पटंबिना(तथासंगलकृत्येयुवेध  
 विशेषोहेमाद्रौ) त्रयोदश्यादितोवर्ज्यदिनानानवकंध्रुवम् ॥ सांगल्येयुसमस्तेषु  
 ग्रहोचंद्रसूर्ययोः (प्रकारांतरंतत्रैवोक्तम्) द्वादश्यादितृतीयांतोवेधइंद्रग्रहेस्मृतः  
 एकादश्यादिकः सौरेचतुर्थ्यंतः प्रकीर्तितः (इदंचपूर्णाग्रसे) इयहं खगडग्रहे  
 रितितत्रैवोक्तेः । इदंचग्रस्तास्तेत्रिदिनंपूर्वमिति नारदेनग्रस्तास्तेविशेषोक्तेर्ग्र  
 स्तास्तभिन्नग्रहापरम् (ज्योतिर्निबंधेच्यवनः) ग्रहाणोत्पातभंत्याज्यंसंगलेयुतुक्त्वा  
 तुत्रयम् ॥ यावच्चरबिणाभुक्त्वासुक्तंभंदग्धकायवत् ॥ अन्यानिचारनेयादिमंड  
 लानितत्फलंवर्गाविकारादिफलंचदेवज्ञेभ्योज्ञेयम् (पुरश्चरणाचंद्रिकायां) चं  
 द्रसूर्योपरागोचस्नात्वाप्रयतमानसः स्पर्शादिमोक्षपर्यंतं जपेन्मंत्रं समाहितः ॥ जपा  
 दशांशतोहोसस्तथाहोमात्तुतर्पणम् ॥ तर्पणस्यदशांशेनमार्जनंकथितंकिल ॥  
 तत्रैवदेवतारूपंध्यात्वात्मानंप्रपूज्यच ॥ नमोतंसंत्रमुच्चार्यतदंतेदेवताभिधाम् ॥

१± ग्रहणतत्पूर्वांतरदिनानोतिरामकल्पद्रुमः । दीपिकापि खंडग्रहेत्वेतयोः प्राक्पश्चाद्विदिनं निन्द्यमिति ॥



द्वितीयांतामहंप्रचादभिषिंचाम्यनेनतु ॥ तोयैरंजलिनाशुद्धैरेभिःसिंचेत्तवसूद्ध  
 नि॥मार्जनस्यदशांशेनब्राह्मणानपिभोजयेत्॥ जपोर्चापूर्वकोहोमस्तर्पणांचाभि  
 येचनम् ॥ भूदेवपूजनंपंचप्रकारोक्तापुरस्क्रिया(तथा)होमाशक्तौजपंकुर्याद्धोम  
 संख्याचतुर्गुणम् ॥ एवंकृतेतुमंत्रस्यजायतेसिद्धिरुत्तमा (ग्रहणाप्रसंगात्कुरु  
 सेवप्रतिग्रहेप्रायश्चित्तमुच्यते । तत्रारुणास्मृतौ ) प्रतिग्रहीकुरुसेवेनभयः  
 पुरुषोभवेत् ॥ तथापिमनसःशुद्ध्यैप्रायश्चित्तंसमाचरेत् ॥ तप्तकृच्छ्रद्वयं  
 कुर्यादैदवेनसमन्वितम् ॥ सत्रेणावायजेताथजपेद्बालक्षसप्तकम् ॥ वापीकूपतडा  
 गादिस्वननैर्विसृजेद्धनमिति ॥ एतच्चायद्वर्गहितेनार्जयंतिकर्मणाब्राह्मणाध्वनम् ॥  
 तस्योत्सर्गेणाशुद्ध्यंतिदानेनतपसैवचेतिमनूक्तेरुत्सर्गोत्तरंगेयमितिदिक् (ग्रह  
 णांतरितस्यपूर्वसंकल्पितद्रव्यस्यद्वैगुण्यंभवतीतिशिष्टाःपठंतिलचलधुब्रह्मवैवर्ते )  
 दातव्यमिति नोक्ताश्यांवक्तव्यंकुत्रचित्तक्वचित्॥ अहोरात्रमतिक्रम्यतद्दानं द्विगुणं  
 भवेत् । दर्शोत्तरंपर्वसुस्याच्छतंचंद्रग्रहेभवेत् ॥ सूर्यग्रहेसहस्रंतन्मरणानंतकंस्मृत  
 मिति ॥ अत्रमूलंचिंत्यम् । अत्रकेचिद्वैदुल्यान्नाहुः । ग्रहणास्यनिमित्तत्वेनत  
 स्मिंश्चयस्यप्रयोजकत्वात्(ज्योतिःशास्त्रादिनाजातस्यज्ञानस्यनिमित्तत्वेप्राप्तेपि)  
 स्नानंदानंततःआद्धमनंतराहुदर्शने ॥ चंद्रसूर्योपरागेतुयावद्दर्शनगोचरइतिजावा  
 ल्यादिबचनेषु दृशिप्रयोगाच्चाक्षुषज्ञानस्यैवोपसंहारन्यायेननिमित्तत्वम् । अ  
 न्यथादृशीलक्षणास्यात् । तेनमेधाच्छादनैवादीनांजन्मसप्ताष्टेत्यादिनियिद्धदर्श  
 नानांचस्नानआद्धादौनाधिकारइति(कल्पतरुरप्याह)दर्शनशब्देनचाक्षुषज्ञानंगृ  
 ह्यतेनज्ञानमात्रम् । अज्ञातस्यनिमित्तत्वासंभवाच्चिमित्तमहिम्नैवज्ञानलाभेनदर्श  
 पदवैयर्थ्यापत्तेः । तेनचाक्षुषधीयोग्यःकालःपुरायः । योग्यत्वंचप्रयत्नापनेयचा  
 क्षुषज्ञानप्रतिबंधकराहित्यंतेनमेधच्छन्नेयोग्यताभावान्नस्नानादीति (निर्याया  
 सूतेप्येवम् । तदेतत्तुच्छम् । यदिचाक्षुषज्ञानंनिमित्तंस्यात्तदा ) सूर्यग्रहोयदारा  
 प्रौढिवाचंद्रग्रहस्तथा ॥ तत्रज्ञानंनकुर्वीतदद्याद्दानंनचक्वाचिदितिवाक्यंन्यर्थस्यात्र  
 चाक्षुषज्ञानाभावेनप्राप्यभावात् । तत्पूर्वकत्वाच्चनियेधस्य । नचेदंग्रस्तास्तपरम् ।  
 रविचंद्रयोरुत्तानंतरंगविदिवाग्रहत्वादितिवाच्यम् । तत्रयदस्यग्रहपरत्वे

१ अधिकरात्वायोगान्निमित्तपरत्वे च तद्गर्हनिमित्तकस्नानादेरस्तात्प्रागप्यभावा  
पत्तेः । अथ तत्रेति रात्रिदिने उच्यते सा वै च देवीति वदुर्गुणाभूते अपि (तत्र) तादृशमंत्र  
लिङ्गाभावात् । तयोर्निमित्तत्वे १ अधिकरात्वे वा १ न्यप्रयुक्तस्नानाद्यभावापत्तेः प्रच  
( किंच ) - नेक्षेतोद्यंतमादित्यं नास्तंयंतं कदाचन ॥ नोपरक्तं नवारिस्थं न मध्यं न  
भसोगतमिति ॥ मनुवचनं बाध्येत । दृष्टोरिष्टप्रदो राहुरित्यादि च । न चात्र विनि  
ते दर्शने नियेधा प्रवृत्तिवत्पर्युदासनीयतापि नियुक्तेति वाच्यम् । दर्शनस्यानुवादेन  
विवेयत्वाभावात् । एतच्चाग्रं वक्ष्यामः तत्त्वे वा विरुद्धत्रिकद्वयापत्तेः । अस्तु । स  
कृद्दर्शनविधानेन संकोच इति चेन्न । मुक्तिं दृष्ट्वा ततः स्नायादिति । मुक्तिस्नाने  
पि चाक्षुषज्ञानस्य निमित्तत्वापत्तेः । अस्तु । किं नाप्सिच्छन्नमिति चेत् । न ग्रस्ता  
स्ते तयोः । परेद्युरुदये दृष्ट्वा भ्यवहरेच्छुचिरित्दर्शनोत्तरं भोजनविधानादंधस्या  
पूर्ववेधकाल इव यावद्दर्शनं भोजननियेधापत्तिः । मध्येधीभूतस्य सुत रांयावच्चक्षुः  
प्राप्त्युपवासप्रसंगश्च । अथान्नलोलुपतया तत्र ज्ञानमात्रे विवक्ष्यते तत्पूर्वमपि  
निलज्जेन स्वीक्रियताम् ॥ एतेन यत्केनचिदुक्तं स्पर्शस्नानं मुक्तिस्नानं च यस्य दर्श  
नं तेनैव कार्यमनान्येन । कृत्वा प्रयत्येन समानकत्वं कृत्वा वगतेरिति तन्निरस्तम् ।  
कातर्हतिस्पर्शगतिः । दृष्टोरुदयेऽप्यविशेषात्वात् तृहैकत्ववदविवक्ष्यार्थतः । सि  
द्धज्ञानमात्रानुवादत्वे सर्वमुच्यते ॥ अंगुलाद्यनादेऽप्यग्रहव्यावृत्त्या वा दर्शनस्यार्थ  
वत्त्वमानचोक्तयोग्यतापिसाध्वीदर्शनोत्तरं मेघच्छन्ने योग्यताभावापत्त्या दानाद्य  
भावापत्तेः । तेन तत्तद्रेखावच्छेदेन ज्योतिःशास्त्रावेद्यत्वमेव योग्यता ( किंच )  
रजसोदर्शने नारीत्रिरात्रमशुचिर्भवेदित्यत्राप्यंधस्त्रीगामासौ चाभावप्रसंगः । यत्तु  
वर्धमानेनोक्तमज्ञानोत्तरं त्वधिकारो न ज्ञानकाले । स्नानकाले ज्ञानाभावात् । एवं  
दर्शनोत्तरं मुक्तिपर्यंतं अस्त्येव योग्यतेति तदपि प्रतिज्ञासाधनम् ( किंच ) ग्रस्तास्ते  
तयोः परेद्युरुदये दृष्ट्वा १ भ्यवहरेच्छुचिरित्यादिवाक्यं वैयर्थ्यापत्तिः ( चाक्षुष  
ज्ञानान्यथानुपपत्त्यैवाथार्थद्वये स्नानसिद्धेः ) ननु मुक्तिस्नाने शास्त्रीयमेव ज्ञानं निमि  
त्तं चाक्षुषं । चंद्रसूर्यग्रहेना १ द्यात्तस्मिन्नहनि पूर्वतः ॥ राहोर्विमुक्तिं विज्ञाय स्ना  
त्वा कुर्वीत भोजनमिति ( बृहद्गीतमेन विज्ञार्येति ज्ञानमात्रोक्तेः ) ( यत्तु ) मुक्तिं दृष्ट्वा



तुभोक्तव्यं स्नानं कृत्वा ततः परमिति तदपि ज्ञानमात्रपरम् । मेघमालादिदोषेणा  
यदि मुक्तिर्न दृश्यते ॥ आकल्प्यतु तं कालं स्नात्वा भुञ्जीत वाग्यत इति गौडनिबन्धे  
वचनात् । मेवम् । अज्ञातस्य निमित्तत्वाभावेन निमित्तमहिम्नैव ज्ञानलाभे वा  
क्यवैयर्थ्यमिति । अस्तास्तेऽपि तदापत्तेः किंच दर्शनं पंसो धिशेषाणामुपलक्षणां वा ।  
नाद्यः । दर्शनावच्छिन्नो काले स्नानतुलादानादेर्वाधात् । दर्शनविच्छेदे कृतम्  
पि स्नानादिन ग्रहणं निमित्तं स्यात् । नात्यः । यावद्दर्शनगोचर इति यावत्तदवै  
यर्थ्यप्रसंगात् । दृष्टग्रहस्य ग्रहणोत्तरमपि स्नानाद्यापत्तेः च । ज्ञानपक्षेऽप्येव  
दोषस्तुल्य इति चेत् । सर्व्वमिति । यदि ज्ञानवाचकं पदं श्रूयेत् । ततस्तस्यान्वयो  
विचार्येत । दृशिस्तु श्रूयत इति वैयर्थ्यम् । कथं तर्हि ज्ञानं लभ्यते । संक्रांती  
स्नायादिति वदथ्यदित्यर्वाह । अश्रुतत्वादेव नोद्देश्यविशेषाणां विवक्षा कृतो वा  
क्यभेदोऽपि । अस्तु तर्हि दृष्टग्रहणं निमित्तमिति चेत् । अस्तास्तेऽस्तोत्तरं स्नाना  
पत्तेः । विशिष्टोद्देशे वाक्यभेदाच्च तवाप्येतत्तुल्यमिति चेत् । यावद्दर्शनगोचर इ  
ति वचनेन तन्निषेधात् । तत्त्वन्ग्रह इव अस्तास्तेऽपि स्यात् । किंच दर्शनस्य विधि  
रनुवादो वा । आद्ये । ग्रहणोद्देशेन दर्शनविधिरुद्दर्शनविशिष्टस्नानविधिरुत  
स्नानोद्देशेन दर्शनविधिः । नाद्यः । ग्रहोद्देशेन स्नानविधाने दर्शनविधाने च वाक्य  
भेदात् । एतेन द्वितीयोऽपि परास्तः । न तृतीयः । स्नानस्याप्राप्तेः । दर्शनस्य  
निमित्तत्वेनाविधेयत्वाच्च । अन्यथा सोमवमनादौ प्रसज्जनविधिः केन वार्येत ।  
अथ नानावाक्येषु किंचिद्दर्शनविशिष्टस्नानविधिः । किंचिच्च प्राप्तं दर्शनं निमित्ती  
कृत्य स्नानमात्रविधिः । तन्न । स्नानस्याप्रधानस्य प्राप्तौ तदंगदर्शनप्राप्तिः ।  
तस्यांच निमित्ते सति स्नानमित्यन्योन्याश्रयात् । एवं दर्शनविधौ सति तन्निमित्तक  
स्नानविधिः । सति च प्रधानस्नानविधौ तदंगदर्शनविधिः एवमधिकारे प्रयोजकत्वे  
च योज्यम् । उक्तार्थं पूर्वकालत्वविधौ चास्त्वेव वाक्यभेदः अन्यथा स्नानोत्तरमपि दर्  
शनमंगं स्यात् । न द्वितीयः । तत्रापि दर्शनग्रहणोर्निमित्तत्वे स्नानद्वयापत्तेः । दर्शना  
वृत्तौ नैमित्तिकावृत्तिप्रसंगात् । दर्शनविशिष्टग्रहस्य विशिष्टस्यानुवादे वाक्यभेदा  
पत्तेः । न च हविरातिवद्विशिष्टं निमित्तमिति वाच्यम् । आर्तिमात्रस्य निमित्तत्वेन

निर्मेधाद्यार्तैरपितत्त्वापत्तेर्नैमित्तिकत्वभंगाद्युक्तं विशिष्टोद्देशत्वम् । इहतुग्रह  
 रामात्रस्य निमित्तत्वेन काचित् क्षतिः । तस्माद्दर्शनवाक्यानां प्रस्तास्तविषयत्वाद्ना  
 दशपरत्वाद्वाज्ञानस्य चार्थतः प्राप्तेस्तादेव निमित्तं तेन मेधाद्याच्छादनेऽधादेश्च स्ना  
 नादिभवत्येवेत्यलं वेदबाह्यैः संलापेन (इति ग्रहणानिर्णयः) अथ समुद्रस्नानम् (आश्च  
 लायनः) समुद्रे पर्वसु स्नायादमायां च विशेषतः ॥ पापैर्विमुच्यते सर्वे रमायां स्नानमा  
 चरन् ॥ भृगुभौमदिने स्नानं नित्यमेव विवर्जयेत् (भारते) अथ तथसागरौ सेव्यौ न स्पृष्ट  
 व्यौ कदाचन ॥ अथ तथं मंदवारे तु सागरं पर्वगास्पृशेत् (पृथ्वीचंद्रोदयेस्कांदे) पुना  
 ति पर्वगा स्नानात्तर्पणैः सरितां पतिः ॥ कदाचिदपि नैवावस्नानं कुर्यादपर्वगा (अ  
 स्यापवादस्तत्रैव प्रभासखंडे) पर्वकाले च संप्राप्तेन दीनां च समागमे ॥ सेतुबंधे तथा  
 सिंधौ तीर्थेऽवस्थेयुः संयुतः ॥ एवमादियुः सर्वेषु मध्येन्येतु स्वकर्मणा (तथा) विनामंत्रं  
 विना पर्वसुरकर्म विनानरैः ॥ कुशाग्रेणापि देवेशिनस्पृष्टव्यो महोदधिः (तथा)  
 न कालनियमः सेतौ समुद्रस्नानकर्मणा (तद्विधिप्रचतत्रैव) पिप्पलादसमुत्पन्ने क  
 त्ये लोकभयंकरे ॥ पायाणां स्तेमयादत्त आहारार्थं प्रकल्प्यतामिति पायाणां प्रसि  
 प्य विश्वाची च घृताची च विश्वयोने विश्वांपते ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव सागरे लवणां  
 भसि नमस्ते विश्वगुप्ताय नमो विश्वा अपांपते ॥ नमोजलविरूपाय नदीनां पत  
 ये नमः ॥ नमस्ते जगदाधारशंखचक्रादाधर ॥ देवदेहि ममानुजां तव तीर्थनिषे  
 वणो ॥ त्रितत्त्वात्मकमीशानं नमो विष्णुमुमापतिम् ॥ सान्निध्यं कुरु देवेश सा  
 गरे लवणां भसि ॥ अग्निप्रचयो निरनिलप्रचदेहोरेतोधाविष्णुरमितस्य नाभिः  
 एतद्ब्रुवन् यांडवसत्यवाक्यं ततोऽवगाहेत पतिं नदीनामिति भारती क्तमंत्रान् पठित्वा  
 विधिवत् स्नात्वा । सर्वरत्नो भवान् श्रीमान् सर्वरत्नाकरो यतः ॥ सर्वरत्नप्रधा  
 नस्त्वं गृहाणार्धं महोदधे ॥ इत्यर्घ्यं दत्त्वा तर्पयेत् (यथोक्तं पृथ्वीचंद्रोदयेस्कां  
 दे) पिप्पलादं विष्णुगवं च कृतांतं जीविकेश्वरम् । वशिष्ठं वामदेवं च पराशरमुमा  
 पतिं ॥ वाल्मीकिं नारदं चैव वाल्खिल्यांस्तथैव च ॥ नलं नीलं गवाक्षं च गव  
 यं गंधमादनम् ॥ जांबवंतं हनुमंतं सुग्रीवं चांगदं तथा ॥ मैदं च द्विविदं चैव ब्रह्मभंशर  
 भं तथा ॥ रामं चलहमगां चैव सीतां चैव यशस्विनीम् ॥ एतांस्तु तर्पयेद्द्विद्वान्जल



६०

निर्णयसिन्धुः प० १ ।

मध्येविशेषतः ॥ आब्रह्मस्तंभपर्यंतं यत्किंचित्सचराचरम् ॥ मयादत्तेनतोयेन  
तस्मिन्नेवाभिगच्छत्विति ॥

इति श्रीमोमांसकनारायणभट्टसूरिसूनुरामकृष्णभट्टात्मजदिनकरभट्टानुजकमलाकरभट्टकृते  
निर्णयसिन्धौ प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः ॥

प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः



## अथ निर्णयसिन्धौ द्वितीयपरिच्छेदः प्रारभ्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथसंवत्सरप्रतिपदमारभ्य । तिथिकृतेचक्रणादिब्रते  
शुक्लादिमेवच ॥ विवाहादौचसौरादिमासंकृत्येविनिर्दिशेदितिब्राह्मप्रायशानु  
सृत्रातिथिनिर्णयस्तत्कृत्यंचनिरूप्यते । तत्रमीनसंक्रांतौपश्चात्तथोडशघटिकाः  
पुराणकालः । रात्रौतुनिशीघात्प्राक्परतश्चसंक्रमेपूर्वात्तरदिनार्धपुराणमा निशी  
थेतुदिनद्वयंपुराणमितिसामान्यनिर्णयादवसेग्रम (अथतिथिनिर्णयः ) तत्रचैत्र  
शुक्लप्रतिपदिवत्सरारंभः । तत्रौपयिकीग्राह्या । चैत्रेमासिजगद्ब्रह्माससर्जप्रथमे  
हनि ॥ शुक्लपक्षेसमग्रन्तुतदासूर्यादयेसतीतिहेमाद्रौब्राह्मोक्तेः ॥ दिनद्वयेतद्व्या  
प्तावव्याप्तौवापर्वेव ( तदुक्तज्योतिर्निबन्धे ) चैत्रेसितप्रतिपदयोवारोर्कादयेस  
वर्षेशः ॥ उदयार्द्धतयेपूर्वनोदययुगलेपिपूर्वःस्यात्तयस्माच्चैत्रसितादेस्तदयज्ज्ञानोः  
प्रवृत्तिरब्दादेरिति । वत्सरादौवसंतादौबलिराज्येतथैवच ॥ पूर्वविद्धैवकर्तव्या  
प्रतिपत्सर्वदाबुधैरितिवृद्धवशिष्योक्तेः ॥ चैत्रमासस्ययाशुक्लप्रथमाप्रतिपद्वे  
त् ॥ तद्वह्निब्राह्मणाःकृत्वासोपवासस्तुपूजनम् । संवत्सरमवाप्नोतिसौख्यानिभू  
गुनंदनेतिहेमाद्रौविष्णुधर्मोक्तेः । यदातुचैत्रोमलमासोभवतितदादैवकार्यस्यत  
त्रनिश्चिद्धत्वाच्छुद्धेमासिसंवत्सरारंभःकार्यइतिकेचिदाहुः । निष्कर्षस्तु । शुक्ला  
देर्मलमासस्यसोतर्भवतिचोत्तर इत्यादिवचनादग्रिमवर्षातः पातान्मलमासमार  
भ्यैववर्षप्रवृत्तेः शुक्रास्तादाविवमलमाससर्वकार्यइतिवयंप्रतीमः । ननुशुक्रास्ता  
दौचैत्रशुक्लप्रतिपदंतरस्याभावाद्युक्तंतन्मध्यग्वानुष्ठानं मलमासेतुशुद्धप्रतिपदं  
तरस्यसंभवात् । शुद्धसंवत्सरारंभोयुक्तइतिचेत् । भ्रंतीसि । नहिंप्रतिपदंतरस  
त्वंप्रयोजकं द्विकरणापत्तेःवर्षशब्दत्वापत्तेश्च । अपितुवत्सरारंभः । सतुमलमा  
सेपीत्युक्तंप्राक् । नहिचैत्रशुक्लादिर्मलमासःपूर्ववर्षं तर्भवतीतिब्रह्मणापिसुवच



॥ तत्र तैलाभ्यंगो नित्यः । वत्सरादौ वसन्तादौ बलिराज्ये तथैव च तैलाभ्यंगमकुर्वी  
 णो नरकं प्रतिपद्यत इति विशिष्टोक्तेः ( अस्यामेव नवरात्रारम्भः तदुक्तं मार्कण्डेय  
 पुराणे ) शरत्काले महापूजा क्रियते याचवार्धिकीति ॥ तत्र परयुतैव ग्राह्या ।  
 अमायुक्तानकर्तव्या प्रतिपच्चण्डिका चने ॥ मुहूर्तमात्राकर्तव्या द्वितीयादिगुणा  
 न्वितेति देवीपुराणात् ॥ तिस्रो ह्येताः पराः प्रोक्तास्तिथयः श्रुतनन्दन ॥ कार्तिका  
 चयुजोर्मासोश्चैत्रे मासि च भारतेति हेमाद्रौ ब्राह्मणेः ॥ पराः परयुताः । अत्र वि  
 शेषः । पारणानिर्णयश्च शारदनवरात्रे वक्ष्यते ( अत्र प्रपादानमुक्तमपराकर्त  
 भविष्ये ) अतीते फाल्गुने मासि प्राप्ते चैत्रमहोत्सवे ॥ पुराये हतिविप्रकथिते प्रधा  
 दानं समारभेदित्युपक्रम्य । तत्प्रचोत्सर्जयेद्विद्वान्मंत्रेणानेन मानवः ॥ प्रपेयं सर्व  
 सामान्य भतेभ्यः प्रतिपादिता ॥ अस्याः प्रदानात्पितरस्तृप्यन्तु हि पितामहाः ॥  
 अनिवार्यं ततो देयं जलं मासचतुष्टयमिति ( तथा ) प्रपादा तु मशक्तेन विशेषाद्धर्म  
 मोप्सुता ॥ प्रत्यहं धर्मघटको वस्त्रसंवेष्टिताननः ॥ ब्राह्मणास्य गृहे देयः शीतामलज  
 लः शुचिः ( तत्र मंत्रः ) सद्यधर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानात्सक  
 लाममसंतु मनोरथाः ॥ अनेन विधिना यस्तु धर्मकुम्भं प्रयच्छति ॥ प्रपादानफलं  
 सोऽपि प्राप्नोतीह न संशय इति ॥ चैत्रशुक्लतृतीयायां गौरीमीश्वरसंयुताम् ॥ सम्प्र  
 जयदोलोत्सवं कुर्यात् ( तदुक्तं निर्णयासूत्रे देवीपुराणे ) तृतीयायां यजेद्देवीं शं  
 करेण समन्विताम् ॥ कुंकुमागरुकपूरमणिवस्त्रसुगंधकैः ॥ स्रगंधधूपदीपैश्च द  
 मनेन विशेषतः ॥ आंदोलयेत्ततो वत्सं शिवो मातुष्टये सदेति ॥ अत्र चतुर्थीयुता ग्रा  
 ह्या । मुहूर्तमात्रसत्त्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परं इति साधवोक्तेः ( अत्रैव सौभाग्यशायन  
 व्रतमुक्तं मातृस्ये ) वसंतमासमासाद्य तृतीयायां जनप्रिये ॥ सौभाग्याय सदा स्त्रीभिः  
 कार्यपुत्रसुखेप्सुभिरिति तत्रापि परयुतैव । इयंच मन्वादि रपि ( अत्रैव प्रसंगात्स  
 र्वमन्वादि निर्णय उच्यते ( ताश्चोक्तादीपिकायाम् ) तिथ्यर्गनीति तिथिस्तथ्याशे  
 क्कणोभोनलोग्रहः । तिथ्यर्को न शिवोऽथवा मातिथी मन्वादयो मधोरिति ॥ तिथिः  
 पूर्णिमा । अग्निस्तृतीया । नेति वैशाखेनास्तीत्यर्थः । आशादशमी । कृष्णोभः  
 कृष्णाष्टमी । अनलस्तृतीया । ग्रहो नवमी । अर्को द्वादशी । नेति मार्गशीर्षेना

स्तीत्यर्थः । शिवएकादशी । अप्रवः सप्तमी । सधौश्चैवादारभ्यैतामन्वादय इत्यर्थः । अत्रमलवचनानिहेमाद्यादेर्ज्ञेयानि । एताश्चमन्वादयोहेमाद्रिमातेशुक्तापसस्थाः पौर्वाह्णिकाः कृष्णापसस्थाः आपराह्निकाग्राह्याः । पूर्वाह्णेतुसदाग्राह्याः शुक्तामनुयुगादयः ॥ दैवेकर्मणिपिष्येचकृष्णोचैवापराह्निका इतिगारुडवचनात् । अयोमन्वादियुगादिकर्मतिथयः पूर्वाह्निकाः स्युः सितेविज्ञेया अपराह्णिकाप्रचबहुलैर्इतिदोपिकोक्तेष्वच । कालादर्शत्वपराह्णान्यापित्वमन्वादिष्वक्तं तत्त्वयुक्तमितियुगादिनिर्णयेवह्यामः (अत्रचथाद्वमुक्तंमात्स्ये) कृतंश्चाद्वैविधानेनमन्वादियुगादिषु । हायनानिद्विसाहस्रं पितृणां त्विदंभवेदिति ॥ मन्वादिस्राङ्गं चमलमासिसतिमासद्वयेपिकार्यम् । मन्वादिकं तैर्यिकं चकुर्यान्मासद्वयेपिचेतिस्मृतिचंद्रिकोक्तेः । अत्रापिंडरहितंश्चाङ्गं कुर्यात् (तदुक्तं कालादर्शे) विधुवायनसंक्रांतिसन्वादियुगादिषु ॥ विहायपिंडनिर्वापं सर्वंश्चाङ्गं समाचरेदिति ॥ मन्वादिस्राङ्गं नित्यम् (अकरगोप्रायश्चित्तदर्शनात्) तदुक्तमृग्विधाने ) त्वंभुवः प्रतिसंवंचशतवारं जलेजपेत् ॥ मन्वादयोब्रह्मदान्यनाः कुरुते नैवचापिइति । सर्वंयत्रप्रायश्चित्तवीप्सादिदर्शनंतानि यस्सर्वतिथ्याद्यानि नित्यानि । तानि तु । अमायुगमनुक्रांति धृतिपातमहालयाः ॥ अन्वष्टकं चपूर्वेद्युः शराणावत्यः प्रकीर्तिता इत्युक्तानि ॥ चकारादष्टकाग्रहणम् चैवशुक्लतृतीयैवमत्स्यजयंती । अत्रैवप्रसंगादशावतारजयंत्योनिर्णीयंते (तत्रपुराणसमुच्चये ( मत्स्योभद्रुतभुग्दिनेमधुसितेकूर्मोविधौमाधवेवाराहोगिरिजा सुतेनभसियजूतेसितेमाधवे ॥ सिंहोभाद्रपदेसितेहरितिथौ श्रीवामनोमाधवे रामो गौरितिथावतः परमभूद्रामो नवम्यांसधोः ॥ कृष्णोष्टम्यां नभसिसितपरे चाश्विनेयदशम्यांबुधः कल्की नभसिसमभूच्छुक्लयुग्यं क्रमेण ॥ अह्नोमध्योवामनो रामरामौ मत्स्यः कोडप्रचापराह्णे विभागे ॥ कूर्मः सिंहो बौद्ध कल्की च सायंकृष्णो रात्रौ कालसाम्ये च पूर्वति (केचित्तु स्फुटाग्रलोकान् पठंतितथा) चैवेतुशुक्लपंचम्यां भगवान्मीनरूपधृक् ॥ ज्येष्ठेतुशुक्लद्वादश्यां कर्मरूपधरो हरिः ॥ चैवेकृष्णो नवम्यां तु हरिर्वाराहरूपधृक् ॥ नारसिंहश्चतुर्दश्यां वैशाखेषु कृष्णपक्षके ॥



मासिभाद्रपदेशुक्ताद्वादश्यां वामनो हरिः ॥ राघशुद्धतृतीयायां रामो भार्गव रूप  
 धृक् ॥ चैत्रशुक्लनवम्यां तुरामो दशरथात्मजः ॥ नभस्येतु द्वितीयायां बलभद्रो भ  
 वद्वारिः ॥ श्रावणो बहुलेश्वर्यां कृष्णो भूलोकरस्रकः ॥ ज्येष्ठेशुक्लद्वितीयायां बी  
 दः कल्की भविष्यतीति (कौकयास्तु वराहपुराणास्थानि वाक्यानि पठन्ति) आ  
 याद्देशुक्लपक्षेतु स्रकादश्यां महर्षिः ॥ जयन्ती मत्स्यनाम्नीति तस्यां कार्यमुपोष  
 णम् । नभो मासि तृतीयायां हरिः कमठरूपधृक् ॥ नभस्य शुक्लपंचम्यां वराहस्य  
 जयन्तिका । वैशाखेतु चतुर्दश्यां नृसिंहः समपद्यत ॥ मासे भाद्रपदेशुक्लौकादश्यां  
 वामनो हरिः ॥ वैशाखेशुक्लपक्षेतु तृतीयायां भृगुद्वहः । चैत्रे नवम्यां रामो भूत्कौ  
 शल्यायां परः पुमान् ॥ श्रावणो बहुलेश्वर्यां वामदेवो जनार्दनः ॥ पौषशुक्ले तु सप्त  
 म्यां कुर्याद्विद्वस्यपूजनं ॥ माघशुक्लतृतीयायां कल्किनः पूजनं हरेः ॥ प्रातः प्रात  
 स्तु मध्याह्ने सायं सायं तथा निशि ॥ मध्याह्ने मध्यरात्रे च सायं प्रातरनु क्रमादिति ॥  
 तदत्र समूलत्वे निर्णये सति कल्पभेदेन व्यवस्थाद्वयव्या । एता प्रचतदुपासकानां नि  
 त्याः । अन्येषां तु काम्याः । जन्माष्टम्यादौ तु विशेषं वक्ष्यामः । चैत्रशुक्लपंचमी  
 कल्पादिः (तदुक्तं हेमाद्रौ मात्स्ये) ब्रह्मणो या दिनस्यादिः कल्पादिः सा प्रकीर्ति  
 ता ॥ वैशाखस्य तृतीयाया कृष्णायाम् फाल्गुनस्य च ॥ पंचमी चैत्रमासस्य तथैवां त्या  
 तथा परा ॥ शुक्ला त्रयोदशी माघे कार्तिकस्य तु सप्तमी ॥ नवमी मार्गशीर्षस्य सप्तैताः  
 संस्मराम्यहम् ॥ कल्पानामादयो ह्येता दत्तस्यास्य कारकाः (अत्र सर्वापि निर्ण  
 यो मन्वादि वत् ज्ञेयः (हेमाद्रौ ब्राह्मे) शुक्लायामथ पंचम्यां चैत्रे मासि शुभान्ता ॥  
 श्री ब्रह्मलोकान्मानुष्यं संप्राप्ता केशवाज्ञया ॥ अतस्तां पूजयेत्तत्र यस्तं लक्ष्मीं नमं च  
 ति ॥ चैत्रशुक्लाष्टम्यां भवान्या उत्पत्तिः । तत्र नवमी युता ग्राह्या । अष्टमी नवमी यु  
 क्तानवमी चाष्टमी युतेति ब्रह्मवैवर्तत्वे (अत्र भवानीया त्रोक्ता काशीखंडे) भवानीं  
 यस्तु पश्येत् शुक्लाष्टम्यामधौ नरः ॥ न जातु शोकं लभते सदानंदमयो भवेदिति (अ  
 त्रैवा शोककलिका प्राशनमुक्तं हेमाद्रौ लैंगे) अशोककलिका प्रचाष्टौ ये पिबन्ति पु  
 नर्वसौ ॥ चैत्रे मासि सितेश्वर्यां नतेशो कसवाप्नुयुः (प्राशनमंत्रस्तु) त्वामशोक  
 वराभीष्टं मधुमाससमुद्भवम् ॥ पिवांसि शोकसंतप्तो मासशोकं सदा कुर्विति (अत्र

विशेषः पृथ्वीचंद्रोदये विष्णुः) पुनर्वसुबुधोपेताचैत्रे मासि सिताष्टमी ॥ प्रातस्तु वि  
धिवत्स्नात्वा वाजपेयफलं लभेदिति (तिथितत्त्वे कालिकापुराणे) चैत्रे मासि सि  
ताष्टम्यां योनरो नियतेन्द्रियः ॥ स्नायात् लौहित्यतोये यः सयाति ब्राह्मणः पदम् ॥ चै  
त्रंतु सकलं मासं शुचिः प्रयतमानसः ॥ लौहित्यतोये यः स्नायात्स कौवल्यमवाप्नुया  
त् ॥ लौहित्यो ब्रह्मपुत्रः (संस्तु) ब्रह्मपुत्रमहाभागशतनोः कुलसंभव ॥ असौ ध  
र्म्मसंभूतं पापं लौहित्यमेहर (चैत्रशुक्लनवमी रासनवमी । तदुक्तमगस्त्यसंहिता  
याम्) चैत्रे नवम्यां प्राक् पक्षे दिवा पुराये पुनर्वसौ ॥ उदये शुक्रगौराश्वोः स्वोचस्थे ग्रह  
पंचके ॥ मेघे पूर्वाश्विं संप्राप्ते लग्ने कर्कटकाह्वये ॥ आविरासीत् सकलया कौशल्या  
यां परः पुमान् ॥ तस्मिन् दिने तु कर्तव्यमुपवासव्रतं सदा ॥ तत्र जागरणं कुर्याद्रिधुना  
थ परो भुवीति ॥ इयं च मध्याह्नयोगिनी ग्राह्या ॥ चैत्रशुक्ले तु नवमी पुनर्वसुयुताय  
दि ॥ सैव मध्याह्नयोगे न महापुराय तमाभवेदिति तत्रैवोक्तेः (तथा) चैत्रमासे नव  
म्यां तु जातोरामः स्वयं हरिः ॥ पुनर्वसुस्तृप्तसंयुक्ता सति तिथिः सर्वकामदा ॥ श्रीराम  
नवमी प्रोक्ता कोटि सूर्यग्रहादिका (तथा) केवलापि सदोपोख्या नवमी शब्दसंग्रहा  
त् ॥ तस्मात्सर्वात्मना सर्वैः कार्यं नवमीव्रतम् ॥ पूर्वद्युरेव मध्याह्नयोगे कर्मका  
लाव्याप्तेः सैव ग्राह्या दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौ तदभावे वा पूर्वादिने पुनर्वसुस्तृप्तसंयुक्ताम  
पि त्यक्ता परैव कार्या (तदुक्तं माधवीयेऽगस्त्यसंहितायाम्) नवमी चाष्टमी विद्वा  
त्प्राज्या विष्णुपरायणौः ॥ उपोषणं नवम्यां च दशम्यां चैव पारणामिति ॥ अष्टमी  
विद्वासंज्ञा पिनोपोष्येति माधवः (रामार्चनचंद्रिकायामपि) द्विद्वैव चेदृशयुक्ता  
व्रतं तत्र कथं भवेत् ॥ विद्वानिष्टद्वयवर्णान्नवमी चेति वाक्यतः ॥ वैशावानां विशेषात्तु  
तत्र विष्णुपरैरपि ॥ दशम्यादिषु तृद्विषु चैद्विद्वात्प्राज्यैव वैशावैः ॥ तदन्येषां व्र  
तं तत्रैव निश्चितमिति । अत्र दशम्यादिषु तृद्विषु चैदिति । तदन्येषां मिति च वदन्य  
दा प्रातस्त्रिमुहूर्तान्नवमी दशमी च क्षयवशात् सूर्योदयात् प्रागेव समाप्यते तदा स्मार्त्ता  
नां तत्रैव । सकादशीनिमित्तोपवासात् । नवमीव्रतांगपारणालोपः स्यात् । अतोष्ट  
मी विद्वैव स्मार्तैः कार्या । वैशावानां त्वरुणोदय विद्वैकादप्रयाहेयत्वान्नपारणा  
लोपप्रसंग इति । द्वितीयैव तैः कार्येति सूचयति । दशमी बृहद्यभावेष्टमी विद्वायामव



मध्याह्न्यापित्वेक्षये च वैष्णवैरपि विद्वैवोपोष्येत्यर्थसिद्धम् । ( इदं च ब्रतं संयोग  
 पृथक् न प्रायेण कस्यचित् नित्यं च । तदुक्तं हेमाद्रावगस्तिसंहितायाम् ) उपोषणांजा  
 गरणां पितृनुहिष्यतर्पणम् ॥ तस्मिन् दिने तु कर्तव्यं ब्रह्मप्राप्तिमभीप्सुभिः ॥ सर्व  
 यामप्ययंधर्मोभुक्तिमुक्त्यैकसाधनः ॥ अशुचिर्वापि पापिष्ठः कृत्वेदं ब्रतमुत्तमम् ॥  
 पञ्चयः स्यात्सर्वभूतानां यथारामस्तथैव सः ॥ यस्तुरामनवम्यांतुभुक्ते सोहादिसूढ  
 धीः ॥ कुंभीपाकेषु घोरेषु पच्यते नात्र संशयः ( तथा ) अकृत्वारामनवमी ब्रतस  
 र्वब्रतोत्तमम् ॥ ब्रतान्यन्यानि कुरुते न तेषां फलभाग भवेत् ॥ प्राप्ते श्रीरामनवमी दि  
 ने मर्त्यो विमूढधीः उपोषणां कुरुते कुंभीपाकेषु पच्यते ॥ अत्र केचित्तदुपासकाना  
 मेवेदं नित्यं न त्वन्येषामित्याहुः ( अन्येतु ) अकरणो दोषश्च वरात्तस्मात्सर्वात्मना स  
 र्वैः कार्यं नवमी ब्रतमिति । पूर्वाक्तवचनाच्च । जन्मादिषु म्यावादिदमपि सर्वेषां नि  
 त्यम् । अन्यथा जन्माद्यम्यादीनां पितृदुपासकानामेव नित्यतां वक्तुः को वारयितेत्या  
 हुः ( अत्र विशेषो हेमाद्रावगस्तिसंहितायाम् ) आचार्यचैव संपूज्य वृणायात्प्रार्थ  
 येन्निशि ॥ श्रीरामप्रतिमादानं करिष्ये हं हि जित्तम ॥ भक्त्या चार्यो भवप्रीतः  
 श्रीरामो सित्वमेव च ( तथा ) स्वगृहे चोत्तरे देशे दानस्योज्ज्वलमंडपम् ॥ शंख  
 चक्रहनुमद्भिः प्राग्द्वारे समलंकृतम् ॥ गरुत्तमच्छाङ्गवाणौ च दक्षिणो समलंकृत  
 म् गदाखड्गांगदैश्चैव परिचर्ये सुविभूषितम् ॥ पद्मस्वस्तिकनीलैश्च कौवेर्यास  
 मलंकृतम् ॥ मध्ये हस्तचतुष्काढ्यं वैदिकामुक्तमायतम् ॥ ततः संकल्पयेद्देवं राम  
 मेव स्मरन्मुने ॥ अस्यां रामनवम्यां च रामाराधनतत्परः ॥ उपोष्याद्युष्यामेषु  
 पूजयित्वा यथाविधि ॥ इमां स्वर्गमयीं रामप्रतिमां च प्रयत्नतः ॥ श्रीरामप्रीत  
 ये दास्ये रामभक्ताय धीमते ॥ प्रीतो रामो हरत्याशुपापानि सुबहूनि मे ॥ अनेकज  
 न्मसंसिद्धान्यभ्यस्तानि महान्ति च ॥ ततः स्वर्गमयीं रामप्रतिमां पलमावृतः ॥ नि  
 र्मितां हि भुजां दिव्यां वामां कस्थितजानक्रीम् ॥ बिभ्रतीं दक्षिणाकरे ज्ञानमुद्रां महा  
 मुने ॥ वामेनाधः करेणाराद्देवीमालिङ्ग्य संस्थिताम् ॥ सिंहासने राजते वपलद्वय  
 विनिर्मिते ( तथा ) अशक्तो यो महाभाग स तु वित्तानुसारतः ॥ पलेनार्धतदर्धार्धत  
 दधार्धेन वा मुने ॥ सौवर्णाराजतं वापि कारयेद्द्रघुनंदनम् ॥ पापवैभरतशत्रुघ्नौ धृतक

वकरावुभौ ॥ चापद्वयसमायुक्तलक्ष्मणांचापिकारयेत् ॥ दक्षिणांगेदशरथं पुत्रा  
वेक्षणात्तत्परम् ॥ मातुरंकगतं राममिन्द्रनीलसमप्रभम् ॥ पंचामृतस्नानपूर्वसंपूज्य  
विधिवत्ततः ( कौशल्यामंत्रस्तु ) रामस्य जननी चासिरामरूपमिदं जगत् ॥ अ  
तस्त्वांपूजयिष्यामिलोकमातनमोस्तुते ॥ नमोदशरथायैति पूजयेत्पितरंततः ॥  
अत्र दशावरणापंचावरणादिपूजाऽन्यत्र ज्ञेया ॥ अशोककुसुमैर्युक्तमध्वं दद्याद्विच  
क्षणाः ॥ दशाननवधार्याय धर्मसंस्थापनाय च ॥ राक्षसानां विनाशाय देत्यानां निव  
नाय च ॥ परित्राणाय साधनां जातो रामः स्वयं हरिः ॥ गृहाणाध्वं मया दत्तं आ  
र्त्तभिः सहितं नय ॥ पुठ्ठांजलिं पुनर्दत्वा यामेयामे प्रपूजयेत् ॥ दिवैव विधिवत्कृ  
त्वा रात्रौ जागरणात्ततः ॥ ततः प्रातः समुत्थाय स्नानसंध्यादिकाः क्रियाः ॥ स  
माप्यविधिवद्वासं पूजयेद्विधिवन्मुने ॥ ततो होमं प्रकुर्वीत मूलमंत्रेणामंत्रवित् ॥  
पूर्वाक्तपद्मकुण्डे वा स्थंडिले वा समाहितः ॥ लौकिकाग्नौ विधानेन शतमष्टोत्तरं त  
तः ॥ साज्येन पायसेनैव स्मरन् राममनन्यधीः ॥ ततो भक्त्या सुसंतोष्य आचार्यं पूज  
येन्मुने ॥ ततो रामं स्मरन् दद्यादेवं मंत्रमुदीरयेत् इमांस्वर्गमयीं रामप्रतिमां समलंकृत  
म् ॥ चित्रवस्त्रयुगच्छन्नां रामो हं राघवायते ॥ श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु  
राघवः ॥ इति दत्वा विधानेन दद्याद्वैदक्षिणां भुवम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्य  
तेनात्र संशय इति ॥ इयं मलमासेन कार्या । सुजपमप्यजपस्यान्नोपवासः कृतो  
भवेदिति ॥ न कुर्वन्मलमासे तु महादानव्रतानि चेति च माधवीये संग्रहवचनात् ॥ न  
नुरामनवमीव्रतस्य नित्यत्वादेकादशीवन्मलमासेऽपि कर्तव्यतास्यादिति चेत् । अ  
त्र ब्रह्मः नैकादश्युपवासस्य व्रतत्वेन प्राप्तिः । किंतु एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोः सभयो  
रपीत्यादि नियेष्वस्य मलमासेऽपि पालनीयत्वात् कृष्णौकादश्यां पुत्रवदगृहिणा इवा  
यं दुपवासः प्रसज्यते । न त्विह तथेति व्रतत्वेन प्राप्तिर्वाच्या । साच निर्वाह इत्यप्रसं  
गः । स्यष्टमासविशेषाख्याविहितं वर्जयेन्मल इति नियेषाच्च । एवं जन्मास्यस्या  
दावापि बोद्धव्यम् । इति रामनवमी ( चैत्रशुक्लैकादश्यांदोलोत्सव उक्तो ब्राह्मे )  
चैत्रमासस्य शुक्लायामेकादश्यांतु वैष्णवैः ॥ आंदोलनीयो देवेशः सलक्ष्मीकोऽसौ  
होत्सवैरिति ॥ चैत्रशुक्लद्वादश्यांदमनोत्सवः । द्वादश्यांचैत्रमासस्य शुक्लायांद



मनोत्सवः ॥ बौधायनादिभिः प्रोक्तः कर्तव्यः प्रतिवत्सरमिति (रामार्चनचंद्रि  
कोक्तेः) ऊर्जव्रतं मधौ दोलाश्रावणोत्तं तु पूजनम् ॥ चैत्रे च दसनारोपमकुर्वाणो ब्रज  
त्यधः ॥ इति तत्रैव पाञ्चवचनाच्च । शिवभक्तादिभिस्तु चतुर्दश्यादौ कार्यम् । तत्र  
स्यात्स्वीयतिथियुवह्वयादेर्दसनार्पणमिति तत्रैवोक्तेः (ज्योतिःप्रकाशेऽपि) स्व  
स्वदेव प्रतिष्ठायां मंत्रसंग्रहणोत्था ॥ पवित्रदसनारोपे ग्राह्यात्तत्तिथिबुधैः (ति  
थियस्तु) वह्निर्विरिच्योगिरिजागणेशः फणीविशाखो दिनकृन्महेशः ॥ दु  
र्गात्कोविश्वहरिः स्मरप्रचशर्बः शशीचेति तिथीयुपज्या इत्युक्ताः ॥ अथागमो  
क्तदीक्षादतो दसनारोपणाविधिः (रामार्चनचंद्रिकायां) तत्रैकादश्याम् । क्रिया  
लोपविधातार्थयत्त्वया विहितं प्रभो ॥ न मे विघ्नो भवेद्वक्त्रकुरुनाथ दयां मयि ॥ स  
र्वथा सर्वदा विष्णो मम त्वं परमा गतिः ॥ उपवासे न त्वां देवतो ययामि जगत्पते ॥ कामं  
क्रोधादयोप्येते न मे स्युर्ब्रतघातकाः ॥ अद्य प्रभृति देवेश यावद्वैशेषिकं दिनम् ॥ ताव  
द्रक्षात्वया कार्या सर्वस्यास्य जगत्पते ॥ इति देवं संप्राप्य दसनमादाय पंचगव्येन प्रो  
क्ष्य वारिणा प्रक्षाल्या शोकमूले देवाग्रे वा । अशोकाय नमस्तुभ्यं कामस्त्री शोकना  
शनः ॥ शोकार्त्ती हर मे नित्यमानंदं जनयस्व मे ॥ इत्यशोकम् । शुभ्यादिकालपर्यंतः  
कालरूपो महां बलः ॥ कलते चैव यः सर्वतस्मै कालात्मने नम इति कालम् ॥ वसंता  
य नमस्तुभ्यं वृक्षगुल्मलताश्रय ॥ सहस्रमुखसंवासकामरूपनमोस्तु त इति वसंतम् ॥  
कामभस्मसमुद्भूत रतिवाठपपरिप्लुत ॥ ऋषिगंधर्वदेवादि विमोहकनमोस्तु त  
इति ॥ दसनं च संपूज्य । नमोस्तु पंचवाराय जगदाह्लादकारिणो ॥ मन्मथाय ज  
गन्नेत्रे रतिप्रीतिप्रियाय ते ॥ इति दसनमुपस्थाप्य । ओं कामाय नम इति संपूज्य ।  
निशायां देवताग्रे पंचवर्णैः चंदनेन वा अष्टदलं कृत्वा बहिः प्रचतुरस्रं तद्वह्निर्वर्तुलं त्रयं  
तद्वह्निवृत्तं चतुरस्रं च कृत्वा तत्र कुंभं संस्थाप्योपरि दसनं पूजयित्वा । पजार्थं देवदे  
वस्य विष्णोर्लक्ष्मीपतेः प्रभोः ॥ मद न त्वमिहा गच्छ सा चिद्व्यं कुरु ते नमः ॥ ओं क्लीं  
कामदेवाय नमः ओं ह्रीं रत्यै नम इत्यावाह्य । दिक्षु पूर्वादितः स्मर शरीराय नमः अनं  
गाय ० मन्मथाय ० कामाय ० क्लीं वसंतसखाय ० स्मराय ० इक्षुचापाय ० पुठपा  
स्त्राय नम इति पूजयित्वा ओं तत्स्वरूपाय विष्णवे कामदेवाय धीमहि ॥ तन्नो नंगः

प्रचोदयात् ॥ इत्यष्टोत्तरशतं संमंज्य पूजयित्वा । ह्रीं नम इति पुठपांजलिंदत्वा । न  
मोस्तु पुठपवाणाय जगदाज्ञादकारिणो ॥ मन्मथाय जगन्नेत्रेति प्रीतिप्रियाय ते ॥  
इति नत्वा । आसंविती सिदेवेश पुराणा पुरुषोत्तम ॥ प्रातस्त्वां पूजयिष्यामि  
सान्निध्यं कुसुमकेशव ॥ क्षीरोदधिसहानागशय्यावस्थितविग्रह ॥ प्रातस्त्वां  
पूजयिष्यामि सान्निध्यौ भवते नमः ॥ निवेदयाद्ग्रहंतुभ्यं प्रातर्दमनकं शुभम् ॥ सर्व  
दा सर्वथा विष्णो नमस्तेस्तु प्रसीद मे ॥ इति देवं संप्रादुर्ग्यं पुठपांजलिंदत्वा । अस्त्रेणा  
चक्रमंत्रेणावारक्षां कुर्यात् । ततः प्रातर्नित्यं पूजां कृत्वा पुनर्देवं संपूज्य गंधदूर्वाक्षत  
युक्तं दमनमादाय मूलमंत्रं पठित्वा । देवदेव जगन्नाथ वांछितार्थप्रदायक ॥ हृदि  
स्थानुपूरयेः कामान्मम कामेश्वरी प्रिय ॥ इदं दमनकं देवगृहाणामदनुग्रहात् ॥ इ  
मांसां वत्सरी पूजां भगवन्परिपूरय इति मंत्रांते पुनर्मूलमंत्रेणादेवे समर्पयेत् । ततो  
अंगदेवताभ्यः स्वस्वमंत्रेणादत्वा प्रार्थयेत् ॥ मर्गाविद्रुममालाभिर्मंदारकुसुमा  
दिभिः ॥ इयं सां वत्सरी पूजा तवास्तु गरुडध्वज ॥ वनमालां यथा विदुषो  
कौस्तुभं सततं हृदि ॥ तद्वद्दामनकीं मालां पूजां च हृदये बह ॥ जानता जानता  
वापिन कृतं युक्तवार्चनम् ॥ तत्सर्वं पूर्णातां यातु त्वत्प्रसादाद्रमापते ॥ जितं ते पुंड  
रीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥ नमस्तेस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ॥ मंत्रहीन  
मिति कसंप्रादुर्ग्यं पंचोपचारैः पुनः संपूज्य नीराज्य पारयेदिति । दीक्षारहितानां  
तु नास्मैव समर्पणम् ॥ अत्र च द्वादशी मंत्रं कृत्य पारणा हो ग्राह्यम् । पारणा हेनल  
भ्येतद्वादशीयटिकापि चेत् ॥ तदा त्रयोदशी ग्राह्यापि विव्रदमनार्पण इति तत्रैवोक्तेः  
( गौगापि काल उक्तस्तत्रैव ) हरौ न दमनारोपः स्यान्मधौ विघ्नतो यदि ॥ वैशाखे  
श्रावणे वापि तत्तिथौ स्यात्तदर्पणम् ॥ श्रावणावधि शुक्रास्ते कर्त्तव्या मिति नारदः ॥  
इति पाठांतरम् । इदं च मलमासेन कार्यम् । उपाकर्मात्सर्जनं च पवित्रदमनार्पणमिति  
कालादर्शमलमासवर्ज्येषु परिगणनात् । उपाकर्म च हव्यं च कव्यं पर्वोत्सवं तथा ॥  
उत्तरे नियतं कुर्यात्पर्वे तन्निष्ठफलं भवेदिति साधवीये ॥ प्रजापतिवचनाच्च । शुक्रा  
स्तादौ तु कार्यमेव । पर्वोक्तवचनात् । उपाकर्मात्सर्जनं च पवित्रदमनार्पणम् ॥ इ  
शानस्य बलिं विष्णोः शयनं परिवर्तनम् ॥ कुर्याच्छुक्रस्य च गुरोर्मौह्ये पीतिविनि



प्रचयइतिज्योतिर्निबन्धे ॥ वृद्धगाभ्यवचनाच्च ॥ इतिदमनारोपः । चैत्रशुक्लत्रयो  
 दश्यामनंगव्रतस ॥ तत्रसापूर्वाग्राह्या । त्रयोदशतिथिः पूर्वसितइतिदीपिकोक्तेः  
 चैत्रशुक्लचतुर्दशीपूर्वाग्राह्या । मधोःश्रावणामासस्यशुक्लायातुचतुर्दशी ॥ सारा  
 त्रिव्यापिनीग्राह्यानान्याशुक्लाकदाचनेतिहेमाद्रौवौधायनोक्तेः ॥ परापूर्वाह्नि  
 गामिनीतिवापाठः ( अत्रकैचिद्यथायु तमेवार्थवर्णयंति ) निशिभ्रमंतिभूतानि  
 शक्तयःशूलभृद्यतः ॥ अतस्तत्रचतुर्दश्यांसत्यांतत्पूजनंभवेदिति ॥ ब्रह्मवैवर्त ॥ हे  
 माद्रिमाधेवार्दिलिखनमप्येवम् । संप्रदायविदरत्वाहुः । चतुर्दशीतुकर्तव्यात्रयो  
 दश्यायुताविभो ॥ इतिस्कांदमुत्सर्गः । तदपवादश्च । तृतीयैकादशीयष्टीशुक्ल  
 पक्षेचतुर्दशी ॥ पूर्वविद्वानकर्तव्याकर्तव्यापरसंयुतेतिनारदीयवचनम् । तदपवा  
 दश्च । मधोःश्रावणामासस्येति । तत्रापवादाभावेपुनरुत्सर्गस्यस्थितिरितिन्या  
 येनपूर्वविद्वैवग्राह्येति सिद्धयति । ब्रह्मवैवर्ततुसामान्यरूपमन्यत्रसावकाशमि  
 तितेनपूर्वदिनेमुहूर्तत्रयवेधेपूर्वअन्यथोत्तरेति । चैत्रपरिणामा सामान्यनिर्णयात्तप  
 रैव ( अत्रविशेषोनिर्णायामृतेविष्णुस्मृतौ ) चैत्रीचित्रायुताचेत्स्यात्तस्यांचित्रवस्त्र  
 प्रदानेनसौभाग्यमाप्नोतीति ( तथाब्राह्मे ) मंदेवार्केशुरौवापिवारेष्ट्वेतेषुचैत्रिका ॥  
 तत्राप्रवमेधजंपुरायं स्नानश्राद्धादिभिर्लभेदिति ॥ अत्रसर्वदेवानांदमनपूजोक्ता  
 ( तत्रैववायवीये ) संवत्सरकृतार्चायाःसाफल्यार्थाखिलानसुरान् ॥ दमनेनार्चयेच्चै  
 त्र्यांविशेषेणसदाशिवमिति ॥ अत्रस्वीयतिथ्यासमुच्चयइतिकेचित् । स्वीयति  
 थ्यामकराणोत्रदमनपूजनमित्यन्ये । दीक्षिततदितरविषयत्वेनव्यवस्थेत्यपरेइयं  
 मन्वादिरपि । साचपूर्वमुक्ता । चैत्रकृष्णत्रयोदश्यां महावास्तुगोसंज्ञोयोगोगौ  
 ङ्गेषुप्रसिद्धः ( तदुक्तंवाचस्पतिकृतौशालपाणौचस्कांदे ) वास्तुगोनसमायुक्ताम  
 धौकृष्णात्रयोदशी ॥ गंगायांयदिलभ्येतस्यग्रहशतैःसमा ॥ शनिवारसमायुक्ता  
 सामहावास्तुगोस्मृता ॥ गंगायांयदिलभ्येतकोटिस्यग्रहैःसमा ॥ शुभयोगसमा  
 युक्ताशनौशतभिर्वायदि ॥ सहामहेतिविख्यातात्रिकोटिकुलमुद्धरेत् ( तत्रैवइयो  
 तिषे ) चैत्रासितेवास्तुगाऋषयुक्ता त्रयोदशीस्यसुतस्यवारे ॥ योगेशुभेसामहती  
 महत्या गंगाजलेर्कग्रहकोटितुल्येति ( त्रिस्थलीसेतौब्रह्मांडपुराणौ ) वास्तुगोन

समायुक्तामधौकृष्णात्रयोदशी ॥ गंगायांयदिलभ्येतशतसूर्यग्रहैःसमेति ( कल्प  
तरौब्राह्मे ) मधौकृष्णात्रयोदश्यांशनौशतभिषायुता ॥ वारुणीतिसमाख्याता  
शुभेतुमहतीस्मृता ( चैत्रकृष्णाचतुर्दश्यांविशेषःपृथ्वीचंद्रोदयेपुलस्त्यः ) चैत्रकृ  
ष्णाचतुर्दश्यांयःस्नायाद्विष्वसन्निधौ ॥ नप्रेतत्वमवाप्नोतिगंगायांतुविशेषतइति  
अत्रपूर्वाग्राह्या ॥ कृष्णापक्षत्वात् । गौडैस्त्वेतदेवशुक्लचतुर्दश्यामित्येवंदेवलोय  
त्वेनपरिहितम् ॥

इतिश्रीकमलाकरभट्टकृतेकालनिर्णयसिंधौचैत्रमासः ॥

मेघसंक्रमेप्रागपरादशदशघटिकाःपुरायकालः । रात्रौतुप्राशुक्तम् (अत्रधर्म  
घटादिदानमुक्तं पृथ्वीचंद्रोदयेपाप्मे) तीर्थेचानुदिनंस्नानंतिलैश्च पितृतर्पणम् ॥  
दानंधर्मघटादीनांमधुसूदनपूजनम् ॥ साधवेमासिकुर्वीतमधुसूदनतुष्टिदं (अथ  
वैशाखस्नानम् तत्रपृथ्वीचंद्रोदये विष्णुस्मृतिपात्रयोः) तुलामकरमेघेषु  
प्रातःस्नानंविधीयते ॥ हविष्यंब्रह्मचर्यचमहापातकनाशनमिति सौरमासउक्तः  
(अन्यतपसद्वयमुक्तंतत्रैवपाप्मे) मधुमासस्यशुक्लायामेकादश्यामुपोषितः ॥ पंच  
दश्यांचभोवीरमेघसंक्रमणोत्तुवा ॥ वैशाखस्नाननियमंब्राह्मणानामनुज्ञया ॥ मधु  
सूदनमभ्यर्च्य कुर्यात्संकल्पपर्वकम् (तत्रमंत्रः) वैशाखंसकलमासं मेघसंक्रमणो  
रवेः ॥ प्रातःसनियमःस्नास्येप्रीयतांमधुसूदनः॥मधुहंतुःप्रसादेनब्राह्मणानामनुज्ञ  
हात् ॥ निर्विघ्नमस्तुमेपुरायंवैशाखस्नानमन्त्रहं ॥ साधवेमेघगोभानौमुरारेमधुसू  
दन ॥ प्रातःस्नानेनमेनायफलदोभवपापहन्ति ॥ तीर्थविशेषोपितत्रैवोक्तः ।  
मेघसंक्रमणोभानोमधिवेमासियत्नतः ॥ महानद्यांनदीतीर्थेनदेसरसिनिर्भरे ॥  
देवस्नातेयवास्नायाद्यथाप्राप्तेजलाशये ॥ दीर्घिकाकूपवापीयुनियतात्माहरिं  
स्मरन्निर्तिसंकल्पेचतत्तीर्थनामग्राह्यम् ।अज्ञानेतुविष्णुतीर्थमिति वदेत् ॥ य  
दानज्ञायतेनामतस्यतीर्थस्यभोद्विजाः ॥ तत्रेत्युच्चारणंकार्यंविष्णुतीर्थमिदंत्विति  
तीर्थस्यदेवताविष्णुःसर्वत्रापिनसंशयइति ॥ तत्रैवोक्तेः ( तथान्योपि विशेष  
स्तत्रैवपाप्मे ) तुलसीकृष्णागौराख्यातयाभ्यर्च्यमधुद्विपम् ॥ विशेषेणातुवैशा



खेतरोनारायणोभवेत् ॥ साधवंसकलमासंतुलस्यायोर्चयेन्नरः ॥ त्रिसंध्यमधुहं  
 तारं नास्ति तस्य पुनर्भवः ( तथा ) प्रातःस्नात्वा विधानेन साधवे साधवा प्रियम् ॥  
 योश्च तथ मूलमासि चेतोयेन बहुना सदा ॥ कुर्यात्प्रदक्षिणांतं तु सर्वदेवमयंततः ।  
 पितृदेवमनुष्यांश्च तर्पयेत्स चराचरम् ॥ योश्च तथ मर्चयेद्देवमुदकेन समंततः ॥ कु  
 लानामयुतं तेन तारितं स्यान्न संशयः ॥ कंडूयपृथुतो गांतुस्नात्वा पिप्पलतर्पणम् ॥ कृ  
 त्वा गोविंदमभ्यर्च्य न दुर्गतिमवाप्नुयुः ( तथा ) एकभक्तमथोनक्तमयाचितम्  
 तंद्रितः ॥ साधवे मासियः कुर्यात्प्रभते सर्वमोषितम् ॥ वैशाखे विधिना स्नानं देवन  
 द्यादिके ब्रह्मिः ॥ हविष्यं ब्रह्मचर्यं च भूशय्या नियमस्थितः ॥ ब्रतं दानं दसौ देवि स  
 धुसूदनपूजनम् ॥ अपि जन्मसहस्रोत्थं पापं दहति दारुणम् ( सदत्तरत्ने स्कांदे )  
 प्रपाकार्या च वैशाखे देवे देया गलंतिका ॥ उपानद्वयजनच्छत्रसहस्रवासंति चंदनम  
 जलप्राश्नादि देयानि तथा पुष्टपृष्ठार्हाणि च ॥ पानकानि च चित्राणि द्राक्षारंभा  
 फलान्यपि ( तिथितत्त्वे ) ददाति यो हि मेषादौ सकतनंबुधं दान्वितान् ॥ पितृ  
 नुहिष्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते इति ( तथा ) वैशाखे यो घटं पर्गां सभोज्यं वै  
 द्विजन्मने ॥ ददाति सुरराजेंद्रसयाति परमांगतिम् ॥ एवं संपर्गा स्नाना शक्तौ ज्यहं  
 वास्नायात् ( तदुक्तं तत्रैव पाप्मे ) त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां वैशाख्यां वा दिनत्रयम् । अपि  
 सम्यग्विधानेन नारी वा पुरुषोऽपि वा ॥ प्रातःस्नातः स नियमः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥  
 यदा तु वैशाखो मूलमासो भवति तदा कात्यानां तत्र समाप्तिनियेधात् । मासद्वयं स्ना  
 नं तन्नियमाश्च कर्तव्याः मासोपवासं च द्वायशादितु मलमासेष्वसमापयेत् ( तदु  
 क्तं दीपिकायां ) नियतं त्रिंशद्विंशत्वाच्छुभे मास्यारभ्य समापयेत् मलिने मासोऽप  
 वा सव्रतमिति ( अवदानविशेष उक्तो परार्कवामनपुराणे ) गंधाश्च माल्यानि  
 तथा वैशाखे सुरभीणि च ॥ देयानि द्विजमुख्येभ्यो मधुसूदनतुष्टये ॥ ( एवं स्नाने  
 कृते तस्योद्यापनं कार्यम् ( तदुक्तं तत्रैव ) मासमेवं ब्रह्मिः स्नात्वा नद्यादौ विसलेजले ॥  
 एकादश्यां च द्वादश्यां पौर्णमास्यां तथापि वा ॥ उपोष्य नियतो भत्वा कुर्याद् द्या  
 पनंबुधः ॥ मंडपं कारयेदादौ कलशं तत्र विन्यसेत् ॥ निठके सावार्तं दर्धेन तदर्धार्धेन  
 वा पुनः ॥ शक्त्या वा कारयेद्देवं सौवर्णलक्षणां न्वितम् ॥ लक्ष्मीयुक्तं जगन्नाथं

पूजयेदासनेनूधः ॥ भयगौश्चंदनैःपुठपैदीपैर्नैवेद्यसंचयैः ॥ सर्वसंप्रज्यविधिवद्वा  
 ब्रौजागरांचरेत् ॥ श्वोभतेकृतमैत्रीयग्रहवेद्यांगृहान्यजेत् ॥ होमैक्यतिप्रयत्ने  
 नपायसेनविचक्षणाः ॥ तिलाज्येनयवैर्वापिसर्वैर्वापिस्वशक्तितः ॥ अष्टोत्तरसहस्रं  
 वाशतमष्टोत्तरंतुवा ॥ प्रतिद्विष्टारनेनैवइदंविष्टारनेनवा ॥ व्रतसंपूर्तिसिद्ध्यर्थेनु  
 मेकांपयस्विनीम् ॥ पादुकोपानहौह्वंशुरवेव्यंजनंतथा ॥ शय्यांसोपस्करांद  
 द्यादीपिकांदर्पणांतथा ॥ ब्राह्मणानभोजयेस्त्रिंशत्तेभ्योदद्याच्चदक्षिणाम् ॥ कल  
 शान्न जलसंपूर्णास्तेभ्योदद्याद्यवांस्तथासर्वंकृतेसाधवस्यचोद्यापनविधौशुभे ॥ फ  
 लमाप्नोतिसकलंविष्णुसायुज्यमाप्नुयात् (सतावत्यशक्तौतत्रैवोक्तम्) वैशाख्यां  
 विधिनास्नात्वाभोजयेत्ब्राह्मणान्नदश ॥ कृसरंसर्वपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशय  
 इति ॥ वैशाखशुक्लतृतीयाअक्षय्यतृतीयोच्यते । सापूर्वाह्णव्यापिनीग्राह्या ।  
 दिनद्वयेधितद्व्याप्तौपरैव ( तदुक्तंनिर्गार्यासूतेनारदीये ) वैशाखेशुक्लपक्षेतु  
 तृतीयारोहिणीयुता ॥ दुर्लभाबुधवारिणासोमेनापियुतातथा ॥ रोहिणीबुधयु  
 क्तापिपूर्वविद्याविवर्जिता ॥ भक्त्याकृतापिसांधातःपुरायंहतिपुराकृतम् ॥ गौरी  
 विनायकोपेतारोहिणीबुधसंयुता ॥ विनापिरोहिणीयोगात्पुरायकोटिप्रदा  
 सदेति (इयंयुगादिरपिसाचोक्तारत्नमालायाम्) साधेपंचदशीकृष्णानभस्येचत्र  
 योदशी । तृतीयामाधवेशुक्लानवम्यूर्ज्युगादयइति (यत्तु गौडाः) साधस्यपौर्णा  
 मास्यांतुघोरंकलियुगंस्मृतमिति ब्रह्मोक्तेः । वैशाखमासस्य चयातृतीयानवम्य  
 सौकार्तिकशुक्लपक्षे ॥ नभस्यमासस्यतमिस्रपक्षेत्रयोदशीपंचदशीचमाधे ॥ इ  
 ति विष्णुपुराणे । चकारेगातमिस्रपक्षानुयंगेपिपूर्वानुरोधात्पौर्णमास्येवज्ञेया ।  
 द्वेशुक्लइत्यादिकंतुनिर्मलमित्याहुः । तन्न । दर्शेतुमाघमासस्यप्रवृत्तंढापरंयुगमि  
 तिभविष्यविरोधात्सतेनब्राह्मणानुसारात् परिणामायामेवयुगादिश्राद्धवदनुशूलपा  
 र्णाःपरास्तः । तेनकल्पभेदाद्युगभेदाद्व्यवस्थेति तत्त्वम् । सतेनकार्तिकेनवमीशु  
 क्तामाघमासेचपूर्यामेतितृहन्नारदीयेव्याख्यातम् । निर्मलत्वोक्तिर्नारदीयाज्ञा  
 नकृता (अत्रश्राद्धमुक्तंमास्ये) कृतंश्राद्धंविधानेनमन्वादिषुयुगादिषु ॥ हायना  
 निर्दिष्टाहसंपितृणांतृप्तिर्दंभवेदिति (भारतेपि) यामन्वाद्यायुगाद्याश्चतिथय



स्तासुमानवः ॥ स्नात्वाहुत्वाचदत्वाचजप्त्वा नंतफलं लभेदिति ॥ आद्वेपिपूर्वाक्ल  
व्यापिनीग्राह्या ॥ पूर्वाक्लेतुसदाकार्याः शुक्तामनुयुगादयः ॥ दैवेकर्मणिपिप्येच  
कृष्णोचैवापराहृणाकाइतिपाप्मोक्तेः ॥ द्वे शुक्लेदेतथाकृष्णयुगादीकवयोविदुः ॥  
शुक्लेपौर्वाक्लिकेग्राह्येकृष्णोचवापराक्लिके ॥ इतिहेमाद्रौनारदीयवचनाच्च (दीप  
कापि) अथोमन्वादियुगादिकर्मतिथयः पूर्वाहृणाकास्युः सितेविज्ञेयाअपरक्लि  
काश्चबहुलेइतिस्मृत्यर्थसारेपि । युगादिमन्वादियाद्वेषुशुक्लपक्षे उदयव्यापि  
नोतिथिग्राह्या । कृष्णपक्षेऽपराहृणाव्यापिनीति (दिवोदासीयेगोभिलः) वैशा  
खस्यतृतीयांयः पूर्वविद्धां करोतिवै ॥ हव्यं देवानगृह्णांतिकव्यंचपितरस्तथेति ॥  
गोविंदाराविष्येवम । तेनेयं पूर्वाक्लिव्यापिनी । दिनद्वयेतत्त्वेपरैवेति । धर्मतत्त्व  
विदोहेमाद्र्यादयः ( अनंतभट्टस्तु ) सर्वैधृतिर्व्यतीपातोयुगमन्वादयस्तथा ॥ स  
न्मुखाउपवासेस्युर्दनादावंतिमाः स्मृताइत्याह । दानादावितिआद्वसंग्रहः । उप  
वासस्त्वप्रेवक्ष्यते ( हेमाद्रावप्येवम ) माधवस्तुव्यतीपातः आद्वेपराक्लिव्यापीग्रा  
ह्यइत्याह । स्मृत्यर्थसारेतुकुतुपकालयोगीत्युक्तम (यत्तुमार्कंडेयः) शुक्लपक्षस्य  
पूर्वाहृणोआद्वंकुर्याद्विचक्षणाः ॥ कृष्णपक्षापराक्लेहिरौहिणांतुनलंधयेत् ॥ रौहि  
णौनवमीमुहूर्तः । अत्रशुक्लपक्षयुगादिआद्वंपूर्वाक्लेकार्यमितिशलपाणिः निर्ण  
यामृतादयस्तुकालादर्शमाआद्वमापराक्लिकमुक्ता एवमन्वंतरादीनांयुगादीनां  
विनिर्णयइत्युक्तत्वात् । द्वेशुक्लइत्यादिवचनंविष्णुपजनविययम । आद्वेत्वापरा  
हृणाक्येवेतिव्यवस्थांजगदुः । सेयंपूर्वाक्लानेकवचोविरोधात्पूर्वाक्लेदैविकंकुर्या  
दित्यादिवचनादेवसिद्धेवचनवैयर्थ्याच्चस्वाच्छंद्यविलसित मात्रमित्युपेक्षणीया  
किंचकालादर्शोक्तिन्यायमूलावचोमूलावा । नाद्यः युगादिआद्वस्यामाआद्विविक्त  
तित्वेनन्यायतोपराहृणाव्याप्तावपिवचनेनतस्यवाधात् । नांत्यः । अतिदेशादेवा  
पराहृणाप्राप्तेर्वचनवैयर्थ्यात् । अप्राप्तेशास्त्रमर्थवदितिन्यायात् । तेनयदिकाला  
दर्शोक्तेः कथंचिच्छब्दाजाड्येनसमाधित्वातर्हिन्याय प्राप्तकृष्णपक्षयुगादिविष  
यत्वेनसाव्यवस्थापनीयेतिदिक् । पूर्वाहृणास्तत्रद्वेधाभक्तदिनपूर्वार्धः द्वेधाभक्त  
दिनांशकोवर्गादितः प्राक्तापराक्ता वितिदीपकोक्तेः । माधवादयोप्येवम (अत्र

विशेषोहेमाद्रौभविष्ये ) वैशाखे शुक्लपक्षे तु तृतीयायांतथैव च ॥ गंगातोये नरः  
स्नात्वा मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥ तस्यां कार्यं यवैर्होमो यवैर्विष्णांसमर्चयेत् ॥ यवान्  
दद्याद्द्विजातिभ्यः प्रयतः प्राशयेद्यवानिति (अन्नदानविशेषस्तत्रैव भविष्ये इमां  
प्रक्रम्य ) उदकुंभान्तसकनकान्तसाक्षन्तसर्वरसैः सह ॥ यवगोधमचराकान्सक्तु  
दध्योदनंतथा ॥ ग्रैष्ठिकं सर्वमेवात्र सस्यं दाने प्रशस्यते इति ( देवीपुराणोपि )  
तृतीयायांतु वैशाखे रोहिण्यक्षे प्रपूजयतु ॥ उदकुंभप्रदानेन शिवलोके महीयते  
( मंत्रस्तु ) सद्यधर्मघटोदत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानात्तृप्यंतु  
पितरोऽपि पितामहाः ॥ गंधोदकतिलैर्मिश्रं साक्षं कुंभं फलान्वितं\* ॥ पितृभ्यः  
संप्रदास्यामि अक्षय्यमुपतिष्ठति अन्नं च पिंडरहितं श्राद्धं कुर्यात् । अयनद्वित  
ये श्राद्धं विद्युर्बद्धितये तथा युगादियुचसर्वेषु पिंडानि वर्षणादुत्ते इति हेमाद्रौ पुल  
स्त्यवचनात् ( अन्नरात्रिभोजने प्रायश्चित्तमृग्विधाने ) रात्रौ भुक्ते वत्सरं तु  
मन्वादिषु युगादिषु ॥ अभिस्त्वर्च्यं मंत्रं च जपे दशनपातक इति ( अपरार्क  
यमः ) कृतोपवासाः सलिलं ये युगादिदिनेषु च ॥ दास्यंत्यन्नादिसहितं तेषां लोका  
महोदया इति ॥ वैशाखे मलमासे सति तत्रैव युगादिः कार्यः ( तथा च हेमाद्रौ  
ऋषयश्चक्रः ) दशहरासु नोत्कर्षश्चतुर्विधोऽपि युगादिषु ॥ उपाकर्माणि चो  
त्सर्गो ह्येतदिष्टं वृथा दित इति ॥ सप्तदशहरादिकं वृथा दिसंक्रमेद्विषम । कन्या  
चंद्रो वृषे रवावित्यादि सौरमासोक्तेरित्यर्थः ( कालादर्शोपि ) अन्वोदकुंभ  
मन्वादि महालययुगादिष्विति ॥ मलमासकर्तव्येषु परिगणनाच्च । महा  
लयशब्देन मघात्रयोदशयुच्यत इति माधवः ( स्मृतिचंद्रिकायांतु मासद्वये कर्तव्य  
मित्युक्तम् ) यौगादिकं मासिकं च श्राद्धं चापरपक्षिकम् ॥ मन्वादिकं तैर्यिकं  
च कुर्यान्मासद्वयेऽपि चेति ॥ अपरपक्षः कृष्णपक्षः न तु महालयः । तस्य तत्र निये  
धात् ( मदनरत्नेऽपि मरीचिः ) प्रतिमासं मृताहे च श्राद्धं यत्प्रतिवत्सरम् ॥ मन्वा  
दौ च युगादौ च तन्मासो रूभयोरपीति ॥ प्रतिवत्सरं क्रियमाणां कल्पादिश्राद्धमिति  
सखवत्याचख्यौ ( अत्र श्राद्धाकरणो प्रायश्चित्तमुक्तमृग्विधाने ) नयस्य द्यावासं वं

\* वैशाखे मासि शुक्लायांतु तृतीयायां भगीरथः ॥ ब्रह्मलोकस्ति पथगां पृथिवी तलमानया दिति व्रतहेमाद्रः ॥



चशतवारंतदाजपेत् ॥ युगादयोयदान्यूनाः कुरुतेनैवचापियइति ॥ अत्रसमुद्रस्ना  
नंप्रशस्तम् ( तदुक्तंपृथ्वीचन्द्रोदयेसौरपुराणो ) युगादौतुनरः स्नात्वाविधिवत्त  
वराणोदधौ ॥ गौसहस्रप्रदानस्यकुरुसेवेकलंहियत् ॥ तत्फलंलभतेमर्त्याभिमिदा  
नस्यचध्रुवमिति ॥ अयंनिर्णयः सर्वयुगादियुबोद्धव्यः । इत्युगादिनिर्णयः ।  
इयमेवतृतीयापरशुरामजयन्ती । साप्रदोषव्यापिनीग्राह्या ( तदुक्तंभार्गवा  
र्चनदीपिकायांस्कांदभविष्ययोः ) वैशाखस्यासितेपक्षे तृतीयायांपुनर्वसौ ॥  
निशायाः प्रथमेयामेरासारख्यः समयेहरिः ॥ स्वोच्चैः षडग्रहैर्युक्तेसिधुनेराहुसं  
स्थिते ॥ रेणुकायास्तुयोगर्भादवतीर्णोहरिः स्वयमिति ॥ दिनद्वयेतद्व्याप्तावंश  
तः समव्याप्तौचपरा ॥ अन्यथापूर्वव ( तदुक्तंतत्रैवभविष्ये ) शुक्लतृतीयावै  
शाखेशुद्धोपोष्यादिनद्वयेनिशायाः पूर्वयामेचेदुत्तरान्यत्रपर्विकेति ( वैशाखशु  
क्लसप्तम्यांगंगोत्पत्तिस्तदुक्तंपृथ्वीचन्द्रोदयेब्राह्मे ) वैशाखेशुक्लसप्तम्यांजहनु  
नाजाहनवीपुरा ॥ क्रोधात्पीतापुनस्त्यक्ताकर्णारंध्रात्तुदक्षिणात् ॥ तांतत्रपज  
येद्देवींगंगंगगनमेखलामिति ॥ अत्रशिष्टाचारात्तमध्याह्नव्यापिनीग्राह्या ।  
दिनद्वयेतद्व्याप्तावव्याप्तावेक देशव्याप्तौवापूर्वायुग्मवाक्यात् ( वैशाखशुक्ल  
द्वादश्यांयोगविशेषोहेमाद्रौज्योतिःशास्त्रे ) पंचाननस्थौगुरुभूमिपुत्रीमेखेरविः  
स्याद्यदिशुक्लपक्षे ॥ पाशाभिधानाकरभेरायुक्तातिथिर्व्यतीपातइतीहयोगः ॥  
अस्मिंस्तुगोभूमिहिरण्यवस्त्रदानेनसर्वपरिहायपापम् ॥ सुरत्वमिन्द्रत्वमनामय  
त्वंमर्त्याधिपत्यंलभतेमनुष्यइति ॥ पंचाननसिंहः पाशाभिधानातिथिर्द्वादशी ।  
करभोहस्तः । वैशाखशुक्लचतुर्दशीनृसिंहजयन्ती । साप्रदोषव्यापिनीग्राह्या  
( तदुक्तंहेमाद्रौनृसिंहपुराणो ) वैशाखेशुक्लपक्षेतुचतुर्दश्यांनिशामुखे ॥ मज्ज  
न्मसम्भवंपुराणं ब्रतं पापप्रणाशनम् ॥ वर्षेवर्षेतुकर्तव्यंममसंतुष्टिकारणमिति ॥  
दिनद्वयेतद्व्याप्तावंशतः समव्याप्तौचपरा । विषमव्याप्तौत्वधिकव्याप्तिमती  
दिनद्वयेप्यव्याप्तौपरा । परदिनेगौणकालव्याप्तेः सत्वात्पूर्वदिनेचतदभावात्  
( यत्तु ) ततोमध्याह्नवेलायांनद्यादौविमलेजले ॥ इत्युपक्रम्यपरिधायततोवा  
सोव्रतकर्मसमारभेदितितत्रैवोक्तमतत्संकल्परूपव्रतोपक्रमविययम् ॥ नत्वेतावता

मध्याह्नव्यापिनीग्राह्येतिभ्रमितव्यम् ॥ पूर्वोक्तवचनविरोधात् । वैशाखस्य  
चतुर्दश्यांसोमवारो निलक्षके ॥ अवतारो नृसिंहस्य प्रदोषसमये द्विजा इति ढोडरा  
नन्देस्कांदात् । कर्मः सिंहो बौद्धकल्की वसायमिति पूर्वोक्तपुराणा समुच्चयवचना  
चेति केचित् (तत्त्वं तु पूर्ववचसामनाकरत्वेनानिर्मूलत्वात् हेमाद्रौ नृसिंहपुराणो )  
मज्जन्मसंभवं पुरायंत्रतं पापप्रणाशनमित्युपक्रम्य । स्वातीनक्षत्रयोगे च शनिवारे  
तु मद्भ्रतम् ॥ सिद्धयोगस्य संयोगे वा गिजे करणो तथा ॥ पुंसां सौभाग्ययोगे न लभ्य  
ते देवयोगतः ॥ सर्वे रेतैस्तु संयुक्तं हत्याकोटि विनाशनम् ॥ एतदन्यतरे योगे मद्भि  
नं पापनाशनम् ॥ केवलेऽपि प्रकर्तव्यं मद्भिनेत्रतमुत्तमम् ॥ अन्यथानरकं यांति याव  
चंद्रदिवाकरावित्युक्ता ॥ ततो मध्याह्नवे जायां नद्यादौ विमले जले इत्यादिना मध्या  
ह्नस्य व्रतविधानाच्चतुर्दश्युत्तरार्धे वा गिजे करणो मध्याह्ने च स्पृष्टं जन्मप्रतीयते ।  
संध्यायां जन्मतु क्वाप्यनुक्तैर्मौख्यैः कृतं तद्वशां निर्णयश्चेह्यस्येति तथा इयमेव ।  
योगविशेषेणातिप्रशस्ता (तदुक्तं तत्रैव) स्वातीनक्षत्रयोगे च शनिवारे च मद्भ्रतम् ।  
सिद्धयोगस्य संयोगे वा गिजे करणो तथा ॥ पुंसां सौभाग्ययोगे न लभते देवयोगतः ॥  
एभिर्योगैर्विनापि स्यान्मद्भि नं पापनाशनम् ॥ सर्वथा मेव वरानामधिकारोऽस्ति म  
द्भ्रते ॥ मद्भ्रतैस्तु विशेषेणाकर्तव्यं मत्परायणैः (तथा) सिंहः स्वर्गामयो देवो मम  
संतोषकारकः (तथा) विज्ञाय मद्भि नं यस्तुलं धयेत् पापहृत्तरः ॥ सयाति नरकं धो  
रं यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ इदं च संयोगपृथक्कन्यायेन नित्यं काम्यं च (अथात्र विशेष  
यः) मध्याह्ने मृदुगोमयतिला मलकस्नानं कृत्वा । नृसिंहदेवदेवेशतव जन्मदिने  
शुभे ॥ उपवासं करिष्यामि सर्वभोगविवाजित इति मंत्रेणा संकल्पं कृत्वा (आचार्यवृ  
त्वासायं काले) हैमीतु तत्र मृन्मूर्तिः स्थाप्या लक्ष्म्यास्तथैव च ॥ पलेन वा तदर्थे न त  
दधर्मेन वा पुनः ॥ यथाशक्तिस्तथा कुर्याद्वित्तशाठ्यं विवाजित इत्युक्तम् ॥ नृसिंहमू  
र्तिं शक्यतां कृतं सुवर्गा सिंहं च कलशोपरि संपुज्य रात्रौ जागरणां कृत्वा प्रातः पुनः संपु  
ज्य । नृसिंहाच्युतं देवेश लक्ष्मीकांतं जगत्पते ॥ अनेनार्चाप्रदानेन सफलाः स्युर्मनी  
रथाः ॥ इत्याचार्याय दत्त्वा । मद्भ्रं शेषेन राजा तायेजनिष्ठ्यांति चापरे ॥ तांस्त्वमु  
द्धर देवेश दुस्तरा इव सागरात् ॥ पातकारा विमर्शनस्य व्याधिदुःखांबुवारिभिः ॥



तीव्रैश्चपरिभूतस्य महादुःखगतस्य मे ॥ करावलंबनं देहि शेषशायि नृजगत्पते ॥  
 श्रीवृत्तिंहरमाकांतभक्तानां भयनाशन ॥ क्षीरांबुधिनिवासंस्त्वं चक्रपारोजनार्द  
 न ॥ व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भवेति प्रार्थयेदिति संक्षेपः (वैशाखपौर्णमा  
 स्यां विशेषोपराके जाबालिः) श्रुतान्मुदकुंभं च वैशाख्यां च विशेषतः ॥ निर्दिश्य  
 धर्मराजाय गोदानफलमाप्नुयात् ॥ सुवर्गातिलयुक्तेस्तु ब्राह्मणान्नसप्तपंचच ॥  
 तर्पयेद्दुदपात्रैस्तु ब्रह्महत्यां व्यपोहतीति (उदकुंभदानसंज्ञं त्वस्य तृतीया प्रकर  
 णोक्तः । भविष्येपि ) वैशाखी कार्तिकी माघी तिथयो तीवर्पाजिताः ॥ स्नान  
 दानविहीनास्ताननेयाः पांडुनंदन ॥ अन्नकृष्णाजिनदानं कार्यम् (तथा च विष्णुः)  
 कृष्णाजिने तिलान्नकृष्णान्नं हरिणं मधुसर्पिणी ॥ ददाति यस्तु विप्राय सर्वतरति  
 दुष्टकृतमिति ॥

इति श्रीकमलाकरभट्टकृतकालनिर्यासिन्धौ वैशाखमासः समाप्तः ॥

वृषसंक्रांतौ पूर्वाः षोडशघटिकाः पुराणकालः । रात्रौ संक्रमेति प्रागेवोक्तम् ।  
 (ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां रंभा व्रतमुक्तं माधवीये भविष्ये) भद्रे कुरु वयस्ते न रंभाख्यं व्र  
 तमुत्तमम् ॥ ज्येष्ठशुक्लतृतीयायां स्नातानियमतत्परेति ॥ सा पूर्वविद्धा ग्राह्या ।  
 वृहत्तपातथारंभासा वित्रीवदपैतकी ॥ कृष्णाष्टमी च भृताचकर्तव्या संमुखीति तिथि  
 रिति स्कांदोक्तेः । ज्येष्ठशुक्लदशमी दशहरा (तदुक्तं हेमाद्रौ ब्राह्मे) ज्येष्ठे मासि  
 सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता ॥ हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृतेति (वाराहेपि)  
 दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजे हनि ॥ अवतीरायितः स्वर्गात् हस्तर्क्षे च सरि  
 डरा ॥ हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृतेति (स्कांदे तु दशयोगा उक्ताः । तथा)  
 ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः ॥ व्यतीपाते गणानंदे कन्या चंद्रे वृषे रवौ  
 दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते इति ॥ अत्र बुधभौमयोः कल्पभेदेन व्यवस्था  
 इयं च यत्रैव योगबाहुल्यं सैव ग्राह्या ॥ योगाधिक्ये फलाधिक्यात् । ज्येष्ठे मलमासे सति  
 तत्रैव दशहरा कार्या । न तु शुद्धे । दशहरा मुनोत्कर्षश्चतुर्ध्वपि युगादिद्वितीये मा  
 द्रौ च दशम्यां गोक्तेः (तथा स्कांदे) यां कांचित्सरितं प्राप्य दद्यादध्यात्तिलोदकम् ॥

मुच्यतेदशभिःपापैःसमहापातकोपमैः (अत्रविशेषःकाशीखंडे) ज्येष्ठेमासिसि  
तेपक्षे प्राप्यप्रतिपदतिथिम् ॥ दशाश्वमेधकेस्नात्वामुच्यतेसर्वपातकैः ॥ एवंस  
र्वविधिथियुक्रमस्नायीनरोत्तमः ॥ आशुक्लपक्षदशमीप्रतिजन्माघमुत्सृजेत् (त  
था) लिंगंदशाश्वमेधेशंदृष्ट्वादशहरातिथौ ॥ दशजन्मार्जितैःपापैस्त्यज्यतेनाव  
संशयः ( तथाचभविष्योत्तरकाशीखंडयोः ) निशायांजागरं कृत्वासमुपोष्य  
चभक्तितः ॥ पुठपैर्गंधैश्चनैवेद्यैः फलैश्चदशसंख्यया ॥ तथादीपैश्चतांबूलैःपू  
जयेच्छृङ्खलान्वितः ॥ स्नात्वाभक्त्यातुजाहनव्यांदशकृत्वोविधानतः ॥ दशप्र  
सृतिहृष्टाश्चतिलान्सर्पिश्चवेजले सक्कुपिंडान्गुडपिंडान्दद्याच्चदशसंख्यया  
ततो गंगातटेरम्येहेस्नात्स्नप्येणावातथा ॥ गंगायाःप्रतिमांकृत्वावक्ष्यमाणास्वरूपि  
णीम् ॥ संस्थाप्यपूजयेद्देवांतदलाभेमृदापिच ॥ अथतत्राप्यशक्तप्रचेलिखेतपिष्टे  
नवैभुवि ॥ वक्ष्यमाणोनमंत्रेणाकुर्यात्पूजांविशेषतः ॥ नारायणमहेशंचब्रह्माणां  
भास्करंतथा ॥ भगीरथंचनृपतिंहिमवंतंनगेश्वरम् ॥ गंधपुठपादिभिःसम्यग्य  
थाशक्तिप्रपूजयेत् ॥ दशप्रस्थांसितिलान्दद्याद्दशसंख्यागवीस्तथा (प्रस्थःषोड  
शपलानि । पलंतु) मुष्टिमात्रं पलं स्मृतमिति महाराविउक्तम् । मत्स्यकच्छपमंडुक  
मकरादिजलेचरान् ॥ हंसकारंडवक्त्रकचक्रटिड्ढिभसारसान् ॥ कारयित्वायथा  
शक्तिस्वर्गोनरजतेनवा ॥ तदलाभेपिष्टमयानभ्यर्च्यकुसुमादिभिः ॥ गंगायांप्रक्षि  
पेदाज्यदीपांश्चैवप्रवाहयेत् ॥ पुठपाद्यैःपूजयेद्गंगामंत्रेणानेनभक्तितः ॥ ओं  
नमःशिवायैनारायणायैदशहरायैगंगायैनमोनमः ॥ इतिमंत्रंतुयोमर्त्योदिनेतस्मि  
न्निद्वानिशम् ॥ जपेत्पंचसहस्राणि दशधर्मफलंलभेत् ( काशीखंडेत्वन्वयोमं  
त्रउक्तः ) नमःशिवायैप्रथमंनारायणायैपदंततः ॥ दशहरायैपदमितिगंगायैमंत्रस  
ख्यै ॥ स्वाहांतःप्रणावादिश्चभवेद्विंशाक्षरोमनुः ॥ पूजादानंजपोहोमोतेनैवस  
नुनास्मृतमिति ( अत्रगंगास्तोत्रपाठमपिदशवारंकुर्यात् तदुक्तंभविष्ये ) तस्यां  
दशम्यामेतच्चस्तोत्रं गंगजलेस्थितः ॥ यःपठेद्दशकृत्वस्तुदरिद्रोवापिचाक्षमः ॥  
सोपिततत्फलमाप्नोतिगंगासंप्रज्ययत्नतइतिस्तोत्रंच प्रतिपदादिदशमीपर्यंतंदिन  
वृद्धिसंख्ययापाठनीयमितिशिष्टाः । अत्रचसर्वापि विस्तरःस्तोत्रादिचभट्टकृत



त्रिस्थलीसेतीरवधेयः । विस्तरभीतेस्तुनलिख्यते ( एवंकुर्वतः फलमुक्तं काशी  
 खंडे ) एवंकृत्वाविधानेनवित्तशाठ्यविवर्जितः । उपवासीवक्ष्यमाणौदशपापैः  
 प्रमुच्यते ॥ सर्वानकामानवाप्नोतिप्रेत्यब्रह्मगालीयतइतिच ॥ अस्यांसेतुबंधरा  
 मेश्वरस्यप्रतिष्ठादिनत्वादिशेषेणापजाकार्या ( तदुक्तंस्कांदेसेतुमाहात्म्ये ) ज्ये  
 ष्ठेमासेसितेपक्षे दशम्यांबुधहस्तयोः ॥ गरानंदेव्यतीपातेकन्याचंद्रे वृषेखौ ॥  
 दशयोगेसेतुमध्येलिंगरूपधरंहरम् ॥ रामोवैस्थापयामासशिवलिंगमनुत्तममि  
 तिइतिदशहरा ॥ ज्येष्ठशुक्लैकादशीनिर्जला । तत्रनिर्जलमुपोष्य । विप्रेभ्योज  
 लकुंभानदद्यादितिनिर्गोयामृतेउक्तम् ( मदनरत्नेस्कांदे ) ज्येष्ठेमासिनृपश्रेष्ठया  
 शुक्लैकादशीशुभा ॥ निर्जलंसमुपोष्यात्रजलकुंभानसंशर्करान् ॥ प्रदायविप्रमुख्ये  
 भ्योमोदतेविष्णुसन्निधौ ( ज्येष्ठपौर्णमास्यांसावित्रीव्रतम् । तदुक्तंस्कांदभवि  
 ख्ययोः ) ज्येष्ठेमासिसितेपक्षे द्वादश्यांरजनीमुखेइत्युपक्रम्य । व्रतंत्रिरात्रमुद्दिश्य  
 दिवारात्रिस्थिराभवेदिति । अंत्युपसंहृतम् । ज्येष्ठेमासिसितेपक्षे पूर्णिमा  
 यांतथाव्रतम् ॥ चीर्णापुरामहाभक्त्याकथितंतेमयानृपोति ॥ दक्षिणात्याश्चेतदे  
 वाद्रियंते ( सतच्चाभावास्यायामप्युक्तंनिर्गायामृतेभविष्ये ) अमायांचतथाज्ये  
 ष्ठेवटमूलेमहासती ॥ त्रिरात्रोपोयितानारीविधिनानेनपजयेत् ॥ मदनरत्नेत्वि  
 दंवाक्यम् ॥ पंचदश्यांतथाज्येष्ठेइतिपठित्वाज्येष्ठपौर्णमास्यामुक्तम् ( तथा )  
 अशक्तौतुत्रयोदश्यांनक्तंकुर्याज्जितेन्द्रिया ॥ अयाचितंचतुर्दश्याममायांसमुपोष  
 यामिति ॥ तत्तुपाश्चात्याआद्रियंते । हेमाद्रिसमयोद्योतादिद्युतुभाद्रपदमर्णिमा  
 यामुक्तम् । तत्तुनेदानींप्रचरति ( गौडास्तु ) मेयेवावृषमेवापिसावित्रींतांवि  
 निर्दिशेत् ॥ ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यांसावित्रीमर्चयंतियाः ॥ वटमूलेसोपवासान्ता  
 वैधव्यामाप्रयुरिति ॥ पराशरोक्तेश्चतुर्दश्यांप्रदोषेव्रतम् । दिनद्वयेतद्व्याप्तौप  
 र्वेत्याहुः । तन्नर्मलम् । अत्रपरिणामाभावास्येपर्वविज्ञेयाह्ये । भूतविद्वानकर्तव्या  
 अभावास्याचपरिणामा ॥ वर्जयित्वानरश्रेष्ठसावित्रीव्रतमुत्तममितिब्रह्मवैवर्त  
 स्कांदेपि ) भूतविद्वानिनीवालीनतुतत्रव्रतंचरेत् ॥ वर्जयित्वातुसावित्रीव्रतंतु  
 शिखिवाहनइति ( मदनरत्नेब्रह्मवैवर्तेपि ) प्रतिपत्पंचमाभूतसावित्रीवटपूर्णिमा

नवमोदशमीचैव नोपोठयाः परसंयुता इति ॥ यदा त्वष्टादशघटिका चतुर्दशीत  
दापराग्राह्या । पूर्वविद्वैवसावित्रीव्रते पंचदशीतिथिः ॥ नाड्योष्टादशभतस्य  
स्यु प्रचैत्तच परेऽहनीतिमाधवः ॥ वस्तुतस्तुभूतोष्टादशनाडीभिर्द्वयत्युत्तरांति  
थिमित्यस्य व्रतांतरे सावकाशत्वादिशेषः प्रवृत्तपूर्वविद्धाविधायकवचनेन तस्य  
वाधादष्टादशनाडीवेधोपि पूर्ववेत्ययं पंथाः साधुः । अत्र पूर्णात्मानुरोधेनैव यथात्रि  
रात्रिसंपत्तिर्भवति । तथा त्रयोदश्यादिग्राह्यम् । तस्याः प्रधातत्वात् । अयं नि  
र्णयोऽसाधारणपिज्ञेयः । पारंतां पूर्णामांते कार्यम् ( अथस्त्रीव्रतेयुविशेषाः परि  
भाषायामुक्ताः । अत्रविशेषो भविष्ये ) गृहीत्वा वालुकां पात्रे प्रस्थसांयुधिस्थिर ।  
ततो वंशमये पात्रे वस्त्रयुग्मेन वेष्टिते सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णीं वापि मृन्मयीम्  
सार्धं सत्यवतासाध्वीं फलनैवेद्यदोषकैः ॥ रजन्या कंठसूत्रैश्च शुभैः कुंकुमकेशरैः  
पूजयेदिति शेषः ॥ रजनी हरिद्रा । कंठसूत्रं सौभाग्यतंतुः । सावित्र्याख्यानकं  
वापि वाचयतीति द्विजोत्तमैः ॥ रात्रौ जागरां कृत्वा प्रभाते विमले ततः ॥ तामपि ब्रा  
ह्मणोदत्वा प्रणिपत्य क्षमापयेत् ( संवस्तु ) सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्यमहा  
सती ॥ ब्राह्मणाः प्रीणानार्थं ब्राह्मणां प्रतिगृह्यताम् ॥ व्रतेनानेन राजेन्द्रवैधव्यं नाप्नु  
यात्कच्चिदिति ( ज्येष्ठापौर्णमास्यां विशेष आदित्यपुराणो ) ज्येष्ठे मासितिलानद  
द्यात्पौर्णमास्यां विशेषतः ॥ अश्वमेधस्य यत्पुण्यं तत्तत्प्राप्नोति न संशयः ( विष्णु  
रपि ) ज्येष्ठी ज्येष्ठायुताचेत्स्यात्तस्यां क्वत्रोपानतप्रदानेन नराधिपत्यमाप्नोतीति  
( हेमाद्रौ ज्योतिषे ) सेंद्रे गुरुः शशीचैव प्राजापत्ये रविस्तथा ॥ पूर्णिमा ज्येष्ठमा  
सस्य महाज्येष्ठी प्रकीर्तितेति ॥ इयं मन्वादि रपि । सापौर्वारिल्लीकी ग्राह्या । विशेष  
स्तु चैवे उक्तः ( तथाऽपरा क्वैवामनपुराणो ) उदकुंभांबुदानं च तालवृत्तं सचंदनम्  
त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं दातव्यं ज्येष्ठमासि तिर्वाति ॥

इतिकमलाकरभट्टकृते निर्णयसिन्धौ ज्येष्ठमासः समाप्तः ॥

मिथुनसंक्रांतौ पराः शोडशघटिकाः पुरायकालः रात्रौ तु प्रागेवोक्तम् । आषा  
ढशुक्लद्वितीयायां रथोत्सवः ( तदुक्तं तिथितत्त्वे स्कांदे ) आषाढस्य सिते पक्षे द्वि



तीयापुष्यसंयुता ॥ तस्यांरथेसमारोप्यरामं वैभद्रया सह ॥ यात्रोत्सवं प्रवर्त्तयि  
 प्रीणायेत द्विजान्बहून् (तथा) ऋक्षाभावेति यौकार्यायात्रासौममपुराणदा ॥ आ  
 यादशुक्लदशमीपौर्णमासी च मन्वादिः । सा च पर्वास्त्व्यापिनी ग्राह्येति प्रागुक्त  
 म । आयादशुक्लद्वादश्यामनुराधायोगरहितायां पारणां कुर्यात् (तदुक्तं भविष्ये  
 आभाकासितपक्षे युमैत्रश्च वगारेवती ॥ संगमेन हि भोक्तव्यं द्वादशद्वादशीर्हरेत् (अ  
 स्यार्थः) आयादभाद्रपदकार्तिकशुक्लद्वादशी त्वनुराधाश्च वगारेवती योगे पारणां  
 न कुर्यादिति । अत्र यद्यप्येतावदेवोक्तम् । तथाप्यनुराधाप्रथमपादस्यैव वर्ज्यः ( त  
 दुक्तं विष्णुधर्म ) सैत्राद्यपादे सर्वापि तीह विष्णुः पौष्णां त्यपादे प्रतिबोधमेति ॥ अ  
 तेष्वमध्ये परिवर्तमेति ह्युक्तिप्रबोधपरिवर्तनमेव वर्ज्यमिति ॥ वस्तुतस्तु पूर्ववचन  
 मिदं च निर्मूलम् ( अत्रैव विष्णुशरणोत्सव उक्तो हेमाद्रौ ब्राह्मे ) एकादश्यां तु शु  
 कलाग्रामायादे भगवान्हरिः भुजंगशयने शोते क्षीरार्गावजले सदेति ( कल्पतरौ य  
 मः ) क्षीरान्वौशेषपर्यं के आयादयां संविशेद्वरिः ॥ निद्रां त्यजति कार्तिक्यां तयोः  
 संप्रजयेत्सदा ॥ ब्रह्महत्यादिकं पापं क्षिप्रमेवं व्यपोहति ॥ हिंसात्मकैस्तु क्लिप्तस्य य  
 ज्ञैः कार्यमहात्मनः प्रस्वापे च प्रबोधे च पूजितो येन केशवः (टोडरानंदेऽपि स्कांदे) आ  
 यादशुक्लैकादश्यां कुर्यात्स्वप्नमहोत्सवम् ॥ अयं द्वादश्यामप्युक्तः । आभाकासि  
 तपक्षे युमैत्रश्च वगारेवती ॥ आदिसंध्यावसाने युप्रस्थापावर्तनोत्सवाः ॥ निशि स्वा  
 पीदिवोत्थानं संध्यायां परिवर्तनम् ॥ अत्र पादयोगेऽपि द्वादश्यामेव कारयेत् ॥ आ  
 भाकाद्येषु मासेषु मिथुने साधवस्य च ॥ द्वादश्यां शुक्लपक्षे च प्रस्थापावर्तनोत्सवा इ  
 ति भविष्योक्तेः । द्वादश्यां संवत्समयेन क्षत्राणामसंभवे ॥ आभाकासितपक्षे शु  
 शयनावर्तनादिकमिति ॥ वाराहोक्तेश्च । द्वादश्यामित्यत्रापि पारणाहोमात्रं  
 विवक्षितम् । पारणाहे पूर्वरात्रे घंटादीन्वादयन्ते मुहुरितिरामार्चनचंद्रिकोक्तेः । अ  
 त्रैकादशीद्वादश्योर्देशभेदेन व्यवस्था । इदं च मलमासेन कार्यम् । ईशानस्य बलिर्वि  
 षाणोऽशयनं परिवर्तनमिति कालादर्शे निषेधात् । यदापि एकादश्यां तु गृह्णीयात्सं  
 क्रांतौ कर्कटस्य च ॥ आयादयां वानरो भक्त्या चातुर्मास्यव्रतक्रियामिति ॥ हेमा  
 द्रौ ब्रह्मवैवर्ततर्दापि मलमासे सति द्रष्टव्यम् । मिथुनस्थो यदा भानुरमावास्याद्वयं स्पृ

शेखडिरायादः सविज्ञेयो विष्णुः स्वर्पितिकर्कट इति तत्रैव मोहचूलोत्तरोक्तेः ( अत्रै  
वचतुर्मास्यव्रतारंभउक्तोभारते ) आथादेतुसितेपसेयकादश्यामुपोषितः ॥ चातु  
र्मास्यव्रतंकुर्याद्यत्किंचिन्नियतो नर इति ( अस्य नित्यत्वं तत्रैवोक्तम् ) वार्षिकांश्च  
तुरोमासां च वाहयेत् केन च नरः ॥ व्रतेन नो चेदाप्नोति किं त्विदं वत्सरोद्भवम् ॥  
असंभवे तु लार्कपि कर्तव्यं तत्प्रयत्न इति ॥ तेनाथादशुक्लैकादश्यां द्वादश्यां  
पौर्णमास्यां वारंभः । समाप्तिस्तु कार्तिकशुक्लद्वादश्यामेव ( तदुक्तं हेमाद्रौ भारते )  
चतुर्वागृह्यत्रैचीर्णां चातुर्मास्यव्रतं नरः ॥ कार्तिकेशुक्लपक्षे तु द्वादश्यां तत्समाप  
येदिति ॥ अस्यां रंभः शुक्रास्तादावपि कार्यः । न शैशवं न मौढ्यं च शुक्रशुर्वर्जं न वा  
तिथेः ॥ खंडत्वं चिंतयेदादौ चातुर्मास्यविधौ नर इति ॥ हेमाद्रौ वृद्धगार्ग्योक्तेः ।  
इदं च द्वितीयाद्या रंभविषयम् । प्रथमारंभस्तु न भवत्येव । आशौचमध्ये पि द्विती  
याद्या रंभो भवति । अशुचिर्वाशुचिर्वापि यदि स्त्री यदि वा पुमान् ॥ व्रतमेतन्नरः  
कृत्वा मुच्यते सर्वपातकै रिति ॥ भार्गवार्चनदीपिकायां स्कांदोक्तेः । आरब्धे स  
तकं न स्यादनारब्धे तु सतकमिति विष्णुवचनाच्च । यत्तु असंक्रांतं तथा मासं देवैः पिच्ये  
च कर्मणि ॥ सलमासमसौ च चर्वजयेन्मतिमान्नर इति ॥ हेमाद्रौ चातुर्मास्यप्रक  
रणो भविष्यवचनं तत्पथानुमंत्रणमंत्रवदसंबद्धं मध्ये पठितमिति ज्ञेयम् । अन्यथा  
पिच्यं स्य पूर्वोक्तस्य विवाहदेश्चातुर्मास्यव्रतेकः प्रसंगः । प्रकरणानिवेशोपि वा प्र  
थमारंभविषयं ज्ञेयम् । केचित्तु प्रतिवर्षं चातुर्मास्यव्रतप्रयोगानां भिन्नत्वादाशौ  
चादिपाते द्वितीयादिप्रयोगो न भवत्येवेत्याहुः तन्न । प्रतिवर्षं च यः कुर्यादेवं त्रैसंस्म  
रन् हरिम् ॥ देहांतेति प्रदीप्ते न विमानेनार्कवर्चसा ॥ मोदते विष्णुलोके सौयावदा  
भतसंप्लवमिति हेमाद्रौ भविष्यवचनादित्यास्तां विस्तरः । इदं च शिवभक्तादिभि  
रपि कार्यम् । शिवेवाभक्तिसंयुक्तो भानौ वा गरानायके ॥ कृत्वा व्रतस्य नियमं यथा  
क्तफलभारभवेदिति ॥ ब्रह्मवैवर्त ( व्रतग्रहणाप्रकारस्तु हेमाद्रौ भविष्ये ) महा  
पूजांततः कुर्याद्देवदेवस्य चक्रिणाः ॥ जातीकुसुममालाभिर्मंत्रेणानेन पूजयेत् ॥ रुते  
त्रैयिजान्नाथे जगत्पुत्रं भवेदिदम् ॥ विबुद्धे च विशुध्येत् प्रसन्नो भवेच्च्युत ॥ ए  
वं तां प्रतिमां विष्णोः पूजयित्वा स्वयं नरः ॥ प्रभावे ताग्रतो विष्णोः कृतां जालिपुट इति



या ॥ चतुरोर्वार्षिकानुमासानुदेवस्योत्थापनावधि ॥ इमंकरिष्येनियमंनिर्विघ्नं  
 कुरुमेच्छुतइदं ब्रतंमयादेवगृहीतंपुरतस्तव ॥ निर्विघ्नसिद्धिमायातुप्रसादात्तवके  
 शव ॥ गृहीतेस्मिन्नब्रतेदेवपंचत्वंयदिमेभवेत् ॥ तदाभवतुसंपूर्णात्वत्प्रसादाज्जना  
 र्दन ॥ गृहीतेस्मिन्नब्रतेदेवयद्युपूरांमृतोह्यहम् ॥ तन्मेभवतुसंपूर्णात्वत्प्रसादाज्जना  
 र्दनेति(तत्रभार्गवार्चनदीपिकायाम् । नृसिंहपरिचर्यायांचर्भविष्ये) श्रावणोवर्ज  
 येच्छाकंदधिभाद्रपदेतथा॥दुग्धमाप्रचयुजेमांसिकार्तिकेद्विदलंत्यजेदिति (स्कां  
 देपि ३।तुर्मास्यकल्पे) चत्वार्येतानिनित्यानिचतुराश्रमवर्णानाम् ॥ प्रथमेमांसि  
 कर्तव्यंनित्यंशाकब्रतंनरैः ॥ द्वितीयेमांसिकर्तव्यंदधिव्रतमनुत्तमम् ॥ पयोव्रतंतृती  
 येतुचतुर्थेपिनिशामय ॥ द्विदलंबहुबीजंचवृंताकंचविवर्जयेत् ॥ नित्यान्येतानि  
 विघ्नेद्रव्रतान्याहुर्मनीषिणाः ॥ जंबीरंराजमाषांप्रचमलकरक्तमूलकंकटमांडंचे  
 सुदंडंचचातुर्मास्येत्यजेदुधः ( तथा ) विशेषाद्वदरीधौत्रीं कूटमांडींतंतिणीं  
 त्यजेत् ॥ जीर्णाधौत्रीफलंग्राह्यंकथंचित् कायशोधनमिति ( तीर्थसौख्ये  
 स्कांदे) वार्षिकांप्रचतुरोमासानुप्रसुतेवैजनार्दने ॥ संचखद्वादिशयनंवर्जयेद्वक्ति  
 मान्नरः ॥ अनृतौवर्जयेद्धार्यामांसंसंधुपरोदनम् ॥ पटोलंमूलकंचैववृंताकंचनभ  
 क्षयेत् ॥ अभक्ष्यंवर्जयेद्दूरान्मसरंसितसर्पम् ॥ राजमाषानकुलित्यांप्रचआ  
 शुधान्यंचसंत्यजेत् ॥ शाकंदधिपयोमाषानश्रावणादियुसंत्यजेत् ॥ अव्रत्यजे  
 दितिवर्जनसंकल्परूपःपर्युदासोज्ञेयः । व्रतोपक्रमात् । अव्रकेचिच्छाकाख्यंप  
 वृषुठपादीत्यमरकोशस्यशक्यतेतिशतुमनेनेतिशाक इतिक्षीरस्वामिनाच्याख्या  
 नात् । व्यंजनमात्रस्यनियोधमाचक्षते । अन्येतुशाकशब्दस्यपत्रादिदशविधशा  
 केयोगरूढत्वात् । योगाचरूढेर्बलीयस्त्वात्सूपादीनामपित्यागापत्तेश्चतत्प्र  
 त्याचक्षते । तेनमलपत्रकरीराग्रफलकांडाधिरूढकाः त्वक्पुठपं कवचंचेतिशा  
 कंदशविधंस्मृतम् ॥ इतिक्षीरस्वामिनोक्तस्यशाकस्यनियोधेइति ॥ अधिरूढक  
 अंकुरः । वस्तुतस्तुतत्तत्कालोद्भवाःशाकावर्जनीयाःप्रयत्नतः ॥ बहुबीजमबीजं  
 चविकारीचविवर्जयेदिति ॥ भविष्यवचनात्तत्तत्कालोत्पन्नानांदशविधशाका  
 नांनियोधः । अव्रततत्कालोद्भवजातीयत्वंविवक्षितम् । तेनातपादिशोषितानांवर्ष्या

तरोद्भवानामपि निषेधः । अवतत्कालोद्भवत्वमात्रं विवक्षितं न तु तन्मात्रका  
लोद्भवत्वं गौरवात् । तेनान्यकालोद्भवानां तत्कालोद्भवानां च विन्वादीनां निषेधः ।  
अवतत्कालोद्भवा इति वीप्सावशात् स्वस्वकालोद्भवानां सर्वेषां निषेध इति निष्क  
र्यः । बहुबीजमित्यनेकबीजमितिकेचित् । इतरावयवापेक्षया बीजावयवायवबहुव  
स्तदित्यन्ये । अबीजकंदलादि । वस्तुतस्तु । इदं महानिबन्धेऽवभावात् । अस्मिन् लमेव  
(आचारप्रदीपे) वृंताकंचकलिंगंचविल्वौदंबराभिः सटाः ॥ उदरे यस्य जीर्यते तस्य  
दूरतरो हरिः (तथा परार्के देवलः) ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमा मिषवर्जनम् ॥ व्रतेऽवे  
तानि च त्वारिव रिस्यानीति निश्चयः (आमिषानि चोक्तानि रामार्चनं चंद्रिकायां  
पात्रे) प्राणयंगूचां चर्मांबुजं बीरं बजिपूरकम् ॥ अयज्ञां शिष्टमायादिर्यद्विष्णोरनि  
वेदितम् ॥ दग्धमन्नं मसूरं च मांसं चेत्यष्टवामिषम् ॥ रुच्यंतत्तद्देशलभ्यं सुप्ते देवे विव  
र्जयेत् ( पात्रे कार्तिके माहात्म्ये ) गोष्ठागीमहिषी दुग्धादन्यत् दुग्धादि चामि  
षम् ॥ धान्ये मसूरिकाः प्रोक्ताः अन्नं पर्युषितं तथा ॥ द्विजक्रीतारसाः सर्वे लवणां भू  
मिजं तथा ॥ ताप्रपात्रस्थितं गव्यं जलं पल्लवं लसं स्थितम् ॥ आत्मार्यं पाचितं चान्नं  
आमिषं तत्स्मृतं बुधैः ( तथा ) निष्पावानराजमायां च मसूरं संधितानि च । वृं  
ताकंचकलिंगंचवृंते देवे विवर्जयेत् ॥ संधितानि लवणां शाकादीनि (तत्रैव विष्णुध  
र्म ) चतुर्ध्वपीह मासेषु हविष्याः शीनपापभाक् ( हविष्याणां तु पृथ्वीचंद्रोदये भ  
विष्ये ) हैमं तिकंसितां स्वन्नं धान्यं मुद्गाय वा स्तिलाः ॥ कलायकं गुनीवारवारु  
कंहिलमोचिका ॥ यष्टिका कालशाकं च मूलकं केमुकेतरत् ॥ कंदः सैधवसामुद्रे  
गव्ये च दधिसर्पिषी ॥ पयोनुद्धृतसारं च पनसाग्रहरीतकी ॥ पिप्पली जीरकं  
चैव नागरं च तित्तिरी ॥ कदली लवली धात्री फलान्यगुडमैसवम् ॥ अतैलपक्वं  
मुनयो हविष्याणां प्रचक्षते इति ॥ सितानि स्वन्नं अनूठमपक्वं धान्यं च तंदुलाः ॥ केमु  
कं केमुत इति प्राच्येषु प्रसिद्धः कंदः ॥ कलायस्तु सती न क इत्यमरः । बटुरी इति प्रसिद्धं  
धान्यं मदनरत्नेष्वेवम् ( अगस्तिसंहितायां ) हैमं ताद्युक्ता । नारीकेलफलं चै  
व कदली लवली तथा ॥ आप्रमामलकं चैव पनसं च हरीतकी ॥ व्रतांतरप्रशस्तं च  
हविष्यं मन्त्रते बुधाः ( अन्यग्रन्थेषु व्रतान्युक्तानि हेमाद्रौ भविष्ये ) स्त्रीवानरोवा



सङ्गतो धर्मार्थमुदुहब्रतः गृह्णीयान्नियमानेतानन्दं तधावनपूर्वकान् ॥ तेषां फलानि  
 वक्ष्यामि तत्तत्कर्तृणां पृथक्पृथक् ॥ सधुरस्वरो भवेद्राजपुरुषो गुडवर्जनात् ॥ तैल  
 स्पवर्जनाद्राजनुसुंदरांगः प्रजायते ॥ कटुतैलपरित्यागाच्छुक्रनाशः प्रजायते ॥ योगा  
 भ्यासी भवेद्यस्तु स ब्रह्मपदमाप्नुयात् ॥ तांबूलवर्जनाद्भोगी रक्तकंदश्च जायते ॥ घृत  
 त्यागाच्च लावरायं सर्वस्त्रिधत्तनुर्भवेत् ॥ शाकपत्राशनाद्भोगी अपक्वादोमलो भवेत् ॥ भू  
 मौप्रस्तरशायी च विप्रो मुनिवरो भवेत् ॥ सकांतरोपवासेन ब्रह्मलोके महीयते धार  
 णाच्च खरोष्णां च गंगास्नानफलं लभेत् ॥ मौनव्रती भवेद्यस्तु तस्याज्ञास्खलिता भवेत्  
 भूमौ भुंक्ते सदा यस्तु स पृथिव्याः प्रति भवेत् ॥ प्रदक्षिणाशतं यस्तु करोति स्तुतिपा  
 ठकः ॥ हंसयुक्तविमानेन स च विष्णुपुरं व्रजेत् ॥ अयाचितेन प्राप्नोति पुत्रान् धर्म्या  
 नि विशेषतः ॥ यस्यान्नकालभोक्तायः कल्पस्थायी भवेदिति ॥ पर्णयुयो नरो भुंक्ते  
 कुरुक्षेत्रफलं लभेत् ॥ सुडवर्जी नरो दद्यात्तद्भृतं ताम्रभाजनम् ॥ सहिरगायं नरश्चेष्ट  
 लवणास्याप्ययं विधिः ॥ सुप्ते देवे तु यो विष्णोः शिवस्यांगरा मर्चयेत् ॥ पंचवर्णो  
 स्तु यो नित्यं स्तुतिः प्रसक्तस्तथा ॥ स याति रुद्रलोकां हि गारापत्यमवाप्नुयात् ॥  
 अथैषां समाप्तौ कार्तिक्यां दानानि । सकृन्नुक्तव्रते दंपती संपूज्य धेनुर्देया । नक्ते वस्त्र  
 युगं । एकांतरोपवासे गौः । भूशयने शय्या । यद्यकालभोजने गौः । श्रीहिगोधूमादि  
 त्यागे हेमव्रीह्यादि । कच्छे गोयुग्मं । शाकाशने गौः पयो व्रते च । दधिमधुघृतव्रते  
 युवासो गौश्च । ब्रह्मचर्ये स्त्रियां मूर्तिः । तांबूलव्रते वासो युगं । मौने घृतकुंभो वस्त्र  
 युगं घंटा च ॥ देवाग्रे रंगमालिका करणो धेनुर्हेमपञ्च । दीपिका व्रते दीपिका वासो  
 युगं च । भूमिभोजने पर्णाभोजने च कांस्यपात्रं गौश्च । चतुष्टयदीपे गोश्रासे च गोवृ  
 द्यौः । प्रदक्षिणाशते वस्त्रम् । अनुक्तेषु स्त्रियां गोश्चेत्यादि हेमाद्रौ ज्ञेयम् (तथा च भार्ग  
 वार्चनदीपिकायां पात्रे) शयनां बोधिनी मध्ये शमीदूर्वापि मार्गकैः ॥ भृंगिराजेन दे  
 वांस्तु नार्चयित्वा कदाचन (हेमाद्रौ पात्रे) आयादादि चतुर्मासानभ्यंगं वर्जयेन्नरः ॥  
 समाप्तौ च पुनर्देयात्तिलतैलयुतं घृतम् ॥ आयादादि चतुर्मासं वर्जयेन्न खल्वक्तं तम् ॥  
 वृंताकंगुं जनंचैव सधुसर्पिघटोचितं सकृत् कार्तिक्यां तत्पुनर्हेमं ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥  
 अन्यान्यपि केशकर्तृनादिवर्जनसं कल्पानुसूपाणि । पृथ्वीचंद्रोदये ज्ञेयानि (दो

इरानंदेस्कांदे ) सकांतरंद्वयं तरवाकुर्यान्मासोपवासकम् ॥ अनोदनं फलाहारं  
नक्तव्रतमथापिवा ( अत्रैव तप्तमुद्राधारणमुक्तं रामार्चनचंद्रिकायां भविष्ये ) श  
यन्यांचैव बोधिन्यांचक्रतीर्थेतथैवच ॥ शंखचक्रविधानेन बह्विपूतो भवेन्नर इति ।  
अतस्तनूनतदासोऽश्रुत इति ऋग्वेदात्सहोवाचयाज्ञवल्क्यस्तस्मात्पुमानात्महि  
ताय हरिर्भजेत् । सुप्रलोकमौलेर्वसिष्ठिरिनासंदधत इति शतपथश्रुतेः । प्रतद्विष्णो  
अवजचक्रे सुतप्ते जन्मांभोधी तर्तवे चर्याणां द्राः ॥ मलेबाह्वोर्दधन्ये पुराणा तुलिंगा  
न्यंगेतप्तायुधान्यर्पयंत इति सामवेदात् ॥ अग्निहोत्रे यथानित्यं वेदस्थाध्ययनं यथा  
ब्राह्मणस्य तथैवेदं तप्तमुद्रादिधारणमिति पञ्चपुराणा चेति ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रियो वै  
श्यः शूद्रो वायदिवेतरः । शंखमुद्रांकिततनुस्तुलसीमंजरीधरः ॥ गोपीचंदनलिप्तां  
गोदृष्टप्रचेत्तदधंकुतः ॥ इति काशीखंडात् । तत्प्रकारस्तुरामार्चनचंद्रिकातो ज्ञे  
यः ( पृथ्वीचंद्रोदयादयस्तु ) यस्तु संतप्तशंखादिलिंगांचिह्नतनुर्नरः ॥ स सर्वग्या  
तनाभो गोपीचंडालोजन्मकोटियु । द्विजंतु तप्तशंखादिलिंगांकिततनुर्नरः ॥ संभा  
ष्यरौरवं यातियावदिंद्राप्रचतुर्दशेति वृहन्नारदीयां कतेः ॥ शंखचक्राद्यंकनचंगीत  
नृयादिकंतथा ॥ एकजातेरयंधर्मो न जातु स्याद्विजन्मनः । शंखचक्रमृदायस्तु  
कुर्यात्तप्ताय सेनवा ॥ सशद्रवद्वहिः कार्यः सर्वस्माद्विजकर्मणाः ॥ यथा प्रमशानजं  
काष्ठमनर्हसर्वकर्मसु ॥ तथा चक्रांकितो विप्रः सर्वकर्मसुगर्हितः ( तथा ) शिव  
केशवयो रंकांच्छूलचक्रादिकान् द्विजः ॥ न धारयेत्सतिमान् वैदिकेवर्त्मनि स्थि  
त इति विष्णवा प्रवलायनादिवचनात् । ऋग्वेदादिश्रुतीनामन्यार्थत्वादन्यश्रुती  
नांचासत्त्वात् ॥ चक्रादिधारणं शूद्रविषयमित्युच्यते । नृत्यंचोदरार्थं निषिद्धमिति  
ग्रीधरस्वामीयद्यपि नियेषस्य प्राप्ति सापेक्षत्वाद् द्विविधं विना च तदयोगादुपजीव्य  
विरोधेन न तौ पशौ करोतीति वद्विकल्पो युक्तस्तथापि एकजातेरयंधर्म इत्यनेन सा  
मान्यवाक्यानामुपसंहारात् द्विजातिनियेधो नित्यानुवाद इति तदाशयः । अत्र शि  
ष्टाचारस्य संकटपाशनिःसरणस्य गिरितिसंक्षेपः ( आयाह पौर्णमास्यां कोकि  
लाव्रतमुक्तं हेमाद्रौ भविष्ये ) आयाह पौर्णमास्यां तु संध्याकाले ह्युपस्थिते ॥ संकल्प  
येन्मासमेकं श्रावणं प्रत्यहं ह्यहम् ॥ स्नानं करिष्ये नियता ब्रह्मचर्यस्थिता सती । भो



स्यामिनक्तं भूशयंकरिष्ये प्राणिनां दयामिति ॥ अस्य नक्तव्रतत्वात् सायाह्नव्या  
पिनी ग्राह्या ( अत्रैव शिवशयनोत्सव उक्तो हेमाद्रौ वामनपुराणे ) पौर्णमास्या  
मुमानायः स्वपते चर्मसंस्तरे ॥ वैश्याघ्रे च जटाभारं समुद्रग्रंथ्या हि वस्त्राणां ॥ मदनरत्ने  
प्येवम् ॥ इयं च प्रदोषव्यापिनी । अत्रैव व्यासपूजोक्ता । तत्र त्रिमुहूर्ताचेतपरैवेति  
संन्यासपद्धतौ त्रिमुहूर्ताधिकं ग्राह्यं पर्वसौरप्रणामयोरिति वचनात् ।

इति श्रीरामकृष्णभट्टात्मजदिनकरभट्टानुजकमलाकरभट्टकृते निर्णयसिन्धोः आषाढः समाप्तः ॥

कर्कसंक्रांतौ पूर्वत्रिंशदंडाः पुरायकालः । सूर्योदयोत्तरसंक्रमे तु परतसवपुरायं  
रात्रौ तु निशीथात् प्राक् परतश्च संक्रमेऽपरार्के हेमाद्यनंतभट्टादिमते पूर्वोत्तरदिन  
योः पंचनाड्यः पुरायकालः । धनुर्मीनावतिक्रम्य कन्यांचमिथुनंतथा ॥ पूर्वापर  
विभागे न रात्रौ संक्रमते रविः ॥ दिनांते पंचनाड्यस्तु तदा पुरायतमाः स्मृताः ॥ उदये  
पितृयापंचदैवेष्वेच कर्मणां तस्कांदोक्तेः ॥ पूर्वापरविभागेनेति मकरकर्क  
भिक्षसंक्रांतिपरम् ( वक्ष्यमाणवचोविरोधादित्युक्तं मदनरत्ने तेनायमर्थः ) रा  
त्रौ पूर्वभागे मकरे उदये पंचनाड्यः पुरायकालः । रात्रावपरभागे कर्कटे दिनांते पंच  
नाड्यः पुरायकालः । वियुवतोस्तु पूर्वदिने पंचापरदिने च पंचेति वाक्यांतरानुरो  
धात्तेन हेमाद्रिमाधवयोः सर्ववचनानां चाविरोधः । माधवमते त्वर्धरात्रौ तदूर्ध्ववा  
संक्रांतौ दक्षिणायने पूर्वमेव दिनं ग्राह्यम् । यावन्नोदयते रविरिति वृद्धगार्ग्योक्तेः  
मिथुनात् कर्कसंक्रांतिर्यदि स्यादंशुमालिनः ॥ प्रभाते वा निशीथे वा तदा पुरायंतु पू  
र्वत इति ॥ भविष्योक्तेषु च पूर्वदिनसवपुरायं दक्षिणात्यास्त्वेतदेवाद्रियंते । अत्र  
रात्रावपि स्नानादि भवतीत्युक्तं प्राक् । अत्र दानोपवासादि पूर्वमुक्तम् । तथा कर्क  
केशादिकर्तनं नियिद्धं साकुंभेक\* कर्कटे वापि कन्यायां कार्मुके रवौ ॥ रोमखंडंगृह

\* यत्कुंभे कर्कटकंडतिवपनकर्तनसाधारण्यं निषेधकं तद्गृहस्थपदादिव ब्रह्मचर्यादिकं पितृपदाज्जीव  
त्पितृकनास्कंदते इति केचित् ॥ परंतु पुनरुपरतेषु लक्षणापत्याऽविशेषणप्रयोगाच्च तमप्यस्कांदते इत्याहुः तत्र  
यमपदस्वारस्याभावः ॥ धनुःकुंभौ द्विधा कृत्वा पूर्वभागं परित्यजेत् ॥ कर्कटस्यांतिमं भागं कन्यांच स कलांत्य  
जेदिति जगदुर्व्यवस्थां केचित् स्मृतिकाराः ॥

स्थस्यपितृनप्राशयतेयमर्हति ॥ सुसंतुवचनादित्युक्तंजीवत्पितृकनिर्गायेगुरु  
भिः । अथनदीनारजोदोयः ( हेमाद्रावत्रिः ) सिंहकर्कटयोर्मध्येसर्वानद्योरज  
स्वलाः ॥ नक्षानादीनिकर्माणितासुकुर्वीतमानवः॥ इदंचसुद्रनदीयु । सिंहकर्क  
टयोर्मध्येसर्वानद्योरजस्वलाः॥तासुस्नानंनकुर्वीतवर्जयित्वासमुद्रगाइति । व्याघ्रो  
क्तः । मात्स्येत्वगस्त्योदयावधित्वमुक्तम् । यावन्नोदेतिभगवानर्दक्षिणाशावि  
भूयणाः ॥ तावद्रजोमहानद्यःकरतोयाः प्रकीर्तिताः ॥ करतोयाअल्पतोयः ( त  
थोकात्यायनः ) यः शोयमुपगच्छंतिग्रीष्मेकुसरितोभुवि ॥ तासुप्राविशिनस्नायाद  
पूर्वादशवासरे ॥ इदंचापदि ( स्मृतिसंग्रहे ) धनुःसहस्राण्यष्टौतुगतियासांनवि  
द्यते ॥ नतानदीशब्दवहागर्तास्ताःपरिकीर्तिताः ( महानदीयुतुभविष्येउक्तम् )  
आदौतुकर्कटेदेविमहानद्योरजस्वलाः॥ त्रिदिनंचचतुर्थेहिशुद्धारयुर्जह्निवीयथा  
( महानद्यश्चब्राह्मे ) गोदावरीभीमरथीतंगभद्राचवेणिका ॥ तापीपथोष्णी  
विंध्यस्यदक्षिणोतुप्रकीर्तिताः ॥ भागीरथीनर्मदाचयमुनाचसरस्वती ॥ विशो  
काचविहस्ताचविंध्यस्योत्तरसंस्थिताः ॥ द्वादशैतामहानद्योदेवर्षिस्त्रैसंभवाः॥  
मदनरत्नेपुराणांतरे)महानद्योदेविकाचकावेरीवंजरातथा॥ रजसातुप्रदुष्टाःस्युः  
कर्कटद्वीप्यहंनृप ( कात्यायनः ) कर्कटादौरजोदुष्टागोमतीवासरत्रयम् ॥ चं  
द्रभागासतीसिन्धुःशरथूनर्मदातथा ॥ इदंगंगाद्यतिरिक्तविषयम् । गंगाचयमुना  
चैवल्लसजातासरस्वती ॥ रजसानाभिभूयंतेयेचान्येनदसंज्ञिताः ॥ शोणसिन्धुहि  
रयाख्याःकोकलोहितघर्घराः ॥ शतद्रू प्रचनदाःसप्तपावनाःपरिकीर्तिताः ॥  
इतिदेवलोक्तेः ( यत्तु ) प्रथमंकर्कटेदेवित्र्यहंगंगारजस्वलेत्यादिवचनंतज्जाह्नवी  
भिन्नगोदावर्यादिगंगातरपरमितिमदनरत्ने । अन्येत्वंतर्गतर्जोविषयम् । गंगा  
धर्मद्रवःपुराणायमुनाचसरस्वती ॥ अंतर्गतर्जोदोयाःसर्वाविस्थासुचामलाइतिनि  
गमोक्तेःतीरवासिनांतुरजोदोयोनास्ति । नतुतत्तीरवासिनामितिनिगमोक्तेः र  
जोदुष्टमपिजलंगंगाजलयोगोपावनम् । गंगांभसासमायोगाहुष्टमप्यंबुपावनमिति  
मात्स्योक्तेः ( नतनकूपादौतुयोगायाज्ञवल्क्यः ) अजागावोसंहिष्यप्रचब्राह्मणीच  
प्रसूतिका॥भूमेर्नवीदकंचैवदशरात्रेणशुद्ध्यतीति( क्वचित्त्वदोयमाहव्याघ्रपादः )



अभावेकूपवापीनामनपायिपयोभृताम् ॥ रजोदुष्टेपिपयसिग्रामभोगोनदुष्यति  
 (गौडास्तु) अन्येनापिसमुत्प्लवितइतिद्वितीयपादेपाठः । तेनोद्धतेनदोषः । तथाच  
 तामुस्त्रानंतेतिप्राशुक्तमित्याहुः (वशिष्ठोपि) उपाकर्मणिर्चात्सर्गेप्रेतस्त्रानेतथैव  
 चचंद्रसूर्यग्रहेचैवरजोदोषोनविद्यतइत्यलंविस्तरेण । आवराशुक्लतृतीयामधुस्र  
 वाख्यागुर्जरेयुप्रसिद्धा ॥ सापरयुताग्राह्येतिदिवोदासः । आवराशुक्लचतुर्थीपू  
 र्वयुतामाहविद्वागणेश्वरइत्यादिवचनात् । आवराशुक्लपंचमीनागपूजादौपरै  
 वेतिसामान्यनिराण्येउक्तम् (चमत्कारचिंतामणौ) पंचमीनागपूजायांकार्या  
 यद्योसमन्विता ॥ तस्यांतुतुष्टितानागाइतरासचतुर्थिकेति ॥ आवरापंचमीशु  
 क्लासंप्रोक्तानागपंचमी ॥ तांपरित्यज्यपंचम्यः चतुर्थीसहिताहिताइतिसदनर  
 त्नेभिधानाच्च । तेनपरैवेति (अत्रविशेषोहेमाद्रौभविष्ये) आवरासामसिपंचम्यां  
 शुक्लपक्षेनराधिप ॥ द्वारस्योभयतोलेख्यागोमयेनवियोल्वराणाः ॥ पञ्चयेद्विधि  
 वहीरदधिदूर्वाकुरैःकुशैः ॥ गंधपुष्टपोपहारैश्चब्राह्मणानांचतर्पणैः ॥ येतस्यां  
 पञ्चयंतीहनागान्भक्तिपुरःसराः ॥ नतेषांसर्वतोवीरभयंभवतिकुत्रचिदिति ॥  
 आवराशुक्लद्वादश्यांदधिव्रतंप्राशुक्तम् । तक्रादीनांत्वनिषेधः । तद्वदधिव्यवहा  
 राभावादितिवक्ष्यते (अत्रैवविशोःपवित्रारोपणामुक्तंहेमाद्रौविष्णुरहस्ये) आव  
 रास्यसितेपक्षेकर्कटस्थेदिवाकरे ॥ द्वादश्यांवासुदेवायपवित्रारोपणस्मृतम् ॥  
 द्वादश्यांअवरावापिपंचम्यामथवाहज ॥ आनुकूल्येयुर्कर्तव्यंपंचदश्यामथा  
 पिर्वीत (शिवेतुतत्रैवकालोत्तरे) आग्राह्यांतेचतुर्दश्यांनभस्यनभसोस्तथा ॥ अ  
 ष्टम्यांचचतुर्दश्यांपक्षयोरुभयोःसममिति अन्यदेवतानांतुवक्ष्यते (अधिवासनं  
 तुदीपिकायाम्) गोदोहांतरितेकालेपर्वद्युर्वाधिवासनमिति (गौराकालोरासा  
 र्चनचंद्रिकायाम्) पवित्रारोपणांविघ्नाच्छ्रावणोत्तमवेद्यदिकार्तिक्यवधिषुक्रास्ते  
 कर्तव्यमिति नारदः ॥ हेमरौप्यताम्रसोमैःसूत्रैःकौशेय पञ्चजैः ॥ कुशैःकाशै  
 र्चक्रार्पणैर्ब्राह्मणार्पणैर्कूर्तैःशुभैः ॥ कृत्वात्रिगुणांतंसत्रंत्रिगुणीकृत्यशोधये  
 त् तत्रोत्तमंपवित्रंतुयद्यसहशतैस्त्रिभिः ॥ सप्तत्यासहितंद्वादश्यांशताभ्यांसध्यमं  
 स्मृतम् ॥ साशीतिनाशतेनैवकनियंतत्समाचरत् ॥ साधारणपवित्राणित्रिभिः

सुधैः समाचरेत् ॥ उत्तमं तु शतग्रंथि पंचाशद्ग्रंथि मध्यमम् ॥ कनिष्ठं तु पवित्रं स्यात्तथ  
 द्वाविंशद्ग्रंथि शोभनम् ॥ यद्द्विंशच्चतुर्विंशत्तद्वादशेति चक्रेचन ॥ चतुर्विंशद्वाद  
 शाष्टावित्येके मुनयो विदुः ॥ हेमाद्रौ विष्णुरहस्ये त्वन्यथोक्तम् । अष्टोत्तरशतं  
 कुर्याच्चतुः पंचाशदेव वा ॥ सप्तविंशतिरेवायज्येषु मध्यकनीयसम् ॥ अधमं नाभि  
 मात्रं स्याद्दूरुमात्रं द्वितीयकम् ॥ प्रलंबतो जानुमात्रं प्रतिमायां निगद्यते ( शिवपवि  
 त्रं तु तत्रैव शैवागमे ) एकाशीत्यथ वा सत्रैस्त्रिंशता वाष्टयुक्तया ॥ पंचाशता वा  
 कर्तव्यं तु ल्यग्रं ग्रंथंतरालकम् ॥ द्वादशांगुलमानानि व्यासादष्टांगुलानि वा ॥ लिं  
 गविस्तरमानानि चतुरंगुलकानि चेति ( अधिकारिणोऽपि तत्रैव विष्णुरहस्ये )  
 ब्राह्मणाः सत्रियो वैश्यस्तथास्त्रीशूद्रा एव च ॥ स्वधर्माविस्थिताः सर्वे भक्त्या कुर्युः  
 पवित्रकम् ( तथा ) अतो देवेति मंत्रेणाद्विजो विष्णोर्निवेदयेत् ॥ शूद्रस्य मूलमंत्रो  
 वायेन वा पूजयेद्भरिम् ॥ सतच्च नित्यम् । न करोति विधानेन पवित्रारोपणां तु यः ॥  
 तस्य सांवत्सरी पूजा निष्ठफला मुनिसत्तम ॥ तस्माद्भक्तिसमायुक्तैर्नरैर्विष्णुपराय  
 णैः वर्षे वर्षे प्रकर्तव्यं पवित्रारोपणां हरेरितितत्रैवोक्तेः ( देवताविशेषेति यथोपि  
 तत्रैव ) धनदप्रचरमागौरी गणेशः सोमराट्गुहः ॥ भास्करप्रचंडिकां वा च वासुकि  
 ष्च तथर्षयः । चक्रपाणिर्ह्यनंगप्रचर्शिवो ब्रह्मा तथैव च ॥ प्रतिपत्प्रभृतिष्वेताः  
 पूज्यास्तिथिषु देवताः ॥ यथोक्ताः शुक्लपक्षे तु तिथयः श्रावणास्य चेति ( तथा हेमा  
 द्रौ कालोत्तरे ) चतुर्दश्या मयाष्टम्यां सर्वसाधारणां तु तदिति ( तत्प्रकारस्तुरामार्च  
 नचंद्रिकायाम् । यथा ) ततस्तानि पवित्राणि त्रैशावेपदलेशुभे ॥ संस्थाप्य शुचि  
 वस्त्रेणापि धाय पुरतो न्यसेत् ॥ अरत्नि संमितां वेणीं कुर्यात्तद्विंशतां कुशैः ॥ क्रि  
 या लोपविधातार्थं यत्त्वया विहितं प्रभो ॥ मयैतत्क्रियते देव तव तुल्यो पवित्रकम् ॥  
 न मे विघ्नो भवेद्देव कुरु नाथ दयां मयि ॥ सर्वथा सर्वदा विष्णो मम त्वं परमा गतिः ॥  
 उपवासेन देवत्वांतो ययामि जगत्पते ॥ कामक्रोधादयो म्येते न मे स्युर्ब्रतघातकाः ॥  
 अद्य प्रभृति देवेश यावद्वैशेषिकं दिनम् ॥ तावद्द्रक्षा त्वया कार्या सर्वस्यास्य नमोस्तु  
 ते ॥ इति देवं संप्राष्ट्य कुंभं संस्थाप्य तत्र वंशपात्रे । ओं सांवत्सरस्य यागस्य पवित्री  
 करणाय भो ॥ विष्णुलोकात् पवित्राद्य आगच्छेह नमोस्तुते ॥ अनेन मूलेन चावा



ह्योत्तममध्यमकनिष्ठेषु विष्णु ब्रह्मरुद्रानसत्त्वरजस्तमां सिवेदत्रयं वनमालायां प्र-  
 कृतिं चावाह्यत्रिसूत्र्यां ब्रह्मविष्णुरुद्रान् ग्रंथियुक्रियापौरुषीवीराविजयाईशात्र  
 पराजितामनोन्मनीजयाभद्रामुक्तिश्चेत्यावाह्यसंपूज्य । ओं संवत्सरकृतार्चाया  
 संपूर्णफलदोपियत् ॥ पवित्रारोपणायैतत्कुरुकंधरतेनमः ॥ विष्णुतेजो ह्वं र-  
 म्यं सर्वपातकनाशनम् ॥ सर्वकामप्रदं देवतावांगेधारयाम्यहमिति देवकरे संगलसू-  
 त्रं बद्ध्वा देवं संपूजयन्निमंत्रयेत् । आसंत्रितो सिदेवेश पुराणा पुरुषोत्तम ॥ प्रातस्त्वां  
 पूजयिष्यामि सान्निध्यं कुरु केशव ॥ क्षीरोदधिमहानागशय्यावस्थितविग्रह ॥  
 प्रातस्त्वां पूजयिष्यामि सान्निधौ भवतेनमः ॥ निवेदयाम्यहंतुभ्यं प्रातरेतत्पवित्र-  
 कम् ॥ सर्वथा सर्वदा विष्णो नमस्तेस्तु प्रसीद मे ॥ ततः पुठ्ठांजलिं दत्त्वा राज्ञो जाग-  
 रणं कुर्यादिति अधिवासनम् ॥ प्रातर्नित्यपूजां कृत्वा गंधदूर्वाक्षतयुतं पवित्रमादाय  
 ओं देवदेव नमस्तुभ्यं गृहारोदं पवित्रकम् ॥ पवित्रीकरणार्थाय वर्षपूजाफल-  
 प्रदम् ॥ पवित्रकं कुरुत्वाद्ययन्मया दुष्टकृतं कृतम् ॥ शुद्धो भवाम्यहं देवत्वतः प्रसादा-  
 न्महेश्वर ॥ मूलसंपुटितेनानेन दत्त्वांगदेवताभ्यो नास्नास मर्त्यमहानैवेद्यं दत्त्वानी-  
 राज्यामृणा विद्रुममालाभिरित्यादिभिर्दमनारोपणोक्तमंत्रैः प्रार्थयित्वा शुरवे ब्रा-  
 ह्मणोभ्यश्च दत्त्वा स्वयंधारयेत् (तथा) मासं पक्षमहोरात्रं त्रिरात्रं धारयेत् तथा देवेतं सु-  
 त्रसंदर्भदेशकालविवक्षया (अकरांशोत्तत्रैव) पवित्रारोपणं कालेन करोति कथंच-  
 न तदा युतं जपेत्तमंत्रं स्तोत्रं वापि समाहित इत्युक्तम् । इति पवित्रारोपः । आवराशुक्ल-  
 चतुर्दशी पूर्वयुता ग्राह्या ॥ अववक्तव्यो विशेषश्चैत्रचतुर्दश्यामुक्तः अथोपाकर्मम्  
 ( तत्र बह्वृचानां प्रयोगपारिजातेशौनकः ) अथातः आवरोमासे अवराक्षयुते दिने  
 आवरायां आवरोमासि पंचम्यां हस्तसंयुते ॥ दिवसे विदधीतैतदुपाकर्म यथोदित-  
 म् ॥ अध्यायोपाकृतिं कुर्यात्तत्रोपासनवह्निनेति ॥ अवपौरासास्युपसंहारन्या-  
 येत्यजुर्वेदिपरोतिहेमाद्रिः । अवहस्तयुक्ता पंचम्युक्ता । (कारिकापि) तन्मासे ह-  
 स्तयुक्तायां पंचम्यां वा तदिष्यत इति केवलपंचम्यां हस्तयुतेन्यस्मिन् दिने इति तु हे-  
 माद्रिः । उपासनवह्निनेति तु कर्मद्वयमिदं केचिल्लौकिककारणौ प्रकुर्वत इति । कारि-  
 क्रोक्तलौकिककारिणो नाविकल्पते । तत्राध्याप्यैरन्वारब्ध इति सूत्रात् । सर्वाशय

त्वेतदधिकारिकस्याचार्याग्नौनान्यस्यागनावन्यो जुहुयादिति नियेधात्लौकिक एव । तदभावे तु स्मार्त इति निर्गर्वः (यद्यपि दीपिकायां) वेदोपाकृतिरोयधिप्रजनने पक्षे सितेश्चावरो इति शुक्लपक्षोऽपि सर्वेषां मुख्यकालत्वेनोक्तः । वक्ष्यमाणा गार्ग्यवचनेन छंदोगावप्रतिविहितस्य तस्याविरोधिनः सर्वानुप्रतिप्रवृत्तिश्च । तथापि आवगामास संबंधस्य सूत्रोक्तत्वात् । कृष्णापक्षेऽपि कार्यमिति वृद्धाः । तथाच सूत्रम् । अथातो ध्यायोपाकरणमोषधीनां प्रादुर्भावेऽवरो न आवगास्य पंचम्यां हस्तेन वा । अत्र अवगासो मुख्यो न्येगौगाः (तस्याहर्द्वययोगे हेमाद्रौ व्यासः) धनिष्ठासंयुतं कुर्याच्छ्रावणां कर्म यद्भवेत् ॥ तत्कर्म सकलं ज्ञेयमुपाकरणसंज्ञितम् ॥ अवरो न तु यत्कर्म ह्युत्तरायाह संयुतम् ॥ संवत्सरकृती ध्यायस्तत्क्षणादेव न प्रयतीति (गार्ग्योऽपि) उदयव्यापिनीत्वेव विष्टावर्षे चंद्रिकाद्वयम् ॥ तत्कर्म सकलं ज्ञेयं तस्य पुरायं त्वनंतकम् ॥ इति पूर्वद्युत्तरायाहयोगे परेद्युः । अवगाभावे घटिका द्वयं न्यूनं वा पंचम्यादौ कार्यम् । न तु पूर्वविद्धायां संगवमात्रे । अपवादाभावात् ॥ किंच । परेद्युः संगवास्पर्शे निग्रिहपूर्वाग्रहो किं मानस संगववाक्यं अवगावाक्यं चेति चेत् । तर्हि ब्रीहिवाक्यदश्च शफवाक्याचभायमिश्राणां मध्युपादानं स्यादिति महत्पांडित्यं नियेधानुप्रवेशाच्चैरपेक्ष्य बाधानेति चेत् । इहापि तुल्यम् । एतेन पर्वाण्यौदयिकं व्याख्यातं नियेधानुप्रवेशस्योभयत्र तुल्यत्वात् (अवगायुतदिने संक्रांत्यादौ तु) उपाकर्म न कुर्वीत क्रमात्सामर्ग्यजुर्विदः ॥ ग्रहसंक्रांतियुक्तेषु हस्तश्रवणापर्वस्विति ॥ हेमाद्रौ नियेधात् पंचम्यादयो ग्राह्याः (मदनरत्नेऽपि) यदि स्याच्छ्रावणां पर्वग्रहसंक्रांतौ दूयितम् ॥ स्यादुपाकरां शुक्लपंचम्यां आवगास्य तु (स्मृतिमहारावे) संक्रांतिग्रहाणां वापि यदि पर्वणि जायते ॥ तन्मासे हस्तयुक्तायां पंचम्यां वा तदिष्यते (तत्रापि प्रयोगपारिजाते वृद्धमनुकात्यायनौ) अर्धरात्रादधस्ताच्चेत्संक्रांतिग्रहांतदा ॥ उपाकर्म न कुर्वीत परतश्चेन्न दोषकृदिति (मदनरत्ने गार्ग्योऽपि) यद्यर्धरात्रादवाक्त्तुग्रहः संक्रमणवच्च ॥ नोपाकर्म तदा कुर्याच्छ्रावणायां अवरोऽपि वा ॥ एतेन ग्रहासंक्रांतिकाले अवगासत्त्वेऽपि नियेधो नावर्गिति मुख्यं प्रांकापरास्ता । ग्रहविशिष्टानां हस्तश्रवणापर्वणां प्रत्येकं नियेधेत द्युतोपाकर्मनि



येधेचविशिष्टोद्देशेवाक्यभेदात् । पंचम्यांसंक्रांतौनिधेधाभावापत्तेप्रचतेनार्ध  
 रात्रात्पर्वग्रहसंक्रमसत्त्वेणोपाकर्मनिधेधोनतद्योगेणव ( यत्तु ) प्रतिपन्मिश्रिते  
 नैव नोत्तराष्टादसंयुते ॥ अवगोश्रावणांकुर्युर्ग्रहसंक्रांतिवर्जितइति ॥ प्रतिपन्मिश्रानि  
 येधकंवचनंतन्निर्मलमाश्रयच । वेदोपाकरणेप्राप्तेकुलीरेसंस्थितेरवौ ॥ उपाक  
 र्मनकर्तव्यंकर्तव्यसिंहयुक्तकेइतिवचनदेशांतरविषयस । नर्मदोत्तरभागेतुकर्तव्यं  
 सिंहयुक्तके ॥ कर्कटेसंस्थितेभानावुपाकुर्यात्तुदक्षिणाइति । वृहस्पतिवचना  
 दितिप्रयोगपारिजातेनोक्तस । पराशरमाधवीयेत्येवम । सामगानांसिंहस्थरवावु  
 क्तेस्तद्विषयइदंपुरोडाशचतुर्धाकरणावदुपसंह्रियते । तेषामेवदेशव्यवस्थानतुब  
 ह्वृचादिपरम । तेषांसूत्रेचांद्रश्रावणोक्तेः । सौरेपंचम्ययोगात्तुइतितुवयंपप्रयाम  
 ( यत्तुकालादर्श ) अध्यायानामुपाकर्मश्रावणयांतैत्तिरीयकाः ॥ बह्वृचाःश्रव  
 णोक्त्युःसिंहस्थोर्कोभवेद्यदि ॥ सहस्तशुक्लपंचम्यांवातदग्रहसंक्रमे ॥ असिंहा  
 र्केषौषपद्यांश्रवणोनव्यवस्थयेति ॥ तन्मलालेखनाच्चिंत्यम । श्रावणोसस्यानुद्गमा  
 दौतुबह्वृचपरिशिष्टे । अवृक्ष्यौषधयस्तस्मिन्मासेतुनभवंतिचेत् ॥ तदाभाद्रपदेमा  
 सिश्रवणोनतदिष्यतइति ॥ तत्राप्यमुद्गमेतुकुर्यादेवंतद्धार्यिकमित्याचक्षतइतिसत्रा  
 त् । वर्षतैर्भयंवार्यिकम् सतच्चशुक्रास्तादावपिकार्यम् । उपाकर्मोत्सर्जनंचपवित्र  
 दमनार्पणमितिदमनारोपेलिखितवचनात् । नित्येनैमित्तिकेजप्येहोमेयज्ञक्रिया  
 सुच ॥ उपाकर्मणिचोत्सर्गोग्रहवेधोनविद्यतइति ॥ प्रयोगपारिजातेसंग्रहोक्तेः । प  
 र्वणिग्रहणोसति पूर्वत्रिरात्रादिवेधाभावंवक्तुमिदंतेनपर्वणिग्रहणोपिचतुर्दश्यां  
 श्रवणोकार्यमितिहेमाद्रिः । अस्तेप्रथमारंभस्तुनभवति । गुरुभार्गवयोर्मौढ्येबाल्ये  
 वावाहिकेपिवा ॥ तथाधिसाससंपर्मलमासादियुद्धिजे ॥ प्रथमोपाकृतिर्नस्यात्क  
 तंकर्मविनाशकृदिति ॥ तत्रैवकप्रयपोक्तेः ( अवप्रथमारंभे वृद्धिश्चाङ्कुर्यादि  
 तिनारायणावृत्तौ । सतच्चाधिसासेनकार्यम् ) उपाकर्मतथोत्सर्गःप्रसवाहोत्सवा  
 षकाः । मासवृद्धौपरेकार्याविर्जायित्वातुपैतृकमितिज्योतिःपराशरोक्तेःउत्कर्षः  
 कालवृद्धौस्यादुपाकर्मदिकर्मणि ॥ अभियेकादिवृद्धौनान्तत्कर्षायुगादिद्वि  
 तिकात्यायनोक्तेप्रच ( यत्तु ) उपाकर्मणिचोत्सर्गोह्येतदिष्टंवृथादितइतिचक्ष्य

शृङ्गवचनंतत्सामगविषयम् । तेषांसिंहार्कस्योक्तेः । सतच्चापराक्लेशकार्यम् । उ  
पाकर्मापराक्लेशस्यादुत्सर्गः प्रातरेव त्विति । अध्यायानामुपाकर्मकुर्यात्कालेपरा  
क्लेशके ॥ पूर्वाक्लेशविस्मर्गः स्यादिति वेदविदो विदुरिति च हेमाद्रौ गोभिलोक्तेः ।  
वस्तुतस्तु । भवेदुपाकृतिः पौर्णमास्यां पूर्वाक्लेशवत्त्विति प्रचेतसो वचनात् । पर्व  
वाक्यं सामगविषयम् । तेषामपराक्लेशस्योक्तेरित्यनुपदं वक्ष्यते (दीपिकापि) अ  
स्य तु विधेः पूर्वाक्लेशकालः स्मृत इति । याजुषास्तु पर्वणाकुर्युः । तच्चापस्तंबैरौदयि  
कं ग्राह्यमन्यैस्तु पर्वम् । पर्वण्यौदयिके कुर्युः श्रावणोत्तैत्तिरीयकाः ॥ बह्वृचाः श्रव  
णो कुर्युर्ग्रहसंक्रांतिवर्जित इति ॥ गार्ग्योक्तेः । संप्राप्तवांच्छुतीर्ब्रह्मापर्वण्यौ  
दयिके पुनः ॥ अतो भूतदिने तस्मिन्नोपाकरणमिष्यत इति कालिकापुराणाच्च ॥ अथ  
चेदोयसंयुक्ते पर्वणा स्यादुपाक्रिया ॥ दुःखशोका मयग्रस्ताराद्ये तस्मिन् द्विजातय  
इति ॥ मदनरत्ने हेमाद्रौ गार्ग्येणादोयोक्तेः (अवशिंगाभट्टीये विशेषः) श्रवणाः श्राव  
णां पर्वसंगवस्पृश्यदा भवेत् ॥ तदैवौदयिकं कार्यं नान्यदौदयिकं भवेत् (पराशरमाध  
वीयेऽपि गार्ग्यः) श्रावणापौर्णमासी तु संगवात् परतो यदि ॥ तदैवौदयिकी ग्राह्या ना  
न्यदौदयिकी भवेत् (कर्मकालमाह कालादर्शनिगमः) श्रावणायां प्रौष्ठपद्यां वा प्रति  
पत्तप्रामुहर्तकैः ॥ विद्वास्याच्छंदसांतत्रोपाकर्मात्सर्जनं भवेत् ॥ अत्र पौर्णमासी श्रव  
णाहस्तयोरुपलक्षणात् । तेन तावपि संगवस्पृशौ । उदये संगवस्पृशे श्रुतौ पर्वणा  
चार्कभे ॥ कुर्युर्न भस्युपाकर्ममृग्यजुःसामगाः क्रमादिति पृष्ठवीचन्द्रः । तेनोदय  
संगवोभयव्यापिनी मुख्या । परेद्युः संगवाभावे पर्वेद्युः रुभयाभावे चैकैकसत्त्वे पर्वे  
द्युश्चतुर्दशीवेधनिषेधात् सामान्यवाक्यादौदयिकी कर्मपर्याप्ता ग्राह्या । न पूर्वा ।  
संगवनिमित्तपर्वविद्वापवादाभावात् । नान्यदौदयिकीत्यस्य पर्वविद्वापरत्वाभा  
वात् । तेन भाद्रादौ कालांतरे स्यान्न तु नियिद्धेन हि ब्रीह्यलाभे निधिद्वमायग्रहणां यु  
क्तम् । अतएव परेद्युः संगवव्याप्तौ पर्वविद्धानिषेधः । तदभावे तु नेति सर्वव्यवस्था  
प्ययुक्ता विधिवैयम्यात् । मासनिषेधेऽपि तथापत्तेश्च । पर्वविद्वावचनसत्त्वे हि  
सायुज्यते । एवं श्रवणोपि ज्ञेयम् । तन्न । विष्णवर्षे घटिकाद्वयमिति पूर्वोक्तविरो  
धात् । तेन प्राशस्त्यमात्रपरमिदम् । तत्त्वं तु । सतच्छुद्धाधिकपरम् । तेन यथाग्नि



होत्रादौ सायं प्रातः कालबाधे सामान्ये जीवनावच्छिन्नकाले दर्शादौ वानुष्ठानम् ।  
यथावा व्रीह्यश्च फाद्यभावे यागास्तिष्ठन्निषिद्धवर्जद्रव्येण । तथात्र संगवाभावे  
निषिद्धवर्जकर्मपर्याप्तौ दयिके कालान्तरे वानुष्ठानं न तु कदाचिन्नियिद्धे ॥ अपवादो  
भावे उत्सर्गस्यैव प्राप्तेः । कात्यायनादीनां तु दिनद्वये पूर्वाह्णव्याप्तौ सकदेशस्पर्श  
वा पूर्ववेति हेमाद्रिः (यदापि) श्रावणादुर्गन्धमीदृशं वैवृताशनी ॥ पूर्वविद्धाप्र  
कर्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनमिति ॥ ब्रह्मवैवर्त । तद्ब्रह्मपवित्रश्रवणाकर्मोद्देव  
कर्मविषयमिति हेमाद्रिः अतस्त्ववचनात् कुलधर्मव्रतादावपि पूर्वैव । मदनरत्नेऽप्येव  
म् । मदनपारिजातेऽपि पूर्वविद्धायां श्रावणायां वाजसनेयिनामुपाकर्मैत्युक्तम् (मद  
नरत्ने तु) पर्वण्यौ दयिकैर्कुर्युः श्रावणात्तैत्तिरीयका इति ॥ बह्वृचपरिशिष्टात् ।  
बह्वृचान्प्रतिकर्मविधानार्थं प्रवृत्तेः । तत्र तैत्तिरीयककर्मविध्ययोगात् पूर्वोक्तका  
लिकापुराणादौ सामान्यतः । औदयिकपर्वप्राप्तेस्तन्निषेधेन बह्वृचानां श्रवणा  
विधानात्तैत्तिरीयकपदमनुवादत्वात् । तस्य च प्राप्त्यधीनत्वात् । प्राप्तेऽप्यनु  
र्वदिमात्रपरत्वात् सर्वयजुर्वेद्युपलक्षणार्थं । अयुवत्यानुवादो वानुविधायक्येन  
विशेषविधिनोपसंहारः स्यात् । अनुवादत्वाल्लक्षणानदोषः । अन्यथा त्वौदयि  
कपर्वविशिष्टोपाकर्मोद्देशेन कर्तृविधौ कर्तृविशिष्टत्वा औदयिकपर्वविधौ वाक्य  
भेदापत्तेः । तस्मात्तैत्तिरीयकपदाविवक्षया सर्वयजुर्वेदिनामौदयिकमेव पर्वत्युक्त  
म् । तस्मात् । न तावत्परिशिष्टे बह्वृचान्प्रत्येवविधिः । धनिष्ठाप्रतिपद्युक्तत्वात्  
ऋक्षसमन्वितमित्यादितदुदाहृतेऽप्यपरिशिष्टे वेदांतरधर्मविधीनां दर्शनात् । ना  
प्यनुवादोऽयं कालिकापुराणात् । बह्वृचादीनामपि तदापत्तेः । कुर्युरित्यस्य वि  
धित्वेन तस्यैवार्थवादत्वेनैतत्प्राप्त्यानुवादित्वाच्च । न च तैत्तिरीयकाणां गृह्ये तद्वि  
धिरस्ति । येनानुवादः स्यात् । न च वाक्यभेदः । तैत्तिरीयकमात्रस्य कर्ममात्रस्य वा  
उद्देश्यत्वायोगेन हविरार्तिवदस्य ब्रह्मणामुपनयीतेति वचनात्त्या विशिष्टस्योद्दे  
श्यत्वात् । अन्यथोत्तरार्धे बह्वृचपदस्याप्यविवक्षापत्या श्रवणास्य सर्वसाधार  
णत्वापत्तेः । तस्माद्धेमाद्रिमतमेव युक्तमिति दिक् । इदं चाशिक्षान्तद्वयापयेत् ।  
आवसथ्येऽनौ अनध्यापयतीनाधिकार इति कर्कः श्रावणायामपि ग्रहणादिदुष्टायां

कातीयभिन्नैः प्रौष्ठपद्यांकार्यम् । तैस्तुश्रावणापंचम्याम् । संक्रांतिग्रहणांवापि  
 पौर्णमास्यांयदाभवेत् ॥ उपाकृतिस्तुपंचम्यांकार्यावाजसनेयिभिरिति ॥ स्मृ  
 तिमहारावेवाजसनेयिग्रहणादितिहेमाद्रिः । इदंचसर्वोक्तकालपरत्वात् । बह्व  
 चपरमपिसांख्यायनैस्तुहस्तेकार्यम् । आपस्तंबैरार्थैर्वगौषचप्रौष्ठपद्याम् । यत्तुवौ  
 धायनः । श्रावणायांपौर्णमास्यामायाह्यांवोपाकृत्येत्यचतत् प्रौष्ठपद्यामापदोये  
 आयाह्यांकार्यमित्येवमर्थम् । तच्छाखीयविषयंवा । सामगास्तुश्रावणोहस्तेकु  
 र्युर्बह्वृचाः । श्रावणोचैवहस्तर्क्षसामवेदिनइतिनिर्गायामृतेगोभिलोक्तः । सोऽप्यु  
 त्तरः । धनिष्ठाप्रतिपद्युक्तंत्वाष्ट्रहससमन्वितम् ॥ श्रावणांकर्मकुर्वीरन्ऋग्यजुः  
 सामपाठकाः ॥ इतिमदनरत्नपरिशिष्टोक्तेः(गार्ग्यापि) सिंहेरवौतुपुष्यक्षंपूर्वा  
 स्तेविवरेवहिः ॥ छंदोगामिलिताःकुर्युस्तत्सर्गस्वस्वछंदसात् । शुक्लपक्षेतुहस्तेन  
 उपाकर्मापराल्लिकमिति ॥ अविवरेग्रहादिदोषहीने । विचरेदितिपाठोज्ञान  
 कृतः । पुठ्यर्क्षपूर्वास्तेउत्सर्गः । अपराल्लिकमुपाकर्मेत्यन्वयः । अन्यस्तुविशेषः  
 पूर्वमेवोक्तः (प्रयोगपारिजातेगोभिलः ) उपाकृमात्सर्जनंचवनस्थानामप्रीय्यते  
 धारणाध्ययनागत्वात्तृहिणांब्रह्मचारिणाम् ॥ उत्सर्जनंचवेदानामुपाकरणाक  
 र्मच ॥ अकृत्वावेदजप्येतफलंनाप्नोतिमानवः ॥ सर्वथालोपेतुक्कच्छुपवासश्च ।  
 वेदोदितानांनित्यानामितिसमुनाभोजनोक्तेः । एवमुत्सर्गोपि । अथप्रसंगादवैवो  
 त्सर्जनमुच्यते । तच्चपौषमासेरोहिण्यांतत्तृक्षणाष्टम्यांवाकार्यम् । पौषमासस्यरो  
 हिण्यामष्टक्राद्यामथापिवा ॥ जलांतेछंदसांकुर्यादुत्सर्गविधिवद्वहिरितियाज्ञ  
 वल्क्योक्तेः । श्रावणायांप्रौष्ठपद्यांचोपाकृतौक्रमेणपौषशुक्लप्रतिपदिवा कार्य  
 म् । अर्धपंचमान्मासानधीयीतेतितेवैवोक्तेः । अर्धःपंचमोयेयुसार्धचतुरइत्य  
 र्थः । यत्तुहारीतःअर्धपंचमान्मासानधीत्योर्ध्वमुत्सृजेत् । पंचार्धयष्टान्वेत्तित  
 दायाद्युपाकर्माविषयम् । वौषाद्यनास्तु । पौष्यामाध्यांवाकुर्युः । पौष्यांमा  
 द्यांचोत्सृजेदितितत्सूत्रात् । तैत्तिरीयैस्तुतेतैष्यांकार्यंतेष्यांपौर्णमास्यांरोहि  
 ण्यांवाविरमेदितितत्सूत्रात्ब्रह्मचैस्तुमाध्यांकार्यम् । अध्यायोत्सर्जनंमाध्यांपौ  
 र्णमास्यांविधीयतइतिकारिकोक्तेः । कातीयास्तुभाद्रपदेकुर्युः । उत्सर्गश्चेतिनं



दादितिष्टयांप्रौष्ठपदेवेतिकात्यायनोक्तेः । सामगास्तुसिंहार्कपुष्येकुर्युः । तथाच  
 सिंहैरवौत्वितिगार्ग्यवचनंपूर्वमुक्तम् । सर्वैरुपाकर्मदिनेवाकार्यम् । पुष्येत्सर्जनं  
 कुर्यादुपाकर्मदिनेद्यवेतिहेमाद्रौखादिरगृह्योक्तेः । यदासिंहस्येसूर्ये सतितन्मध्य  
 हस्तनक्षत्रात्प्राक्पुष्यः कर्कटस्थो भवति । तदातस्मिन्पुष्ये उत्सर्गकृत्वा तदुत्तरह  
 स्ते उपाकर्मसामगाः कुर्युः । मासे प्रौष्ठपदे हस्तात्पुष्यः पूर्वा भवेद्यदा ॥ तदा च श्राव  
 णो कुर्यादुत्सर्गं छंदसां द्विज इति तत्रैव परिशिष्टोक्तेः । अत्र द्वावपि सौरौ मासौ ज्ञेयौ  
 तेषां सौरस्यैवोक्तेः (अत्र विशेषमाह काष्ठाजिज्ञितिः) उपाकर्मणि चोत्सर्गं यथा  
 कालं समेत्य च ॥ ऋथी नृदर्ममयान् कृत्वा पूजयेत्तर्पयेत्तत इति ॥ उपाकर्मण्युत्सर्गं च  
 विरात्रम् । पक्षिणी महोरात्रं वानध्याय इति । मितक्षरायामुक्तम् । अत्र नदीनां  
 रजोदोषो नास्ति । उपाकर्मणि चोत्सर्गं रजोदोषो न विद्यते ॥ इति गार्ग्योक्तेः  
 (अत्रैव रक्षाबंधनमुक्तम् हेमाद्रौ भविष्ये) संप्राप्ते श्रावणास्यां ते पौर्णमास्यां दिनोद  
 ये ॥ स्नानं कुर्वीत सति मान्श्रुतिस्मृतिविधानतः ॥ उपाकर्मदिक्प्रोक्तमृषीणां  
 चैव तर्पणम् ॥ शूद्राणां मंत्ररहितं स्नानं दानं च प्रस्यते ॥ उपाकर्मणि कर्तव्यं ऋथी  
 णां चैव पूजनम् । ततो पराह्णसमये रक्षापोटलिकां शुभाम् ॥ कारयेदक्षतैः शस्तैः सि  
 द्धार्थैर्हंसभक्षितैरिति ॥ अत्रोपाकर्मनित्यस्य पूर्णातिथौ वार्यिकस्यानुवादो न  
 तु विधिः । गौरवात् प्रयोगविधिभेदे च क्रमायोगाच्छूद्रादौ तदयोगाच्च । तेन परेद्यु  
 रूपाकरणीपि पूर्वद्युरपराह्णे तत्करणम् सिद्धम् । इदं भद्रायां न कार्यम् । भद्रायां हे  
 नकर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा ॥ श्रावणी नृपतिं हंति ग्रामं दहति फाल्गुनी तिस्रं  
 होक्तेः । तत्सत्त्वे तु रात्रावपि तदंते कुर्यादिति निर्णयामृते । इदं प्रतिपद्युतायां न  
 कार्यम् । नंदाया दर्शने रक्षाबलिदानं दशासु च ॥ भद्रायां गोकुलक्रीडादेशनाशा  
 यजायते ॥ इति मदनरत्ने ब्रह्मवैवर्त (भविष्ये) उपलिप्ते ग्रहमध्ये दत्तचतुष्टके न्य  
 सेत कुंभम् ॥ पीठे तद्योपविशेद्राजामात्यैश्च सह मुहूर्ते ॥ तदनुपरोधानृपते रक्षाबंधनीत  
 मंत्रेणा ॥ इदं रक्षाबंधनं नियतकालत्वात् । भद्रावर्ज्यग्रहणादिनेपि कार्यं होलिकावत् ।  
 ग्रहसंक्रांत्यादौ रक्षानियेधाभावात् सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहुदर्शने ॥ इति तत्का  
 लीनकर्मपरमवतत्वन्यत्र । अन्यथा होलिकायां कागतिः । अतएव । नित्येनैमि

त्तिकेजप्येहोमयज्ञक्रियासुचः॥उपाकर्माणाचोत्सर्गग्रहवेधोनाविद्यतइति । नियत  
कालीनेतदभावइतिदिक् । उपाकर्माणातद्दिनभिन्नपरंतत्रतन्निषेधादित्युक्तंप्राक्  
(संवस्तु)येनबद्धोबलीराजादानवेद्रोमहाबलः ॥ तेनत्वामपिबध्नामिरक्षेमाचल  
माचल ॥ ब्राह्मणोःक्षत्रियैर्वैश्यैःशूद्रैरन्यैश्चमानवैः ॥ कर्तव्योरक्षिताचारोद्वि  
जानुसंपज्यशक्तिरिति(अत्रैवहयग्रीवोत्पत्तिः । तदुक्तंकल्पतरौ) आवरायांश्रव  
रोजातःपूर्वहयशिराहरिः ॥ जगादसामवेदंतुसर्वकल्मषनाशनम् ॥ स्नात्वासं  
पूजयेत्तंतुशंखचक्रगदाधरम् ॥ अत्राश्वलायनेनश्रवणाकर्माक्तम् । आवरायांपौर्णा  
मास्यांश्रवणाकर्मेति । तत्रास्तमययोगिनीग्राह्या । अस्तमितेस्थालीपाकंश्रप  
वित्त्वोत्सवात् । अतस्त्वनिशिष्टेदर्शप्रयोगांतःपातनियमात्तदंगैः प्रसंगासिद्धिस्त  
क्ताद्वादशैः । अन्यथापरेद्युःप्राप्तौकःप्रसंगः । प्रसंगस्य । याज्ञिकास्तुपौर्णिमा  
दर्शशब्दयोः पूर्वात्यक्षणावदहोरात्रवाचित्वात्तत्रैवकर्मकालव्याप्तिर्ग्राह्येतिविह  
तित्वाच्छेषपर्वेच्छंति । आवणादिमासचतुष्टयकृष्णपक्षद्वितीयासु अशून्यश  
यनव्रतम् । तत्रचंद्रोदयव्यापिनी । दिनद्वयेतत्त्वेपरेतिनिर्णयामृते ॥

इतिकमलाकरभट्टकृतेनिर्णयसिन्धौश्रवणमासः ॥

सिंहेपराःश्रीडशघटिकाःपुण्यकालः । अन्यतपूर्ववत्(अवगोप्रसवेद्भुतसागरे  
नारदः) भानौसिंहगतेचैवयस्यगौःसंप्रसयते ॥ सरगांतस्यनिर्दिष्टंयड्भिर्मासैर्नसं  
शयः ॥ तत्रशांतिप्रवक्ष्यामियेनसंपद्यतेशुभम् ॥ प्रसूतांतत्क्षणादेवतांगांविप्रा  
यदापयेत् ॥ ततोहोमंप्रकुर्वीतघृताक्तैराजसर्षपैः । आहुतीनांघृताक्तानामयुतंजुहु  
यात्ततः ॥ व्याहृतिभिप्रचायंहोमः । सोपवासःप्रयत्नेन दद्याद्विप्रायदक्षिणामि  
ति ॥ तथा । सिंहराशौगतेसूर्यगोप्रसृतिर्यदाभवेत् । पौषेचमहिषीसतेदिवैवाश्र  
तरीतथा ॥ तदानिष्टंभवेत्किंचितच्छांत्यैशांतिकंचरेत् ॥ अस्यवार्मेतिसूक्तेनत  
द्विषाणोरितिसंव्रतः ॥ जुहुयाच्चतिलाज्येनशतमष्टोत्तराधिकम् ॥ मृत्युंजयविधा  
नेनजुहुयाच्चतयायुतम् ॥ श्रीसूक्तेनततःस्नायाच्छांतिसूक्तेनवापुनः ॥ मध्यरा  
त्रेनिशीथेवायदागौःक्रंदतेसदा ॥ ग्रामेवास्त्वगृहेवापिशांतिकंपूर्ववद्दिशेत् ॥



एवं श्रावणोवडवाप्रसवोदिनेनिषिद्धः (तदुक्तमथर्ववेदिनांगार्यपरिशिष्टे) माघेबु  
 धेचमहिषीश्रावणोवडवादिवा ॥ सिंहेगावःप्रसूयन्तेस्वामिनीमृत्युदायकाइति ॥  
 अत्रतदुक्तामृताख्याशांतिःकार्या । भाद्रकृष्णातृतीयाकज्जलीसंज्ञासापराग्राह्ये  
 तिदिवोदासीयेउक्तम् (वचनंतुहरितालिकाप्रकरणोवक्ष्यामः) भाद्रकृष्णाचतुर्थी  
 बहुलाख्यामध्यदेशेप्रसिद्धा । सासायाह्नव्यापिनीग्राह्या । दिनद्वयेतत्त्वेपर्वाग्रा  
 ह्या गौर्याश्चतुर्थीवदधेनुपूजादुर्गार्चनंदुर्भरहोलिकेच ॥ वत्सस्यपूजाशिवैरात्रि  
 रेताःपरान्वितांघ्रंतिनृपंसराष्ट्रमिति । दिवोदासीयेवचनात् । अत्रवत्सपूजायाः  
 पृथगुपादानातधेनु पूजाशब्देनबहुलाख्यागृह्यतइति सख्यव्याचख्यौ । मदन  
 रत्नेप्येवम् । अत्रगोपूजायवान्नाशतंचतत्रैवोक्तम् । भाद्रकृष्णाष्टमीहलयष्टीसाम  
 न्मसीयुतेतिदिवोदासः । भाद्रकृष्णासप्तम्यांशीतलाव्रतम् । तत्रपर्वाग्राह्येतिहेमाद्रौ  
 (अथजन्माष्टमी) साचकृष्णादिमासेनभाद्रपदकृष्णाष्टमी । तथाभाद्रपदेमासिकृ  
 ष्णाष्टम्यांकलौयुगो॥ अष्टाविंशतिमेजातःकृष्णोसौदेवकीसुतइतिकल्पतरौब्राह्मो  
 क्तेः । अत्रेदंमाधवमतम् । अष्टमीद्वेधा । जन्माष्टमीजयंतीचेतितत्राद्याकेवलाष्ट  
 मीयेनकुर्वतिजानन्तःकृष्णाजन्माष्टमीव्रतम् ॥ तेभवंतिनराःप्राज्ञव्यालाव्याघ्रा  
 ष्चकाननइतिस्कांदात् । दिवावायदिवारात्रौनास्तिचेद्रोहिणीकला ॥ रात्रियु  
 क्तांप्रकुर्वीतविशेषेणोदसंयुतामितिपुराणांतरात् ॥ श्रावणोबहुलेपसेकृष्णाजन्माष्ट  
 मीव्रतम् ॥ नकरोतिनरोयस्तुभवतिक्लूरराक्षसइति ॥ भविष्योक्तेष्वचकेवलाष्ट  
 म्यामवोपोष्यत्वावगतेःसैवरोहिणीयुक्ताजयंती॥ कृष्णाष्टम्यांभवेद्यत्रकलैकारो  
 हिणीयदि ॥ जयंतीनामसाप्रोक्ताउपोष्यासाप्रयत्नतइति॥ बह्मपुराणात् । अष्ट  
 मीकृष्णापक्षस्यरोहिणीऋक्षसंयुता ॥ भवेत्प्रौष्ठपदेमासिजयंतीनामसामृतमृतेतिवि  
 ष्णुरहस्यादिकवचनाच्च । ज्योतिरादिवत्संज्ञयाकर्मभेदः । रोहिणीयोगप्रचाहो  
 रात्रंमुख्यः । निशीथमात्रेमध्यमः । दिवसादावधमः । अहोरात्रंतयोर्योगोह्यसंप  
 र्णोभवेद्यदि॥ सुहूर्तमप्यहोरात्रेयोगप्रचेत्तामुपोषयेदितिविशिष्टसंहितोक्तेः । अ  
 र्धरात्रेतुयोगीयंतारापत्युदयेसति ॥ नियतात्माशुचिःस्नातःपूजांत्त्रप्रवर्तयेदिति  
 विष्णुधर्मोक्तेः । वासरेवानिशायांवायवस्त्वल्पापिरोहिणी ॥ विशेषेणानभो

मासेसैवोपोष्यामनीयिभिरिति पुराणांतराच्च । विशेषेणोतिश्रुतेर्भाद्रपदेपीद  
म । श्रावणोवानभस्येवेतिवक्ष्यमाणात् । गौडास्तुनिशीथ स्वरोहिणीयो  
गेजयंतीनान्यथेत्याहुः । तन्न । वासरेवानिशायांवेतिविरोधात् । योगविशे  
षाद्व्युत्पातफलमित्यन्ये । तेष्यकरणोदोयश्रुतेरुपेक्षयाः । तत्रजन्माष्टमीव्रतंनि  
त्यंपूर्वाक्तवचनेषु । अकरणोनिंदाश्रुतेः । वर्येवर्येतुयानारीकृष्णाजन्माष्टमीव्रतस  
नकरोतिमहाप्राज्ञव्यालीभवतिकाननइतिस्कांदेवीप्सासुतेश्च । नकरोतिनरो  
यस्त्वितिपूर्वमुक्तेरवस्त्रीलिंगमतंत्रम । मदनरत्नेस्कांदेत्वत्रफलमप्युक्तम् । जन्मा  
ष्टमीव्रतंयेवैप्रकुर्वीतिनरोत्तमाः ॥ कारयंत्यथवालोकावलक्ष्मीस्तेषांसदास्थिरा  
सिध्यंतिसर्वकार्याणिहृतेजन्माष्टमीव्रतमिति ॥ जयंतीव्रतंतुनित्यंकाश्यंच । म  
हाजयार्थकुरुतांजयंतीमुक्तयेनघ ॥ धर्ममर्थचकामंचमोक्षं चमुनिपुंगव ॥ ददाति  
वांछितानर्थानयेचान्येप्यतिदुर्लभाइतिस्कांदादौफलश्रुतेः । शूद्रान्नैतुयत्पापंश  
वहस्तस्यभोजने ॥ तत्पापंलभतेकुंतिजयंतीविमुखोनरः ॥ नकरोतियदाविष्णो  
र्जयंतीसंभवंव्रतम् ॥ यमस्यवशमापन्नःसहतेनारकींव्यथामित्यकरणोनिंदाश्रु  
तेश्च । यदाचपूर्वेद्युःपरेद्युर्वारोहिणीयोगस्तदाजन्माष्टमीजयंत्यासंतर्भूताज्ञेया  
नतुजन्माष्टमीव्रतंपृथक्कार्यम् । विष्णुशृङ्खलवत् (तदुक्तंमाधवेनैव) यस्मिन्वर्येज  
यंत्याख्योयोगोजन्माष्टमीतदा ॥ अंतर्भूताजयंत्यास्यादृक्षयोगप्रशस्तितइति ॥  
मदनरत्ननिर्णयामृतगौडमैथिलमतेष्येवम् (हेमाद्रिस्तु) रोहिणीसंयुक्तोपोष्या  
सर्वाधीयविनाशिनी ॥ अर्धरात्रादध्रचोर्ध्वकलयावायदाभवेत् ॥ जयंतीनामसा  
प्रोक्तासर्वपापप्रणाशिनीत्यग्निपुराणा दधरात्रस्वरोहिणीयोगस्यप्राशस्त्या  
त्समुहूर्तमपिलभ्यतेत्यादीनांचार्धरात्रयोगेप्युपपत्तेर्नजयंतीव्रतंभिन्नम् । तत्त्वंतुहे  
माद्रिसतेपिजयंतीव्रतंभिन्नमेव । उदयेचाष्टमीत्यस्यतेजयंतीपरत्वोक्तेः । किंच ।  
रोहिणयामर्धरात्रेचयदाकृष्णाष्टमीभवेत् ॥ तस्यामभ्यर्चनंशौरेर्हतिपापंविजन्म  
जमिति ॥ विष्णुधर्मोक्तेः । समायोगेतुरोहिण्यांनिशीथेराजसत्तम ॥ समजाय  
तगोविंदोबालरूपीचतुर्भुजः ॥ तस्मात्तंपूजयेत्तत्रयथावित्तानुरूपतइति ॥ बह्नि  
पुराणाच्चार्धरात्रस्यकर्मकालत्वमवसीयते । अतःकर्मणोयस्ययःकालइत्यादिव



चनात्पूर्वत्रैवप्राप्तेः । परदिनेसतीपिरोहिणीयोगस्यनप्रयोजकत्वं । अन्यथा  
बुधवारादेरपितत्त्वापत्तेः । किंच । जयंतीशब्दोरात्रिविशेषवचनः । अर्भिजि  
न्नामनक्षत्रंजयंतीनामशर्वरी ॥ सुहूर्तेविजयोनामयत्रजातोजनार्दनइति । ब्रह्मां  
डपुराणात् । तेनतद्योगिरोहिण्यांगौगात्वान्नव्रतभेदः । यत्तुवासेवानिशायावे  
तितत्कैमुतिकन्यायेननिशीथयोगस्यैव स्तुत्यर्थपूर्वदिनेर्धरात्र योगाभावेप्राश  
स्त्यर्थः । यद्यपि । दिवावायदिवारात्रौनास्तिचंद्रोहिणीकला ॥ रात्रियुक्तांप्र  
कुर्वीतविशेषेण दुसंयुतामित्यनेनरोहिणीयोगाभावेर्धरात्रव्याप्तेर्ग्राह्यतोक्ता । त  
थार्पयस्मिन्नवर्षेजयंतीयोगोनास्तिनव्रतजयंतीव्रतलोपेप्राप्ते । अष्टमीमात्रेपिजयं  
तीव्रतंकार्यं । इत्येवंपरमितितदाशयःअवहिसवायापूर्वविश्वजितायजेत । स  
यामसंभवेकुर्यादिष्टिंश्वैश्वानरींद्विजइतिवद्रोहिणीयोगाभावेविधानात्तत् कार्य  
पत्तिःस्यात् ॥ अतएवोक्तम् । जयंतीनामशर्वरीति । यच्च ( स्कांदे ) उदयेचाष्ट  
मीकिंचिन्नवमीसकलायदि भवतेबुधसंयुक्ताप्राजापत्यसंसंयुता ॥ अपिवर्षश  
तेनापिलभ्यतेवायवानवेति ( यचप्राप्ते ) प्रेतयोनिगतानांतुप्रेतत्वंनाशितंतुतैः । ये  
कृताश्रावणोमासिअष्टमीरोहिणीयुता ॥ किंपुनर्बुधवारेणसौमेनापिविशेषतः  
किंपुनर्नवमीयुक्ताकुलकोट्यास्तुमुक्तिर्देति ॥ तद्दानादिविद्ययम् ॥ उपवासाश्रव  
णादित्यनंतभट्टः । जयंतीपरमितिहेमाद्रिः । उदयेचंद्रोदयइतिकेचित् । तन्न ।  
चंद्रोदयसत्त्वसंदेहान्नवमीसकलेत्ययोगान्मानाभावाच्च । तेनपूर्वेद्युःसप्तमीवेधेप  
रदिनेसूर्योदयेघटिकापिग्राह्या । पूर्वविद्धाष्टमीतिप्राप्नोक्तेः । इतियुक्तं । अतो  
नव्रतभेदोनाप्यंतर्भावइत्यचिवाच । गौडास्तु । नवमीक्षयपरमिदंवचनं । नवमी  
सकलायदीतिविशिष्टयोक्तेः । एतत्पूर्वदिनेजयंत्यभावपरमित्याहुःजयंत्यादिस  
र्वाप्रवादोयमितिचूडामरायादयः । वयंतुसत्यंनव्रतभेदः । लोकास्तुजन्माष्टमीमेवा  
नुतिष्ठंति ॥ नहिश्रावणोवानभस्येवारोहिणीसहिताष्टमीयदाह्मणानरैर्लब्धासा  
जयंतीतिकीर्तिता ॥ श्रावणो न भवेद्योगो न भवेत्तु भवेत्पुनरितिमाधवीये ॥ वशि  
ष्ठसंहितोक्तावपिभाद्रेजयंतीकेनापिक्रियते अतःपूर्वेद्युरेवोपवासः । यद्वाशुणा  
त्फलं ॥ सप्तमेब्रह्मवर्चसकाममुपनयेदितिवदित्यन्ये । तन्न । नित्यत्वानुपपत्तेश्च

गौणमुख्यचांद्राभ्यामेकसवमासइत्यन्ये । तन्न । एकवाक्येऽभ्यनिर्देशेवाशब्दद्व  
यायोगात् ॥ अतो जयंतीव्रतस्यापिनित्यत्वादुपवासद्वयं कार्यमिति ब्रूमः अतस्वहे  
माद्रिसदनरत्नादौ जन्माष्टमीव्रतं जयंतीव्रतं च भिन्नमुक्तमाभिन्नकालत्वात्सर्वथा ता  
वदंतभावोनेतिसिद्धम् ॥ यद्यपि पूर्वापराल्पापि रोहिणीयुतैव कार्येति प्रथानांत  
त्वं प्रतीयते तदपि जयंतीपरमेव । इदं च काम्यमेवेत्यनंतभट्टः तद्व्यासाहेमाद्रौ जेयं नि  
त्यं काम्यमिति तु बहवः ननु यथा विष्णुशृङ्खलयोरेन श्रवणाद्वादशी वामनजयंत्यादि  
सर्वमिद्विषयथा वैकादशी स्वल्पापि परा तथा ॥ कल्पाकाशमुहूर्तापि यदा कृष्णाष्ट  
मीति स्थिः ॥ नवम्यां सैव ग्राह्या स्यात्सप्तमी संयुतानि हि ॥ इत्यादि वचनादर्धोदयादि  
वद्योगाधिक्ये फलाधिकात् परैव जन्माष्टमी युक्तेति चेत् ॥ वार्तामात्यनहितव्रत  
भेदोदयोर्नित्यत्वं द्वयोरकरणोदयो वा युतः । इह त्वेतैस्त्रिभिर्हेतुभिः संज्ञाभेदाद्  
र्मभेदात्कालभेदाच्चोपवासभेदः । स्पष्टम् । एकदैवतत्वाच्छ्रवणाद्वादशी वन्न पार  
णालोपदोषोपि ॥ तेन व्रतद्वयमेव युक्तम् ॥ द्वयोरपिनित्यत्वात् केचित्तु त्रैतायां  
द्वापरे चैव राजनकृतयुगे तथा ॥ रोहिणीसहिता चेयं विद्वद्भिः समुपोधिता ॥ अतः  
परमहोपालसंप्राप्तेतामसे कलौ जन्मनावासुदेवस्य भविता व्रतमुत्तममिति हेमाद्रौ व  
ह्निपुराणात् ॥ कलौ जन्माष्टमी व्रतमेव न जयंतीव्रतमिति याहुः । तन्न । तामसे क  
लावित्युक्तेः परमश्रेयो हेतोरस्य कलौ पापि नांदुर्लभत्वमुच्यते ॥ तेन कलौ ताम  
सानकरिठ्यंति किंतु धन्यासवेत्यर्थः । अन्यथा शूद्राश्च ब्राह्मणाचारामविठ्यंति  
युगे कलौ इत्यादौ विधिकल्पनापत्तेः अत्र निशीथवैधस्य ग्राह्यः । पूर्वोक्तवचने युत  
स्यैव मुख्यकालत्वोक्तेः । अष्टमी शिवरात्रिश्च ह्यर्धरात्रादधो यदि ॥ दृश्यते घटि  
कायासापूर्वविद्धाप्रकीर्तितेति । साधवीयेपुराणांतरात् । अर्धरात्रे तु रोहिण्यां  
यदा कृष्णाष्टमी भवेत् ॥ तस्यामभ्यर्चनं शौरिर्हतिपापं त्रिजन्मजमिति भविष्योक्तेः  
अष्टमी रोहिणीयुक्तानि प्रयर्धे दृश्यते यदि ॥ मुख्यकाल इति ख्यातस्तत्र जातो हरिः  
स्वयमिति ॥ वशिष्ठसंहितोक्तेः । तत्राष्टमी द्वेधारोहिणीरहिता तद्युता च । अ  
द्यापि चतुर्धा । पूर्वद्युरेव निशीथयोगिनी परेद्युरेवोभयेद्युरनुभयेद्युश्चेति । तत्राद्य  
योरसंदेहस्य कर्मकालव्याप्तेः । जन्माष्टमी रोहिणी च शिवरात्रिस्तथैव च ॥ पूर्व



विद्वैवकर्तव्यातिथिभांतेचपारणामितिभूगुक्तेष्वच । अस्मात्केवलरोहिण्युपवा  
सोपि सिद्धः । अंत्ययोः परैव । प्रातःसंकल्पकालव्याप्तेराधिक्यात् । वर्जनीया  
प्रयत्नेनसप्तमीसंयुताष्टमीतिब्रह्मवैवर्तच । एवंशतःसमव्याप्तावपि विषयम  
व्याप्तौत्वाधिक्येननिर्यायः । रोहिणीयुतापिचतुर्धा । पूर्वद्युरेवनिशीथेरोहिणी  
युतापरेद्युरेवोभयेद्युरनुभयेद्युश्च । अत्राप्याद्ययोरसंदेहःकार्याविद्धापिसप्तम्यारो  
हिणीसहिताष्टमीतिपाशोक्तेः । जयंत्यांपूर्वविद्धायामुपवासंसमाचरेदितिगारु  
डाच्च । सप्तमीसहिताष्टम्यानिशीथेरोहिणीयदि ॥ भवितासाष्टमीपुरायायाव  
चंद्रदिवाकराविति ॥ बह्मपुराणाच्चद्वितीयेत्वसंदेहसवत्तृतीयपक्षेपरैव । वर्ज  
नीयाप्रयत्नेनसप्तमीसंयुताष्टमी ॥ सकृत्सापिनकर्तव्यासप्तमीसंयुताष्टमीतिब्रह्म  
वैवर्तति । चतुर्थ्यापिषेवा । पूर्वद्युर्निशीथेष्टमीपरेह्मिरोहिणीपरेह्म्यष्टमीपूर्वह्मि  
रोहिणी ॥ उभयेद्युरभयस्यनिशीथसंबंधोवेति । आद्येपरेद्युर्जयंतीयोगस्यसत्त्वा  
त्परैवेतिमाधवः । तदुक्तंतेनैवयस्मिन्वर्त्यजयंत्याख्ययोगोजन्माष्टमीतदा ॥ अं  
तर्भूताजयंत्यास्यादुक्षयोगप्रशस्तितइति ॥ पूर्वविद्धाष्टमीयातुउदयेनवमीदिनेमु  
हूर्तमपिसंयुक्तासंपूर्णासाष्टमीभवेत् ॥ कलाकाष्टामुहूर्तापिपयदाकृष्णाष्टमीतिथिः  
नवम्यांसैवग्राह्यास्यात्सप्तमीसंयुतानहीतिपाशोक्तेष्वच । हेमाद्रिस्त्वाह । अष्ट  
म्याःप्राधान्यात्तस्याश्चपूर्वद्युःकर्मकालव्यापित्वात्तत्पूर्वैव । पाञ्चतु पूर्वह्मिनिशी  
थेष्टम्याभावेज्ञेयम् । अंतर्भावोक्तिस्तुसर्वदंष्ट्रहरामावसिति । अन्येतुपूर्वविद्धाष्ट  
मीवाक्येनजन्माष्टम्यांसूर्योदयेसप्तमीवेधनिषेधात् । कलाघटीमात्राष्टौदयिकी  
ग्राह्या । कार्याविद्धापिसप्तम्येतिजयंतीपरम् । जयंत्यापूर्वविद्धायामुपवासंसमा  
चरेदित्येकवाक्यत्वात् । तत्रापिद्वयोर्नित्यत्वात्कालभेदाच्चोपवासद्वयंभवत्येव  
यदातुकेवलाष्टमीशुद्धाविका ॥ तदात्यागहेतोःसप्तमीवेधस्याभावात्तत्पूर्वैव । यदि  
वाविद्वन्यनातदापरदिनेग्राह्यतिथेरभावात्तत्पूर्वैव । एवंसर्वागर्थौदयिकेवाक्यानि  
सप्तमीवेधपराणि । जन्माष्टमींपूर्वविद्धांसकृत्सांसकलासपि ॥ विहायनवमींशु  
द्धामुपोष्यब्रतमाचरेदितिव्यासोक्तेर्विद्धायाःक्षयेशुद्धनवम्यामुपवासः । दशमीवे  
धेहादप्युपवासवदित्याहुः । तेनिमूलत्वादुपेक्ष्याः । मुहूर्तमपिसंयुतेतिरोहिणी

योगेत्याड्यत्वोक्तेः । तिष्ठत्यतपारणावाक्यानां निर्विषयत्वापत्तेः । नचज  
यंतीपराणां शुद्धाधिकापराणावातानि । भूवाद्यैः पूर्वविद्धाद्यस्यामपि तिष्ठ्यं  
तेपारणां उक्तेः । तेन कलाकाष्ठेति वाक्यांतरवशाज्जयंतीपरमेतत् । तत्त्वंतु  
स्य्याः कर्मकालव्याप्तेः । दिवावायदिवारात्रौ नास्ति चेद्रोहिणीकला ॥ रात्रि  
युक्तां प्रकुर्यात् विरोधे गौडसंयुतामिति ॥ पूर्वाक्तवाक्यैः रोहिणीयोगाभावे ग्राह्य  
त्वोक्तेर्वचनात् कर्मकालव्यापिनीत्युक्ता पूर्वापरावाल्पापि रोहिणीयुता ग्रा  
ह्या । माधवमदनरत्ननिर्णयामृतानंतभट्टगौडमैथिलग्रंथदिष्टव्येवमिति । यु  
क्तंतु उपवासद्वयं कार्यम् । द्वयोर्नित्यत्वादिति तु वयम् । अंत्ययोः परैव । सप्तमीसं  
युताद्युपवासं भूत्वा ऋक्षं द्विजोत्तम ॥ प्राजापत्यं द्वितीये हि मुहूर्तार्द्धं भवेद्यदि ॥ तदा  
सुग्रामिकं पुराणं प्रोक्तं व्यासदिभिः पुरेति स्कांदात् । मुहूर्तं नापि संयुक्तासंपराणि  
सप्तमी भवेत् ॥ किंपुनर्नवमीयुक्ता कुलकोट्यास्तु मुक्तिर्देति पात्राच्चेति दिक् ॥ नि  
वादिष्यो वासकास्तु जन्माद्युमीराममवमी । शिवरात्र्यादौ पूर्वाह्नकर्मकालीनां  
तिथिं यत्कामिदिमुहूर्तपरैव तिथिर्ग्राह्या । उदयव्यापिनी ग्राह्या कुलेति थिरूपो  
यगो निवाको भगवान्येवावादिता र्थफलप्रदर्शित । हेमाद्रौ मात्स्योक्तमुक्तिसप्तमी  
व्रते भाविष्योक्तेरित्याहुः । तच्च ॥ यदि द्वितीये दिवसे तु ऋक्षं तिष्ठ्यो युतिः स्यात्तन  
तदोपवासः । पूर्वे प्रकुर्याद् दिवसे द्वितीये दिने शभक्तो य तदा व्रताद्यमिति मात्स्यवा  
क्येन तत्रैव उपसंहारात् सर्वार्थत्वेन मानाभावात् । ऋक्षं तिष्ठ्योर्हस्तसप्तम्योः । अ  
न्यथा ऋषिपंचम्यादौ तदापत्तिः । शिष्टाचारान्नेति चेत् । न तस्य न्यायवचो विरो  
धेन हेयत्वात् (इदानीं क्वापि निवाकोपासनाभावाच्चेति संक्षेपः पारणांतु) तिथिरस्य  
युतां ह्यंतिनक्षत्रं च चतुर्गणां । तस्मात्प्रयत्नतः कुर्यात् तिथिभांति च पारणामिति ब्रह्मवै  
वर्तते । तिष्ठ्यं यो र्यदा के दो नक्षत्रांतमयापि वा ॥ अर्धरात्रे वा कुर्यात् पारणां त्व  
परेहनीति ॥ हेमाद्रौ वचनाच्चाधरात्रेभ्यां तेन्यतरांतिवेति मुख्यः पक्षः । सर्वेष्टवे  
वोपवासेषु दिवा पारणां तिष्ठ्यं तद्विब्रह्म वैवर्तत्वन्यविप्रद्यदिने मुख्यकाललाभेन्य  
तरांतिवाज्ञेयम् (गौडास्तु) न रात्रौ पारणां कुर्याद्द्वितीये रोहिणीव्रतात् ॥ तत्र निश्चयपि  
तत्कुर्याद्विजयित्वामहानि शामिति ॥ ब्रह्मांडपुराणां रात्रौ सार्धं प्रहरमध्ये कार्यं



मित्याहुः । महानिशातुविज्ञेयामध्यमंमध्ययामयोः (तथा) मध्यमप्रहरेशवेवि  
 ज्ञेयातुमहानिशोतिस्मृत्यंतरात् । कल्पतरौमदनरत्नेचैवम् (कामधेनौगर्गस्तु)  
 महानिशातुविज्ञेया मध्यमंप्रहरद्वयमित्याह (वृद्धशातातपस्तु) महानिशादे  
 घटिकेरात्रौमध्यमयामयोरित्याह । वेदपाठपरमेतदित्यन्ये । महानिशायास  
 न्यतरातिहृतीयदिनेपारणाम् । अपरेहनीतिपारणोत्तरदिनपरत्वात् । उभयांता  
 पेक्षणादित्याहुः । तत्त्वंतुमहानिशातौर्वागन्यतरांतलाभेमहानिशानियेधः । म  
 हानिशायामेवलाभेतत्रैवपारणामिति (दिवोदासस्तु) रजनीप्रहरंयावत्प्रवृत्ति  
 कर्मणोमता ॥ पारणांतावदेवेष्टंप्रसादान्नभवेद्यदीति ॥ स्कांदादूर्ध्वं नियेधमाह  
 तन्निर्मूलम् (अशक्तौतुर्वाहपुराणो) भांतिकुर्यात्तिथेर्वापि शस्तंभारत पारणामि  
 ति (गारुडेविष्णुधर्मच) जयंत्यांपूर्वविद्यायामुपवासंसमाचरेत् ॥ तिथ्यंतेवोत्सु  
 वंतेवा व्रतीकुर्वीतपारणाम् (अशक्तौतु) तिथ्यंतेतिथिभांतेवा पारणायत्रचोदि  
 तं ॥ ग्रामद्वयोर्ध्वगामिन्यांप्रातरेवहिपारणा ॥ सम्बोत्सवांतइति । कालादर्शो  
 क्तेश्चेतिसंक्षेपः (अष्टम्यांविशेषोहेमाद्रौभविष्ये) ततोष्टम्यांतिलैःस्नातो नद्या  
 दौबिमलेजले ॥ सुदेशेशोभनंकुर्याद्देवक्याःसूतिकागृहम् ॥ तन्मध्येप्रतिमास्था  
 प्यासाचाप्यष्टविधास्मृता ॥ कांचनीराजतीताग्रीपैतलीमृन्मयीतथा ॥ वा  
 र्णीमृगामयीचैववर्णाकैर्लिखिताथवा ॥ सर्वलक्षणासंपूर्णापर्यंकेचपदावृत्ते ॥  
 देवकीतत्रचैकस्मिन्प्रदेशेसूतिकागृहे ॥ प्रस्तुतांचप्रसूतांचस्थापयेन्मंचकोपरि  
 मांतत्रैवालकंसुप्तंपर्यंकेस्तनपायिनम् ॥ यशोदांतत्रचैकस्मिन्प्रदेशेसूतिकागृहे ॥  
 तद्वच्चकल्पयेत्पार्थप्रसूतवरकन्यकाम् ॥ कश्यपोवसुदेवोयमदितिप्रचैवदेवकी ॥  
 शेषोवैबलभद्रोयंयशोदाक्षितिर्नृभवत् ॥ नंदःप्रजापतिर्दक्षोगर्गश्चापिचतुर्मुखः  
 गौर्धनःकुंजरश्चैवदानवाःशस्त्रपाणयः ॥ लेखनीयाश्चतत्रैवकार्त्तिकोयमुवाहदे  
 इत्येवमादित्यत्किंचिच्छक्यतेचरितंमम ॥ लेखयित्वाप्रयत्नेनपूजयेद्भक्तितत्प  
 रः ॥ मंत्रेणानेनकौंतेयदेवकींपूजयेच्चरः ॥ गायत्रिःकिञ्चराद्यैःसततपरिवृतावेणा  
 वीणापनिनादैःशृङ्गारादर्शकुंभप्रवरक्तकरैःकिङ्करैःसेव्यमाना ॥ पर्यंकेस्वास्तुते  
 यामुदिततरमुखोपुत्रिणीसम्यगास्तेसादेवीदेवमाताजयतिस्तुतनयादेवकीकांतक

प्रा ॥ पादौसंवाहयंतीश्रीर्देवक्याप्रचरणांतिके ॥ नियगरापांकजेपज्यानमोदेव्यै  
 श्रियेइतिअर्धरात्रेवसोर्धारांपातयेदगुडसर्पिंषा ॥ नाडीवर्धप्रनंयसीनामादेःकर  
 रांसम ॥ ततोसंत्रेगावैदद्याचंद्रायाध्यसमाहितः ॥ शंखेतोयंसमादायसपुष्पकुश  
 चंदनं ॥ जानुभ्यांधरणांगत्वाचंद्रायाध्यनिवेदयेत् । क्षीरोदारावसंभूतअविगोत्रस  
 मुद्रव ॥ गृहाराध्यशशांकेदंरोहिण्यासहितोमस ॥ ज्योत्स्नापतेनमस्तुभ्यंनम  
 स्तेज्योतिषांपते ॥ नमस्तेरोहिणीकांतअध्यनःप्रतिगृह्यताम् ॥ यथापुत्रंहरिं  
 लब्ध्वाप्राप्तातेनिर्वृतिःपरा । तामेवनिर्वृतिंदेहिसुपुत्रंदर्शयस्वमे ॥ इतिदेवक्य  
 र्घः ॥ ततःपुठपांजलिंदत्वायामेयामेप्रपूजयेत् ॥ प्रभातेब्राह्मणान्प्रशक्त्याभोजये  
 द्भक्तिमान्नरः ॥ ओंनमोवासुदेवायगोब्राह्मणहितायच ॥ शांतिस्तुशिवंचास्तु  
 इत्युक्तामांविमर्जयेत् ॥ इदंप्रतिमासकृष्णाश्वस्यामप्युक्तंमदनरत्नेविहिपुराणो  
 प्रतिमासंचतेपजामष्ट्यांयःकरिष्यति ॥ ममचैवाखिलानक्रामान्नसंप्राप्तस्यत्य  
 संशयस ( तथा ) अनेनविधिनायस्तुप्रतिमासंनरेश्वर ॥ करोतिवत्सरंपर्गाया  
 वदागमनंहरेः ॥ दद्याच्छ्रद्धयांसुसंपूर्णांगोभीरत्नैरलंकृतम् ॥ इतिजन्माष्टमी  
 व्रतम् ( भाद्रमावास्यायांकुशग्रहणमुक्तंहेमाद्रौहारीतेन ) मासेनभस्यमावास्या  
 तस्यांदर्भोच्योमतः ॥ अथातयासास्तेदर्भविनियोज्याःपुनःपुनः ॥ नभःश्रावणाः  
 तेनदर्शांतमासेजन्माश्वस्यानंतरंदर्शोल्भ्यते ( मदनरत्नेन ) मासेनभस्येमावास्या  
 तस्यांदर्भोच्योमतइतिमरोचिवाक्यमुक्तम् । नभस्योभाद्रपदः । तेनमहालयांतर्गतद  
 र्शोल्भ्यते । अत्रगौरामुख्यचंद्राभ्यामेकमवदर्शइत्यन्ये । भाद्रपदशुक्लतृतीयायां  
 हरितालिकाव्रतंतत्रपराश्रद्ध्या ॥ मुहूर्तमात्रसत्त्वेपिदिनेगौरीव्रतंपरे ॥ शुद्धाधिका  
 यामप्येवंगणयोगप्रशंसनादिति साधवोक्तेः ( चतुर्थीयुक्तायांफलाधिक्यमा  
 धवीयेआपस्तंबः ) चतुर्थीसंहितायातुसातृतीयाफलप्रदा ॥ अवैधव्यकरास्त्रो  
 गांपुत्रपौत्रप्रवर्धिनी ( द्वितीयायोगेप्रत्यवायसाहसग्व ) द्वितीयाशेषसंयुक्तां  
 याकरोतिविमोहिता ॥ सार्वैधव्यसवासोतिप्रवर्द्धितमनीयिगाइति ॥ आद्यामधु  
 श्रावणाकाकज्जलीहरितालिका ॥ चतुर्थीमिश्रितास्त्रीभिर्दिवानक्तेविधीयते ॥  
 तृतीयानभसःशुक्लामधुश्रावणाकाकज्जली ॥ भाद्रस्यकज्जलीकृष्णाशुक्लाचहरि



तासिकेति ॥ दिवोदासीदाहृतवचनाच्च ॥ भाद्रशुक्लचतुर्थीविरदचतुर्थी ।  
 सामध्याह्नव्यापिनीग्राह्या । प्रातःशुक्लतिलैःस्नात्वासध्याह्नेपूजयेन्नृपेति ॥ हे  
 माद्रौभविये । तथैवमजोक्तोः । मदनरत्नेष्वेवम । परदिनेष्वंशेनसाकल्येना  
 वामध्याह्नव्याप्तमभावेसर्वपक्षेषुपूर्वाग्राह्या । तथाचवृहस्पतिः । चतुर्थीगणाना  
 यस्यमातृविद्याप्रशस्यते ॥ मध्याह्नव्यापिनीचेत्स्यात्परतश्चेत्तघरेहनीति ॥ मा  
 तृविद्याप्रशस्तास्याच्चतुर्थीगणानायके ॥ मध्याह्नेपरतश्चेत्स्यान्नागविद्याप्रश  
 स्यतइतिमाधवीयेस्मृत्यन्तराच्च । तत्रगणेशरूपंस्कांदे । शकदंतशूर्पकारानागय  
 जोपवीतितम ॥ पाशांकुशाभ्यं देवं द्वायेत्सिद्धिविनायकमिति ॥ इयंरविभौम  
 थोरतिप्रशस्तम् । भाद्रशुक्लचतुर्थीयाभौमेनार्कवायुता ॥ महतीसात्रविघ्नेशम  
 र्चित्वेष्टुंलभेत्पर इति ॥ निर्यायामृतेवासोक्तेः । अत्रचंद्रदर्शनंनियिद्धम् । तथा  
 चापसर्वेनार्कहेया ॥ सिंहादित्ये शुक्लपक्षेचतुर्थीचंद्रदर्शनम् ॥ मिथ्याभिदू  
 यसांकुर्यात्स्मात्प्रपञ्चेत्तंशदेति ॥ चतुर्थ्यानपश्येदित्यन्वयः ॥ प्रधानक्रिया  
 न्यलाभात् । तेनचतुर्थ्यामुदितस्यपंचम्यांननिषेधः । गौडाअप्येवमाहुःपराश  
 रोपि ॥ कन्यादित्ये चतुर्थ्यालुशुक्लेचंद्रस्यदर्शनम् ॥ मिथ्याभिदूयसांकुर्यात्त  
 स्मात्प्रपञ्चेत्तंशदा ॥ तद्दोषशान्तयेसिंहःप्रसेनमितिपठेदिति (प्रलोकस्तुविष्णु  
 पुराणे) सिंहःप्रसेनमवधीत्सिंहोजास्त्रवताहतः ॥ सुकुमारकमारोदीस्तबह्वेयः  
 स्यमंतकइतिभाद्रपदशुक्लपंचमीश्रुतिपंचमी । सामध्याह्नव्यापिनीग्राह्या । पू  
 जाव्रतेषुसर्वेषुसध्याह्नव्यापिनीतिथिरिति ॥ माधवीयेहारीतोक्तेः । दिनद्वयेत  
 त्वेहेमाद्रिसतेपरा । सितापरयुतास्यात्तपंचमीतिदीपिकोक्तेःमाधवमतेपूर्वा ।  
 सर्वत्रपंचमीपूर्वेत्युक्तेः । युग्मवाक्यार्चिर्ग्राह्यस्तुयुक्तः । कथयिपंचमीग्रहोयुर्तेवेति  
 दिवोदासः । अत्रचतुर्थीतिप्रतिमासुपूजयित्वाऽकथमभिजग्राकेनवर्तनम् एवंसप्त  
 वयसिगच्छेत्तसप्तकुम्भेप्रार्थयामुसंप्रदाया ॥ परेद्वित्तन्मंघ्रिणाद्योत्तरसतंतिलान  
 हुत्वासप्तब्रह्मसालभोजयेदितिचरित्यामृते । भाद्रशुक्लयष्टीसूर्यदृष्टीसप्तमीयुतैवे  
 त्तिदिवोदासः । शुक्लभाद्रपदेयष्ट्यांज्ञानंसास्कारपूजनम् ॥ प्राशचंपंचगव्यस्यअ  
 न्यमेवफलाधिकमिति वचनात् (कल्पतरौभविये) येयंभाद्रपदेमासिग्रहोस्याद्भरत



यम् ॥ योस्यांप्रयतिगांगेयंदक्षिणापथवासिनम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापैस्तुमुच्यते  
 नात्रसंशयः ॥ गांगेयः । स्वामिकार्तिकेयः । भाद्रपदशुक्लसप्तम्यासमुक्ताभरणा  
 ब्रतम् ॥ तत्रसप्तमीपूर्वायुताग्राह्या । यरामुन्योरितियुग्मवाक्यात् । भाद्रपदशुक्ला  
 षष्ठीदूर्वाष्टमीसापूर्वाग्राह्याश्रावणादिर्गनवमीदूर्वाचैवहुताशनी ॥ पूर्वविद्धातुक  
 र्तव्याशिवरात्रि बलेर्दिनमितिहेमाद्रौबृहद्यमोक्तेः । शुक्लाष्टमीतिथिर्यतुमासि  
 भाद्रपदेभवेत् ॥ दूर्वाष्टमीतुसाज्ञेयानोत्तरासाविधीयतइति ॥ पुराणासमुच्चया  
 च्च ( यत्तु ) मुहूर्तैरौहोषम्यांपूर्वावायद्विवापरा ॥ दूर्वाष्टमीतुसाकार्याज्येष्ठा  
 मूलंचवर्जयेदिति ॥ तत्रैवपराकार्येत्युक्तम् । तत्पूर्वदिनेज्येष्ठादियोगेद्रष्टव्यम् ।  
 दूर्वाष्टमीसदात्याज्याज्येष्ठामूलसंसंयुता ॥ ( तथा ) सौंदर्षपूजितादूर्वाहंत्यपत्यानि  
 नान्यथा ॥ भर्तुरायुर्हरामूलैतस्मात्तांपरिवर्जयेदिति ॥ तत्रैवतन्नियेधात् । इदम्  
 गस्त्योदयेकन्यार्कचनकार्यम् । शुक्लेभाद्रपदेमासिदूर्वासंज्ञातथाष्टमी ॥ सिंहा  
 र्कसंवक्रतंद्यानकन्यार्कैकदाचन ॥ सिंहस्थेसोत्तमामूर्येनुदितेमुनिसत्तमइति ॥  
 मदनरत्नेस्कांदीक्तेः । अगस्त्येउदितेतातपूजयेदमृतोद्वेगम् ॥ वैधव्यपुत्रशोकंच  
 दशवर्षाणिपंचचेति ॥ तत्रैवदोयोक्तेप्रचाभाद्रपदशुक्लाष्टम्यामगस्त्योदयेभाविनि  
 सतिपूर्वकृष्णाष्टम्यामेवकुर्यादितिहेमाद्रिः । दीपिकाप्येवम् । इदंचवत्स्त्रीणांनि  
 त्यम् । यानपूजयतेदूर्वासांहादिहयथाविधि ॥ त्रीणांजन्मानिवैधव्यंलभतेनावसं  
 शयः ॥ तस्मात्संपूजनीयासांप्रतिवर्षवधूजनैरिति ॥ पुराणासमुच्चयात् । यदा  
 ज्येष्ठादिकंविनाष्टमीनलभ्यतेतदातत्रैवोक्तमकर्तव्याचैकभक्तेनज्येष्ठामलंयदाम  
 वेत् ॥ दूर्वामभ्यर्चयेद्भक्त्यानवंध्यादिवसंतयेदिति । अत्रविधिर्मदनरत्नेभविष्ये  
 शुचौदेशेप्रजातायांदूर्वायांब्राह्मणोत्तम ॥ स्थाप्यलिंगंततोगांधैःपुठपैर्धूपैःसमर्च  
 येत् ॥ दध्यक्षतैर्द्विजश्रेष्ठैश्चदद्यात्त्रिलोचने ॥ दूर्वाशमीभ्यांविधिवत्पूजयेच्छुद्ध  
 यान्वितः ॥ ( संवस्तु ) त्वंदूर्वमृतजन्मासिवंदितासिसुरासुरैः ॥ सौभाग्यंसंततिर्देहि  
 सर्वकार्यकरीभव ॥ यथाशास्त्राप्रशाखाभिर्विस्तृतासिमहीतले ॥ तथाममापिसं  
 तानंदेहित्वमजरामरमिति ॥ अत्रानरिनेपक्वमक्षयेत् । अनरिनेपक्वमप्रनीयादन्नं  
 दधिफलंतथा ॥ अक्षारलवणांब्रह्मन्नप्रनीयान्मधुनान्वितमितितत्रैवभविष्योक्तेः



(भाद्रपदेधिमासेसतिनिर्यायदीपेस्कांदे) अधिमासेतुसंप्राप्तेनभस्यउदयेमुनेः॥ अर्वा  
 रदुर्वावितंकार्यपरतो नैवकुत्रचित् । अत्रैवज्येष्ठापूजोक्तामाधवीयेस्कांदे॥ मासिभाद्र  
 पदेशुक्तपक्षेज्येष्ठसंस्युता ॥ रात्रिर्यास्मिन्दिनेकुर्याज्ज्येष्ठायाःपरिपूजनमिति॥  
 इयंज्येष्ठायोगवशेनपूर्वापरवाग्राह्या । दिनद्वययोगेपरा । पूर्वोत्तरात्रियोगोपर्व  
 व । नक्षत्रासहकार्यास्यादृष्टमीतात्रसंशयः ॥ मासिभाद्रपदेशुक्तपक्षेज्येष्ठसंस्यु  
 ता ॥ रात्रिर्यास्मिन्दिनेकुर्याज्ज्येष्ठायाःपरिपूजनमितितत्रैवोक्तेः॥ अस्यापवादः ।  
 यस्मिन्दिनेभवेज्ज्येष्ठामध्याह्नादूर्ध्वमप्यग्रा ॥ तस्मिन्दिनेद्वयंयज्ञाचन्यनाचेत्प  
 र्ववास्येदिति ॥ उदकेवलतितथौनसवेचोक्तम् । तत्राद्यंकेवलतितथौकार्यम् ॥ अंत्यं  
 केवलसौ । (तदुक्तंसाहचर्ये) प्रत्यादिदकंतिथ्युक्तंयज्ज्येष्ठादेवतंत्रतम् ॥ अतिज्येष्ठा  
 वतंत्रावाविहितंकेवलीदु नि ॥ तिथ्यावेवाचरेद्वाद्याद्वितीयंकेवलसतइति ॥ अतस  
 वमर्षेनास्तेभिविषयेनसंप्राप्तेउक्ता ॥ मासिभाद्रपदेपक्षे शुक्लपक्षेज्येष्ठयाभावेत् । रा  
 त्रौचौपारणांकार्याभिर्भूमेष्वप्युज्येदिति ॥ दासिगात्यास्त्वक्षपवकुर्वति(हेमाद्रौ  
 स्कांदेपि) मासिभाद्रपदेशुक्तपक्षेज्येष्ठसंस्युते ॥ यस्मिन्कास्मिन्दिनेकुर्याज्ज्येष्ठा  
 याःपरिपूजनमिति(तथा)मैत्रेयावाहयेदेवींज्येष्ठायांतुप्रपूजयेत् ॥ सूतेविसर्जयेद्दे  
 वींतिदिनंवत्सुत्तममिति(संवस्तु) सद्योहिस्त्रंसहभागेतुरासुरजसस्रुते ॥ ज्येष्ठे  
 त्वंसर्वदेवानांमहत्समीपगताभवेत्यावाह्यः । तस्मिन्दिनेसर्गाभिर्भुतिसंपूज्य ॥ ज्येष्ठायै  
 तेनमस्तुभ्यंज्येष्ठायैतेनमोवमः ॥ शत्रयैतेनमस्तुभ्यं प्राणंक्रुतेनमोवमः ॥ इत्येष्टे  
 स्तेतपोनिष्ठेब्रह्मिष्ठेसत्यवादिनि ॥ सद्योहिस्त्रंसहभागेभ्यर्च्यपुस्तसरस्त्रितद्वत्यर्चः  
 भाद्रपदशुक्लद्वादश्यांश्रवणायोगरहितायांपारणांकुर्यात् । आभाक्रासितपक्षेठिव  
 तिदिबोदासोदात्तवचनात् । उपोष्यैकादशीमोहात्पारणांश्रवणोद्यदि ॥ करो  
 तिहंतितत्पुरायंद्वादशंद्वादशीभवमिति॥ तत्रैवस्कांदाच्चअस्यतत्रैवप्रतिप्रसवः(मा  
 र्कंडेयः)विशेषेणसहीषालश्रवणांवर्धतेयदि ॥ तिथिसयेनभोक्तव्यंद्वादशींलंघये  
 चहीति(केचित्तु) यदात्वपरिहार्योयोगस्तदाश्रवणानक्षत्रेधाविभक्तेमध्यमाविं  
 शतिघटिकायोगंत्यक्तापारणांकार्यम् । (तदुक्तंविष्णुधर्म) शुतेप्रचमध्यपरिवर्तमे  
 ति॥ सुतिप्रबोधपरिवर्तनमेववर्ज्यमितिकेचिच्चतुर्धाविभज्यमध्यपादद्वयंवर्ज्यमा







द्विजेकालयोगस्तत्परमद्विजहयेउदययोगोपूर्वव (बहुकर्मकालव्याप्तेरित्युक्तं म  
 दनरत्ने) यदात्वेकादश्येवश्रवणायुतानद्वादशीतदापिपूर्ववायदानप्राप्यतेऋसंज्ञा  
 दश्यावैशावक्रचित्तएकादशीतदोपोष्यापापघ्नी श्रवणान्वितेतिमदनरत्नेनारदी  
 योक्तेः यदापरैर्वर्षयुक्ततदापरा। तत्रशक्तेनोपवासद्वयंकार्यम् । एकादशीमुपोष्ये  
 वद्वादशींसमुपोषयेत् । नचात्रविधिलोपः स्यादुभयोर्देवतंहरिरितिभविष्योक्तेः  
 (यत्तुविष्णुधर्म) पारणांतंत्रतंज्ञेयंत्रतांतेविप्रभोजनम् । असमाप्तेव्रतेपूर्वनैवकुर्याद्व्र  
 तांतरमितितदेतद्विज्ञपरम(श्रवणौडाः) शृणुराजनपरंकास्यंश्रवणाद्वादशीव्रतमि  
 तिस्थूलशीर्यवचनात्कास्यमेवेदम् । तेनाशक्तस्यनित्यैकादशीव्रतमेवेतिमन्यन्ते ।  
 द्वादश्यामुपवासेनशुद्धात्मानृपसर्वशः चक्रवर्तित्वमतुलंसंप्राप्नोत्युत्तमाश्रयमिति  
 मौडनिबन्धेमाकंडेयोक्तेष्व (दाक्षिणात्यास्तु) एकादश्यांनरोभुक्त्वादश्यांसमु  
 पोषणात् । व्रतद्वयकृतंपुरायंसर्वंप्राप्नोत्यसंशयमितिबराहवामनपुराणोक्तेः ॥ अ  
 वणाद्वादशीव्रतमेवेत्याहुः । भुक्त्वेतिफलाद्याहारपरम। नत्वन्नपरम । अन्नाश्रिता  
 निप्रापनीतिनिषेधात् । उपवासद्वयंकर्तुंनशक्नोतिनरोयदि ॥ प्रथमेह्निफला  
 हारीनिराहारोपरेहनीति ॥ दिवोदासीयेभविष्योक्तेष्व (अशक्तौतुगृहीतैका  
 दशीव्रतोयस्तेप्रत्युक्तंमात्स्ये) द्वादश्यांशुक्लपक्षेतुनंसंवश्रवणायदि ॥ उपोष्ये  
 कादशींतत्रद्वादश्यांपूजयेद्धरिमिति ॥ पूजयेन्नतपवसेदित्यर्थः । अगृहीतैकादशी  
 व्रतप्रचेदेकादश्यांभुक्त्वादश्यामुपवसेत् । एवमेकादशींभुक्त्वादश्यांसमुपोषयेत्  
 पूर्ववासरजंपुरायंसर्वंप्राप्नोत्यसंशयमिति ॥ नारदीयोक्तेः । पारणांतभ्यांतेन्य  
 तैरांतेवाकुर्यात् । तिथिनक्षत्रनियमेतिथिभांतेचपारणामिति ॥ स्कांदात् । ति  
 थिनक्षत्रसंयोगेउपवासोयदाभवेत् ॥ पारणांतुनकर्तव्यंयावन्नैकस्यसंक्षयइति ॥  
 नारदीयादितिहेमाद्रिः । यद्यप्यवनक्षत्रनात्रांतेपिपारणांप्रतिभातितथापितिथि  
 सात्रांतेज्ञेयम् । नत्वसांते । तिथिसध्येपि । याःकाश्चित्तिथयःप्रोक्ताःपुरायान  
 सत्रयोगतः ॥ ऋसांतेपारणांकुर्याद्विनाश्रवणारोहिणीमिति (विष्णुधर्म) श्रव  
 णांतमात्रेपारणानियेधात् (रोहिण्यांतु) भांतेकुर्यात्तिथेर्वापिइतिवह्निपुराणा  
 त । तदंतेप्यस्तुनत्ववैवमस्तीतिनऋसांतौअनुकल्पइतिमदनरत्ने । असंभवेतुति

ष्टयंतेतिथिभांतेवापारणांयत्रचोदितम् । यामत्रयोर्ध्वगामिन्यांप्रातरैर्वाहिपारणो  
 तिज्ञेयम् ( यत्तुमदनरत्ने ) द्वादशीवृद्धौश्रवणावृद्धौवाश्रवणांतसवपारणांकुर्यात्  
 पारणांतिथिवृद्धौतुद्वादश्यामुदुसंक्षयात् ॥ वृद्धौकुर्यात्त्रयोदश्यांतत्रदोयो न विद्य  
 तइति ॥ बह्निपुराणादित्युक्तम् । तत्प्रकरणादेतस्यामेवश्रवणायुक्तैकादश्यांवि  
 हितंविजयैकादशीव्रतपरंतुश्रवणाद्वादशीपरमितिमदनरत्ने । गौडास्तुश्रवणा  
 द्वादशीपरमाहुः ( अत्रविधिर्मदनरत्नेविष्णुधर्मे ) तस्मिन्दिनेतथास्नानंयत्रक्  
 चनसंगमे ( तथा ) दध्योदनयुतंतस्यांजलपूर्णधटं द्विजे ॥ वस्त्रसंवेष्टितंदत्वाच्छु  
 पानहमेवच ॥ नदुर्गतिमवाप्नोतिगतिमध्यांचविंदति ( संवस्तुभविष्ये ) घटेज  
 नार्दनपजामभिधाय ॥ नमोनमस्तेगोविंदबुधश्रवणासंज्ञक ॥ अधौघसंक्षयंकृत्वा  
 सर्वसौख्यप्रदोभव ॥ प्रीयतां देवदेवेशोममसंशयनाशनः ( वामनावतारनिमित्तो  
 पवासस्तुव्रतहेमाद्रौभविष्ये ) द्वादश्यास्ते विधिः प्रोक्तः श्रवणोन्युधिस्थिर ॥ सर्व  
 पापप्रशमनःसर्वसौख्यप्रदायकः ॥ एकादशीयदासास्याच्छ्रवणोनसमन्विता ॥  
 विजयासांतिथिः प्रोक्ताभक्तानांविजयप्रदेत्युपक्रम्य । अथकालेबहुतियेगतेसा  
 शुर्विणीभवेत् ॥ सुयुवेनवमेमासिपुत्रंसावामनंहरिमित्युक्ता । सतत्सर्वसमभवदे  
 कादश्यांयुधिस्थिर ॥ तेनेष्टादेवदेवस्यसर्वथाविजयातिथिः ॥ सद्योव्युष्टिःसमा  
 ख्याताएकादश्यामयातव ॥ पूर्वमेवसमाख्याताद्वादशीश्रवणान्वितेत्युपसंहारा  
 देकादश्यामेव । व्युष्टिःफलं ( भागवतेश्वरस्कंधेतुद्वादश्यां वामनोत्पत्तिरुक्ता ) श्रो  
 णायांश्रवणाद्वादश्यामुहर्तुभिर्जितिप्रभुः ॥ ग्रहनक्षत्रताराद्याश्चकुस्तज्जन्मदास्मि  
 राम । द्वादश्यांसवितातिष्ठत्तमध्यंदिनगतो नृप ॥ विजयानामसाप्रोक्तायस्यांजन्म  
 विदुर्हरेः ( श्रोणायांचंद्रे ) अभिजिच्छ्रवणाप्रथमोऽंशःगोडाअप्येवम् । अत्रक  
 ल्पभेदाद्व्यवस्था ( तद्विधिश्चहेमाद्रौबह्निपुराणो ) नदीनांसंगमेस्त्रायादर्चयेदत्र  
 वामनमसोवर्णावस्त्रसंयुक्तंद्वादशांगुलमुच्छ्रितम् ॥ ततोविधिवत्संपूज्याहिररामयेन  
 पात्रेणादद्यादध्यप्रयत्नतः ॥ नमस्तेपद्मनाभायनमस्तेजलशायिने ॥ तुभ्यमध्यप्र  
 यच्छामिबालवामनरूपिणो ॥ नमःकमलकिंजल्कपीतनिर्मलवाससे ॥ महाइवरि  
 पुस्कंधधृतस्कंधायचक्रिणो ॥ नमःशाङ्गसीरवारापारायेवामनायच ॥ यज्ञभुक्कुल



दात्रेचवामनायनमोनमः ॥ देवेष्वरायदेवायदेवसंभृतिकारिणो ॥ प्रभवेसर्वदेवा  
 नांवामनायनमोनमः ॥ सर्वसंपूजयित्वातंद्वादश्यामुदयेरवेः ॥ शृङ्गारसहितंततु  
 ब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ वामनःप्रतिगृह्णातिवामनोहंददामिते वामनंसर्वतोभद्रं  
 द्विजायप्रतिपादये ॥ इतिअनंतभट्टोप्याह । अवगाढादप्यांजनार्दननामाविष्णुः  
 पश्यते । अवगौकादप्यांवामनावतारइति । अवगायुतशुक्लौकादप्य लाभेतुदश  
 मीविद्धापिअवगायुताकार्या । दशम्यैकादशीयत्रसानोपोष्याभवेत्तिथिः । अव  
 गोनतुसंयुक्तासाचेत्स्यात्सर्वकामर्देति । वह्निपुराणादित्युक्तंसदनरत्ने । पूजाचम  
 ध्याह्निकार्या । अह्नोमध्येवामनोरामरामावितिपूर्वाक्तवचनात् । अत्रैवदुग्धव्रतं  
 संकल्पयेत्तदुक्तं । दुग्धसाध्वयुजेमासीति । अत्रैर्दक्षित्यते । दुग्धव्रतेपायसादिव  
 र्ज्यनवेति । नेतिकेचित् । नहिप्रकृतिवर्जनेविकारवर्जनंयुक्तम् । दधियुतादीनाम  
 पिबर्जनापत्तेः । नचयत्रप्रकृतिरसोपलंभस्तद्वर्जनमितिवाच्यम् । सांसविकारस्यौ  
 ष्ट्रदध्यादेश्चावर्जनापत्तेः । तस्माद्दध्यादिकसपायसादिभक्ष्यमिति । अत्रप्रब्रूमः  
 यत्रविकारेप्रकृतिरसोपलंभस्तत्प्रत्यभिज्ञावातत्रविकारस्यापिनियेधः । अस्ति  
 चसांसविकारेसांसप्रत्यभिज्ञासांसत्वानपायात् । यत्तु । औष्ट्रदध्यादेरनियेधाप  
 त्तिरिति । तन्न । औष्ट्रमिति विकारतद्वितेननियेधात् ( तथाचविज्ञानेष्वरः )  
 औष्ट्रमेकशफंस्वेरासारगयक्रमधाविक्रमिष्यत्र औष्ट्रमिति विकारतद्विताच्छ्रु  
 त्मन्नादीनामपिनियेधइत्याह । नन्वेवंसंधिन्यानिर्देशावत्सागोपयःपरिवर्जयेदि  
 तिसंधिन्यादिस्त्रीरनियेधेपिदध्यादिग्रहांस्यात् । सत्यंप्राप्तं । वचनेनपरंनिये  
 धः ( तदाहापरार्केशंखः ) स्त्रीराणान्यभक्ष्याणातद्विकाराशनेबुधः ॥ सप्तरा  
 त्रं व्रतंकुर्यात्प्रयत्नेनसमाहितइति ॥ व्रतंगोमत्रयावक्रम । तस्मात्पायसेदुग्धरसो  
 पलंभाद्वर्जनम् । अतस्वामिसायांदधिसत्त्वेपिमाधुर्योपलंभात् । पयोरूपान्त्वमुक्त  
 मीसांसकैः ( तदुक्तं ) पयसवधनीभूतमामिसेत्यभिधीयतइति ॥ दध्यादि युतुत  
 दभावादवर्जनमिति । सर्वंदध्यादिव्रतेनतक्रादीनानिनियेधः उक्तोभयहेत्वभावादि  
 तिकेचित् । पूर्वाक्तशंखवचनात्सर्वविकार नियेधइतियुक्तंप्रतीमइतिदुग्धव्रतस  
 भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यामनंतव्रतम् । तत्रविमुहूर्ताप्यौदयिकीग्राह्योतिमाधवः । तदु

क्तम् । उदयेत्रिमुहूर्त्तापिग्राह्यान्तत्रतेतिथिरिति ॥ मध्याह्नेभोज्यवेलायामिति  
 कथायां श्रवणादुपरिहिदेवेभ्योधारयतीतिविद्विषिकल्पनात् । पञ्चात्रतेषुसर्वेषु  
 मध्याह्नव्यापिनीतिथिरितिमाधवीयवचनात्समध्याह्नव्यापिनीग्राह्येतितुदिवोदा  
 सः । प्रतापमार्तडेप्येवम् । इदमेवचयुक्तम् । निर्गायामृतेतुर्घाटकामात्राप्यौदयि  
 कीत्युक्तम् । तथाभाद्रपदस्यान्तेचतुर्दश्यांदिजोत्तम ॥ पौर्णमास्याःसमायोगेव्रतं  
 चानंतक्रंचरेदितिभविष्योक्तेः । मुहूर्तमपिचेद्भाद्रेपरिमायांचतुर्दशी ॥ संपूर्णा  
 तांविदुस्तस्यांप्रजयेद्विष्णु मन्वयमितिस्कांदाच्चेति । अवसलंचिंत्यम् । इयहेअौ  
 दयिकत्वेपूरात्वात्पूर्वेतियुक्तम् । तत्त्वंतुविध्यर्थवादयोर्भिन्नार्थत्वेसकवाक्यता  
 योगात् । संदिग्धेषुसकवाक्यत्वादितिन्यायेनपूर्वापरावामध्याह्नव्यापिन्येवमु  
 ख्या । साधवस्तुसामान्यवाक्यान्नर्गायंकुर्वन्प्राप्तिसव । अनंतव्रतस्यपुराणांत  
 रेवभावान्निबंधांतरेवभावाच्चचनंनिर्मूलमेवेति अथागस्त्यार्घ्यः ( तत्कालो  
 व्रतहेमाद्रौभविष्ये ) कन्यायामागतेसूर्येअर्वाग्वैसप्तमेदिने ॥ कन्यायांसमनुप्राप्ते  
 ह्यर्घकालोनिवर्तते ॥ तेनउदयोत्तरमपिसप्तदिनमध्येइत्यर्थः ( यत्प्राप्ते ) आ  
 सप्तरात्रादुदयाद्यमस्यदातव्यमेतत्सकलंनरेण ॥ यावत्समाःसप्तदशाथवास्युर  
 योर्ध्वमप्यवदंतिकंचित् ॥ यमस्यागस्त्यस्य । उदयकालप्रचदिवोदासीयेउ  
 क्तः । उदेतियाभ्यांहरिसंक्रमाद्रवेरेकाधिकेविंशतिमेह्यगस्त्यः ॥ सप्तमेस्तंवृष  
 संक्रमाच्चप्रयातिगर्गादिभिरभ्यसाणा ( अत्रविधिर्विष्णुरहरये ) काशपुठपम  
 यीरभ्यांकृत्वामूर्तिन्तुवारुणौः ॥ प्रदोषेविन्यसेत्तांतुपूर्णाकुंभेस्वलंकृताम् । कुंभ  
 स्थांपूजयेत्तांतुपुठपधूपविलेपनैः ॥ दध्यक्षतबलिंदद्याद्वात्रौक्यतिप्रजागरम् ॥  
 पूजांचवह्न्यमाणाध्वं मंत्रेणाकार्या । प्रभातेतांसमादा ययायात्पुरायं जला  
 शयम् ॥ निशावसानेतांपश्यन्जलांतेप्रतिमांसुनेः ॥ अर्घ्यंदद्याद्गस्त्यायभवत्या  
 सम्यगुपोषितः ( मात्स्येत् ) अंगुष्ठमात्रंपुरुषंतथैवसौवर्गमित्यायतबाहुदंडम् ॥  
 पूर्वकाशमयीत्वमशक्तौचतुर्भुजं कुंभमुखेनिधायधान्यानिसप्तांकुरसंयुतानि ॥ स  
 काशपुठपासतशुक्तियुक्तमंत्रेणदद्याद्द्विजपुंगवाय ॥ धेनुंबहुक्षीरवतींचदद्यात्स  
 वस्त्रधंराभरणांद्विजाय(भविष्ये)विरूढैःसप्तधान्यैश्चवंशपात्रनिधापितैः ॥ सौ



वरारूप्यपात्रेणाताम्रवंशमयेनवा ॥ भूर्ध्निर्स्थितेननम्रेराजानुभ्यांधरणींगतः  
 (विष्णुरहस्ये)अगस्त्यःखनमानेतिपठन्मंत्रमिसंमुनेः ॥ अर्घ्यदद्यादगस्त्यायशूद्रे  
 मंत्रविधिस्त्वयम् ॥ काशपुष्टप्रतीकाशवह्निमास्तसंभव ॥ मित्रावरुणायोः पु  
 त्रकुंभयोनेनमोस्तुते ॥ विंध्यवृद्धिस्यकरमेघतोयविद्यापहः ॥ रत्नवल्लभदेवेशलं  
 कावासनमोस्तुते ॥ वातापीभक्षितोयेनसमुद्रःशोषितःपुरा ॥ लोपामुद्रापतिः  
 श्रीमान्योसौतस्मै नमोनमः ॥ येनोदितेनपापानिविलयंयांतिव्याधयः । तस्मै न  
 मोस्त्वगस्त्यायसशिष्यायचपुत्रिणो ॥ अगस्त्यःखनमानेतिविप्रोर्घ्यविनिवेदये  
 त ॥ राजपुत्रिमहाभागेऋषिर्पत्निवरानने ॥ लोपामुद्रे नमस्तुभ्यमर्घ्यमेप्रतिगृह्य  
 ताम् ॥ दत्तैवमर्घ्यकौरव्यप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ अर्चितस्त्वंयथाशक्त्या नमो  
 गस्त्यमर्ह्यये ॥ ऐहिकामुठिमकींदत्वाकार्यसिद्धिं ब्रजस्त्वमे ॥ विसर्जयित्वागस्त्यं  
 तंविप्रायप्रतिपादयेत् ॥ अगस्त्योमेमनस्थोस्तुअगस्त्योस्मिन्घटेस्थितः ॥ अग  
 स्त्योद्विजस्वरूपेणाप्रतिगृह्णातुसततः (दानमंत्रः) अगस्त्यःसप्तजन्माघंताशायि  
 त्वावयोरयम् ॥ अतुलंविमलंसौख्यंप्रयच्छस्त्वंमहामुने (प्रतिग्रहमंत्रःविष्णुरह  
 स्ये)त्यजेदगस्त्यमुद्दिश्यधान्यमेकंफलंरसम् ॥ होमं कृत्वाततःपप्रचाद्वर्जयेन्मान  
 वःफलम् (होमप्रचादर्थमंत्रेणाज्येनभविष्ये) दत्वार्घ्यं सप्तवर्षाणि क्रमेणानेन पांड  
 व ॥ ब्राह्मणाःस्याच्चतुर्वेदःसत्रियःपृथिवीपतिः ॥ वैश्येचधान्यनिष्ठपतिःशूद्रप्रच  
 धनवानभवेत् ॥ यावदायुश्चयःकुरुयात्सपरंब्रह्मगच्छति ॥ इत्यगस्त्यार्घ्यः । भा  
 द्रपौर्गामास्यांप्रपितामहात्परांस्त्रीनुद्दिश्यश्राद्धंकार्यम् (तदुक्तंहेमाद्रौब्राह्मसा  
 र्कडैययोः) नांदीमुखानांप्रत्यब्दंकन्याराशिगतेरवौ ॥ पौर्गामास्यांतु कर्तव्यंवरा  
 हवचनंयथेति ॥ नांदीमुखत्वंचोक्तंब्राह्मेपितापितामहप्रचैवतथैवप्रपितामहः ॥  
 त्रयोह्यशुमुखाह्येतिपितरःपरिकीर्तिताः ॥ तेभ्यःपूर्वतरायेचप्रजावंतःसुखैधि  
 ताः ॥ तेतुनांदीमुखानान्दीसमृद्धिरितिकथ्यते ॥ एतच्चप्रत्यब्दमित्युक्तेः । पक्ष  
 श्राद्धपक्षेसकृन्महालयपक्षेचावश्यकमितिप्रयोगपारिजाते । अत्रमातामहाअ  
 पिकार्याः । पितरोयत्रपज्यंतेतत्रमातामहाअपीतिधौम्योक्तेः । पितृशब्दस्यच  
 जनकपरत्वेबहुवचनविरोधेनपितृभावान्नपरत्वात् । वार्यिकेतुवचनान्निवृत्तिवः

नचजोवर्तपितृकस्यान्वष्टकायांमातृश्राद्धेतदापत्तिः । इष्टापत्तेः । अतएव  
सउक्तश्राद्धेषुस्यमातृमातामहयोर्दद्यादिति ॥ मदनरत्नकालादर्शो । एतज्जीव  
त्पितृकश्राद्धेवस्यामः (केचित्तु) अजहल्लक्षणायापित्रादयोयत्रतत्रमातामहास्ते  
नात्रनेत्याहुः । नचात्रनाम्नानांदीश्राद्धप्रमातिदेशः । वैष्णवादिशब्दवद्देवतापर  
स्यकर्मनामत्वाभावात् । नापिनांदीमुखत्वंपितृविशेषणम् । पारिभाषिकत्वा  
दितिदिक् (तथानिर्गायदीपेगार्ग्यः) पौर्णमासीयुसर्वाहुनिधिविद्धंपिंडपातनम् ॥  
वर्जयित्वाप्रौष्ठपदीयथादर्शस्तथैवसेति ॥ इतिभाद्रपदमासः । कन्यासंक्रमेपराः  
षोडशघटिकाःपुरायाःशेषंप्राग्वत् । अथमहालयः । तत्रपृथिवीचंद्रोदयेवृद्धम  
नुःआयाहीमवधिंकृत्वापंचमंपक्षमाश्रिताः कांक्षंतिपितरः क्षिष्टाअन्नमप्यन्व  
हंजलम् ॥ कन्यायोगेपुरायतमत्वमाह(शाठ्यायनिः)कन्यास्थाकार्त्तन्वितःपक्षः  
सोऽयंतंपुरायमुच्यतइति(अत्रविशेषमाहबृद्धमनुः) मध्येवायदिवाप्यंतेयत्रकन्यां  
व्रजेद्रविः ॥ सपक्षःसकलःश्रेष्ठःश्राद्धषोडशकंप्रति (तथाब्रह्मांडमार्कंडेययोः)  
कन्यागतेसवितरि दिनानिदशपंचच ॥ पार्वणेनेहविधना श्राद्धंतत्रविधी  
यते ॥ तथातत्रैवषोडशदिनान्युक्तानिकन्यागतेसवितरिर्यान्यहानितुषोडश ॥  
ऋतुभिस्तानितुल्यानिदेवोनारायणोब्रवीत् ॥ अत्रहेमाद्रिःषोडशत्वंवेधाव्या  
चख्यौ । तिथिबृद्धापक्षस्यषोडश दिनात्मकत्वंश्राद्धबृद्धयर्थमेकःपक्षः । भाद्र  
पदपूर्णिमायासहेतिद्वितीयः । आश्विनशुक्लप्रतिपदासहेतितृतीयः । अंत्यगव  
तुयुक्तः । अहःषोडशकंयत्तुशुक्लप्रतिपदासह । चंद्रक्षयाविशेषेणासापिदशास्मि  
कास्मृतेतिदेवलोकतेः तत्रपंचपक्षाः (तदुक्तंहेमाद्रौब्राह्मे) आश्वयुक्कृष्णपक्षे  
श्राद्धंकार्यंदिनेदिने ॥ त्रिभागहीनंपक्षंवात्रिभागांत्वर्धनेववा ॥ दिनेदिनेइतिपक्ष  
पर्यंतत्वमुक्तम् । त्रिभागहीनमितिपंचम्यादिपक्षः । त्रिभागमितिदशम्यादिप  
क्षः । त्रिभागहीनमितिचतुर्दशीसहितप्रतिपदादिचतुष्टयवर्जनाभिप्रायेणोक्तिक  
ल्पतरुः । अत्रदिनपदंतिथिपरंवीक्ष्यतातत्पक्षीयतिथित्वंश्राद्धव्याप्यतावच्छे  
दकम् । तेनपंचदशतिथिव्यापिश्राद्धंसिद्धयति । तेनचतुर्दशीनिषेधोऽन्यद्दृष्ट्या  
पक्षपरइतिगौडाः । तन्न । श्राद्धशस्त्रहतस्यैवचतुर्दश्यामहालये ॥ इत्यादिविरो



धातु । यच्चकप्रिचतपरगाप्रत्ययलोपेनतृतीयभागहीनयस्य्यादिपक्षतृतीयभाग  
मेकादश्यादितदध्वयोदश्यादिउत्तरोत्तरंलघुकालोक्तेरिति । तन्न । गौतमादि  
वचनेन मलकल्पनालाघवात् । पक्षमित्यन्वयापत्तेश्च । पंचम्यध्वंचतत्रापिद  
शम्यध्वंचततोप्यतीति ॥ विष्णुधर्मोक्तेः । यस्य्याद्येकादश्यादिपक्षावपिज्ञेयावि  
तितत्त्वम् (कालादर्शोपि) पक्षाद्यादिदश्यातंपंचम्यादिदिगादिच । अस्य्यादि  
यथाशक्तिकुर्यादापरपक्षिकम् ॥ पक्षादिःप्रतिपत् । दिक्दशमी । दर्शातमिति  
सर्वत्र (गौतमोपि) अथापरपक्षेऽपिदश्यादितपंचम्यादिदर्शातमस्य्यादि  
दशम्यादिसर्वस्मिंप्रचेति (तथैकस्मिन्नपिदिनेऽपिदश्यादितमुक्तंहेमाद्रौनागरखंडे) आ  
यादयाःपंचमेपक्षेकन्यासंस्थेदिवाकरे ॥ योवैऽपिदश्यादितपंचम्यादिदर्शातमस्य्यादि  
रे ॥ तस्यसंवत्सरंयावत्संतप्ताःपितरोध्रुवमिति ॥ अत्रशक्ताशक्तपराव्यवस्थेति  
प्रांचः । तन्न । तद्वाचकपदाभावात् । त्रयोदश्यादिपक्षसर्वानित्यः । तत्रैवनिंदाशु  
तेः (ब्राह्मे) सर्वकारेणातस्यैवपंचमपक्षायोगव्यवच्छेदोक्तेरितिगौडाः । तन्न ।  
एकस्मिन्नपीतिविरोधात् । तेनफलभूयार्थिनान्यातिकायागीतितत्त्वम् । तत्र  
चतुर्दशीऽपिदश्यादितपंचम्यादिदशम्यादिपक्षोतत्सत्त्वेयस्य्याद्येकादश्यादिकौ ।  
सर्वचतुर्दश्यभावेद्वादश्यादिः । तत्सत्त्वेयस्य्याद्येकादश्यादिरितिव्यवस्था । (विधवा  
यास्तुविशेषःस्मृतिसंग्रहे) चत्वारःपार्वणाःप्रोक्ता विधवायाःसदैवहि स्वभर्तृ  
श्वशुरादीनामातापित्रोस्तथैवच । ततोमातामहानांचऽपिदश्यादितमुपक्रमेत् (तथा)  
अशक्तौतुस्मृतिरत्नावल्याम) स्वभर्तृ  
प्रभृतिविभ्यःस्वपितृभ्यस्तथैवच ॥ विधवाकारयेच्छाङ्गयथाकालमतंद्रिता ॥  
विधवास्वयंसंकल्पंकृत्वान्यतब्राह्मणाद्वाराकारयेदित्युक्तम् (प्रयोगपारिजातेस  
कृन्महालयेचवर्ज्यतिष्ठयाद्युक्तमपृथिवीचंद्रोदयेप्रयोगपारिजातादियु (वशि  
ष्टः)नंदायांभार्गवादिनेचतुर्दश्यांविजन्मसु॥स्युःप्राङ्मनकुर्वीतगृहीपुत्रधनक्षयात् ॥  
जन्मभंतत्पूर्वात्तरेचविजन्मानि । (वृद्धगार्यः)प्राजापत्येचपौषोर्चापित्रर्क्षभार्गवे  
तथा ॥यस्तुप्राङ्मनकुर्वीततस्यपुत्रोविनश्यति ॥ प्राजापत्यंरोहिणी । पौषारेव  
ती । विज्यंसघा । अन्यान्यापिप्रत्यरादीनितत्रैवज्ञेयानि (केचिदु) नंदाश्चक्रामर

व्यारभृग्वरिर्नापितकालमे ॥ गंडेवैधृतपातेचपिंडास्त्याज्याःसुतेप्सुभिरितिसंग्र  
हात् ॥ नंदाप्रतिपत्तयस्येकादश्यः । अश्वःसप्तमी । कामस्त्रयोदशी । आरौभी  
सः । भृगुःशुक्रः । अग्निभंक्तिकाकालभंभरणी । तत्रपिंडास्त्याज्याइत्याहुः ।  
तत्रमलमृग्यस । एतच्चसहन्महालयविषयस । सहन्महालयेकास्येपुनःप्राद्धेखि  
लेषुच ॥ अतीतविषयेचैवसर्वमेतद्विचिंतयेदिति ॥ पृथिवीचंद्रोदयेनारदोक्तेः  
(अस्यापवादोहेमाद्रौपृथ्वीचंद्रोदयेच) अमापातेभरगायांचद्वादश्यांपक्षमध्यकेत  
यातिथिंचनक्षत्रवारंचनविचारयेत् ॥ पराशरमाधवीयेमदनपारिजातादियुचैव  
स(निरायादीपिकायांतु)पितृमृताहेनिधिद्विदिनेपिसहन्महालयःकार्यइत्युक्तम् ।  
आधाढ्याःपंचमेपक्षेकन्यासंस्थेदिवाकरे ॥ मृताहनिपितुर्यैवैशाङ्गंदास्यतिमानवः  
तस्यसंवत्सरंयावत्संतप्ताःपितरोध्रुवमितिनागरखंडोक्ते ॥ यातिथिर्यस्यमासस्य  
मृताहेतुप्रवर्तते ॥ सातिथिःपितृपक्षेतुपूजनीयाप्रयत्नतः ॥ तिथिच्छेदोनकर्तव्यो  
विनाशौचंयदुच्छ्रया ॥ पिंडाश्राद्धंकर्तव्यंविच्छित्तिनैवकारयेत् ॥ अशक्तःपक्ष  
मध्येतुकरोत्येकदिनेयदा ॥ निधिद्वेपिदिनेकुर्यात्पिंडदानंयथाविधीतिकात्या  
यनोक्तेष्वच । अत्रमलंचिंत्यमतथापक्षप्राद्धकरशोपिननंदादियुपिंडानियेधइत्याह  
(पराशरमाधवीयेकाश्राजिनिः)नभस्यस्यापरेपक्षेप्राद्धंकार्यंदिनेदिने ॥ नैवनंदा  
दिवज्यस्यान्नैवनिंद्याचतुर्दशीति ॥ अत्रप्राद्धमित्येकवचनाद्दिनेदिनेइतिवीप्स  
वशाच्च । सोमयागवदेकस्याभ्यासेनैकप्रयोगपरमिदम् । अतःप्रतिपत्प्रभृतिष्वे  
कांविर्जयित्वाचतुर्दशीमितियाज्ञवल्कीयंप्रयोग भेदपरंतुपंचप्रादिपक्षाविषय  
स । प्रतिपत्प्रभृतिष्वितिविशेष्योक्तेः । निरायादीपेपृथ्वीचंद्रोदयेमदनपारि  
जातेचैवस । अन्यकृष्णापक्षपरंयाज्ञवल्कीयम् । एतत्परत्वेनैवनिंद्याचतुर्दशी  
तिविरोधादितिगौडाः (तन्न) प्राद्धंशस्त्रहतस्यैवचतुर्दश्यामहलय इति विरो  
धात् (तत्त्वंतु) तिथिनक्षत्रवारादि नियेधोयउदाहृतः ॥ सप्राद्धेतन्निमित्तेस्या  
न्नानुयंगकृतेह्यसावितिदिवोदासीये वृद्धगार्ग्योक्ते स्तन्निमित्तेपक्षांतरेचज्ञेयः  
सहन्महालयेतुवचनान्नियेधः । अन्यत्रकोपिनियेधः । काश्राजिनिरमृतिरे  
ति अतीनंदादौसपिंडकप्राद्धेपुत्रवतौप्याधिकारः(अत्रिराप)महालयेस



शेषपुत्रस्य जन्मनि ॥ तीर्थेऽपि निर्वपेत् पिंडान् रविवारादिकेऽपि ॥ पूर्वोक्तनंदानिये  
 धस्तु मृताहातिक्रमेऽहंमहालयेऽपौरासास्यादि स्मृत्या द्वे तन्निमित्ते च ज्ञेयः (यत्तु स्मृ  
 त्यर्थसारे) विवाहव्रतचूडासुवर्णमर्धतदर्धकं ॥ पिंडदानं मृदास्नानं कुर्यात्तिलतर्पणा  
 मिति (तस्यात्रापवादो दिवोदासीयेतृहस्पतिः) तीर्थेऽपि संवत्सरेऽपि तृपित्यागे महाल  
 ये ॥ पिंडदानं प्रकुर्वीत युगादिभरणीमघे ॥ महालये गया आद्वे माता पित्रोः स्येह नि  
 कृतोऽहोऽपि कुर्वीत पिंडनिर्वपणं सदेति निरायादीपे तु नंदानियेधः । प्रत्यहं भिन्नश्रा  
 द्धविषयः षोडशाहव्यापि श्राद्धप्रयोगकृत्येतु प्रत्यहं पिंडदानं कार्यमेवेत्युक्तम् । तद  
 यमर्थः संपन्नः षोडशाहव्यापि श्राद्धैको न पिंडनियेधः । मृताहेऽहंमहालयेऽपि तथा  
 इतिकेचित् । तत्रापि नियेधस्तु युक्तः । प्रत्यहं श्राद्धभेदेऽपि न्यतीपातादौ तथा । अ  
 न्यमृताहातिक्रमेऽहंमहालयातिक्रमे च पिंडनियेध इति । संन्यासिनां तु द्वादश्यां श्राद्धं  
 कार्यं सयतीनां च वनस्थानां वैष्णवानां विशेषतः । द्वादश्यां विहितं श्राद्धं कृत्वा पक्षे  
 विशेषत इति ॥ पृथ्वीचंद्रोदये संग्रहोक्तेः (अत्र पक्षे श्राद्धाकरणी गौणा कालमाह हे  
 माद्रौ ग्रमः) हंसे कन्या सुवर्णस्ये शाकेनापि गृहे वसन् । पंचम्यो रंतरे दद्यादुभयोरपि  
 पक्षयोः ॥ आश्विनकृत्वा शुक्लपंचम्योर्मध्य इत्यर्थः (तत्राप्यसंभवे भविष्ये) येयं  
 दीपान्विताराजनखयाता पंचदशी भुवि ॥ तस्यां दद्यान्न चेदत्तं पितृणां वै महालये  
 (तत्राप्यसंभवे भारते) यावच्च वक्रन्या तुलयोः क्रमादास्ते दिवाकरः ॥ शून्यं प्रेतपुरं  
 तावद्वृष्टिचक्रे यावदागतः (ब्राह्मे) वृष्टिचक्रे समतिक्रान्ते पितरौ देवतैः सह निश्चस्य  
 प्रतिगच्छन्ति शापं दत्त्वा सुदारुणम् (यत्तु जातु कार्यः) आकांक्षंति स्म पितरः पंचमं  
 पक्षमाश्रिताः ॥ तस्मात्तत्रैव दातव्यं दत्तमन्यत्र निष्ठफलमिति तत्कृत्वा तिष्ठानि  
 परम् ॥ क्रन्यां गच्छतु वानवेति तु यं पादेवापाठः ॥ तेन कन्यायोगे प्राशस्त्यमात्रं  
 अतः श्राद्धविवेकोक्तं श्राद्धद्वयं हेयमाह दं च श्राद्धमन्नेनैव कार्यं नाम्नादिना । मृताहं  
 च संपिंडं च गया आद्वं महालयं । आपन्नोऽपि न कुर्वीत श्राद्धं सामेन कर्हि चिदिति ।  
 स्मृतिदर्पणो गालवोक्तेः (अथाजदेवताः संग्रहे) तातां बाव्रितयं सपत्नजननीमाता  
 महादिवयं सस्त्रीस्त्रीतनयादितातजननीस्वभ्रातरस्तस्त्रियः तातां बात्मभगिन्यपत्य  
 वयुः ॥ यापितासद्गुरः शिष्यान्नाः पितरो महालयविधौ तीर्थे तथा तपदर्शो ।

अस्यार्थः । ततत्रयी । पितृत्रयो । अंबात्रयीच । स्मृत्यर्थसारोपि महालये मातृश्राद्धं  
 पृथक्प्रशस्तमिति (अत्रविशेषः स्मृतिदर्पणो गालवः) अनेकामातरो यस्य श्राद्धे चा  
 परपक्षिके ॥ अर्घ्यदानं पृथक्कुर्यात्पिंडमेकं तु निर्वपेत् ॥ जीवन्मातृकस्तु सापत्न  
 मातुरेकोद्दिष्टं कुर्यान्न पार्वणम् । श्राद्धं दीपकलिकायां तु पार्वणमुक्तम् । अन्यस्य  
 कथंचनमातुर्गथा श्राद्धं महालयम् ॥ पितृपत्नीयुचश्चाद्धं कार्यं पार्वणावद्वेदिति वृ  
 हन्मनुक्तेः । सस्त्रीति मातामहानासपत्नीकत्वेऽपि विभवे सति मातामहोनां पृथ  
 कार्यं । महालये गथा श्राद्धे वृद्धौ चान्वष्टकासुच ॥ ज्ञेयं द्वादशदैवत्यतीर्थे प्रौष्ठे मघा  
 सुचेति निगमोक्तेः ॥ हेमाद्रिमतस्तत्र नवदैवत्यमेव । महालये गथा श्राद्धे वृद्धौ चान्व  
 ष्टकासुच ॥ नवदैवत्यमंत्रेण शेषं यत्पौरुषं विदुरिति ॥ विष्णुधर्मोक्तेः । तात  
 भ्राता पितृव्यः । जननी भ्राता मातुलः । तत्स्त्रियः । पितृव्यस्त्री । मातुलानी । भ्रा  
 तृजायाः पितृव्यसृमातृव्यसृस्त्रभागिन्योपत्यभर्तृयुक्ताः । तेन सापत्यायै सधवायै  
 इति प्रयोगो ज्ञेयः । एतासु सती युनत इति दर्शनम् । द्वारलोपात् ॥ जायापिताश्च  
 शुरः प्रवशुरप्यत्रोपलक्ष्य । अत्रमूलं स्मृतिर्चाद्रिकायां ज्ञेयम् (अत्र पार्वणौ कोद्दिष्टव्य  
 वस्थोक्ता हेमाद्रौ पुराणांतरे) उपाध्यायगुरुश्च श्रुतिपितृव्याचार्यमातुलाः ॥ श्वशुरा  
 भ्रातृतत्पुत्रपुत्रत्विक् शिष्यपोषकाः भगिनास्वामिर्दुहितृजामातृभगिनीसुताः ॥  
 पितरौ पितृपत्नीनां पितुर्मातुश्च यास्वसा ॥ सखिद्रव्यदर्शित्याद्यास्तीर्थे चैव महाल  
 ये एकोद्दिष्टविधानेन पूजनीयाः प्रयत्नत इति ॥ इतरेषां पित्रादीनां पार्वणमर्थमि  
 क्षम् ॥ अत्र क्रमान्यत्वेऽप्याचाराद्व्यवस्था (अशक्तौ तु पृथिवीचंद्रोदये चतुर्विंशति  
 मते) एकस्मिन् ब्राह्मणे सर्वानाचार्यादीन् प्रपूजयेत् ॥ दशद्वादशवापिंडान् दद्यात्  
 करणान्तु (एकोद्दिष्टस्वरूपं चाह याज्ञवल्क्यः) एकोद्दिष्टं देवहीनमेकादर्यैकपवि  
 त्रकम् ॥ आवाहनान्नौ करणारहितं त्वपसव्यवदिति । अत्रैकपाको वैश्वदेवतंत्रपिं  
 डं बर्हिषचैकमिति स्मृत्यर्थसारे उक्तं । अत्र पाणिहोमः (पिंडाश्च द्विजांतिक इत्या  
 ह प्रयोगपारिजाते आचार्यः) काम्यसभ्युदयेऽष्टम्यामेकोद्दिष्टमथाष्टमम् ॥ चतु  
 र्वैद्युकरे होमः पिंडाश्च त्रिद्विजांतिक इति ॥ पार्वणौ कोद्दिष्टयोः समानतंत्रत्वे तु अ  
 ग्निसमीप एव । अत्र धूरिलोचनौ वैश्वदेवौ । अपिकन्यागते सूर्ये काम्ये च धूरिलो



चनौ ॥ इति हेमाद्रावादित्यपुराणात् । अत्र प्रतिदिनं भिन्नप्रयोगत्वाद्दक्षिणाभेदो  
वाप्रयोगैक्यादन्तेष्ववादक्षिणोति हेमाद्रौ उक्तम् । सतच्च संन्यस्तपितृकादिना जी  
वत्पितृकेणापि कार्यम् । वृद्धौ तीर्थे च संन्यस्ते ताते च पतिते सति ॥ येभ्यः सवपिता  
दद्यात्तेभ्यो दद्यात्स्वयं सुत इति ॥ कात्यायनोक्तेः (यत्तु कौण्डिणाः) दर्शश्चाङ्ग  
याश्चाङ्गश्चाङ्गचापरपक्षिकम् ॥ न जीवत्पितृकः कुर्यात्तिलैस्तर्पणमेव चेति ॥ त  
त्संन्यस्तपित्राद्यतिरिक्तविययम् । काम्यश्चाङ्गपरं वा । अत्र बहुवक्तव्यं श्रीपितृकृत  
जीवत्पितृकनिर्णये ज्ञेयम् । सतच्च जीवत्पितृकेणापि ङ्गहृतं कार्यम् । मृदं पितृका  
नंच प्रेतकर्म च सर्वशः । न जीवत्पितृकः कुर्याद्द्विगुर्विण्णोपतिरेव चेति दक्षेणातस्य पितृ  
नियेधात् । अन्वयक्यमाह वार्यिकादौ तु वचनाद्भवतीति वक्ष्यामः (तथा ह्यगलेयः)  
पितृकायत्र निवर्तते मया दियुक्तं च न ॥ सांकल्पं तु तदा कार्यं नियमात् ब्रह्मवादिभिः ॥  
सांकल्पस्त्वहं पंचवक्ष्यते । अत्रश्चाङ्गांगतर्पणं पक्षश्चाङ्ग प्रतिदिनंश्चाङ्गोत्तरम् । सकृ  
न्महालये तु परेह्निकार्यम् । (तदुक्तं नारदीये) पक्षश्चाङ्गं यदा कुर्यात्तर्पणं तु दिने दि  
ने ॥ सकृन्महालये चैव परेहर्नितिलोदकम् (गर्गोपि) पक्षश्चाङ्गे हिरण्ये च अनु  
ब्रज्यतिलोदकमिति । (तथा प्रयोगपारिजातेर्गर्गः) कृष्णोभाद्रपदे मासिश्चाङ्ग प्र  
तिदिनं भवेत् ॥ पितृणां प्रत्यहं कार्यं नियिद्धाद्देवपितृर्पणम् ॥ सकृन्महालये च स्या  
दष्टकास्त्रं तस्य हि ॥ इदं नियिद्धदिनेपि कार्यम् । तिथितीर्थविशेषे युक्त्यर्थे च  
सर्वदेति स्मृत्यर्थं सारोक्तेः । तीर्थे तिथिविशेषे च गयायां प्रेतपक्षके ॥ नियिद्धेपि  
दिने कुर्यात्तर्पणं तिलमिश्रितमिति स्मृतिरत्नावल्यां वचनाच्च । सतच्चश्चाङ्गं मलमा  
सेन कार्यम् । (तदाह भृगुः) वृद्धिश्चाङ्गं तथा सोमसमग्न्या देयं महालयम् ॥ राजाभि  
येकं काम्यं च न कुर्याद्भानुलंबित इति (हेमाद्रौ नागरखंडे) न भोवाथ न भस्यो वा मल  
मासो यदा भवेत् ॥ सप्तमः पितृपक्षः स्यादन्यत्रैव तु पंचमः ॥ सतच्च पित्रोर्मरणात् प्र  
थमाब्दे कृताकृतमिति त्रिस्थलीसेतौ भट्टाः । इदं च नित्यं काम्यं । पुत्रानायास्तथारो  
ग्यमैश्वर्यमतुलं तथा ॥ प्राप्नोति पंचमेदत्वाश्चाङ्गं कामान्मुपप्लव्वा निति जांबाल्यु  
क्तेः । वृष्टिचक्रे सरति क्रांते पितरो दैवतैः सह । निश्चस्य प्रतिगच्छंति शापं दत्वा सुदा  
रुणमिति (काष्ठाजिनि वचनाच्च तदतिक्रमे प्रायश्चित्तमुक्तमृग्विधाने) दुरो अश्च

स्यमंत्रचदशमासं द्विमासयोः । महालयं यदा न्यूनं तदा संपूर्णमिति तदिति । द्विमासयोः  
कन्यातुल्योर्महालयं प्राद्वं यदा हीनमित्यर्थः । अत्र भरायां प्राद्वसति प्रशस्तम् (तदु  
क्तं पृथिवीचंद्रोदये मात्स्ये) भराणी पितृपक्षे तु महती परिकीर्तिता अस्यां प्राद्वं कृतं ये  
नमराया प्राद्वं कृतं वेत्त (पृथिवीचंद्रोदये श्रीधरीये तु हस्पतिः) नभस्यापरपक्षस्य द्वि  
तीयाय दद्यात्स्य भे ॥ तृतीया चाग्नि ताराभिः सहिता प्रीतिदा पितुः ॥ एतत्त पक्षे यष्टी  
योगविशेषेणा कपिला संज्ञा (तदुक्तं वाराहे) नभस्य कृष्णा पक्षे तु रोहिणी पातभूमौ तैः  
युक्ता यष्टी पुराणा जैः कपिला परिकीर्तिता ॥ व्रतोपवासनियमैर्भास्करं तत्र पूजयेत्  
कपिलां च द्विजाराया दत्त्वा क्रतुफलं लभेत् (पुराणा समुच्चये) भाद्रे मास्यसिते पक्षे भा  
नौ चैव करे स्थिते ॥ पाते कुजे च रोहिण्यां साय यष्टी कपिला भवेत् ॥ अत्र दर्शां तत्त्वेन स  
हालयो भाद्रपद कृष्णा पक्षो ज्ञेय इत्युक्तं निर्यासा मृते हेमाद्रौ च । हस्तार्कस्तु फलाति  
शयार्थः । संयोगे तु चतुर्णां वै निर्दिष्टा परमेश्विने तित्तत्रैवोक्तेः (अत्र विशेषो हेमाद्रौ  
स्कांदे) देवदासं तथोशीरं कुंकुमैलां मनःशिलास । पत्रकं पद्मकं यष्टि मधुगव्येन पे  
ययेत् ॥ क्षीरेणालोड्य कल्केन स्नानं कुर्यात्समंत्रकम् ॥ आपस्त्वमसि देवेश ज्यो  
तिषां पतिरेव च ॥ पापं नाशय मे देव वाङ्मनः कायकर्मजम् ॥ पंचगव्यं कृतस्नानः पंचभं  
गैस्तु मार्जयेत् । पंचभंगैः पंचपल्लवैः । तथा । रत्नैर्नानाविधैर्युक्तं सौवर्गाकारयेद्भवि  
म् ॥ शक्तितस्तु पलादूर्ध्वं तदर्धं कर्षतोपि वा ॥ सौवर्गामरुणां कुर्यान्नौकां चैव तथा र  
थम् (तथा) अल्पवित्तोऽपि यः कश्चित्सोऽपि कुर्यादिमं विधिम् (प्रभासखंडे) स्थाप  
येद्भद्रां कुंभं चंदनोदकपरितम् ॥ रक्तवस्त्रयुगच्छन्तं ताम्रपात्रेण संयुतम् ॥ रथोरौक्म  
पलस्यैव एकचक्रः सुचित्रितः ॥ सौवर्गापलसंयुक्तां मूर्तिसूर्यस्य कारयेत् ॥ ततः सूर्य  
कपिलां च योऽंशो पचारैः संपूजयद्द्यात्तु दिव्यमूर्तिर्जगच्च सुहृद्दशात्मा दिवाकरः क  
पिला सहितो देवो मम मुक्तिं प्रयच्छतु ॥ यस्मात्त्वं कपिले पुराया सर्वलोकस्य पावनी ॥  
प्रदत्ता सहसूर्येण मम मुक्तिप्रदा भवेति ॥ विशेषांतरं तत्रैव ज्ञेयमिति दिक् । इयमेव  
चंद्रयष्टी । सा चंद्रोदयव्यापिनी ग्राह्या ॥ उभयत्र तथात्वे पूर्वा (तदुक्तं भविष्ये) तद्वद्भा  
द्रपदे मासिययुगां पक्षे सिते तरे चंद्रयष्टी व्रतं कुर्यात्पर्ववेधः प्रशस्यते ॥ चन्द्रोदये यदा  
यष्टी पूर्वास्ते चापरे हनि ॥ चंद्रययुगसिते पक्षे सैवी पोष्या प्रयत्नत इति ॥ असृम्या



माञ्चलायनेनमघावर्यसंज्ञाद्वमुक्तम् । एतेनमाध्यावर्यप्रौष्ठपद्याअपरपक्षेइति ।  
 इदं सप्तम्यादियुत्रिष्टवहःसुकार्यमिति नारायणावृत्तिः । हरदत्तस्तुमघायुक्तवर्यसि  
 भवंत्रयोदशीग्राहमिति व्याचख्यौ (पृथ्वीचांद्रोदयेब्राह्मे) आषाढ्याः पंचमेप  
 क्षेगयामाध्याष्टमीस्मृता ॥ त्रयोदशीगजच्छायागयातुल्यातुपैतके ॥ आश्विनकृ  
 ष्णाष्टम्यां महालक्ष्मीव्रतम् (तत्रनिर्गायामृतेपुराणसमुच्चये) श्रियोर्चनं भाद्रपदे  
 सिताष्टमीप्रारभ्यकन्यामगतेचसूर्ये ॥ समापयेत्तत्रतिथौ चयावत्सूर्यस्तुपूर्वाध्वग  
 तोयुवत्याइतितत्रैव (कन्यागतेर्केप्रारभ्यकर्तव्यं तत्रश्रियोर्चनम् ॥ हस्तप्रांतदलस्थे  
 र्केतद्ब्रतं न समापयेत् ॥ पुजनीयाग्रहस्थानां मघमीप्रावृथिश्रियः ॥ दोषैश्चतुर्भिः  
 संयुक्ता सर्वसंपत्करीतिथिः (तथा) पुत्रसौभाग्यराज्यायुर्नाशिनी सा प्रकीर्तिता ॥ त  
 स्मात्सर्वप्रयत्नेन त्याज्या कन्यागतेरवौ ॥ विशेषेण परित्याज्या नवमीद्वयितायदी  
 ति ॥ दोषचतुष्टयं तत्रैवोक्तम् । त्रिदिनेचावमेचैव अष्टमीनोपवासयेत् ॥ पुत्रहानव  
 मीविद्वास्वघ्नीहस्ताध्वगेरवाविति (त्रिदिनावसदिनलक्षणां चरत्नमालायाम्) यत्रै  
 कस्पृशतिथिद्वयावसानंवारश्चेदवसदिनंतदुक्तमर्थः ॥ यः स्पृशति त्रिदिनं त्रिदिनं  
 स्यचाह्वात्रिद्युस्पृक्कथितमिदं द्वयं चनेष्टम् ॥ एते च सर्वे नियेधाः प्रथमारंभविग्रथाः स  
 ध्येतु सति संभवे ज्ञेयाः । व्रतस्य योऽशाब्दसाध्यत्वेन मध्येत्यागायोगात् । इयं चंद्रोद  
 यव्यापिनी ग्राह्या । तत्रैव पूजाद्युक्तेः परदिने चंद्रोदयादूर्ध्वं त्रिमुहूर्तव्यापित्वे परैव  
 कार्या । अन्यथा पूर्वैव । पूर्वावापरविद्वावाग्राह्या चंद्रोदये सदा ॥ त्रिमुहूर्तपि सा  
 पूज्या परतश्चोर्ध्वगामिनीति मदनरत्ने निर्गायामृते च संग्रहोक्तेः । अर्धरात्र मति  
 क्रम्य वर्तते योत्तरातिथिः ॥ तदा तस्यां तिथौ कार्यं महालक्ष्मीव्रतं सदेति वचनाच्चेति  
 संक्षेपः इति महालक्ष्मीव्रतनिर्गायः । अथ नवम्यामन्वष्टकाग्राह्यम् (तत्रकात्या  
 यनः) अन्वष्टकासु नवभिः पिडैश्चाद्वमुदाहृतम् पित्रादिमातृसम्यं च ततो मातामहां  
 तकम् (पृथ्वीचांद्रोदये ब्रह्मांडे) पितृणां प्रथमं दद्यान्मातृणां तदनंतरम् । ततो मा  
 तामहानां च अन्वष्टकोक्रमः स्मृतः (आह्वहेमाद्रौ छागलेयः) केवलास्तु क्षये कार्या वृ  
 द्ध्या वा दौ प्रकीर्तिताः ॥ अन्वष्टकासु मध्यस्थानां त्याः कार्यास्तु मातरः ॥ दौ पि का  
 यां तु मातृग्राह्यमादौ कार्यमित्युक्तम् । मातृयजनं त्वन्वष्टकास्वादित इति (हेमाद्रौ

ब्राह्मोपि) अन्वष्टकासुक्रमशो मातृपर्वतदिष्यत इति (अवशाखाभेदेन व्यवस्थेति) पृथ्वीचन्द्रोदयः । जीवत्पितृकविषयमिति निर्णयदीपः । इदंच जीवत्पितृकेणापिकार्यम् (तदुक्तं निर्णयामृते मैत्रायणीयपरिशिष्टे) अन्वष्टक्यंगया प्राप्तौ सत्यांश्चमृतेहनि ॥ मातुःश्राद्धं सुतः कुर्यात्पितर्यपि च जीवति ॥ यद्यपि जीवत्पितृकस्य पंचान्वष्टका अवश्यं कर्तव्याः । तथाप्यशक्तस्येयमावश्यकौ ॥ प्रौष्टपद्यष्टकाभयः पितृलोके भविष्यतीति हेमाद्रौ पाद्योक्तेः । सर्वसामेव मातृणां श्राद्धं कन्यागते रवौ ॥ नवम्यां हि प्रदातव्यं ब्रह्मलब्धवराय तद्वत्सुक्तेनावश्यकत्वोक्तेश्च । अवसर्वासा मित्युक्तेः स्वमातरि पितृपत्न्योदद्यात् । तन्मरणोत्तरं तस्यैताभ्यश्च दद्यादित्युक्तम् । जीवत्पितृकनिर्णयेण सुभिः । अवसर्वासां नाम निर्देशेनैको ब्राह्मणोऽर्थः पिंडश्च । नामैको तु द्विवचनादिप्रयोग इत्युक्तं नारायणवृत्तौ । अन्वष्टका श्राद्धं तद्यागश्च गोभिलीयानां मध्यमायामेव न सर्वासु ॥ अन्वष्टक्यं मध्यमायामिति गोभिलगौतमाविति छंदोगपरिशिष्टात् । अवभृत् मरणोत्तरं पूर्वमृतमातृश्राद्धं न कार्यमिति केचिदाहुः पठन्ति च । श्राद्धनवम्यां कुर्यात्तन्मृते भर्तृरित्युक्तं ॥ तदेतन्निर्मूलत्वान्मूलं प्रतारणमात्रं (श्राद्धदीपकालिकायां ब्राह्मे) पितृमातृकुलोत्पन्नायाः काश्चित्सुताः स्त्रियः ॥ श्राद्धार्हमातरो ज्ञेयाः श्राद्धं तत्र प्रदीयत इति ॥ अवदेशाच्चादयवस्था । इदंचानुपनीतेनापिकार्यम् (तदुक्तं श्राद्धशूलपारां मातृस्ये) अमावास्याष्टका कृष्णापक्षपंचदशी युचेत्यभिधाय । सतंचानुपनीतोपि कुर्यात्सर्वेषु पर्वसु ॥ श्राद्धसाधारणानां सर्वकामफलप्रदम् ॥ भार्याविरहितोऽप्येतत्प्रवासस्थोऽपि नित्यशः ॥ शूद्रोऽप्यसंभवत्कुर्यादिनेन विधिनावुध इति । तेन सारनेरेवेदमिति परास्तां अन्वष्टकातः पृथगेवेदं मातुः श्राद्धमित्यपि परास्तं । लाघवेन मूलैक्यादष्टकापदाविशेषाच्च । तेनान्यत्रान्वष्टका श्राद्धस्यांगस्याप्यत्र प्रधानत्वं च नान्न । अवेष्टेरिव राजसत्यां तर्गतायास्तयान्नाद्यकामं याजयेदिति फलार्थत्वम् । अत्राष्टकान्वष्टका पूर्वानुरोधात् (तथाग्निपुराणो) अन्वष्टकासु बृद्धौ च गयायां च क्षये हनि ॥ अत्र मातुः पृथक् श्राद्धमन्यत्र पतिना सह आपस्तंबानां त्वष्टकासु च वृद्धौ चेति भाष्यकारैः पाठादष्टकायां मातृका श्राद्धम् । छंदो



गैस्त्वत्रमातृमातामहश्चाद्धेनकार्यं किंतु त्रिपुरुषमेव । नयोयिद्वयः पृथग्दद्यादव  
 सानदिनादृते ॥ कार्यं समन्वितं समुक्ता तथाद्यंश्चाद्धयोडशं । प्रत्याब्दि कंच शेषे युपि  
 डाः स्युः यदिति स्थिति रिति । कुंदोगपरिशिष्टात् । अन्वष्टकासु तेयां कार्यं विधा  
 नादिति शूलपारिणाः (यत्तु) तमिस्रपसेनवमीपुण्याभाद्रपदे हिया ॥ चत्वारः पा  
 र्वाणाः कार्याः पितृपसेमनीयिभिरितितद्देशाचारतो व्यवस्थितं ज्ञेयम् । इदं जीव  
 त्पितृक्रेणापि सर्वापिंडं कार्यम् (हेमाद्रौ विष्णुधर्मोत्तरे) अन्वष्टकासु च स्त्रीणां श्राद्धं  
 कार्यं तथैव चेद्युपक्रम्यापिंडं निर्वपणां कार्यं तस्यामपि नृसत्तमेति वचनं श्राद्धविधि  
 नापिंडदाने प्राप्ते पुनस्तत्कर्तृनयस्य जीवत्पितृकगर्भिणी पतित्वादिनापिंडदानं  
 निषिद्धम् । तस्य तत्प्राप्त्यर्थमिति श्रुता तच्चरणाः (अब्रह्मवासिनी भोजनमुक्तं मा  
 कंडेयपुराणौ) मातुः श्राद्धेतुसंप्राप्ते ब्राह्मणैः सह भोजनम् ॥ ब्रह्मसिन्धौ प्रदातव्यमि  
 ति शातातपो ब्रवीत् ॥ भर्तुरग्रे गतानारी सह दाहेन वा मृता ॥ तस्याः स्थाने नियंजी  
 तविधैः सह ब्रह्मवासिनी (तत्रैव मदालसा वाक्यम्) स्त्री श्राद्धे पुत्रदेयास्युरलंकाराश्च  
 योयिते ॥ संजरी मेखलादास कर्णाका कंकणादय इति (अत्राशक्तावनुकल्पमहा  
 श्वलायनः) अतदुहोयवसमाहरेदग्निना वाकसमुपोये देयामेष्टकेति न त्वेवानष्टकः  
 स्यादिति (हेमाद्रौ पितामहः) अमावास्याव्यतीपातपौर्णमास्यष्टकासु च ॥ विद्वा  
 न्श्राद्धमकुर्वाणो नरकं प्रतिपद्यते (अकरणे च प्रायश्चित्तमुक्तमृग्विधाने) समिधुं  
 भिर्जपेन्मंत्रं शतवारं तु तद्दिने ॥ अन्वष्टक्यं यदा शन्यं संपूर्णायति सर्वथेति (सतत्पसे  
 द्वादश्यां विशेषः पृथिवी चंद्रोदये वायवीये) संन्यासिनोप्याब्दिकादिपुत्रः कुर्याद्य  
 थाविधि ॥ महालये तु यच्छ्राद्धं द्वादश्यां पार्वणां तु तदिति ॥ अथ त्रयोदशी श्राद्धम्  
 (तत्र चंद्रिका) त्रयोदशी भाद्रपदी कृष्णामुख्या पितृप्रिया ॥ तृप्यंति पितरस्तस्यां स्व  
 यं पंचशतं समाः ॥ मधायुतायां तस्यां तु जलाद्यैरपि तोयिताः ॥ तृप्यंति पितरस्तद्वह  
 र्यणामयुतायुतम् (प्रयोगपारिजातेशंखः) पौषपद्यामतीतायां मधायुक्तां त्रयोदशी  
 म । प्राप्य श्राद्धं तु कर्तव्यं मधुना पायसेन च ॥ प्रजामिष्टां यशः स्वर्गमारोग्यं च धनं  
 तथा ॥ नृणां श्राद्धे सदा प्रीताः प्रयच्छन्ति पितामहाः (सतन्नि यमपि पृथ्वी चंद्रोदये  
 विष्णुधर्मे) प्रौष्ठपद्यामतीतायां तथा कृष्णा त्रयोदशीत्युक्ता । सतांस्तु श्राद्धकालान्वे

नित्यानाहप्रजापतिः ॥ आद्वमेतेष्वकुर्वन्निनरकं प्रतिपद्यत इत्युक्तेः ॥ सतच्चाविभक्तौ  
रपि पृथक्कार्यं (तथाच हेमाद्रौ) विभक्तावाविभक्तावाकुर्युः आद्वं पृथक् सुताः मघासु  
चततो न्यत्र नाधिकारः पृथग्विनेति (अपरार्कवायवीये) हंसे हस्तस्थिते यातु मघायु  
क्तत्रयोदशी ॥ तिथिर्वैवस्वतीनामसाक्षायाकुंजरस्यतु ॥ अत्रच । अपिनः संकुले  
भूयाद्योनोदद्यात्त्रयोदशीं ॥ पायसं मधुसर्पिभ्यां प्राक्छायेकुंजरस्यचेति ॥ विष्णु  
मनुवचने केवलत्रयोदशी श्रुतेर्मघाशुगा इति कल्पतरुः (शूलपारिगास्तु) केवलवाक्या  
नामर्थवादत्वादिधौ च मघायोगश्रुतेर्विधिलाघवात् । विशिष्टमेव निमित्तमित्याह  
(वस्तुतस्तु) मधुसर्पे च शाकैश्च पयसा पायसेन च ॥ सयनोदास्यति आद्वं वयसि च  
मघासुचेति ॥ विशिष्टवचने केवलमघाश्रुतेर्विनिगमकाभावादुभयं भिन्ननिमित्तं ।  
पूर्वाक्तवचनाच्च योगाधिको फलाधिकं (अतएव याज्ञवल्क्यः) तथावयसि त्रयोदश्यां  
मघासुचविशेषत इति ॥ त्रयोदशी आद्वं नित्यम् । अन्यत्काम्यं अत्र त्रयोदश्यां ब  
हुपुत्रायुवमारिगास्तु भवन्तीत्यापस्तंबोक्तेर्युवमारित्वमपत्यदोषसहिष्णोरपत्यमा  
त्रार्थिनः । स्मृत्यन्तरोक्तवन्तार्थिनो वाधिकार इति कल्पतरुः । अपत्यनिन्दया तद  
र्थिनानाधिकारात् । फलांतरकामस्यैवाधिकार इति हलायुधः । सतत्पिंडर  
हितं कार्यं । मघायुक्तत्रयोदश्यां पिंडनिर्वपणां द्विजः ॥ संसंतानो नैव कुर्यान्नित्यं  
ते कवयो विदुरिति वृहत्पराशरोक्तेः । इदं सलमासेपिकार्यं । मघात्रयोदशी आद्वं  
प्रत्युपस्थितिहेतुकं ॥ अनन्यगतिकत्वेन कर्तव्यं स्यान्मलिम्लुचे ॥ इति काशकशृ  
ह्योक्तेः । यानितु अंगिराः त्रयोदश्यां कृष्णपक्षेयः आद्वं कुरुते नरः ॥ पंचत्वंतस्य  
जानीयाज्ज्येष्ठपुत्रस्य निश्चितं (वामनपुराणो) त्रयोदश्यांतु वै आद्वं न कुर्यात्पुत्रवा  
चगृहोत्यादीनि वचनानि तानि पुत्रवद्विषयाणां वामहालयस्थभिन्नत्रयोदशी विष  
याणां वाकाम्य आद्वं विषयाणां वासपिंडक आद्वं विषयाणां वेतिकेचित्ता हेमाद्रि  
प्रमुखास्त्वेकवर्ग आद्वं विषयाणां । आद्वं नैवैकवर्गस्य त्रयोदश्यामुपक्रमेत् ॥ न  
तृप्तास्तत्र येयस्य प्रजाहिंसंति तस्य इति काशार्जिनिस्मृतेः । यद्यपि पितरो यत्र प्रज्यं  
ते तत्र माता महाअपीति धौम्योक्तेर्न केवल पितृवर्गस्य प्राप्तिस्तथापि न्यासो होदि  
प्राप्तिनिषेधो यमित्याहुः । वयंतु पश्यामः पुत्रवद्विषयाणां येवेति । असंतानस्तु यस्तस्य



आद्वेप्रोक्तात्रयोदशी ॥ संतानयुक्तोयः कुर्यात्तस्यवंशक्षयो भवेदिति हेमाद्रौ नागर  
 खंडोक्तेः । पूर्ववाक्यमप्यसंतानस्यैवैकवर्गनिषेधकमिति । अत्रमघात्रयोदशीम  
 हालययुगादिश्राद्धानांतंवेणाप्रयोगः ॥ नतुप्रसंगसिद्धिरित्यन्यत्रविस्तरः (अथ  
 चतुर्दशीपृष्ठवीचंद्रोदयेप्रचेताः वृक्षारोहणालोहाद्यैर्विद्युज्जलविषाग्निभिः ॥  
 नखिर्दंष्ट्रविपन्नायेतेषां शस्ताचतुर्दशी (ब्राह्मे) युवानः पितरो यस्य मृताः शस्त्रेणा  
 वाहताः ॥ तेन कार्यं चतुर्दश्यांतेषां हस्तिमभीप्सता (नागरखंडे) अपमृत्युर्भवेद्येषां  
 शस्त्रमृत्युरथापि वा ॥ आद्वंतेषां प्रकर्तव्यं चतुर्दश्यां नराधिप ॥ एतच्च प्रायोना  
 शकशस्त्राग्निवियोदकोद्वधनप्रपतनैश्चेच्छ्रुतामिति ॥ गौतमोक्तदुर्मणोपलक्ष  
 णां सकयोगनिदशात् । सर्वेषां तुल्यधर्माणामेकस्यापि यदुच्यते ॥ सर्वेषां तत्समं  
 ज्ञेयमेकस्वरूपाहिते स्मृता इत्युक्तं शोक्तेषु च ॥ तच्च कर्तव्यक्रियाणामेवेति वक्ष्यामः  
 (मरीचिः) विषशस्त्रापादाहिति र्यग्राह्यगाधातिनां ॥ चतुर्दश्यां क्रियाः कार्या  
 अन्येषां तु विगर्हिताः ॥ अत्र ब्राह्मणाधातीतेन हतो न तु ब्रह्महा । तस्य पतितत्त्वं  
 दिति शूलपाणिः । अत्रोद्देश्यविशेषेणास्याविवक्षितत्वात् । स्त्रीणामपि शस्त्रादि  
 हतानामेकोद्विष्टं कार्यं न पार्वणमिति श्रीदत्तोपाध्यायः । इदं विद्यादिहतानामेव न  
 प्रसवादिमृतानामिति वाचस्पतिः (यत्तु शाकटायनः) जलाग्निभ्यां विपन्नानां  
 संन्यासे वा गृहे पथि ॥ आद्वंकुर्वीततेषां वैवर्जयित्वा चतुर्दशीमिति ॥ तत्प्राय  
 ष्चित्तार्थजलादिमृतविषयमित्याकरे उक्तम् । अतएव वैधत्वात् सहगमनेऽपि न कार्यं  
 मिति हेमाद्रिः (एतच्च दैवयुक्तमेकोद्विष्टं कार्यमित्युक्तं प्रयोगपारिजाते) प्रेतपक्षे  
 चतुर्दश्यामेकोद्विष्टं विधानतः ॥ दैवयुक्तं तु तच्छ्राद्धं पितृणामक्षयं भवेत् ॥ तच्छ्राद्धं  
 दैवहीनं चेत् पुत्रदारधनक्षयः ॥ एकोद्विष्टं दैवयुक्तमित्येवं अनुरब्रवीत् (भविष्योपि)  
 समत्वं सागतस्यापि पितुः शस्त्रहतस्य च ॥ चतुर्दश्यां तु कर्तव्यमेकोद्विष्टं महालये  
 चतुर्दश्यां तु यच्छ्राद्धं संपिंडीकरणोक्तम् ॥ एकोद्विष्टविधानेन तत्तत्कार्यं शस्त्रवातिन  
 इति (संवत्सरप्रदीपे हारीतः) विश्वे देवांश्च तत्रापि पूजयित्वादितो मलान् ॥ ये वै  
 शस्त्रहतास्तेषां आद्वंकुर्यादिति द्रुतः ॥ अत्रैकोद्विष्टवचनानां निर्मूलत्वं । समलत्वेऽपि  
 पार्वणाशक्तपराणां । विद्यावादि वचनैः प्रकरणात् कृष्णापक्षीयपार्वणां वगते

रिति शलपाणिः । तन्नवाक्येन प्रकरणास्य बाधात् । पित्रादीनां पार्वणां भ्रात्रादीनां मेकोद्दिष्टमिति गौडार्वाचः । तन्नपितुरित्यनेन विरोधात् । विशेषवाक्यवैयर्थ्या पक्षे च अत्र शस्त्रहतस्यैव चतुर्दश्यामिति नियमो न तु चतुर्दश्यामेव शस्त्रहतस्येति । आहं शस्त्रहतस्यैव चतुर्दश्यामहालये ॥ इतिकालादर्शात् । वार्षिकादीनामकरणापक्षे च तेन महालये एव । दिनांतरे पार्वणां माता महादितुश्चर्यकार्यमेव । पिता महोपिशस्त्रहतश्चेदेकोद्दिष्टद्वयं कार्यं (तदुक्तं हेमाद्रौ स्मृत्यंतरे) एकस्मिन् द्वयोर्वैकोद्दिष्टमिति । त्रिषु शस्त्रहतेषु पार्वणामेव कार्यं । यत्तु देवस्वामिनोक्तं त्रिष्वपि शस्त्रहतेषु पृथगेकोद्दिष्टत्रयं कार्यं । न तु पार्वणामाहत्य वचनाभावादिति तदुक्तं । पित्रादयस्त्रयो यस्य शस्त्रैर्यातास्त्वनुक्रमात् ॥ सभूते पार्वणां कुर्यादादिदिकानि पृथक् पृथगिति बृहत्पराशरोक्तेः । एकस्मिन्वा द्वयोर्वापि विद्युच्छस्त्रेणावाहते ॥ एकोद्दिष्टं भुतः कुर्यात्त्रयाणां दर्शवद्भवेदिति स्मृत्यंतरा चेति । पृथिवीचंद्रोदये उक्तं ॥ अपरार्के हेमाद्रौ चैवायस्तु अत्रैव शस्त्रादिनाहतस्तस्य वार्षिकमेव पार्वणमेकोद्दिष्टं वा कार्यं न तु आह्वयं । प्रसंगसिद्धेरिति (पृथिवीचंद्रोदये) अत्र आह्वयकारणोपिमापरपक्षे दिनांतरे पार्वणे नैव कार्यमिति तत्रैवोक्तं (यद्यपि) शस्त्रविप्रहतानां च शृङ्गिदं श्विषरीसुपैः ॥ आत्मनस्त्यागिनां चैव आह्वयमेवां नकारयेदिति ह्यगलेयाद्यैः शस्त्रादिहतानां आह्वयं निश्चितं । तथापि प्रमादमृतानां आह्वयत्वात् कार्यवृद्धादिभिन्नबुद्धिपूर्वमृतानां तु न कार्यं (यत्तु) चतुर्दश्यांतर्पणीया लुप्तपिंडोदकक्रियाः ॥ इति ब्राह्मे तद्गौणमिति शलपाणिः । लक्षणायां मानाभावात् । पतितेनापि कर्तव्यं कर्तव्यं पतितस्य चेति ॥ गयादितुर्द्विशेषविधिबलात् । पतितानामपि कार्यमिति नव्यगौडाः । तत्त्वं तु समत्वमागतस्येत्यादिवशात् कृतक्रियाणां कार्यनान्येया मिति वयं प्रतीमः (यत्तु मनुः) नपैतदयज्ञियो होमो लौकिकाग्नौ विधीयते ॥ न दर्शेन विना आह्वयमाहिताग्नेर्विधीयत इति ॥ अत्र पूर्वार्द्धहेतुत्वेनोक्तं । तद्यथा श्रुतमेव मन्त्रते पृथ्वीचंद्रोदयादयः । आहिताग्नेः पिंडोपित्तयज्ञकल्पेन आह्वयनिषेधार्थमिदं न तु साकल्यादेरपीत्यस्मद्गुरवः । कृष्णापक्ष आह्वयमन्यदिनेषु प्राप्त्याहिताग्नेर्दर्शेन नियम्यत इति तु वयं । दर्शेन पार्वणेन विना आह्वयं । तेनैकापि वार्षिकादावे



कोद्विष्टनेतिहरिहरः । इतिचतुर्दशी (अमायांविशेषमाहपरार्क्यमः) हंसेकर  
स्थितेयातुअमावास्याकरान्विता॥ साज्ञेयाकुंजरच्छायाइतिबोधायनोब्रवीत् ॥  
वनस्पतिगतेसोमेच्छायायाप्राङ्मुखीभवेत् ॥ गजच्छायातुसाप्रोक्तातस्यांश्राद्धं  
प्रकल्पयेत्(भारते)अजेनसर्वलोहेनवर्षासुनियतव्रतः ॥ हस्तिच्छायासुविधिवत्  
कर्णाव्यजनवीजितं ॥ श्राद्धंदद्यादितिशेषः । आश्विनशुक्लप्रतिपदिदौहित्र  
स्यमातामहश्राद्धमुक्तं (हेमाद्रौसंग्रहेच) जातमात्रोपिदौहित्रो विद्यमानेपिमा  
तुले ॥ कुर्यान्मातामहश्राद्धंप्रतिपद्याश्विनेसितइति ॥ इयंसंगवच्यापिनीशा  
ह्येतिनिर्णयदीपेउक्तं । प्रतिपद्याश्विनेशुक्लेदौहित्रस्त्वेकपार्वणां ॥ श्राद्धंमा  
तामहंकुर्यात्सपितासंगवेसदा॥ जातमात्रोपिदौहित्रोजीवत्यपिचमातुले॥ प्रातःसं  
गवयोर्मध्येआर्यस्यप्रतिपद्वेदितिवचनात् । अत्रसमलत्वंकिमृष्यइदंचमलमासे  
नकार्यं । स्पष्टमासविशेषाख्याविहितंवर्जयेन्मलेइतिनिषेधात् इदंचजीवतपितृ  
कैरौवकार्यमितिशिष्टाः । इदंचशिष्टाचारात्सपिंडकंकार्यमतिकेचित् । पिंड  
रहितंतुयुक्तं(जीवतपितृकस्य)मुंडनंपिंडदानंचप्रेतकर्मचसर्वशः ॥ नजीवतपि  
तृकःकुर्याद्विगुर्विणीपतिरेवचेतिदक्षेणापिंडनिषेधात् आन्वष्टक्यवद्विशेषवचना  
भावाच्चेतिसंक्षेपः ॥

इतिकमलाकरभट्टकृतेनिर्णयसिंधौमहालयनिर्णयः ॥

अथाश्विनशुक्लप्रतिपदिनवरात्रारंभःतन्निर्णयः (तत्रभार्गवार्चनदीपिकायां  
देवीपुराणो)मुमेधाउवाच । शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि चंडिकापजनक्रमम् ॥ आ  
श्विनस्यसितेपक्षेप्रतिपत्सुशुभेदिनेइत्युपक्रम्योक्तं । शुद्धेतिथौप्रकर्तव्यं प्रतिप  
द्योर्ध्वगामिनी ॥ आद्यास्तुनाडिकास्त्यक्तायोडशद्वादशापिवा ॥ अपराह्णेच  
कर्तव्यंशुद्धसंततिक्रांतिभिः ॥ इदंचापराह्णयोगिन्याःप्राशस्त्यंद्वितीयदिनेप्र  
तिपदोभावेज्ञेयम् (तथातत्रैवदेवीपुराणो डामरतंत्रेचदेवीवचः) अमायुक्तानकर्त  
व्याप्रतिपत्पूजनेमम॥मुहूर्तमात्राकर्तव्यमद्वितीयादिगुणान्विता॥ आद्याःषोडश  
नाडोस्तुलच्छ्वायःकुरुतेनरः ॥ कलशस्थापनंतत्रह्यरिष्टंजायतेध्रुवं (मार्कंडेयदे

वीपुराणयोः) पूर्वविद्धातुयाशुक्ताभवेत्प्रतिपदाश्विनी ॥ नवरात्रव्रतं तस्यां नका  
यं शुभमिच्छता ॥ देशभंगो भवेत्तत्र दुर्भिक्षं चोपजायते ॥ नंदायां दर्शयुक्तायां यत्र स्या  
न्मम पूजनमिति (स्कां देवि) प्रतिपद्याश्विने मासि सा शुद्धा शुभदा भवेत् ॥ भाद्रपंचद  
शी कृष्णा तथा युक्तानशस्यते ॥ विरुद्धफलदा सार्हि पुनरारभ्यावहेति (तथा)  
वर्जनीया प्रयत्नेन अमायुक्ता तु पार्थिव ॥ द्वितीयादिगुरौ युक्ता प्रतिपत् सर्वकाम  
दा (तथा देवीपुराणो) यो मां पूजयते नित्यं द्वितीयादिगुरां न्विताम् ॥ प्रतिप  
द्वारदां ज्ञात्वा सोऽशुते सुखमव्ययं ॥ यदिकुर्यादमायुक्तां प्रतिपत्स्थापने मम  
तस्य शापायुतं दत्त्वा भस्मशेषं करोम्यहं ॥ आग्रहात् कुरुते यस्तु कलशस्थापनं  
मम ॥ तस्य संपद्दिनाशः स्याज्जपेसु पुत्रो विनश्यति ॥ अमायुक्तानकर्तव्या प्रतिप  
द्वंडिका चर्चने ॥ धनार्थिभिर्विशेषेण वंशहानिश्च जायते ॥ नदर्शकलया युक्ता प्र  
तिपद्वंडिका चर्चने ॥ उदये द्विमुहूर्तापि ग्राह्या सोऽदयदायिनीति (देवीपुराणो) या  
चाश्वयुजि मासे स्यात् प्रतिपद् द्वयान्विता ॥ शुद्धाममार्चनं तस्यां शतयज्ञफलप्रदं  
(रुद्रयामले) अमायुक्ता सदा चैव प्रतिपन्निदिता मता ॥ तत्र चेतस्थापयेत्कुंभं दुर्भ  
क्षं जायते ध्रुवं ॥ प्रतिपत्सद्वितीया तु कुंभारोपणं कर्त्तव्यमिति ॥ यद्यपि रुद्रयामलं  
डामरं च निमूलं तथाप्यविरोधात् प्रचाराच्च तद्वचनानि लिख्यंते (तिथितत्त्वे देवी  
पुराणोऽपि) प्रातरावाहयेद्देवीं प्रातरेव प्रवेशयेत् ॥ प्रातः प्रातश्च संपूज्य प्रातरेव विस्  
र्जयेत् (तत्रैव) शरत्काले महापूजा क्रियते याचवार्थिकी ॥ साकार्योदयगामिन्यां  
न तत्र तिथियुग्मता (तथा) कुहूकायोऽपसंयुक्तां वर्जयेत् प्रतिपत्तिथिं ॥ राज्यनाशा  
यसा प्रोक्तानिदिता चाश्वपूजन इति ॥ सधुवचने युक्लशस्थापनग्रहणात् ॥ तदेव  
प्रथमदिने नियिध्यते न तूपवासादि ॥ तस्य प्रतिपद्यप्यमावास्येति युग्मवाक्यात् । शु  
क्लस्यात् प्रतिपत्तिथिः प्रथमत इति दीपिकोक्तेः । शुक्लपक्षे दर्शविद्धेति माधवो  
क्तेश्च (पूर्वदिने प्राप्तस्य त्राधे) मानाभावादिति केचित् । वस्तुतस्तु पूर्वोक्तवाक्ये  
युचं डिका चर्चनपूजाग्रहणादुपवासादेश्चांगत्वात् प्रधानदेवीपूजादावपि परेति यु  
क्तं कलशस्थापनग्रहणात्पल्लवाणां (अतएव देवलः) व्रतोपवासनियमेऽतिकैका  
पि ग्राभवेत् ॥ सार्तिथिस्तद्दिने पूज्या विपरीता तु पैतृका इति ॥ अवधटिकासु



हूर्तइतिगौडाः ॥ यदातुपूर्वदिनेसंपूर्णाशुद्धाचभूत्वापरदिनेवर्धतातदासंपूर्णा  
 त्वादमायोगाभावाच्चपूर्वव ॥ यानिचाद्वितीयायोगनिषेधकारिणि वचनानि  
 केचित्पठंतितान्यपिशुद्धाधिकनिषेधपराणि । परदिनेप्रतिपदोत्थंतासत्त्वेतु  
 दर्शयुतापिपूर्ववग्राह्या (तदाहललः) तिथिःशरीरंतिथिरेवकारणांतिथिःप्रमा  
 णांतिथिरेवसाधनमिति ॥ यानित्वमायुक्ताप्रकर्तव्येत्यादीनिनृसिंहप्रसादेव  
 चनानितानिसमूलत्वेसत्येतद्विप्रयाणि । अत्रेदंतत्त्वम् । पूर्वाक्तवाक्यानां सर्वेषां  
 हेमाद्याद्यलिखितत्वेननिर्मूलत्वात्तैश्चान्यनिर्णयस्यानुक्तेः सामान्यनिर्णयात्  
 पूर्ववत्प्राप्तावपिगौडनिबंधेषुविशेषनिर्णयादौदयिकीग्राह्या । तत्रापिघटिकै  
 केत्यस्यद्विमुहूर्तस्तुतित्वोक्तेर्द्विमुहूर्तग्राह्या । उदितेदेवतंभानावित्यत्रद्विमुहूर्ता  
 विरहप्रचेतिश्रीदयिक्याद्विमुहूर्तत्वनियमात् । तेनउदयेद्विमुहूर्ता पीत्याद्यनुसा  
 रोपिमुहूर्तमात्राकर्तव्येतिद्विमुहूर्तस्तुतिः । अन्यथाद्विमुहूर्तविधि वैयर्थ्यात् । केचि  
 तुमुहूर्तमात्रेतिवचनात्ततोन्त्यनत्वेपरानेत्याहुःगौडाअप्येवम् । अत्रदेवीपूजैवप्र  
 धानम् । उपवासादित्वंगं । अष्टम्यांचनवम्यांचजगन्मातरमंबिकां ॥ पूजयित्वा  
 श्विनेमासिविशोकोजायतेनरइतिहेमाद्रौभविष्येतस्यासवफलसंबंधात् । नवमी  
 तिथिपर्यंतंवृष्ट्यापूजाजपादिकमिति तत्रैवदेवीपुराणात् । शरत्कालेमहापूजाक्रि  
 यतेयाचवार्धिकीर्तिमार्कंडेयपुराणाच्च । पूर्ववचनादष्टमीनवमीपूजैवप्रधानमन्य  
 त्सर्वसंगमितिगौडाः । सकाहपसोपिकालिकापुराणो॥यस्त्वेकस्यामथाष्टम्यां  
 नवम्यामथसाधकः ॥ पूजयेद्वरदांदेवींमहाविभवविस्तरैरिति ॥ तत्त्वंतुराजसूये  
 न्ययार्गैःसमप्रधानायाःसहिताअप्यवेष्टेरेतयान्नाद्यकामंयाजयेदित्येकत्वान्मध्ये  
 विधानाच्चयथाफलार्थोवहःप्रयोगस्तथानवरात्रमध्यस्थायाअष्टम्यानवम्यावा  
 फलार्थःपृथक्प्रयोगःरूपनारायणाधृतदेवीपुराणो । महानवम्यांपूजेयंसर्वका  
 मप्रदायिका ॥ सर्वेषुवत्सवर्गेषुतवभक्त्याप्रकीर्तिता ॥ कृत्वाप्रोतियशोराज्यपु  
 षायुधनसंपदःसाचक्रास्यानित्याश्च । त्वमन्यैरपितथादेव्याःकार्यंप्रपन्नम् ॥ वि  
 भूतिमतुलालब्धुंचतुर्वर्गप्रदायिकामिति ॥ योमोहादधवालस्यादेवींदुर्गाम  
 होत्सवे ॥ नपूजयतिदंभाडाद्वेद्याडाप्यत्रभैरव ॥ कृद्धाभगवतीतस्यकामानिष्टाच्चि

हंतिवैशतिकालिका पुराणोपलनिंदाश्रुतेः । वर्षेवर्षेविधातव्यंस्थापनंचविसर्ज  
नमिति तिथितत्त्वेदेवीपुराणाच्च । अत्रोपवासादिकमुक्तंहेमाद्रौभविष्ये । एवं  
चविंध्यवासिन्यांनवरात्रोपवासतः । एकभक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनचापूजनी  
याजनैर्देवीस्थानेस्थानेषु रेपुरे ॥ गृहेगृहेशक्तिपरैर्ग्रामेग्रामेवनेवने ॥ स्नातैःप्रमुदि  
तैर्हृद्यैर्ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृपैः ॥ वैश्यैःशूद्रैर्भक्तियुक्तैस्त्वेच्छैरन्यैश्चमानवैरिति ॥  
यत्तु रूपनारयणीयेभविष्ये (सर्वानान्स्लेच्छैर्गणैः पूजयते सर्वं दस्युभिरितितत्ताम  
सपजापरं । विनामंत्रैस्तामसीस्यात्किरातानांतुसंमतेतितत्रैवोक्तेः सदनरत्नेदे  
वीपुराणोपि कन्यासंस्थेरवौशक्रशुक्लामारभ्यनंदिकां ॥ अयाचीह्यथवैकाशी  
नक्ताशीवाद्यवावदः ॥ भूमौशयीतचामंड्यकुमारीर्भोजयेन्मुदा ॥ वस्त्रालंकार  
दानैश्चसंतोष्याःप्रतिवासरं ॥ बलिंचप्रत्यहंदद्यादोदनंमांसमायवत् ॥ त्रिकालंप  
जयेद्देवींजपस्तोत्रपरायणाइति ॥ नंदिकाप्रतिपत्तिथिरिति मैथिलाः । यद्यीति  
गौडाः । तच्चपूजनंरात्रौकार्यम् । आश्विनेमासिमेषांतेमहियासुरमर्दिनीम् ॥ नि  
शासुपूजयेद्भक्त्यासोपवासादिकःक्रमादितिदेवीपुराणात् (संग्रहेपि) आश्वि  
नेमासिमेषांतेप्रतिपद्यातिथिर्भवेत् ॥ तस्यांनक्तंप्रकुर्वीतरात्रौदेवींचपूजयेत् ॥  
रात्रिरूपायतोदेवीदिवारूपोमहेश्वरः ॥ रात्रित्रतमिदंदेविसर्वपापप्रणाशनम् ॥  
सर्वकामप्रदंनृणांसर्वशत्रुनिबर्हणं ॥ रात्रित्रतमिदंतस्यरात्रौकर्तव्यतेष्यते ॥ न  
क्तत्रतमिदं यस्मादन्यथानरकेगतिरित्यादिवचनाच्चरात्रित्रतत्वमेवाभिप्रेत्यमाध  
वेनोक्तम् । तस्यनक्तत्रतत्वादिति । नतुरात्रिभोजनात् । ननु । मासिचाप्रवयुजेशु  
क्तेनवरात्रेविशेषतः ॥ संपूजयन्बुद्ध्याचनक्तंकुर्यात्सिमाहितः ॥ नवरात्राभिधं  
कर्मनक्तत्रतमिदंस्मृतम् ॥ आरंभेनवरात्रस्येत्यादिस्कांदात् । माधवोक्तेश्चनक्त  
मेवप्रधानमितिचेन्न । नवरात्रोपवासतइत्यादेरनुपपत्तेः । तेनपाक्षिकनक्तानुवादो  
ग्रम् । नित्यनित्यासंयोगविरोधात् । नह्यग्निहोत्रेदशमपक्षेप्राप्तस्यदध्नाजुहोती  
त्यस्येन्द्रियकामहोमेनुवादोघटते । नित्यवदनुवादायोगादित्युक्तंवार्तिकेतथात्रा  
पि । तेनात्रतद्वदेवगुणात्फलमितिज्ञेयं । ननुरात्रेःकर्मकालत्वेतद्व्यापिनीपूर्वव  
प्रतिपत्तप्राप्नुयात्सैवंनग्रायतःप्राप्तः वपिपूर्वाक्तवचनैर्वाधात्तथापूर्वेद्युःकर्मका



लव्यापिनीमपित्यक्तास्त्रल्पापिपरैवरासनवमीतिप्रायुक्तं । यथावानिशीयेस  
 तीमपिपूर्वाजन्माष्टमीत्यक्कारोहिणीयुक्तापरैवेतिमाधवेनोक्तं । तथात्रापि ।  
 वस्तुतस्तु रात्रेःकर्मकालत्ववचसाहेमाद्याद्यलिखनात् । समलत्वंविमृश्यमेव ।  
 त्रिकालं पूजयेदित्यादि पूर्वविरोधाच्चमाधवोक्तिस्तुपासिकनक्तानुवादइत्युक्तं ।  
 तस्मात्सर्वपक्षेषुपरैवप्रतिपदिति सिद्धम् । अत्रकेचिन्नवरात्रशब्दो नवाहोरात्रपरः  
 वृद्धोसमाप्तिरष्टम्यांहासेमाप्रतिपत्तिश्च ॥ प्रारंभोनवचंड्यास्तुनवरात्रमतोर्यव  
 दितिदेवीपुराणादित्याहुः । तन्न अतिहासवृद्धयोर्न्यूनधिकत्वापत्तेः । अत्रसू  
 लाभाचतेनतिथिवाच्येवायं ( तदुक्तं ) तिथिवृद्धौतिथिहासेनवरात्रमपार्थक्यं  
 अष्टरात्रेनदोषोयंनवरात्रतिथिष्येदिति ॥ सचनवरात्रशब्दः क्वचिल्लक्षणायाकर्म  
 वाची ॥ यथाप्रारंभोनवरात्रस्येत्येतिदिक् । प्रतिपदिचवैधृत्यादियोगनिषेधो  
 भागवार्चनदीपिकायां ( देवीपुराणो ) त्वाष्ट्रवैधृतियुक्ताचेत्प्रतिपच्चंडिकाचने  
 तयोस्तेविधातव्यंकलशारोपणांनुहेति । चित्रावैधृतियुक्तापिद्वितीयायुताचेत्सै  
 वग्राह्येयुक्तं ( दुर्गातत्त्वे ) भद्रान्विताचेत्प्रतिपत्तुलभ्यतेविरुद्धयोगैरपिसंगता  
 सती ॥ सैवापराक्लेविवुधैर्विधेयाग्नीपुत्रराज्यादिविवृद्धिहेतुरिति ॥ यदातुवैधृ  
 त्यादिपरिहारेणाप्रतिपन्नलभ्यते ( तदोक्तं तत्रैवकात्यायनेन ) प्रतिपद्याप्रिवने  
 मासिभवोवैधृतिचित्रयोः ॥ आद्यपादोपरित्यज्यप्रारंभेननवरात्रकमिति ( भवि  
 स्येपि ) चित्रावैधृतिसंपूर्णाप्रतिपच्चेद्वेन्नृप । त्याज्याहंशास्त्रयस्त्वाद्यास्तुरीयांशे  
 तुपूजनमिति ( रुद्रयामलेपि ) वैधृतौपुत्रनाशः स्याच्चित्रायांधननाशनम् ॥ तस्मा  
 न्नस्थापयेत्कुम्भं चित्रायांवैधृतौतथा ॥ संपूर्णाप्रतिपद्देवचित्रायुक्तायदाभवेत् ॥  
 वैधृत्यावापियुक्तास्यात्तदामध्यंदिनेरवौ ॥ अभिजित्तुमुहूर्तयत्तत्रस्थापनमिष्यतइ  
 ति ॥ चित्रादिनिषेधेमलंचिंत्यम् । इदंकलशस्थापनंरात्रौनकार्यं । नरात्रौस्थाप  
 नंकार्यंनचकुम्भाभियेचनमितिसात्स्योक्तेः । भास्करोदयमारभ्ययावत्तदशनाडि  
 काः ॥ प्रातःकालइतिप्रोक्तःस्थापनारोपणादिष्ठिति ॥ विष्णुधर्मोक्तेश्च ( रु  
 द्रयामले ) स्नानंमंगलिकंकृत्वाततोदेवींप्रपूजयेत् ॥ शुभाभिर्मूर्तिकाभिश्चपूर्वं  
 कृत्वातुवेदिकां ॥ यत्रान्वैवापयेत्तत्रगोधूमैश्चापिसंयुतान् ॥ तत्रसंस्थापयेत्कुम्भं

विधिनामंत्रपूर्वकं ॥ सौवर्गाराजतंवापिताम्रं मृन्मयजंतुवेति ॥ अथपूजाविधिः ।  
सचजयंतीमंत्रेणानवाक्षरेणकार्यः ( तदुक्तंदुर्गाभक्तितरंगिरायां देवीपुराणे ) कु  
र्याद्विद्यास्तुमंत्रेणपूजांक्षीरघृतादिभिर्युक्ता । जयंतीमंगलाकालीभद्रकालीक  
पालिनी ॥ दुर्गाक्षिमाशिवाधात्रीस्वधास्वाहानमोस्तुते ॥ अनेनैवतुमंत्रेणपूजापहो  
मौतुकारयेदिति ॥ ओं दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहेति नवाक्षरः । तत्रप्रतिपदिप्रातरभ्यंगं  
कृत्वा । देशकालौ संकीर्त्यममेहजन्मनिदुर्गाप्रीतिद्वारासर्वापच्छांतिपर्वकदीर्घा  
युर्विपुलवनपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसंततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभशत्रुपराजय  
सदभीष्टसिद्धयर्थं शारदन्वरात्रप्रतिपदिविहितकलशस्थापन दुर्गापूजाकुमारी  
पूजादिकरिष्ये । इतिसंकल्प्यमहीद्यौरितिभूमिस्पृष्ट्वा । ओषधयःसमितिय  
वान्निसिष्य । आकलशेठिवतिकुंभंस्थाप्य । इमंमेगंगेइतिजलेनापर्य । गंधद्वारा  
मितिगंधं । याओषधीरितिसर्वोषधीः । कांडातकांडादितिदूर्वाः । अश्वत्थेवइ  
तिपंचपल्लवान् । स्योनापृथिवीतिसप्तमृदः । याःफलिनोरितिफलं । सहिरत्ना  
नीतिपंचरत्नानि । हिरण्यंक्षिप्त्वा । युवासुवासाइतिवस्त्रेणावेश्य । पूजादि  
वीतिपूर्णापात्रंनिधाय । तत्रवरुणंसंपूज्य । जीर्णान्जुतनायांवाप्रतिमायांदुर्गा  
मावाह्यपूजयेत् । तद्यथापूर्वाक्तमंत्रमुक्त्वा । आगच्छवरदेदेविदैत्यदर्पनियुदनि ॥  
पूजांगृहाराधुमुखिनमस्ते शंकरप्रिये ॥ सर्वतीर्थमयंवारिसर्वदेवसमन्वितम् ॥ इमं  
घटंसमागच्छतिसुदेवगणैः सह ॥ दुर्गेदेविसमागच्छसन्निध्यमिहकल्पय ॥ बलिं  
पूजांगृहारात्वमष्टाभिः शक्तिभिः सहेत्यावाह्यपूर्वाक्तमंत्रेणोडशोपचारैः पूजयि  
त्वा । मायभक्तबलिकूष्मांडादिबलिवानिवेदयेत् । ततःकुमारीपूजा ( तदुक्तंहेमाद्रौ  
स्कांदे ) एकैकां पूजयेत्कन्यामेकवृद्ध्यातथैवच ॥ द्विगुणां त्रिगुणां वापिप्रत्येकं  
नवकंतुवा ( तथा ) नवभिर्लभतेभूमिर्मे श्रियाद्विगुणोनतु ॥ एकवृद्ध्यालभेतक्षेममेकै  
केनश्रियंलभेत ॥ एकवर्षातुयाकन्यापूजार्थं तां विवर्जयेत् ॥ गंधपुष्पफलादीनांप्री  
तिस्तस्यानविद्यते ॥ तेनद्विवर्षामारभ्यदशवर्षापर्यंतास्यपूजयान्त्वन्मयाः । तासां  
चक्रमेणकुमारिकात्रिमूर्तिः । कल्याणीरोहिणीकालीचंडिकाशांभवीदुर्गा  
सुभद्रेतिनामभिः पूजाकार्या । आसांचप्रत्येकंपूजामंत्राः । फलविशेषाश्चतत्रैव



ज्ञेयाः । सामान्यस्तु मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृगां रूपधारिणीं ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहं ॥ सर्वमभ्यर्चनं कुर्यात् कुमारिणां प्रयत्नतः ॥ कंचुकैश्चैव वस्त्रैश्च गंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ नानाविधिर्भक्ष्यभोज्यैर्भोजयेत्तपायसादिभिः (तथा) ग्रंथिस्फुटितशीर्षांगीं रक्तपुष्पव्रणांकितां ॥ जात्यंधां केकरां काशीं कुरूपांतनुरोमशाम् ॥ संत्यजेद्रोगिणीं कन्यां दासीगर्भसमुद्भवां (तथा) ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थं नृपवंशजाम् ॥ लाभार्थं वैश्यवंशोत्थां सुतार्थं शूद्रवंशजाम् ॥ दारुणोचांत्यजातानां पूजयेद्द्विधिनानर इति (अत्र वेदपारायणामप्युक्तं रुद्रयामले) एवं चतुर्वेदविदो विप्रान्सर्वान् प्रसादयेत् । तेषां च वरणां कार्यं वेदपारायणाय वैद्वितीति (तथा) एकोत्तराभिवृद्ध्या तु नवमीयावदेव हि ॥ चंडीपाठं जपेच्चैव जापयेद्वा विधानतः (तिथितत्त्वे वाराहीतंत्रे) प्रगावं चादितो जप्त्वा स्तोत्रं वा संहितां पठेत् ॥ अंते च प्रगावं दद्यादित्युवाचादिपरुषा ॥ आधारे स्थापयित्वा तु पुस्तकं प्रजपेत्सुधीः ॥ हस्तसंस्थापनादेव यस्माद्द्वैविफलं भवेत् ॥ स्वयंचलिखितं यच्च शूद्रेण लिखितं भवेत् ॥ अब्राह्मणेन लिखितं तच्चापि विफलं भवेत् ॥ ऋषिच्छंदादिकं न्यस्य पठेत् स्तोत्रं विचक्षणाः । स्तोत्रेन दृश्यते यत्र प्रगावं तत्र विन्यसेत् ॥ सर्वत्र पाठ्ये विज्ञेयस्त्वन्यथा विफलं भवेत् ॥ एवं नवमीपर्यंतं प्रत्यहं कुर्यात् (अत्र विशेषो हेमाद्रौ देवीपुराणे) यदाद्ये दिवसे कुर्याच्चंडिकापूजनादिकं ॥ द्विगुणांतद्द्वितीये द्वित्रिगुणांतत्तृतीये ॥ नवमीतिथिपर्यंतं वृद्ध्या पूजाजपादिकमिति ॥ एतेन वरात्रे पूजे वप्रधानां उपवासादित्वंगमिति गम्यते । तिथिह्रासे तु तिथिद्वयनिमित्तं पूजादिमहालयश्चाद्वेदेकदिने आवृत्त्या कार्यः । वृद्धौ तद्वदेवावृत्तिः ततो नवरात्रोपवासादिसंकल्पं कुर्यात् । स्वस्याशक्तावन्येन वा पूजादिकारयेत् । स्वयं वाप्यन्यतो वापि पूजयेत् पूजयितुं वेतितरंगिरायां देवीपुराणात् इदं च देवीपूजनं शुक्रास्तादावापिकार्यं (तदुक्तं धर्मप्रदीपे) नष्टे शुक्रे तथा जीवे सिंहस्थे च वृहस्पतौ ॥ कार्याचैव स्वदेव्यर्चा प्रत्यहं कुलधर्मत इति ॥ मलमासे तु वचनाभावाच्च भवति अत्र सायस्याश्च पूजनमुक्तम् (सदनरत्ने देवीपुराणे) आश्वयुक् शुक्लप्रतिपत्त्वातीययोगेशुभे दिने ॥ पूर्वमुच्चैः श्रवानामप्रथमं श्रियमावहत् ॥ तस्मात्साश्चैर्नैस्तत्र पूजयोसौ श्रद्धया सह ॥ पूजनी

याश्चतुरगानवमीयावदेवहि ॥ शांतिः स्वस्त्ययनं कार्यं तदा तेषां दिने दिने ॥ धान्यं  
भक्षात्कंकुयं चार्धसिद्धार्थकास्तथा ॥ पंचवर्गानसूत्रेणाग्रंथितेषां तु बंधयेत् ॥ वा  
यव्यैर्वास्त्रिगैः सौरैः शाकैर्मंत्रैः सवैष्णवैः ॥ वैश्वदेवैस्तथाग्नेयैर्होमः कार्यो दिने दि  
ने ॥ कल्पतरौ त्वेतदग्रेन्यदपि ॥ ज्येष्ठयोगे पुरातनगजाश्चाष्टौ महाबलाः पृथिवी  
मवहनपूर्वसशैलवनकाननां ॥ कुमुदैरावगां पद्मः पुठपदं तोयवामनः ॥ सुप्रतीको  
जनो नीलस्तस्मात्तांस्तत्र पूजयेत् ॥ शाक्रादृक्षात्समारभ्य नवम्यंतं च पर्ववत् ॥  
अथ बद्धोमादीत्यर्थः ( अथ प्रतिपदादिषु विशेषो दुर्गाभक्तिरंगिराया भविष्ये )  
केशसंस्कारद्रव्याणां प्रदद्यात् प्रतिपदिने ॥ पक्षौ लंघिती प्रायां केशसंयमहेतवे ॥  
पद्माङ्गोरमिति गौडपादः । दर्पणां च तृतीयायां सिंदूरालक्तकं तथा ॥ मधुपर्क  
चतुर्थ्यां तु तिलकं नेत्रमंडनं ॥ पंचम्यां संगरागं च शक्त्या लंकराणि च ॥ यस्यां  
विल्वतरौ बोधसायं संध्यासु कारयेत् ॥ सप्तम्यां प्रातरानीय गृहमध्ये प्रपूजयेत् ॥ उ  
पोषणमथाष्टम्यामात्मशक्त्या च पूजनं नवम्यामुग्रचंडायाः पूजां कुर्याद्विलिं तथा ॥  
संपूज्य प्रेक्षां कुर्याद्दशम्यां सारवोत्सवैः ॥ अनेन विधिनायस्तु देवीं प्रीणाय ते नरः ॥  
स्कंदवत् पालयेद्देवीं पुत्रधनकीर्तिभिः ( कस्यतत्त्वाणां विलेगे ) कन्यायां कृष्णापसे तु  
पूजयित्वा द्वेभेदिवा ॥ नवम्यां बोधयेद्देवीं महाविभवविस्तरैः ॥ शुक्लपक्षे च  
तुर्थ्यां तु देवीकेशविमोक्षणां ॥ प्रातरेव तु पंचम्यां स्नापयेत्सु शुभैर्जलैः ॥ दशम्यां सा  
यमकुर्वीत विल्ववृक्षे धिवासनं ॥ सप्तम्यां पत्रिकापजा अष्टम्यां चाप्युपोषणां ॥ पू  
जाचजागरणं चैव नवम्यां विधिवद्बलिः ॥ विसर्जनं दशम्यां तु क्रीडाकौतुकमंग  
लैः ॥ अत्र नवम्यां बोधनासामर्थ्यं दशम्यां बोधनमिति स्मार्ताः ॥ फलभूमार्थिनः स  
मुच्चय इत्यन्ये ( नवम्यां संवः कालिकापुराणो ) इत्येमास्तु सिते पक्षे नवम्यामाद्र्भेदि  
वा ॥ श्रीवृक्षे बोधयामित्वां यावत् पूजां करोम्यहं ॥ अत्र स्त्रीव्रते विशेषः परिभाषा  
यां ज्ञेयः ॥ ( अथाशौचे विशेषो निर्यायामृते विश्वरूपनिबन्धे ) आश्विने शुक्ल पक्षे तु प्रा  
रब्धेन वरात्रके ॥ श्रावाशौचे समुत्पन्नो क्रियाकार्यकथंबुधैः सुतके वर्तमाने च तत्रो  
त्पन्ने सदाबुधैः देवीपूजाप्रकर्तव्यापशुयज्ञविधानतः सुतके पूजनं प्रोक्तं दानं चैव वि  
शेषतः देवीमुद्दिश्य कर्तव्यं तत्र दोषो न विद्यत इति ( कालादशे विष्णुरहस्येऽपि ) पूर्व



संकल्पितं यच्च ब्रतं सुनियतं ब्रतैः ॥ तत्कर्तव्यं नैः शुद्धं दानार्चनविवाजितमिति गौड  
निबन्धेतिथितत्वेऽप्युक्तं आश्विनशुक्लपञ्चम्यादिशुक्लप्रतिपदादिषष्ठ्यादिसप्तम्या  
दिचैकं कर्म अतश्च मध्ये आशौचपातेऽपि न दोषः संकल्पो ब्रतसत्रयोरिति विष्णा  
क्तेरिति आरब्धं स्वयमेव कार्यं अनारब्धं त्वन्येन कारयेदिति दिवोदासः रज  
स्वलात् त्वन्येन कारयेत् मृतकादिकद्विशेषवचनाभावात् स्त्रीणां च न वरात्रे तांबूलादि  
चर्वणं भवति (तदुक्तं ब्रतहेमाद्रौ गारुडे) गंधालंकारतांबूलपुष्पमालानुलेपनं उपवा  
सेन दुष्टांतिदंतधावनमंजनमिति संहतं सभर्तृकोपवासविधयं अन्यश्चात्र विशेषः  
परिभाषायामुक्तः आश्विनशुक्लपञ्चम्यामुपांगललिता ब्रतं महाराष्ट्रे यूपसिद्धं तत्र  
यद्यपि कथायां कालविशेषो नोक्तस्तथापि रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवादि व्रतैः  
स्वनैरिति रात्रौ जागरोक्तेः शक्तिपूजायारात्रौ प्राशस्याच्च रात्रिचर्यापि नीग्राह्ये  
तिकेचित् वस्तुतस्तु वचनं विनारात्रिपूजायां मानाभावात् जागरस्य चांगत्वाद्युप  
वाक्यात् भुक्ता जागरणोक्तत्वे च द्वादश्याद्यर्घ्यव्रते तथा ताराव्रते युसर्वे युरात्रियोगो वि  
शिष्यत इति कालहेमाद्रौ वचनाच्च पूर्वाविद्धाग्राह्या रात्रिशब्दः पूर्वाविद्धावचन इति  
हेमाद्रिः अस्य च भुक्ता जागरणारूपत्वादिति साधु प्रतीतः भुक्ता जागरणं यत्रेत्ये  
कं पदं तस्मिन् ब्रते इत्यर्थः अन्यथा भुक्त्वेत्यसंगतः दिवोदासीत्येवं आश्विनशुक्ल  
पक्षे मूलनक्षत्रे सरस्वतीस्थापनं (यथोक्तं निर्णयामृते देवीपुराणे) मूलेषु स्थापनं दे  
व्याः पूर्वाषाढासंपूजनं ॥ उत्तरासुबलिंदद्याच्छुक्लवर्णेन विसर्जयेदिति (रुद्रयामले  
पि) मूलशुक्लसुराधीशपूजनीया सरस्वती ॥ पूजयेत्प्रत्यहं देव्या वद्वैष्णवमृषकं ॥  
नाद्यप्रापयेन्न बलिखेत्तांधीयीत कदाचन ॥ पुस्तके स्थापिते देवविद्याकामो द्विजो  
त्तमाः (संग्रहे) आश्विनस्य सिते पक्षे मेधाकामः सरस्वतीस ॥ मूलेन वा हये देवीं श्र  
वणेन विसर्जयेत् ॥ मूलस्याद्यपादे आवाहनमिति शिष्टाः श्रवणाद्यपादे च विस  
र्जयेत् ॥ आदिभागो निशायांतु श्रवणास्य यदा भवेत् ॥ संप्रेषणांतदा देव्या दशम्यां  
च महोत्सव इति ॥ चिंतामणौ ब्रह्मांडपुराणात् अथ यद्यो (गौडनिबन्धे देवीपुराणे)  
ज्येष्ठानक्षत्रयुक्तायां षष्ठ्या विल्वाभिसंवरां ॥ सप्तम्यां मूलयुक्तायां पत्रिकायाः प्र  
वेशनं ॥ पूर्वाषाढायुक्तायां पूजा होमाद्युपोषणां ॥ उत्तरेणानवम्यांतु बलिभिः

पूजयेच्छिवाम् ॥ अवगो नदशम्यां तु प्रणिपत्य विसर्जयेत् (कालिकापुराणे) बोध  
येद्विल्वशाखायां यद्यथा देवीं फलेषु च ॥ सप्तम्यां बिल्वशरदवांतामाहृत्य प्रातः पूज  
येत् ॥ पुनः पूजां तथा सप्तम्यां विशेषेण समाचरेत् ॥ जागरं च स्वयं कुर्याद्वलिदानं स  
हानिनि ॥ प्रभूतबलिदानं तु नवम्यां विधिवच्चरेत् ॥ विसर्जनं दशम्यां तु कुर्याद्वै सार  
वोत्सवैः ॥ धूलिकर्दमनिक्षेपैः क्रीडाकौतुकमंगलैः ॥ अत्र सर्वत्र तिथिनक्षत्रयोगा  
दरो मुख्यः कल्पः तदभावे तु तिथिरेव ग्राह्या ॥ तिथिः शरीरं देवस्य तिथौ नक्षत्रमा  
श्रितं । तस्मात् तिथिं प्रशंसंति नक्षत्रं न तिथिं नेति ॥ विद्यापतिलिखितवचनात् ति  
थिनक्षत्रयोर्योगे द्वयोरेवानुपालनं योगाभावे तिथिर्ग्राह्या देव्याः पूजनं कर्मणीति  
तत्रैव देवलोक्तेषु च अत्र च पत्री प्रवेशात् पूर्वद्युः सायंकाले यद्यभावे तत्पूर्वदिने धि  
वासनं कार्यं सायंकाले त्यंता सत्त्वे त्वधिवासनलोपः यद्यं सायं प्रकुर्वीत बिल्व  
वृक्षे धिवासनमिति पूर्ववचनादितिकल्पतरुः सायं श्रुतिः फलातिशयमात्रार्था  
न तु कर्मलोप इत्याचार्यचूडामणिः अत्र क्रमः बिल्वसमीपंगत्वा देवीं विल्वं च संपू  
ज्य प्रार्थयेत् तत्र मंत्रः ॥ रावणास्य वधार्थाय रामस्यानुग्रहाय च ॥ अकाले ब्रह्मणा  
ब्रह्मो देव्यास्त्रयि कृतः पुरा ॥ अहमत्याश्रितः यद्यं सायाह्नौ बोधयाभ्यंतः ॥ श्री  
शैलशिखरे जातः श्रीफलः श्रीनिकेतनः ॥ नेतव्यो सिसमागच्छ पूज्यो दुर्गास्त्विह  
पतङ्ग इति सर्वदेवीमधिवास्य परदिने निमंत्रितं बिल्वशाखापत्री प्रवेशं पूजां कुर्यात् (त  
दुक्तं हेमाद्रौ लिंगे) मूलाभावे तु सप्तम्यां केवलायां प्रवेशयेत् ॥ युग्माभ्यां न विल्व  
स्य फलाभ्यां शाखिकां तथा । तथैव प्रतिमां देव्याः स्नात्वाभ्युक्ष्य प्रवेशयेत् ॥ अत्र  
चोपवासपूजादौ दीपकी सप्तमी ग्राह्या ॥ न तु युग्मवाक्यात् पूर्वा । युगाद्यावर्षवृ  
द्धिप्रचसप्तमी पार्वती प्रिया ॥ रवेरुदयमीक्षंते न तत्र तिथियुग्मतेति कृत्य तत्त्वाणां  
बोधाह तवचनात् ॥ भगवत्याः प्रवेशादिविसर्गात् आश्चर्याः क्रियाः ॥ तिथावुदय  
गामिन्प्रां सर्वास्ताः कारयेद्बुधः ॥ इति तिथितत्त्वेनं दिकेश्वरपुराणाच्च । दुर्गाभि  
क्ति तर्ंगिराया मध्ये ब्रह्म ॥ तत्रापि घटिकातो म्यन्त्वे परानकार्या । व्रतोपवासनि  
यमेघटिकैकापियाभवेदिति देवलोक्तेरिति गौडीः ॥ दाक्षिणात्यास्तु पूर्ववचनम  
दृष्ट्वा युग्मवाक्यात् पूर्वा कुर्वति ॥ पत्रिका पूजा च पूर्वा क्लेशवकार्या । न तु सूतानु



रोधान्मध्याह्नादावितिकृत्यतत्त्वाणवेकतं । पत्रिकास्तु । रंभाकबीहरिद्राचज  
 यंतीबिल्वदाडिमौ । अशोकोमानवृक्षश्चधान्यादिनवपत्रिकाइतितत्रैवोक्ताः ॥  
 अस्यामेवसप्तम्यां देवीत्रिरात्रमुक्तंहेमाद्रौ ॥ प्रतिपदादिनवतिथियुपवासकर  
 णासमर्थेसप्तम्यादिदिनत्रयेवाकुर्यात् (तदाहधौम्यः) आश्विनेमासिशुक्लेतुकर्त  
 व्यंनवरात्रकं । प्रतिपदादिक्रमेणैवयावच्चनवमीभवेत् ॥ त्रिरात्रंवापिकर्तव्यंसप्त  
 म्यादियथाक्रमं (अतएवहेमाद्रौ देवीपुराणोसंगलब्रते) आश्विनेवाथवामाधेचैत्रेवा  
 थावरोपिवा । कृष्णाष्टम्यादिकर्तव्यं ब्रतं शुक्लावधिं हरेः । यावत् शुक्लाष्टमीशक्र  
 उपोष्यातुविधानतः । दानंहीमोजपःपूजा कन्याभोज्यास्तथान्वहम् ॥ महा  
 भैरवरूपेणाश्रित्यमालधराश्चये । पूजनीयाविशेषेणावस्त्रैर्ग्रामिपुरादिषु ॥ इति  
 मासचतुष्टयेभिधाय ॥ अन्यत्रापि । अथवानवरात्रंचसप्तमंचत्रिकंदिवा । एक  
 भक्तेननक्तेनायाचितोपोषितैः क्रमादिति ॥ पूजयेताश्विनेशक्रयावच्छुक्लाष्टमी  
 भवेत् । सर्वकार्याणामिच्छांतिशक्रनास्त्यवसंशयइत्युक्तं ॥ दिवेत्येकरात्रमुक्तं  
 (देवीपुराणो) नवरात्रब्रतेशक्तस्त्रिरात्रंचैकरात्रकं । ब्रतंचरितयोभक्तस्तस्मैदास्या  
 मिवांछितमिति ॥ तत्रापिसप्तम्याः पूजनेपूर्वाक्तो निर्णयः ॥ अव्रतिथियोगपद्ये  
 तत्रैवापवासः ॥ तिथिद्वयनिमित्तं पूजादिकृतुभेदेन (अत्रविशेषो निर्णयामृतेभवि  
 श्ये) सप्तम्यांनवगेहानिदारुजानिनेवानिच । एवंवावित्तभावेनकारयेत्सुसमाहि  
 तः ॥ दुर्गागृहंप्रकर्तव्यंचतुरसंशुशोभनम् । तन्मध्येवेदिकांकुर्याच्चतुर्हस्तांसमांशु  
 भां ॥ तस्यांसिंहासनंसौमंकांबलाजिनसंयुतम् ॥ तत्रदुर्गाप्रतिष्ठाप्यसर्वलक्षणासंयु  
 तां ॥ भुजैश्चतुर्भीरुचिरैर्दशभिर्विविभूषिताम् ॥ तप्तहाटकवर्णाभां त्रिनेत्रांशशि  
 शेग्राम ॥ अनेककुसुमाकीर्णांकपर्देनसुशोभिताम् । नितंबविंबसच्चक्रकिंकिणी  
 क्कारानादिनी ॥ शूलचक्रदंडशक्तिवज्रचापासिधारिणी । घंटासमालाकरक  
 पानपात्रलसत्करां ॥ तदग्रेच्छिन्नशिरसमाह्वयंसुधिराभुतम् ॥ निःसृतार्धतनंकंठ  
 नालेचर्मसिधारिणाम् । देवीधृतकरग्रीवंशलेनोरसिताडितम् । नागपाशेनविस्मि  
 तंहर्यक्षेणापिभद्रतम् । वसद्रुधिरवक्रेणाधुन्वतोर्ध्वसटावुया ॥ सर्वतीमातृचक्रेणा  
 सेव्यमानांसुरैस्तथेति । तत्रदेवीप्रकर्तव्याहैमीवाराजतातथा ॥ मृदाक्षीलक्षणा

पेताखड्गशूलेन पूजयेत् ॥ बार्सीदारुमयी देवी (मूर्तिस्थापने विशेषो दुर्गाभक्तित  
रंगिराया देवीपुराणो) याम्यास्या शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जयवर्धिनी । पश्चिमाभिमुखी  
नित्यं नस्थाप्या सौम्यादिङ्मुखी (प्रतिमाभावे विशेषस्तत्रैव) हैमराजतमृद्धालु  
शैलचित्रा पितापिवा । खड्गेशूलेर्चिता देवी सर्वकामफलप्रदा ॥ यद्यद्यस्यायुधं  
प्रोक्तं तस्मिंस्तां प्रतिपूजयेत् । देवीभक्त्याऽर्चिता पुंसां राज्यायुः सुतसौख्यदा ॥ (क  
त्यतत्त्वाणां वेकालिकापुराणो) लिंगस्थां पूजयेद्देवीमंडलस्थां तथैव च । पुस्तक  
स्थां महादेवीं प्रावके प्रतिमा मुच ॥ चित्रे च त्रिशिखे खड्गेशूले जलस्थां वापि पूजयेत् ।  
विल्वप्रवर्यजेद्देवीं तथा जातीप्रसूनकैः ॥ नालापिष्टकनैर्वेद्यैर्धूपदोषैर्मनोहरैः । भग  
लिङ्गाभिधानैश्च भगलिङ्गप्रगीतकैः ॥ भगलिङ्गक्रियाभिप्रचप्रीगायेद्वरचंडिका  
स ॥ परैर्नासिष्यते यस्तु यः पराक्षासिपत्यपि ॥ तस्य क्रुद्धा भगवती शापं दद्यात्सु  
दारुणम् ॥ चित्रमृन्मया दौस्नानाद्यसंभवे तत्रैवोक्तम् । अंतिके स्थापिते खड्गेशूला  
पये हर्षणो यवेति । अथ सप्तमीपूजाविधिः । प्रतिपद्युक्तविधिना फलसंकीर्तनां तेन व  
पत्रिका मृन्मया दुर्गापूजावलिदानानि कारिष्य इति संकल्प्य पूर्वनिमंत्रितविल्वस  
मीपंगत्वासंपूज्यम् । आगच्छ सर्वकल्याणीति पूर्वाक्तमंत्रं पठित्वा विल्ववृक्षमहा  
भागसदा त्वं शंकरप्रिय ॥ गृहीत्वा तव शाखां च देवीपूजां करोम्यहम् ॥ शाखाच्छे  
दोद्भवं दुःखं न वकार्यं त्वया प्रभो । गृहीत्वा तव शाखां च पूजादुर्गेति चरमृतिः ॥ उ  
त्तिष्ठ पत्रिके देवि सर्वकल्याणाहेतवे । पूजां गृहाणा सकला मस्माकं वरदाभव । हेरु  
मांदारकैलासहिमवच्छिखरे गिरौ । जातः श्रीफलवृक्षत्वमंबिकायाः सदा प्रियाः  
इति संप्राय्य ॥ ओं हुं छिंधि फट् फट् । ओं फट् स्वाहेति छित्त्वा संपूज्य ॥ ओं चा  
मुं डे चल चल इति वाद्यघोषेणा देवीतां च गृहं प्रवेश्य । आरोपितासि दुर्गे त्वं मृन्मया  
श्रीफले पिच । स्थिरानितां तं भूत्वा च गृहे त्वं कामदा भवेति स्थिरीकृत्य रंभादिपत्रि  
काः । पंचगव्येन पंचामृतेन च स्नानं कृत्वा वस्त्रेणावेष्ट्य स्थापयेत् । ततः पर्ववत्सं  
कल्पं कृत्वाऽसतनादाय देवीमावाहयेत् ॥ तत्र मंत्रः । आवाहयान्यहं देवि मृन्मया  
श्रीफले तथा । कैलासशिखरादेर्विवंध्याद्रेर्हिमपर्वतात् ॥ आगत्य विल्वत्वायां  
चंडिके कुरु सन्निधिं ॥ स्थापितासि मया दुर्गे पूजयेत्वां प्रसीद मे आयुरारोग्यमैश्वर्यं



र्यदेहिदेविनमोस्तुते । दुर्गेदुर्गस्वरूपासिसुरतेजोमयेर्चितेसदानंदकरेदेविप्रसीदम  
 मसिद्धये । गह्वोर्हिभगवत्यंबशत्रुक्षयजयप्रदे ॥ भक्तितःपजयामित्वांदुर्गेदेविसुरा  
 र्चिते । पल्लवैश्चफलोपेतैःपुठपैश्चसुमनोहरैः ॥ पल्लवैर्स्थितेदेविपजयित्वांप्र  
 सीदमे । दुर्गेदेविद्वहागच्छसार्निध्यामिहकल्पय ॥ यज्ञभागान्नृहारात्वंयोगिनी  
 कोटिभिःसहेति ॥ ततोमूलमंत्रेणापाद्यादिगंधांतोपचारैः ॥ अमृतोद्वचं श्रीवृक्षं  
 शंकरस्यसदाप्रियम् ॥ बिल्वपत्रंप्रयच्छामि पवित्रंतेसुरेश्वरीतिबिल्वपत्रम् ॥ ब्र  
 ह्मविष्णुशिवादीनांद्रोणापुठपंसदाप्रियम् । तत्तेदुर्गेप्रयच्छामिसर्वकामार्थसिद्धये  
 इतिद्रोणापुठपंनिवेद्य । धूपादिदक्षिणांतांपूजांमलेनकृत्वाप्रार्थयेत् ॥ ओसमहि  
 याग्निमहामायेचामुंडेमुंडमालिनिआयुरारोग्यमैश्वर्यदेहिदेविनमोस्तुते ॥ कुंक  
 मेनसमालब्धेचंदनेनविलेपिते । बिल्वपत्रकृतापीडेदुर्गेहंशरगांगतः ॥ रूपंदेहिय  
 शोदेहिभगंभगवतिदेहिमे । पुत्रान्देहिधनंदेहिसर्वान्कामांप्रचदेहिमे ॥ सर्वसंग  
 लमांगल्येइतिचसंप्राप्त्यपत्रिकाःपूजयेत् ॥ कदल्यांब्रह्मणीं । दाडिमेरक्तदंति  
 कां । धान्येलक्ष्मीं । हरिद्रायांदुर्गा । मानेचामुंडास । कवौकालिकां । बिल्वे  
 शिवांअशोकेशोकरहितां । जयंत्यांकार्तिकींचावाह्यसंपूज्यदुर्गाथैबलिंदद्यात् ॥  
 अत्रशस्त्रादिपूजावक्ष्यते ॥ ततस्तुतिंवदेत् । तदुक्तंशिवरहस्ये । दुर्गाशिवांशान्ति  
 करींब्रह्मणींब्रह्मणाःप्रियास । सर्वलोकप्रणोत्रींचप्रणामामिसदाशिवास ॥ संग  
 लांशोभनांशुद्धांनिठकलांपरमांकलास । विश्वेश्वरींविश्वमातांचंडिकांप्रणामा  
 म्यहम् ॥ सर्वदेवमयींदेवींसर्वरोगभयापहास । ब्रह्मेशविष्णुनमितांप्रणामामिस  
 दाउमास ॥ विंध्यस्थांविंध्यनिलयांदिव्यस्थाननिवासिनीम् । योगिनींयोगमा  
 तांचर्चंडिकांप्रणामाम्यहम् ॥ ईशानमातरंदेवीमोष्वरीमोष्वरप्रियास । प्रणतो  
 स्मिसदादुर्गांसंसारार्णवतारिणीम् ॥ यइमंपठतेस्तोत्रंशृणुयाद्वापियोत्तरः । समुक्तः  
 सर्वपापैस्तुमोदतेदुर्गायासह ॥ अथमहाष्टमीसाचपरयुताशुक्लपक्षेष्टमीचैवशुक्ल  
 पक्षेचतुर्दशीपूर्वविद्वानकर्तव्याकर्तव्यापरसंयुतेतिब्रह्मवैवर्त ॥ मदनरत्नेस्मृ  
 तिसंग्रहे । शरन्महाष्टमीपूजानवमीसंयुतासदासप्तमीसंयुतानित्यंशोकसंतापकारि  
 णी ॥ जंभेनसप्तमीयुक्तापूजितातुमहाष्टमी ॥ इंद्रेननिहतोजंभस्तस्माद्धानवपंगवः ॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सप्तमीमिश्रिताष्टमी ॥ वर्जनीयाप्रयत्नेन मनुजैः शुभकांक्षिभिः ॥  
 सप्तमीं शल्यसंयुक्तां मोहादज्ञानतोपि वा । महाष्टमीं प्रकुर्वीत नरकं प्रतिपद्यते ।  
 सप्तमी कलया यत्र परतश्चाष्टमी भवेत् । तेन शल्यमिदं प्रोक्तं पुत्रपौत्रस्य प्रदत्तम् ॥  
 तथा । पुत्रान्वहंति पशून्वहंति हंति राष्ट्रं सराजकम् । हंति जातान्जातांश्च सप्तमीस  
 हिताष्टमी ॥ तेन नात्र विमुहूर्तवेधः । तदा घटिका मात्रा प्योदयिकी ग्राह्या । व्रतोप  
 वासनियमे घटिकैकापि या भवेदिति देवलोक्तेः । गौडा अप्येवमाहुः । अतस्त्वो  
 क्तं भोजराजेन । न च सप्तमी शल्यसमोपहतेति इयं भौमेति प्रशस्ता । अष्टम्या  
 मुदिते सूर्ये दिनांते नवमी भवेत् । कुजवारो भवेत्तत्र पञ्जनीयाप्रयत्नत इति ॥ मदनर  
 त्नेव च नात् ॥ सप्तमी शल्यसंविद्धा वर्जनीया सदाष्टमी ॥ स्तोकापि सामहापुराया  
 यस्यां सूर्योदयो भवेदिति ॥ मदनरत्ने स्मृतिसमुच्चयवचनात् । अष्टमी नवमी युक्ता  
 नवमी चाष्टमी युतेति । पाञ्चवचनाच्च ॥ इयमेव मूलयुक्ता चेन्महानवमी संज्ञा ॥ आ  
 श्वयुक् शुक्लपक्षे याष्टमी सूलेन संयुता । सामहानवमी प्रोक्ता त्रैलोक्येऽपि सुदुर्लभेति  
 हेमाद्रौ स्कांदात् । मूलयुक्तापि सप्तमी युता चेत्त्याज्यैवेत्युक्तं निर्णायामृतेदुर्गात्सवे  
 सूलेनापि हि संयुक्ता सदा त्याज्याष्टमी बुधैः लेशमात्रेण सप्तम्या अपि स्याद्यदि दृष्टि  
 ति ॥ महाष्टमी पूर्वद्युः पूर्वाह्णव्यापित्वे । पूर्वान्यथा परैवेति निर्णायदीपमतस्य । स  
 तच्चतुच्छत्रादुपेक्ष्यम् । रूपनारायणाधृते देवीपुरारो ॥ सप्तमीवेधसंयुक्तायैः कृता  
 तु महाष्टमी । पुत्रदारधनैर्हीना भ्रमंती हर्षिणा च वत्तयत्तु सप्तम्या मुदिते सूर्ये परतो या  
 ष्टमी भवेत् । तत्र दुर्गात्सर्वंकुर्यान्न कुर्यादपरेहनीति ॥ विश्वरूपनिबन्धवचनंतदा  
 श्विनकृष्णाष्टमी विषयम् । कन्यायां कृष्णा पक्षे तु पूजयित्वाष्टमी दिने नवम्यां बोध  
 ये देवीं गीतवादित्रनिःस्वनैरिति देवीपुरारो ॥ तथापि पूजोक्तेरिति हेमाद्रौ निर्ण  
 यामृते चोक्तम् ॥ यानितु । भद्रायां भद्रकाल्याश्च मध्ये स्यादर्चनक्रिया । तस्माद्  
 द्वे सप्तमी विद्धा कार्या दुर्गाष्टमी बुधैरिति ॥ यच्च ॥ मोहचूलोत्तरे ब्राह्मे च । आश्वि  
 नस्य सितारम्यामर्धरात्रे तु पार्वती । भद्रकाली समुत्पन्ना पूर्वाया हासमायुतेति तथा  
 तत्राष्टम्यां भद्रकाली दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ प्रादुर्भूता महाघोरा योगिनी कोटिभिः  
 सहेति ॥ यच्च मदनरत्ने । महाष्टम्या श्वनिमासि शक्ता कल्याणाकारिणी ॥ स



तस्यापि युताकार्यामूलेन तु विशेषत इति ॥ तानि परदिनेष्वभ्याभावविषयाणीति  
 मदनरत्ने उक्तम् ॥ यत्तु तत्रैव परदिनेष्वमी सत्त्वेऽपि पूर्वविद्धाविधायकं वचनम् । यदा  
 षमी तु संप्राप्य ह्यस्तं याति दिवाकरः । तत्र दुर्गोत्सवं कुर्यान्न कुर्यादपरेहनि ॥ दुर्भि  
 संतत्र जानीयात् नवम्यां यत्र पूज्यत इति तत्परदिने दशम्या नवम्याभावविषयम् ।  
 यदा सूर्योदयेन स्यान्नवमाचापरेहनि । तदा षमीं प्रकुर्वीत सप्तम्या सहितां नृपेति त  
 त्रैव स्मृतिसंग्रहोक्तेः ॥ उत्तरास्तिथयो यत्र क्षयं यांति न राधिप । पूर्वाषमीं तदा कु  
 र्यादन्यथा त्वशुभं भवेदिति दुर्गोत्सवोक्तेऽप्येति मदनरत्नम् ॥ वस्तुतस्तु इदं वचनद्व  
 यं अष्टमी नवम्योः सूर्योदयद्वयसंबन्धपरम् ॥ अतएव नवमी चेति चकारादष्टमी च  
 तिथय इति बहुवचनोदष्टमी नवमी दशम्युक्ता ॥ अन्यथा पूर्वोक्तविरोधादिति दि  
 क् ॥ यत्तु । अहं भद्रा च भद्राहं नावयो रंतरं क्वचित् । सर्वसिद्धिं प्रदास्यामि भद्राया  
 मर्चिता ह्यहमिति देवीपुराणो । तद्विष्टिकरणा मध्ये पूजाविधानार्थम् । विष्टित्य  
 क्ता महाष्टम्यां मम पूजां करोतियः । तस्य पूजाफलं न स्यात्तेनाहमवमानितेति तत्रै  
 वोक्तेरिति निर्णयामृते ॥ तथा कालिकापुराणो । सप्तम्यां पत्रिका पूजा अष्टम्या  
 चाप्युपोषणम् ॥ पूजा च जागरणं चैव नवम्यां विधिवद्वलिरिति ॥ अष्टम्युप  
 वासश्च पुत्रवतानकार्यः उपवासं महाष्टम्यां पुत्रवान्न समाचरेत् ॥ यथा तथा वा  
 पूतात्मा त्रतो देवीं प्रपूजयेदिति तत्रैवोक्तेः ॥ रूपनारायणीये ब्राह्मे । अतोर्थ  
 पूजनीया सा तस्मिन्नहनि मानवैः ॥ उपोषितैर्वस्त्रधूपमाल्यरत्नानुलेपनैः ॥ पशु  
 भिः पानकैर्हृद्यैरात्रौ जागरणेन च ॥ दुर्गागृहे च शस्त्राणि पजितव्यानि पण्डितैः ॥  
 वाद्यभांडानि च हस्तानि कवचान्यायुधानि च ॥ अवविशैश्वो हेमाद्रौ निर्णयामृते  
 भविष्ये । आश्वयुक् शुक्लपक्षस्य अष्टमी मूलसंयुता ॥ सामहानवमीनामत्रैलोक्ये  
 पिसु दुर्लभा ॥ कन्यागते सवितरि शुक्लपक्षे षमी युता ॥ मूलनक्षत्रसंयुक्ता सामहा  
 नवमी स्मृता ॥ नवम्यां पूजिता देवी ददात्यभिमतं फलम् ॥ सापराया सापवित्रा  
 च साधन्या सुखदायिनी । तस्यां सदा पूजनीया चासुंडासुंडमालिनी ॥ सदेत्युक्ते  
 नित्यतापि । तस्यां ये ह्युपयुज्यन्ते प्राणिनो महिषादयः । सर्वे ते स्वर्गातिं यांति ह्यनतां  
 पापं न विद्यते ॥ यावन्न चालयेद्दगात्रं पशुस्तावन्न हन्यते ॥ न तथा बलिदानेन पुष्टप

धूपविलेपनैः ॥ यथासंतुष्यतेमेधैर्महिधैर्विंध्यावासिनी ॥ एवंचविंध्यावासिन्यां  
नवरात्रोपवासतः ॥ एकभुक्तेननक्तेनस्वशक्त्यायाचितेनच ॥ पजनीयाजनेर्दे  
वीस्थानेस्थानेपुरेपुरे ॥ गृहेगृहेभक्तिपरैग्रामेग्रामेवनेवने ॥ स्नातैः प्रमुदितैर्दृष्टैर्वा  
ह्यगौःसत्रियैर्नृपैः ॥ वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुक्तैर्स्तेच्छैरन्यैश्चमानवैः ॥ स्त्रीभिश्चकुरु  
शार्दूलतद्विधानमिदंशृणु ॥ ज्याभिलाषीनृपतिःप्रतिपत्प्रभृतिक्रमात् ॥ लौहाभि  
सारिकंकर्मकारयेद्यावदष्टमीतिलौहाभिसारिकंकर्मविधानंतत्रैवोक्ता । प्राशुदक्  
प्रवरोदेशेयताकाभिरलंकृतम् । मंडपंकारयेद्विव्यंनवसप्तकरंपरम् ॥ षोडशहस्त  
मित्यर्थः ॥ आग्नेय्यांकारयेत्कुंडंहस्तमात्रंशुभम् । मेखलात्रयसंयुक्तंयोन्या  
श्चत्थदलाभया ॥ राजचिह्नानिसर्वाणि शस्त्रायस्त्राणायानिच । आनीयमंड  
पेतानि सर्वाण्यत्राविवासयेत् ॥ ततस्तुब्राह्मणाःस्नातःशुक्लांबरधरःशुचिः । उं  
कारपूर्वकैर्मन्त्रैस्तिलिगैर्जुह्यादधृतम् ॥ शस्त्रास्त्रमंत्रैर्होतव्यंपायसंघृतसंयुतम् ॥ हुत  
शेषंतुरंगाणांराजानमुपहारयेत् ॥ लौहाभिसारिकंकर्मतेनैवऋषिभिःस्मृतम् ।  
घृतपल्ययनानश्चान्नगजांश्चसमलंकृतान् ॥ भ्रमयेन्नगरेनित्यंबन्दिघोषपुरःसरम् ॥  
प्रत्यहंनृपतिःस्नात्वासंपूजयपितृदेवताः ॥ पूजयेद्राजचिह्नानि फलमाल्यविलेप  
नैः ॥ यस्याभिसरणाद्राज्ञोविजयःसमुदाहृतः ॥ पूजामंत्रानप्रवक्ष्यामिपुराणोक्ता  
नहंतवायैःपूजिताःप्रयच्छंतिकीर्तिमायुर्यशोबलम् ॥ अथमंत्राविष्णुधर्मोत्तरोक्ताः  
छत्रस्य । यथांबुदच्छादयतिशिवायेमांवसुंधराम् ॥ तथाछादयराजानंविजया  
रोग्यवृद्धये ॥ चामरस्य । शशांककरसंकाशक्षीरडिंडीरपांडुर । प्रोत्सारया  
शुदुरितंचामरामरदुर्लभम् ॥ अश्वानांवृद्धयर्थैरेवंतपूजनमहंकरिष्ये । सूर्यपुत्रमहा  
बाहोछायाहृदयनंदन । शांतिकुरुतुरंगाणांरेवंतायनमोनमः ॥ अनेनमंत्रेणापजा ॥  
अथाप्रवस्यगंधर्वकुलजातस्त्वंसाभयाःकुलदूयकः ॥ ब्रह्मणाःसत्यवाक्येनसौमस्य  
वरुणास्यच ॥ प्रभावाच्चहुताशस्यवर्धयस्त्वंतुरंगमान् । तेजसाचैवसूर्यस्यमुनीनांत  
पसातथा ॥ रुद्रस्यब्रह्मद्वयेणापवनस्यवलेनच । स्मरस्त्वंराजपुत्रंत्वंकौस्तुभंचम  
णांस्मर ॥ यांगतिंव्रह्महागच्छेन्मातृहापितृहातथा ॥ भूराहानृतवादीचक्षत्रिय  
श्चपराङ्मुखः ॥ सूर्याचंद्रमसौवायुर्यावत्पश्यतिदुष्टकृतम् ॥ व्रजाश्चतांगतिंस्त्रिप्रं



तच्चपापंभवेत्तव ॥ निठकृतोयदिगच्छेथायुद्धाध्वनितुरंगम । रिपून्विजित्यसमरे  
सहभ्रात्रासुखीभवेति ॥ अथध्वजस्य । शक्रकेतोमहावीर्य श्यामवर्णार्चयाम्य  
हम् । पत्रिराजनमस्तेस्तुतयानारायणाध्वज ॥ काश्यपेयारुणाभ्रातर्नागरेविष्णा  
वाहन ॥ अप्रमेयदुराध्वर्यसोदेवारिसूदन ॥ गरुत्मान्मासुतगतिस्त्वयिसन्निहि  
तोयतः ॥ सारवंत्यायुधान्यत्ररक्षत्वंचरिपनुदह ॥ अथपताकायाः । हुतभुरवस  
वोरुद्रावायुःसोमोमहर्षयः ॥ नागकिन्नरगंधर्वयक्षभतगराग्रहाः ॥ प्रमथास्तुस  
हादित्यैर्भूतेशोमाह्वभिःसह ॥ शक्रःसेनापतिःस्कंदो वसुणाप्रचाश्रितास्त्वयि ॥  
प्रदहंतुरिपून्सर्वान्नराजाविजयमृच्छतु ॥ यानिप्रयुक्तान्यरिभिरायुधानिसमंत  
तः ॥ पतंतपरिशत्रूणांहतानितवतेजसा ॥ हिरण्यकशिपोर्युद्धेयुद्धेदेवासुरेतथा ॥  
कालनेमिवधेयद्वद्यद्वात्रिपुरघातने ॥ शोभितासितथैवाद्यशोभयारमांप्रचसंस्मर ॥  
नीलानश्चेतानिमानदृष्ट्वानश्यंत्वाशुनृपारयः ॥ व्याधिभिर्विविधैर्धोरैःशस्त्रै  
श्चयुधिनिर्जिताः ॥ पूतनारेवतीनाम्नाकालरात्रिश्चयास्मृता । दहत्वाशुरि  
पून्सर्वान्पताक्रेत्वंमयार्चिता ॥ अथगजस्य । कुमुदैरावराणौपचःपुष्टपदंतोयवा  
मनः । सुप्रतीकोजनीनीलगतेष्टौदेवयोनयः ॥ तेषांपुत्राश्चपौत्राश्चवनान्यष्टौ  
समाश्रिताः । मंदोभद्रोमृगश्चैवगजःसंकीर्णवच ॥ वनेवनेप्रसतास्तेयथानि  
सुमहर्षितव । पांतुत्वांसर्वोरुद्राआदित्याःसमरुद्रगणाः ॥ भर्तारिरक्षणागेंद्रस्वा  
मिवत्प्रतिपालयताम् । अवाप्नुहिजयंयुद्धेगमनेस्वस्तिनोव्रज ॥ श्रीस्तेसोमा  
द्वलंविष्णोस्तेजःसूर्याज्जवोनिलात् ॥ स्थैर्यमेरोर्जयंरुद्राद्यशोदेवात्पुलंदरात् ॥  
युद्धोरक्षंतुनागास्त्वांदिशश्चसहदेवतैः । अश्विनौसहगंधर्वैः पांतुत्वांसर्वतःस  
देति(अथखड्गमंत्रः)असिर्विशसनःखड्गस्तीक्ष्णाधारोदुरासदः । श्रीगर्भोविज  
कश्चैवधर्मधारस्तथैवच ॥ सतानितवनानामानिस्त्रयमुक्तानिवेधसा ॥ नक्षत्रंकात्ति  
कातेतुगुरुर्देवोमहेश्वरः ॥ रोहिण्यश्चशरीरंतेदेवतंचजनार्दनः । पितापिताम  
होदेवस्त्वंमांपालयसर्वदा ॥ नीलजीमतसंकाशस्तीक्ष्णादंष्ट्रःकृशोदरः । भाव  
शुद्धोमर्षराश्चअतितेजास्तथैवच ॥ इयंयेनधृताक्षोणीहतप्रचमहिषासुरः । ती  
क्ष्णाधारायशुद्धाय तस्मैखड्गायतेनमः (अथक्षुरिकायाः) सर्वायुधानांप्रथमंनि

र्मितासिपिनाकिना । शलायुधादिनिट्कृष्यकृत्वामुष्टिग्रहंशुभं ॥ चंडिकायाः प्रद  
त्तासि सर्वदुष्टनिर्वहणी ॥ तथा विस्तारिता चासि देवानां प्रतिपादिता ॥ सर्वसत्त्वां  
गभूतासि सर्वा शुभनिर्वहणी । कुरिकेरसमानित्यं शांतिं च्छनमोस्तुते (अथ क  
द्वारकपूजा) रक्षांगानि राजानुरक्षरक्षवाजिधनानि च ॥ समदेहं सदारसकद्वार  
कनमोस्तुते ॥ कद्वारको मध्यदेशे कटारीति प्रसिद्धा (अथ धनुः पूजा) सर्वा युवमहा  
मात्र सर्वदेवारि सुदन । चापसांसमरे रक्षसाकं शरवरैरिह ॥ धृतं कृष्योन रक्षार्थं सं  
हाराय हरेणा च । त्रयीमूर्तिगतं देवं धनुरस्त्रं न साम्यहम् (अथ कुंतपूजा) प्रासपातय  
शत्रूंस्त्वमनयानाकमायया । गृहाणा जीवितं ते यां समसैन्यं च रक्षताम् (अथ चर्मपू  
जा) शर्मप्रदस्त्वं समरे चर्मसैन्ये यशोद्यमे ॥ रक्षमां रक्षणीयो हं तापनेयनमोस्तुते  
(अथ कनकदंडमंत्रः) प्रोत्सारणाय दुष्टानां साधुसंरक्षणाय च ॥ ब्रह्मणानिर्मित  
श्चासि व्यवहारप्रसिद्धये ॥ यशोदेहि सुखं देहि जयदोभवभूपतेः । ताडयस्त्वरिपू  
नसर्वान् हेमदंडनमोस्तुते (अथ दुंदुभि मंत्रः) दुंदुभे त्वं सपत्नानां घोरो हृदयकंपनः ।  
भवभूमिपसैन्यानां तथा विजयवर्धनः ॥ यथा जीमूतघोषेणाप्रहृष्यंति च वर्हिणाः ।  
तथास्तुतव शब्देन हर्योस्माकं मुदा बहः ॥ यथा जीमूतशब्देन स्त्रीणां त्रासो भिजाय  
ते । तथा त्रतव शब्देन त्रस्यंस्त्वस्मत्तद्विद्योरगो (अथ शंखमंत्रः) पुरायस्त्वं शंखपुराया  
नां संगलानां च संगलम् । विष्णुना विधृतो नित्यमतः शांतिप्रदो भव (अथ सिंहासनमं  
त्रः) विजयोजयदोजेतारिपुघाती शुभंकरः । दुःखहा धर्मदः शांतिः सर्वारिष्टविनाश  
नः ॥ एते वै सन्निधौ यस्मात्तव सिंहासनावलाः । तेन सिंहासनेति त्वं देवैर्मंत्रैश्च गी  
यसे ॥ त्वयि स्थितः शिवः शांतिस्त्वयि शक्रः सुरेश्वरः । नमस्ते सर्वतो भद्रं भद्रदोभवभू  
पतेः त्रैलोक्यजयसर्वस्वसिंहासननमोस्तुते । तथैव कर्मचिह्नानि स्थानि पूज्यानि शि  
लिपिभिः ॥ लोहाभिसारिकं कर्मकृत्वैवं मंत्रपर्वकम् । नियमं कृत्वा तथाष्टम्यां पू  
र्वाल्लेखनमाचरेत् ॥ कंकुमचंदनचंपकचतुःरामैः शैलपिष्टैश्च चर्चितगायत्रीदेवीं  
कुसुमैरभ्यर्चयेद्बहुभिः कुसुदैः सपद्मपुष्पैः सधूपदीपैः सनैवेद्यैः सांसेर्बल्युपहारैर्म  
गलशब्दैः समुच्छलितैः विहितछत्रैर्यानिःस्यंदनसितशस्त्रधारिजनलोकैः तुष्टैः पञ्च  
स्त्रादितु निवेद्यते । सर्वमेव भगवत्यै । दुर्गासा पूजनीया च तद्दिने द्रोणा पुष्पकैः । त



तः खड्गं नमस्कृत्य शत्रूणां वधसिद्धये ॥ इच्छेत् विजयं राज्यं सुभिसंघातमनेनृपः ।  
 पुनः पुनः प्रणम्य र्यामं स्मरन् हृदये शिवाम् ॥ सर्वकृत्वेति कौरव्यं अष्टम्यां जागरं नि  
 शि । नटनर्तकगीतैश्च कारयेच्च महोत्सवम् ॥ एवं ह्यैर्निशां नीत्वा प्रभाते ह्यरुणो  
 दये ॥ घातयेन्महिषान्मेघानग्रतो नतकंधरान् ॥ शतमर्धशतं वापि तदर्धवाययेच्छ  
 या । सुरासवधृतैः कुम्भैस्तर्पयेत् परमेश्वरीम् ॥ कापालिकेभ्यस्तद्देयं दासीदासज  
 नेतया । ततो पराक्लृप्तमयेन वस्यां धैर्ये स्थिताम् ॥ भवानीं भ्रामयेद्वाष्ट्रं स्वयं रा  
 जासशब्दवान् । कश्चिच्चोपौषितो वीरो विधृतो न्येन खड्गवान् ॥ भर्तेभ्यस्तु व  
 लींदद्यान्मंत्रेणानेन सामिषम् । सरक्तं सजलं चाक्षं गंधपुष्पाक्षतैर्युतम् । श्रीस्त्रोन्वा  
 रान्समूहेन दिग्विदिस्सुक्तिरेद्वलिम् ( मंत्रप्रच ) बलिगृह्णन्ति वसं देवा आदित्याव  
 सवस्तथा । सस्तु प्रचाञ्चिनौरुद्राः सुपर्णाः पक्षगा गृहाः ॥ अहुराया तु धानाश्च  
 पिशाचो रगराक्षसाः । डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पतनाशिवाः ॥ जं भक्ताः  
 सिद्धगंधर्वा मालाविद्याधरानगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविना  
 यकाः ॥ जगतां शांतिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः । साविघ्नं सा च मे पापं मा संतु  
 पविर्पथिनः ॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहा इति । इति महाष्टमी ॥ महान  
 वमी तु पूर्वयुता ग्राह्या ॥ पूर्वाक्तवचनात् । नवमी दुर्गाव्रतेश्चावर्णातिदीपिकोक्तेः ।  
 आवर्णादुर्गं नवमी पूर्वाचैव हुताशनी ॥ पूर्वविद्धा प्रकर्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनमि  
 ति हेमाद्रौ पाशोक्तेश्च ( भविष्येपि ) आश्वयुक् शुक्लपक्षे तु अष्टमी मूलसंयुता ॥ सा  
 महानवमी नाम त्रैलोकोपि सुदुर्लभेति ॥ मूलमुपलक्ष्य गाम् । दुर्गापूजा तु नवमी मूला  
 दृक्षत्रयान्विता । सहती कीर्तिता तस्यां दुर्गामिहियमर्दिनी इति ॥ मदनरत्नेल्लेगात्  
 अत्र पूजयेदित्यग्रे शेषः ॥ ध्यानि तु । साकार्योदयगामिन्यां तिथावुदयगामिन्यामि  
 त्यादिप्राणुक्तानि तानि नवमीभिर्न तिथिपरानि । नवम्यां विशेषीक्तेः । वेदप्रचमु  
 हूर्तत्रयेणैव ज्ञेयः । यद्यपि हेमाद्रि मते मुहूर्तद्वयात्मापि वेधोऽस्ति । तथापि सूर्योदय  
 सवसः ॥ सायंतु त्रिमुहूर्तसव ( तदुक्तं दीपिकायां ) त्रिमुहूर्तगा तु सकला सायं इति ॥  
 साधवोपि सायंतुत्तरयातद्वत् न्यूनयानतु विद्वद्यत इति ॥ तेन त्रिमुहूर्तयोगे पर्वानवमी  
 पूर्वाक्तवचनात् । न कुर्यान्नवमी तातदशम्यांतु कदाचनेति स्कांदे परानि शेषाच्च ॥

त्रिसुहूर्तयोगाभावेतुनिषिद्धापिपरैवकार्येतिनिष्कर्षः (यत्तु) नवम्यांचजपंहोमसं  
 माप्यश्रवणोपिवेतिग्रहोक्तेः ॥ व्रतंचजागरश्चैवनवम्याविधिवद्वालिरितिदेवी  
 पुराणाच्च ॥ नवम्यांहोमद्वत्यादिविहितंतत्राथ युक्शुक्लनवमीमुहूर्तवाकलाय  
 दि । सार्तिथिः सकलाज्ञेयालक्ष्मीविद्याजयार्थिभिरिति ॥ सौरपुराणात् ॥ सूर्योद  
 येपरंरिक्तापूजास्यादपरायादि । बलिदानंप्रकर्तव्यंतत्रदेशेषुभावहस ॥ बलिदाने  
 कृतेष्टम्यांपुत्रभंगोभवेन्नृपेतिमदनरत्नेदेवीपुराणाच्च ॥ द्रव्यादौपराकार्या ॥ उप  
 वासादौतुपूर्वेतिमदनरत्नेउक्तम् ॥ प्रतापमार्तंडेभ्येवम (यत्तु) अष्टम्यांबलिदानेनपु  
 त्रनाशोभवेद्भुवमितिकालिकापुराणो । तत्संधिपूजापरं । अष्टमीनवमीसंधौतु  
 तीयाखलुकथ्यतइतितत्रैवतदुक्तेः ॥ कामरूपनिबंधे । अष्टम्याः शेषदंडप्रचनवम्याः  
 पूर्वसवच्च । तत्रयाक्रियतेपूजाविज्ञेयासामहाफला ॥ अष्टमीमात्रेभवत्येव ॥ आ  
 श्विनेपूजयित्वातुअर्द्धरात्रेष्टमीषुच । घातयतिपशून्भक्त्यातेभवंतिमहाबलाः ॥  
 (तथा) कन्यासंस्थेरवावीशेषुक्लाष्टम्यांप्रपूजयेत् । सोपवासोनिशाद्वेतुमहावि  
 भवविस्तरैः (तथा) पशुघातश्चकर्तव्योगवैयाजवधस्तथेति । रूपनारायणीयेदे  
 वीपुराणात् (तत्रैवभविष्ये) तस्मादियंमहापुरायानवमीपापनाशिनी । उपोष्यासु  
 प्रयत्नेनसततंसर्वपार्थिवैः (निर्णयदीपेत्तु) महानवमीपरदिनेपराह्णव्यापित्वेपरा  
 अन्यथापूर्वाश्रावर्तनात्पूर्वकालेनवमीस्यात्तपरेहनि ॥ दुर्गार्चितत्रपूर्वेद्युः पूर्वाह्णे  
 त्वष्टमीयदीतिधौम्यवचनादित्युक्तम् । अस्यधातुशारदानवमीविययत्वंसमूलत्वं  
 चविमृश्यम् ॥ (यानितु) नंदायांज्वलतेवह्निः पूगायांपशुघातनम् । भद्रायांगोकु  
 लक्रीडातत्रराज्यंविनश्यतीति ॥ नवम्यामपराह्णोतुबलिदानंप्रशस्यते । दशमींव  
 र्जयेत्तत्रनात्रकार्याविचारोति ॥ नंदायांदर्शनेरक्षाबलिदानंदशासुच । भद्रायां  
 गोकुलक्रीडादेशनाशायजायतइति ॥ ब्रह्मवैवर्तनारदादिवचनानिशुद्धाधिक्रानि  
 येधपराणीतिमदनरत्ने (तथाकालिकापुराणो) नवम्यांबलिदानंतुकर्तव्यंवैयथा  
 विधि । जपंहोमंचविधिवत्कुर्यात्तत्रविभूतये ॥ केचित्तुपूर्वायाढायुताष्टम्यांपूजा  
 होमाद्यपोषणमितिपूर्वाक्तदेवीपुराणादष्टम्यांहोमसाहुः ॥ अन्येतुद्विविधवाक्य  
 बशादष्टम्यांसारभ्यनवम्यांसमापयंति ॥ समुच्चयस्तुयुक्तः रुद्रयामलेतुविकल्पउ



क्तः तत्तु निर्मलं ॥ दुर्गाभक्तितरंगिरायादिगौडग्रंथेऽपि नवम्या होम उक्तः (होमे च  
 विशेष उक्तो डामरतंत्रे) पायसं सर्पिः पायुक्तं तिलैः शुक्लैर्विमिश्रितम् । होमये द्विधि  
 वद्वक्त्या दशांशेन नृपोत्तम ॥ रुद्राध्याये यथा होमं संवेगौ केन साधयेत् । तथास्तोत्र  
 जपे होमं प्रलोकेनैकेन साधयेत् ॥ यद्वासप्तशती जप्य होमसंज्ञो न वाक्षरः । ऐं ह्रीं क्लीं चा  
 मुंडायै विचेष्टितं न वाक्षर इति केचित् ॥ पूजोक्तो ग्राह्य इति तु युक्तम् (रुद्रया मलेपि)  
 प्रधानाद्रव्यमुद्दिष्टं पायसान्नं तिलास्तथा किंशुकैः सर्यपैः पूजैर्लज्जितैर्दूर्वाकुरैरपि ॥ य  
 वैर्वाग्नीफलैर्दिव्यैर्नानाविधफलैस्तथारक्तचंदनखंडैश्च गुग्गुलैश्च मनोहरैः ॥ प्रति  
 प्रलोकं च जुहुयात् सर्वद्रव्याणि चक्रमात् । न वाक्षरेणावाहुत्वा न मोदेव्या इतीति चेति  
 (रहस्ये तु) प्रतिप्रलोकं च जुहुयात् पायसं तिलसर्पिष्येत्युक्तम् । दुर्गाभक्तितरंगिरायां  
 तु तिलैर्जकीति रुधिरैर्ग्राह्या यतामिति ॥ बलिदाने तु दुर्गायाः सर्वत्रायं विधिः स्मृ  
 तः ॥ मत्स्यसूक्ते । नवम्यां पूर्ववत् पूजाकर्तव्या भूतिमिच्छता । दक्षिणां वस्त्रयुग्मं  
 च आचार्यीयं निवेदयेत् ॥ अथाव प्रसंगाच्छतचंडीविधानमुच्यते (रुद्रया मले) शत  
 चंडीविधानं च प्रोच्यमानं शृणुष्व तत् । सर्वोपद्रवनाशार्थं शतचंडीं समारभेत् ॥ यो  
 इशस्तंभसंयुक्तं मंडलं पल्लवोज्ज्वलं । वसुकोरायुतां विदो मध्ये कुर्यात् त्रिभागतः ॥ प  
 क्वेष्टकचितां रम्यामुच्छ्राये हस्तसंमिताम् । पंचवर्गारजोभिश्च कुर्यान्मंडलक्रंशु  
 भम् ॥ पंचवर्गावितानं च किंकिरीजालमंडितम् । आचार्येणासमं विप्रानवरयेद्दशमु  
 ब्रतान् ॥ ईशान्यां स्थापयेत् कुंभं पूर्वाक्तविधिना चरेत् ॥ वारुणां च प्रकर्तव्यं कुंडं  
 लक्ष्मालक्षितम् ॥ मूर्तिदेव्याः प्रकुर्वीत सुवर्गास्य फलेन वै । तदर्धेन तदर्धेन तदर्धेन म  
 हामते ॥ अष्टादशभुजां देवीं कुर्याद्वाष्टकरामपि ॥ पट्टकूलयुगाच्छास्त्रां देवीं मध्ये  
 निधापयेत् ॥ देवीं संपूज्य विधिवज्जपं कुर्याद्दशद्विजाः । शतमादौ शतं चांते जपेन्मं  
 त्रं न वार्यावम् ॥ चंडीं सप्तशतीं मध्ये संपुटोयमुदाहृतः । एकंदेवीणां चत्वारिंशजपेद्दि  
 नचतुष्टयम् ॥ रूपाणां क्रमशस्तद्वत् पूजनादिकमाचरेत् । पंचमेदिवसे प्रातर्होमं कुर्याद्द्विधानतः ॥ गुडचोपायसंदूर्वातिलान् शुक्लान्यवानपि ॥ चंडीपाठस्य होमं तु  
 प्रतिप्रलोकं दशांशतः ॥ होमं कुर्याद्ग्रहादिभ्यः समिदाज्यचरुनक्रमात् । हुत्वा पू  
 र्णाहुतिं दद्याद्दिग्भ्यो दक्षिणां क्रमात् ॥ कपिलांगां नीलसर्गां श्वेताश्वं च चाम

रे । अभियेकततः कुर्युर्यजमानस्य ऋत्विजः ॥ एवं कृते मरेशान सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ अथ सहस्रचंडीसा चतुर्वैवोक्ता ॥ सहस्रचंडी विधिवच्छृणु विष्णो महामते राज्यभ्रंशे महोत्पाते जनागारे महाभये ॥ राजमारे प्रवमारे च परचक्रभये तथा । इत्यादिविविधे दुःखे क्षयरोगादि जेभये ॥ सहस्रचंडिकापाठं कुर्याद्वाकारयेत्तथा । जापकास्तु शतं प्रोक्ता विंशद्वस्तश्च मंडपः ॥ भोज्याः सहस्रं विप्रेन्द्रा गोशतं दक्षिणां दिशेत् । गुरवे द्विगुणां देयं शय्यादानं तथैव च ॥ सप्तधान्यं च भूदानं प्रवेता प्रवंचमनोहरं पंचनिष्ठकमितामयं तीसंवेणा च होम उक्तः ॥ पुरश्चरणा कार्यं तु बिल्वपत्रयुतैस्तिलैरिति ॥ कालिकापुराणाद्विल्वपत्रैश्चेति स्मार्ताः ॥ तन्न ॥ अन्यवसानाभावात् ( अथ बलिदानम् ) तत्राप्रवमेयच्छागमहिषस्वमांसानमुत्तरोत्तरप्राशस्त्यं फलविशेषश्चान्यतो वसेय इति दिक् ( बलिप्रकारस्तु देवीपुराणो ) कन्यासंस्थेरवौ शुक्रशुक्लाष्टम्यां प्रपूजयेत् । द्रोणापुठौ च बिल्वाग्रजाती पुन्नागचंपकैः ॥ पंचाब्दं लक्षणोपेतं गंधपुष्पसमन्वितम् । विधिवत् कालिकालीति जप्त्वा खड्गेन घातयेत् ॥ ओं कालिका लियज्ञे प्रवरिलोहदंडायै नम इति मंत्रः ॥ तदुत्थरुधिरं मांसं गृहीत्वा पूजनादिषु ॥ आदिशब्दात् ॥ चरकीविदारोपापराक्षस्यः नैऋतेभ्यः प्रदातव्यं महाकौशिकमंत्रितम् ( मंत्रस्तु वक्ष्यते तथा ) तस्याग्रतो नृपः स्नायात्कृत्वा शत्रुं तु पेशिकम् । खड्गेन घातयित्वा तु दद्यात्स्कंदविशाखयोः ॥ अशक्तौ ब्राह्मणौ न च कूष्मांडादिभिर्बलिदानं कार्यम् ( तदुक्तं कालिकापुराणे ) कूष्मांडमिंसुदंडं च मांसं सारसमेव च । एते बलिसमाः प्रोक्तास्तृप्तौ छागसमाः सदा ( रुद्रयामलेपि ) छागाभावे तु कूष्मांडं श्रीफलं वामनोहरं । वस्त्रसंवेष्टितं कृत्वा छेदयेच्छुरिकादिना ( तथा ) ब्राह्मणो न सदा देयं कूष्मांडं बलिकर्मणि । श्रीफलं वा सुराधीश छेदने वतुकारयेत् ( छेदे विकल्पः ) मायान्नैर्बलिर्देयो ब्राह्मणो न विजानता ( कालिकापुराणे ) उत्तराभिमुखो भूत्वा बलिं पूर्वमुखं तथा । निरीक्ष्य साधकः पश्चादिसंमंत्रमुदीरयेत् ॥ पशुस्त्वं बलिहृषेणाममभाग्यादुपस्थितः । प्रणामाभिततः सर्वरूपिणां बलिहृषिणाम् ॥ चंडिका प्रीतिदानेन दातुराय द्विनाशनम् । चामुंडा बलिहृषाय बले तुभ्यं नमोस्तुते यज्ञार्थं बलयः सृष्टा स्वयमेव स्वयं भुवा ॥ अतस्त्वांघातयाम्यद्यतस्माद्यज्ञवधो वधः ।



रं हीं श्रीमिति मंत्रेणातं बलिं मत्स्वरूपिणाम् ॥ चिंतयित्वान्यसेत पुरुषं मूर्धितस्य तु  
 भैरव । रसनात्वं चंडिकायाः सुरलोकप्रसाधकः हीं हीं खड्गोति मंत्रेणाध्यात्वा खड्गं  
 गंच पूजयेत् पूजयित्वा ततः खड्गं ओं हुं फडिति मंत्रकैः ॥ गृहीत्वा विमलं खड्गं च्छेद  
 येद्वलिसुत्तमम् । ओं ह्रीं रं हीं कौशर्तिः कर्तव्या वार्धमानतः ॥ अष्टादशभुजा देवी स  
 र्वायुधविभूषिता ॥ अवारितान्नं दातव्यं सहस्रं प्रत्यहं प्रभो ॥ शतं वानियताहारः प्रयः  
 पानेन वर्तयेत् । एवं यश्चंडिकापाठं सहस्रं तु समाचरेत् ॥ तस्य स्यात्कार्यसिद्धिस्तु ना  
 न्नकार्यविचारोति ॥ सतद्वयं यद्यपि महानिबन्धेन नास्ति तथापि प्रचरद्रूपत्वादुक्त  
 मिति दिक् ॥ वाराही तंत्रे । संकटे समनुप्राप्ते दुष्टि च कित्स्यामये तथा । जार्तिश्च शैकुलो  
 च्छेदे देव्या युयोनाश आगते ॥ वैरिवृद्धौ व्याधिवृद्धौ धननाशे तथा सये । तथैव विवि  
 धौ तपाते तथा चैवोपपातके ॥ कुर्याद्यत्नच्छतावृत्तं ततः संपद्यते शुभम् । श्रेयो वृद्धिः  
 शतावृत्ता द्वाज्यवृद्धिस्तथा परा ॥ मनसा चिंतितं देवसिद्धौ दृष्टोत्तराच्छतात् ॥ सह  
 स्रावर्तनालस्मीरावृत्ताोतिस्त्रयं स्थिरा ॥ भुक्ता मनोरथानुक्रामा न्नरो मोक्षमवा  
 प्रयात् । चंड्याः शतावृत्तिपाठात् सर्वाः सिद्धयः सिद्धयः ॥ इति शतचंडीसहस्रचं  
 डीविधिः ( अथ नवरात्रपारणानिर्णयः ) सा च दशम्यां कार्या ॥ आश्विने सा  
 सिगुक्ते तु कर्तव्यं नवरात्रकम् ॥ प्रतिपदादिक्रमेणैव यावच्च नवमी भवेत् ॥ त्रिरा  
 त्रं वापि कर्तव्यं सप्तम्यादियथाक्रममिति हेमाद्रौ धौम्यवचनात् ॥ नवमी तिथि  
 पर्यंतं वृद्ध्या पूजाजपादिकमिति । प्रागुक्तवचनेन नवमी पर्यंतं प्रधानभूतपूजाद्युक्ते  
 रूपवासादे प्रचांगत्वेन तत्पर्यंतत्वात् ॥ आदिशब्देनोपवासोक्तेः पूर्वोक्तत्रिरात्र  
 व्रते नवम्यां अप्युपोष्यत्वाच्च न च पारणांतत्त्वेन त्रिरात्रत्वं ॥ विष्णुत्रिरात्रादौ तथा  
 प्रसक्तेः ॥ नचात्रोपवासे मानाभावा इति वाच्यम् । एवं च विंध्यावासिन्यां नवरात्रो  
 पवासतः । एकभक्तेन न कतेन तथैवाद्याचितेन च ॥ पूजनीया जने देवी स्थाने स्था  
 ने पुरे पुर इति । हेमाद्रौ भविष्योक्तेः ॥ नवरात्रसमाख्यातो नवम्या अप्युपोष्यत्वा  
 च । न तु तिथिहासेऽस्यावप्युपवासा भवन्तीति कथं समाख्या । तेन कर्मविशेषेन न  
 रात्रशब्दोक्तः ( अतएवोक्तं देवीपुराणे ) तिथिवृद्धौ तिथिहासेन नवरात्रमपार्थ  
 कमिति चेच्च तिथिहासेऽपि नवतिथीनामुपोष्यत्वाच्च नवरात्रत्वाक्षते सतेन रात्रीणां

प्राधान्यात् । हासेअमामादायननवत्वमिति मुखोक्तिः परास्ता (यत्तु देवीपुरा  
णो ) कन्यासंस्थेरवौशुकशुक्लामारभ्यनंदिकास अयाचो ह्यथवैकाशीनक्ता  
शीवाथवावद । इति ब्रतचतुष्टयमुक्तंतल्लौहाभिसारिकविषयम् । तस्य । ज  
याभिलाषीनृपतिः प्रतिपत्प्रभृति क्रमात् । लौहाभिसारिकं कर्मकारयेद्यावदष्ट  
मीति भविष्येऽष्टमीपर्यंतमेवोक्तेः ॥ रूपनारायणोनतुनंदादिब्रतप्रयोगंपृथग्वो  
क्त्वा तस्य नवम्यांपारणामुक्तम् ( यदपि निर्णयदीपे ) आश्विने शुक्लपक्षे तु नवरा  
त्रमुपोषितः । नवम्यांपारणांकुर्यादशमीमिश्रितानचेत् । दशमीमिश्रितायत्र पार  
णोनवमी भवेत् । दुःखदारिद्र्यात्तथाव्रतविनाशिनीति ब्राह्मणाभ्यां लिखितं व  
चनम् ॥ यच्च रुद्रयासल इति वदन्ति । अष्टम्यासहकार्यास्या नवमी पारणादिने । यो  
मोहादशमीवेधो नवम्यांचंडिकां यजेत् ॥ पारणांच प्रकुर्याद्वै तस्य पुण्यं निरर्थकम्  
नवम्यांपारिता देवीकुलवृद्धिं प्रयच्छति । दशम्यांपारिता देवीकुलनाशं करोति वै  
तस्मात्तु पारणांकुर्यान्नवम्यां विबुधाधिपेत्यादीनि तानियदिसमलानितदा लौहा  
भिसारिकं नंदादिब्रतचतुष्टयविषयाणि ॥ तस्याऽष्टमीपर्यंतमेवोक्तेरित्युक्तं  
प्राक् ॥ अन्यथा महाष्टम्यांपरविद्धायां तारणाविधाने पूर्वनिबन्धैर्विरोधो दुर्वारः  
स्यात् ॥ यानितु कैश्चि लिखितानि नवम्यांपारणाविधायकानि वचनानि तानि  
हेमाद्र्यादिविरुद्धत्वाच्चिर्मूलानि ॥ समलत्वेऽपि यदादिनद्वये नवमी तदा द्वितीयदि  
न उपोष्यतिष्ठयन्ते पारणानां किंतु नवमीमध्ये कार्येत्येव नैयानि शिवरात्रिपारणाव  
त् ॥ अत्र केचित् पारणाहेसूतकादिप्राप्तौ तदतिक्रम्य पारणांकुर्यादित्याहुः ॥ तन्मं  
दम् ॥ काम्योपवासे प्रकांते त्वंतरा मृतसूतके । तत्र काम्यव्रतंकुर्याद्वानाचनं विमर्जि  
तमिति माधवीये कौर्मोक्तेः ॥ व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धं होमे च नेजपे । प्रारब्धे सूतकं  
न स्यादनारब्धे तु सूतकमिति विष्णुवचनाच्चाशौचमध्ये पितृव्रतकर्तव्यतावगातेः पार  
णांतत्त्वाद्ब्रतस्य ॥ प्रारंभस्तु तेनैवोक्तः प्रारंभो वराण्यज्ञे संकल्पो व्रतसत्रयोः नां दी  
मुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रियेति ( रुद्रयासलेपि ) सूतके पारणांकुर्यान्नव  
म्यांहोमपर्वकम् । तदंते भोजयेद्विप्रान् दानंदद्याच्च शक्तित इति ॥ तदंते सूतकांते ॥  
एवं स्त्रीभिरेपिरजोदर्शनमध्ये कर्तव्यमेव पारणम् । संप्रवृत्तेऽपि रजसिनत्याज्रं



द्वादशीव्रतमिति ॥ साधवीयेऋष्यशृङ्गवचनात् । द्वादशीव्रतमित्युपलक्षणम् ॥  
 प्रारब्धदीर्घतपसांनारीणांयद्रजोभवेत् । नतत्रापिव्रतस्यस्यादुपरोधःकदाचने  
 ति ॥ तत्रैवसत्यव्रतवचनात् ॥ किंच । सकादश्यादौपंचधाशौचपातेमासांते  
 पारणापत्तिः ॥ मासोपवासांतेपंचधाशौचपातेजीवनासंभवश्च ( यत्तु ) नि  
 यमस्थायदानारीप्रपश्येदंतरारजः । उपोष्यैवतुतारात्रीःस्नात्वाशेषंचरेव्रतमि  
 त्यंगिरोवचनम् ॥ यच्चहारीतवचनम् । नियमस्थाव्रतस्थास्त्रीरजःप्रपश्येत्कथं  
 चन । त्रिरात्रं तुक्षिपेदूर्ध्वव्रतशेषंसमापयेत् ॥ तद्विधवोपासविषयं । तासांतत्र  
 भोजननियेधादितिकेचित् ॥ वयंतुप्रागुक्तसत्यव्रतवचनेदीर्घतपसामितिविशेष  
 णोपादानात्द्वादशीव्यतिरिक्तिसफलैकाहोपवासविषयोऽयंनियेधः ॥ त्रिरा  
 त्रनवरात्रादि दीर्घव्रतयुतुरजोमध्योपारणोतिब्रूमः ॥ आशौचमध्येसर्वापिपार  
 णाभवतिप्रागुक्तकौर्मेवचनादितिसिद्धम् ॥ अथचोपवासपारणानिर्यायः ॥ स  
 र्ववृत्तेषुबोद्धव्यइत्यलंभूयसा ॥ दशम्यांदेवींविसर्जयेत् ( तदुक्तम् ) दुर्गाभक्तितरं  
 गिरायांदेवीपुराणो ॥ ततःप्रातःपुजयित्वादशम्यांविधिपूर्वकम् । संप्रेषणांतु  
 कर्तव्यंगीतवादित्रनिःस्वनैः ॥ रूपंदेहियशोदेहिभगंभगवतिदेहिमे ॥ पुत्रान्देहि  
 धनंदेहिसर्वकामांपुत्रदेहिमे ॥ सहिष्यमिमहासाधेचामुंडेमुंडमालिनि । आयुरा  
 रोग्यमैश्वर्यदेहिदेविनमोस्तुते ॥ इतिसंप्रायदेवींतुततउत्थापयेद्बुधः । उतिष्ठ  
 देविचंडेशिशुभांपूजांप्रगृह्यच । कुरुवममकल्याणमष्टाभिःशक्तिभिःसह । ग  
 च्छगच्छपरंस्थानंस्वस्थानंदेविचंडिके ॥ ब्रजस्रोतोजलं वृद्धौस्थीयतांचजले  
 त्विहेतिजलंनीत्वादुर्गेदेविजगन्मातःस्वस्थानंगच्छपूजिते । संवत्सरव्यतीतेतुपुन  
 रागमनायवै ॥ इमांपूजांमयादेवियथाशक्योपपादिताम् । रसार्थत्वंसमादाय  
 ब्रजस्वस्थानमुत्तममितिजलेप्रवाहयेत् ॥ इयमेवविजयादशमी ॥ साचद्वितीय  
 दिनेश्रवणायोगाभावेपूर्वाग्राह्या ॥ ( तदुक्तंहेमाद्रौस्कांदे ) दशम्यांतुमरैःसम्यक्  
 पूजनीयापराजिता । ऐशानींदिशमाश्रित्यअपराक्तेप्रयत्नतः ॥ यापरानिवमी  
 युक्तातस्यांपूज्यापराजिता ॥ सेमार्थविजयार्थंचपूर्वाक्तविधिनानरैः ॥ नवमीशे  
 षयुक्तायांदशम्यामपराजिता । ददातिविजयंदेवीपूजिताजयवर्धिनी ॥ ( तथा )

आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेत्तरः । एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजित  
मिति । यदा तु पूर्वदिने अवरायोगाभावः ॥ परदिने चाल्पापितद्योगिनी तदाप  
रैव ॥ तथा च हेमाद्रौ व्रतकांडे कथ्यते ॥ उदये दशमी किंचित्संपूर्णोकादश्या  
दि । अवराक्षयदाकाले सातिथिर्विजयाभिधा ॥ अवराक्षेतु पूर्णायां काकुत्  
स्थः प्रस्थितो यतः । उल्लंघयेयुः सीमानं तद्दिनं सैततो नरा इति ॥ काले पराक्ले पर  
दिने अपराक्ले अवराभावे तु सर्वपक्षेषु पूर्वैव ॥ मदनरत्नेऽप्येवम् । ज्योतिर्निबन्धे  
रत्नकोशे च नारदः । ईशसंध्यामतिक्रांतः किंचिदुद्भिन्नतारका । विजयो नाम का  
लो यस्य सर्वकार्यार्थसिद्धिदः ॥ ईशस्य दशमीं शुक्लां पूर्वविद्वानकारयेत् । अवराणां  
पिसंयुक्तां राज्ञां पट्टाभिषेचने ॥ सूर्योदये यदा राजनृद्वयते दशमी तिथिः । आश्विने  
मासि शुक्ले तु विजयांतां विदुर्बुधाः ॥ अत्रायं निर्गलितोर्थः ॥ अपराक्लो मुख्यः  
कर्मकालः ॥ तत्रैव पूजाद्युक्तेः ॥ प्रदीपे गौणाः ॥ तत्र दिनद्वयेऽपराक्ले व्यापित्वेप  
र्वाप्रदोषव्याप्तेराधिक्यात् ॥ दिनद्वये प्रदोषव्यापित्वे परा । अपराक्ले व्याप्तेराधि  
क्यात् ॥ इदं शुद्धतिथावन्यकाले ॥ अवरास्तुरोहिणीवदप्रयोजकः ॥ दिनद्वये  
ऽपराक्ले स्पर्शे तु पूर्वा ॥ तत्रापि परदिने पराक्ले अवरासत्त्वे परैवेति दिक् ( अत्रवि  
शेषो भार्गवार्चनदीपिकायां भविष्ये ) शमीयुक्तं जगन्नाथं भक्तानामभयंकरम् । अर्च  
यित्वा शमीवृक्षमर्चयेच्च ततः पुनः ( शमीमंत्रस्तु हेमाद्रौ । गोपथब्राह्मणे ) असंगला  
नां शमनीं शमनीं दुष्टकृतस्य च । दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्ये हं शमीं शुभासु ( तथा  
भविष्ये ) शमीशमयते पापं शमीलोहितकंदका । धारिरायर्जुनबाराणां रामस्य  
प्रियवार्दिनी ॥ करिष्यमारायात्रायां यथाकालं सुखं मया । तत्र निर्विघ्नकर्वीत्वं  
भवथ्यो रामपूजिते इति ॥ तथा ॥ गृहीत्वा साक्षतामाद्रौ शमीमूलगतां मृदं । गीतवा  
दित्रिनिर्घाये रानयेत्स्वगृहं प्रति ॥ ततो भयगावस्त्रादिधारयेत्स्वजनैः सह इति ॥ अत्रै  
व बलनीराजनमुक्तं कृत्यरत्ने ( तत्रमंत्रः ) चतुरंगं बलं महांतिररित्वं ब्रजत्विह । सर्वत्र  
विजयो मे स्तुतवत्प्रसादात्सुरेश्वरीति ॥ ( गौडनिबन्धे ज्योतिषे ) कृत्वा नीराजनं रा  
जा बलवद्भ्यो यथाक्रमं । शोभनं खंजनं पश्येज्जलंगो गोष्ठसन्निधौ ॥ अस्य फलानि  
शुभाशुभदेशाश्च तत्रैव ज्ञेयाः ॥ आश्विनपौर्णमासी पराग्राह्या । सावित्रीव्रतमंतरै



राभवतो मासपौर्णमास्योपरे इति दीपिकोक्तेः (अत्र विशेषास्ति स्थितत्वे लेंगे) आ  
 श्विने पौर्णमास्यां तु चरेज्जागरां निशि ॥ कौमुदी मासमाख्याता कार्या लोको वि  
 भूतये ॥ कौमुद्यां पूजयेत्तस्मीमिन्द्रमैरावतस्थितं । सुगंधिनिशिसद्वेद्यश्चैजगिर  
 रां चरेत् (तथा) निशीथे वरदालस्मीः को जागतीति भाषिणी । तस्मै वित्तप्रयच्छा  
 मिश्रक्षैः क्रीडां करोति य इति ॥ अत्रैवाश्वयुजी कर्मोक्तमाश्वलायनेन ॥ आश्वयुज्या  
 माश्वयुजी कर्मैतितच्छेषपर्वणाकार्यमविकृतित्वात् । तत्र पूर्वाह्णव्यापिनी ग्राह्या  
 दैवकर्मत्वस्त । आश्वयुजां तु पर्वणाकार्यं ॥ शरद्याश्वयुजां नाम पर्वणास्यात्तदुच्य  
 त इति शौनकोक्तेः ॥ तत्रापि शेषपर्वणाकार्यमिति प्राशुक्तम् ॥ तच्च ब्रीहिभिरिष्ट्वा  
 ब्रीहिभिरेव यजेत यवेभ्यो यवैरिष्ट्वा यवैरेव यजेत ब्रीहिभ्य इति श्रुत्या दर्शपौर्णमा  
 सयोरेककर्मत्वेनैकद्रव्यनियमादर्थेष्ट्याः परंपौर्णमासेष्ट्याप्रचप्राग्भवतीति हेमा  
 द्यादयः । दर्शेष्ट्याः परमुक्तमाश्वयुजां कंप्राक् पौर्णमासाच्चर्तदिति दीपिकोक्तेः प्रच ।  
 तत्राश्वयुजां त्रैधा ब्रीह्याश्वयुजां यवाश्वयुजां श्यामाकाश्वयुजां चेति (संज्ञां कालः श्रुतौ )  
 गृहमेधी ब्रीहियवाभ्यां शरदसंतयोर्यजेत श्यामाकैर्नीवारैर्वर्षास्वापत्तकाले नान्ये  
 पुराणैर्वेति (आपस्तम्बोपि) यवांसुश्यामाकैर्यजेत शरदि ब्रीहिभिर्वसंतयवैर्य  
 यत्तु वेगायवैरिति तत्रापि श्यामाकाश्वयुजां नित्यमितरेतु अनाहितारने नित्येयवा  
 श्वयुजां च कार्यमिति स्मार्तवृत्तावुक्तात् ॥ सूत्रे ब्रीहियवदेव तासंबद्धानामेव संवाराणामा  
 स्नानाच्च । आहितारनेस्तु यवाश्वयुजास्याप्यनित्यत्वम् । अपि वा क्रियायवेति व  
 तिसूत्रात् । यद्वा ब्रीह्याश्वयुजां न समानतंत्रता । श्यामाकैस्तु प्रस्तरंकुर्यान्नाश्वय  
 णाम् । यदि वा तदपि समानतंत्रमित्यादि नारायणावृत्तोपरिश्रमवतां सुलभमित्य  
 लम् ॥ इदंच पर्वणभावेषु क्लृप्तपक्षे देवनक्षत्रे कृत्तिकादि विशाखांते कार्यमिति स्मृ  
 त्थसारे उक्तं ॥ बौधायनीये केशवस्त्वामिनाप्येवमुक्तं ॥ परिशिष्टे । श्यामाकै  
 ब्रीहिभिश्चैव यवैश्चान्योन्यकालतः ॥ प्राश्वयुज्यतेव श्यं न ह्यवाश्वयुजात्ययः  
 (त्रिकांडसंडनोप्येवम्) यदा त्वेतदाश्विनपौर्णमास्यां क्रियते तदैककालत्वादा  
 श्वयुजी कर्मणोऽस्य च समानतंत्रता भवति तदेतत्तद्वृत्तिकृता एकवर्हिरिध्माज्येति सूत्रे  
 स्पष्टमुक्तम् (अस्याकरणोप्रायश्चित्तमुक्तं स्मृतिचंद्रिकायां कात्यायनेन) नित्य

यज्ञात्ययेचैवैश्वदेवद्वयस्यच । अनिष्टवानवयज्ञेननवान्नप्राशनेतथा ॥ भोजने  
पतितान्नस्यचसर्वैश्चानरोभवेत् ( कारिकापि ) अकृताग्रयणोऽश्रीयान्नवान्नय  
दिवैनरः । वैश्वानरायकर्तव्यश्चरुः पूगाहिंतिस्तुवेति ( ऋग्विधानेतु ) समिंद्र  
रायामंत्रंचवर्षेवर्षेजपेच्छतं । आग्रयणांयदान्यनंतदासंपूर्णमेतितदित्युक्तम् ॥ स  
तच्चापदिमलमासेकार्यमन्यधानेतिप्रागुक्तम् ॥ अन्योप्याहिताग्न्यादिविशेषः ॥  
शौनकादेर्ज्ञेयइत्यलंबहुना ॥ इत्याश्विनमासः ( अथकार्तिकमासः ) तुलासं  
क्रमेप्रागपरादशघटिकाःपुण्याःरात्रौतुप्रागुक्तम् ( अथकार्तिकस्नानं ) तत्रपृ  
थ्वीचंद्रोदये विष्णुस्मृतिपात्रयोः ) तुलामकरमेघेषु प्रातःस्नानंविधीयते ।  
हविष्यं ब्रह्मचर्यं च महापातकनाशनमिति सौरमासउक्तः । प्राच्याश्चैतदेवा  
द्रियन्तेदासिणात्यास्तु । आश्विनस्यतुमासस्ययाशुक्लैकादशीभवेत् । कार्ति  
कस्यव्रतानीहतस्यांवै प्रारभेत्सुधीरितिपात्रोक्तेः ( भार्गवार्चनेच ) प्रारभ्यैका  
दशीशुक्लामाश्विनस्यतुमानवः । प्रातःस्नानंप्रकुर्वीतयावत्कार्तिकभास्करइति  
विष्णुरहस्योक्तेः ( हेमाद्रावादित्यपुराणो ) पूर्णाश्वयुजेमासिपौर्णमास्यांसमा  
हितइत्युक्तामासंसमग्रं परयाचभक्त्यासमाप्यतेकार्तिकपौर्णमास्यामित्यंतेभि  
धानाच्चाश्विनशुक्लैकादश्यां पौर्णमास्यांवारभ्यकार्तिकशुक्लद्वादश्यांपौर्णमा  
स्यांवासमापयेदित्याहुः ( सदनपारिजातेविष्णुः ) कार्तिकंसकलंमासंनित्यस्नायी  
जितेन्द्रियः । जपन्हविष्यभुक्शांतः सर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ अत्रदेशविशेषः  
पात्रेकार्तिकंप्रक्रम्य ) कुरुक्षेत्रेकोटिगुणोगंगायामपितत्तमः । ततोधिकःपु  
ठकरेस्यातद्वारवत्यांचभार्गव । पुण्याःपूर्यश्चसप्तैवंमुनयोमथुराधिका । दुर्लभः  
कार्तिकोविप्रामथुरायांनृणामिह । यत्रार्चितःस्वकंरूपंभक्तेभ्यःसंप्रयच्छतीति  
इदंचस्नानंकाशीस्थपंचनदेप्यतिप्रशस्तं । शतंसमास्तपस्तप्त्वाकृतेयत्तप्राप्यते  
फलम् । तत्कार्तिकेपंचनदेसकृत्स्नानेनलभ्यते ॥ कार्तिके बिंदुतीर्थेयोब्रह्मचर्यप  
रायणाः । स्नास्यत्यनुदिनेभानौभानुजातस्यभीःकुतइत्यादिकाशीखंडोक्तेः ॥ भा  
नुजोयमः । इदंचप्रातःस्नानंसंध्यांचकृत्वाकार्यम् । तेनविनेतरकमनिधिकारादि  
तिवर्धमानः । यद्यपिप्रातःसंध्यायाःसूर्योदयेसमाप्तिस्तथापिवचनबलादनुदितहो



मवद्विष्यति (स्नानमंत्रश्चतस्रैव) कार्तिकेऽहंकरिष्यामिप्रातःस्नानंजनार्दन ।  
 प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदरमया सह ॥ इमं मंत्रं समुच्चार्य मौनी स्नायात्तत्रतीनर इति ॥  
 अर्घ्यमंत्रोऽपि तत्रैव । व्रतितः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिवन्मम । गृहाराध्यं म  
 यादत्तं दनुजैर्द्रानि सुदन ॥ नित्यं नैमित्तिके कृशा कार्तिके पापनाशने । गृहाराध्यं म  
 यादत्तं राधया सहितो हरे ॥ इमौ मंत्रौ समुच्चार्य योऽर्घ्यं म ह्यं प्रयच्छति । सुवर्गारत्न  
 पुटपांशु पूर्णांशं खेन पुरायवान् ॥ सुवर्गा पूर्णां पृथिवी तेन दत्तान संशय इति । एवं संपू  
 र्णा स्नानाशक्तौ ज्येष्ठं स्नायात् । वाराणास्यां पंचनदे ज्येष्ठं स्नाता स्तु कार्तिके । असीते  
 पुरायव पुंयः पुरायभाजोतिर्निर्मला इति काशीखंडोक्तेः (अथ मालाधारणम् ॥  
 तत्र स्कान्दे द्वारकामाहात्म्ये) निवेद्य केशवे मालां तुलसीकायसंभवात् । वहते यो  
 नरो भक्त्या तस्य वै नास्ति पातकम् । न जह्या तुलसीमालां धात्रीमालां विशेषतः ।  
 महापातकसंहर्त्री धर्मकार्यदायिनी म (विष्णुधर्म) स्पृशेत्तु यानि लोमानि धा  
 त्रीमाला किलौ नृणां । तावद्वयं सह सागि वैकुण्ठे वसति भवेत् । मालायुगसंतु यो नि  
 त्यं धात्री तुलसी संभवम् । वहते कंठदेशे तु कल्पकोटिदिवं वसेत् । तुलसीकायसंभ  
 वे माले कृष्णजनप्रिये । विभर्मित्वासहं कंठे कुरुमा कृष्णवल्लभा । एवं संप्राप्त्य विधिव  
 न्मालां कृष्णगलेऽर्पिताम् ॥ धारयेत् कार्तिके यो वै स गच्छेद्द्वैषावंपदमिति । अत्र म  
 लंचित्यम् (तथा काशीखंडे) कार्तिके मासि मेयात्रायैः कृता भक्ति तत्परैः । बिंदुती  
 र्थं कृतस्नानैस्तेषां मुक्तिर्न दूरतः (भार्गवार्चनदीपिकायां नृसिंहपुराणे) अगस्ति कु  
 सुमैर्देवयोऽर्चयेच्च जनार्दन । दर्शनात्तस्य देवयै नरकं नाप्नुते नरः ॥ विहाय सर्वपुटपा  
 र्णामुनिपुटपेण केशवम् । कार्तिके योऽर्चयेद्भक्त्या वाजपेयफलं लभेत् (स्कान्दे का  
 र्तिकमाहात्म्ये) मालतीमालया विद्याः केतक्या चैव पूजितः । समासहस्रं सुप्रीतो  
 भवेत्ते मधुसूदनः (पृथ्वीचंद्रोदये पात्रे) कार्तिके नार्चि तोयैः स्तुत कसलैः कसलेक्षणाः  
 जन्मकोटिभ्यु विप्रैर्द्रवतेषां कसला गृहे (तथा) कार्तिके केशवे पूजायेषां नास्ति सुतैः  
 कृता । ते निर्भर्त्स्य रवैः पुत्रवसंति त्रिदिवे सदा ॥ तुलसीदललक्षणा कार्तिके योऽर्चये  
 द्वारि । पत्रे पत्रे मुनिश्रेष्ठमौक्तिकं लभते फलम् (तथा स्कान्दे कार्तिकमाहात्म्ये) धा  
 त्री च्छाये तु यः कुर्यात्पिण्डदानं महामुने । मुक्तिं प्रयाति पितरः प्रसादान्माधवस्य तु

धात्रीफलविलिप्तांगोधात्रीफलविभूषितः । धात्रीफलकृताहारोनरोनारायणोभ  
 वेत्तधात्रीच्छायांसमाश्रित्ययोऽर्चयेच्चक्रधारिणः । पुरपेपुरपेष्वमेधस्यफलं प्राप्नो  
 तितमानवः ( तथास्कांदे ) कार्तिकेमासिविप्रेन्द्रधात्रीवृक्षोपशोभिते । वनेदामो  
 दरंविष्णां चित्रान्नैस्तोययेद्विभुं । मलेनपायसेनायहोमंकुर्याद्विचक्षणाः । ब्राह्मणा  
 नभोजयेच्छक्त्यास्वयंभुंजीतबंधुभिरिति ( तथा ) कार्तिकेद्विदलव्रतं । प्राणुक्तं  
 कार्तिकेद्विदलंत्यजेदिति ( पाश्चात्तिकार्तिकमाहात्म्ये ) राजिकामाढकंचैव नै  
 वाद्यातकार्तिकव्रती । द्विदलंतिलतैलंचतथान्यन्यतिदूयितम् ( स्कांदेपि ) का  
 र्तिकेवर्जयेत्तद्वद्विदलंबहुबीजकं ॥ मायमुद्गमसराश्चचराकाशचकुलित्यकाः ।  
 निठपावारराजमायाश्चआढकोद्विदलंस्मृतं । नूतनान्यपिजीर्णानिसर्वायेतानि  
 वर्जयेत् ॥ अत्रकेचिदुत्पत्तिसमयेदलद्वयस्यभवति । तद्व्रतपर्वगत्याद्विदलमि  
 त्युच्यतेइत्याहुः उदाहरंतिच । बीजमेवसमुद्भूतंद्विदलंचांकुरंविना । दृश्यतेयत्रस  
 स्येयुद्विदलंतन्निगद्यतेइति ॥ अन्येतुलक्षणायांमानाभावाद्ब्रजनस्यनिर्मलत्वाद्वि  
 दलात्मकंयस्यस्वरूपंतदेववर्जयेदित्याहुः ( तथानारदीये ) कार्तिकेवर्जयेत्तैलं  
 कार्तिकेवर्जयेन्मधु । कार्तिकेवर्जयेत्कांस्यंकार्तिकेशुक्लसंधितं । कांस्यंततपा  
 नभोजनंशुक्लंप्रयुज्यितं ( संधितंलवणाशकःतत्रैव ) कार्तिकेविष्णुमर्त्यग्रेदीपदाना  
 द्विवंजयेत् ( तथा ) कार्तिकेतुक्तादीसान्तरांजन्मविमोचनी ( तथा ) कार्तिकेक  
 च्छसेवीयःप्राजापत्यपरोथवा । सकांतरोपवासीवात्रिरात्रोपोयितोपिवा । य  
 त्वाद्वादशपक्षेवामासंवावरवर्गानि । एकभक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच । उप  
 वासेनभैक्षेणाव्रजेत्परमंपदम् ॥ अन्येपिनियमाःप्राणुक्ताः ( ग्राह्यमुक्तंस्कांदे ) व्री  
 हयोयवगोधूमाःप्रियंगुतिलशालयः । एतेहिसार्विकाःप्रोक्ताः स्वर्गमोक्षफल  
 प्रदाः ( काशीखंडे ) ऊर्ज्यवान्नमस्नीयाद्देवान्नमथवापुनः । वृक्षाकंसरांचैव  
 शूकशिंबीश्चवर्जयेत् ( पृथ्वीचंद्रोदयेपाश्चे ) नोर्जाबंधोविधातव्योव्रतित्नाकेन  
 चितक्वचित् ( तथानारदीये ) अव्रतेनक्षपेद्यस्तुमासंदामोदरप्रियं । तिर्यग्योनिस  
 वाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा ॥ अन्यान्यापि । तांबूलतैलकेशकर्तनादिवर्जनसं  
 कल्परूपारिणप्राणुक्तानि ॥ ( तथाकार्तिकेआकाशदीपउक्तोनिर्णयामृतेपठकर



पुराणो) तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते । आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं  
हरिंप्रति । सहतीं प्रियमाप्नोति रूपसौभाग्यसंपदमिति (तद्विधिश्च हेमाद्रावादि  
त्यपुराणो) दिवा करेस्ताचलसौलिभते गृहाददूरे पुरुषप्रमाणां । यथा कृत्तिं यज्ञियवृ  
क्षदारुमारोग्यभूमावयतस्य मूर्ध्नि । यवांगुलिच्छिद्रयुतास्तु मध्ये द्विहस्तदीर्घा अथ  
पट्टिकासु । कृत्वा च तस्रोऽष्टदला कृतीस्तु याभिर्भवेदष्टदिशानुसारी । तत्कर्त्तारो  
कायांतु महाप्रकाशो दीपः प्रदेयोदलगास्तथाष्टौ । निवेद्य वसार्थहराय भूम्यै दामो  
दरायाम्यथ धर्मराज्ञे । प्रजापतिभ्यस्त्वथ सप्तपितृभ्यः प्रेतेभ्यस्तथा तमस्थितेभ्य इ  
ति ॥ अपरा कर्त्तव्यो मंत्र उक्तः (यथा) दामोदराय नमस्तुलायां लोलया सह ॥  
प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमो नंताय वेधस ॥ कार्तिक कृष्णा चतुर्थी करक चतुर्थी ।  
सा चंद्रोदयव्यापिनी ग्राह्या । दिनद्वये तत्त्वे पूर्वा तत्रैव पूजाद्याम्नानात् । कार्तिक  
कृष्णा द्वादशी गोवत्स संज्ञा । सा प्रदोयव्यापिनी ग्राह्या । दिनद्वये तत्त्वे पूर्वा । युग्मवा  
क्यात् । वत्सपूजावत्प्रचैव कर्त्तव्या प्रथमे हनीति निर्गायामृते भिधानाच्च (अत्र विशेषे  
यो मदनरत्ने भविष्ये) सवत्सांतु त्यवर्णां च शीलिनीं गांपयस्विनीं ॥ चंदनादिभिरा  
लिप्य पुठपमालाभिरर्चयेत् । अर्घ्यं तां प्रमये पात्रे कृत्वा पुठपाक्षतैस्तिलैः । पादमूले  
तु दद्याद्वै मंत्रेणानेन पांडव । क्षीरोदार्णवसंभूते सुरासुरनमस्कृते । सर्वदेवमये मात  
गृहाणा अर्घ्यं नमो नमः ॥ ततो मायादिसं सिद्धान्वटकान् विनिवेदयेत् । सुरभित्वांज  
गन्मातर्देवि विष्णुपदे स्थिता । सर्वदेवमये ग्रासं मया दत्तमि मंग्रस । ततः सर्वमये देवि  
सर्वदेवैरलंकृते । मातर्ममाभिलषितं सकलं कुरु नंदिनि ॥ इति प्रार्थयेत् (तथा) त  
द्विने तैलपक्वं च स्थालीपक्वं युधिष्ठिर ॥ गोक्षीरं गोघृतं चैव दधितक्रं च वर्जयेत् (ज्यो  
तिर्निबन्धेनारदः) आश्विने कृष्णा पक्षे तु द्वादश्यादियुपंचसु । तिथियुक्तः सर्वरात्रे नृ  
णां नीराज नो विधिः ॥ नीराजयेयुर्देवास्तु विप्रान् गणाश्चतुरंगमान् । ज्येष्ठान् श्रेष्ठा  
न् जघन्यांश्च मातृमुख्याश्च योषित इति (निर्गायामृते स्कांदे) कार्तिकस्य सिते प  
क्षे त्रयोदश्यां निशामुखे ॥ यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति (मंत्रस्तु) मृत्युना  
पाशदंडाभ्यां कालेन यमया सह । त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां ममेति । का  
र्तिक कृष्णा चतुर्दश्यां प्रभाते चंद्रोदयेऽभ्यंगं कुर्यात् (तद्वत्तं हेमाद्रौ निर्गायामृते च भ

विष्योत्तरे) कार्तिके कृष्णपक्षे चतुर्दश्यामनोदये । अवश्यमेव कर्तव्यं स्नानं नरक  
भीरुभिः ॥ इन्द्रचंद्रः । सदनरत्ने विधूय इति पाठः । दिनोदय इति पाठात् सूर्याद  
योत्तरं त्रिमुहूर्ते स्नानं वदतां गौडानां तदनुसारिणां चाज्ञतैव । पूर्वविद्धचतुर्दश्यां का  
र्तिकस्य सिते तरे । पक्षे प्रत्युषसमये स्नानं कुर्यात् प्रयत्नत इति (स्मृतिदर्पणोपि) चतु  
र्दशी चाश्वयुजश्च कृष्णा स्वात्यर्क्षयुक्ता च भवेत् प्रभाते । स्नानं समभ्युज्य नरेस्तु का  
र्यं सुगंधतैलेन विभक्तिकामैरिति (पृथ्वीचंद्रोदये पात्रे) आश्वयुज कृष्णपक्षस्य चतु  
र्दश्यां विधूय । तिलतैलेन कर्तव्यं स्नानं नरकभीरुगोति ॥ कर्तव्यं मंगलस्नानं नरे  
निरयभीरुभिरितिकालादर्शपाठः । उभयत्राश्वयुगित्यमावास्यां तमासमभिप्रेत्यो  
क्तं (तथा) तैले लक्ष्मीर्जले गंगा दीपावल्याश्चतुर्दशी । प्राप्तेति विशेषः । प्रा  
तस्नानंतु यः कुर्याद्यस्य लोकं न पश्यतीति । दिनद्वयेऽपि चन्द्रोदये चतुर्दशी सत्त्वे तदभा  
वेऽप्यसुरगोदये सम्पूर्णखण्डे वा दिनद्वये चतुर्दशी सत्त्वे च पूर्वदिनेभ्यंगं कुर्यात् । पू  
र्वविद्धचतुर्दश्यामिति वचनात् । पूर्वदिनेऽपरदिन एव वा सत्त्वे सैव ग्राह्या । दिनद्वये  
प्यसत्त्वेऽसुरगोदयव्यापिनी ग्राह्या । पक्षे प्रत्युषसमय इत्युक्तेः । वक्ष्यमाणा व  
चनाच्च । तदभावे तु चतुर्दशी ह्रासपूर्वेद्युः प्रवेश्य पूर्वोदशी मध्यखाभ्यंगं कुर्या  
दिति दिवोदासः ॥ केचिदत्र वचनमपि साधकत्वेन वदन्ति । तिष्ठयादौ तु भवेद्या  
वानह्रासोऽद्विः परे हनि । तावान् ग्राह्यः स पूर्वद्युरदृष्टोऽपि स्वकर्मणी तितन्मदं ।  
न हीदं वचनं पूर्वदिनस्यापर्वग्राह्यत्वं विधत्ते ॥ नक्तैकभक्ताजन्माद्यस्यादौ दिनद्वये  
कर्मकालव्याप्त्यभावे सर्वत्र पूर्वदिनस्य ग्राह्यत्वप्रसंगात् ॥ किंतु । यत्रैकभक्तादौ  
दिनद्वये कर्मकालव्याप्त्यभावे वा क्वांतरे गान्ध्यायेन वा पूर्वदिनस्य ग्राह्यत्वमुक्तं । त  
त्र मुख्यकाले तत्तिथेरभावेऽपि यत्रैवानुष्ठानबोधकमिदं । न चात्र तदस्तीति यत्किंचि  
देतत् । तेन चतुर्थयामगामिनी ग्राह्या । अतएव सर्वज्ञनारायणः । तथा कृष्णचतु  
र्दश्यामाश्विनेऽर्कोदयात्पुनः ॥ यामिन्याः पश्चिमेयामेतैलाभ्यंगो विशिष्यत इति ।  
मृगांकोदयवेलायां त्रयोदश्यां यदा भवेत् । दर्शवासंगलस्नानं दुःखशोकभयप्रदमि  
ति । कालादर्शत्रयोदश्यानि येषां च । तेनायमर्थः । यथाग्निहोत्रे यावज्जीवं सायं  
प्रातः कालेऽप्युप्यकालस्य गुस्त्वम् । तथा चतुर्दशी चतुर्थयामासुरगोदयचन्द्रो



दयानामुत्तरोत्तरस्यन्याप्यत्वादगुरुत्वमिति (यदपिदिवोदासीये) त्रयोदशीय  
 दाप्रातः क्षयंयातिचतुर्दशी । रात्रिशेषेत्वमावास्यातदाभ्यंगेत्रयोदशीति । वचनं  
 तद्धेमाद्रिनिर्यायामृताद्यालिखितत्वेननिर्मूलं । समूलत्वेपिचतुर्दश्याः सूर्योदयद्वया  
 संबन्धित्वरूपः क्षयोविवक्षितः सूर्योदयात् प्राक्समाप्तौचन्द्रोदयकालसत्त्वेचत  
 र्थैवांगीकारात् । किंतु । अभ्यंगकालात्प्राक्समाप्तिरूपोऽवहासः क्षयशब्देन  
 विवक्षितः सच्चारुणोदयात्चतुर्थयामाद्वाप्राक्यदाहासस्तत्परमिदं । अतस्वसर्व  
 जनारायणेनचतुर्थयाममात्रेस्नानमुक्तं ॥ तथाचोदात्हतं तथाकृष्याचतुर्दश्यामि  
 ति ( ज्योतिर्निबन्धेनारदोपि ) ईयासितचतुर्दश्यामिदुक्षयतिथार्षापि । ऊर्जा  
 दौस्वातिसंयुक्तेतदादीपावलीभवेत् । कुर्यात्संलग्नमेतच्चदीपोत्सवदिनत्रयं । येतु  
 त्रयोदशीमध्येस्नानमाहुस्तेषामाशयंनविभ्रडित्यलं भयसायदपि । अरुणोदयतो  
 न्यत्ररिक्तायांस्नातियोनरः । तस्याब्दिकभवोर्ध्वमनश्येत्येव न संशयइतिदिवो  
 दासीयेभविष्यवचनं तन्मुख्यकालेऽरुणोदयेचतुर्दश्य भावेपितत्रैवस्नातव्यमित्ये  
 वंपरमितिसर्वसिद्धं । चतुर्घटिकात्मकोऽरुणोदयइतितत्रैवोक्तस ( मदनरत्ने  
 पात्रे ) अपामार्गमथोतुंबो प्रपुञ्जाटमथापरस । भ्रामयेत्स्नानमध्येतुनरकस्यक्ष  
 यायवै । प्रपुञ्जाटप्रचक्रमर्दः ( मंत्रस्तु ) सितालोष्ठसमायुक्तसकंटकदलान्वि  
 त । हरपापमपामार्गभ्राम्यमाणाः पुनः पुनरिति । अस्यामेवप्रदोषेदीपान्नदद्या  
 दित्युक्तं ( हेमाद्रौस्कांदे ) ततः प्रदोषसमयेदीपान्नदद्यान्मनोरमान् । ब्रह्मविष्णु  
 शिवादीनांभवनेयुमठेयुचेति (दिवोदासीयेब्राह्मे) अमावास्याचतुर्दश्याः प्रदोषे  
 दीपदानतः । यममार्गाधिकारेभ्योमुच्यतेकार्तिकेनरः । खण्डतिथौतुपूर्वेह  
 प्रदोषेदीपान्नदत्वापरैद्युः स्नायादितिदिवोदासीयेउक्तं । अत्रनरकोद्देशेनचतुर्व  
 र्तियुक्तंदीपदानंकार्यम् ( तत्रमंत्रः ) दत्तोदीपश्चतुर्दश्यांनरकप्रीतयेमथा । चतु  
 र्वर्तिसमायुक्तः सर्वपापापनुत्तये ( तत्रैवलेङ्गे ) माघपत्रस्यशाकेनभुक्त्वातत्रदिनेन  
 रः । प्रेताख्यायांचतुर्दश्यांसर्वपापैः प्रमुच्यते । ( अवयमतर्पणामुक्तंमदनपारि  
 जातेवृद्धमनुना ) दीपोत्सवचतुर्दश्यांकार्यंतुयमतर्पणम् ( मदनरत्नेब्राह्मे ) अपा  
 मार्गस्यपत्राणिभ्रामयेच्छिरसोपरि । ततश्चतर्पणांकार्यधर्मराजस्यनामभिः ।

यमायधर्मराजायमृत्यवेचांतकायच । वैवस्वतायकालायसर्वभूतक्षयायच । श्री  
दुंबरायदधतायनीलायपरमेष्ठिने । वृकोदरायचित्रायचित्रगुप्तायवैनमर्शति ( त  
र्पणाप्रकारस्तुहेमाद्रौ ) एकैकेनतिलैर्मिश्रानदद्यात्वींस्त्रीजलांजलीन् । संवत्सर  
कृतं पापं तत्क्षणादेवनश्यति ( तथा मदनरत्नेस्कांदे ) दक्षिणाभिमुखो भूत्वा तिलैः  
सव्यं समाहितः । देवतीर्थेन देवत्वात्तिलैः प्रेताधिपोयतः । तथा । यज्ञोपवीतिना  
यवेति । इदं जीवत्पितृकेणापि कार्यम् । जीवत्पितापि कुर्वीत तर्पणाय मभीष्टम  
योरिति पाप्मोक्तेः ( अत्र भीष्टमतर्पणमप्युक्तं दिवोदासीये ) तत्र प्रकारस्तु साधेव  
क्ष्यते ॥ इति नरकचतुर्दशी ॥ कार्तिकासवास्यायां प्रातरभ्यंगं कुर्यात् ( तदुक्तं  
कालादर्शे ) प्रत्यूषश्च अयुग्दर्शकृताभ्यंगादिसंगलः । भक्त्या प्रपूजयेद्देवीमलक्ष्मी  
विनिवृत्तये । अस्य व्याख्याने आदिशब्दात्पंचत्वगुदकस्नानादेरुपसंग्रहः ( तदुक्तं  
पुष्करपुराणे ) स्वातीस्थितेरवाविंदुर्यदि स्वातिगतो भवेत् । पंचत्वगुदकस्नायी  
कृताभ्यंगविधिर्नरः । नीराजितो महालक्ष्मी मर्चयन् श्रियमप्नुते । आश्वयुग्द  
र्श इति दर्शशब्दः । प्रत्यूषस्वातियुक्तातिथिपरः ( तदुक्तं ब्राह्मे ) उर्जेशुक्ता द्विती  
यायां तिथिषु स्वाति ऋक्षगे । मानवो संगलस्नायी नैवलक्ष्म्या विद्युज्यते । तत्रैव ।  
इयेभूते च दर्शे च कार्तिकप्रथमे दिने । यदा स्वाती तदाभ्यंगस्नानं कुर्याद्दिनोदये ( क  
श्यपसंहितायां तु दीपावलिदर्शप्रक्रम्य ) इंदुक्षये पिसंक्रांतौ रवौ पाते दिनक्षये । तत्रा  
भ्यंगो न दोषाय प्रातःपापापनुत्तय इति ( स्वातीयोगं विनाप्यभ्यंग उक्तः । मात्स्ये )  
दीपैर्नीराजनादत्र सैश्यादीपावली स्मृता ( अत्र विशेषो हेमाद्रौ भविष्ये ) दिवा तघ्न  
भोक्तव्यमृतेवालातुराज्जनात् । प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात् । दीप  
वृक्षाप्रचदा तव्याः शक्त्या देवगृहेषु च ॥ तत्रैवाभ्यंगमभिधाय ॥ एवं प्रभातसमये  
त्वमावास्यां नराधिप । कृत्वा तु पार्वणां ग्राहं दधिसीरघृतादिभिः । दीपान् दत्त्वा  
प्रदोषे तु लक्ष्मीं पूजय यथाविधि । स्वलंकृतेन भोक्तव्यं सितवस्त्रोपशोभिना । अ  
यं प्रदोषव्यापी ग्राह्यः ॥ तुलासंस्थे सहस्रांशो प्रदोषे भूतदर्शयोः । उत्काहस्तान  
राः कुर्युः पितृणां मार्गदर्शनमिति ज्योतिषोक्तेः ॥ दिनद्वये सत्त्वे परः । दंडैकर  
जनीयो गोदर्शः स्यात्तु परेऽहनि । तदा विहाय पूर्वद्युः परेऽह्नि सुखरात्रिकेति तिथि



तत्त्वेज्योतिर्वचनात् । दिवोदासीयेतुप्रदोषस्यकर्मकालत्वात् । अर्धरात्रेभवत्ये  
 बलक्ष्मीराश्रयितुंगृहान् । अतःस्वलंकृतोलिप्तादीपैर्जाग्रज्जनोत्सवाः । सुवाध  
 वलितःकार्याः पुष्टमालोपशोभिताइति । ब्राह्मोक्तेष्वच । प्रदोषार्धरात्रव्या  
 पिनीमुख्यासकैकव्याप्तौपरैव ॥ प्रदोषस्यमुख्यत्वा दर्धरात्रेनुष्ठेयाभावाच्च ।  
 (यत्तु ) अपराक्लेप्रकर्तव्यंश्चाद्वं पितृपरायणौः । प्रदोषसमयेराजनकर्तव्यादीप  
 मालिकेतिक्रमः । संपूर्णातिथावेवप्राप्तेरनुवादोनविधिः । तत्तत्कर्मकालव्याप्ते  
 र्वलवत्वात्सम्पूर्णातिथौप्राप्त्याखण्ड तिथावप्राप्त्याविध्यनुवादविरोधाच्चेत्युक्तम्  
 (अत्रैवदर्शपरारात्रेऽलक्ष्मीनिःसारणामुक्तंमदनरत्नेभविष्ये) एवंगतेनिशीथेतु ज  
 नेनिद्रार्धलोचने । तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिंडिमवादनैः । निष्काशयतेप्रहृष्टा  
 भिरलक्ष्मीःस्वगृहांगणात् (कार्तिकशुक्लप्रतिपदिगोक्रीडनमुक्तम् निर्णयामृते  
 अस्यामेवरात्रौबलेःपूजोक्ताहेमाद्रौभविष्ये) कृत्वैतत्सर्वमेवेहरात्रौदैत्यपतेर्बलेः ।  
 पूजांकुर्यान्नृपःसाक्षाद्भूमौमंडलकेशुभे । बलिमालिख्यदैत्येन्द्रवर्गाकैःपंचरंगकैः ।  
 गृहस्यमध्येशालायां विशालायांततोऽर्चयेत् । लोकश्चापिगृहस्यांतःशय्यायां  
 शुक्लतंडुलैः । संस्थाप्यबलिराजानं फलैःपुष्टैस्तुपूजयेत् (मंत्रास्तुपात्रे) बलि  
 राजनमस्तुभ्यदैत्यदानववंदित । इन्द्रशत्रोमरारातेविष्णुसान्निध्यदोभवेति(तथा)  
 बलिमुद्दिश्यदीयंतेदानानिकुरुनंदन । यानितान्यक्षयारायाहुर्मयैवंसंप्रदर्शितमि  
 ति ॥ तदेतत्पूर्वविद्धप्रतिपदिकतव्यं । पूर्वविद्धाप्रकर्तव्याशिवरात्रिर्बलेर्दिनमि  
 तिहेमाद्रौपाशोक्तेः (माधवोपि) बल्युत्सवंचपूर्वद्युरूपवासवदाचरेदिति (नि  
 र्णयामृतेपि) याकुहःप्रतिपन्मिश्रातत्रगाःपूजयेन्नृप । पूजनात्वीणावर्धतेप्रजा  
 गावोमहीपतिरिति (तथा) भद्रायांगोकुलक्रीडासदेशोवैविनश्यति । भद्रायां  
 द्वितीयायां(तथा)प्रतिपद्यग्निकरणांद्वितीयायांतुगोर्चनम् । क्षेत्रच्छेदंकरिष्येते  
 वित्तनाशंकुलक्षयमिति (तथा) प्रतिपदृशसंयोगेक्रीडनंतुगवांसतम् । परविद्धेषु  
 यःकुर्यात्पुत्रदारधनक्षयइतिदेवलवचनाच्च । गतेचविधिप्रतिषेधाःपर्वदिनेप्रति  
 पदःसायाह्नव्यापित्वेद्वितीयदिनेचंद्रदर्शनसंभवेचज्ञेयाः । गवांक्रीडादिनेयत्ररा  
 त्रीदृश्येतचंद्रमाःसोमोराजापशून्हांतिसुरभिःपूजकांस्तथेतिपुराणासमुच्यतात् ।

दिनद्वयेसायाह्नव्यापित्वेतुपरैवग्राह्या । वर्धमानतिथौनंदायदासार्धत्रियामिका  
द्वितीयावृद्धिगामित्वादुत्तरातत्रचोच्यतइति । तथा । त्रियामगादर्शतिथिर्भवे  
चेत्सार्धत्रियासाप्रतिपदिवृद्धौ । दीपोत्सवेतेमुनिभिःप्रदिष्टेअतोऽन्यथापूर्वयुते  
विधेयइतिपुराणसमुच्चयादितिनिर्णयामृतकारः ॥ सार्धत्रियामिकेत्यनेनचंद्रद  
र्शनाभावउक्तः । द्वितीयायाःपंचधाविभक्तदिनचतुर्थाशरूपापराह्णव्याप्तावेव  
चंद्रदर्शनसंभवात् । वयंत्वेतद्वचनद्वयंपूर्वविद्धासंभवेवेदितव्यमितिब्रूमः ॥ दिनद्व  
येप्रतिपदःसायाह्नव्याप्यभावेतुपूर्वैव । रात्रौर्बालपजाविधानेनकर्मकालव्यापि  
त्वात् । परदिनेचंद्रोदयेतन्निषेधादितिदिक् । मदनरत्नेतुपूर्वविद्धायांगोक्रोडा ॥  
नीराजनसंगलमालिकेतुत्तरत्रकार्यकार्तिकेशुक्लपक्षेतुविधानद्वितयंभवेत् । ना  
रीनीराजनंप्रातःसायंसंगलमालिका । यदाचप्रतिपत्स्वल्पानारीनीराजनंभवेत्  
द्वितीयायांतदाकुर्यात्सायंसंगलमालिकामितिब्राह्मोक्तेः ॥ लभ्यतेयदिवाप्रातः  
प्रतिपदघटिकाद्वयम् । तस्यांनीराजनंकार्यसायंसंगलमालिकेति । भविष्योक्तेः  
प्रातर्वायदिलभ्येतप्रतिपदघटिकाशुभा । द्वितीयायांतदाकुर्यात्सायंसंगलमालि  
काम् । कार्तिकेशुक्लपक्षादौत्वमावास्याघटीद्वयम् । देशभंगभयान्नैवकुर्यान्मंगल  
मालिकामिति । देवीपुराणाच्चेत्युक्तम् ॥ अत्रविशेषोहेमाद्रौब्राह्मे ॥ बलिप्रति  
पदप्रक्रम्य । तस्मिन्द्युतंप्रकर्तव्यंप्रभातेतत्रमानवैः । तस्मिन्द्युतेजयोयस्यतस्यसंव  
त्सरंजयः । पराजयोविरुद्धश्चलाभनाशकरोभवेत् । दयिताभिप्रचसहितैर्नया  
साचभवेन्निशेति (अत्रगोवर्धनपजादिचोक्तंहेमाद्रौ निर्णयामृतेचस्कांदे) प्रात  
र्गोवर्धनंपूजयद्यतंचापिसमाचरेत्तुभयणीयास्तथागावः पज्याश्चावाहदोहनाः ।  
गोवर्धनप्रचर्गोमयेनकार्यप्रचरेणावा ॥ संवस्तु । गोवर्धनधराधार गोकुलवारा  
कारणा । बहुबाहुकृतच्छायगवांकोटिप्रदोभव ॥ गोसंवस्तुलक्ष्मीयालोकपाला  
नांधेनुहपेरासंस्थिता । घृतं वहतियज्ञार्थममपापंव्यपोहतु ॥ तत्रैवस्कांदे । ततोऽ  
पराह्णतमयेपर्वस्यांदिशिभारत । मार्गपालींप्रवधीयात्तंगेस्तंभेयपादपे । कुश  
काशमयोदिव्यालंबकैर्बहुभिर्मुने । दर्शयित्वागजानश्चानसायमस्यास्तलेनयेत् ।  
कृतहोमेद्विजेंद्रैस्तुबधनीयान्मार्गपालिकाम् । नमस्कारंततःकुर्यान्मंत्रेणानेनमु



व्रत । मार्गपालितमस्तेस्तुसर्वलोकसुखप्रदे । विधेयैः पुत्रदाराद्यैः पुनरेहि व्रतस्य  
मे । नीराजनंचतत्रैवकार्यराष्ट्रजयप्रदम् । राजानो राजपुत्राश्च ब्राह्मणाः शूद्रजा  
तयः । मार्गपालोऽसमुलंध्यनीरुजः स्युः सुखान्विताः (तत्रैवादित्यपुराणो) कुशका  
शमयोऽकुर्याद्यष्टिकांसुदृढानवां ॥ तामेकतो राजपुत्राहीनवर्णास्तथान्यतः । गृही  
त्वाकर्षयेयुस्तां यथासारं मुहुर्मुहुः । जयोवहीनजातीनां जयो राजस्तु वत्सरमिति ।  
यमद्वितीया तु प्रतिपद्यता ग्राह्येत्युक्तं निर्णयामृतादौ ॥ यमद्वितीया मध्याह्नव्यापि  
नीपूर्वविद्धाचेति हेमाद्रिः । अत्र विशेषो हेमाद्रौ स्कांदे । ऊर्जशुक्लद्वितीया यामप  
राक्तेऽर्चयेद्यमं । स्नानं कृत्वा भानुजायां यमलोकं न प्रयतीति । ऊर्जशुक्लद्वितीया  
यां पूजितस्तर्पितो यमः ॥ वेष्टितः किन्नरैर्हृष्टैस्तस्मै यच्छ्रुतिवांछितम् ॥ (तथाभ  
विष्टे) प्रथमाश्रावणो मासितथाभाद्रपदेतरा । तृतीयाश्वयुजे मासि चतुर्थीका  
र्तिके भवेत् । श्रावणो कलुषानाम तथाभाद्रे च गीर्मला । आश्विने प्रेतसंचारा कार्तिके  
याम्यकामतेत्युक्ता प्रथमाया व्रतं द्वितीयायां सरस्वतीपूजा तृतीयायां श्राद्धमुक्ता  
चतुर्थ्यामुक्तं । कार्तिकेशुक्लपक्षस्य द्वितीयायां युधिसिर । यमो यमुनया पूर्वभो  
जितः स्वगृहेऽर्चितः । अतो यमद्वितीयेयं त्रिभुलोकेषु विश्रुता । अस्यां निजगृहे  
विप्रनभोक्तव्यं ततो नरैः । स्नेहेन भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यं पुष्टिवर्द्धनं । दानानि च प्रदे  
यानि भगिनीभ्यो विधानतः । स्वर्णालंकारवस्त्रान्नपूजासत्कारभोजनैः । सर्वाभ  
गिन्यः संपज्या अभावे प्रतिपन्नाः । प्रतिपन्नाः । माता भगिन्य इति हेमाद्रिः ।  
पितृव्यं भगिनीहस्तात् प्रथमायां युधिसिर ॥ मातुलस्य सुताहस्ताद् द्वितीयायां तथा  
वृष । पितुर्मातुः स्वसुः कन्येतृतीयायां तयोः करात् । भोक्तव्यं सहजायाश्च भगि  
न्याहस्ततः परं । सर्वास्तु भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यं बलवर्द्धनं । यस्यां तिथौ यमुनया यम  
राजदेवः संभोजितः प्रतिजगत्स्वसृदौ हृदेन । तस्यां स्वसुः करतलादिहयोभुनक्ति  
प्राप्नोति रत्नसुखधान्यमनुत्तमंसः । गौडास्तु ॥ यमं च चित्रशुभं च यमदूतांश्च पूज  
येत् । अर्घ्यश्चात्र प्रदातव्यो यमाय सहजद्वयैः । मंत्रः । सह्यो हि मातृडजपाशहस्त  
यमांतकालो कवरासरेण । भ्रातृद्वितीया कृतदेवपूजां गृहाणा चार्घ्यं भगवन्नमस्ते ।  
भ्रातस्तवानुजाताहं भुङ्क्वभक्तमिदं शुभं । प्रीतये यमराजस्य यमुनायां विशेषतः । ज्येष्ठा

प्रजातेतिवदेदितिस्मार्ताः ॥ इत्यन्नदानमित्यप्याहुः ब्रह्मांडपुराणोपि । यातुभोज  
यतेनारीभ्रातरं युग्मकेतिथौ । अर्चयेच्चापितांदूलैर्नसावैधव्यमाप्नुयात् । भ्रातुरा  
युः क्षयो राजन न भवेत्तत्र कर्हिचिदिति । कार्तिकशुक्लनवमी युगादिः सापौर्वास्तिक  
कीग्राह्या । शुक्लपक्षस्थत्वात् । अत्रापिंडरहितं श्राद्धं कर्तव्यं । अन्यतप्राशुक्तं ।  
(अत्रैव विष्णुत्रिरात्रमुक्तं हेमाद्रौ पात्रे) कार्तिकेशुक्लनवमी मवाप्यविजितेन्द्रियः ॥  
हरिं विधाय सौवर्गांतुलस्या सहितं विभुम् । पूजयेद्द्विधिवद्भक्त्या त्रतीतत्रादिनवयम  
सत्रं यथोक्तविधिना कुर्याद्देवाहिकं विधिमिति । कार्तिकशुक्लैकादश्यां भीष्मपंच  
मकव्रतमुक्तम् । नारदीये ॥ अतो नरैः प्रयत्नेन कर्तव्यं भीष्मपंचकम् । कार्तिकस्या  
मले पक्षे स्नात्वा सस्यगयतत्रतः । एकादश्यांतु गृह्णीयाद्व्रतं पंचदिनात्मकमिति ।  
तद्द्विधस्तु गोमये स्नात्वा मौनी पंचामृतैः पंचगव्यैर्विष्णुं संस्त्राप्य संपूज्य पायसं नि  
वेद्य द्वादशाक्षरमष्टोत्तरशतं जप्त्वा । उं नमो विष्णावर्षति । यदक्षरेण घृताक्ता नय  
वान् ब्रौं हीं प्रचाष्टोत्तरशतं हुत्वा भूमौ स्वपेत् । एवं पंचदिने यु कुर्यात् ॥ विशेषस्त्व  
द्येऽह्नहरेः पादौ कमलैः संपूज्य त्रिर्गोमयं प्राशयम् । द्वितीये ह्निदित्व पत्रैर्जानुनीं स  
पूज्य गोमूत्रम् । त्रयोदश्यां भृङ्गराजेन नाभिं संपूज्य क्षीरम् । चतुर्दश्यां करवीरैः  
स्कंधं संपूज्य दधि । पौर्णमास्यां होमांते लोहीपापप्रतिमां खड्गचक्रहस्तां कृष्णाव  
स्त्रेणावेष्टितां प्रस्थितलोपरिस्थां कृत्वा धर्मराजनामभिः करवीरैः संपूज्य । यदन्य  
ज्जन्मनि वा पुनः तत्सर्वं प्रशमं यातुमत्पापंतवपूजनादिति । पुठपांजलिं क्षिप्त्वा कृ  
ष्णाप्रतिमां च संपूज्य विप्राय दत्त्वा विप्रान्संभोजेत् । दक्षिणां दत्त्वा पंचगव्यं प्राप्य ।  
पौर्णमास्यां नक्तं भुंजीते तिलघुनारदीये । पंचगव्यप्राशनं यदक्षरेणोति हेमाद्रिः ॥  
हेमाद्रौ भविष्येत् ॥ शाकैर्मुन्यन्नैर्वा पंचाहं वर्तनमुक्तं । अन्तेप्युक्तं । यद्भीष्मपंचकमि  
ति प्रथितं पृथिव्यामेकादशी प्रभृति पंचदशी निरुद्धं ॥ मुन्यन्नभोजनपरस्य नरस्य  
तस्मिन्निष्टं फलं दिशति पांडवशार्ङ्गधन्वेति । तथा पात्रे । पंचाहं पंचगव्याशी भीष्मा  
याध्यतु पंचसु । अहः स्वपितथा दद्यान्मंत्रेणानेन सुव्रत । सत्यव्रताय शुचये गांगे ग्राय  
महात्मने । भीष्मायैतद्दाम्यर्घ्यमाजन्म ब्रह्मचारिणो । वैयाघ्रपद्यगोत्रायेति च ।  
सव्येनानेन मंत्रेणातपरां सार्ववर्णिकमिति । कार्तिकशुक्लद्वादश्यां रेवती नक्षत्रयो



गरहितायां पारणां कार्यम् । तदुक्तं । आभाकासितपक्षेयुर्मैत्रश्रवणारेवती । संगमेन  
हिभीक्तव्यं द्वादशद्वादशीर्हरेदिति । यदातुरेवतीयो गरहिताद्वादशी सर्वथानल  
भ्यते तदारेवत्याश्चतुर्थपादं वर्जयेत् । वचनं तु प्राशुक्तं (लघुनारदीये) कार्तिकेशु  
क्षपक्षस्य कृत्वा चैकादशीं नरः । प्रातर्दत्त्वा शुभान् कुंभात् प्रयाति हरिर्मंदिरम् (म  
दनरत्ने वाराहे) सकादशी सोमयुक्ता कार्तिके मासि भाभिनि । उत्तरायादसंयोगे अ  
नंता सा प्रकीर्तिता । तस्यां यत् क्रियते भद्रे सर्वमानं त्यमश्नुते । अस्यामेव रात्रौ देवो  
ह्यापनमुक्तं हेमाद्रौ ब्राह्मे । सकादश्यां च शुक्लायां कार्तिके मासि केशवम् । प्रसुप्तं  
बोधयेद्रात्रौ श्रद्धाभक्तिसमन्वित इति (मदनरत्ने भविष्ये) कार्तिकेशु क्षपक्षे तु  
सकादश्यां पृथ्यासु तमंत्रेणानेन राजेन्द्रदेवमुत्थापयेत् द्विजः । रामार्चनं चंद्रिकादौ तु  
द्वादश्यामुक्तं । पारणाहे पूर्वरात्रे घंटादीन्वादयेन्मुहुरिति । अत्र देशाचारतो व्यव  
स्था । तत्रैव देवदेवस्य स्नानं पूर्वमहहवेत् । महापूजां ततः कृत्वा देवमुत्थापयेत् सुधीः ।  
मंत्रास्तु वाराहपुराणोक्ताः ॥ ॐ ब्रह्मोद्रुद्राग्नि कुबेरसूर्यसोमादिभिर्वंदितं वंदनां  
ग । बुद्धस्वदेवेश जगन्निवास मंत्रप्रभावेन सुखेन देव । इयं तु द्वादशी देवप्रजो धार्थवि  
निर्मिता । त्वयैव सर्वलोकां हि तार्थशेषशायिना । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद त्यज नि  
द्रां जगत्पते ॥ त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदं उत्तिष्ठते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ मा  
धवागताम धाविष्य चैव निर्मलं निर्मलादिशः । शारदानि च पुठपाणिगृहाणाममकेश  
व इदं विष्णुरिति प्रोक्तो मंत्र उत्थापने हरेरिति । सर्वदेवमुत्थाप्य तदग्रे चातुर्मास्यं ब्र  
तसमाप्तिं कुर्यात् (तदुक्तं भारते) चतुर्धा गृह्यत्रैचीर्णां चातुर्मास्यं ब्रतं नरः । कार्ति  
केशु क्षपक्षे तु द्वादश्यां तत्समापयेत् (लघुनारदीये) चातुर्मास्यं ब्रतानां च समाप्तिः  
कार्तिके स्मृता । मंत्रश्च निर्णया मृते स नत्कुमारोक्तः । इदं ब्रतं मया देवकृतं प्रीत्यै  
तव प्रभो । न्यूनं संपूर्णां तां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दनेति । अथ वाराहोक्तो बोधिनी  
विधिः । सकादश्यां रात्रौ कुंभे घृतपात्रोपरि हैमं मायमितं मत्स्यं पंचामृतेन संस्नाप्य  
कुंकुमपीतवस्त्रयुगपचाद्यैः संपूज्य मत्स्यादिदशावतारान् संपूज्य जागरं कृत्वा प्रात  
र्देवमाचार्यं च वस्त्राद्यैः संपूज्य । जगदादिर्जगद्रूपो जगदादिरनादिमान् । जगदा  
द्योजगद्योनिः प्रीयतां मे जनार्दन इति नत्वा दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणान् भोजयेदिति ।

(तथाब्राह्मे) महातुर्यरेवेरात्रौभ्रामयेत्स्यंदनेस्थितम् । उत्थितं देवदेवेशं नगरे पार्थिवः स्वयं । चतुरो वार्यिकान्मासान् नियमं यस्य यत्कृतम् । कथयित्वा द्विजेभ्यस्तद्दद्याद्भक्त्या सदाक्षिणं । यस्य भक्त्यस्य नियमः कृतस्तद्द्वयंदद्यादित्यर्थः । इदं शुक्रास्तादावपि कार्यं । आशौचे तु । पूजामन्येन कारयेत् । कार्तिकशुक्लद्वादशीपौर्णमासी च मन्वादिः सापौर्वास्तिकी ग्राह्या । अन्यतः प्रागुक्तम् । कार्तिकशुक्लचतुर्दशी वैकुण्ठसंज्ञा सा विष्णुपूजायां रात्रिर्व्यापिनी ग्राह्या दिनद्वये तद्द्व्याप्तौ निशीथप्रदोषो भयव्यापिनी ग्राह्या (तदुक्तं हेमाद्रौ भविष्ये) कार्तिकस्य सिते पक्षे चतुर्दश्यां नराधिप । सोपवासस्तु संपूज्य हरिं रात्रौ जितेन्द्रिय इति । अस्या एव विश्वेश्वरप्रतिष्ठा दिनत्वात्तत्प्रतीत्यर्थं यदोपवासोऽपि क्रियते तदा रुणोदयव्यापिनी ग्राह्या । तदुक्तं त्रिस्थलीसेतौ (सनत्कुमारसंहितायां) वर्षे ब्रह्मलंकारव्येमासे श्रीमतिकार्तिके । शुक्लपक्षे चतुर्दश्यामरुणाभ्युदयं प्रति । महादेवतिथौ ब्राह्मे मुहूर्तमणिारक्तिके । स्नात्वा विश्वेश्वरो देव्या विश्वेश्वरमपूजयेदिति तत्पूर्वदिने चोपवासः कार्यः । ततः प्रभाते विमले कृत्वा पूजामहाद्भुताम् । दंडपाशोर्महाधामनिवनेऽस्मिन् कृतपारणा इति तत्रैवोक्तेः । शिवरहस्येऽपि । पूजा जागराद्युक्तम् । ततोऽरुणोदये जाते स्नात्वा स्नात्वा च भस्मना । संध्यां समाप्य विश्वेशं मामभ्यर्चयथाविधि ॥ सङ्कता न भोजयामासुर्हययो बुभुजुस्तत इति । अत्र कार्तिकव्रतीद्यापनं पात्रे उक्तम् । (कार्तिकमाहात्म्ये) अथोर्जव्रतितनः सम्यगुद्यापनविधिः शृणु । ऊर्जशुक्लचतुर्दश्यां कुर्यादुद्यापनं व्रती । तुलस्या उपरिष्ठात्तु कुर्यान्मंडपिकां शुभाम् । तुलसीमलदेशे च सर्वतो भद्रमेव च । तस्योपरिष्ठात्तु कलशं पंचरत्नसमन्वितम् । पूजायेत्तत्र देवेशं सौवर्णांशुर्वनुज्ञया । रात्रौ जागरां कुर्याद्गीतवाद्यादिसंगलैः । ततस्तु पौर्णमास्यां वै सपत्नीकान् द्विजोत्तमान् । त्रिंशन्मिता नयैः क्वास्वशक्त्यावानिमंत्रयेत् । अतो देवा इति द्वाभ्यां जुहुयात्तिलपायसं । ततो गां कपिलां दद्यात्पूजयेद्द्विवदगुरुमिति । कार्तिकी पौर्णमासी परा ग्राह्या । अमापौर्णमास्योपरे इति दीपिकोक्तेः । अत्र विशेषो हेमाद्रौ ब्राह्मे । पुरायां महाकार्तिकी स्याज्जीवेदोः कृत्तिकासु च । तथा । आग्नेयं तु यदा ऋक्षं कार्तिकां भवति क्वचित् । महती सा तिथिर्ज्ञेया स्नानदानेषु चो



तमा । यदातुयाभ्यंभवतिऋक्षंतस्यांतिथौक्वचित् । तिथिःसापिमहापुरायासुनि  
भिःपरिकीर्तिता । प्रजापत्यंयदाऋक्षंतित्यौतस्यांनराधिप । सामहाकार्तिकी  
प्रोक्तादेवानामपिदुर्लभेति ( पाप्मे ) विशाखासुयदाभानुः कृतिकासुचचंद्रमाः ।  
संयोगः पञ्चकोनामपुठकरेठ्वपिदुर्लभः । पञ्चकंपुठकरेप्राप्यकपिलांयःप्रयच्छ  
ति । सहित्वासर्वपापानिवैष्ठावंलभतेपदम् । यमः । कार्तिक्यांपुठकरेस्नातःसर्व  
पापैःप्रमुच्यते । माध्यांस्नातःप्रयागेतुमुच्यतेसर्वकिल्बिषैः । अस्यामेवसायंका  
लेमत्स्यातारोजातइत्युक्तम् । ( पाप्मेकार्तिकमाहात्म्ये ) वरानदत्वायतोविष्णुर्म  
त्स्यरूपीभवेत्ततः । तस्यांदत्तं हुतंजप्तंतदक्षय्यफलंस्मृतमिति ( अत्रविपुरोत्सव  
उक्तोभार्गवार्चनदीपिकायां ) पौर्णमास्यांतुसंध्यायांकर्तव्यस्त्रिपुरोत्सवःदद्याद  
नेनसंत्रेणाप्रदीपांश्चसुरालये । कीटाःपतंगामशकाश्चबृक्षाजलेस्थलेयेविचरंति  
जीवाःदृष्ट्वाप्रदीपंनचजन्मभागिनोभवंतिनित्यंश्चपार्चाहविप्राः । अत्रवृषोत्स  
र्गातिप्रशस्तः । ( तदुक्तंमात्स्ये ) कार्तिक्यांयोवृषोत्सर्गंकृत्वानक्तंसमाचरेत् । शै  
वंपदमवाप्नोतिशिवव्रतमिदंस्मृतमिति ( अत्रकार्तिकेयदर्शनमुक्तंकाशीखंडे )  
कार्तिक्यांकृतिकायोगेयःकुर्यात्स्वामिदर्शनम् । सप्तजन्मभवेद्विप्रोधनादयोवे  
दपारगः ॥

इतिश्रीकमलाकरभट्टकृतेनिर्णयसिन्धौद्वितीयपरिच्छेदेकार्तिकमासः ॥

वृषचकेपूर्वाः षोडशघटिकाःपुरायाः । शेषंप्राग्वत् । मार्गशीर्षकृष्णाष्टमीका  
लाष्टमीसाचरात्रिव्यापिनीग्राह्या । मार्गशीर्षसिताष्टम्यांकालभैरवसन्निधौ । उ  
षोष्यजागरंकुर्वन्सर्वपापैःप्रमुच्यते । इतिकाशीखंडात् । रात्रिव्रतत्वागतेः । रुद्र  
व्रतेषुसर्वेषुकर्तव्यासंमुखीतिथिरितिब्रह्मवैवर्ताच्च । दिनद्वयेऽशतोरात्रिव्याप्ता  
वुत्तरैव । भैरवोत्पत्तेःप्रदोषकालीनत्वादितिकेचित् । तन्न । शिवरहस्येमध्या  
ह्नेभैरवोत्पत्तेः अत्रणात् । तथाचतेत्रैव । नित्यरात्रादिकंकृत्वामध्याह्ने संस्थ  
तेरवावित्युपक्रम्यब्रह्मणारुद्रेवज्ञातेउक्तं । तदोग्ररूपादनवद्यान्मतःश्रीकालभैर  
वः । अविरासीत्तदालोकानभीययन्नखिलानपीति । अत्रोपवाससर्वप्रधानमित्यु

क्तं । तत्रैव । उपोषणास्यांगभतमद्यदानमिहस्मृतम् । तथाजागरांरात्रौपूजा  
यामचतुष्टये । संध्यायामपिपूजैवोक्ता । तेनमध्याह्नव्यापिनीयुक्ता । दिनद्वये  
२शतःसंपर्गायांवातद्वयाप्तौपूर्वैव । पूर्वोक्तवचनात् । पारणातुप्रातरेव । याम  
त्रयोधर्गामिन्यांप्रातरेवाहिपारणोतिवचनात् ( अत्रचकालभैरवपूजोक्तात्रिस्थ  
लीसेतौ)कृत्वाचविविधांपूजांसंभारविस्तरैः । नरोमार्गसिताष्टम्यांवार्यिकं  
विघ्नमुत्सृजेत् । तथा । तीर्थेकालोदकेस्नात्वाकृत्वातर्पणमत्वरः । विलोक्यका  
लराजानंनिरयादुद्धरेत्पितृ निति । इयंचकार्तिक्यनंतरागौणाचांद्राभिप्रायेणामा  
र्गशीर्षशुक्लपंचम्यांनागपूजोक्ताहेमाद्रौस्कांदे । शुक्लामार्गशिरेपुण्याश्रावणो  
याचपंचमी । स्नानदानैर्बहुफलानागलोकप्रदायिनीति । इयंनागपूजायांयष्टी  
युतैवग्राह्या । पंचमीनागपूजायांकार्यायष्टीसमन्विता । तस्यांतुतुषितानागाइत  
रासचतुर्थिकेति । मदनरत्नेवचनात् । मार्गशीर्षशुक्लयष्टीचंपायष्टीतिमहारा  
ष्टेयुप्रसिद्धा । सोत्तरयुताग्राह्या । यरामुन्योरितियुग्मवाक्यात् । पूर्वागहेदैविकं  
कुर्यादितिवचनादस्यचदेवकर्मत्वात् । इयमेवयोगविशेषेणाचंपेत्युच्यते ( तदु  
क्तंब्रह्मांडपुराणोमल्लारिमाहात्म्ये) मार्गेभाद्रपदेशुक्तायष्टीवैधृत्तिसंयुता । रवि  
वारेणासंयुक्तासाचांपेतीहकीर्तितेति । विशाखाभौमयोगेनसाचांपेतीहकीर्तिते  
ति ॥ मदनरत्नेपाठः । मार्गशीर्षमलेपक्षेयष्ट्यांवारेऽशुमालिनः । शतताराग  
तेचंद्रेलिंगंस्यादृष्टिगोचरमिति । इयंचयोगवशेनपूर्वापरावाकार्या । चंपाय  
ष्टीसप्तमीयुतेतिदिवोदासः । इयमेवस्कंदयष्टी । कृष्णाष्टमीस्कंदयष्टीशिवरात्रि  
प्रचतुर्दशी । एताःपूर्वयुताःकार्यातिथ्यन्तेपारणांभवेदितिभूगुक्तेः । परेहिरा  
वावाद्ययाममध्येपारणासंभवेइदं । अन्यथोत्तरैवेतिदिवोदासः । अल्दपर्यंतयष्टी  
यु । सेनाविदारकस्कंदमहासेनमहाबल ॥ रुद्रोमाभिजयडवक्रगंगारार्भनमोस्तु  
ते । इतिराजतंस्कंदसंपज्यविप्रायदद्यादितिदिवोदासः । मार्गशीर्षशुक्लचतुर्द  
श्यापिशाचविमोचनीतीर्थेआर्द्रात्रिस्थलीसेतौभट्टचरणौरुक्तम् । तस्यांप्राप्तपेशा  
च्यास्त्रपित्राद्युद्देश्यकृत्वेपार्वणात्वादपराह्णव्यापिनीग्राह्या । अज्ञातनामपिशा  
चाद्युद्देश्यकृत्वेत्वेकोदिसृत्वात् । मध्याह्नव्यापिनीति । कुलधर्मव्रतादौतत्तरैव । चे



वनभोगतंतरसितास्याद्धर्मेतिदीपिकोक्तेः । मार्गशीर्षपौर्णमास्यांदत्तात्रेयोत्प  
 त्तिः ( तदुक्तंस्कांदेसह्याद्रिखंडे ) मार्गशीर्षेतथामासिदशमेऽह्निमुनिर्मले । मृ  
 गशीर्षयुतेपौर्णमास्यांयज्ञस्यवासरे । आनयामासदैदीप्यामानंपुत्रंतीशुभम् । तं  
 विष्णुमागतंज्ञात्वाअविनामाकरोत्स्वयम् । दत्तवानस्वस्यपुत्रत्वादत्तात्रेयइतीश्व  
 रइति । इयंप्रदोषव्यापिनीग्राह्येतिवृद्धाः । मार्गशीर्षपौर्णिमानंतराष्टमीअष्टका  
 खंषौषादिमासत्रयेपि । हेमंतशिशिरयोश्चतुरांमिपरपक्षाणामष्टमीठवष्टका  
 एकस्यावेत्याश्वलायनोक्तेः । एकस्यामष्टम्यांवैकार्येतिहरदत्तः क्वचित्पंच  
 म्यप्युक्ताप्रौष्ठपद्यष्टकाभूयःपितृलोकेभविष्यतीति । प्राञ्चवचनात् । तत्तप  
 र्वसप्तमीयुपूर्वेद्युः । तत्परनवमीठवन्वष्टकासुचश्चाद्धमुक्तम् ( कालादर्शं ) मार्गशी  
 र्षेचपौषेचमाघेप्रौष्ठेचफाल्गुने । कृष्णपक्षेचपूर्वेद्युरन्वष्टक्यंतथाष्टकाइति । (यत्तु  
 विष्णुः) अमावास्यास्तिस्रोऽष्टकास्तिस्रोऽन्वष्टकाइति(यच्चकौर्मै) अमावास्याष्ट  
 कास्तिस्रःपौषमासादियुत्रिठिवति । तच्चतुर्थ्यामिनावश्यत्वार्थं । याचाप्यन्याचतु  
 र्थीस्यात्तांचकुर्यात्प्रयत्नतइतिवायुब्रह्मांडपुराणात् । आद्धमेतेठवकुर्वाणोनरकं  
 प्रतिपद्यतइतिविष्णुक्तेरितिशूलपाणिः । शाखाभेदाद्व्यवस्थेति तत्त्वम् ( वायु  
 ब्रह्मांडयोः ) आद्यापूपैःसदाकार्यामासैरन्यासदाभवेत्शाकैःकार्याद्वतीयास्या  
 देयद्रव्यगतोविधिः । पौषादिक्रमः ॥ अन्वष्टकातुप्रागेवनिर्णीता । तत्राष्टम्य  
 पराह्णव्यापिनीग्राह्या । अथाच्छादनपर्यंतंआहंपार्वणावद्भवेदित्याश्वलायनका  
 रिकोक्तेरपराह्णकालत्वाच्चपार्वणास्य । पूर्वद्युरष्टकाश्चाद्वयोस्तुअष्टम्यनुरोधे  
 ननिर्णयः । अतएवसुत्रम् । पूर्वद्युःपितृभ्योदद्यात् । अपोद्युरन्वष्टक्यमित्तिच ।  
 अवकासकालोविश्वेदेवौ । ईष्टिश्चाद्धेतुदसावष्टम्याकामकालावितिसायणीये  
 शाखोक्तेः । अवश्चाद्धाकरणाप्रायश्चित्तमुक्तामृभिवधाने । सभिद्युभिर्जपेन्मंत्रंश  
 तवारंतुर्ताडने । अन्वष्टक्यंदान्यनंसंपूर्णायामितिसर्वथेति । अशक्नोत्वाश्वलायनः  
 अथश्वोभूतेष्टकाः पशुनास्थालीपाकेनचाप्यनडुहोयवसमाहरेदग्निनावाकक्ष  
 मुपोयंदेयामष्टकेतिनत्वेवानष्टकः स्यादिति । मार्गशीर्षादियुमलमासेसतितत्रा  
 ष्टकानकार्या । चतुरांमितिग्रहणादित्युक्तंनारायणावृत्तौ । तथाकाठकपृष्ठेपि

महालयाष्टकश्राद्धोपाकर्मार्थपिकर्मयत् । स्पष्टमासविशेषाख्याविहितं वर्जयेन्म  
लेइति । मार्गादिरविवारेयुं काम्यं व्रतमुक्तम् । हेमाद्रौ । तत्र भक्ष्यारायुक्तानि हंसे  
सौरधर्मे । पत्रवित्तवंतुलस्यास्त्रिफलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिला  
नां त्रिपलदधितथा दुग्धकंगोमयंच । वित्तवंतो यांजलीनां त्रिमरिचकमथोत्रिः प  
लाः सक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करासद्विवरिति विधिना भानुवारे क्रमेणोति ॥

इति श्रीकमलाकरभट्टकृते निर्णयसिन्धौ द्वितीयपरिच्छेदे मार्गशीर्षमासः समाप्तः ॥

धनुःसंक्रमे पराः षोडशघटिकाः पुरायाः । अन्यत्प्राग्वत् । अत्रोत्सर्जननिर्णा  
यो वक्तव्योपाकर्मप्रसंगात् प्रागेवोक्तः ( कल्पतरौ भविष्ये ) पौषमासस्य द्वादवि  
शुक्लाष्टम्यां बुधो भवेत् । तस्यां स्नानं जपो होमस्तर्पणं विप्रभोजनं । सत्प्रीतये ह  
तं देवि शतसाहस्रिकं भवेत् । अत्रैव रोहिताया द्वायोरो पुरायतमत्वं तत्रैव ज्ञेयं । पौषशु  
क्लौकादशीमन्वादिः ॥ सा चोक्ता प्राक् पौषपौर्णिमानंतराः सप्तम्यष्टमीनवम्यो  
ष्टकाद्याः प्रायुक्ताः । पौषमासास्यायां अर्धोदयो योगविशेषः ( तदुक्तं मदनरत्ने  
महाभारते ) अमार्कपातश्च वर्यो युक्ताचेत्तु पुष्यमाघयोः । अर्धोदयः सविज्ञेयः को  
टिसूर्यग्रहैः सम इति । पुष्यमाघयोर्मध्यवर्तिनी पौर्णिमास्युत्तराभावास्त्येत्यर्थ इति  
भट्टाः । मदनरत्ने पुष्यस्य च माघस्य चेत्यर्थ उक्तः । तन्न । हेमाद्रिदिरोक्तात् । तत्र हि  
माघस्योक्तः । तथा । दिवैव योगः शस्तोयं न तुरात्रौ कदाचनेति । इदमर्धमन्यनि  
बन्धेऽवभावाच्च निर्णायामृतमात्रोक्तेर्निर्मूलमेव । तेन हेमाद्यादि सत्तेरात्रावर्धोदयो भ  
वत्येव । केचित्तु । किंचिदूनो महोदये इत्याहुस्तन्निर्मूलम् । हेमाद्रौ मदनरत्ने च स्कां  
दे । साघासायां व्यतीपाते आदित्ये विष्णुर्देवते । अर्धोदयं तदित्याहुः सहस्रार्कग्रहैः  
समम् । तत्रैव । माघमासे कृष्णपक्षे पंचदश्यां रवेर्दिने । वैष्णवेन तु ऋक्षेण व्यतीपा  
ते सुदुर्लभे । व्रतं कुर्यादित्यग्रेऽन्वयः । तत्रैव । ब्रह्मविष्णुमहेशानां सौवर्गाः पलसं  
ख्यया । प्रतिमास्तु प्रकर्तव्यास्तदर्धेन द्विजोत्तम । सार्धं शतत्रयं शंभोर्द्राणानां ति  
लपर्वतः । कर्तव्यौ पर्वतौ विदग्धाः रुद्रयोः पर्वसंख्यया । शंभुरत्र ब्रह्मा । शय्यात्रयं  
ततः कुर्यादुपस्करसमन्वितम् । तिलैर्होमं कृत्वा प्रतिमां दद्यादित्युक्तं ॥ स्कांदे ।



अर्धोदयेतुसंप्राप्तेसर्वगंगासमंजलम् ॥ शुद्धात्मानोद्विजाः सर्वेभवेद्युर्वह्यसंमिताः ॥  
 यत्किंचिद्दीयतेदानंतद्दानंनेरुर्मात्रंभूमिति । अत्रदानविशेषोनिर्णयामृतेस्कांदे ।  
 चतुःषष्टिपलंमुख्यममंत्रंतत्रकारयेत् । चत्वारिंशत्पलंवाथपंचविंशतिरेववा । अ  
 मंत्रंपात्रम् । तच्चक्रांस्यमयमित्युक्तंतत्रैव । एवंसुघटितंकार्यंकांस्यभाजनमुत्तममि  
 ति ( तथा ) निधायपायसंतत्रपद्ममष्टदलंलिखेत् । पद्मस्यकर्णांकायांतुकर्यमा  
 वंसुवर्णाकम् । तदभावेतदर्धवातदर्धवापिकारयेत् । भूमौतुतंडुलैःशुद्धैःकृत्वाष्टदल  
 मुत्तमम् । अमंत्रंस्थापयेत्तत्रब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् । तेषांपूजाततःकार्याश्वेतमा  
 त्थ्येस्तुशोभनैः । वस्त्रादिभिरलंकृत्यब्राह्मणायनिवेदयेत् । मंत्रस्तु । सुवर्णपाय  
 सासत्रंयस्मादेतत्त्रयोमयम् । आपत्तेस्तारकंयस्मात्तद्गृहाराद्विजोत्तमम् । समुद्रमे  
 खलांपृथ्वींसस्यरदातुश्चयत्तुलम् । तत्तुलंलभतेमर्त्यःकृत्वेदंदानमुत्तममिति ॥

इतिश्रीकर्मलाकरभट्टकृतेनिर्णयसिन्धौपौषमासःसमाप्तः ॥

अथसाधस्नानम् ( तत्रविठगाः ) तुलामकरमेयेषुप्रातःस्नायीसदाभवेत् । हवि  
 र्यंब्रह्मचर्यचमाधस्नानेसहाफलमिति सौरमासउक्तः । ब्राह्मेतुसावनउक्तः ॥ स  
 कादश्यांशुक्लपक्षेपौषमासेसमारभेत् । द्वादश्यांपौर्णमास्यांवाशुक्लपक्षेसमाप  
 नमिति ( पात्रेपि ) पुष्यस्थैकादशांशुक्लामारभ्यस्थंडिलेशयः । मासमात्रंनिरा  
 हारस्त्रिकालंस्नानमाचरेत् । त्रिकालमर्चयेद्विष्णुंत्यक्तभोगोजितेन्द्रियः । माघस्थै  
 कादशांशुक्लांयावद्विद्याधरोत्तमेति । त्रिकालंस्नानंमासोपवासविषयम् । निरा  
 हारइत्युक्तेः । पृथ्वीचंद्रोदयेत्वन्यथोक्तम् ( विष्णुः ) दर्शवापौर्णमासींवाप्रार  
 भ्यस्नानमाचरेत् । पुष्यान्यहर्नित्रिंशत्तुमकरस्थेदिवाकरइति । अत्रदर्शमिति  
 शुक्लादिमुख्यंचंद्राभिप्रायेणा । अयंतुपक्षोनेदानोप्रचरति ( अत्राधिकारिणां  
 भविष्ये । ब्रह्मचारीगृहस्थोवावानप्रस्थोथभिक्षुकः । बालवृद्धयुवानश्चनरनारी  
 नपुंसकाः । स्नात्वासाधेशुभेतीर्थेप्राप्नुवंतीप्सितंफलम् ( पात्रे ) सर्वधिकारिणां  
 ह्यंविष्णुभक्तोयथानृप ( ब्राह्मे ) उष्णादकेनवास्नानमशक्येसतिकुर्वते । दृढेयु  
 सर्वगात्रियुउष्णादंनविशिष्यते ( वैष्णवामृतेगौडनिबन्धेचस्कांदे ) पौष्यांतुसमती

तायांयावद्भवति पूरिमा । साधमासस्य तावद्धि पूजाविष्णोर्विधीयते । दितृणां  
 देवतानां च मूलकं नैवदापयेत् । ब्राह्मणो मूलकं भुक्ता चरेच्छां द्रायणाव्रतम् । अन्य  
 आयाति नरकं सत्रविदुः शूद्रस्य च । वर्जनीयं प्रयत्नेन मूलकं मदिरोपसम् । यदा तु मा  
 धो मलमासो भवति तदा काश्यानां तत्र समाप्तिनियेधो न्मासद्वये स्नानं तन्निश्चयमाप्य च  
 कार्याः । मासोपवासचां द्रायणादितु मलमासस्य वसमापयेत् (तदुक्तं दीपिकायां)  
 नित्यतत्रिंशदिनत्वाच्छुभे मास्यारभ्य प्रसमापयेत् । मलिने मासोपवासव्रतमिति ।  
 मासोपवासपदं चां द्रायणादेरुपलक्षणां (स्नानारंभे च संवो विष्णुनोक्तः) त्वचो  
 त्थाय नित्यमंगुलीयादि द्विधिवर्कम् । साधमासमिसंपूर्णं स्नास्येहं देवमाधव । ती  
 र्थस्यास्य जले नित्यमिति संकल्प्य चेतसीति । (प्रत्यहं संवच्च पात्रे) दुःखदरिद्र्याना  
 शायत्री विष्णोस्तोत्रगाय च । प्रातः स्नानं करोम्यद्यमाधे प्रापविनाशतम् । स  
 करस्थे रवौ माधे गोविंदाच्युतमाधव । स्नानेनानेन मे देवयथोक्तफलदो भव । इमं  
 वंसमुर्चयि । स्नायान्मौलसमन्वित इति । प्रत्यहं मूर्थायाद्वर्कम् (संवस्तु पृथ्वी चंद्रोद  
 ये पात्रे) सवित्रे प्रसवित्रे च परंधामजले सम । त्वते जसापरिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रवे  
 ति । स्नानकालप्रचसूर्योदयः (विस्थलीसेतौ) सकरस्थे रवौ यो हिनस्नात्यभ्युदिते  
 रवाविति । साधमासे रदं त्यापः किंचिदभ्युदिते रवाविति वपाञ्च वचनात् । संप्रा  
 णे माधमासे तु तपस्विजनवल्लभे । क्रोशंति सर्ववारीणां समुद्रगच्छति भास्करे । पुनी  
 मः सर्वपापानि त्रिविधानि न संशय इति (नारदीयोक्तेः) यो माधमास्युर्ध्वमसूर्यक  
 राभितप्तं स्नानं समाचरति चारुनदी प्रवाहे । उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्या  
 न् स्वर्गं प्रयात्य मरदेहधरो नरो सौ । इति भविष्योत्तरवचनाच्च । (ब्राह्मेत्वरुणोदय  
 उक्तः) अरुणोदये तु संप्राप्ते स्नानकाले विचक्षणाः । साधवांघ्रियुगंध्याय नयः स्ना  
 तिसुरपूजित इति (तथा) अरुणोदयमारभ्य प्रातः कालावधिप्रभो । साधस्ना  
 नवतां पुण्यं क्रमात्तत्रावधारणा । उत्तमंतु सनसत्रं मध्यमं लुप्ततारकम् । सवितर्युदि  
 ते भूपततो हीनं प्रकीर्तितमिति । तेनात्र शक्त्यपेक्षया व्यवस्था । इदं च स्नानं प्रया  
 गोऽतिप्रशस्तम् । काप्रयाः शतगुणं प्रोक्तं गंगायमुनसंगमे । सहस्रगुणिता सापि भ  
 वेत्तयश्चिन्मवाहिनी । पश्चिमाभिमुखी गंगा कालिंद्या सह संगता । हंतिकल्पकृतं



पापंसासाधेनृपदुर्लभेत्यादिपात्रादिवचोभ्यः । विस्तरस्तुमत्पितामहकृतप्रयागसे  
 तौजेयः ( ब्राह्मे ) यत्रकुवापियोसाधेप्रयागस्मरगान्वितः । करोतिमज्जनंती  
 र्यसलभेद्गांगमज्जनम् । तथासमुद्रेप्यतिप्रशस्तं ( तदुक्तं पृथ्वीचन्द्रोदयेप्रभासख  
 राडे ) साधेमासिचयः स्नायान्नैरन्तर्येणाभावतः । पौगडरीकफलंतस्यदिवसेदिवसे  
 भवेत् । साधस्नानंकाश्यमेवेतिभट्टाः । विठरावादिवाकोसदावप्यशब्दान्नित्यत्वाव  
 गतेर्नित्यकाश्यमितितुयुक्तं । सासपर्यंतस्नानासंभवेतुग्रहमेकाहंवास्नायात् । स  
 हामाधींपुरस्कृत्यसस्नौतत्रदिनत्रयमितिलिङ्गात् । अस्मिन्योगेत्वशक्तोपिस्ना  
 यादपिदिनत्रयम् । प्रयागेसाधमासेतुग्रहंस्नातस्ययत्फलम् । नाश्वमेधसहस्रेणात  
 तफलंलभतेभुवीतिपात्रादिवचनात् । अवसकरसंकमेरथसप्तमी साधीग्रहमित्ये  
 के । साधशुक्लदशम्यादीत्यन्ये । सकराद्यग्रहइत्यपरे । साधमासाद्यग्रहइति  
 केचित् । त्रयोदश्यादीतिवहवः । महामाधींपुरस्कृत्यसस्नौतत्रदिनत्रयमितिपा  
 त्रोक्तेः सतस्यार्थवादत्वाद्यकिंचिद्दिनत्रयमितिभट्टाः तत्त्वंतुसंदिग्धेषुवाक्यशे  
 यादितिन्यायाच्चयोदश्याद्येवेतिप्रयागंविनापि(पात्रे) अस्मिन्योगेत्वशक्तोपि  
 स्नायादपिदिनत्रयमिति (साधस्नानेनियमास्तुनारदीये) नवहस्तिसेवयेतस्नातो  
 ह्यस्नातोपिवरानने ॥ होमार्थसेवयेद्विंशीतार्थनकदाचन ॥ अहन्यहनिदात  
 व्यास्तिलाःशर्करयान्विताः ॥ त्रिभागस्तुतिलानांहिचतुर्थःशर्करान्वितः । अ  
 नभ्यंगीवरारोहेसर्वमासनयेद्ब्रती (तथा) अप्रावृतशरीरस्तुयःकष्टंस्नानमाच  
 रेत् । पदेपदेश्वमेधस्यफलंप्राप्नोतिमानवः (तथा) शंखचक्रवरंदेवंसाधवंनामपूज  
 येत् । वह्निं हुत्वाविधानेनततस्त्वेकाशनोभवेत् । भूशय्याब्रह्मचर्येणाशक्तःस्नानं  
 समाचरेत् ॥ अशक्तोब्रह्मचर्यादौस्वेच्छासर्वत्रकथ्यते (तथा) तिलस्नायीति  
 लोद्वर्तीतिलहोमीतिलोदकी ॥ तिलभुक्तिलदाताचयदतिलाःपापनाशनाइति  
 (प्रयागासंभवेकाश्यांदशाश्वमेधोत्तरस्थप्रयागतीर्थेस्नानमुक्तंकाशीखंडे) । का  
 ष्णुज्वेप्रयागेयेतपसिस्नांतिमानवाः । दशाश्वमेधजनितंफलंतेषांभवेद्भुवमिति  
 (स्नानोत्तरंमदनपारिजातेविद्याः) काशमौनान्नसरक्त्यमजघ्रेत्पुरुषोत्तमम् । अ  
 वश्यमेवकर्तव्यमाधस्नानमितियुतिः (भविष्ये) तैलमामलकाप्रचैवतीर्थेदेयास्तु

नित्यशः । ततः प्रज्वालयेद्वह्निं सेवनाथद्विजन्मनाम् । एवंस्नानावसानेतुभोज्यं दे-  
यमवारितम् । भोजयेत्तद्विजदांपत्यं भययेद्वस्त्रभूयशौः । कंबलाजिनरत्नानिवासां  
सिर्विविधानि च । चोलकानि च देयानि प्रच्छादनपटास्तथा । उपानहौ तथा गुप्त  
मोचकौ पापमोचकौ । अनेन विधिना दद्यान्माधवः प्रीयतामिति (पाप्मे) भूमौ  
शयीत होतव्यामज्यं तिलसमन्वितम् ॥ तथा ॥ अन्नं चैव यथाशक्त्या देयं माधवेन रा-  
धिय ॥ सुवर्गारक्तिकामात्रंदद्याद्देवि देतथा (माघांते तु विशेषो नारदीये) मा-  
घावसाने सुभोग्यं संभोजनं स्मृतम् । सूर्यमे प्रीयतां देवो विष्णुमूर्तिर्निरंजनः । दंपत्यो  
र्वससीसुहमे सप्तधान्यसमन्विते । त्रिंशत्सुमोदका देयाः शर्करा तिलसंयुता इति ।  
अत्रैकादशीविधानेन व्रतस्योद्यापनं तथेति । पूर्वे ह्युपवासपजनादि कृत्वा परेऽ-  
ह्नि तिलचर्वाज्यैरष्टोत्तरशतं होमं कृत्वा सवित्रे प्रसवित्रे चेति पूर्वाक्तं मंत्रमुक्त्वा दि-  
वा करजगन्नाथप्रभाकरनमोस्तुते । परिपूर्णां कुरुते हमाधस्नानमुग्रः पतेइति स-  
मापयेदिति संक्षेपः । मकरसंक्रांतौ हेमाद्रि मते परतः चत्वारिंशदधटिकाः पुरायाः ।  
त्रिंशत्तककर्तिकेनाड्यो मकरे तु दशाधिका इति ब्रह्मवैवर्तम् । माधवमते तु विंशतिः  
त्रिंशत्तककर्तिके पूर्वमकरे विंशतिः परेति वृद्धवाशिष्ठीयकृतेः । यदा तु सूर्यास्तात्  
पूर्वसंक्रांतिर्भवति तदा भयमते पूर्वमेव पुरायकालः । रात्रौ तु प्रदोषे निशीथे वा मक-  
रसंक्रमे माधवमते द्वितीयदिन एव पुरायम् । यद्यस्तमयवेलायां मकरं याति भास्करः ।  
प्रदोषे वा धरात्रे वा स्नानं दानं परेहनीति वृद्धगार्ग्यवचनात् । अस्तमयं प्रदोषः ।  
प्रदोषे पूर्वरात्रे ॥ कार्मुकं तु परित्यज्य भयं संक्रमते रविः । प्रदोषे वा धरात्रे वा स्नानं  
दानं परेहनीति । भविष्योक्तेष्वच । तदा भोगः परेहनीति हेमाद्रौ पाठः । का-  
लादर्शनिरायासृत्तमदनपारिजातादयोऽप्येवमुचुः । दाक्षिणात्याश्चैतदेवाद्रि-  
यंते । यत्तु हेमाद्रिणाद्यौ वा शब्दो यथार्थो द्वितीयस्तथार्थः । यथा प्रदोषे पूर्वद्युस्त-  
थार्धरात्रे परेहनीत्युक्तम् । तस्मै नमोस्तु । तेन परेह्यपुण्यं वक्तुं प्रदोषे इति । दिन-  
द्वये पुरायनिरासार्थं अर्धरात्रग्रहणम् । हेमाद्रिस्मृत्यर्थं सारानंतभट्टादिमते तु निशी-  
थात् पूर्वपश्चाच्च संक्रांतौ पूर्वपरदिने वा पुरायं । धनुर्मीनावतिक्रम्य कन्यांच मिथुनं  
तथा । पूर्वापरविभागेन रात्रौ संक्रमणायदा । दिनांते पंचनाड्यस्तु तदा पुरायतमाः



स्मृताः । उदयेपितथापंचदैवेष्वेचकर्मणीतिस्कांदवचनात् । पर्वापरविभागे  
 नेतिमकरकर्कभिन्नविषयम् । पूर्वोक्तवचोविरोधादितिमदनरत्नैउक्तम् । यड  
 शीतिमुखेऽतीतेअतीतेचोत्तरायणोऽत्यादिविरोधाच्च ॥ तेनपूर्वैकवाक्यतथायम  
 र्थः । रात्रौपूर्वभागेमकरसंक्रमेपरेऽह्निउदयेपंचनाड्यःपुरायाःरात्रावपरभागेकर्क  
 संक्रमेपूर्वदिनांतेपंचनाड्यइति । एवंसर्वेषामविरोधः । मकरेसामान्येनपरदिने  
 पुरायत्वेपिपुरायातिशयार्थमिदं (यत्तुदेवलयज्ञपाश्वी) आसन्नेसंक्रमंपुरायंदि  
 नार्धस्नानदानयोः । रात्रौसंक्रमणोभानोर्विषुवत्यथनोदिवेति । अवसाधवः ।  
 अयनेदिवाजातेतदर्धपुरायम् । कर्केपूर्वमकरेत्यम् । एतन्मध्यदिनायनपरमिति ।  
 हेमाद्रिस्तुरात्रौविषुवत्यासन्नदिनार्धपुरायम् । अयनेत्वासन्नदिनंपुरायम् । दि  
 नेइतिपाठेउभयत्रदिनार्धपुरायमित्याह । एतदेवोक्तमदीपिकायाम् । अथायनम  
 धःपश्चान्निशीयाद्भवेद्यद्यासन्नमहस्तदर्धमथवापुरायमिति । तत्त्वंतुआसन्नसंक्र  
 ममित्यस्यविषुवत्येवान्वयः । अयनेरात्रौसतिदिनेपुरायम् । कस्मिन्नित्यपेक्षायांक  
 र्केपूर्वेऽह्निमकरेपरेऽह्निइतिवाक्यांतरवशादर्धेउच्यमानेनकोपिविरोधः । यत्त्व  
 नंतभट्टःअथसंक्रमणोभानोर्निशीयात्प्राक्यदाभवेत् । अयनंविषुवंतत्रप्राग्दिनांति  
 मनाडिकाः । पंचपुरायतमाःपश्चान्निशीयाच्चेद्भवेत्तथा । आद्याःपरदिनस्यापि  
 तद्वदित्येयनिर्णयइति (अपरार्केष्वेवम्)अस्तंगतेयदासूर्येभयंयातिदिवाकरः ॥  
 प्रदोषेवार्धरात्रेवातदापुरायंदिनद्वयमितिबोधायनवचनाद्दिनद्वयं वापुरायकालः  
 तदापुरायंदिनांतरमितिमदनरत्नेपाठः । गुर्जरप्राच्योदीच्यारित्वदमेवाद्वयंतेअ  
 वापिपूर्ववद्व्याख्येयम् । तिथितत्त्वादयोगौडग्रंथास्तुप्रदोषार्धरात्रिभिन्नेरात्रे।  
 पूर्वभागेपूर्वदिनेपरभागेचपरदिने पुरायमन्यसंक्रांतिवत्विशिष्यतयोर्निर्देशात्  
 प्रदोषश्च । प्रदोषोस्तमयादूर्ध्वघटिकाद्वयमिष्यतेइतिवत्सोक्तइत्याहुः । तन्न ।  
 अस्तंगतइतिवितयवैयर्थ्यापत्तेः । अतःप्रदोषपदेनतद्विन्नैवरात्रिरुच्यते । अतस  
 वयावन्नोदयतेरविरितिदृङ्गाग्यादिभिर्दक्षिणायनेपूर्वरात्रौसंक्रमेपूर्वदिनमुक्तं  
 वत्सोक्तिरप्यध्ययनादिपरा । इहतुत्रिमुहूर्तएवप्रदोषः । (मकरेदानविशेषोहेमा  
 द्रौस्कांदे) । धेनुतिलमयींराजनदद्याद्यश्चोत्तरायणो । सर्वान्कामानवाप्नोतिविं

दत्तेपरमं सुखम् । (विष्णुधर्म) । उत्तरेत्वयनेविप्रावस्त्रदानं महत्फलम् । तिलपूर्णां  
नडवाहं दत्तारोगैः प्रमुच्यते इति (शिवरहस्येपि) तस्यां कृष्णा तिलैः स्नानं कार्यं चोद्ध  
र्तनं शुभैः । तिलादेयाश्च विप्रेभ्यः सर्वदेवोत्तरायणो तिलैः तैलेन दीपाश्च देयाः शिव  
गृहेशुभाः (कल्पतरौ कालिकापुराणो) । होमं तिलैः प्रकुर्वीत सर्वदेवोत्तरायणो । ता  
नयो देवाय विप्रेभ्यो हाटकैः सप्तदत्तैः । उत्तरायणमासाद्य नरः कस्मात्स शोचति ।  
तथा ॥ मकरेरात्रावापि श्राद्धादिभ्यः तीत्युक्तं प्राक् । माघमायां योगविशेषोऽर्धादयः  
प्रागेवोक्तः । माघचतुर्दश्यां यमत्परां मुक्तं हेमाद्रौ यमेन । अनर्काभ्युदिते काले मा  
घकृष्णा चतुर्दशी । स्नातः संतर्प्य तु यमं सर्वपापैः प्रमुच्यते इति । माघशुक्लचतुर्थी  
तिलचतुर्थी सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या । माघशुक्लचतुर्थ्या तु नक्तत्रयं परायणः ये  
त्वां दुहेर्चायि स्थिते चर्याः स्युरसुरद्रुहामितिकाशी खंडात् । माघमासे चतुर्थ्या तु  
तस्मिन्काल उपोषितः ॥ अर्चयित्वा तु यो देवि जागरंतत्र कारयेदिति त्रिस्थ  
लीसे तौ लेंगाच्च ॥ इयमेव कुंदचतुर्थी सा प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या । माघशुक्लचतुर्थ्या  
तु कुंदपुष्पैः सदा शिवम् । संपूज्य यो हितः काशीं समाप्नोति श्रियं नर इति कालादर्श  
कौर्मोक्तेः । माघशुक्लपंचमी श्रीपंचमी (तदुक्तं हेमाद्रौ वाराहे) माघशुक्लचतु  
र्थ्या तु वरमाराध्यर्चा श्रियः ॥ पंचम्यां कुंदकुसुमैः पूजां कुर्यात्समृद्धये इयं माघवम  
ते पूर्वहिमाद्रिमते पराचैत्रशुक्लेश्रीपंचमी दिवोदासः माघशुक्लसप्तमी रथसप्तमी सा  
अरुणोदयव्यापिनी ग्राह्या । सूर्यग्रहा तुल्या तु शुक्लमाघस्य सप्तमी । अरुणोदयवे  
लायां तस्यां स्नानं महाफलमिति चंद्रिकायां विष्णुवचनात् । अरुणोदयवेलायां शु  
क्लमाघस्य सप्तमी । प्रयागे यदिलभ्येत कोटि सूर्यग्रहैः समेतवचनाच्च (यत्तु दिवो  
दासीये) अचलासप्तमी दुर्गा शिवरात्रिर्महाभरः । द्वादशी वत्सपजायां सुखदा प्रा  
ग्युता सदेति यद्युत्तत्त्वमुक्तम् । तद्यदा पूर्वेऽह्नि घटिका द्वयं यद्यसप्तमी च परेद्युः सद्यव  
शां रूणोदयात्तत्पर्वसमाप्यते । तत्परं ज्ञेयम् । तत्र यद्यस्यां सप्तमी सद्यं प्रवेष्ट्या रूणो  
दये स्नानं कार्यम् (सदनरत्ने भविष्योत्तरे) माघे मासि सिते पक्षे सप्तमी कोटिभास्क  
रा । कुर्यात्स्नानाद्यदानाभ्यामायुरारोग्यसंपदः । अत्र विधिर्भविष्ये स्नात्वा य  
द्यमेकभुक्तं सप्तम्यां निश्चलं जलं । राजयंते चालयेथास्त्वं दत्त्वा शिरसि दीपकम्



(तथाजलंप्रक्रम्य) नकेनचात्यतेयावत्तावत्स्नानंसमाचरेत् । सौवर्गोराजतेपात्रे  
 भक्त्यालांबुमयेथवा । तैलेनवर्तिदातव्यामहारजनरंजिता ॥ महारजनंकुसुंभं ।  
 समाहितमनाभूत्वादत्वांशिरसिदीपकम् । भास्करं हृदयेध्यात्वाइमंसं वसुदीरयेत् ।  
 नमस्ते रुद्ररूपायरसानांपतयेनमः । वसुगायनमस्तेस्तुहरिवासनमोस्तुते । जले  
 परिहरेद्दीपं ध्यात्वासंतर्प्यदेवताइति । चंदनेनलिखेत्पञ्चमष्टपत्रंसकर्णिकम् । म  
 ध्येशिवंसपत्नीकंप्रणावेनचसंयुतम् । पर्वादिदलेषु । रविभानुविवस्वद्भास्करसवि  
 त्रकंसहस्रकिरणासर्वात्मकाच्च संपूज्यगृहंगच्छेदिति ( स्नानसंवत्चक्राशीखंडे )  
 यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु । तन्मे रोगं च शोकं च माकरीहंतु सप्तमी  
 सतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मांतरं रजितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञाते च ये पुनः ।  
 इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके । सप्तव्याधिसमायुक्तं हरमाकरिसप्तमि ।  
 सतन्मंत्रवयं जप्त्वा स्नात्वा पादोदके नरः । केशवादित्यमालोक्य सगार्निष्ठकलु  
 यो भवेत् । दिवोदासीये मदनरत्ने च । इक्षुदंडेन जलं चालयित्वा सप्तार्कपत्रांश  
 बदरीपत्रांशच शिरसि निधाय पूर्वोक्तैर्मंत्रैः स्नात्वा । तिलपिष्टमया पूषैः हैमसूर्य  
 संपूज्य विप्राय दद्यात् ( अर्घ्यमंत्रो मदनरत्ने ) सप्तसप्तिवह प्रीत सप्तलोकप्रदीपन ।  
 सप्तमीसहितो देवगृहाणां अर्घ्यं दिवाकर ( ततः ) जननी सर्वलोकानां सप्तमीसप्तसप्ति  
 के । सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमंडल इति प्रार्थयेत् ( सौरागमे ) अर्कपत्रैः सबद  
 रैर्दूर्वासितसचंदनैः । अष्टांगविधिना चार्घ्यं दद्यादादित्यतुष्टये ( अवदानविशेषो मदन  
 रत्ने भविष्ये ) तात्र प्रात्रेयथाशक्त्या मृन्मये वाथ भक्तिमान् । स्थापयेत्तिलपिष्टं च  
 सघृतं सगुडं तथा । कांचनं तालकं कृत्वा अशक्तस्तिलपिष्टजं । संछाद्य रत्नवस्त्रेणापु  
 ठपैर्धूपैरथार्चयेत् ( दानमंत्रस्तु ) आदित्यस्य प्रसादेन प्रातः स्नानफलेन च । दुष्टदोर्भा  
 ग्यदुःखघ्नं मया दत्तं तु तालकं तालकं कर्णाभरणा मितितत्रैवोक्तम् । दीपमावसिति हे  
 माद्रौ तत्रैव भविष्योत्तरे । सर्वविधं रथवरं रथवाजियुक्तं हैमं च हैमशतदीधितिना समे  
 तम् । दद्याच्च माघसितसप्तमिवासरेयः सोसंगचक्रगतिरेव महीं भुनक्ति इयं मन्त्रादि  
 रपि । इयं च शुक्लप्रसस्थत्वात् प्रौर्वाहिकी ग्राह्या । यदा माघो मलमासो भवति तदा  
 मासद्वये मन्त्रादि आर्द्रं कुर्यात्तन्मन्त्रादि कर्तैर्यिकं च कुर्यान्मासद्वयेऽपि चेति स्मृति

चंद्रिकोक्तेः। माघशुक्लाष्टमीभीष्माष्टमी (तदुक्तं हेमाद्रौ पात्रे) माघे मासि सिताष्ट  
म्यां सतिलं भीष्म तर्पणम् । आर्द्रं च येन राः कुर्युस्ते स्युः संतति भागिन इति (भारतेऽपि)  
शुक्लाष्टम्यां तु माघस्य दद्याद्भीष्माय योजनम् । संवत्सरकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यती  
ति ( धवलनिबन्धे स्मृतिः ) अष्टम्यां तु सिते पक्षे भीष्माय तु तिलोदकं । अन्नं च विधि  
वद्द्युः सर्वे वर्णादिजातयः । सर्ववर्णोक्तेर्द्विजातय इति संबोधनम् ( तर्पणसंज्ञस्त  
त्रैव ) भीष्मः शांतनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः । आभिरद्भिरवाप्नोति पुत्रपौत्रो  
चित्तां क्रियाम् । वैद्य्याघ्रपद्यगोत्राय सांस्कृत्यप्रवराय च । अपुत्राय ददाम्येतज्जलं  
भीष्माय वर्मिणो । वसनामवताराय शांतनोरात्मजाय च ॥ अर्घ्यं ददामि भीष्माय आ  
बालब्रह्मचारिणो इति । स तज्जीवत्पितृकस्यापि भवति । जीवत्पितापि कुर्वीत त  
र्पणाय मभीक्ष्मयोरिति । पात्रोक्तेरिति जीवत्पितृकनिर्णये पितृचरणौ रक्तम् । स  
तच्चापसव्येन कार्यमिति दिवोदासीये । अत्र आर्द्रं काम्यं तर्पणं च नित्यं ॥ ब्राह्मणा  
द्याश्च ये वर्णादिद्युर्भीष्माय नोजनं । संवत्सरकृतं तेषां पुण्यं नश्यतिसत्तमेति मदनर  
त्नेव चनात् । माघशुक्लाष्टमीभीष्माष्टमी । त्वया कृतमिदं वीरतवनाम्ना भवि  
ष्यति । सा भीष्माष्टमीत्येषा सर्वपापहरा शुभेति हेमाद्रौ पात्रवचनात् । इयं पर्व  
युतायुग्मवाक्यात् । माघी पूर्णिमा परेत्युक्तं प्राक् (तथा हेमाद्रौ ब्राह्मे) माघस्थयो  
श्च जीवेदोर्महा माघीति कथ्यते ( तत्रैव ज्योतिषे ) मेघपृष्ठे तथा सौरिः सिंहे च  
गुरुचन्द्रमाः । भास्करः श्रवणार्क्षे च महा माघीति स्मृता ॥ ( तथा भविष्ये )  
वैशाखी कार्तिकी माघीति स्थयोऽतीव पविताः ॥ स्नानदानविहीनास्ताननेयाः  
पांडुनन्दन ॥ ( तथा ) तिलपात्राणि देयानि कंचुकाः कंवलास्तथेति ॥ माघप  
ूर्णिमानंतराष्टमी माघी अष्टकाति निर्णयः । पूर्वद्युरन्वष्टकानिर्णयश्च पूर्वमुक्तः ।  
मलमासे चैतान् भवन्तीत्येतत्सर्वमार्गशीर्षप्रकरणेऽभिहितम् । तथा च तस्यैव अष्टका  
स्वशक्तावेत्यावश्यकौ । हेमन्तशिशिरयोश्चतुर्णां मिपरपक्षराणां मष्टमी वष्ट  
कायकस्यावेत्याश्वलायनोक्तेः ( तथा ) माघाष्टकां प्रक्रम्यतामेकाष्टकेत्याचक्षत  
इत्यापस्तंबवचनाच्चेत्यादिप्रयोग पारिजाते ज्ञेयम् ॥

इति श्रीकमलाकरभट्टकृते निर्णयसिन्धौ द्वितीयपरिच्छेदे माघमासः समाप्तः ॥



कुंभेयोडशघटिकाःपुरायाः ( शेषंप्राग्बत ) फाल्गुनकृष्णाष्टम्यांविशेषः क  
 ल्पतरौ । फाल्गुनस्यचमासस्यकृष्णाष्टम्यां महीपतेइत्युपक्रम्य । जातादाश  
 रथेःपत्नीतस्मिन्नहनिजानको॥उपोषितोरघुपतिःसमुद्रस्यतटेतदारामपत्नीचसं  
 पूज्यासीताजनकनन्दिनी । फाल्गुनकृष्णाचतुर्दशीशिवरात्रिः । साचक्रैयुक्ताचि  
 हचनेयुप्रदोषव्यापिनीग्राह्येत्युक्तंकेयुचिचिशीथव्यापिनी ( तत्राद्यामाधवीये )  
 त्रयोदश्यस्तगोसूर्येचतसृष्ट्वेवनाडिषु ॥ भूतविद्धातुयातत्रशिवरात्रिव्रतंचरेत् ॥  
 ( स्मृत्यंतरेपि ) प्रदोषव्यापिनीग्राह्याशिवरात्रिप्रचतुर्दशी ॥ रात्रौजागरांय  
 स्मात्तस्मात्तांसमुपोषयेत् ( अत्रप्रदोषोरात्रिः ) उत्तरार्धेतस्याहेतुत्वोक्तेः ।  
 ( कामिकेपि ) आदित्यास्तमयेकालेअस्तिद्वेधाचतुर्दशी ( तद्वात्रिः ) शिव  
 रात्रिःस्यात्साभवेदुत्तमोत्तमेति ॥ ( द्वितीयापितत्रैवनारदसंहितायां ) अर्धरात्रि  
 युतायत्रमाघकृष्णाचतुर्दशी॥ शिवरात्रिव्रतंतत्रसोअमेधफलंलभेत्॥ ( स्मृत्यंतरेपि )  
 भवेद्यत्रत्रयोदश्यांभूतव्याप्तामहानिशा॥शिवरात्रिव्रतंतत्रकुर्याज्जागरांतथेति ॥  
 ( ईशानसंहितायाम् ) माघकृष्णाचतुर्दश्यामादिदेवोमहानिशि ॥ शिवलिंगतयो  
 द्भूतःकोटिरूर्यसमप्रभः ॥ तत्कालव्यापिनीग्राह्याशिवरात्रिव्रतेतिथिरिति ॥ अ  
 र्धरात्रा दधप्रचोर्ध्वयुक्तायत्रचतुर्दशी॥तत्तिथावेवकुर्वीतशिवरात्रिव्रतंव्रती ॥ ना  
 र्धरात्रादधप्रचोर्ध्वयुक्तायत्रचतुर्दशी ॥ नैवतत्रव्रतंकुर्यादायुरैश्वर्यहानितः ॥ अर्ध  
 रात्रप्रचद्वितीय यामांत्यतृतीययामाद्यघटीद्वयरूपइतिमाधवःवचनंतूक्तंप्राक् । स  
 वंसतिपूर्वेद्युरेवोभयव्याप्तौपूर्वव ॥ त्रयोदशीयदादेविदिनभुक्तिप्रमाणातः ॥ जाग  
 रेशिवरात्रिः स्यान्निशिपूणाचतुर्दशीतिस्कांदोक्तेः । दिनभुक्तिरस्तमयः । जयं  
 तीशिवरात्रिश्चकार्येभद्रजयान्वितइतिस्कांदाच्च । दिनद्वयेनिशीथव्याप्तौहेमा  
 द्रिमतेपूर्वाअर्धरात्रात्परस्ताच्चेज्जयायोगोयदाभवेत् । पूर्वविद्वैवकर्तव्याशिव  
 रात्रिःशिवप्रियैरितिपाञ्चवचनात् ( मदनरत्नेप्येवम् ) गौडाअप्येवमाहुः । निर्ण  
 यामृतेतुसर्वापिशिवरात्रिःप्रदोषव्यापिन्येव । अर्धरात्रवाक्यानिर्कैमुक्तिकन्या  
 येनप्रदोषस्तावकानीत्युक्तम् ( तन्न ) अर्धरात्रस्यपूर्वकर्मकालत्वोक्तेः । परदिन  
 प्रदोषनिशीथोभयव्याप्तिसत्त्वात्परैवेतितुमाधवः । इदमेवचयुक्तंप्रतीमः परेद्युः

प्राशुक्ताधरात्रस्यैकदेशव्याप्तौ पूर्वद्युः संपूर्णातद्व्याप्तौ च सत्यपि परेद्युः संपूर्णा व्याप्तेः पूर्वैव । व्याप्याधरात्रं स्यात्तुलभ्यते या चतुर्दशी ॥ तस्यामेव व्रतं कार्यं मत्प्रसादार्थिभिर्नरैः ( तदूर्ध्वार्धानिताभूतासाकार्याव्रतिभिः सदेति साधवधृतेः शानसंहितोक्तेः ) पूर्वद्युर्निशीथस्य परेद्युः प्रदोषस्येत्येकैकव्याप्तौ तु पूर्वैवाज्यायोगस्य प्राशस्त्यात् ( तच्चोक्तं नागरखंडे ) माघफाल्गुनयोर्मध्ये असिताया चतुर्दशी ॥ अनंतेन समायुक्ता कर्तव्या सा सदा तिथिरिति ( पाप्मे ) अर्धरात्रात् परस्ताच्चेज्जयायोगो यदा भवेत् ॥ पूर्वविद्धैव कर्तव्या शिवरात्रिः शिवा प्रथैरिति ( स्कांदेऽपि ) भवेद्यत्र त्रयोदश्यां भूतव्याप्ता महानिशा ॥ शिवरात्रि व्रतं तत्र कुर्याज्जागरांत्येति ॥ महतामपि पापानां दृष्टावैति कृती परा ॥ न दृष्टा कुर्वतां पुंसां कुहूयुक्तां तिथिं शिवामिति स्कांदे दर्शयोगस्य निंदितत्वाच्च । यदा चतुर्दशी पूर्वद्युर्निशीथादूर्ध्वं प्रवृत्ता परेद्युश्च निशीथादूर्ध्वं गोवसमाप्ता तदा परेद्युरेकव्याप्तिस्त्वात् परैव । साधासिते भूतदिनं हिराजन्तुपैति योगं यदि पंचदश्याः ॥ जयाप्रयुक्तां न तु जातु कुर्याच्छिवस्य रात्रिं प्रियकृच्छिवस्येति वचनात् । सर्वदिनद्वये प्रदोषव्याप्त्यभावे निशीथव्याप्तिस्त्वात् पूर्वैव । तेन दिनद्वये निशीथव्याप्तौ प्रदोषव्याप्त्या निर्गार्थः । दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ निशीथेन निर्गार्थः सकैकव्याप्तौ तु निशीथेन निर्गार्थ इति । इयं चरविभौ मसोमवारेषु शिवयोगे चातिप्रशस्ता ( हेमाद्रौ तीर्थखण्डे लैंगे ) फाल्गुनस्य चतुर्दश्यां कृष्णा पक्षे समाहिताः ॥ कृत्तिवासे च रं लिङ्गमर्चयन्ति शिवं शुभे ॥ तेषां तिपरं स्थानं सदा शिवमनामयं ॥ शिवरात्रि पारणोतु विरुद्धवाक्यानि दृश्यन्ते ( स्कांदे ) कृष्णाष्टमी स्कांदस्यैव शिवरात्रिश्चतुर्दशी ॥ सताः पूर्वयुताः कार्यास्तिष्ठयन्ते पारणाम्भवेत् ॥ जन्माष्टमी रोहिणी च शिवरात्रिस्तथैव च ॥ पूर्वविद्धैव कर्तव्या तिथिभांति च पारणामिति ( तिथिमध्येऽपि पारणां स्कांदे उक्तम् ) उपोषरां चतुर्दश्यां चतुर्दश्यां तु पारणाम् ॥ कृतैः सुकृतलक्षैश्च लभ्यते वायवानवा ॥ ब्रह्माण्डोदरमध्ये तु यानि तीर्थानि सन्ति वै ॥ संस्नातानि भवंतीह भतायां पारणोक्तते ॥ तिथीनामेव सर्वासां सुपवासव्रतादियु ॥ तिष्ठयन्ते पारणां कुर्याद्विना शिवचतुर्दशीमिति । अत्र यामत्रया दूर्वा चतुर्दशी समाप्ता तदन्ते तदूर्ध्वगामिन्यां तु प्रातस्तिथिमध्यस्येति हेमाद्रिमाध



वादयोव्यवस्थामाहुः (तन्न) तिथ्यन्तेतिथिभांतेवापारगांयत्रचोदितं ॥ यामत्र  
 योर्ध्वगामिन्यांप्रातरैवहिपारगोत्यादिसामान्यवचनैरेवव्यवस्थामिद्वे रुभयवि  
 धवाकवैद्यय्यपित्तेः । कथमन्यथास्कांदेखग्न्यत्हृदयवाक्यवत्तिथिमध्येपार  
 गाविधानंघटते । तस्माद्विनाशिवचतुर्दशोमितिपर्युदस्तत्वाच्छ्वराज्याः सर्व  
 प्रकारेयुतिथिमध्यखपारगोतिब्रमः । शिष्टाचारोप्येवमेव । दीपिकायांतुरात्रा  
 वपितिथ्यंतस्योक्तम् । व्रततिथेरंतेनिशीथेपिवाऽश्रीयादिति ( मदनरत्नका  
 लादर्शयोस्तु ) साह्यस्तमयपर्यंतंन्यापिनीचेत्परेहनि दिवैवपारगांकुर्यात्पारगो  
 नैवदोषभारित्युक्तम् ( तन्न ) तिथिमध्येपारगाविधानान्नियेधेफलायोगाच्च ।  
 तिथ्यंतानपेक्षणाद्दोषाप्रसक्त्याचतुर्थपादासंगतेः । तेनेदंशिवरात्रिभिन्नव्रतपरंजे  
 यम् । इदंचव्रतंसंयोगपृथक्त्वन्यायेननित्यंकास्यंच ( तथाचसाधवीयेस्कांदे )  
 परात्परतरंनस्तिशिवरात्रिःपरात्परम् ॥ नपूजयतिभक्तेशंरुद्रंत्रिभुवनेश्वरम् ॥  
 जंतुर्जन्मसहस्रेषुभ्रमतेनात्रसंशयइत्यकरणोप्रत्यवायश्रवणात् । वर्यवर्यमहादेवि  
 नरोनारीपतिव्रता ॥ शिवरात्रौमहादेवंनित्यंभक्त्याप्रपूजयेदितिबीप्साश्रुतेः ।  
 अरावोयदिवाशुठयेतसीयतेहिमवानपि ॥ चलंत्येतेकदाचिद्वैनिप्रचलंहिशिव  
 व्रतमिति वचनाच्चनित्यता । समभक्तस्तुयोदेविशिवरात्रिमुपोषकः ॥ गणात्वम  
 स्यंदिव्यमस्यंशिवशासनम् ॥ सर्वानभुक्तामहाभोगांस्ततोमोक्षमवाप्नुयादि  
 तिस्कांदात् । द्वादशाब्दादिकमेतत्स्याच्चतुर्विंशाब्दिकेतुर्वेत्तितत्रैवेशानसंहितांवच  
 नात्क्रास्यता ( तत्रैव ) शिवरात्रिव्रतंनामसर्वपापप्रणाशनम् ॥ आचांडालमनु  
 ष्याणांभुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ अत्रजागरोपवासपूजाःसमुदिताः व्रतंनतुप्रत्ये  
 कम् ॥ समुदितानांफलसंबंधात् ( यत्तु ) अथवाशिवरात्रिंचपूजाजागरणौर्नयेत् ।  
 ( तथा ) अखगिडतव्रतोयोहिशिवरात्रिमुपोषयेत् ॥ सर्वत्रिकामानवाप्नोतिशि  
 वेनसहसोदते । कश्चित्तपुण्यविशेषेणाव्रतहीनोपियःपुमान् ॥ जागरंकुरुतेतत्र  
 सरुद्रसमतां व्रजेदित्यादिस्कांदंतदनुकूल्यत्वादशक्तपरम् । माघेतरप्रतिमासशिव  
 रात्रिस्तु । शिवरात्रिशब्दस्यमाघकृष्णाचतुर्दश्यामेवहृत्त्वान्माघमासस्यशेषेया  
 प्रथमाफाल्गुनस्यचाकृष्णाचतुर्दशीसातुशिवरात्रिःप्रकीर्तितेतिहेमाद्रौवचनाच्च

नायंनिर्गायस्तत्रेतिरात्रौयामचतुष्टयेपूजाविधानाद्यस्मिन्दिने अधिकारात्रिव्या  
 त्तःसाग्राह्या । साम्येतुपूर्वेवेतिहेमाद्रिस्तुचितवान् । वस्तुतस्तुप्रतिमासकृष्णा  
 चतुर्दश्यामपि सर्वकामप्रदं कृष्णाचतुर्दश्यां शिवव्रतं नित्युपक्रम्य चतुर्दशाब्दं कर्त  
 व्यं शिवरात्रिव्रतं शुभमिति हेमाद्रौ कालोत्तरे शिवरात्रिशब्दप्रयोगात् । कौण्डपा  
 यिनामयनाग्निहोत्रेनैत्यकाग्निहोत्रधर्मा इव तद्धर्मप्राप्तिः स्यादेव । अतः प्रदोषनि  
 शीथोभयव्याप्त्यैव निर्गाय इति वयं प्रतीमः (अस्यां रंभो हेमाद्रौ स्कांदे) आदौ मा  
 र्गशिवरेमासि दीपोत्सवदिनेऽपि वा ॥ गृह्णीयान्माघमासे वा द्वादशैवमुपोषयेत् ॥  
 (तथा) दीपोत्सवे तथा माघे कृष्णाया तु चतुर्दशी । द्वादशस्वपिमासेषु प्रकुर्यादिह  
 जागरम् ॥ एवं द्वादशवर्षेषु द्वादशैव तपोधनान् । वरयेदिति शेषः चतुर्दशवा विप्रा  
 न् आचार्यं च वृत्वा । कुंभोपरि न्यसेद्देवमुमया सहितं शिवम् ॥ सौवर्गोप्यथवारौ  
 प्येवृषभे संस्थितं शुभे इत्युक्तम् ॥ हैमीं मूर्तिसंपूजयन् स्थिरं च रंवालिङ्गं पंचासृतसह  
 स्रशतपंचाशत्तदर्थं न्यतरकुंभैः संस्त्राप्य संपूजयन् जागरं कृत्वा परेद्युस्तिलान्सहस्रं  
 शतं वा हुत्वा विप्रेभ्यो वस्त्राणि द्वादशगाश्च दत्वा आचार्याय धेनुं शय्यां च दत्वा  
 विप्रान् भोजयेदिति मदनरत्ने उक्तम् । माघमावास्यायुगादिः । तदुक्तम् । माघमासे  
 त्वमावास्येति । अन्यतः प्राग्वत् (तथान्योपि विशेषो विष्णुपुराणे) माघासि  
 ते पंचदशी कदाचिदुपैति योग्यदिवा रूणेन ॥ ऋक्षेण कालः सपरः पितृणां न ह्य  
 ल्पपुण्यैर्नृपलभ्यते सावित्रि ॥ वारुणां शतभिषक् । इदं च कुंभादित्येज्यमिति  
 हेमाद्रिः (भारते) काले धनिष्ठाय दिनाम तस्मिन् भवेत्तु भूपाल तदा पितृभ्यः ॥ दत्तं  
 तिलान्नं प्रददाति हस्तिवर्षायुतं तत्कुलजैर्मनुजै रिति ॥ फाल्गुनपौर्णमासी होलि  
 का । सा च सायाह्न्यापि नीग्राह्या सायाह्ने होलिकां कुर्यात्पूर्वाह्णे क्रीडनं गवा  
 मिति वचनादिति निर्गायामृते उक्तम् (ज्योतिर्निबन्धे तु) प्रतिपद्भूतभद्रासुयार्चिता  
 होलिकादिवा ॥ संवत्सरं च तद्राष्ट्रं पुरंदरं हतिसाद्रुतम् ॥ प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या  
 पौर्णिमा फाल्गुनी सदा ॥ तस्यां भद्रा मुखं त्यक्त्वा प्रज्या होलानि शासु खड्ग इति नारद  
 वचनात् प्रदोषव्यापिनीत्युक्तम् (हेमाद्रौ मदनरत्ने च भविष्ये) अस्यां निशागमे पा  
 र्थसंरक्ष्याः शिशवो गृहे ॥ गोमयेनोपलिप्ते च स चतुष्के गृहां गरो इत्यादिना तत्रैव त



द्विधानाच्च । तेनेयं पर्वविद्धा । आवर्णीदुर्गानवमीदूर्वाच्चैवहुताशनी ॥ पूर्वविद्धैवक  
 र्तव्याशिवरात्रिर्बलेर्दिनमितिबृहद्यमब्रह्मवैवर्तोक्तेश्चदिनद्वयेप्रदोषव्याप्तौपरैव  
 पूर्वदिनेभद्रासत्त्वात्तत्रचहोलिकानियेधात् (तदुक्तंनिर्णयामृतेमदनरत्नेचपुराणा  
 समुच्चये) भद्रायांदीपिताहोलीराष्ट्रभंगं करोतिवैनगरस्यचनेवेष्टातस्मात्तांपरिव  
 र्जयेत्(तथा) भद्रायांदेनकर्तव्येआवर्णीफाल्गुनीतथा ॥ आवर्णीनृपतिंहंतिग्रामं  
 दहतिफाल्गुनी(तथा) दिनार्धात्परतोपिस्यात्फाल्गुनीपौर्णिमायादि॥रात्रौभद्रा  
 वसानेतुहोलिकादीप्यतेतदेति ॥ यदातुपूर्वदिनेचतुर्दशीप्रदोषव्यापिनीपरदिने  
 चक्षयवशात्सायाह्नात्प्रागेवपौर्णिमासमाप्यतेतदा पूर्वदिनसंपूर्णारात्रौभद्रासत्त्वा  
 त्तत्रचतन्निषेधात्परेऽहनिप्रतिपद्येवकुर्यात् । सार्धयामत्रयंवास्यात्द्वितीयदिवसे  
 यदा ॥ प्रतिपद्वर्धमानातुतदासाहोलिकास्मृतेतिभविष्यवचनादितिनिर्णयामृत  
 कारः(मदनरत्नेप्येवम) यत्तु । वल्लौवह्निं पौरित्यजेदितिभविष्यम् । वल्लौहोलि  
 कायांवह्निं प्रतिपदंवर्जयेदित्यर्थः तदुक्तंभिन्नविषयमिति तत्रैवोक्तम् । अन्येतुत  
 स्यांभद्रामुखंत्यक्त्वेत्यर्थः । प्रदोषव्यापिनीचेत्स्याद्यदापूर्वदिनेतदाभद्रामुखंवर्ज  
 यित्वाहोलिकायाःप्रदीपनमितिनारदवचनात् । निशागमेप्रपूजयेत्तुहोलिकास  
 र्वदाबुधैः ॥ नदिवापूजयेत्तुदुंढां पूजितादुःखदाभवेदितिदिवोदासीयेवचनात् ।  
 यामत्रयोध्वयुक्ताचेत्प्रतिपत्तुभवेत्तिथिः ॥ भद्रामुखंपरित्यज्यकार्याहोलीमनी  
 विभिरिति विद्याविनोदेऽभिधानाच्च ॥ भद्रामुखंविहायपर्वदिनसर्वकार्येत्याहुः ।  
 भद्रामुखंतुनाड्यस्तुपंचवदनंगलकस्तथै केतिरत्नमालोक्तंजेयम् (शिश्याचारो  
 प्येवमेव) अत्रचेच्चंद्रग्रहणांतदाततोर्वाङ्निशिभद्रावर्ज्यपौर्णिमास्यांहोलिकादी  
 पनम् । अथपरेऽह्निग्रस्तोदयस्तदापूर्वदिनेभद्रावर्ज्यरात्रौचतुर्थयामेविष्टिपुच्छेवा  
 होलिकाकार्या । ग्रहोत्तरंप्रतिपत्सत्त्वात्तत्तत्पर्वचदिवाहोलानियेधादिति । दिवो  
 दासचंद्रप्रकाशौवस्तुतस्तु । परदिनेप्रदोषेपौर्णिमासीसत्त्वेकर्मकालस्पर्शेचतुर्थ  
 यामादिगौराकालग्रहणोमानाभावाद्भद्राभावाच्चग्रहणकालस्यहोलाकार्या । न  
 चसर्वयामेववर्णानांसूतकंराहुदर्शने ॥ स्नात्वाकर्माणि कुर्वीतश्रुतमन्नंविवर्जयेदि  
 तिनियेधात् । कथंसूतकेहोलेतिवाच्यम् । तस्योत्तरार्धशेषत्वात्(पूजामंत्रस्तु)अ

सूक्याभयसंज्ञस्तैः कृतात्वं होलिबालिभैः ॥ अतस्त्वांपूजायख्यासिभूतेभूतिप्रदाभ  
वेति ॥ यत्तुवार्तिककारैर्होलिकाआचारप्राप्तेत्युक्तम् । तत्रहेमाद्याद्युदाहृतभविष्य  
वचनान्यासिद्धानि कृत्वा चिन्ताज्ञेया । आर्त्याधिकारणावत् । हुताशिनीमलमासेन  
भवति ॥ इयमन्वादिदपि । सातुपौर्वास्तिकीग्राह्या । मलमासे सति सन्वादिग्राह्यमा  
सद्वये कार्यमित्युक्तं प्राक् (कृत्यचिन्तामणौब्राह्मे) नरोदोलागतंदृष्ट्वा गोविंदं पुरु  
षोत्तमम् ॥ फाल्गुन्यांसंयतो भूत्वा गोविंदस्य पुरं व्रजेत् ॥ चैत्रकृष्णा प्रतिपदि वसंतो  
त्सवः । साचौदयिकीग्राह्या । प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते रवाविति भविष्यो  
क्तेः । दिनद्वये तथात्वे पूर्वा । वत्सरादौ वसंतादौ बलिराज्ये तथैव च ॥ पूर्वविद्वैवक  
र्तव्या प्रतिपत् सर्वदा बुधैरिति ॥ बृद्धर्वाश्ववचनात् (अत्रविशेषो हेमाद्रौ भविष्ये)  
चैत्रे मासि महाबाहो पुरायेतु प्रतिपदिने ॥ यस्तत्र श्वपचं स्पृष्ट्वा स्नानं कुर्यान्नरोत्तमः  
न तस्य दुरितं किंचिन्नाधयो व्याधयो नृपेति (तथा) प्रवृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युदिते  
रवौ ॥ कृत्वा चावश्यं कार्याणि संतर्प्य पितृदेवताः ॥ वंदयेद्दोलिकाभमिंसर्वदुः  
खोपशान्तये ( मंत्रश्च ) वंदितासि सुरेंद्रेणाब्रह्मणा शंकरेणा च ॥ अतस्त्वं पाहि  
नो देवि भूतेभूतिप्रदा भवेति ( अत्र च तकुसुम प्राशनमुक्तं तत्रैव पुराणा समुच्चये ) वृ  
त्ते तु गारुडसमये सितपंचदश्यां प्रातर्वसंतसमये समुपस्थिते च । संप्राश्य च तकुसुमं स  
हचंदनेन सत्यं हि पार्यपुरुषो यममाः सुखी स्यात् ( मंत्रस्तु ) च तमग्र्यं वसंतस्य मा  
कंदकुसुमं तव ॥ सचंदनं पिवा स्यद्य सर्वकामार्थसिद्धय इति । चैत्रामावास्यामन्वा  
दिः । साचापरास्तव्यापिनीग्राह्या । कृष्णापक्षस्थत्वात् इति फाल्गुनमासः समा  
प्तः । सर्वानि ह्यपि तमिदं गहनं तु कालतत्त्वं विचार्य वचनैश्च नयेच्च सम्यक् ॥ तद्दो  
षदृष्टिमपहाय विवेचनीयं विद्वद्भिरित्यविरतं प्रगातोऽस्मि ते ॥ १ ॥ मया सहास  
हायदिह गदितं मंदमतिना किमेतच्छ्रुत्वा ध्यवसितुमपि स्वल्पमतिना ॥ तदेवं यत्  
किंचिद्गदितमिह विख्यातमहिमाप्रतापोयं सर्वो विकसतितुषित्री प्रचरणा  
योः २ ॥ यो भादृतं व्रगहनार्णवकर्णधारः शास्त्रांतरेषु निखिले ठवापि मर्मभेत्ता ॥  
यो व्रश्मः किल कृतः कमलाकरेणाप्रीतो मुना तु सुकृती बुधरामकृष्णाः ॥

इति श्रीमन्नारायणभट्टसुरिसूनुरामकृष्णभट्टसुतदिनकरभट्टानुजभट्टकमलाकरकृते निर्णयसिंधौ संव  
त्सरकृत्यनिरूपणं नाम द्वितीयपरिच्छेदः समाप्तः ॥



## अथ तृतीयपरिच्छेदः प्रारभ्यते

श्रीगणेशायनमः अथप्रकीर्णकनिर्णयः ॥ श्रीरामकृष्णतनयः कमलाकरसं  
ज्ञितः ॥ निरूप्यतिथिकृत्यंतुप्रकीर्णवक्तुमुद्यतः ॥ १ ॥ तत्रादौसंस्कारेषुगर्भा  
धानम् । तत्रप्रथमरजोदर्शनेदुष्टमासग्रहसंक्रमादिफलंतत्रशांत्यादिर्चापित्तकृत  
भङ्गकृतप्रयोगरत्नेज्ञेयम् ॥ किंचित्तूच्यते (मदनरत्नेनारदः) \*अमारिक्ताष्टमीय  
श्रीद्वादशीप्रतिपत्स्वपि ॥ परिधस्यतुपूर्वार्द्धेव्यतीपातेचवैधृतौ ॥ संध्यासूपल्लवे  
विष्ट्यामशुभंप्रथमार्तवम् । रोगीपतिव्रतादुःखीपुत्रिणीभोगभागिनी ॥ प्रतिव्र  
ताक्लेशभागीसूर्यवारादियुक्रमात् । वैधव्यसुतलाभश्चभैवंशत्रुविवर्जनम् ॥ मित्रला  
भः शत्रुवृद्धिः कुलार्द्धिर्बन्धुनाशनम् ॥ मरणावंशवृद्धिश्चनिराहारः कुलक्षयः ॥ ते  
जश्चसुतनाशश्चकुलहानिस्तिथिक्रमात् (गर्गः) सुभगाचैवदुःशीलावंध्यापु  
त्रसमन्विता । धर्मयुक्ताव्रतघोचपरसंतानमोदिनी ॥ सुपुत्राचैवदुष्टपुत्रापित्तवेषम  
रतासदा ॥ दीनाप्रजावतीचैवपुत्राढ्याचित्रकारिणी ॥ साध्वीप्रतिप्रियानित्यंसुपु  
त्राकष्टचारिणी । स्वकर्मनिरताहिंसापुण्यपुत्रादिसंयुता ॥ नित्यंधनचयासक्ता  
पुत्रधान्यसमन्वितासुखाचाज्ञापुण्यवतीदत्तदादिः क्रमात्फलम् ॥ कुलीरवृषचा  
पांत्यवृष्युकन्यातुलाघटा ॥ राशयः शुभदाज्ञेयानारीणांप्रथमार्तवे (गर्गः) सुभगा  
श्वेतवस्त्रास्यातद्वद्वस्त्रापतिव्रता ॥ सौमवस्त्राक्षितीशास्यान्ववस्त्रासुखान्विता ॥  
दुर्भगाजीर्णवस्त्रास्याद्रोगिणीरक्तवाससा ॥ नीलांबरधरानारीपुष्टिपताविधवात  
तः ॥ वस्त्रेभ्युर्विद्यमारक्तविंदवः पुत्रमाप्नुयात् ॥ समाश्चेत्कन्यक्राश्चेतिफलंस्या  
त्प्रथमार्तवे ॥ अथस्त्रीसंवर्गवर्जनमाह (वशिष्ठः) प्रभूतदोषेयदिदुष्यतेतत्पु  
ष्टं तदाशांतिककर्मकार्यम् ॥ विवर्जयेदेवतदैकशय्यायावद्रजोदर्शनमुत्तमेहि ॥  
(ज्योतिर्निबन्धेवशिष्ठः) आद्यर्तौपौषशुक्राजेर्मधुशुचिनभस्याः कुयुक्पापवारा

\* संमार्जनीकाष्ठतृणादिशुष्कांस्तेदधानाकुलटातदास्यात् । तत्पौषभागेतमसिस्थिताचेत्तद्वृष्टं रजोभागे य  
तोतदास्यादितिप्रथमेरजसिषर्षमिष्टमितिमयुखे

रिक्तामाकाशस्थः पितृपरसदनेरात्रिसंध्यापराल्ते ॥ मिश्रोग्रामूलतीक्ष्णां विवर  
मनसुणात्पादिकासंगराष्ट्रोत्पातः पापस्य लरननसदसुगाजरन्नीलरक्तांबरच ॥ आ  
द्यतोदुर्भगानारीविठकुंभेचेद्रजस्वला ॥ वंध्याचैवातिगंडेचशलेशलवतीभवेत् ॥ गं  
डेतुपुंश्चलीनारीव्याघातेचात्मधातिनी । वजे चस्वैरिणीप्रोक्तापातेचप्रतिधा  
तिनी ॥ परिधेमृतबंध्याचवैधृतौपतिमारिणीशेषाः शुभावहायोगायथानामक  
लप्रदाः ( शांतिमाहप्रयोगपारिजातेशौनकः ) सार्तवानांतुनारीणां शांतिवक्ष्या  
मिशौनक ॥ पंचमेह्निचतुर्थेवाग्रहयज्ञपुरःसरम् ॥ द्रोणाप्रमत्ताधान्येनव्रीहिरा  
शित्रयंभवेत् ॥ कुंभत्रयंन्यसेद्राशौतंतुवस्त्रादिवेष्टितम् ॥ सूक्तेनाथनवर्चनप्रसुव  
आदइत्यथ ॥ ऋचायाः प्रवतस्तद्वद्गायत्र्याचततः क्रमात् ॥ मध्यकुंभेक्षिपेद्धान्यसौ  
यधानिचहेमच ॥ उदुंबरः कुशोदूर्वारजीववटबिल्वकाः ॥ विष्णुक्रांताथतुलसी  
बर्हिषंशंखपुष्टिका ॥ शतावर्यश्वगंधाचनिगुडीसर्यपद्मम् ॥ अपामार्गपलाश  
श्चपनसोजीवकस्तथा ॥ प्रियंगवश्चगोधूमाव्रीहयोऽश्वत्थसवच ॥ क्षीरंदध्व  
चसर्पिश्चपद्मपत्रंतथोत्पलम् ॥ कुरंतकत्रयं गुंजावचाभद्रकमुस्तकाः ॥ द्वात्रिंशदौ  
यधानीहयथासंभवमाहरेत् मृत्तिकाप्रचोयधादीनितन्मंत्रेणाक्षिपेत्क्रमात् ॥ कुंभो  
परिन्त्यसेत्पात्रंकास्यंमृद्वेणुताम्रजम् ॥ भुवनेश्वरींन्यसेत्तत्रइंद्राणींचपुरंदरसज्जपे  
द्गायत्रिमाहोमाच्छीसूक्तंचजपेत्ततः ॥ स्पृशन्त्रैदक्षिणांकुंभं ऋत्विगोकोजपेदथ ॥  
चत्वारिरुद्रसूक्तानिचतुर्मंत्रोत्तराणिच ॥ संस्पृशन्नुत्तरंकुंभंश्रीसूक्तंसुद्रसंख्यया ॥  
सन्नइंद्राग्निंसूक्तंचतत्रैवसंस्पृशन्जपेत् ॥ कुंभस्यपश्चिमेदेशे शांतिहोमंसमाच  
रेत् ॥ दूर्वाभिस्तिलगोधूमैः पायसेनघृतेनच ॥ तिसृभिश्चैवदूर्वाभिरेकैकाचहुति  
र्भवेत् ॥ अष्टोत्तरसहस्रवाशतमष्टोत्तरंतुवा ॥ गायत्र्यैवतुहोतव्यंहविरत्रचतुष्टयम्  
ततःस्विष्टकृतंहुत्वासमुद्रादूर्मिसूक्ततः ॥ संततामाज्यधारांतांपूर्णाहुतिमथाचरेत्  
अथाऽभिषेकंकुर्वीतप्रतिकुम्भस्थितोदकैः ॥ आपोहिष्टेतिनवभिः सूक्तेनचततः  
परम् ॥ इन्द्रोऽग्रं गृह्येनैवपावमानैः क्रमेणातु ॥ उभयंशृगावच्चैनंस्वस्तिदाविशसक  
या ॥ त्रैत्यं वकेनमंत्रेणाजातवेदसकया ( समुद्रज्येष्ठा इत्यादित्रायंतांचविभिः क्र  
मात् ) इमा आपरुयुचेनैवदेवस्यत्वेतिमंत्रतः ॥ मंत्रेणाथतमीशानंत्वमग्नेरुद्रइत्य



य ॥ तमुद्युहीतिसंवेगाभुवनस्यपितरंतथा ॥ यातेरुद्रेतिसंवेगाशिवसंकल्पसंव्रतः ॥  
 इन्द्रत्वाद्युषसंपंचमंत्रैश्चवाभिषेचयेत् ॥ धेनुंपयस्विनींदद्यादाचार्यायचभयगां ॥  
 सदक्षिणामनड्वाहंप्रदद्याद्भुजार्पिने ॥ महाशांतिंप्रजप्याथब्राह्मणाभोजयेदथ  
 (नारदः) तत्रशांतिंप्रकुर्वीतघृतदूर्वातिलासतैः ॥ प्रत्येकाष्टशतंचैवगायत्र्याजुहु  
 यात्ततः ॥ स्वर्गागोभूतिलान्दद्यात्सर्वदोषापनुत्तये (प्रकारांतरंसदनरत्नेज्ञेयं) वि  
 स्तरान्नोच्यते ॥ ग्रहगोरजोदर्शनेतुजातकर्मप्रस्तावेशांतिंवक्ष्यामः (प्रथमर्तौवि  
 शेषःस्मृतिचन्द्रिकायां) प्रथमर्तौतुष्टिपरायाःपतिपुत्रवतीक्रियाः ॥ अक्षतैरास  
 नंकृत्वातस्मिंस्त्रामुपवेशयेत् ॥ हरिद्रागन्धपुठपादीन्दद्युस्तांबूलकंस्रजं ॥ दीपैर्नी  
 राजनं कुर्यात्सदीपेवासयेदगृहे ॥ लवणापपमुद्गादिदद्यात्ताभ्यःस्वशक्तितइति  
 (द्वितीया \* द्यूतुष्टुतन्त्रियममाहमदनपारिजातेदक्षः) अंजनाभ्यंजनेस्नानंप्रवा  
 संदंतधावनम् ॥ नकुर्यात्सात्त्वानारीग्रहाणामीक्षणांतथा (अत्रिरपि) वर्जयेन्म  
 धुमांसंचपात्रेखर्वेचभोजनं ॥ गंधमाल्यंदिवास्वापतांबूलंचास्यशोधनं ॥ दग्धेश  
 रावेभुंजीतप्रेयंचांजलिनापिवेत् (मदनरत्नेहारीतः) रजःप्राप्ताचेदधःशयीतभ  
 मौकाण्यायसेपारागौमृन्मयेवाश्रीयात्इति (विष्णुधर्म) आहारंगोरसानांचपु  
 ठपालंकारधारणम् ॥ अंजनंकंकतंदंताःपीठशय्याधिरोहणम् ॥ अग्निसंस्पर्शनं  
 चैवबर्जयेच्चदिनत्रयं ॥ तथाप्रथमर्तःपूर्वस्त्रीगमनंनकार्यं प्राग्रजोदर्शनात्पत्नीने  
 याद्गात्रापतत्यधः ॥ व्यर्थीकारेणशुक्रस्यब्रह्महत्यामवाप्नुयादितितत्रैवाश्वला  
 यनोक्तेः (तत्रऋतौगमनं साहयान्नवल्क्यः) यौडशर्तुनिशा स्त्रीणांतासुयु  
 र्मासुसंविशेदिति ॥ (अनृतावप्याहगौतमः) ऋतावुपेयात्सर्वत्रवाप्रतिषिद्धमि  
 ति ॥ (सनुः) ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणांरात्रयःयौडशस्मृताः ॥ तासामाद्याश्च  
 तस्मस्तुनिंदितैकादशीतुया ॥ त्रयोदशीचशेषास्युःप्रशस्तादशरात्रयः (मदन  
 रत्नेदेवलः) तस्मात्त्रिरात्रंचांडालींपुठिपतांपरिवर्जयेत् ॥ (तत्रतिष्ठ्यादीनाह  
 श्रीधरः) प्रसृष्टमींपंचदशींचतुर्थींचतुर्दशीसप्युभयव्रहित्वा ॥ शेषाःशुभाः

\* स्तोधर्मिणीत्रिरात्रंतुम्बुखंनैवदर्शयेत् ॥ स्ववाक्यंश्रावयेन्नापियावत्स्नानाक्षुद्ध्यति ॥ सुस्नाताभ  
 तृब्रदनमोक्षेन्नान्यस्यकस्यचित् ॥ अथवामनसिध्यात्वापतिंभानुविलोकयेदितियाज्ञवल्क्योपि ॥

स्युस्तिथयोनिषेकेवाराः शशाङ्कसितेदुजानां ॥ उभयत्रपक्षद्वये (आर्योऽयुरुः)  
सितः शुक्रः इन्दुजो बुधः ॥ विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणाभाणि  
निशेषकार्ये ॥ पञ्चानिपुष्यवसुशीतकराश्चिचिवादित्याश्चमध्यमफलाविफ  
लाः स्युरन्ये (विष्णोवादिदैवत्यजसत्रारायुपक्रांतानिरत्नमालायां) भेषादस्रयमा  
ग्निधातुशशिनः शर्वोदितिर्वाक्यतिः ॥ कद्रू जाः पितरो भगोर्यसरवित्वष्टावहया  
मारुतः ॥ शक्राग्नीत्वथमित्रइन्द्रनिऋतीतोयंचविश्वेविधिर्गोविंदो वसवोऽनुपाज  
चरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ उत्तराशब्देनोत्तरावयं ॥ अत्रमूलस्यपञ्चत्वमुक्तम् ॥  
(याज्ञवल्क्येनतु) सवंगच्छन्स्त्रियंसां मांसघांसूलंचवर्जयेदित्युक्ते ॥ तेनपूर्वत्र  
मूलंचित्यं ॥ अत्रसमासुपुत्राविषमासुकन्येतिज्ञेयंयुग्मा\*सुपुत्राजायतेस्त्रियोयु  
ग्मासुरात्रिविवतिहेमाद्रौशंखोक्तेः) तत्राप्युत्तरोत्तराः प्रशस्ताः तदाहापस्तंबः ॥  
(तत्राप्युत्तराप्रशस्तेतितत्रैवव्यासः) रात्रौचतुर्थ्यापुत्रः स्यादल्पायुर्नवर्जितः ॥  
पंचस्यांपुत्रिणीनारीख्ययांपुत्रस्तुमध्यमः ॥ सप्तस्यांसप्रजायोषदस्यस्यामीश्व  
रः पुमान् ॥ नवस्यांशुभगानारीदशस्यांप्रवरः सुतः ॥ सकादश्यामधर्मास्त्रिद्वादश्यां  
पुरुषोत्तमः ॥ त्रयोदश्यांसुतापापावर्णासंकरकारिणी ॥ धर्मज्ञश्चक्रतज्ञश्चआ  
त्मवेदीदृढव्रतः ॥ प्रजापतिश्चतुर्दश्यांपंचदश्यांपतिव्रता ॥ आश्रयः सर्वभूतानांयो  
द्दश्यांजायतेपुमानिति(अत्रचतुर्थ्यदिननियेधेपि)स्नातांचतुर्थ्येदिवसेरात्रौ गच्छेद्वि  
चक्षराइतिभारतोक्तेः ॥ चतुर्थ्यहनिस्नातायांयुग्मासुवागर्भसंदधानीतिहारीतोक्ते  
र्विकल्पोज्ञेयः (तत्रापि) स्नानंरजस्वलायास्तुचतुर्थ्यहनिशस्यते ॥ गम्यानिवृत्तेर  
जसिनानिवृत्तेकथंचनेत्यापस्तंबोक्तेर्व्यवस्थाज्ञेया (प्रभासखण्डेमरीचिः) शुद्धा  
भर्तुश्चतुर्थ्यहनिस्नानेनस्त्रीरजस्वला ॥ दैवेकर्मणिपिच्येचपंचमेहनिशुद्ध्यति॥ अथौत

± चामांकृशं ॥ चामताचरजस्वलाव्रतजन्या अल्पस्निग्धभोजनादिनावाकार्या ॥ (तदाहवृहस्पतिः  
लघ्वाहारांस्त्रियंकुर्यादेवंसंजयनेत्सुतामिति ॥ पुमान्पुंसोधिकेशुक्रेत्तोभवत्यधिकेस्त्रियाइतिच १ ॥

\*यदायुग्मास्वपिरात्रिपुशोणिताधिक्यंतदास्त्रयेवभवतिपुरुषाकृतिः ॥ अयुग्मास्वपिशुक्राधिक्येपुमाने  
वस्त्रयाकृतिः ॥ कालस्यनिमित्तत्वात् ॥ शुक्रशोणितयोश्चोपादानकारणत्वेनप्राबल्यात्तस्माच्चामाकांतं  
व्येतिमिताचरायां २ ॥



कर्ममध्येरजस्वलाचेत्तत्रचतुर्थदिनेप्यधिकारः ॥ अथयदात्रिरात्रिणीस्यादथै  
 नामुपहूयेदित्यापस्तंबसूत्रात् ॥ चतुर्थेहनिगोसूत्रमिश्राभिरद्भिः स्नातावासोयो  
 क्वजालानिमंत्रैर्धारयेदितिसोमेप्युक्तं ॥ एवंसर्वत्रश्रौतकर्मणीतिधर्मस्वामिरा  
 माण्डारादयः ॥ अत्रसर्वस्युग्गमासुगमनमावश्यकंयुग्मास्त्वितिबहुवचननिर्देशा  
 दितिविज्ञानेश्वरः ॥ तच्चैकस्यांरात्रौसकृदेवकार्यं ॥ सुस्थइन्दौसकृत्पुत्रंलक्ष्मणं  
 जनयेत्पुमानितियाज्ञवल्क्योक्तेः ॥ इदंचर्तौगमनमन्यकालेप्रतिबन्धादिनागम  
 नासम्भवेऽष्टाद्वैकादश्यादावपि कार्यं ॥ ब्रह्मचर्येचपर्वरायाद्याश्चतस्रश्चवज्रये  
 दितियाज्ञवल्क्योक्तेःव्याख्यातं चेदंमिताक्षरायाम् ॥ यत्रश्राद्धादौब्रह्मचर्यंविहि  
 तंतत्राप्युपतौगच्छतो न ब्रह्मचर्यंस्खलनदोषइति ॥ पर्वणीतिबहुत्वेनाष्टमीचतुर्द  
 श्योग्रहणामितिचमदनरत्नेप्येवं (यत्तु हेमाद्रौशिवरहस्ये) दिवाजन्मदिनेचैव न  
 कुर्यान्मैथुनं व्रती ॥ श्राद्धं दत्वा च भुक्त्वा च श्रेयोर्यो न च पर्वस्त्विति तदनुविषयं ॥  
 ब्रह्मचर्ये न भवति यत्र तत्राश्रमेव सन्निति मनूक्तेः (दर्शादौ तु न भवत्येव) पर्वणां पर्यु  
 दस्तत्वात् ॥ ऋतुकालं नियुक्तो बानैव गच्छेत्स्त्रियं क्वचित् ॥ तत्र गच्छन्समाप्नोति  
 ह्यनिष्टफलमेव त्विति वृद्धमनूक्तेः (श्राद्धे ब्रह्मचर्यं नियतमित्युक्तं) पृथ्वीचन्द्रोदये  
 प्येवं । एतत्सतिसम्भवे ज्ञेयं ॥ अनेकभार्यस्य तु योगपद्ये हेमाद्रौ कश्यपः ॥ योग  
 पद्ये तु तीर्थानां विवाहक्रमशो व्रजेत् ॥ रक्षणाथ सपुत्रां वा ग्रहाक्रमशोऽपि वेति ॥  
 (ग्रहणामृतुग्रहाणां) ऋग्विधाने ॥ विष्णुर्योनिं जपेत्सूक्तं योनिं स्पृष्ट्वा त्रिभिर्व्रती ॥  
 गर्भाधानं ततः कुर्यात्सुपुत्रो जायते ध्रुवस ॥ अगमने दोषमाह पराशरः ॥ ऋतुस्नातां  
 तु यो भार्या सन्निधौ नोपगच्छति ॥ घोरायां भूराहत्यायां पच्यते नावसंशयः ॥ अ  
 स्यापवादमाह मदनरत्ने व्यासः व्याधितो बन्धनस्थो वा प्रभासेऽवश्यं पर्वसु । ऋतु  
 कालेऽपि नारीणां भूराहत्या प्रमुच्यते । वृद्धां बन्धाससदृतां मनपत्यामपुठिपणीं ।  
 कन्यां च बहुपुत्रां च वज्रजयन्मुच्यते भयात् । वृद्धाङ्गतरजस्कां । गर्भाधानां गहेमा  
 करणो प्रायश्चित्तमाह पारिजाते आश्वलायनः ॥ गर्भाधानस्याकरणात्तस्य जात  
 स्तु दुष्यति ॥ अकृत्वा गां द्विजे दत्वा कुर्यात्पुंसवनं पतिः ॥ गर्भाधानं दमलमासशु  
 क्रास्तादावपि कार्यं ॥ उत्सवेषु च सर्वेषु सीमंतुऋतुजन्मसु ॥ सुरासुरेज्ययोश्चैव

मौढ्यदोषो न विद्यत इति ज्योतिर्निबन्धे भूगोक्तेः ॥ ऋतौ गमने पराशरः ॥ ऋतौ तु  
 गर्भशं कृत्वा तस्मान्मैथुनिनः स्मृतं ॥ अनृतौ तु यदा गच्छेच्छौचं सत्रपुरीयवत् ॥  
 (स्त्रीणां तु न स्नानं) उभावप्यशुची स्यातां दम्पती शयनंगतौ ॥ शयनादुत्थितानां  
 रीशुचिः स्यादशुचिः पुमानिति बृद्धशातातपोक्तेः ॥ अत्र कश्चिद्विशेष उच्यते ॥  
 तत्र रात्रौ रजसि जननादौ च रात्रिं विभागां कृत्वा आद्यभागद्वयं चेत्पूर्वदिनं ग्राह्यं ॥  
 परतस्तत्तरमिति मितं सारायाम् ॥ यत्तु प्रागर्धरात्रात्प्राग्व सूर्योदयात्पूर्वदिनमि  
 त्युक्तं ॥ तत्र देशाचारादव्यवस्था ॥ तथा सप्तदशदिनपर्यन्तं पुनरजोदृष्टौ स्नानमा  
 त्रं अष्टादशेऽप्येकं कर्तव्यं विंशेऽप्यहः ॥ विंशतिप्रभृतिरात्रमिति तत्तत्सर्वज्ञेयं  
 यत्तु चतुर्दशदिनादवर्गाशुचित्वं न विद्यते इति तत्र स्नानप्रभृतित्वमभिप्रेतं ॥ सतच्च य  
 स्याद्विंशतिदिनोत्तरं प्रायशोरजस्तत्रोक्तं स्मृत्यर्थसारे ॥ त्रयोदशदिनादूर्ध्वं प्रायो  
 रजोवतीनामेकादशदिनात्प्रागशुचित्वं नास्ति ॥ एकदशदिनेऽप्येकं कर्तव्यं ॥ द्वादशे  
 द्विरात्रं ॥ ऊर्ध्वं त्रिरात्रमिति ॥ प्रयोगपरिजातेऽप्येवं ॥ रोगजे तु तत्रैव विशेषः संग्रहे रो  
 गोऽयम्वजः स्त्रीणामन्वहं हि प्रवर्तते ॥ नाशुचिस्तु भवत्तेन यस्माद्वैकारिकं मतमि  
 ति ॥ कर्माधिकारस्तुरजो निवृत्तावेव ॥ साधवाचारानतावत्स्यात्स्नातापि स्त्री र  
 जस्वला ॥ यावत्प्रवर्तमानं हिरजो नैव निवर्तत इति आह हेमाद्रौ शंखोक्तेः ( तत्रा  
 पि स्वकालेऽशुचिरेवेत्याह ऋष्यशृंगः ) रोगजे वर्तमानेऽपि काले निर्यातिकालि  
 कं ॥ तस्मात्काले प्रसत्ता स्यादन्यथा संकरो भवेत् ( तथा ) रजस्वलायारजस्व  
 लांतरस्पर्शोऽकामतः स्नानं कामत उपवासः पंचगव्याशनं च ॥ असवर्णानां तु ब्राह्म  
 णाणां त्रियादिस्पर्शं क्रमेण कृच्छ्राद्विपादो न कृच्छ्रं कृच्छ्राणि त्रियादीनां तु कृ  
 च्छपादसवर्णानां हीनवर्णास्पर्शं त्रिरात्रमुपवासः ॥ वैश्याशूद्रयोः पूर्वया स्प  
 र्शे होरात्रं द्विरात्रं च ॥ सतच्च कामतः ॥ अकामतश्च प्राक्शुद्धेरनशनं ॥ अकाम  
 तश्चंडालादिस्पर्शेऽप्यनशनमेव प्राक्शुद्धेः ॥ कामतस्तु ॥ प्रथमेऽह्न्यहः  
 द्वितीयेऽह्न्यहस्तृतीयसकाहः ॥ चतुर्थेऽह्न्यहसकाहो वा ॥ भुंजानायाश्चंडा  
 लादिस्पर्शेऽष्टरात्रं ॥ उच्छिष्टयोः स्पर्शे तु कृच्छ्रइत्यादि मितं सारायाम् ॥ स्मृ  
 त्यर्थसारे तु सर्वत्रालापत्यायाः स्पर्शे स्नाने कर्तव्यं भक्तिः पश्चादशनप्रत्यास्नायइ



ति (स्नानविधिंचाहपराशरः) स्नानेनैमित्तिकेप्राप्तेनारीयदिरजस्वला । पात्रांत  
रिततोयेनस्नानं कृत्वा त्रतंचरेत् ॥ सिक्तगात्राभवेद्विःसां गोपागाकथंचन ॥ नव  
स्रपीडनंकुर्यान्नान्यद्वासप्रवधारयेत् ॥ अथरजस्वलास्नानं ( देवज्ञवल्लभः ) ब्र  
ह्मानुराधाश्चिनसौम्यभेषुहस्तानिलाखंडलवासवेषु ॥ विश्वार्यमर्षोत्तरभाद्रभेषु  
वरांगनास्नानविधिःप्रदिष्टः ( ज्वरेतूषणाः ) ज्वराविभूतायानारीरजसाचपरि  
सुता ॥ कथंतस्याभवेच्छौचं शुद्धिः स्यात्केनकर्मणा ॥ चतुर्थेह निसंप्राप्तेस्पृशेद  
न्यातुतांस्त्रियं ॥ सासचैलावगाद्यापः स्नात्वास्नात्वापुनःस्पृशेत् ॥ दशद्वादशकृत्वो  
वात्राचामेचपुनःपुनः ॥ अंतेचवाससांत्यागःततःशुद्धाभवेत्तु सेति ॥ इदंचातुरमा  
वेजेयं ॥ आतुरेस्नानउत्पन्नेदशकृत्वोह्यनातुरइतिपराशरोक्तेः ॥ रजसोऽज्ञाने  
तुपराशरमाधवीयेप्रजापतिः ॥ अविज्ञातेमलेसाचमलवद्वसनायदि ॥ कृतं  
गृहेषुदुष्टंस्याच्छुद्धिर्नस्यात्त्रिरात्रतः ( देवजानीयेकारिकायां ) उच्छिष्टातु  
द्विजातीनांरजःस्त्रीयदिपश्याति ॥ उपवासमधोच्छिष्टेऊर्ध्वोच्छिष्टेज्यहंसिपेत्  
( अथपुंसवनं ) प्रयोगपारिजातेजातकरार्यः ॥ द्वितीयेवातृतीयेवामासिपुंस  
वनंभवेत् ॥ व्यक्तेगर्भेभवेत्कार्यमीमतेनसहायवा ( वृहस्पतिः ) तृतीयेमा  
सिकर्तव्यंगृष्टेरन्यत्रशोभनं । गृष्टेचतुर्थेमासेतुयष्टेमास्ययवाष्टमे ॥ सकृत्प्रसूतागृ  
ष्टिः ॥ एतेनप्रतिगर्भमपिभवतीतिज्ञायते ॥ बह्वृचकारिकापि ॥ कर्त्तास्यादेवर  
स्तस्यायस्याः पत्युरसंभवः ॥ आवर्त्ततइदंकर्मप्रतिगर्भमितिस्थितिः ( ब्राह्मे )  
गर्भाधानादिसंस्कृत्तापिताश्रेष्ठतमःस्मृतः ॥ अभावेस्वकुलीनःस्यादबांधवोऽन्यत्र  
गोत्रजः(मदनरत्नसत्यव्रतः)मृतोदेशांतरगतोभर्त्तास्त्रीयद्यसंस्कृता ॥ देवरोवागुरु  
र्वापिवंश्योवापिसमाचरेत् ( हेमाद्रौयमः ) प्रथमेमासिद्वितीयेवायदापुनसत्रेणा  
चंद्रमायुक्तः स्यादितिबराहः ॥ हस्तोमूलंश्रवणाःपुनर्वसुर्गशिरस्तथापुष्यः ॥  
पुंसंज्ञकेषुकार्येठवेतानिशुभानिधिटरायानि । अनुराधापिपुनसत्रंअनुराधानहवि  
यावर्धयंतइतिश्रुतेः ( गर्गोपि ) पुन्र्नामश्रवणास्तित्योहस्तश्चैवपुनर्वसुः ॥ अभि  
जित्प्रौषपाचैवअनुराधातथाश्वयुक् ( वृसिंहः ) रिक्तांपर्वचनवमौतयत्कापुंसवने  
शुभाः ॥ ज्योतिर्निबंधेवशिष्टः ॥ मृत्युश्चसौरेस्तनुहानिरिंदोमृतप्रजापुंसवने

बुधस्य ॥ काकी च वंध्या भवती ह शुक्रो पुत्रलाभोरविभौ मजीवैः ॥ अनवलोभ  
नस्याप्ययमेव कालः ॥ दीपिकायां तु चतुर्थे नवलोभनमित्युक्तं ॥ अथ सीमंतः ॥  
हेमाद्रौ वैजवापः ॥ अथ सीमंतोन्नयनं ॥ चतुर्थे पंचमेष्वे चेति ( वशिष्ठः ) चतुर्थे  
सप्तमे मासि यस्ते वाप्यथ वाष्टमे ॥ हेमाद्रौ शंखः ॥ गर्भस्पंदने सीमंतोन्नयनं ( याव  
( दानप्रसवः काष्ठाजिनिः ) गर्भलंभनमारभ्य यावन्न प्रसवस्तदा । सीमंतोन्नय  
नं कुर्याच्चिंखस्य वचनं यथा ( मासप्रचात्रसौरः सावनो वा कालविधाने ) चतुर्थ  
यस्याष्टममासभाजिसौरैरागर्भप्रथमं विधेयं ॥ सीमंतकर्म द्विजभासिनीनां मासे  
ष्टमे विष्णुर्बालं च कुर्यात् ( वशिष्ठः ) चतुर्थे सावने मासि यस्ते वाप्यथ वाष्ट  
मे ( ज्योतिर्निबंधेनारदः ) अरिक्तापर्वदिवसे कुजजीवार्कवासरे ( कालविधा  
ने ) सीमंते तिथ्यहस्तादिति हरिशशभृत्पौष्पाविध्युत्तराख्याः पक्षाच्छिद्रं च रिक्तां  
पिहृतिथि मपहाया पराः स्युः प्रशस्ताः ॥ अदितिः पुनर्वसुः ( पक्षाच्छिद्रं चाह वशि  
ष्ठः ) चतुर्दशी चतुर्थी च अष्टमी नवमी तथा ॥ यद्ये च द्वादशी चैव पक्षाच्छिद्रा ह्वयः  
स्मृतः ॥ क्रमादेता सुतिथिषु वर्जनीयाश्च नाडिकाः ॥ भता ५ ष्ट ८ मनु १४  
तत्त्वां २५ क ६ दश १० शेषास्तु शोभनाः ( कालनिर्णय ) शुभसंस्थे निशाना  
ये चतुर्थी च चतुर्दशी ॥ पौर्णमासी प्रशंसति केचित् सीमंतकर्मणि ( वृहस्पतिः )  
पूर्वपक्षः शुभः प्रोक्तः कृष्णाश्चांत्यत्रिकं विना ॥ चतुर्दशी चतुर्थी च शुक्लपक्षे शुभप्र  
दे ( नारदः ) विप्रसत्रिययोः कुर्याद्द्विवासीमंतकर्म तत् ॥ वैश्यशूद्रकयोरेतद्दि  
वानि श्रयिष्ये केचन ॥ वाराः पूर्वोक्ता एव ( एतच्च संहृतप्रतिगर्भवाक्यमिति हेमा  
द्रिः ) एतच्च कृतसंस्कारासीमंतेन द्विजस्त्रियः ॥ यं यं गर्भप्रसयं ते स सर्वः संस्कृतो भ  
वेदिति हारीतोक्तेः ॥ सीमंतोन्नयनं कर्म न स्त्रीसंस्कार इष्यते ॥ केचित् गर्भस्य संस्का  
रान् प्रतिगर्भप्रयुंजते इति हेमाद्रौ विष्णुवचनाच्च ( सख ) स्त्रीयद्यकृतसीमंता प्रस  
वे तु कथं चन ॥ गृहीतपुत्रा विधिवत्पुनः संस्कारमर्हति ( सीमंते भोजने प्रायश्चित्त  
तमुक्तं पराशरमाधवीये धौम्येन ) ब्रह्मोदने च सीमे च सीमंतोन्नयने तथा ॥ जातक  
र्म न वशाद्देभुक्ता चांद्रायणां चरेत् ( ऋग्विधानेतु ) आरइवेज्जपेन्मंत्रं शतवारं न सं  
शयः ॥ सीमंते च यदा भुंक्ते मुच्यते किल्विद्यात्तदेति ( अथ गर्भिणी तत्पतिधर्माः ।



वराहः ) सामिषमशनं यत्नात्प्रमदापरिवर्जयेदतः प्रभृतिगृह्यकारिकायां ॥ अं  
 गारभस्मास्थिकपालचुलीशूर्पादिकेषुपविशेन्नारी ॥ सोलूखलादये दूषदादि  
 केवायंवेतुयादये नतथोपविष्टा ॥ नोमौर्जनीगोमयापिंडकादौ कुर्यान्नवारिराय  
 वगाहनंसा ॥ अंगारभूत्याननखैर्लिखेत्समांकलिं वपुर्भगमथोन कुर्यात् ॥ नोमुक्त  
 केशीविवशाथवास्याङ्गकोनसंध्यावसरेनशेते ॥ नामंगलंवाचमुदीरयेत्साशून्या  
 लयंवृक्षतलेनयायात् (विष्णुधर्मोत्तरे) कटुतीक्ष्णाकयायागिअत्युष्णालवणानि  
 च ॥ आयासंचव्यवायंचगर्भिणीवर्जयेत्सदा (हेमाद्रौकौण्डिन्यः) मुंडनीपिंडदा  
 नंचप्रेतकर्मचसर्वशः ॥ नजीवत्पितृकः कुर्याद्द्विगुर्विणीपतिरेवच (सिताक्षरायां)  
 उदन्वतोभसिस्नाननखकेशादिकर्तनं ॥ अंतर्वत्न्याः पतिः कुर्वन्नप्रजाजायतेध्रुवं  
 (पृथ्वीचंद्रोदयेगारुडे) गयायांपिंडदानस्यनकदाचिन्निराक्रिया ॥ अवकाले  
 दानप्रत्ययस्मृतेर्निषिद्धकालस्यैवापवादोनतुजीवत्पितृकगर्भिणीपत्याशौचादि  
 निमित्तस्य ॥ अग्निहोत्रेयावज्जीवत्कालपरत्वाभावात् ॥ अन्यथाशौचेपिगया  
 यात्रायाद्वंचस्यातयवतुनिमित्तसंयोगस्यापवादोयथाशौचेग्निहोत्रादेः यथावा  
 जीवत्पितृकस्यमातुर्गयान्वष्टकादौतत्रतदेवभवतिनान्यदितिसंक्षेपः (प्रयोगपा  
 रिजातेकप्रथमः) गर्भिणीकुंजराश्वदिशैलहर्म्याधिरोहणं ॥ व्यायामंशीघ्रगम  
 नंशकदारोहणंत्यजेत् ॥ शौकरक्तविमोक्षंचसाध्वसंकुक्कुटासनं । व्यवसायंदिवा  
 स्वापंरात्रौजागरणंत्यजेत् (मदनरत्नेस्कांदे) हरिद्रांकुंकुमंचैवसिंदूरंकज्जलंतथा  
 कूपसिकंचतांबूलंसांगल्याभरणांशुभं ॥ केशसंस्कारकवरीकरकर्णाविभूषणास  
 भर्तुरायुष्यमिच्छंतीदूरयेद्गर्भिणीर्नाहि (बृहस्पतिः) चतुर्थेमासिष्यैवाप्य  
 ष्मेगर्भिणीयदा ॥ यात्रानित्यंविबुज्यास्यादायाहेतुविशेषतः (याज्ञवल्क्यः)  
 दौहं दस्याप्रदानेनगर्भादोषमवाप्नुयात् ॥ वैष्णव्यंमरणांचापितस्मात्कार्यं प्रियं  
 स्त्रियः ॥ दौहं दंगर्भिणीप्रियं (तत्रैवाश्वलायनः) वपनंमैथुनंतीर्थवर्जयेद्ग  
 र्भिणीपतिः ॥ आद्वंचसप्तमान्मासादूर्ध्वचान्यत्रवेदवित् (आद्वंचतद्भोजनमितिप्र  
 योगपारिजातः कालविधाने मुहूर्तदीपिकायांच) क्षौरंशवानुगमनंनख  
 कृन्तनंचयुद्धादिवास्तुकरांत्वतिदूरयानं ॥ उद्वाहमीपनयनंजलधेष्वचगाहमायु

स्यार्थमिति गर्भाशिकापत्तीनां ( रत्नसंग्रहे गालवः ) दहनं वपनं चैव चोल्बैर्गिरिरोहरां ॥ नावआरोहरां चैव वज्रयेद्गर्भाशिकापतिः ॥ अव्यक्तगर्भापतिरन्ध्रि-  
यान्मृतस्य बाहं सुरकर्मसंगं ॥ तस्यां तु यत्नेन गयादितीर्थयागादिकं वास्तुविधिं  
न कुर्यात् ॥ अव्यक्तगर्भाविनिता भवेन्मासत्रयात्परं ॥ यस्मात्मासत्परतः सूतिर्न वमे-  
रिष्टर्वासिनी ( अथ सूतिकागृहप्रवेशः । गर्गः ) रोहिण्यैव पौषोषस्वातीवस-  
रायोरपि । पुनर्वसौ पुष्यहस्तधनिष्ठाद्युत्तरासुच ॥ मैत्रेत्वाष्टौ तथा श्विन्यां सति  
कागारवेशनम् ( सतच्च संभवे ) प्रसूतिसमये काले सद्यस्वप्रवेशयेदिति विशिष्टोक्तेः  
तच्च नैर्ऋत्यां कार्यं । वासरायां भोजनगृहं नैर्ऋत्यां सूतिकागृहमिति विशिष्टोक्तेः  
( विष्णुधर्म ) दशाहं सूतिकागारमायुधैश्च विशेषतः । वह्निना तदुक्तालौः पूर्णा-  
कुम्भैः प्रदीपकैः । मुसलेन तथा वारिवर्गाकैश्चित्रितेन चेति ( अथ जातकर्म । पारि-  
जाते विशिष्टः ) श्रुत्वा जातं पिता पुत्रं सच्चैलं स्नानमाचरेत् ( मनुः ) प्राङ् नाभिवर्धना-  
त्पुंसो जातकर्मविधीयते । वर्द्धनं ह्येदनं ( हेमाद्रौ वैजवापः ) जन्मनो नंतरं कार्यं जात-  
कर्मयथाविधि । देवादतीतकालं चेदतीते सत्के भवेत् ( पृथ्वीचंद्रोदये विष्णुधर्म )  
अच्छिन्ननाभिकर्तव्यं श्राद्धं वै पुत्रजन्मनि ॥ पुत्रपदेन कन्यापि गृह्यते ( तदाह तत्रैव  
काठशास्त्रिजिनिः ) प्रादुर्भावे पुत्रपुत्र्योर्ग्रहोचंद्रसूर्ययोः ॥ स्नात्वा नंतरमात्मीया-  
नपितृव्याद्धेन तर्पयेत् ( सतच्च रात्रावपि कार्यं ) पुत्रजन्मनि यात्रायां शर्वर्यादत्त-  
मस्यार्थमिति तत्रैव व्यासोक्तेः ( वैजवापः ) जातमात्रकुमारस्य जातकर्मविधीय-  
ते ॥ स्तनप्राशनतः पूर्वनाभिकर्तनतोऽपि वा ॥ सतेन नैमित्तिकमपीदं जातेऽपि वदा-  
शौचांते कार्यमिति शंकापरास्ता । जाते कुमारि पितृणां मासोदात्तपुरायंतदहरि-  
तिहारीतोक्तेश्च । अत्र श्राद्धसामेन हेम्ना वा कार्यमित्युक्तं ( पृथ्वीचंद्रोदये आ-  
दित्यपुराणे ) जातश्राद्धे तु पक्वान्नं दद्याद्ब्राह्मणोऽथ पीति ॥ हेमाद्रिस्तु ॥ पुत्रजन्म-  
निकुर्वीत श्राद्धं हेम्नैव बुद्धिमान् । नपक्वेन न चामेन कल्याणान्यभिक्रामयन्निति  
संवर्तीकते हेम्नैवेत्याह ( सतच्च जननाशौचे मरणाशौचे च कार्यमित्याह मितासरा-  
यां प्रजापतिः ) आशौचे तु समुत्पन्ने पुत्रजन्मयदा भवेत् । कर्तुं स्तात्कालिकी शु-  
द्धिः पूर्वाशौचेन शुद्ध्यति ( केचित्तु ) मृताशौचस्य मध्ये तु पुत्रजन्मयदा भवेत् । आ-



शौचावगमेकार्यं जातकर्मयथाविधीति स्मृतिसंग्रहोक्तेराशौचांतेकार्यमित्याहुः ( स्मृत्यर्थसारेपिविकल्पउक्तः ) मृदुध्रुवचरसिप्रभेद्वेषामुदयेषु च ॥ गुरौशुक्रेयवाकेद्रेजातकर्मचर्चनामच ( मृदादिलक्षणा माह श्रीधरः ) रोहिण्युत्तरभांस्थिरं गिरिशमूलेंद्रोरगादारुणांसिप्रंचाप्रिवदिनेशपुष्यसजलेंद्राग्नीतुसाधारणां ॥ उग्रं पूर्वमघांतकं मृदुगतिस्वाष्ट्यांत्यमैवंचरं विष्णुस्वातशतोदुवस्वदितयः कुर्युः स्वसंज्ञाफलं । अत्र सर्वत्र जातकर्मनामकर्मदावुक्तकालातिक्रमेन सत्रादिकं ज्ञेयम् । देशकालोपघाताद्यैः कालातिक्रमण्यदि ॥ अनस्तगे ज्येष्ठसिते तत्कार्यं चोत्तरायणो ॥ इति सदनरत्नेनारदोक्तेः ( बृहस्पतिरपि ) मुख्यालाभे विधिज्ञेन विधिप्रचंत्यो प्रमादतः ॥ नक्षत्रतिथिलगनानां विचार्यैवं पुनः पुनः ॥ सतके संध्यादौ विशेषं वक्ष्यामः ॥ अथ जन्मनि दुष्टकालाः ( तत्र गंडांतः । ज्योतिर्निबन्धेनारदः ) प्रणानंदाख्ययोस्तिष्ठयोः संधिर्नाडीद्वयं तथा ॥ गंडांतं मृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादियुः ॥ कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेययोः । गंडांतमंतरालं स्यादधटिकार्धं मृतिप्रदं ॥ सार्पेकपौष्णभेद्वंत्ययोऽशांशाभसंधयः ॥ तदग्रभेद्वद्यपादाभानां गंडांतसंज्ञकाः ( रत्नमालायां ) पौष्णाऽऽश्विनयोः सार्पपित्रर्क्षयोश्च यच्च ज्येष्ठा मूलयो रंतरालं । स्याद्गंडांतं स्याद्यच्चतुर्नाडिकं हियात्राजन्मोद्वाहकालेऽवनिष्ठम् ( रत्नसंग्रहेन वसीतारिष्टे ) सर्वेयां गंडजातानां परित्प्रागो विधीयते ॥ वर्जयेद्दर्शनं श्रावं च चारा मासिकं भवेत् । तिष्ठयर्क्षगंडे पितृमातृनाशोलगने तु संधौ तनयस्य नाशः ॥ सर्वेयुनो जीवति हन्ति बन्धनं जीवन् पुनः स्याद्बहुवारणाश्वः ( अथैषां दानमुत्तरगार्थं ) तिथिगंडे त्वनड्वाहनं सन्नेधेनु रुच्यते ॥ कांचनं लग्नगंडे तु गंडदोयो विनश्यति ॥ उत्तरे तिलपात्रं स्यात्पुष्पयोगोदानमुच्यते ॥ अजाप्रदानं त्वाष्ट्रं स्यात्पूर्वाषाढे च कांचनं । उत्तरापुष्यचित्राहपूर्वाषाढोद्भवस्य च । कुर्याच्छांतिं प्रयत्नेन नक्षत्राकरजं बुधः ॥ ( अथाश्लेषाफलं ) मृदास्थने त्रगलकांसयुगंच द्वाहहज्जानुगुह्य पदमित्याहिदेहभागः । वारादिने ब्रह्मभुक्श्रुतिनागरुद्रयगनंदपंचशिरसः क्रमशस्तु नाड्यः ॥ राज्यं पितृक्षयो मातृनाशः कामक्रियारतिः ॥ पितृभक्तो बलीस्वधनस्त्यागी भोगी धनी क्रमात् ॥ अथ ज्येष्ठाफलं ब्रह्मयामले ॥ ज्येष्ठादौ जननी माता द्वितीये जननी पिता ॥ तृतीये जननी भ्राता

स्वयंमाताचतुर्थके ॥ आत्मानं पंचमेहन्ति यद्येगोत्रस्योभवेत् । सप्तमेचोभयकु  
लं ज्येष्ठभ्रातरमष्टमे ॥ नवमेश्चशूरं हन्ति सर्वं हन्ति दशांशक इति ( अथमूलफलं ॥  
भल्लादः ) अभुक्तमूलसम्भवं परित्यजेत्तुवालकं । समाष्टकं पितायवानतन्मुखं  
विलोकयेत् ॥ तदाद्यपादके पिता द्वितीयके जनन्यथ । धनस्य रत्नं तीर्थके चतुर्थ  
कः शुभावहः ॥ प्रतीपमन्यपादतः फलं तदेव सार्यभे ( अभुक्तमूलं त्वाहवृद्धवशिशुः )  
ज्येष्ठांतेघटिकाचैकामूलादौघटिकाद्वयं । अभुक्तमूलमित्याहुस्तत्रजातं शिशुं त्य  
जेत् ॥ केचिज्ज्येष्ठांत्यमूलाद्यं च पादमभुक्तमूलमाहुः ( कश्यपसंहितायां त्वन्य  
थोक्तं ) मूलाद्यपादजो हन्ति पितरं तु द्वितीयजः । मातरं स्वतृतीयो यार्थानसुहृदं त  
तुरीयजः ॥ फलं तदेव सार्यभे प्रतीपं त्वं त्यपादतः ॥ अथमूलवृक्षः ( जयारवि )  
मूलस्तंभं स्त्वचाशाखापत्रं पुटपं फलं शिखा । वेदाश्चमुनेयश्चैव दिशश्च वसव  
स्तथा ॥ नन्दाबाणारसारुद्रामूलभेदः प्रकीर्तितः । मूलेमूलविनाशायस्तंभेहा  
निर्धनक्षयः ॥ त्वचिभ्राह्मविनाशाय शाखामाह्विनाशकृत ॥ पत्रे सपरिवारः  
स्यात्पुठपेषु नृपवल्लभः । फलेषु लभते राज्यं शिखायामल्पजीवितं ॥ अन्यत्र वा  
न्यथोक्तं ॥ मूले सप्तघटीयुमूलहननं स्तम्भेषु ह्रस्वक्षयं त्वग्निदग्धं ध्विनाशनं च  
विरुपे सुद्वैर्होमोमालुः ॥ पत्रे कर्कः सुकृती तु बाणकुसुमे मंत्री फले सागरे राजा बह्नि  
शिखात्पमायुरिति सन्मूलांघ्रिपे स्यात्फलम् ( भूपालवल्लभः ) वृथालिसिंहे  
युधदेचमूलं दिवि स्थितं युग्मतुलांगनां त्ये ॥ पातालगं मेघधनुः कुलीरनक्रेषु मर्त्ये  
ठिव्रतिसंस्मरति ॥ स्वर्गे मूले भवेद्राज्यं पाताले चेद्वनागमः । मर्त्यलोके यदा मूलं त  
दा शून्यं समादिशेत् ( वशिष्ठः ) नैऋत्यभोद्रुतसुतः सुतावाक्षिप्रादवश्यं च शूरं नि  
हन्ति ॥ तदं त्यपादे जनितो निहन्ति तस्योत्क्रमेणाहिभवेत्कलत्रम् ॥ सुरेशतारा  
जनिता धवाग्रजं द्विदेवताराजनिता तु देवरत्नम् ॥ पुरन्दरर्क्षे जनितः सुतस्तथा स्वस्या  
ग्रजं हन्ति न पुत्रिताय दि ( प्रयोगपारिजाते ) मूलजाश्च शूरं हन्ति व्यालजा च तदङ्ग  
नाम् ॥ माहेन्द्रजाग्रजं हन्ति देवरन्तु द्विदेवजा ( वृसिंहप्रसादे ) धवाग्रजं हन्ति सुरेन्द्र  
जाता तथैव पत्न्या भगिनीं पुमांश्च । द्विदेवजा देवरमाशुहन्त्याद्वायानुजामाशुनि  
हन्ति सूनुः ॥ पत्न्यग्रजामग्रजं वाहन्ति ज्येष्ठर्क्षजः पुमान् । तथा भार्या स्वसारं वाशा



लकंवादिदेवजः ॥ कन्यकादेवरंहन्तिविशाखांत्यसमुद्भवा । आद्यपादत्रयेनैव  
 आद्यभेतुपुमानभवेत् ॥ नहन्यादेवरंकन्यातुलामिश्रादिदेवजा । तदृक्षांतोद्भवा  
 वज्र्यादुष्टावृष्टिचक्रपुच्छवत् ॥ चित्राद्यर्धेपुष्ट्यमध्येद्विपादेपूर्वायाढाधिठरायपा  
 देतृतीये । जातःपुत्रश्चोत्तराद्येविवत्तेमातापित्रोर्भ्रातरंबालनाशं ॥ द्विमासंचो  
 त्तरादोयःपुष्ट्येचैवत्रिमासकः । पूर्वायाढाष्टमेमासिचित्रायासामासिकंफलं ॥  
 नवमासंतथाप्रलेयासलेचाष्टकवर्षकं । ज्येष्ठापंचदशेमासिपुत्रदर्शनवर्जिता ॥  
 (वर्गशयः) व्यतीपात्तेहहानिःस्यात्परिधेमृत्युमादिशेत् । वैधृतौपितहानिःस्या  
 चष्टेदाबंधतांत्रजेत् ॥ मूलेसमूलनाशःस्यात्कुलनाशोभतौभवेत् । विहृतांगप्रच  
 हीनश्चसंध्ययोरुभयोरपि ॥ पर्वरायपिप्रसूतौचसर्वारिभयप्रदः । तद्वत्सदंत  
 जातप्रचपादजातस्तथैवच ॥ विपरीतप्रसूतौतुनाभिनालेनवेष्टितः । राष्टस्यनृप  
 तेश्चैवस्वस्यापिचविनाशकः ॥ तस्माच्छांतिप्रकुर्वीतग्रहाराणांक्रूरचेतसां (गर्गः)  
 कृष्णांचतुर्दशींघोटांकुर्यादादौशुभंस्मृतं । द्वितीयेपितरंहन्तितीयेहन्तिमात  
 रम् ॥ चतुर्थेमातुलंहंतिपंचमेवंशनाशनम् ॥ षष्ठेतुघननाशःस्यादात्मनोवंशना  
 शनम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनशांतिंकुर्याद्विधानतः ॥ अथपित्रोर्नक्षत्रेजन्मदोयः ॥  
 (तत्रदेवकीर्तिः) यद्येकस्मिन्विठरायेजायन्तेदुहितरौयवापुत्राः । पितुरंतकरा  
 ह्येतेयद्यपरेप्रीतिरतुलास्यात् (गर्गः) एकस्मिन्नेवनक्षत्रेभ्रात्रोर्वापितुपुत्रयोः  
 प्रसूतिश्चतयोर्मृत्युर्भवेदेकस्यानिष्टितं (शौनकः) ग्रहतोचन्द्रसूर्यस्यप्रसूतिर्य  
 दिजायते । व्याधिपीडातदास्त्रीणामादौतुष्टतुदर्शनात् ॥ इत्थंसंजायतेयस्यत  
 स्यमृत्युर्नसंशयः (शांतिस्तु) तदृक्षाधिपतेरूपंमुवर्गोनप्रकल्पयेत् । सूर्यग्रहेसूर्य  
 रूपंहेमं चन्द्रन्तुराजतम् ॥ राहुरूपं प्रकुर्वीतनागेनैवविचक्षयाः ॥ नागःसीसं ॥ व्रया  
 गांचैवरूपाणांस्थापनंतत्रकारयेत् ॥ आह्वयोनाप्यायस्वर्भातिरितिपूजासंवा  
 नक्षत्रदेवतायास्तन्मंत्रेणा ॥ संपूजयतुयजेत्सूर्यसमिद्धिश्चार्कसंभवेः ॥ चंद्रग्रहेच  
 पालाशैर्दूर्वाभीराहुमेवच ॥ समिद्धिर्ब्रह्मवृक्षस्यभेषायजुहुयाद्बुधः ॥ आड्येन  
 चरुणाचैवतिलैश्चजुहुयात्ततः । पंचगव्यैःपंचरत्नैःपंचत्वक्पंचपल्लवैः । जले  
 रौप्यधिकल्केप्रचअभिषेकंसमाचरेत् । संवैवाकृतासंभूतैरापोहिष्टादिभिस्त्रिभिः

इमं मे गंगेपुरतस्तत्त्वा यामीति मंत्रकैः । यजमानस्ततो दद्याद्भक्त्या प्रतिष्ठाति  
त्रयमिति ( मात्स्ये ) अकालप्रसवानार्यः कालातीतप्रजास्तथा । विवृतप्रसवा  
श्चैव युग्मप्रसवकास्तथा ॥ अमानुषाश्च मुंडाश्च अजातव्यजनास्तथा । हीनांगा  
अधिकांगाश्च जायन्ते यदि वा स्त्रियः ॥ पशवः पक्षिणाश्चैव तथैव च सरीसृपाः  
विनाशतस्तद्देशस्य कुलस्य च विनिर्दिशेत् ॥ निर्वसियेतां नगरात्ततः शान्तिसमाच  
रेत् ( पाप्मे ) उपरि प्रथमं यस्य जायन्ते च शिशोर्द्विजाः । दंतैर्वासहस्यस्य स्याज्जन्मभार्ग  
वसत्तम ॥ द्वितीये च तृतीये च चतुर्थे पंचमे तथा । यदादंताश्च जायन्ते मासे चैव महद्भ  
यं ॥ मातरं पितरं वा यत्ना देदात्मानमेव च । गजपृष्ठगतं बालं नौ स्थंवास्थापयेद्द्विज ॥  
तदभावे तु धर्मज्ञकां च नेवावरासने । सर्वौषधैः सर्वगंधैर्बीजैः पुष्टपैः फलैस्ततः ॥ पंच  
गव्ये न रत्नैश्च पताकाभिश्च भार्गव । स्थालीपाकेन धातारं पूजयेत्तदनंतरं ॥ स  
प्ताहं चात्र कर्तव्यं तथा ब्राह्मणभोजनं । भद्रासने निवेशयेत्तं मृद्धिर्मूलैः फलैस्तथा ॥  
सर्वौषधैः सर्वगंधैः सर्वबीजैस्तथैव च । स्नापयेत्पूजयेच्च अत्र वह्निं सोमं समीरणं ॥  
पर्वतांश्च तथा ख्यातां तद्देवदेवं च केशवं । सतेयामेव जुहुयाद्ब्रतमंगनीयथाविधि ॥  
ब्राह्मणानां तु दातव्या ततः संपूजयेदक्षिणा ( ब्रह्मयामले ) प्रथमं दंतनिर्मूर्तिरुर्ध्वं वा  
लस्य चेद्भवेत् ॥ क्लेशाय मातुलस्ये हतदा प्रोक्ता मनीषिभिः ॥ सौवर्गा राजतं वा पि  
ताम्रं कांस्यमयं तु वा । दध्योदनेन संपूर्णा पात्रं दद्याच्छिशोः करे ॥ समं भाजनं दत्त्वा  
सपत्न्येन मातुलः शिशुं ॥ सालंकारं सवस्त्रं च शिशुमालिङ्ग्य सादरं ( तत्र मंत्रः ) रक्ष  
मां भार्गवनेयत्वं रक्ष मे सकलं कुलं ॥ गृहीत्वा भाजनं सान्नं प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ निर्विघ्नं  
कुसकल्याणं निर्विघ्नां च स्वमातरं । मय्यात्मानमधिस्याप्य चिरं जीव मया सह ॥  
सर्वं कृते विधाने तु विघ्नः कोपिन जायत इति ( अथ त्रिकशान्तिः शान्तिः सर्वस्वे ) सुतत्र  
ये सुता चेत्स्यात्तत्त्रये वा सुतो यदि । मातापित्रोः कुलस्यापि तदानिष्टं महद्भवेत् ॥ ज्ये  
ष्ठनाशोधने हानिर्दुःखं वा सुसहद्भवेत् । तत्र शान्तिं प्रकुर्वीत वित्तशाय विवर्जितः ॥ जा  
तस्यैकादशाहेवाद्वादशाहे शुभे दिने । आचार्यमृत्विजो वृत्त्वा ग्रहयज्ञपुरःसरं ॥  
ब्रह्मविष्णुमहेशं प्रतिमाः स्वर्गातः कृताः । पूजयेद्धान्यराशिस्थं कलशोपरि  
शक्तिः ॥ पंचमे कलशे रुद्रं पूजयेद्भद्रसंख्यया । रुद्रसूक्तानि च त्वारि शान्तिसू



क्तानिसर्वशः ॥ द्विजस्रकोजपेक्षोमकालेशुचिसमाहितः । आचार्योजुहुयात्तत्र  
 समिदाज्यतिलांश्चरुं ॥ अष्टोत्तरसहस्रंवाशतंवाविशतंतुवा । देवताभ्यश्चतुर्व  
 क्रादिभ्योगृहपुरःसरं ॥ ब्रह्मादिमन्त्रैरिंद्रस्यतइंद्रभयामहे । ततःस्विष्टकृतंहत्वा  
 बलिंपूर्णाहुतिततः ॥ अभियेकंकुटुंबस्यकृत्वाचार्यप्रपूजयेत् । हिरण्यधेनुरे का  
 चकर्त्वात्वजांसिणाततः ॥ आज्यस्यवीक्षणांकृत्वाशांतिपाठंतुकारयेत् । प्रति  
 मांगुरवेदत्वाउपस्कारसमन्वितः ॥ ब्राह्मणानभोजयेच्छकत्यादीनानाथांश्चत  
 र्ययेत् । एवंशांतिविधानेनसर्वारिषंप्रलीयतइति ॥ अन्येषुमूलाद्यृक्षेषुशांत्यादि  
 प्रयोगपारिजातेमत्कृतेशांतिरत्नेचज्ञेयं ( मिताक्षरायांमाकंडेयः ) रक्षणीया  
 तथाग्रयोनिशातत्रविशेषतः ॥ रात्रौजागरणांकार्यजन्मदानांतथाबलिः ॥ पुरु  
 षाःशस्त्रहस्ताश्चनृत्यगीतैश्चध्यायितः । रात्रौजागरणंकुर्युर्दशम्यांचैवसतके ॥  
 ( व्यासः ) सतिकावासनिलयाजन्मदानासदेवताः । तासांयागनिमित्तंतुशुद्धिर्ज  
 न्मनिकीर्तिता ॥ प्रथमेदिवसेषष्टेदशमेचैवसर्वदा ॥ त्रिष्टवेतेयुनकुर्वीतसतकंपुत्र  
 जन्मनि ( अपरार्कब्राह्मे ) कन्याश्चतस्रोराकाद्यावातदनीचैवपंचमी । क्रीडनार्था  
 चबालानांयष्टीचशिशुरक्षणी ॥ खड्गेतुपूजनीयावैवैश्यैर्वैत्यैर्द्विजातिभिः ॥  
 राकानुमतिःसिनीवालीकुहरितिचतस्रःकन्याइत्यर्थः ॥ अथदत्तकपरिश्रहवि  
 धिः ( पारिजातेशौनकः ) अपुत्रोमृतपुत्रोवापुत्रार्थसमुपोऽयच । वाससीकुंडले  
 दत्त्वाउष्णीषंचांगुलीयकं ॥ बंधूनन्नेनसंभोज्यब्राह्मणांश्चविशेषतः । अन्वा  
 धानादियत्तत्रकृत्वाज्योत्पवनांतकं ॥ दातुःसमसंगत्वातुपुत्रदेहीतियाचयेत् । दाने  
 समर्थोदातास्मैयेयज्ञेनेतिपंचभिः ॥ देवस्यत्वेतिमंत्रेणाहस्ताभ्यांपरिगृह्यच । अंगा  
 दीत्यृचंचजप्त्वाआघ्रायशिशुमूर्धनि ॥ गृहमध्येतमावायचरुंहत्वाविधानतः ॥  
 यस्त्वाहदात्यृचाचैवतुभ्यमग्रहचैकया ॥ सोमोदददित्येताभिःप्रत्यृचंपंचभिस्त  
 या ॥ स्विष्टकृदादिहेमंचकृत्वाशेषंसमापयेत् ॥ सच ॥ ब्राह्मणानांसपिंडेयुर्कर्त  
 व्यःपुत्रसंग्रहः ॥ तदभावेसपिंडोवाअन्यत्रतुनकारयेत् ॥ मिताक्षरादौतुव्याहति  
 भिराज्येनहोमउक्तः । सचहोमोत्तरंजलपूर्वकंदेयः ॥ नवाङ्मात्रेणा ॥ व्याहति  
 भिरुत्वाप्रतिगृह्णीयादितिविशिष्टोक्तेः मातापितावादद्यातांयमद्भिःपुत्रमापदि ॥

सदृशंप्रतिसंयुक्तंसंज्ञेयोदत्रिमःसुतइतिमनूक्तेः ( तत्रैववशिष्टः ) नत्वेवैकंपु  
 चंदद्यात्प्रति गृह्णीयाद्दानस्त्रीपुत्रंदद्यात् प्रतिगृह्णीयाद्वाअन्यवानुज्ञानाद्भर्तुरि  
 ति । इदंचभर्तृसत्त्वे अन्यथादद्यान्मातापितावायंसपुत्रोर्दत्रिमःस्मृतइतिवत्स  
 व्यासवचोविरोधःस्यात् ॥ दानंप्रतिग्रहोपलक्षणां ॥ यत्तु । समंवकहोमस्यपुत्रप्र  
 तिग्रहांगत्वात् ॥ व्याहृत्यादिसंव्रपाठेचस्त्रीशूद्रयोरनधिकारात् । तयोर्दत्तकपु  
 त्रोनभवत्येवेतिशुद्धविवेकेरुद्रधरेणोक्तं ॥ वाचस्पतिश्चैवमेवाह । तन्न । भर्तु  
 रनुज्ञयास्त्रियाअपिप्रतिग्रहोक्तेः । यद्यपिमेधातिथिनाभार्यात्ववददृष्टरूपंदत्त  
 कृत्वंहोमसाध्यमुक्तं । स्त्रियाप्रचहोमासंभवस्तथापिप्रतादिवद्विप्रद्वाराहोमादि  
 कारयेर्दत्तहरिनाथादयः । संबन्धतत्त्वेप्येवं । एवंशूद्रस्यापि ॥ स्त्रीशूद्राप्रचसध  
 र्माणांइतिस्मृतेः ॥ अतएवशूद्रकर्तृकहोमोविप्रद्वारैवपराशरेणोक्तः ॥ दक्षि  
 णार्थतुयोविप्रःशूद्रस्यजुहुयाद्विः । ब्राह्मणास्तुभवेच्छूद्रःशूद्रस्तुब्राह्मणोभवेत्  
 (अत्रमाधवाचार्यः)योविप्रःशूद्रदक्षिणामादायतदीयंहविःशांतिपृष्ट्यादिसिद्ध  
 येवैदिकैर्मन्त्रैर्जुहोतितास्यविप्रस्यैवदोषः ॥ शूद्रस्तुहोमफलंलभतैवेतिव्याचक्ष  
 ते ॥ दत्तकेविशेषः (कालिकापुराणो) पितुर्गोत्रेणायःपुत्रःसंस्कृतःपृथिवीपते ॥  
 आचूडांतंनपुत्रःसपुत्रतांयातिचान्यतः ॥ चूडोपायनसंस्कारानिजगोत्रेणवैकृताः  
 दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथादासउच्यते ॥ ऊर्ध्वतु पंचमाद्वर्षाच्चिदत्ताद्याः  
 सुतानृप । गृहीत्वापंचवर्षीयंपुत्रेष्टिप्रथमंचरेत् ॥ पंचमोर्ध्वस्त्वदानेच्छोरेवदा  
 नंनचान्यथा । विक्रयंचैवदानंचननेयाःस्युरनिच्छवः ॥ दाराःपुत्राप्रचसर्वस्वमा  
 त्मनैवतुयोजयेदितिहेमाद्रिमाधवधृतव्यासदक्षादिवचनात् ( यच्चयाज्ञवल्क्यः )  
 स्वकृतुंबविरोधेन देयंदारसुतादृतइति ॥ तदूर्ध्वस्त्वदानानिच्छुपुत्रपरस ॥ तेन  
 सर्वस्वदानेस्त्वदानेच्छुदारपुत्रदानंसिद्धम् ॥ यत्तु ॥ विश्वविदधिकरणांशुष्टे । तत्र  
 पुत्रादीनांज्ञातित्वेनस्वशब्दवाच्यत्वात्पुत्रत्वेनदानमाशंकानिराकृतम् ॥ जन्य  
 पुंस्त्वस्यदानेनानिष्ठपत्तेः । दासत्वेनदानंभवत्येव । तस्माद्यथेष्टविनियोगार्हत्वंस्व  
 त्वंभवत्येव । पुत्रेस्त्वत्वाभावंवदन्पुत्रक्रयविक्रयादिपुनःशेषविक्रयादिश्रौतलिं  
 गाद्दासक्रयविक्रयादिव्यवहारायोगात् ॥ सूर्वसव ॥ येनहिग्रभायारणाःशुशे



वान्बोदर्थो मनसामंतवा उडतिश्रुतौ दत्तकनिषेधः ॥ सोप्यौरसातिशयार्थः ॥ अ  
 न्यथाशुनः शेषादिप्रतिग्रहश्रौतलिंगविरोधापत्तेः । उपेयांतवपुत्रतामित्युक्तेः ॥  
 इदंचश्रौतलिंगस्वयंदत्तक्रीतपरं । नदत्तकपरं ॥ द्वादशविधपुत्रमध्ये दत्तात्मा तु  
 स्वयंदत्तः । क्रीतश्चताभ्यां विक्रीत इति याज्ञवल्क्येन तयोर्दत्तकाद्भेदोक्तेः ॥ तयो  
 र्चदत्तौ रसेतरेषां तु पुत्रत्वेन परिग्रह इति कलौ नियधात्तेन संस्कारोत्तरं स्वयंक्रीतो  
 न भवति ॥ तदुत्तरं ॥ दत्तकान भवत्येवेति सिद्धम् ॥ अथ यमलयोः संस्कारक्रमा  
 र्थं ज्येष्ठकनिष्ठभाव उच्यते ( मनुः ) पुत्रः कनिष्ठे ज्येष्ठ्यायां कनिष्ठ्यायां च पूर्वजः ॥  
 कथं तयोर्विभागः स्यादिति चेत् संशयो भवेत् ॥ सदृशः स्त्री प्रजातानां पुत्राणां मवि  
 शेषतः । न मातृतो ज्येष्ठ्यमस्ति जन्मतो ज्येष्ठ्यमुच्यते ॥ तेन कनिष्ठ्यायां पूर्वजात्  
 गवज्येष्ठो न ज्येष्ठ्यायां पश्चाज्जात इत्यर्थः ॥ स एव ग्राह्याधिकारी ॥ जन्मज्येष्ठेन  
 चाह्वा नं सुवत्सस्य स्तस्मिन् ॥ यमयोश्चैव गर्भे जन्मतो ज्येष्ठतामता ( देवलः )  
 यस्य जातस्य यमयोः पश्यंति प्रथमं मुखं ॥ संतानः पितरश्चैव तस्मिन् ज्येष्ठ्यं प्रति  
 स्थितम् ( भागवते तु ) दौतदा भवतो गर्भसूतिर्वैशविपर्ययादित्युक्तेः ॥ पश्चादुत्प  
 न्नस्य ज्येष्ठ्यमुक्तं ॥ अवदेशाचारतोच्यवस्था ॥ पूर्वमेव तु युक्तं गर्भाष्टम इत्यादौ  
 विशेषनिर्देशेणैव गर्भग्रहणानान्यत्र ॥ अन्यथा तद्वैयर्थ्यात् ( अथसूतिकास्नानं ॥  
 ज्योतिषे ) करेन्द्रभाग्यानि लवासवांत्यमैवेदवाश्चिद्रुवभेद्विपुंसां ॥ तिथावरिकते  
 शुभमासंति प्रसूतिकास्नानविधिमुनीन्द्राः ( अथनामकर्म ॥ मदनरत्ने वृहस्पतिः )  
 द्वादशे दशमेवापि जन्मतोपि त्रयोदशे ॥ योऽंशे विंशतौ चैव द्वाविंशे वर्णातः क्रमात्  
 ( याज्ञवल्क्यः ) अहन्येकादशेनाम ( हेमाद्रौ भविष्ये ) नामधेयं दशस्यांतु द्वादश्यां  
 मासिके च न । अष्टादशे हनितथावदं सन्ये मनीयिणाः ॥ दशस्यामतीतायामिति  
 ज्ञेयं । आशौचापगमेनामधेयमिति विष्णुक्तेः ( गृह्यपरिशिष्टेपि ) जननादश  
 रात्रे व्युष्टे शतरात्रे संवत्सरेवानासकरां ॥ व्युष्टेतीते ( ज्योतिर्निबन्धे गार्गः )  
 अमासं कालं विष्ट्यादौ प्राप्तकालेपि नाचरेत् ( श्रीधरः ) सिद्धादित्यमघोत्तरा  
 रात्रिभिरावातीति नित्याच्युत्प्राजेशाश्च शशांकपौष्णादिनक्षत्रपुष्टयेयुराशौ स्थि  
 रे ॥ किदापंचदशीं विहाय नवमीं शुद्धेष्टमे भार्गवज्ञाचार्यामृतपादभाषादिवसेनामा

निकुर्याच्छिः (मनुः) शर्मातं ब्राह्मणस्य स्याद्वर्मातं क्षत्रियस्य तु । वैश्यस्य धनं सं  
युक्तं शूद्रस्य प्रेष्ठयसंयुतं (मदनरत्नेनारदीये) सूतक्रांतेनामकर्मविधेयं स्वकुलोचि  
तं । नामपूर्वतुमासस्य मंगलं घुसमाक्षरैः (तत्रैव गार्ग्यः) मासनामगुरोर्नामदद्याद्बाल  
स्य वैपिता (स्मृतिसंग्रहे) कृष्णो नंतोच्युत्प्रचक्रो वैकुण्ठेयजनाहृतः । उपेन्द्रो यज्ञपु  
रुषो वासुदेवस्तथा हरिः ॥ योगीशः पुंडरीकाक्षो मासनामान् ग्रनुक्रमात् ॥ अत्र  
मार्गशीर्षादिप्रचैत्रादिर्वाक्रम इति (मदनरत्ने) तन्मासनामप्रथमं दद्यात्संबुध्य चैव  
हि । देवालयगजाश्चानां वृक्षाणां वापि कूपयोः ॥ सर्वापणानां पुण्यानां चिह्नार्थं  
योषितां नृणां । काव्यानां च कवीनां च पञ्चादीनां च सर्वशः ॥ राजप्रासादवास्तु  
नां नामकर्मविशिष्यते ॥ नाक्षत्रमपि नामकार्यं ॥ अभिवादीयं च समीक्षेत तन्मा  
तापितरौ विद्यातामोपनयनादित्याश्च लायनोक्तेः ॥ कुलदेवतानक्षत्रसंबद्धं पिताना  
मकुर्यादिति मदनरत्ने शंखोक्तेः तच्च नक्षत्रपादाक्षराद्याक्षरं कुर्यादित्युक्तं परिशि  
ष्टे । तदक्षरादिकं नामयस्मिन् विद्यते यदाक्षरमिति (सुदर्शनभाटयेतु) रोरैमनृज्ये वि  
युवृद्धिरादौ ढांत्ये च वांते श्रवणाश्च युसु ॥ शेषे युनाम्बोः कपरः स्वरौ त्यः स्वाप्वारदी  
र्घः सविर्ग इष्टः ॥ इत्युक्तं ढांत्येति प्रोक्तं प्रदेत्यत्रादौ ढात्परे च वृद्धिः प्रौषपाद इति ॥  
अंयमपभरणीशब्दः श्रुतावुक्तः ॥ तत्र श्रवणादौ च वादिवृद्धिः । अपभरणा आपभ  
रणा इत्यादि (मदनरत्ने वशिष्ठः) जन्माहेद्वादशाहेवादशाहेवा विशेषतः । उत्तरा  
रेवती हस्तमूलपुष्यासवारुणाः ॥ श्रवणादिति मैत्रं च स्वाती मृगशिरस्तथा ॥ प्रा  
जापत्यं धनिष्ठा च प्रशस्तानामकर्मणि (अथ दोलारोहः ॥ पारिजाते बृहस्पतिः)  
दोलारोहस्तु कर्तव्यो दशमे द्वादशेऽपि वा । षोडशे दिवसे वापि द्वाविंशे दिवसेऽपि वा  
(उग्रोतिर्निबन्धे) करत्रये वैष्णवे वती युदिति द्वये वाश्चि नक्षत्रेषु ॥ कुर्याच्छिः  
नानृपते च तद्वदं दोलनं वै सुखिनो भवति (तत्रैव) आंदोलाशयने पंसोद्वादशो दि  
वसः शुभः । त्रयोदशस्तुकन्यायाननक्षत्रविचारणा ॥ अत्रास्मिन् दिवसे चेत्स्या  
त्तिर्यगास्ये प्रशस्यते (अथ दुग्धपानम् ॥ नृसिंहः) एकत्रिंशद्दिने चैव पयःशंखेन  
पाययेत् । अन्नप्राशननक्षत्रे दिवसोदयरात्रियु (अथ कर्मावेधः मदनरत्ने वशिष्ठ  
ग्रीधरौ) मासेषु सप्तमे वाष्टमे वा वेधौ कर्णोद्वादशे षोडशे हि ॥ मध्येनाह्नः पूर्व



भागेनरात्रौ नक्षत्रेद्वेद्वेतिथीवर्जयित्वा ॥ अत्रजन्ममासोवर्ज्यः (ज्योतिर्निबन्धे  
 गर्गः) मासेयसप्तमेवाप्यष्टमेमासिबत्सरे । कर्णावेधंप्रशंसंति पुष्ट्यायुःश्रीवि  
 वृद्धये(मदनरत्ने)प्रथमेसप्तमेमासिअष्टमेदशमेथवा द्वादशेचतथाकुर्यात्कर्णावेधंशु  
 भावहं (हेमाद्रौव्यासः) कार्तिकेपौयमासेवाचैवेवाफाल्गुनेपिवा । कर्णावेधं  
 प्रशंसंतिशुक्लपक्षे शुभेदिने (श्रीधरः) हरिहयकरचित्रासौम्यपौषाशोत्तरार्यादि  
 तिवसुधुघटालीसिंहवर्ज्यसुलगने । शशिशुक्रबुधकाव्यानांदिनेपर्वरिक्तारहितति  
 थियुशुद्धेनैधनेकर्णावेधः(मदनरत्नेबृहस्पतिः) द्वितीयादशमीयष्टीसप्तमीचत्रयो  
 दशी । द्वादशीपंचमीशस्तातृतीयाकर्णावेधने । सौवर्गारिजपत्रस्थराजतीविप्र  
 वैश्ययोः । शूद्रस्यचायसीसूचीमध्यमाष्टांगुलात्मिका (हेमाद्रौदैवलः) कर्णारधे  
 रवेप्रह्वायानांविशेदग्रजन्मनःतद्दृष्ट्वाविलयंयांतिपुरायाधौश्चपुरातनाः(शंखः)  
 अंगुष्ठमात्रसुषिरौकर्णौनभवतोयदि । तस्मैश्राद्धंनदातव्यंदत्तंचेदाहुरंभवेत् (अथ  
 तांबूलभक्षणां ॥ चंडेश्वरः) सार्धमासद्वयेदद्यात्तांबूलंप्रथमंशिशोः ॥ कर्पूरादिक  
 संमिश्रंविलासायहितायच । मूलार्कचित्रकरतिथ्यहरींद्रभेषुपौष्णोतथासृगाशि  
 रोदितिवासवेसु । अर्केन्दुजीवभृगुबोधनवासरेयुतांबूलभक्षणाविधिर्मुनिभिःप्रदि  
 ष्टः (अथनिष्ठक्रमगां ॥ ज्योतिर्निबन्धे) तृतीयेवाचतुर्थवामासिनिष्ठक्रमगांभवेत्  
 (यमः) ततस्तृतीयेकर्तव्यंमासिसूर्यस्यदर्शनं । चतुर्थमासिकर्तव्यंशिशोप्रचंद्र  
 स्यदर्शनं । अत्रसूर्येदोःकर्मणीयेचतयोःश्राद्धंनविद्यतइतिछंदोगपरिशिष्टातृ  
 दोगानांनिष्ठक्रमगोवृद्धिश्राद्धंनस्तीतिकल्पतरुः(व्यासः)मैत्रेपुष्यपुनर्वसुप्रथमभे  
 पौष्णानुकूलेविधौहस्तेचैवसुरेश्वरेचमृगभेतारासुशस्तासुच ॥ कुर्यान्निष्ठक्रमगांशि  
 शोबुधगुरौशुक्रेविरिक्तेतिथौ कन्याकुंभतुलाशृगारिभवनेसौम्यग्रहालोकिते  
 (मदनरत्ने)अन्नप्राशनकालेवाकुर्यान्निष्ठक्रमगाक्रियां(विष्णुधर्म)दिगीशानांदि  
 नेतत्रतथाचंद्रार्कयोर्द्विजैः पूजनंवासुदेवस्यगगनस्यचकारयेत् । बहिर्निष्कासये  
 द्दगेहातृशंखपुरायाहनिःस्वनैःचंद्रार्कयोर्दिगीशानांदिशांचगगनस्यच ॥ निक्षेपा  
 र्थमिसंदाद्यतेमेरुसंतुल्वदा ॥ अप्रमत्तंप्रमत्तंवा दिवारात्रमथापिवा ॥ रसंतुसत  
 तंसर्वे देवाःशक्रपुरोगमाः( साधवीयेमार्कंडेयः ) अग्रतोयप्रविन्यस्याशिल्पभां

डानिसर्वशः । शस्त्राणिचैववस्त्राणि ततः प्रयेत्तु लक्षणां ॥ प्रथमं यत्स्पृशेद्दालस्त  
तोभाण्डं स्वयंतदा ॥ जीविका तस्य बालस्य तेनैव तु भविष्यतीति ( अथोपवेशनं  
प्रयोगपारिजाते पात्रे विष्णुधर्मैव ) पंचमे च तथा मासि भूमौ तमुपवेशयेत् । त  
त्र सर्वे ग्रहाः शस्ता भौमोऽप्यत्र विशेषतः ॥ उत्तरात्रितयं सौम्यपुष्टयर्क्षशक्रदैवतं । प्रा  
जापत्यं च हस्तप्रचशस्तमार्चिश्च नमिबभं ॥ वाराहं पूजयेद्देवं पृथिवीं च तथा द्विजं ॥ र  
क्षेनं वसुधेदे विसदा सर्वगतं शुभे ॥ आयुः प्रमारां सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये । अचि  
रादायुश्च स्त्रस्य ये केचित्परिपंथिनः ॥ जीवितारोग्यवित्तेषु निर्दहस्वाचिरे  
रातानां वरेण शेषभूतानां माता त्वमसि कामधुक ॥ अजरा चाप्रमेया च सर्वभूतनम  
स्कृता ॥ चराचराणां भूतानां प्रतिष्ठानां व्ययाह्यसि ॥ कुमारं पाहि मातस्त्वं ब्रह्मा  
तदनुमन्यतां ( अथाक्षप्राशनं ॥ पारिजाते नारदः ) जन्मतो मासि यद्येस्यात्सौरेणा  
क्षप्राशनं परं । तदभावेष्टमे मासि नवमे दशमेऽपि वा ॥ द्वादशे वापि कुर्वीत प्रथमाक्षप्रा  
शनं परं । संवत्सरे वा संपूर्णं केचिदिच्छंति परिणताः ( मदनरत्ने लौगाक्षिः ) यद्येक्षप्रा  
शनं जाते युदंतेषु वेति ( शंखः ) संवत्सरे च प्राशनमर्द्धसंवत्सरे वेति ( ज्योतिर्निबन्धे  
नारदः ) यद्येक्षप्राशनं मासि पंचमांस्त्रीणां तु पंचमे । सप्तमे मासि वा कार्यं नवाक्षप्राश  
नं शुभं ॥ रिक्तां दिनस्य नंदं द्वादशी मष्टमी ममां ॥ त्यक्त्वान्यतिथयः प्रोक्ताः सित  
जीवन्तवासराः । चंद्रवारं प्रशंसंति कृष्णो चांत्यधिकं विना ( श्रीधरः ) आदित्यति  
थ्यवसुसौम्यकरानिलाश्चित्राजविष्णुवरुणा उत्तरपौष्णमित्राः । बालाक्षभोज  
नविधौ दशमे विष्णुश्छिद्रां विहाय नवमीतिथयः शुभाः स्युः ( वशिष्ठः ) बालाक्षभु  
क्तौ व्रतबंधने च राजाभियेके खलु जन्मधिदराये । शुभं त्वनिष्ठं सततं विवाहे सीमंतया  
त्रादियुसंगलेषु ( मार्कंडेयविष्णुधर्मयोः ) ब्रह्मराणंशंकरं विष्णुचंद्रार्कोचदिगीश्च  
रात् । भुवं दिशश्च संपूज्य हुत्वा बह्वीतया चरुं ॥ देवतापुरतस्तस्य धाव्युत्संगगत  
स्य च । अलंकृतस्य दातव्यमन्नं पात्रे सकांचनं ॥ सध्वाज्यदधिसंयुक्तं प्राशयेत्पाय  
संतु वेति ( अथाक्षदपतिः ॥ व्यवहारनिर्णये ) नवांबरधरो भूत्या पूजयेच्च चिरा  
युषं । मार्कंडेयं नरो भक्त्या पूजयेत्प्रयतस्तथा ॥ ततो दीर्घायुषं व्यासं रामंद्रौ  
णां कृष्णं वलिं । प्रह्लादं च हनूमंतं विभीषणमथार्चयेत् ॥ स्वनक्षत्रं जन्मतिथिं प्रा



प्यसंपूजयेन्नरः । यथैचदधिभक्तेन वर्षवर्षेषु पुनः पुनः ॥ तिथितत्त्वे गतज्ञानम  
 भिस्तिलहोमोप्युक्तः ( आदित्यपुराणो ) सर्वेष्वचजन्मदिवसेस्नातैर्मङ्गलवारि  
 भिः । गुरुदेवाग्निविप्राश्चपूजनीयाः प्रयत्नतः ॥ स्वनक्षत्रंचपितरौ तथा देवः प्र  
 जापतिः । प्रतिसंवत्सरं यत्नात्कर्तव्यप्रचमहोत्सवः ( कृत्यचिंतामणौ ) गुडदुग्ध  
 तिलान्नदद्याद्वस्ते ग्रंथौ च बन्धयेत् । गुरुगुलं निंबसिद्धार्थदूर्वागोरोचनादिकं ॥  
 संपूज्य भानुविघ्ने शौमहर्षीन् प्रार्थयेद्दिदं । चिरं जीवीयथा त्वं भो भविष्यामि तथा मु  
 ने ॥ सूपवान्वित्तवांश्चैव श्रिया युक्तप्रच सर्वदा । मार्कंडेयनमस्तेस्तु सप्तकल्पांत  
 जीवन ॥ आयुरारोग्यसिद्धयर्थं प्रसीद भगवन्मुने । चिरं जीवीयथा त्वं तु मुनीनां प्र  
 वरद्विज ॥ कुरुत्वमुनिशार्दूलतथासांचिरजीविनं ॥ मार्कंडेयमहाभागसप्तकल्पां  
 तजीवन ॥ आयुरारोग्यसिद्धयर्थं मस्माकं वरदो भव । सतिलंगुडसंमिश्रमंजल्यर्ध  
 मितंपयः ॥ मार्कंडेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धयेदिति पयः पिबेत् ( तिथितत्त्वे  
 स्कांदे ) खंडनं न खके गानां मैथुनाद्वगमौ तथा । आमियं कलहं हिंसां वर्यवृद्धौ वि  
 वर्जयेत् ( तत्रैव दीपिकायां ) कृतांतकुजयोर्वारिण्यस्य जन्मतिथिर्भवेत् । अनृक्षथो  
 गसंप्राप्तौ विघ्नस्तस्य पदे पदे ॥ कृतांतः शनिः ॥ तस्य सर्वोयधिसंज्ञानं गुरुदेवाग्नि  
 पूजनं ( वृद्धमनुः ) मृतेजन्मनिसंक्रांतौ श्राद्धेजन्मदिने तथा । अस्पृश्यस्पर्शने  
 चैव न स्नायादुष्णावारिणा ॥ अवजन्मतिथिरौदयिकी ग्राह्या ॥ युगाद्यावर्षवृद्धि  
 प्रचसप्तमी पार्वती प्रिया । रवेरुदयमीक्षंते न तत्र तिथियुग्मतेति कृत्यतत्त्वार्णवेव च  
 नात् ॥ विशेषो मत्कृतशूद्रधर्मज्ञेयः ( अथ कदिसुत्रं ॥ प्रयोगपारिजाते ब्राह्मे ) प्र  
 तिसंवत्सरांतर्षे वक्ष्ये नृणां विधिं परं ॥ दत्वा गोर्भूहि ररायादितथा स्वर्गादिनिर्मि  
 तं ॥ बध्नीयात्कटिसूत्रंचवासः संगृह्य नूतनं । दूर्वाकुरैरथाज्येन च रुणावापि ना  
 विनं । आयुष्यहोमं कृत्वा च तर्पयेत्पितृदेवताः ( अथ चौलं ॥ प्रयोगपारिजाते  
 यडगुरुशिष्यः ) जाताधिकाराज्जन्मादितृतीये वदेत चौलकं । आद्ये वदे कुर्वते  
 केचित्पंचमे वदे द्वितीयके ॥ उपनीत्यासहैवेति विकल्पाः कुलधर्मतः ( बृहस्प  
 तिः ) तृतीये वदेशि शोर्गभिज्जन्मतो वा विशेषतः । पंचमे सप्तमे वापि स्त्रियापुं  
 सोऽपि वासमं ( तत्रैव नारदः ) जन्मतस्तु तृतीये वदे श्रेष्ठमिच्छंति पंडिताः ॥ पंचमे

सप्तमेवापि जन्मतो मध्यमं भवेत् ॥ अथ संगर्वत स्यात्तु न वसैकादशेऽपि वेति (पारिजा  
ते बृहस्पतिः) उत्तरायणाग्रेसुर्ये विशेषात्सौम्यगोलके ॥ शुक्लपक्षे शुभं प्रोक्तं कृष्ण  
पक्षे शुभेतरत् ॥ अशुभान्यत्रिभागः स्यात्कृष्णपक्षे त्रिधा कृते (तत्रैव वशिष्ठः) द्वित्रिपं  
चमसप्तम्यामेकादश्यांतथैव च । दशम्यांचत्रयोदश्यां कार्यं सौरं विजानता (नृसिं  
होये) यद्यद्यमीचतुर्थी च नवमी च चतुर्दशी । द्वादशी दर्शपूर्णाद्वे प्रतिपच्चैव निदि  
ताः (वशिष्ठः) रवेरंगारकस्यैव सूर्यपुत्रस्य चैव हि । निदिता दिवसाः सौरशेषाः का  
र्यकराः स्मृताः (उज्योतिर्निबन्धे बृहस्पतिः) पापग्रहाणां वारादौ विप्राणां शुभदं रवौ  
क्षत्रियाणां तमासूनौ विदूषाणां शनौ शुभं ॥ हस्ताश्वि विष्णु पौष्णाश्च अविष्ठा  
दित्यपुष्यभं । सौम्यचित्रे न वक्षोरुत्तमानवतारकाः ॥ त्रीरायुत्तराणि वायव्यं रो  
हिणी वासुकांतथा । सौरेश्वरामध्यमाः प्रोक्ताः शेषा द्वादशगर्हिताः ॥ निधने जन्म  
नक्षत्रे वैनाशे चंद्रमेष्टमे । विपत्करे वधे सौरं प्रत्यरे च विवर्जयेत् ॥ अवलरनशुद्धिरन्ये  
च योगा उज्योतिर्विज्ञो ज्ञेयाः । अन्ये च विशेषः प्रमश्रु कर्म निर्णये वक्ष्यते ॥ एतच्च  
शिरोमार्तरिगर्भिरायां न कार्यम् (तदाह उज्योतिर्निबन्धे मदनरत्ने च वृद्धगार्ग्यः) पुत्र  
चूडाकृतौ माता यदि सा गर्भिणी भवेत् । शस्त्रेण मृत्युमाप्नोति तस्मात्सौरं विवर्ज  
येत् ॥ अस्यापवादमाह तत्रैव नारदः ॥ सूनोर्मार्तरिगर्भिरायां चूडाकर्म न कारयेत्  
(पंचाब्दात् प्रागथोर्ध्वन्तु गर्भिरायां अपि कारयेत् ॥ यदि गर्भविपत्तिः स्याच्छिशो  
र्वामिरगो यदि सहोपनीत्या कुर्याच्चेत्तदा दोषो न विद्यते (बृहस्पतिः) गर्भिरायां मात  
रिशिशोः सौरकर्म न कारयेत् । व्रताभियेकेष्वेवं स्यात्कालो वेदव्रते ऽर्वापि ॥ अभि  
षेकः समावर्तनं ॥ गर्भिरायां अपि पंचमासपर्यंतं न दोष इत्युक्तं (मुहूर्तदीपिकायां ग  
र्गः) पंचमासादूर्ध्वमातुर्गर्भस्य जायते मृत्युरिति (मदनरत्ने बृहस्पतिः) पुत्रचू  
डाकृतौ माता गर्भिणी यदि वा भवेत् । विपद्यते गुरुस्तत्र दंपती शिशुरद्भुतः ॥ गर्भमा  
तुः कुमारस्य न कुर्याच्चौलकर्म तु ॥ पंचमासादधः कुर्यादित ऊर्ध्वं न कारयेत् (गर्गः)  
ज्वरस्योत्पादनं यस्य लग्नं तस्य न कारयेत् । दोषनिर्गमनात् प्रचात्स्वस्थो धर्मस  
माचरेत् ॥ लग्नमिति संगलोपलक्षणात् (उज्योतिर्गर्गः) विवाहोत्सवयज्ञेषु मा  
ता यदि रजस्वला । तदा मृत्युमाप्नोति पंचमं दिवसं विना (वशिष्ठः) यस्य मां



लिकं कार्यं तस्य मातारजस्वला । अर्धतदेव ( तत्रैव बृहस्पतिः ) प्राप्तमभ्युदयया  
 द्वंपुत्रसंस्कारकर्मणि । पत्नीरजस्वला चेत्स्यान्न कुर्यात्तत्प्रितातदा ॥ पितृतिक्त  
 तृमात्रोपलक्षणां ( संकटे तु वाक्यसारे उक्तं ) अलाभे ह्यमुहूर्तस्य रजोदोषे ह्युप  
 स्थिते । अग्रं संप्रयय विधिवत्ततो संगलमाचरेत् ॥ एतच्च मंडनोत्तरं न कार्यं ॥ नमं  
 डनाच्चापि हि मंडनं च गोत्रैकतायां यदि नादभेद इति सदनरत्ने वशिष्टोक्तेः ( तत्रैव  
 कात्यायनः ) कुले ऋतुत्रयादर्वाङ् मण्डनान्न तु मंडनं ॥ प्रवेशान्निर्गमोनेष्टो न कुर्या  
 न्मंगलत्रयम् ( तथा वृद्धमनुः ) एकमातृजयोरेकवत्सरेणैकस्त्रियोः । न सम  
 नक्रियां कुर्यान्मातृभेदे विधीयते ( आशौचे तु संग्रहे ) संकटे समनुप्राप्ते सतके स  
 मुपागते । कूष्मांडाभिर्घृतं हुत्वा गां च दद्यात्पयस्विनीं ॥ चूडोपनयनोद्वाह  
 प्रतिष्ठादिकमाचरेदिति ( ज्योतिर्निबन्धे ) यद्येवमेवोडशे वर्ये विवाहान्देतथैव  
 च । अंतर्वत्न्यां च जायायानेव्यते मंडनं क्वचित् ॥ अन्योपि विशेषो विवाहप्र  
 करणो वक्ष्यते ( दीपिकायां ) न चूडाजन्मभागे न्येदारुणो युगलौकुजे ॥ प्रतिपद्म  
 द्वां रिक्ता सुविद्यारंभस्तु पंचमे ( प्रयोगरत्ने ) मध्ये शिरसि चूडास्याद्वा शिष्यानां तु द  
 क्षिणो । उभयोः प्राग्द्वयोरत्रिकशयपानां शिखा मता ॥ साधवीयेष्वेवं ॥ आपस्तं  
 वस्त्वाह ॥ तूष्णीं केशान् विनीय यथार्थं शिखानि दधाति ॥ यथार्थं प्रवरसंख्यया  
 तासां मध्यं शिखावर्जमुपनयने वपनं कार्यं ॥ प्रतिदिशं प्रवपतीत्युपनयने तेनैवोक्तेः  
 रिक्तो वा स्योनर्पि हितो यन्मंडस्तस्मै तदपि धानं यच्छिखेति श्रुतेः ॥ विशिखो  
 व्युपवीतप्रचयत्करोति न सत्कृतमिति नियेधाच्च । सवेतुवचनात्स शिखं वपनमि  
 ति मुदर्शनभाष्ये उक्तं ( यत्तु ) कुमारविशिखा इवेति लिंगं तच्छंदो गपरं ( अपरार्के  
 सदनरत्ने च लौगाक्षिः ) दक्षिणातः कमुंजां विशिखानामुभयतो त्रिकशयपानां मुंडाभृ  
 गवः । पंचचूडा अंगिरसो वाजिमेके । संगलार्थं शिखिनोऽन्ये यथा कुलधर्मवेति ।  
 कमुंजा शिखा । वाजिः केशपक्तिः ( स्मृतिदर्पणो ) एका शिखा दक्षिणातो वशि  
 ष्ठा गोत्रस्य पंचांगिरसो भृगोस्तु ॥ नैका शिखा कश्यपगोत्रजानां शिखो भयत्रापि  
 यथा कुलच । एतच्छ्रुत्वा तिरिक्तविश्रयं शूद्रस्यानियताः केशवेया इति वशिष्टोक्तेः ।  
 ( यत्तु पात्रे न शिखीनोपवीतीत्यान्नोच्चरेत्संस्कृतांगिरमिति शूद्रमुपक्रम्योक्तं

तदसच्छूद्रस्येतिकेचित् ॥ विकल्पइतितुयुक्तं ( अतएवहारीतः ) स्त्रीशूद्रौतुशि  
 खांकित्वाक्रोधाद्वैराग्यतोपिवा । प्राजापत्यंप्रकुर्यात्तानिष्ठकृतिनान्यथाभवेत् ॥  
 एतत्परिग्रहपक्षे ॥ अवदेशभेदाद्व्यवस्थेतदिकु ( उद्योतिर्निबन्धे ) नर्मदोत्तरदेशे  
 तुसिंहस्थेदेवमंत्रिणा ॥ शुभकर्मनकुर्वीतनियेधोनास्तिदक्षिणो ( अवभोजनेप्रा  
 यश्चित्तमुक्तंपराशरमाधवीये ) निवृत्तेचूडहोमेतुप्राङ् नामकरणात्तथा । चरे  
 त्सांतपनभुक्ताजातकर्मणिचैवहि । अतोऽन्येषुसंस्कारेषूपवासेनशुद्ध्यति । एते  
 संस्काराः स्त्रीणामसंव्रकाः कार्याः । होमस्तुसंव्रकइतिप्रयोगपारिजाते ( आ  
 प्रवलायनेपि ) होमकृत्यंतुपुंवत्स्यात्स्त्रीणांचूडाकृतावपीति ( मनुरपि ) असंव्रका  
 तुकार्येयंस्त्रीणामावृ दशेषतइति । होमोऽप्यसंव्रकइत्येकेसंस्काराः । स्त्रीणामहो  
 मकास्तूष्णास्थुरितिस्मृत्यर्थसारेहोमोनेतिवृत्तिस्त ( अथविद्यारंभःमदनरत्ने  
 नृसिंहः ) अक्षरस्वीकृतिकुर्यात्प्राप्तेपंचमहायने । उत्तरायणागौर्येकुंभमासंविब  
 र्जयेत् ( दीपिकायां ) वर्षेपर्जन्यकेकालेऽष्टींरिक्तांशनिंकुजं । अनध्यायान्विना  
 नत्वादेवग्रन्थकृतंशुं ( श्रीधरः ) हस्तादित्यसमीरमित्रपुरुजित्तपौष्णाश्विचित्रा  
 च्युतेठ्वारावर्षादिनोदयादिरहितेराशौस्थिरेचोभये ॥ पक्षेपरानिशाकरेप्र  
 तिपदंरिक्तांविहायाष्टमींषष्ठीमष्टमशुद्धभाजिभवनेप्रोक्ताक्षरस्वीकृतिः ( विष्णुध  
 र्मात्तरे ) पूजयित्वाहरिलक्ष्मींतथादेवींसरस्वतीं । स्वविद्यासंस्कारांश्चस्वांवि  
 द्यांचविशेषतः ॥ एतेग्रामेवदेवानांनाम्नातुजुहुयाद्वृतम् । दक्षिणाभिर्द्विजेंद्राणां  
 कर्तव्यंचात्रपूजनमितिअथधनुर्विद्यादीपिकायां ) अदितिगुरुयमार्कस्त्रातिचि  
 त्वाग्निपिण्डध्रुवहरिवसुमूलेठिवंदुभागांत्यभेषु । शनिशशिनुध्वारेविष्णुबोधे  
 पिपौयेसुसमयतिथियोगेचापविद्याप्रदानं ॥ अथानुपनीतस्यविशेषः ( गौतमः )  
 प्राणप्रनयनात्कामचारवादभक्षाइति । भक्षणांलगुनादेरपीतिहरदत्तः ( अपरा  
 र्कवृद्धशातातपः ) शिशोरभ्युत्थानं प्रोक्तं बालस्याचमनंस्मृतं । रजस्वतादिसंस्प  
 र्शस्नानमेवकुमारके । प्राक्चूडाकरणादबालः प्रागन्नप्राशनाच्छिशुः । कुमारक  
 स्तुविज्ञेयोयावन्मौजीनिबन्धनं ( आपस्तंबोपि ) अन्नप्राशनात्प्रयतोभवत्यासं  
 वत्सरादित्येकेइति ॥ गौतमोपि ॥ नतदुपस्पर्शनादाशौचम् । तस्यानुपनीतस्य



चंडालादिस्पृष्टस्यापिस्पर्शान्नज्ञानं । इदंचयस्यवर्षात्प्राक्ऊर्ध्वतुस्नानंभवत्येव  
 बालस्यपंचमाद्वर्षाद्रिक्षार्थशौचमाचरेदितिस्मृतेः ॥ कामचारादिकेप्येवं । ऊ  
 नैकादशवर्षस्यपंचवर्षात्परस्यच । चरेद्गुरुःसुहृच्चैवप्रायश्चित्तंविशुद्धये ॥  
 अतोबालतरस्यास्यनापराधोनपातकमितिस्मृतेरितिहरदत्तः । स्मृत्यर्थसारेप्ये  
 वं ॥ अथोपनयनं ( आश्वलायनः ) गर्भाष्टमेष्टमेवाव्देपंचमेसप्तमेपिवा ॥ द्विजत्वं  
 प्राप्नुयाद्विप्रोवर्षेत्वेकादशेनृपः ( मनुः ) ब्रह्मवर्चसकामस्यकार्यविप्रस्यपंचमे ॥  
 राज्ञोबलार्थिनःषष्ठेऽश्वस्यार्थार्थिनोष्टमे ( विष्णुः ) षष्ठेतुधनकामस्यविद्याकाम  
 स्यसप्तमे । अष्टमेसर्वकामस्यनवमेकांतिसिद्धतः ॥ आपस्तंबः ॥ गर्भाष्टमेषुब्राह्म  
 णामुपनयति । बहुवचनंगर्भस्यगर्भसप्तमयोःप्राप्त्यर्थमितिमुदर्शनभाष्ये । केचि  
 तु विप्रस्यषष्ठंनमन्यन्ते ॥ आपस्तंबःअथकास्यानिसप्तमे ब्रह्मवर्चसकामसष्टम  
 आयुष्कामंनवमेतेजस्कामंदशमेऽन्नाद्यकाममेकादश इन्द्रियकामंद्वादशेषशुकाम  
 मुपनयेत् ( गौणाकालमाहमनुः ) आयोडशाद्ब्राह्मणस्यसावित्रीनातिवर्तते । आद्वा  
 विंशतस्तत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ( ज्योतिर्निबन्धे ) अग्रजावाहुजावैश्याःस्त्रावधे  
 रूध्वमवदतः । अकृतोपनयाःसर्वेवृषलाखवतेस्मृताः ( गर्गः ) विप्रंवसन्तेसितिपंनि  
 दाधेवैश्वयंघनांतेव्रतितंविदध्यात् ॥ माघादिशुक्लांतिकपंचमासाः साधारणावा  
 सकलद्विजानां ( हेमाद्रौज्योतिषे ) माघादियुचमासेयुर्भौजीपंचमुशस्यते ( का  
 लादर्शेवृद्धगार्ग्यः ) माघादिमासयट्केतुमेखलाबंधनंमतं ॥ चडाकरणमन्नंचश्रा  
 वणादौविवर्जयेत् ॥ मैत्रेयसूत्रेपि ॥ वसंतोऽग्नीठमःशरदित्यूतवोवर्णानुपूर्वैरामा  
 घादिषणमासावासर्ववर्णानामेतदुदगयनसनयोर्विकल्पइति ॥ अत्रेदंतत्त्वं ॥ ना  
 धवसन्तेनोत्तरायणस्यसंकोचःश्राद्धदर्शस्यापराह्णेविधिनैवाधानेवसंतादेः । कृत्ति  
 कादिनेचसायंप्रातर्विधिनायावज्जीवविधेरिवयुक्तः । आद्ययोः । परस्परव्यभि  
 चारान्नियमः । अंत्येनिमित्तेसांगकर्मोक्तेःकालापेक्षा ॥ इहतुत्तरायणांविना  
 वसंतस्याभावान्नानियमःनवानिमित्तत्वं । नचैकंवृणोतइतिवदवयुत्यानुवादः  
 तद्वद्वाक्यभेदापरिहारात् ॥ उत्तरायणाविधिवैयर्थ्यात्स्वनुकल्पोयमिति । माघ  
 आदिर्येषांपंचानांसंवत् ( पारिजातेबृहस्पतिः ) भयचापकुलीरस्थोजीवो

प्यशुभगोचरः॥ अतिशोभनतांदद्याद्विवाहोपनयादियु(वृत्तशते) नजन्मधिराये  
नचजन्ममासेनजन्मकालोयदिनेविदध्यात् । ज्येष्ठेनमासिप्रथमस्यसूनोस्तथा  
सुतायाअपिसंगलानि(राजमार्तडः) जातंदिनंदूययतेवशिष्टोद्यष्टौचगर्गोनिय  
तंदशात्रिः । जातस्यपक्षंकिलभाशुरिप्रचशेषाःप्रशस्ताःखलुजन्ममासि । जन्म  
मासेतिथौभेचविपरीतदलेसति । कार्यसंगलमित्याहुर्गर्गभार्गवशौनकाः । जन्म  
मासिनियेधेपिदिनानिदशवर्जयेत् । आरभ्यजन्मदिवसाच्छुभास्युस्तिथयोपरे  
(ग्रंथांतरे)व्रतेजन्मत्रिखारिस्थोजीवोपिष्टोऽर्चनात्सकृत् । शुभोत्तिकालेतुर्याष्ट  
व्ययस्थोद्विगुणार्चनात् । शुद्धिर्नैवगुरोर्यस्यवर्षेप्राप्तेऽष्टमेयदि । चैत्रेमीनगतेभा  
नौतस्योपनयनंशुभं । जन्मभादष्टमेसिंहेनीचेवाशुभेगुरौ । मौजीबन्धःशुभःप्रोक्त  
श्चैत्रेमीनगतेरवौ( नारदः) बालस्यबलहीनोपिशांत्याजीवोबलप्रदः ॥ यथो  
क्तवत्सरेकार्यमनुक्तेचोपनायनंशांतिप्रचाग्रेवक्ष्यते(ज्योतिर्निबन्धेनृसिंहः) तृती  
यापंचमीयष्टौद्वितीयाचापिसप्तमी । पक्षयोरुभयोश्चैवविशेषेणसुपूजिताः ॥  
धर्मकामौसितेपक्षेकृषोचप्रथमातथा ॥ शुक्लत्रयोदशीकेचिदिच्छंतिमुनयस्त  
था (टोडरानंदेवशिष्टः) नैमित्तिकमनध्यायंकृषोचप्रतिपद्दिनम् । मेखलाबन्ध  
नेशस्तंचौलेवेदव्रतेऽवपि । प्रशस्ताप्रतिपत्कृषोनपूर्वापरसंयुता ॥ सतदतीति  
कालस्यार्तस्यवटोरुपनयनविषयम् । प्रशस्ताप्रतिपत्कृषोकदाचिच्छुभगेवि  
धौ ॥ चंद्रेबलयुतेलग्नवर्षाणामपिलंघनइतिव्यासोक्तेरित्याहुः । एवंसप्तम्यपि ।  
तस्यागलग्रहत्वोक्तेः(बृहस्पतिः) शुक्लपक्षःशुभःप्रोक्तःकृषापृचांत्यत्रिकंविना  
(तथा) मिथुनेसंस्थितेभानौज्येष्ठमासोनदोषकृत् (मदनरत्नेनारदः) विनर्तुनावसं  
तेनकृषापक्षेगलग्रहः । अपराह्णेचोपनीतःपुनःसंस्कारमर्हति ॥ अपराह्णेस्त्रि  
धाविभक्तदिनतृतीयांशइत्युक्तं ॥ तत्रैव ॥ वसंतगलग्रहानदोषायेत्यर्थः (नारदः)  
कृषापक्षेचतुर्थीचसप्तम्यादिदिनत्रयम् । त्रयोदशीचतुष्कंचअष्टावेतेगलग्रहाः  
(वशिष्टः) पापांसाकगतेचंद्रेअरिनीचस्थितेपिच । अनध्यायेचोपनीतःपुनः  
संस्कारमर्हतिअनध्यायस्यपूर्वेद्युस्तस्यचैवापरेहनि । व्रतबंधंविमर्गंचविद्यारंभंन  
कारयेत् (राजमार्तडः) आरंभानंतरंयत्रप्रत्यारंभोनसिद्धयति । गार्गादिमुनयः



सर्वे तमेवाहुर्गलग्रहस्य (ज्योतिर्निबन्धे) अष्टकासु च सर्वाह्युगमन्वन्तरादियु ॥ अन  
 ध्यायं प्रकुर्वीत तथा सोपपदास्तपि (सोपपदास्तस्मृत्यर्थसारे) सिताज्येष्टे द्वितीया  
 च आश्विने दशमी सिताः ॥ चतुर्थी द्वादशी माघे गताः सोपपदाः स्मृताः (सर्वप्रदोष  
 स्वरूपमाह गोभिलः) यथैव द्वादशी चैव अर्धरात्रौ न नाडिका । प्रदोषमिह कुर्वी  
 त तृतीया तु न यामिका (ज्योतिर्निबन्धे व्यासः) याचैव वैशाखसिता तृतीया माघ  
 सप्तम्यथ फाल्गुनस्य । कृष्णो तृतीयोपनये प्रशस्ता प्रोक्ता भरद्वाजमुनीन्द्रमुख्यैः ॥  
 अत्रापि कृष्णा प्रतिपज्ज्ञेयम् (यत्तु बृहद्भागवतः) अनध्याये प्रकुर्वीत यस्तनैर्मिति  
 को भवेत् । सप्तमी माघशुक्ले तु तृतीया चाक्षया तथा । बुधव्रत्येद्वाराश्च शस्तानि  
 ब्रतबन्धन इति तत्प्रायश्चित्तार्थोपनयनविषयम् । स्वाध्यायविद्युजोधम्नाः कृष्णा  
 प्रतिपदादयः । प्रायश्चित्तनिमित्ते तु मेखलाबन्धने मता इति तेनैवोक्तेरिति नि  
 र्यायामृतकालादर्शः । यद्यप्यथोपेतपूर्वस्येत्युक्त्वा अनिरुक्तं परिदानं कालश्चे  
 त्याश्च लायनेन पुनरुपनयने कालानियम उक्तस्तथापि निमित्तांतरमेव सः । तदा  
 नीमकराणोत्पूर्वाक्तकालो ज्ञेयः प्रतिवेदमुपनयने कालानियम इति तु युक्तम्  
 (गर्गः) ग्रहे रवीन्दोरवनिप्रकपेकेतूद्गमोल्कापतनादिदोषे । ब्रते दशाहानि व  
 दंतितज्ज्ञास्त्रयोदशाहानि वदंतिकेचित्त (संकटे तु चंडेश्वरः) दाहे दिशांचैव धरा  
 प्रकपेव जू प्रपाते विदारणोच ॥ केतौ तथोल्कांशुकणाप्रपातेऽग्रहं न कुर्याद्ब्रतसं  
 गलानि (तत्रैव) वेदव्रतोपनयने स्वाध्यायाध्ययने तथा । न दोषो यजुषां सोपपदास्त  
 ध्ययनेऽपि च (हेमाद्रौ ज्योतिषे) हस्तव्रत्ये पुष्यधनिष्येषो च पौष्णाश्चि सौम्यादि  
 तिविठ्ठाभेषु ॥ शस्तेतिथौ चंद्रबलेन युक्ते कार्यो द्विजानां ब्रतबन्धमोक्षौ (ज्योतिर्नि  
 बन्धे नारदः) अस्यां त्यर्कव्रत्यां त्येज्यचंद्रादित्युत्तराणि च ॥ विष्णाव्याश्वि मित्राद्वजे  
 योनिभान्युपनायने (बृहस्पतिः) त्रिभूतरेषुरोहितायां हस्ते भैवे च वासवे त्वाष्ट्रे  
 सौम्यपुनर्वस्वे रुतसंक्षुपनायनम् (ज्योतिर्निबन्धे) पूर्वाहस्तव्रत्ये सार्पश्रुतिमूलेषु  
 बह्वृचां । यजुषां पौष्णामैत्राकार्दित्यपुष्यमृधुवैः ॥ सामगानां हरीशां विषुपु  
 ष्योत्तराश्विभैः । धनिष्ठादिति भैत्रार्केऽष्टिबंदुपौष्णोऽथर्वणां (राजमार्तडस्तु ॥ ब्रा  
 ह्मणास्यपुनर्वसुं नियेधयति) ताराचंद्रानुकूलेषु ग्रहाब्देषु शुभेऽपि ॥ पुनर्वसौ कृतो

विप्रः पुनः संस्कारमर्हति (ज्योतिर्निबन्धेनारदः) सर्वेषां जीवशुक्रजवाराः प्रोक्ताव्र  
 तेषु भाः ॥ चंद्राकौ सध्यसौ ज्योत्सामबाहुजयोः कुजः ॥ शाखाधिपतिवारप्रचशा  
 खाधिपबलंतथा ॥ शाखाधिपतिलग्नं च दुर्लभं त्रितयं त्रते (शाखाधिपाश्चरत्नसं  
 ग्रहे) ऋगथर्वसामयजुषासधिपागुरुभौमासताः । जीवसितौ विप्राणां सत्रस्यारो  
 षाद्युविशांचंद्रे इति (पारिजाते बृहस्पतिः) बह्वृचानां गुरोर्वारैयजुर्बदजुषां बुधे  
 सामगानां धरासूनोरथर्वविदुषां रवेः । अवलग्नशुद्ध्यादिदैवज्ञेभ्यो ज्ञेयमविस्तरम  
 याच्नोच्यते (ललः) व्रते हि पूर्वसंध्यायां वारिदोयदि गर्जति ॥ तद्दिने स्यादनध्यायो  
 व्रतंतत्रविवर्जयेत् (ज्योतिर्निबन्धे) नांदोश्राद्धं कृतंचेत् स्यादनध्यायस्त्वकालिकः । त  
 दोपनयनं कार्यं वेदारंभं न कारयेत् । एतद्वबह्वृचातिरिक्तानां । तेषां तद्दिने विदारंभा  
 भावात् । अतस्तेषामुपनयनं न भवत्येव । एतरेषां पनियदि । मृगादिज्येष्ठांतवर्षतुः ।  
 तं विनावर्षादौ चिरात्रमनध्याय इति वेदभाष्योक्तं । एतच्च प्रातस्तनिते सायंस्तनिते  
 तु दिवैव चरुं प्रयित्वा सायं सन्ध्योत्तरहोमं कुर्यात् । न संध्यागर्जिते काले न वृद्धस्य  
 त्प्रातदूषिते । ब्रह्मोदनं पंचेदरनौपकंचेन्न निवर्तते । ब्रह्मोदनं पंचेदरनौपकमचनं न दू  
 ष्यतीति संप्रहोक्तेरिति प्रयोगरत्ने भट्टचरणाः (अवशांतिरप्युक्तानृसिंहप्रसादे)  
 ब्रह्मोदनं विधेः पूर्वप्रदोषे गर्जितं यदि ॥ तदा विघ्नकरं ज्ञेयं बह्वीरध्ययनस्य तत्तत  
 स्य शांतिप्रकारं तु वक्ष्ये शास्त्रानुसारतः । प्रधानं पायसं साज्यं द्रव्यं शांतियजौ भवेत् ।  
 सूक्तं बृहस्पतेर्विद्वान्प्रठेत् प्रज्ञाविवृद्धये ॥ गायत्री चैव मंत्रः स्यात् प्रायश्चित्तं तु स  
 पिषा । धेनुं सवत्सकां दद्यादाचार्याय पयस्विनीं । ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चात्ततो  
 ब्रह्मोदनं चरेत् (उपायने चाधिकारिणाः ॥ माधवीये बृद्धमनुनीक्ताः) पितापिता  
 महोभ्राताज्ञातयो गोत्रजाग्रजाः । उपायनेधिकारी स्यात्पूर्वाभावे परः परः (प्रयो  
 गरत्ने) पितैवोपनयेत् पुत्रंतदभावे पितुः पिता तदभावे पि तुभ्राता तदभावे तु सोद  
 रः पितेति विप्रपरं नक्षत्रादेः । तेषां पुरोहितस्य । उपनयनस्य दृष्टार्थत्वात् । ते  
 षां चाध्यापनेऽनधिकारात् । अत्र पितृव्यस्य ज्येष्ठप्रावभावेधिकारः । असंस्कृता  
 स्तु संस्काराभिः पूर्वसंस्कृतैरित्याजबल्क्योक्तेः । तेनेदमविभक्तपरं । पूर्वतु  
 विभक्तपरं । सातूरजो दीयेतु प्राणुक्तं अथ यं हसूकादीनां विशेषः (प्रयोगपारिजाते



ब्राह्मे ) ब्राह्मरायां ब्राह्मणाज्जातो ब्राह्मणः स इति श्रुतिः । तस्माच्च ग्रंथं धरि कुब्ज  
वामनपंशु ॥ जडगदगदरो गार्तशुठकांगविकलांगियु । मत्तोन्मत्तेषु मूकेषु शयन  
स्थे निरिन्द्रिये । ध्वस्तपुंस्त्वेषु चैतेषु संस्काराः स्युर्यथोचितं । मत्तोन्मत्तो न संस्का  
र्यावितिकेचितप्रचक्षते । कर्मस्वनधिकाराच्च पातित्यं नास्ति चैतयोः ॥ तदपत्यं  
च संस्कार्यमपरेत्वाहुरन्यथा । संस्कारमंत्रहोमादीन् करोत्याचार्यसंवतु । उपने  
थांश्च विधिवदाचार्यस्थसमीपतः ॥ आनीयाग्निममीपं वासावित्रीं स्पृश्य वाजपे  
त । कन्यास्वीकरणादन्यत्सर्वविप्रेणाकारयेत् ॥ एवमेव द्विजैर्जातौ संस्कार्यौ कुं  
डगोलकौ इति ॥ स्मृत्यर्थसारेप्येवं ॥ कुंडगोलकयोः संस्कार्यत्वं श्राद्धे निषेधश्च  
क्षेत्रजपुत्रविषयः । अन्यस्य विज्ञास्वेयविधिः स्मृत इति वचनात् । अब्राह्मरायेनो  
पनयनाद्यप्राप्तेरित्यपरार्कः । उपनयनं च कुमारं भोजयित्वा कार्यम् । प्रागेवैनंतद  
हर्भोजयंतीति मदनपारिजाते गोभिलोक्तेः । गायत्र्युपदेशश्चोत्तरतोऽग्नेः कार्यः ।  
उत्तरेणाग्निमुपविशतः । प्राङ्मुखश्चाचार्यः । प्रत्यङ्मुख इतरेऽधीहिभो इति  
शांखायनसूत्रोक्तेः ॥ यद्यपि कात्यायनेनाथास्मैसावित्रीमन्वाहोत्तरतोऽग्नेः प्र  
त्यङ्मुखायेत्युक्तादक्षिणातस्तिष्ठत आसीनाय वै के इति विकल्प उक्तस्तथापि का  
त्यायनामेव सः । बह्वृचानांतूत्तरमववेदैक्यात् (भिक्षायां विशेषमाह कात्याय  
नः) मातरमेवाग्नेभिस्ते (पराशरमाधवीये) मातरं वास्वसारं वा मातुर्वा भगिनीं नि  
जाम् । भिस्ते भिक्षां प्रथमं याचैनं न विमानयेत् (अथ संस्कारलोपे शौनकः) आर  
भ्याधानमाचौलात्कालेऽतीते तु कर्मणां । व्याहृत्याग्निं सुसंस्कृत्य हुत्वा कर्म यथा  
क्रमम् । एतेऽवेकैकलोपे तु पादकृच्छ्रं समाचरेत् । चडायामर्च्य कृत्वा दापदित्वे  
व मीरितं ॥ अनापदितु सर्वत्र द्विगुणां द्विगुणां चरेत् ( पारिजाते कात्यायनः ) लुप्ते  
कर्मणां सर्वत्र प्रायश्चित्तं विधीयते । प्रायश्चित्तकृते पश्चात्तुल्लुप्तं कर्म समाचरेत्  
(स्मृत्यर्थसारे चैवं कारिकायां तु) प्रायश्चित्तकृतेऽतीते कर्म कृता कृतमित्युक्तं ।  
प्रायश्चित्तकृते पश्चादतीतमपि कर्म वै । कार्यमित्येक आचार्यनित्यन्येतु विप  
श्चित्त इति । त्रिकांडमंडने तु कालातीतेषु कार्येषु प्राप्तवत्स्वपरेषु च । कालाती  
तानि कृतवैव विदध्यादुत्तराणि तु । तत्र सर्वेषां तंत्रेणानां दीश्राद्धं कुर्यात् । देशकाल

कर्त्रेक्याप्तगाशः क्रियमाणानां मातृणां पूजनं सकृत् । सकृद्देवभवेच्छादमादौ नृ  
यगादिदिवतिकुंदोगपरिशिष्टात् । सतद्ब्रह्मनामपत्यानां युगपत्संस्कारकरणा वि  
षयमिति वोपदेवः । अतीतसंस्काराणां युगपत्करणा इत्यन्ये । तत्रापि चौलस्थोप  
नीत्यासहेति पक्षे उपनीतिदिनसवानुष्ठानं न पर्वदिने । सहत्वस्य दिवसैक्ये सन्निकृ  
ष्टतरत्वात् । वृद्धाचारोप्येवं (उपनीतिदिने मध्याह्नसंध्यामाह पारिजाते जैमि  
निः) यावद्ब्रह्मोपदेशस्तु तावत्संध्यादिकंचन । ततो मध्याह्नसंध्यादिसर्वकर्मस  
माचरेदिति ॥ ब्रह्मगायत्री ॥ यत्तु वचनम् ॥ उपायने तु कर्तव्यं सायं संध्ये उपासनं  
आरभेद्ब्रह्मयज्ञं तु मध्याह्ने तु परेहनीति । तच्छाखांतरविषयमिति पारिजातः वि  
कल्पइति युक्तं पश्यामः । उपनयनाग्निस्त्रिरात्रं धार्यः । ज्यहमेतमग्निंधारयंती  
त्यापस्तंबोक्तेः । बौधायनसूत्रे तु सदाधारणमप्युक्तं । उपनयनादिरग्निस्तोमौ  
पासनमित्याचक्षते । पाणिग्रहणादित्येके नित्यो धार्यो नुगतो निर्मय इति । इ  
दं जातारणि पक्षे । अन्यथा मंथनासंभवात् ( ब्रह्मयज्ञे विशेषमाह तत्रैव जैमिनिः )  
अनुपाकृतवेदस्य कर्तव्यो ब्रह्मयज्ञकः । वेदस्थाने तु सावित्री गृह्यते तत्समासत इति  
ये प्रांतद्दिन एव वेदारंभस्तेषां नेदमिति दिक् ( अथ ब्रह्मचारिधर्माः ॥ याज्ञवल्क्यः )  
मधुमांसां जनोच्छिष्टं शुल्कस्त्री प्राणिहिंसनं । भास्करालोकनाम्नीलपरिवादा  
दिवर्जयेत् ( मनुः ) अभ्यंगमंजनं चाक्षणीरुपानच्छत्रधारणं ( वर्जयेदिति प्रकृतं  
पारिजाते कौर्म ) नादर्शचैव वीक्षेत् नाचरेदंतधावनं ॥ गुरुच्छिष्टं भेषजार्थं प्रयं  
जीतनकामतः । सतन्निविद्धमध्वादि विषयं । अन्यस्य गुरुच्छिष्टस्य सर्वदा प्राप्तेः  
सचेद्व्याधीयो तत्कामं गुरो रुच्छिष्टं भेषजार्थं सर्वप्राप्तीयादिति विशिष्टोक्तेः । ज्ये  
ष्ठप्रातुरित्यपि ज्ञेयम् । पितुर्ज्येष्ठस्य च भ्रातुरुच्छिष्टं भोजयमित्यापस्तंबोक्तेः ।  
गुरुपुत्रे तु स्मृत्यंतरे उक्तं । गुरुवद्गुरुपुत्रः स्यादन्यत्रोच्छिष्टं भोजनात् ( प्रचेताः )  
तां वलाभ्यंजनं चैव कांस्यपात्रे वभोजनं । यतिप्रचब्रह्मचारी च विधवा च विवर्जये  
त् ( यमः ) मेखलासजिनं दंडमुपवीतं च नित्यं शः । कौपीनं कटिस्रञ्च ब्रह्मचारी  
तु धारयेत् । अरनीधनं भैक्ष्यचर्यामधः शय्यांगुरोर्हितं । कुर्यादिति शेषः ( मेखला  
माहाश्वलायनः ) तेषां मेखलामौजी ब्राह्मणस्य धनुर्ज्यासत्रियस्यावी वैश्यस्येति



( आचार्यः ) त्रिवृतामेखलाकार्याविचारस्यात्समावृता । तदग्रंथयस्त्रयः कार्याः  
 पंचवासप्तवापुनः ( मनुः ) मौजीत्रिवृत्समाप्लक्षणाकार्याविप्रस्यमेखला ।  
 त्रिवृताग्रंथिनैकेनत्रिभिः पंचभिरेववा । मौज्यभावेतुकर्तव्याकुशाप्रसंत कदल्व  
 जैः । अत्रप्रवरसंख्यानियमइतिवृद्धाः ( अथदंडाः मनुः ) ब्राह्मणोद्वैल्वपाला  
 शौक्षत्रियोवाटरादिरौ । पैपलोदुंबरौवैश्योदंडानर्हतिधर्मतः ( स्यामभावेगौ  
 तमः ) यज्ञियोवासर्वेषांसर्धललाटनासाप्रमाणाइति ( अजिनमाहाचलायनः )  
 अहतेनवाससासंवीतमैरोयैनवाजिनेनब्राह्मणारौरवेगासत्रियमाजेनवैश्यमिति ।  
 यद्यप्यैरोयशब्देनमृगीचर्मैवोच्यतेएरायाहजितिपाणिनिरमृतेः । ऐरोयमेराया  
 प्रचमद्यमेरास्यैरासुभेविठ्वितिअमरकोशाच्च । तथापिहृष्यासुवस्तान्यजिना  
 नीतिशंखोक्तेः । सर्वेषांवारौरवमितिमोक्तेश्चमृगचर्मणासहविकल्पोज्ञेयः  
 वस्त्राजिनयोस्तुविकल्पः । कार्पासंवाविहृतमितिगौतमोक्तेः ( अथयज्ञोपवी  
 तं ॥ मनुः ) कार्पासमुपवीतंस्याद्विप्रस्योर्ध्ववृत्तंत्रिवृत्त ( पारिजातेदेवलः ) का  
 पसिसौमगोबालशराबल्वतृणादिकांयथासंभवतोधार्यमुपवीतंद्विजातिभिः ॥ शु  
 चौदेशेषुचिःसूत्रंसंहतांगुलिमूलके आर्वत्ययरागावत्यातत्त्रिगुणां कर्त्ययत्नतः ॥  
 अल्लिंगकौस्त्रिभिःसम्यक्प्रक्षाल्योर्ध्ववृत्तंत्रिवृत्त । अप्रदक्षिणासावृत्त्यसाविड्या  
 त्रिगुणाकृतं । ततःप्रदक्षिणावर्त्तसमस्यान्नवसत्रकं ॥ त्रिरावेष्टुदृढंबध्वा ब्रह्मवि  
 ष्ठावोच्चराक्षमेत । तन्नवतंतुकार्यं । साविड्यात्रिगुणांकुर्यान्नवसत्रंतुतद्वेदितिते  
 नैवोक्तेः ( कंदोगपरिशिष्टे ) त्रिवृदूर्ध्ववृत्तंकार्यंतंतुत्रयमधोवृत्तं । त्रिवृत्तंचोप  
 वीतंस्यात्तस्यैकोग्रन्थिरिठ्यते । ऊर्ध्ववृत्तंदक्षिणांकरमध्वं कृत्वावलितं ( भृगुः )  
 वामावर्तवलितंत्रिगुणांकृत्वादक्षिणावर्तवलितंत्रिगुणांकार्यं । सप्तकस्तंतुदेवंत्रि  
 तंतुकमित्यर्थः ( कात्यायनः ) पृथुदेशेचनाभ्यांचधृतंयद्विंदतेकर्ति । तद्वार्यमुप  
 वीतंस्यान्नातिलंबनचोच्छिन्नं ( वशिष्ठः ) नाभेरूर्ध्वमनायुठयमधोनाभेस्तपः  
 क्षयः ॥ तस्मान्नाभिसमंकुर्यादुपवीतंविचक्षणाः ( पारिजातेदेवलः ) उपवीतंब  
 दोरेकंदेतथेतयोः स्मृतेः । एकमेवयतीनांस्यादितिशास्त्रस्यनिश्चयः । सप्तवा  
 बहूनिवायुठकामस्य । ( तत्रसंज्ञमाहसख ) यज्ञोपवीतमितिवान्याहृत्या

वापिधारयेत् (हेमाद्रौ) यज्ञोपवीतेद्वेधार्थेऽथौतेस्मार्तेचकर्मणि । तृतीयमुत्तरी  
यार्थेवस्त्राभावेतदित्यते (देवलः) सावित्र्यादशकृत्वाद्भिर्मंत्रिताभिस्तदुक्षयेत् ।  
विच्छिन्नं वाप्यधोयातंभुक्तानिर्मितमुत्सृजेत् (मनुः) मेखलासजिनंदगडमुपवी  
तंकमण्डलं । अप्पुप्रास्यविनष्टानि शृङ्खलीतान्यानि सन्वतः (अथैतलोपेप्राय  
श्चित्तमनुः) अकृत्वाभैक्ष्यचरणमसमिध्यचपावकं । अनातुरः सप्तरात्रमवकी  
र्णाव्रतंचरेत् (अमत्याआपदित्यागेतुयाज्ञवल्क्यः) भक्ष्याग्निकार्येत्यक्तातुसप्त  
रात्रमनातुरः । कामावकीर्णा इत्याभ्यां जुहुयादाहुतिद्वयं । उपस्थानंततः कुर्यात्  
समासिंचत्यनेनतु । मन्वास्तुमिताक्षरायां ज्ञेयाः (सकलोपेतुऋग्विधाने) मान  
स्तोत्रेजपेन्मन्त्रं शतसंख्यं शिवालये । अग्निकार्यं विनाभुक्तौ न पापं ब्रह्मचारिणाः  
स्मृत्यर्थं सारेतुसंध्याग्निकार्यलोपे स्नात्वाऽष्टसहस्रं जपः । भिक्षालोपेष्टशतं । अ  
भ्यासेद्विगुणं । पुनः संस्कारश्चेत्युक्तम् (अपरार्कसंवर्तः) यः संध्यांचैव नोपा  
स्ते अग्निकार्यं यथाविधि । गायत्र्यष्टसहस्रं तु जपेत्स्नात्वासमाहितः । अग्निका  
र्यसंध्याद्वये कार्यं । अग्निकार्यंततः कुर्यात्संध्ययोस्तभयोरपीतियाज्ञवल्क्योक्तेः ।  
सायमेव वा । सायमेव वाग्निमिंधीतेत्येके इति लौगाक्षिणोक्तेः (पारिजातेवृद्धशा  
तातपः) ब्रह्मचारी तु योऽपनीयान्मधुमांतसंयैव च प्राजापत्यंचरेत्कच्छं व्रतशेषं स  
मापयेत् (ऋग्विधाने) तंबोधिप्राजपेन्मन्त्रं लसंचैव शिवालये । ब्रह्मचारी स्वध  
र्मैर्युन्यूनंचेतुपरामेति तत् (स्त्रीसंगेतुमनुः) अवकीर्णा तु कामेन गर्दभेन चतुदपथे ।  
स्थालीपाकविधानेन यजेद्वै निऋतिं निशि । विस्तरस्तुमिताक्षरादौ ज्ञेयः (उप  
वीतनाशेतुहारीतः) मनोव्रतपतीभिश्च तस्मै अज्याहुतीर्हुत्वा पुनः प्रतीयात् (त  
त्रैवमरीचिः) ब्रह्मसूत्रं विनाभुंक्ते विरासंत्रंकुस्तेयवा । गायत्र्यष्टसहस्रेणाप्राणा  
यामेन शुद्धयति (मनुः) भोशब्दं कीर्तयेद्देवेस्वस्य नाम्नोभिवादाने । आयुः समान्भव  
सौम्येति वाच्यो विप्राभिवादाने । आकारश्चास्य नाम्नोते वाच्यः पूर्वाक्षरः श्रुतः ।  
शर्मन्निति नकारात् पूर्व इत्यर्थः । अभिवादाने प्रत्यभिवादानादौ विशेषः स्मृत्यर्थं सा  
रे पारिजातादौ ज्ञेयः (यमः) ज्यायानपि कनीयांसं संध्यायामभिवादयेत् । विना  
शिष्यंच पुत्रंच दौहित्रदुहितुःपतिं (अथ पुनरुपनयनं पारिजातेशातातपः) लशुनं



गृजनंजग्ध्वापलांडुंचतथाशुनस ॥ उष्ट्रमानुयकेभाश्चरासभीक्षीरभोजनात् । उपा  
 यनंपुनःकुर्यात्तप्तकृच्छ्रं चरेन्मुहुरिति (हेमाद्रौवृद्धमनुः) जीवन्त्यदिसमागच्छे  
 दधृतकुंभेनिमज्ज्यच । उद्धृत्यस्नानार्पयित्वास्यजातकर्मादिकारयेत् (तत्रैवपाप्मे) प्रे  
 तशय्याप्रतिग्राहीपुनःसंस्कारमर्हति (चंद्रिकायांबौधायनः) सिंधुसौवीरसौरा  
 ष्टांस्तथाप्रत्यंतवासिनः । अंगवंगकलिंगांश्चगत्वासंस्कारमर्हति (हेमाद्रौ प्राय  
 ष्चित्तकांडेवृद्धगौतमः) खरमुखं चमहियमनड्वाहमजंतथा । वस्तमारुह्यमुख  
 जः क्रोशेचांद्रं विनिर्दिशेत् (मार्कंडेयः) खरमारुह्यविप्रस्तुयोजनंयदिगच्छ  
 ति । तप्तकृच्छ्रंयंप्रोक्तंशरीरस्यविशोधनं । पुनर्जन्मप्रकुर्वीतधृतगर्भविधानतः  
 (मदनरत्नेमिताक्षरायांचस्नानमात्रमुक्तं ॥ मनुः) अज्ञानात्प्राश्यविगमूत्रं सुरासं  
 सृष्टमेवच ॥ पुनःसंस्कारमर्हतित्रयोवर्णाद्विजातयः(मिताक्षरायांपराशरः) यः  
 प्रत्यवसितोविप्रःप्रव्रज्यातोविनिर्गतः । अनाशकनिवृत्तश्चगार्हस्थ्यंचेच्चिकी  
 र्यति ॥ संचरेत्त्रीणांकृच्छ्राणित्रीणांचांद्रायणानिच । जातकर्मादिभिःसर्वैःसं  
 स्कृतःशुद्धिमाप्नुयात् (बौधायनसूत्रे) अथोपनीतस्यव्रत्यानिभवंतिनान्यस्यो  
 च्छिष्टंभुंजीतान्यत्रपितृज्येष्ठाभ्यांनस्त्रिया सहभुंजीतमधुमांसश्चाद्वसतकान्चानि  
 दशाहसंधिनीक्षीरंछवाकनिर्यासौ विलापनंगणान्नंगणिकान्नमित्येतेषुपुनः  
 संस्कारः (प्रतिषिद्धदेशगमनमित्येकेअथाप्युदाहरंति) सुराष्टसिंधुसौवीरमवं  
 तींदक्षिणापथस ॥ एतान्ब्राह्मणोगत्वापुनःसंस्कारमर्हति । अथपुनःसंस्कारं  
 व्याख्यास्यामोदेवयजनप्रभृत्यग्निमुखात्तद्वत्वापालाशींसमिधमाज्येनाऽङ्क्ता  
 भ्याधायवाचयति ॥ पुनस्त्वादित्यारुद्रावसवःकामाःस्वाहेत्यथा व्रत्यप्रायश्चित्ते  
 जुहोति यन्मआत्मनोमिंदाभूत्पुनरग्निप्रचसुरदादिति । द्वाभ्यामथपक्वाज्जु  
 होति । सप्ततेअग्नेसमिधःसप्तजिह्वाःसप्त ० । धृतेनस्वाहेत्यथाज्याहुीरुपजु  
 होति । येनदेवाःपवित्रेगोतितिसृभिरनुच्छंदसंस्विष्टकृतप्रभृतिसिद्धमाधेनुवरदा  
 नादथापरमापरिधानात्तद्वत्वापालाशींसमिधमाधायथाव्रत्यप्रायश्चित्तेजुहो  
 त्यथव्याहृतीजुहोति । अथापरोब्राह्मणावचनादेवसावित्र्याशतकृत्वाधृतमभि  
 मंज्यप्राश्यकृतप्रायश्चित्तोभवति । गुरोर्वाप्युच्छिष्टंभुंजीताथाप्युदाहरंति ॥ व

पुनर्दक्षिणादानंमेखलादंडमजिनभैक्ष्यचर्याव्रतानिचनिवर्तते पुनः संस्कारकर्म  
 गीति(आश्वलायनगृह्येपि) अथोपेतपूर्वस्येत्यादिनापुनःसंस्कारउक्तःतथापि  
 वादिव्यातिरेकेणाब्रह्मचारिणाः प्रेतकर्मकराणो पुनरुपनयनमित्यपराकादयः  
 (त्रिस्थलीसेतौ) कर्मनाशाज्जलस्पर्शत्करतोयाविलंघनात्। गंडकीबाहुतरणा  
 तपुनःसंस्कारमर्हति (गौडास्तु) करतोयाजलस्पर्शत्कर्मनाशाविलंघनादिति  
 पठति ॥ तन्न ( दानधर्मयुकरतोयास्नानेप्राशस्त्योक्तेः ) करतोयेसदानीरेस  
 रिच्छेद्येतिविश्रुते । आश्लावयसिपौराणां पापंहरकरोद्भवेतिस्मृतिदर्पणाचं  
 द्विकालिखितस्नानसंवाच (पराशरः) अजिनमेखलादंडोभैक्ष्यचर्याव्रतानिच ॥  
 निवर्ततेद्विजातीनांपुनःसंस्कारकर्मणा ( हरदत्तस्तु) यःएकंवेदमधीत्यान्यंवे  
 दमध्येतुमिच्छति । तस्यपुनरुपनयनंतेनप्रतिवेदमुपनयनंकर्तव्यमित्याह । अन्ये  
 नैतन्मन्यन्तेसर्वेभ्योवैवेदेभ्यः सावित्र्यनूच्यतइत्यापस्तंबोक्तेः (तद्विधिःकारि  
 कायां) वेदांतरमधीत्यैवऋग्वेदयेत्वधीयते । उपनीतिरियंतेयामलंकरणावर्जि  
 ता । यद्वैतदुपनीतस्यप्रायश्चित्तंयदाभवेत् । कृताकृतंचवपनं मेधाजननमेवच ।  
 मेधाजननसद्भावे व्रतचर्याभवेदिह । अनुप्रवचनीयश्च तदभावेद्वयंनहि । परि  
 दानंतकार्यस्यान्निमित्तानंतरंत्विदं । पूर्वस्यावाचयेत्स्थाने तत्सवितुर्वृणीम  
 हइति ( यत्तुहारीतः ) द्विविधाःस्त्रियःब्रह्मवादिन्यःसद्योवध्वश्च । तत्रब्रह्म  
 वादिनामुपनयनमग्नीधनंवेदाध्ययनंस्वगृहेचभैक्ष्यचर्येति । सद्योवध्वनामुपनयनं  
 कृत्वाविवाहः कार्यइतितद्युगांतरविषयं । पुराकल्पेषुनारीणामौजीबन्धनमि  
 ख्यते । अध्यापनंचवेदानांसावित्रीवाचनंतथेतिस्मोक्तेः ( अथान्ध्यायाः ॥ पा  
 रिजातेवृहस्पतिः ) प्रतिपत्सचतुर्दश्यामष्टम्यांपर्वणोर्द्वयोः ॥ प्रवोनध्यायेद्य  
 शर्वयांनाधीयीतकदाचन (नारदः) अयनेविद्युवेचैवशयनेबोधनेहरेः । अनध्या  
 यस्तुकर्तव्योमन्वादियुगुगादियु(निर्णयामृते) चातुर्मास्यद्वितीयासुमन्वादियुगु  
 गादियु ॥ अनध्यायस्तुकर्तव्योयाचसोपपदातिथिः(गर्गः) शुचाहूर्जतपस्येचया  
 द्वितीयाविधुस्ये । चातुर्मास्यद्वितीयास्ताःप्रवर्ततमनीयिणाः (स्मृत्यर्थसारेपि)  
 आयाहीकार्तिकी काल्युनीसमीपस्थद्वितीयासुचेति (मनुः) उपाकर्मणिचोत्स



गौत्रिरात्रं सपरां स्मृतं । अष्टकासु त्वहोरात्रमृत्वंतासु चरात्रिष्ठिति । उत्सर्गोत्स  
 नक्तपक्षिरायहोरात्राभ्यां ज्यहस्यविकल्पइति विज्ञाने प्रवरः । अष्टकाशब्देन सप्त  
 म्यादित्रयं ज्ञेयं । तिस्रोष्टकास्त्रिरात्रमंत्यामेके इति गौतमोक्तेः । ऋत्वंतास्त्रिति  
 सौरऋत्वंतासु चांद्रं तस्य पर्वत्वेनैव नियेधसिद्धेरिति सर्वज्ञनारायणाः । एतेनित्या  
 नैमित्तिकानप्याह याज्ञवल्क्यः ) ज्यहंप्रेतेष्वनध्यायः शिष्यत्विर्गुरुबन्धुषु ।  
 उपाकर्माणि चोत्सर्गस्वशाखाश्चोत्रियेतथा । संध्यागर्जितनिर्घातभक्तं पोल्लकानि  
 पातने । सामाज्यवेदं द्युनिशमारणयकमधीत्य च ॥ पंचदश्यां चतुर्दश्यामष्टम्यां रा  
 हुसूतके । ऋतुसंधिषु भुक्त्वा वाग्नाद्विकंप्रतिगृह्य च । पशुमंडूकनकुलपुष्पाहिमा  
 जरिसूयकैः । कृतेतरेत्त्वहोरात्रं शक्रपातेतथोच्छ्रये । ग्रहगोद्युनिशोक्तावापि प्रस्ता  
 स्तेऽग्रहमित्युक्तं प्राक् । स्मृयर्थसारेतुरात्रौ तु गृहेति सौरात्रीः दिवा च ज्यहमित्यु  
 क्तं । ऋतुः सौरः भुक्त्वेत्युत्सवविषयं । ऊर्ध्वभोजनादुत्सवे इति गौतमोक्तेः । आ  
 द्विकं सहैकोद्विष्टभिन्नं । तत्र तु ज्यहमितिसनुः ( स्मृयर्थसारे चैवं यत्तु पश्चाद्यंत  
 रायेऽग्रहमुपवासो विप्रवासश्चेति गौतमोक्तं तत्र प्रथमाध्ययने ( याज्ञवल्क्यः )  
 पृक्कोष्टगर्दभोलूकसामबाणार्तिनिःस्वने । अमेध्याशवशूद्रांत्यप्रसशानपतितान्तिके  
 देशेषु चावात्मनि च विद्युत्स्तनितसंज्ञवेभुक्त्वाद्र्पाणिगारं भोतरर्धरात्रेति । मारुते ।  
 पांशुप्रवर्येदिरदाहेसंध्यानीहारभीतिषु । धावतः पतिगंधे च शिष्टे च गृहमागते ।  
 खरोष्ट्या न हस्त्यप्वनौ वृक्षगिरिरोहणौ । सप्तविंशदेन ध्यायने तांस्तात्कालिका  
 न्विदुः । बाणो वंशः शततंतुर्वीरोतिहरदत्तः । अमेध्यासूतिकादयः । स्तनितं गर्जः ।  
 वर्यातो न्यत्र गर्जवृष्टिविद्युतां यौगपद्ये आकालिकः । वर्यासु तात्कालिक इति ना  
 रायणाः । संध्यागर्जे तु हारीतः । सायं संध्यास्तनिते रात्रिः । प्रातः संध्यास्तनिते हो  
 रात्रं रात्रौ विद्युत्परराज्यवधिः ॥ विद्युत्तिनक्तं चापररात्रादिति गौतमोक्तेः ।  
 तृतीयदिनां शोत्तरंतु विद्युत्तिस्वरात्रमित्याह सख । विभागादिप्रवृत्तौ सर्वमिति ॥  
 अर्धरात्रे मध्यया मध्यमिति विज्ञाने चरः ( मध्यदंडचतुष्टय इति निर्ग्यामृते ( मनुः )  
 न विवादेन कलहेन सेनायां न संगरे । न भुक्तमात्रे नाजीर्णं न वसित्वानसूतके । रुधि  
 रे च सुते गात्राच्छ्रेणा च परिक्षते ( कौर्म ) प्लेढमातकस्य छायायां शाल्मलेर्मधुक

स्यच । कदाचिदपि नाध्येयं कोविदारकपितृयोः (मनुः) शयानः प्रौढपादश्च  
 कृत्वा चैवावसथिक्ताम् । नाधीयीताभियंजग्ध्वासूतकाच्चाद्यमेवच । प्रौढपादः  
 पादोपरिपाददाता ॥ आसनाखण्डपादेवेतिहरदत्तः । सोपपदास्वेतिप्रागुक्तं  
 स्मृत्यर्थसारेष्ववशाद्वादशीमहाभरतयोः । प्रेतद्वितीयायारथसप्तम्यामाकाशेश  
 वदर्शनेचाहोरात्रं । असपिंडेगुरौमृतेत्रिरात्रम् । आचार्येउपाध्यायेचपक्षिणी ।  
 आचार्यभार्यापुत्रशिष्योऽवहोरात्रम् । अग्न्युत्पातेगोविप्रमृतौत्रिरात्रम् । अयने  
 विद्युवेचपक्षिणी । अकालवृष्टौत्र । आररायमाजरीसर्पनकुलपंचनखादेरंत  
 रागमनेत्रिरात्रम् । आररायश्चसृगालादिवानररजकादौद्वादशरात्रं । खरवरा  
 होष्टुचांडालसूतिकोदक्याशवादीमासम् । गोगवयाजानास्तिकादौत्रिमासं ।  
 शशमेघश्चपाकादौषरामासं । गजगंडसारससिंहव्याघ्रमहापापिकृतधनादावन्द  
 मनध्यायः । शोभनदिनेचानध्यायः विवाहप्रतियोद्यापनादिदवासमाप्तेःस  
 गोत्राणामनध्यायः । उदयेस्तमयेचापिमुहूर्तत्रयगामियत् । तद्दिनंतदहोरात्रंचा  
 नध्यायविदोविदुः । केचिदाहुः । क्वचिद्देशेयावत्तद्दिननाडिकाः । तावदेवत्व  
 नध्यायोत्तन्मिश्रेदिनांतरे । प्रदोषंत्वाहप्रजापतिः । यद्यीचद्वादशीचैव अर्धरा  
 त्रीननाडिका । प्रदोषेनत्वधीयीततृतीयानवनाडिका (निर्यायामृतेगर्गः) रात्रौ  
 यामत्रयादवाक्सप्तमीवात्रयोदशी ॥ प्रदोषःसतुविज्ञेयःसर्वविद्याविगर्हितः ।  
 रात्रौनवमुनाडीयुचतुर्थीयदिदृश्यते ॥ प्रदोषःसतुविज्ञेयःसर्वविद्याविगर्हितः  
 (कौर्मै)अनध्यायस्तुनांगेयुनेतिहासपुराणयोः ॥ नधर्मशास्त्रेऽवन्येषुपर्वरायेता  
 निवर्जयेत् (शौनकः)नित्येजपेचक्रान्येचक्रतौपारायणोपिच । नानध्यायोस्ति  
 वेदानांश्रुतिग्राहणोस्मृतः । इत्यनध्यायाः (अथमहानास्त्र्यादिव्रतं ॥ श्रीधरः)  
 तिथिनक्षत्रवारांशवर्गोदयनिरीक्षणां ॥ चौलवत्सर्वमाख्यातंसगोदानव्रतेषुच  
 (मयांलोपेशौनकः)व्रतानिविधिनाकृत्वास्त्रशाखाध्ययनंचरेत् ॥ अकृत्वाभ्यस्य  
 तेयेनसपापोविधिघातकः । प्रत्येकंकृच्छ्रमेकैकंचरित्वाऽग्राहुतीः शतं । हुत्वाचै  
 वतुगायत्र्यास्त्रायादित्याहशौनकः (स्मृत्यर्थसारे) त्रीनषट्द्वादशवाक्यकृच्छ्रान्  
 कृत्वाऽनव्रतंचरेदित्युक्तं (अथसमावर्तनं । सुरेश्वरः) भौमभानुजयोर्वारेनक्षत्रे



चत्रतोदिते । ताराचंद्रविशुद्धौचस्यात्समावर्तनक्रिया (बौधायनसूत्रे) रोहि  
 रायांतिथ्येउत्तरयोः फाल्गुन्योर्हस्तेचित्रायामेंद्रेविशाखायांवास्नोयादित्युक्तं  
 (वशिष्ठः) स्नानंमध्याह्नकालेतुहोरायांकारयेच्छुभं । पर्वाल्लेतदभावेतुकुर्यात्स्ना  
 नंयथाविधि ॥ सर्वऋतवोविवास्येति सूत्रात् । यदादक्षिणायनेविवाहस्तदासमा  
 वर्तनमपितत्रैव । अन्यथोदगायनेसमावर्तने । अनाश्रमीनष्टेतेतिविरोधःस्यादि  
 त्युक्तं सुदर्शनभाष्ये । एतच्चब्रह्मचारिव्रतलोपप्रायश्चित्तं कृत्वा कार्यं ( तदाह  
 बौधायनः ) शौचसंध्यादर्भभिक्षाग्निकार्यराहित्यकौपोनोपवीतमेखलादंडाजि  
 नधारणो दिवास्वापच्छत्रपादुकास्रग्विधारणांगोद्वर्तनानुलेपनांजनद्युतनृत्यगी  
 तवाद्यादिभिरतौब्रह्मचारीकृच्छ्रयंचरेत् । महाव्याहृतिहोमंपाहित्रयोदशहोमं  
 चकुर्यात्समावर्तनोत्तरं पूर्वमृतानां त्रिरात्रमाशौचंकार्यम् ॥ आदिष्टीनेदकंकुर्या  
 दाव्रतस्य समापनात् । समाप्ते दकंदत्वात्रिरात्रमशुचिर्भवेदिति मनक्तेः । आदिष्टी  
 ब्रह्मचारीति विज्ञानेश्वरः । ब्रह्मचर्येयदिकश्चिन्नमृतस्तदात्रिरात्रमध्येविवाहः का  
 र्योऽन्यथानेति सिद्धयति । जननेतुसत्यपिनत्रिरात्रम् । तत्रातिक्रान्ताशौचाभावाद्  
 दकंदत्वेति वचनाच्चेतिदिक् ( तत्रापि विकल्पः ) पितर्यपिमृतेनैषां दोषो भवति क  
 हिचित । आशौचं कर्मणांति स्यात् अन्यहंवा ब्रह्मचारिणामिति ॥ छंदोगपरिशिष्टात्  
 ( स्नातकव्रतान्याहव्यासः ) यज्ञोपवीतद्वितयंसोदकंचकमंडलम् । छत्रं वो  
 ष्णीयममलं गदुके चाप्युपानहौ । रौक्मेचकुंडले वेदः कृतकेशनखः शुचिः । वेदो  
 दर्भबटुः ( मनुः ) उपानहौ च वासश्च धृतमन्यैर्नधारयेत् । उपवीतमलंकारं स्रजं व  
 ध्वाकमेव च । अन्यान्यपि बह्वृचगृह्यस्मृत्यादिभ्यो ज्ञेयानि ( अथ कुरिकाबंधः  
 ज्योतिर्निबंधेनारदः ) कुरिकाबंधनंवक्ष्ये नृपाणां प्राक्करग्रहात् । विवाहोक्ते  
 युमासेषु शुक्लपक्षेऽप्यनस्तगे । जीवेशुके च भूपुत्रे चंद्रताराबलान्विते । मौजीबंधर्ष  
 तिथियुक्जवर्जितवासरे ( संग्रहे ) शूद्राणां राजपुत्राणां मौज्यभावेस्त्रबंधनं । मौ  
 जीबंधोक्ततिथ्यादौ कार्यं भौमदिनं विना ( अथ विवाहः याज्ञवल्क्यः ) अवि  
 श्रुतब्रह्मचर्यैर्लक्षरायां स्त्रियमुदहेत् । अनन्यपूर्विकांकांतामसपिंडाय वीयसीम  
 अरोगिणां भ्रातृमतीमसमानार्थगोत्रजाम् । लक्षरायां बाह्याभ्यंतरलक्षरौर्युक्ताम्

चाह्यानिकाशीखंडादौ प्रसिद्धानि ॥ अंतरायाश्चलायनोक्तान्यष्टौ पिंडान्कृत्वे  
त्यादीनि (मनुः) असपिंडाद्यमातुरसगोत्राचयापितुः ॥ साप्रशस्ताद्विजाती  
नांदारकर्मणिमैथुने ॥ दत्रिममातुर्गृहीता अपिसपिंडासगोत्रा ॥ तत्कुलनिवृत्तये  
चकारान्मातुरसगोत्रादत्तस्य पितुर्जनककुले पितुरसगोत्रापिसपिंडत्वाच्चियद्वे  
त्यन्यश्चकारः ॥ असपिंडांसापिंड्यरहिताम् । तच्चैकशरीरावयवान्वयेन भवति  
एकस्य हि पितुर्मातुर्वाशरीरस्यावयवाः । पुत्रपौत्रादियुसासात्परंपर्यावाशुक्र  
शोणितादिरूपेणानुस्यूताः । यद्यपि पत्न्याः पत्या सह भ्रातृपत्नीनां च परस्परं नै  
तत्संभवति । तथापि आधारत्वेनैकशरीरावयवान्वयोस्त्येव । अस्थिभिः अस्थी  
नीतिमंत्रलिंगात् । एकस्य हि पितृशरीरस्यावयवाः । पुत्रद्वारा तास्वाहिता इति  
मदनरत्नपारिजातविज्ञानेष्वरादयः । वाचस्पतिशुद्धिविवेकशालपारायातिगौ  
डमैथिलादयोप्येवम् । श्रुतावपि । एतत्प्रादुर्भावकौशिकं शरीरं । त्रीणि पितृतस्त्री  
णि मातृतोऽस्थिस्त्रायुमज्जानः पितृतस्त्वङ्मांससुधिराणि मातृत इति । प्रजामनुप्र  
जायस इति च । चंद्रिकापरार्कमेधातिथिमाधवादयस्तु । एकपिंडदानक्रियान्व  
यित्वसापिंड्यम् । लेपभाजप्रचतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिंडभागिनः । पिंडदः सप्तमस्ते  
षांसापिंड्यं सप्तपौरुषमिति मात्स्योक्तेः । न च पितृव्यादिष्वेतन्नास्तीति वाच्यम् ।  
तत्कर्तृकश्राद्धे देवतैक्येन तत्सत्त्वात् । देवदत्तकर्तृकश्राद्धे हि देवताभूतास्तेषां म  
ध्येयः कश्चिदन्यकर्तृकश्राद्धेऽनुप्रविशति तेषांसापिंड्यं । तद्भार्याणामपि भर्तृ  
कर्तृकश्राद्धे सहाधिकारित्वेन तदन्वयात् । एकत्वं सागताभर्तुः पिंडे गोत्रे च सूतके  
इति स्मृतेषु च । श्रुतीनां च वैराग्यर्थत्वात्तस्य सापिंड्यनिमित्तत्वे मानाभावात् ।  
न च मातुलादिष्वेतन्नास्तीति वाच्यम् । मातामह रूपदेवतैक्यात् । ननु गुरुशिष्या  
देरपि श्राद्धदेवतात्वात् सापिंड्यत्वं स्यात् । किं बहुना सर्वाभावे तु नृपतिः कारयेत्तस्य  
रिक्थत इति मार्कंडेयपुराणाद्राज्ञोपि श्राद्धकर्तृत्वात् सापिंड्यप्रसंगः सत्यम् । पं  
चमात्सप्तमादूर्ध्वमातृतः पितृतस्तथेति याज्ञवल्क्यवचनेन माता पितृ संबंधस्य तत्स  
त्त्वात् । ऊर्ध्वसापिंड्यं निवर्तत इति शेषः । ननु पंचमत्वाद्यत्र नियम्यते न मातृत इ  
त्यादिवाक्यमेतत् । मैवं । मातृकुले पंचमत्वस्य पितृकुले सप्तमत्वस्य च बोधने तुल्य



स्वात् । पौरुषेयत्वाददोषइतिचेत् । तुल्यमन्यत्रापि अन्यकृत् कैराज्ञस्तत्पितृ  
 गांवादेवतात्वाभावाच्च । किंच । अवयवान्वयपक्षेयथायोगकृत्यापरिहारस्तथे  
 हापितेनमातृकुलेपितृकुलेचैकपिंडदानक्रियान्वयित्वंसापिंड्यमित्याहुः । तेनैक  
 स्यपित्रादयाः । यत्पुत्रादयश्चयत्सपिंडाभवंति । अत्रकेचिदुभयतःसापिंड्यनिवृ  
 त्तवेवोदाहोर्नान्यथेत्याहुः । शुद्धचिंतामणिवाचस्पतिहरिदत्तादयस्तु । सगो  
 वत्ववत्सापिंड्यस्यप्रतियोगिकत्वेनसंयोगवदुभयानिरूप्यत्वात् । एकतोनिवृ  
 त्तावन्यतोनिवृत्तेरावप्रयकत्वान्मूल पुरुषमारभ्याष्टमीवरोमूलपुरुषमारभ्य  
 द्वितीयातृतीयादिकांकन्यामुद्धहेदित्याहुः ॥ शिष्टास्तु ॥ नवधवरयोःस्वतःसापिं  
 ड्यं किंतुकूटस्थसंततित्वात्तत्सापिंड्येनैव ॥ अतोष्टमवरंप्रतिकन्यायाअसापिं  
 ड्येपिकन्यायाःकूटस्थेनसापिंड्यात्तत्संततित्वात्तद्वरस्तां प्रतिसपिंड्यवेत्यवि  
 वाहः । सापिंड्यासापिंड्ययोःप्रतियोगिभेदेनाविरोधादित्याहुः । इदमेवचयुक्तं  
 आशौचेप्येवंसापिंड्यं ज्ञेयम् । यत्रतुमध्येविच्छिन्नमपिसापिंड्यमंडकमुतिव  
 त्पुनरनुवर्तते ॥ यथा ॥ कूटस्थात्पंचभ्योःकन्ययोःपुत्रौतत्रनिवृत्तिः । तदपत्ययो  
 स्तत्रनुवृत्तिस्तत्रापिनसापिंड्यासापिंड्ययोर्दोषः ॥ संबंधिभेदात् । तेनतत्रनविवा  
 हः । अत्रकूटस्थमारभ्यगणानाकार्या (तदुक्तं) वध्वावरस्यावातातःकूटस्थाद्यदि  
 सप्तमः । पंचमीचेत्तयोर्मातातत्सापिंड्यं निवर्ततइति । कूटस्थोमूलपुरुषः (विश्व  
 रूपनिबंधे)एवमुक्तप्रकारेणापितृबंधुयुसप्तमात् । ऊर्ध्वमेवविवाह्यत्वंपंचमानमा  
 तृबंधुतः । संतानोभिद्यतेयस्मात्पूर्वजादुभयत्रच । तमादायगणाद्धीमानवरंयावच्च  
 कन्यकाम(स्मृतितत्त्वेनारदः)आसप्तमात्पंचमाच्चबंधुभ्यःपितृमातृतः । अविवा  
 ह्यासगोत्राचसमानप्रवरातथा ॥ अत्रबंधुभ्यइतिपंचमीनिर्देशात् । पितुःपितृवसृ  
 पुत्रात्सप्तमीमातुः । पितृवसृपुत्राच्चपंचमीमपित्यजेत् । सवसन्यबंधुयुज्ञेयसातत्रा  
 पि । त्रिगोत्रात्ययेर्वागपिविवाहंकुर्यात् । वक्ष्यमाणावचनात् । त्रिगोत्रगणानाचमा  
 तामहगोत्रापेक्षया । नतुस्वापेक्षया । अन्यथापितुःपितामहदुहितुर्दोहित्रीपुत्रीप  
 रिगोत्रास्यात्तवध्वाः ॥ मातामहगोत्रापेक्षयातुत्रिगोत्रांतर्गतेनविवाहप्रसंगइतिसं  
 बंधतत्त्वादयोगौडग्रंथाः । संबंधविवेकेशूलपारिणारप्याह । पंचमात्सप्तमाच्चार्वा

गपि त्रिगोत्रांतरिता विवाह्या । असंबद्धा भवेन्मातुः पिंडे नैवोदकेन वा । सा विवा  
ह्या द्विजातीनां त्रिगोत्रांतरिता च येति वृहन्मन्त्रकृतेः सन्निकर्षेऽपि कर्तव्यं त्रिगोत्रा  
त्परतोयदीति देवलोकतेऽर्चेति । सतच्च दासिणात्यानमन्यन्ते, (यत्तु वशिष्ठः) पं  
चमीं सप्तमीं चैव मातृतः पितृतस्तथेति (यच्च विष्णुपुराणम्) पंचमीं मातृपक्षाच्च पि  
तृपक्षाच्च सप्तमीम् । गृहस्थ उदहेत्कन्यां न्यायेन विधिनानृपेति तत्पंचमी सप्तमी  
मतीत्येति व्याख्येयम् । पंचमे सप्तमे चैव येयां वैवाहिकी क्रिया । क्रियापरा अपि  
हिते पतिताः शुद्रतांगता इत्यपरा कर्मरीचिवचनात् (हारलतायां शंखलिखितौ)  
सपिंडता तु सर्वे प्रांगोत्रतः साप्तपौरुषी । पिंडश्चोदकदानं च आशौचं च तदानुगतम् ।  
गोत्रसंतानम् । आशौचं तानभिव्याप्य गच्छतीत्यर्थः (शुद्धिविवेके शुद्धिचिन्तामणी  
चब्राह्मे) सर्वेषामेव वर्णानां विज्ञेया साप्तपौरुषी । सपिंडता ततः पश्चात्समाजो  
दकधर्मता । ततः कालवशात्तत्र विस्मृतौ नाम गोत्रतः । समानोदकसंज्ञा तु तावन्मा  
त्रापि न प्रयति । सप्तोर्ध्वत्रयः सोदका तो गोत्रजाः (तत्रैव ब्राह्मे) अविभक्तधना  
स्त्वेते सपिण्डाः परिकीर्तिताः ॥ तेनाविभक्तधनाभावे विभक्तः सपिंडो धनहारी  
नान्यथेत्यर्थः तेन विवाहे आशौचे धनग्रहणो च त्रिधा सापिंड्यं सिद्धं ॥ यत्तु ॥ पंच  
मीं मातृतः परिहरेत्सप्तमीं पितृतस्त्रीन्मातृतः पंचपितृतो वेति पैठीनसिस्मृतौ ।  
त्रो नित्यनुकल्प इति माधवोक्तेः । पंचमीं सप्तमीं चैव मातृतः पितृतस्तथा । दशभिः  
पुरुषैः ख्याता च द्वात्रिंशत्यां महाकुलात् । उदहेत्सप्तमादूर्ध्वं तदभावे तु सप्तमीम्  
पंचमीं तदभावे तु पितृपक्षेऽप्ययं विधिः । सप्तमीं च तथा षष्ठीं पंचमीं च तथैव च । स  
वमुद्वाहयेत्कन्यां न दोषः शाकटायनः । तृतीयां वा चतुर्थीं वा पक्षयो रभयोरपि  
विवाहयेन्मनुः । प्राह पाराशर्यो गिरायमः यस्तु देशानुरूपेण कुलमार्गेण चोदहे  
त्तनित्यं सव्यवहार्यः स्याद्देहाश्चैतत्प्रदृश्यत इति चतुर्विंशतिमतात् । चतुर्थीमुदहे  
त्कन्यां चतुर्थः पंचमीपि वा । पराशरसते षष्ठीं पंचमीं न तु पंचमीमिति पराशरोक्ते  
प्रचानुकल्पत्वेनापि द्विपञ्चम्यादिपरिणायनं कार्यमिति प्रतीयते । अवहितदभावे  
इति स्पष्टमेवानुकल्पत्वमुक्तम् । तत्र यथाश्रुतं ज्ञेयम् ॥ पूर्वोक्तमरीचिवचोरोद्धात् ।  
वस्तुनि विक्लपा संभवात् । पंचमात्सप्तमास्त्रीनां यः कन्यामुदहेद्द्विजः । गुरुतत्परी



सविज्ञेयःसगोत्रांचैवमुद्धर्तुमिति विष्णुवक्तेः । पराशरस्यसूलाभावाच्च । तस्मान्म  
दनपारिजाताद्युक्तदिशादत्तकसापत्नसंबन्धाद्यनु प्रवेशेब्राह्मणादीनां सत्रियादि  
सपिंडविषयेवापूर्वोक्तानिनेयानि । नत्वनुकल्पइतिभ्रमितव्यं । यत्तु स्मृतिंचंद्रि  
कामाधवादय आहुः । तृतीयेसंगच्छावहैचतुर्थेसंगच्छावहाइतिशतपथश्रुते । त  
स्रांजहृमातुलस्येवयोषांभागस्तेपैतृवसेयीवपामिवेति । गर्भेनूनौजनितादंपती  
करितीचसंव्रवणात् मातृवसुसुताकेचित्पितृवसुसुतांतथा । विवहंतिक्वचिहे  
शेसंकोच्यापिसपिराडतामिति शातातपोक्तेश्चामातुलकन्योद्वाहः कार्यःय  
द्यपिपितृवसु कन्योद्वाहोपि प्राप्तस्तथाप्यस्वर्गलो कविद्विधं धर्ममप्या  
चरेन्नत्विर्तनिषेधाद्वचनांतरेणातदुद्वाहस्याविधानाच्चनकार्यः । अयंतुदाक्षिणा  
त्यशिष्टाचारात् कार्यइति । नचपूर्वोक्तश्रुतीनामर्थवादमात्रता । मानान्तरेणा  
सिद्धौउपरिहिदेवेभ्योधारयतीति वदनुवाद नुपपत्त्याविधिकल्पनात् ॥ (यत्तु  
शातातपः) मातुलस्यसुतामहवा मातृगोत्रान्तथैवच । समानप्रवरांचैवत्यक्ता  
चान्द्रायणांचरेत् ( यच्चलनुः ) पैतृवसेयीभगिनींस्वस्त्रीयांमातुरेवच । मातृपृच  
प्रातुराप्तस्यगत्वाचान्द्रायणांचरेत् । सतास्तिस्त्रास्तुभार्यथीनोपयच्छेतबुद्धिमान्  
( यच्चन्यासः ) मातुःसपिराडाद्यत्नेनवर्जनीयाद्विजातिभिरितितद्गान्धर्वादिवि  
वाहेहमातृविषयमतत्रपितृगोत्रानिवृत्तेः ( अतस्वसार्कडेयपुराणात् ) गान्धर्वा  
दिविवाहेषुपितृगोत्रेणाधर्मविदिति ॥ ब्राह्मादिविवाहेतुपरिरोधैवेति ॥ भट्टसो  
मेश्वरोपितृतीयेऽध्यायेवाक्यपादेमातुलकन्योद्वाहमुदाहृत्यस्मृतिविरोधेनाचार  
प्राप्तस्यास्यवार्तिके बाधोक्तावपिपूर्वोक्तश्रुते लिंगवलीयस्त्वादस्यकर्तव्यता  
माह । तदेतद्वत्तकस्यपालकद्वित्रिसमाहृतसोदरकन्या विषयत्वेन । स्वर्गमातुल  
कन्या विषयत्वेन युगांतरपरत्वेन चोपपन्नमपि अविचारितरमणायंयथात  
थास्तु ( तथापिकलौतावन्निषिद्धमेव ) गोत्रान्मातुःसपिराडाच्चविवाहोगोवध  
स्तथेत्यादिपुराणात् ( माधवीये ) बौधायनोप्यस्यनिन्दामाह । पंचधाविप्रति  
पत्तिर्दक्षिणातस्तथोत्तरतऊर्गाविक्रयोनुपेतेनस्त्रियाच सहभोजनंपर्युषितुभोज  
नमातुलपितृवसुदुहितृपरिणयनमिति । अथोत्तरतःसीधुपानादिकमुक्ताइतर

इतरस्मिन्कुर्वन्तुदुष्यति इतरइतरस्मिन्निति । भद्रसोमेश्वरेणापि स्मृतिविरुद्धा  
नां मातुलकन्योद्वाहादीनामस्मद्वचनादप्रामाण्यमित्युक्तम् ( बृहस्पतिरपि )  
उदूह्यतेदाक्षिणात्यैर्मातुलस्यसुताद्विजैः । सत्स्यादाश्चनराःपूर्वव्यभिचाररताः  
स्त्रियः । उत्तरेसद्यपाश्चैवस्पृश्यान्तृणांरजस्वलाः॥ इत्यनाचारत्वमाह ( अतएव  
हेमाद्रौमात्स्ये ) कर्नाटिकादीनांतत्कारिणांश्राद्धेनिषेधः । वोपदेवेनापिलि  
खितंब्राह्मणम् । यत्रमातुलजोद्वाहीयवैद्यलोपतिः । श्राद्धंनगच्छेत्तद्विप्राःकृतं  
यच्चनिरासिप्रमिति । तस्मान्मातुलतःपंचपितृतःसप्तत्यक्तोदहेदितिसिद्धम् ( स  
म्बन्धविवेकेषुमन्तुः ) ब्राह्मणानामेकपिण्डस्वधानामादशमाद्धर्मविच्छित्तिर्भ  
वति । आसप्तमाद्रिकथविच्छित्तिर्भवति । आतृतीयात्पिण्डविच्छित्तिरन्यथा ।  
पिण्डशौचक्रियाविच्छेदादब्रह्मतुल्योभवति ( अस्यार्थमाहशूलपाणिः ) जीवत  
पित्रादिविकस्यवृद्धप्रपितामहादयस्त्रयः । श्राद्धदेवतात्वात्पिण्डभाजोभवन्ति ।  
तदूर्ध्वत्रयोनवपुरुषपर्यन्तालेपभाजः । श्राद्धकर्त्ताचदशमइति दशमादूर्ध्वसापिं  
ड्यनिवृत्तिः । दशमादित्युपलक्षणां । तेनपितृपितामहजीवनेनवपुरुषपर्यन्तंपि  
तृजीवनेचाष्टपुरुषपर्यन्तंसापिण्ड्यमितिज्ञेयम् ॥ अपुत्रधनग्रहणोसन्निहिताभावे  
सप्तपुरुषपर्यन्तमधिकारः । धनग्राहिणामारभ्यतृतीयः पौत्रः तदूर्ध्वश्राद्धविच्छेदः ।  
अन्यथाधनहारित्वेपुत्रश्राद्धाकरणेब्रह्महत्येत्यर्थः । आतृतीयादित्यनुदकन्या  
विषयम् ॥ अप्रत्तानांतुस्त्रीणांविपुरुषोविज्ञायतइति वशिष्टोक्तेः । सतच्चौशौचवि  
षयंसापिंड्यं नतुविवाहादौ । तत्रपूर्वाक्तवचनैः । पंचमत्वसप्तमत्वनियमादितिमे  
धातिथिप्रमुखादाक्षिणात्याः । वारिदानोत्तरमेतदितिशुद्धिविवेकः । मातृकुलविषय  
यंकानोनकन्यकाविषयंचैतत् । अन्यथाअप्रत्तानांतथास्त्रीणांसापिंड्यं साप्तपौ  
रुषं । प्रत्तानांभर्तृसापिंड्यं प्राहदेवः । प्रजापतिरितिकौर्मणाविरोधःस्यादितिर  
त्नाकरस्मृतितत्त्वादितिगौडग्रन्थाः । युक्तंचैतत् । अन्यथाकन्योत्पत्तौपुरुषत्रय  
पर्यन्तमेवसूतकंस्यान्नोर्ध्वं ( सापत्नमातामहकुलेत्वाह सितोक्षरायांश्रवः ) यद्येक  
जातावहवःपृथक्सेवापृथक्जनाः । एकपिण्डाःपृथक्शौचाः पिण्डस्त्वावर्त्तते  
त्रिषु । पृथक्सेवाभिन्नजातोयाःस्त्रीयुजाताःपृथक्जनाः । सजातीयभिन्नसातृयु



जाताः । अत्र त्रिपुरुषं सापिंड्यमिति विज्ञाने श्वरो व्याचख्यौ (पृथ्वी चंद्रो द्ये सापिंड्यदीपिकायां चैवम्) सदनपारिजाते तु पृथक् क्षेत्रजाः भिन्नमातृजाः पृथक् जनाः भिन्नजातीयाः । एतद्विजातीयसापत्न्यमातृकुले चतुःपुरुषं सापिंड्यं । पंचमीं सप्तमीं चैव मातृतः पितृतस्तथेति विशिष्टोक्तेः । सप्तमीमिति ब्राह्मणादीनां सत्रियादिदारोत्पन्नपितृकुलविषयं चेत् युक्तं । तत्स्वकपोलकल्पितत्वात् । ग्रन्थांतरविरोधाच्च निर्मूलम् । पितृपत्न्यः सर्वासातर इत्युक्तासु संतुना तदपत्यानि भागिनेया नीतिपृथङ्निषेधाच्च । अन्यथा सापिंडत्वेन निषेधात् । सपत्न्यमातृलत्वादि निर्देशो व्यर्थः । अतएव तेन स्मृतिकौमुद्यां सवर्णासापत्न्यमातामहकुलपरत्वेन तथैव प्रख्यवचनं व्याख्यातम् । तेन वा शिष्टं पंचमीं सप्तमीं मतीत्येति व्याख्येयम् । तस्मात् प्राच्ये व्याख्यायुक्ता प्रयोगरत्ने भद्वैः । स्मृतितत्त्वादिगौडग्रन्थेषु च सपत्न्यमातामहकुले यावदुक्तं वाचनिकमेव सापिंड्यमुक्तम् (यथा ह सुसंतुः) मातृपितृसंबन्धाच्चासप्तमादिविवाह्या भवति । आपंचमादन्येषां पितृपत्न्यः सर्वासातरस्तद्भ्रातरो मातुलास्तद्भगिन्यो मातृव्यसारस्तद्दुहितरश्च भगिन्यस्तदपत्यानि भागिनेयानि । अन्यथा संकरकारिणाः स्युस्तथा ध्यापयितुरेतदेवेति । आपंचमादिति मातृकुले त्रिगोत्रांतरितविषयं वेति प्राच्याः (मातृस्ये) समानप्रवराचैव शिष्ट्यसंततिरेव च । ब्रह्मदातुर्गुरोश्चैव संततिः प्रतीयित्थ्यते । तद्भगिन्यो मातृव्यसार इति तु आकरेण परितम् । क्वचिद्वचनाद्विवाहः (यथा गृह्यपरिशिष्टे) अविद्वत्संबन्धामुपयच्छेतेत्युक्त्वा विरुद्धसंबन्धः स्वयमेवोक्तः । यथा भार्यास्त्वहर्दुहिता पितृव्यपत्नी स्वसा चेति (बौधायनः) मातुः सपत्न्या भगिनी तत्सुतां च विवर्जयेत् । पितृव्यपत्न्या भगिनी तत्सुतां च विवर्जयेत् । अतो मातृव्यसुः सापत्न्यपुत्रकन्याप्यविवाह्या सपत्न्यमातृकुलजामिति सदनपारिजातोक्तेरितिकेचित् । केचित्तु ज्येष्ठो भ्राता पितुः सम इति मनूक्तेस्तत्पत्न्या मातृत्वात् तत्पितुर्मातामहत्वात् । ज्येष्ठभ्रातृपत्नी भगिनी न विवाह्या (तथा) उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान् ब्रह्मदः पितेति मनूक्तेर्गुरुणा त्रिपुरुषं सापिंड्यं स्वर्गापि निषिध्यः । अतस्तेषां कन्या नोद्वाह्याः । गायत्र्या उपदेशेषु च कन्या नैवोद्वाहेद्विजः । श्वरोश्च कन्यां शिष्टयोवां तत्संतत्यापि नेष्ट्यते । पुरुषत्रयपर्यंतं भ्रात्रादेर्न

तदिच्छते । वाक्संबन्धकृतानांतुस्नेहसंबन्धभागिनां । विवाहोन्नतकर्तव्यो लोकागर्हा  
 प्रसज्यत इति वचनाच्चेत्याहुः । तत्र सलं चिंत्यम् । दत्तकविययेतु च्यते (तत्र गौतमः) ऊ  
 र्वसप्तमात्पितृबन्धुभ्यो बीजिनप्रचमात्तृबन्धुभ्यः । पंचमादितितृबन्धुग्रहणान्न दत्तक  
 मात्रपरमिदम् ॥ किंतु संतानेपि । एतत्तत्क्षेत्रजादिसर्वदद्या मुख्यायगापरमिति हर  
 दत्तः । अत्र स्मृतिचन्द्रिकानियोगात् । यउत्पादयति तस्माद्बीजिनोप्यूर्ध्वसप्त  
 मादित्यर्थ इति । दत्तकस्य जनकविययमे तदितिसापिंड्यमीमांसायां तेन दत्तक  
 स्य जनककुले साप्तपौरुषं जननीकुले पञ्चपौरुषसापिंड्यं । दत्तक्रीतादिपुत्राणां  
 बीजवतुः सापिंडता । सप्तमी पंचमी चैव गोत्रित्वं पालकस्य चेति बृहन्मनुक्तेः ।  
 बीजिनप्रचेति गौतमोक्तेश्च । पालकपितृकुले तु पंचपुरुषं । पालकमातृकुले त्रिपु  
 रुषं (तथाचापराकर्षेपीतीति नसिः) त्रीन्मातृतः पंचपितृतः पुरुषानतीत्योदहेदिति ।  
 एतत्समव्याचरव्यौ । दत्तकादीन्पुत्रान्पितृपक्षतो निवृत्तपिंडगोत्रार्पणान्प्रत्ये  
 तदुच्यते पञ्चपितृत इति नान्यत्रानुप्रतीति (यत्तु बृहद्गौतमः) स्वगोत्रेषु कृतायेत्यु  
 दत्तक्रीतादयः सुताः । विधिना गोत्रमायांतिनसापिंड्यं विधीयते (यच्च वशिष्ठः)  
 अन्यशाखोद्भवो दत्तः पुत्रश्चैवोपनायितः । स्वगोत्रेणास्वशाखोक्तविधिनारया  
 त्स्वशाखभागिति (यच्च नारदः) धर्मार्थवर्धिताः पुत्रास्तत्तद्गोत्रेणापुत्रवत् । अंश  
 पिण्डविभागित्वं तेषु केवलमीरितमिति । तत्पालककुले साप्तपौरुषसापिंड्यं ने  
 त्येवं परं न तु सर्वथा सापिंड्यनिषेधपरमितिसापिंड्यमीमांसायाम् । मदनपारि  
 जातादिपि दत्तकानुप्रवेशोऽल्पसापिंड्यं प्रतिभाति ॥ तथाहि ॥ तेन त्रीनतीत्येत्युदा  
 हृत्य यस्य माता दत्तपुत्री प्रतिगृहीता पुत्रीकृता तस्याः प्रतिगृहीतकुले त्रीनतीत्येति ।  
 पंचपितृत इति यस्य दत्तपुत्रः पिता तस्य दत्तस्य यज्जनककुलं तद्विषयमित्युक्तमव  
 स्तुतस्तु पूर्ववचसां महानिबन्धेषु क्वाप्यनुपलंभादपराकार्दिलिखनाभावात् ।  
 पूर्वोक्तव्यवस्थायाम् च प्रातिभिज्ञानतुल्यत्वाद्यैरेतल्लिखितं तेषामेव शोभते । मम  
 तु पालककुले एकपिंडदानक्रियात्वात् यत्स्वरूपं साप्तपौरुषमेव सापिंड्यं । बीजि  
 नप्रचेति गौतमोक्तेर्जनककुले पितावदेव त्रीन्मातृत इत्यादितु सवर्णासापत्नमातृ  
 कुलपरं । यद्येकजाता बहव इति शांख्यैकक्यत्वादित्युक्तं प्रतिभाति । अतस्त्वा



स्यह्यामुष्यायणात्वंहेमाद्रिप्रवरमंजरीवृत्तिहन्तारायणादिभिरुक्तम् । भद्रुसोभे  
 श्वरेणापिपृथायाःकुन्तिभोजस्यपालककन्यात्वेपि । ऊर्ध्वसप्तसात्पितृवन्धु  
 बीजिनश्चेतिगौतमोक्तेर्द्विमायाः पृथायाःजनकस्यशूरसेनस्यकुलोपिमाप्तपौ  
 रुष्यपालककुलेपितावदेवसापिराड्यमुक्तमपिवाकारणाग्रहणोऽत्यत्र सापिराड्य  
 दीपिकायांतुदत्तक्रीतादीनांजनकगोत्रेणोपनयनेकृते जनककुलेसाप्तपौरुष्यसा  
 पिराड्यम् । पालकमातापितृकुलेत्रिपुरुषं । पिराडनिर्वापान्निर्वाप्यलसरांवि  
 पुरुषंसारिड्यमपालकगोत्रेणोपनयनेतत्कुलेसाप्तपौरुष्यमित्युक्तम् । तन्न । चू  
 डोपायनसंस्कारानिजगोत्रेणवैकृताः । दत्ताद्यास्तनयास्तेस्युरन्यथादासउच्य  
 तइतिकालिकापुराणादुपनयनोत्तरंदत्तकनियेधात् । त्रिपुरुषमित्यत्रापिसूत्रं  
 मृग्यमित्यलम्बहुना ( मातापितृद्वारकसापिराड्यवतीनांकन्यानामियंसंख्या  
 रामवाजपेयिनोक्ता ) उद्बोद्धुःपितरौपितुश्चपितरौतज्जन्मकृद्दम्पतीद्वंदंतस्यच  
 तुष्टकमष्टचततोप्यस्यक्रमात्तयोऽष्टा । वंशारम्भकदम्पतीप्रमिति रित्यासप्तकक्षं  
 रदाएकैकान्वयकन्यकाःपितृकुलत्वासप्तकक्षंब्रुवे । यद्यप्येकस्यबहवःसुताःस्यु  
 स्तदपीहतु । सम्बन्धसम्यादेकैकगणितातेत्यवधारयताम् । एकस्मान्मिथुनात्तु  
 तोयदुहिताद्वंद्वयंतद्वया तस्माद्वंद्वचतुष्टकमष्टचततोतःयोऽष्टां१२प्रो रदाः ॥  
 यावत्सप्तमकक्षमग्निऋतवःकन्याइहैकान्वये तादंतैर्गुणितारमैकसदृशोवंशे  
 सपिराडाःपितुः । मातुर्जन्मददम्पतीचमिथुनद्वंदंतयोःसागरास्तस्याःपंचमकक्ष  
 मष्टमिति रित्येकान्वयःपुंहुते । द्वंदाद्वाद्युगंभतोन्वयइतो१२ष्टौपंचकक्षंशरसो  
 रायःसप्तगुणाःशराभ्रविधवोमातुःसपिराडाःकुले । कुलद्वयस्यकन्यकायुतामियः  
 सपिराडकाः । हिमांशुदुग्धरादृशोविवाहकर्मवर्जिताइति । सतच्चसर्ववर्गासा  
 धारणां । सर्वत्रसापिराड्यसद्भावादिति विज्ञानेश्वरोक्तेः । पंचसात्सप्तमादूर्ध्वमा  
 तृतःपितृतःक्रमात् । सपिराडतानिर्वर्तेतसर्ववर्गोऽवयंविधिरितिहरनाथधृतदेव  
 लवचनाच्च । सम्बन्धतत्त्वेसुमंतुः । पितृवस्तुसुतामातृवस्तुसुतांमातुलसुतांमातृ  
 सगोत्रांसमानार्थेयींविवाह्य । चांद्रायणांचरेत्परित्यज्यैनांमातृवद्विभृयादिति  
 दिक् । ऋषेरिदमार्घ्यप्रवरः । गोत्रप्रसिद्धं । समानेआर्घ्येगोत्रेयस्यतस्माज्जाता

यानभवतिताम (अथसंसेपेरागोत्रप्रवरनिर्णयः) तौचभिन्नौनिघेवेनिमित्तम् ।  
सगोत्रायदुहितरंनप्रयच्छेदित्यापस्तंबोक्तेः । असमानप्रवरैर्विवाहइतिगौतमो  
क्तेश्च (तत्रगोत्रत्वसामाहप्रवरमंजयाबोधायनः) विश्वामित्रोजसदग्निर्भरडा  
जोयगौतमः । अत्रिर्विशिष्टः कश्यपइत्येतेसप्तऋषयः । सप्तानामृषीणामगस्त्या  
समानांयदपत्यंतद्गोत्रमिति । यद्यपिकेवलभागविष्वाधिर्येरादियुक्तेवलांगिर  
सेयुचहरितादिषुचनैव । भृग्वंगिरसोरुक्तेष्वनंतर्गतेः तथाप्यत्रेष्टापात्तरेवेति  
केचित् । अतएवस्मृत्यर्थसारे । प्रवरैक्यादेवात्राविवाहइतः । यद्यपिविशिष्टादी  
नान्तगोत्रत्वंयुक्तं । तेषांसप्तार्यित्वेनतदपत्यत्वाभावात् । तथापितत्पूर्वमावित्र  
शिष्टाद्यपत्यत्वेनगोत्रत्वंयुक्तम् । अतएवपूर्वेषांपरेषांचैतद्गोत्रम् । अत्रविशेषो  
ऽस्मत्कृतप्रवरस्यसोज्ञेयः । प्रवरास्तुप्रवरगानिप्रवरः । कल्पकाराहिविशिष्टे  
तिहोतावशिष्टेवदित्यध्वर्युरित्यादिना येषांप्रवरगामामनंतितेप्रवराः । तच्चप्र  
रांयद्यपिर्काचदृश्यते । तथापिपूर्ववद्विभेदोद्विष्यः । अन्यथातेषांज्यार्येयस  
कार्येइत्यादिनिर्देशानुपपत्तेः । अन्येतुतद्गोत्राणांज्यार्येयइतिभेदमाहुरितिदि  
क् ॥ तत्त्वंतुगोत्रभूतस्यपितृपितृमहर्पितामहाएवप्रवराः । पितृवाप्रेयपुत्रो  
यपौत्रइतिशतपथ्युक्तेः । परंपरंप्रथममित्याश्रयायनोक्तेश्च (अत्रविशेषमा  
हबोधायनः) एकस्यवह्निर्यावत्प्रवरैष्वनुवर्तते । तावत्समानगोत्रत्वमन्यत्र  
भृग्वंगिरसांगणार्दिति । (स्मृत्यर्थसारे) प्रीयमराणात्यावापिसत्तयावानुवर्तन  
म् । एकस्यदृश्यतेयत्र तद्गोत्रंतस्यकथ्यते (भृग्वंगिरोगोयुतुमाधवीयेस्मृ  
त्यंतरे) पंचार्येविषु सामान्यादिविवाहस्त्रिषुहयोः । भृग्वंगिरोगोयवेवशेषे  
ष्वेकोपिवारयेत् । शेषगोत्रेषुएकोपिसमानः प्रवरीविवाहंवारयेदित्यर्थः ।  
बोधायनोपि ॥ भृग्वंगिरसावधिक्षत्यद्वयार्येयसच्चिपाते ॥ विवाहस्त्वार्येयस  
च्चिपातेविवाहः । पंचार्येयाराणामितिभृग्वंगिरोगोयवपिजसदग्निगौतमभरडा  
जेठवेकप्रवरसाम्ये सर्वेषामन्यसाम्येवा सगोत्रत्वादेवाविवाहइतिदिक् (अथ  
गोत्राणिप्रवराप्रचोच्यंते ॥ तत्रबोधायनः) गीवाणांतुसहस्राणिप्रयुतान्यवु  
दानिच । ऊनपंचाशदेवैषांप्रवराऋषिदर्शनात् । तत्रसप्तभृगवः । वत्साविदात्रा



ऋषिग्रेषामयस्का मित्रयुवावैन्याः शुनका इति । वत्सानां भार्गवच्यावनाप्रवानौर्व  
 जामदग्न्येति । भार्गवौर्वजामदग्न्येतिवा । भार्गवच्यावनाप्रवावेतिवा । विदा  
 नांपंच । भार्गवच्यावनाप्रवानौर्ववैदेति । भार्गवौर्वजामदग्न्येतिवा । एतौ द्वौ जा  
 मदग्न्यसंज्ञौ । आर्षिग्रेषामाणां । भार्गवच्यावनाप्रवानां ऋषिग्रेषामनूपेति । भार्गवा  
 ऋषिग्रेषामनूपेतिवा । सखां त्रयाणां परस्परमविवाहः ॥ वात्स्यानाम ॥ भार्गवच्या  
 वनाप्रवानेति । वत्सपुरोधसयोः पंच । भार्गवच्यावनाप्रवानवास्यपौरोधसेति  
 वैजवन्तिमतिथयोः पंच । भार्गवच्यावनाप्रवानवैजवन्तैमथितेति । एते त्रयः कश्चि  
 दासप्रसपिपर्वैरविवाहः । अत्र तत्तद्व्याख्याः ऋषयोऽन्यत्र च विशेषोऽस्मत्कृते प्रवर  
 दर्पणो ज्ञेयः । यस्का नाम । भार्गववैतहव्यसावेतसेति । मित्रयुवानाम् । भार्गव  
 वाध्यश्च दिवोदासेति । भार्गवच्यावनादिवोदासेतिवा । वाध्यश्चेत्येकोवा । वैन्या  
 नां भार्गवैवैन्यपार्येति । एतस्य प्रथेताः । शुनकानां शुनकेतिवा । मात्स्यमदेति द्वौ  
 वा । भार्गवौ न होत्रमात्स्यमदेति त्रयोवा । वेदविश्वज्योतिषां भार्गववेदवैश्वज्योति  
 येति । शाठरमाठराणां भार्गवशाठरमाठरेति । एतौ द्वौ कश्चित् । यस्कादीनां स्व  
 गणां त्यक्त्वा सर्वे विवाहः (तदुक्तं स्मृत्यर्थसारे) यस्का मित्रयुवावैन्याः शुनकाः प्रवरे  
 क्यतः ॥ स्वं स्वं हि त्वागणां सर्वे विवहेयुः परावरैरिति । अथांगिरसः ते गौतमाः भर  
 द्वाजाः केवलांगिरसश्चेति त्रिधा । अवगौतमादश । आयास्याः । शरद्वंताः  
 कौमंडादीर्घतमसः । औशनसः । कारेणुपालेयाः । राहुगणाः । सोमराजकाः  
 वासदेवाः बृहदुक्ताश्चेति । तत्रायास्यानां । आंगिरसायां स्य गौतमेति । शरद्वं  
 तानां आंगिरसगौतमशरद्वन्तेति । कौमंडानां आंगिरसौतथ्यकाक्षीवन्तगौतम  
 कौमंडादेतिवा ॥ आंगिरसायां स्वर्गौशनसगौतमकाक्षीवन्तेतिवा । आंगिरसौतथ्या  
 गौतमौशनसकाक्षीवन्तेतिवा । आंगिरसौशनसकाक्षीवन्तेति त्रयोवा । दीर्घत  
 मसां । आंगिरसौतथ्यकाक्षीवन्तगौतमदीर्घतमसेति । आंगिरसौतथ्यदीर्घतमसे  
 ति त्रयोवा । औशनसां । आंगिरसगौतसौशनसेति त्रयः । कारेणुपालानां । आं  
 गिरसगौतमकारेणुपालेति त्रयः । राहुगणानां आंगिरसराहुगणगौतमेति ।  
 सोमराजकानां । आंगिरससोमराजकगौतमेति । वासदेवानां । आंगिरसवास

देव्यगौतमेति । बृहदुक्त्यानां । आंगिरसबार्हदुक्त्यगौतमेति । आंगिरसबामदेव  
 बार्हदुक्त्येतिवा । अतथ्यानामांगिरसौतथ्यगौतमेति । औशिजानामांगिरसौ  
 शिजकाशीवतेत्यापस्तंबः । आंगिरसायास्यौशिजगौतमकाशीवतेतिकात्या  
 यनः । सतौडौक्कचित् । रघुवानां । आंगिरसराघुवगौतमेतिकेचित् । तत्रमलं चिं  
 त्यत । सयांसर्वेवांगौतमानामविवाहः (अथभरद्वाजाः) तेचत्वारः । भरद्वाजा  
 गार्गाक्ष्याः कंय्यइति । भरद्वाजानामांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजेतित्रयः । गार्ग  
 णासांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजसैन्यगार्ग्येतिपंच । आंगिरससैन्यगार्ग्येतिपंच  
 आंगिरससैन्यगार्ग्येतिवा ॥ अंत्ययोन्यत्ययोवाभारद्वाजगार्ग्यसैन्येतिवा । गार्ग  
 भेदानां । आंगिरसतैत्तिरकाप्रभुवेति । ऋक्षाणांकपिलानांचांगिरसबार्हस्प  
 त्यभरद्वाजवांदनमातवचसेतिपंच । आंगिरसवांदनमातवचसेतित्रयोवा । कपि  
 लानामांगिरसमहीयबोऋक्षयसेति । आत्मभुवास । आंगिरसभारद्वाजबार्ह  
 स्पत्यमंत्रवरात्मभुवेतिपंच । अयंक्वचित् । भारद्वाजानांसर्वेयामविवाहः । अथ  
 केवलांगिरसः । हारितानांआंगिरसांवरीययौवनाश्चेति । आद्योमांधातावा ।  
 कुत्सानाश्च । आंगिरसमांधातुकौत्सेति । कण्वानामांगिरसाजमीढकारावेति ।  
 आंगिरसघोरकारावेति । वारथीतराणांआंगिरसवैरूपराथीतरेति ॥ आंगिर  
 सवैरूपपार्थदश्चेतिवा । अष्टादंष्टपार्थदश्चैरूपेतिवा । अंत्ययोन्यत्ययोवा मुद्  
 गलानामांगिरसभार्ग्याश्चमौद्गल्येति । आद्यस्ताड्योवा । आंगिरसताविमौ  
 द्गल्येतिवा । विष्णुवृद्धानामांगिरसपौरुकुत्सवासदस्यवेति । स्यांस्त्रगाणांवि  
 हायसर्वेर्विवाहोभवति । हरितकुत्सयोस्तुनभवति (अथात्रेयः) तेचत्वारः ।  
 आत्रेयाः । वाङ्मुत्काः । गविष्टिराः मुद्गलाइति । आद्यानामात्रेयार्चनानसप्रया  
 वाश्चेति । वाङ्मुत्कानां । आत्रेयार्चनानशवाङ्मुत्केति । घनंजयानांआत्रेयार्चना  
 नशधानंजयेतिक्वचित् । गविष्टिराणांआत्रेयार्चनानशगविष्टिरेति । आत्रेयगावि  
 ष्ठिरपौर्वीतिथेतिवा । मुद्गलानामात्रेयार्चनानशपौर्वीतिथेति । वासरथ्यसुमं  
 गलवैजवापानामात्रेयार्चनानशातिथेति । आत्रेयार्चनानशगाविष्टिरेतिवा ।  
 सुमंगलानांअत्रिसुमंगलस्यावाप्स्वेतिकेचित् । अत्रेःपुत्रिकापुत्राणाम् । आत्रेय



वामरय्यपौत्रिकेति । अत्रीणां सर्वेषामविवाहः । ( अथविप्रवासित्राः ) तेदश  
 कुशिकाः । लोहिताः । रौसकाः । कामायनाः । कलाः । वनजयाः । अधमर्यगाः  
 पूरगाः । इन्द्रकौशिका इति । कुशिकानां विप्रवासित्रदेवरातौदलेति । लोहि  
 तानां विप्रवासित्राष्टकलोहितेति । अंत्ययोन्यत्ययोवा । वैश्वामित्रमाधुच्छंद  
 साष्टकोतिवा । विश्वामित्राष्टकोतिद्वौवा । रौसकाणां वैश्वामित्रगाथिनरैवसो  
 तिवैश्वामित्ररौसकरैवसोतिवा । कामकायनानां वैश्वामित्रदेवश्रवमदैवतरसे  
 तिवा । अजानां वैश्वामित्रमाधुच्छंदसाचेति । वैश्वामित्राप्सरय्यवाधुलेतिवा ॥  
 अधमर्यसप्तानां वैश्वामित्राधमर्यगाकौशिकेति । परगानां वैश्वामित्रपौरसोति  
 द्यौवा । वैश्वामित्रदेवरातप्रसोतिवा । इन्द्रकौशिकानां वैश्वामित्रेन्द्रकौशिके  
 तिद्वौ । वनजयानां विश्वामित्रमाधुच्छंदसवानंजयेति । वैश्वामित्रमाधुच्छंदसा  
 धमर्यगोत्रमाकृतानां वैश्वामित्रकात्यास्कीलेति । सत्तेवौधमयनोक्ताः । रौहिणानां  
 वैश्वामित्रमाधुच्छंदसरौहिणोतिगा । रेगानां वैश्वामित्रगाथिनरैवावेति । वेगा  
 नां वैश्वामित्रगाथिनरैवावेति । जहूनां वैश्वामित्रशालंकायनकौशिकेति । आ  
 प्सरय्यपानां । वैश्वामित्राप्सरय्यवाधुलेति । उदवेगानां वैश्वामित्रगाथिनरैवावे  
 ति । सत्तेवाश्चयवामात्स्योक्ताः । अन्यैस्त्वन्येपि यदुगुणाउक्ताः । तेऽन्यधमत्क  
 तौसेमाः । अथविप्रवासित्राणामविवाहः । ( अथकश्यपाः ) तेपंच । निधुवाः ।  
 कश्यपाः । शांडिलाः । रेशाः । लौगाक्षयश्च । निधुवाणां काश्यपावत्साररै  
 ववेति । कश्यपानां काश्यपावत्सारसितेति । रेशाणां कश्यपावत्साररैभ्येति ।  
 शांडिलाणां काश्यपावत्सारसितेति । रेशाणां कश्यपावत्साररैभ्येति । शा  
 ण्डिलानां काश्यपशांडिल्येति । अंत्यस्थानेदेवलोवासितोवा । शांडिलासितदे  
 वलेतिवा । कश्यपासितदेवलेतिवा अंत्ययोन्यत्ययोवा । देवलासितेतिद्वौवा ।  
 लौगाक्षीनवद्व्यासः । सप्तकश्यपानामविवाहः । ( अथवशिष्टाः ) तेपंच । व  
 शिष्टाः । कुडिताः । उषसंयवः । पराशराः । जातुकरायाश्चेति । वशिष्टानां ।  
 वाशिस्येदप्रमीडाभरहस्विति । वाशियेत्येकोवा । कुडिनां वशिष्टमैवावसरा  
 कौशिक्येति । उषसंत्युनां । वाशियेदप्रमदभिरहमव्येति । वाशियभरहस्व

द्रुप्रमदेतिवा । आद्ययोर्व्यत्ययोवा । पराशराणांवाशिशुशाक्यपाराशर्येति ।  
जातकरार्यानां । वाशिशुशुजातकरार्येति । वाशिशुशुनांसर्वेषामविवाहः । अं  
त्यस्यात्रिभिश्च (अथागस्त्याः) तेचत्वारः । इधमवाहाः । सांभवाहाः । सो  
मवाहाः । यज्ञवाहाश्चेति । आद्यानांआगस्त्यदार्ढ्यच्युतैधमवाहेति । आग  
स्त्येकोवा । सोमवाहानां । आगस्त्यदार्ढ्यच्युतसोमवाहेति । सांभवाहानांसां  
भवाहोत्थः । यज्ञवाहानांयज्ञवाहोत्थः । आद्यौपूर्वाक्तावेव । सारवाहानांतदं  
तास्त्रयः । दर्भवाहानांतदंतास्त्रयः । अगस्तीनामागस्त्यसाहेंद्रमायोभवेति । पर्णा  
मासानां आगस्त्यपौर्णमासपारणोति । हिमोदकानां आगस्त्यहैमचर्चिहै  
मोदकेति । पाणिनामागस्त्यपैनायकपाणिनेति । एतेषुत्क्रचित्त । अग  
स्तीनांसर्वेषामविवाहः (अथद्विगोत्राः) शौंगशौशिरीणां । आंगिरसबार्हस्प  
त्यभारद्वाजकात्याक्षीलेतिपंच । कात्याक्षीलथोःस्थानेशौंगशौशिरीवा । आं  
गिरसकात्याक्षीलेतित्रयोवास्याभरद्वाजैर्विप्रवामित्रैश्चाविवाहः । एवंकपिला  
नांकतानांचसंस्कृतिपृतिमायादीनां । आंगिरसगौरिवीतसांकृत्येति । शाकत्य  
गौरिवीतसांकृत्येतिवास्यांस्वगतास्थैर्विशिष्टैः शौंगशौशिरीलौगाक्षिभिश्चावि  
वाहः । कश्यपैरपीतिप्रयोगपरिजाते । लौगाक्षीणांकाश्यपावत्सारवाशिशु  
ति।काश्यपावत्सारसितेतिवासतेहर्विशिशुनक्तंकश्यपाः । स्यांवशिष्टैःकश्य  
पैः । संस्कृताद्यैश्चविवाहः । देवरातस्यजामदग्न्यैर्विप्रवाविवाहइतिप्रयोगपा  
रिजातेयदुक्तंब्रह्मचश्रुतौ । यथैवांगिरसःसन्नुपेयांतवपुत्रतां । आंगिरसोजन्म  
नास्याजीगर्तिःश्रुतः । कविरित्यंगिरोगास्थत्वेनभार्गवजामदग्न्यत्वस्मृते  
र्वाधात् । तेनप्रत्यक्षश्रुत्याहरिवंशादिस्मृतेश्चवाधात् । तेनद्वौदेवरातौ । एक  
आंगिरसःश्रुत्युक्तः । अन्योभार्गवःतयोः कल्पभेदेप्यांगिरसेनदेवरातेनजमद  
ग्न्येर्भवत्येवविवाहः । भार्गवेणातुनेतितत्वम् । धनंजयानांविप्रवामित्रैरत्रिभिश्चा  
विवाहः । जातकरार्यानांवाशिशुशुर्त्रिभिश्चाविवाहः । एवंदत्तक्रीतकृत्रिमस्व  
यंदत्तपुत्रिकापुत्रादीनांउत्पादकपालकयोः । पित्रोर्गोत्रप्रवरावज्याइतिप्रवर  
मंजरीनारायणावृत्तिप्रयोगपरिजातादयःअत्रसर्वत्रोपपत्तयः । मूलंचसत्कृतेप्र



वरदर्पणोत्तेयमितिदिक् । क्षत्रियवैश्ययोस्तुपुरोहितगोत्रप्रवरावेवेतिसर्वसिद्धां  
तः । यद्यपिबहुवृचपरिशिष्टेकपिभरद्वाजयोर्विवाहउक्तस्तथापि । भरद्वाजा  
श्चकपयोगगारौसायणादिति । चत्वारोपिभरद्वाजगोत्रैक्यान्नावयेयुर्मिथः  
कपिगर्गभरद्वाजामिथौरौसायणाद्विजाः । नोदहेयुःसगोत्रत्वात्प्रवरैक्याच्च  
कुर्वचिदिति । स्मृत्यर्थसाराद्युक्तेरविवाहसंवतयोरितिप्रवरमंजरीयद्यपीदमु  
क्तम् । तथापिभृग्वंगिरोगगोत्रुभक्त्येव ( तथाबहुवृचपरिशिष्टेबौधायनः )  
सकसवक्त्रयियावित् प्रवरैवनुवर्तते ॥ तावत्समानगोत्रत्वमृते भृग्वंगिरोगगणात्  
( माधवीयेस्मृत्यन्तरे ) पंचानांत्रियुसामान्यादविवाहस्त्रियुदयोः ॥ भृग्वंगिरोग  
गोत्रेवंशेषेष्टवेकोपिवारयेदिति देशाचाराच्च ॥ सोप्याभीरदेशेप्रसिद्धः ( चतु  
विंशतिमते ) यस्तुदेशानुरूपेणाकुलमार्गेणाचोदहेत् ॥ नित्यंसव्यवहार्यःस्याद्दे  
वाच्चैतत्प्रदृश्यतइतिदिक् ( तथाचभृगुः ) यस्मिन्देशेपुरेशामेवै विद्येनगरेपिवा  
योयत्रविहितोधर्मस्तंधर्मनविचालयेदिति । पुनश्चतुर्विंशतिमते ॥ यस्मिन्देशे  
शेतुआचारःपारंपर्यक्रमागतः ॥ वर्यानांकिलसर्वेषांसदाचारःसुच्यते ॥ स्व  
गोत्राद्यज्ञानेतुसत्यायादः । अथाज्ञानबन्धोः पुरोहितप्रवरेणाचार्यप्रवरेणावेति  
आचार्यगोत्रप्रवरानभिज्ञस्तुद्विजःस्वयम् । दत्त्वात्मानंतुकस्मैचित्तद्गोत्रप्रवरोभ  
वेत् ॥ यद्वास्वगोत्रप्रवरविधुरोजामदग्निजः । विवाहंचनतेनैवगोत्रेणातुसमाच  
रेदितिकप्रिचत्त ( दिवोदासीयेपि ) स्वगोत्रप्रवराज्ञानेजमदग्निमुपाश्रयेत् ।  
( अथमातृगोत्रनिर्णयःशातातपः ) मातुलस्यसुतासूहृवामातृगोत्रांतर्धेवच । स  
मानप्रवरांचैवगत्वाचांद्रायणांचरेत् ( यद्यपि ) सगोत्रांमातुरप्येकेनेच्छंत्युद्वा  
हकर्मणि । जन्मनाम्नोरविज्ञातेप्युद्वाहेदविशंकितइतिव्यासेक्तेरज्ञातनामत्वे  
नसगोत्रत्वदोषस्तथापिनेदंकलौप्रवर्तते ॥ गोत्रान्मातुःसपिंडाच्चविवाहोगोवध  
स्तथेत्तिकलिवर्जत्वोक्तेः । इदंमातृगोत्रवर्जनमाध्यंदिनीयानामेव । मातृगोत्रं  
माध्यंदिनीयानामपुत्रायाप्रचेति । सत्यायादोक्तेरितिकप्रिचन्महाराष्ट्रकल्पि  
तम् । तन्निर्मूलम् । अन्यथागुर्जरादेः कातीयस्यकुतो ननिषेधः । अतस्वप्रवर  
मंजरीकारः । दोषस्यातिगुरुत्वात्सर्वेषांमातृगोत्रवर्ज्यमितियत्तुगुर्जरादीनांमा

ध्यादिनीयानामप्याचरणाच्च । एकस्मिन्प्रवरेतुल्येमात्सगोत्रेवरस्यच ॥ तमुद्धा  
हंनकुर्वीतसाकन्याभगिनीस्मृतेतिमात्कुलेप्रवरचिंतनमुक्तम् । तदासुरादिवि  
वाहोढापरमितिदिक् । विस्तरस्तुग्रंथांतरेभ्योज्ञेयः ( सगोत्रादिविवाहे प्राय  
श्चित्तंस्मृत्यर्थसारे ) इत्थंसगोत्रसंबंधविवाहविषयेस्थिते । यदिकश्चित्तज्ज्ञानत  
स्तांकन्यासूहवोपगच्छति । गुरुतत्पत्रताच्छुध्येद्गर्भस्तज्जेत्यतां व्रजेत् । भोगत  
स्तांपरित्यज्यपालयेज्जननीमिव । अज्ञानादैर्द्वैः शुद्धयेत्त्रिभिर्गर्भस्तुकप्यपः ।  
सर्वसापिंड्येपि । सपिंडापत्यदारेषु प्रागात्यागोविधीयतइतिबृहद्यसोक्तेः  
( तिथितत्त्वेबौधायनः ) सपिंडांसगोत्रांचेदसत्योपयच्छेन्मात्सवदेनांबिभूयात् ।  
( कन्याविवाहकालउक्तोज्योतिर्निबंधे ) यडब्दमध्येनोढाह्याकन्यावर्यद्वयंयतः  
सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गंधर्वश्चतथाऽनलः ( राजमार्तंडः ) अयुग्मेदुर्भगानारीयुग्मे  
तुविधवाभवेत् । तस्माद्गर्भान्वितेयुग्मेविवाहेसापतिव्रता । मासत्रयादूर्ध्वमयुग्म  
वर्येयुग्मेपिमासत्रयमेवयावत् । विवाहशुद्धिप्रवर्तितसंतोवात्स्यादयःस्त्रीर्जानिज  
न्ममासात् ( पराशरमाधवीयेतु ) जन्मतोगर्भाधानाद्वापंचमाब्दात्परंशुभं । कुमा  
रीवरसांदानंमेखलाबंधनंतथेत्युक्तम् ( संबन्धतत्त्वेयमः ) कन्याद्वादशवर्षागियाप्र  
दत्तावसेदगृहे । ब्रह्महत्यापितुस्तस्याःसाकन्यावरयेत्स्वयं ( भारते ) त्रिंशद्वर्षःश्रो  
डशाब्दांभार्याविंदेतनगिनकां । दशवर्षेऽष्टवर्षावाधर्मसीदतिसत्वरः । अतोप्रवृ  
त्तेरजसिकन्यांदद्यात्पितासकृत् ( तत्रैव ) सप्तसंवत्सरादूर्ध्वविवाहःसार्ववर्षिकः  
कन्यायाःशस्यतेराजन्नन्यथाधर्मगर्हितः ( राजमार्तंडः ) राहुग्रस्तेतथाशुद्धेपितृ  
शांप्राणासंशये । अतिप्रौढाचयाकन्याचंद्रलरनबलेनतु । चकारादतिबाला । प्रा  
णासंशयइत्युक्तेः ( मनुः ) त्रिंशद्वर्षावहेत्कन्यांकृत्वाद्वादशवर्षिकीं । द्व्यष्टवर्षा  
ष्टवर्षावाधर्मसीदतिसत्वरः ( यद्यपि ) विवाहस्त्वष्टवर्षायाःकन्यायाःशस्यतेबुधे  
रितिसंवर्त्तौक्तेरतऊर्ध्वरजस्वलेत्यादेश्चदशवर्षादूर्ध्वविवाहोनिश्चिद्धः । तथापि  
दातुरभावेद्वादशयोडशाब्देज्ञेयेत्रीणावर्षायास्तुमतीकांसेतपितृशासनमिति ।  
पराशरमाधवीयेबौधयनेाक्तेइच ( मनुः ) स्त्रीसंबन्धेदशैतानिकुलानिपरिवर्जये  
त् । हीनक्रियंनिः पुरुषंनिप्रच्छंदोरोमशार्शसम् ॥ सव्यामयान्यपस्मारोश्चित्रिकु



चिच्छकुलानिच । नक्षत्रसूक्तदीनाम्नीनां त्यपर्वतनामिकां । नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीन  
 विभीषणानामिकाम् (यमः) तस्मादुद्वाहयेत्कन्यायावत्तुमतीभवेत् । तथामूल  
 जादीनां फलं प्रागुक्तम् (तथा) वर्णावश्यग्रहमेज्यादिघटितविचारोज्योतिर्विज्ञयो  
 ज्ञेयः । विस्तरात्तु नोच्यते (अथगुर्वर्कबलं ॥ ज्योतिर्निबन्धेर्गर्गः) स्त्रीणां गुरुबलं  
 श्रेष्ठं पुरुषाणां रवेर्बलम् ॥ तयोश्चन्द्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गोभाषितम् । जन्मविदश  
 मारिस्थपूजया शुभदोगुरुः । विवाहेऽथ चतुर्थसिद्धादशस्थो मृतिप्रदः (देवलः) न  
 द्यात्मजाधनवतीविधवाकुशीलापुत्रान्विताहतधवासुभगाविपुत्रा । स्वाभिप्रिया  
 विगतपुत्रधवाधनादद्यावंध्याभवेत्सुरगुरौक्रमशोभिजन्म (बृहस्पतिः) भयचाप  
 कुलीरस्थोजीवोप्यशुभगोचरः । अतिशोभनतांदद्याद्दिवाहोपनयादियु (ललः)  
 द्वादशदशमचतुर्थे जन्मनियस्याष्टमेतृतीयेच । प्राप्तेपारिग्रहगोजीवैवैधव्यमाप्नो  
 ति (गर्गः) सर्वत्रापिशुभंदद्याद्द्वादशाब्दात्परंगुरुः । पंचयस्याब्दयोरेव शुभगो  
 चरतामताः सप्तमात्पंचवर्षेयुस्त्वोच्चस्वर्गगतायदि । अशुभोपिशुभंदद्याच्छुभकृ  
 त्सेयुः किंपुनः । रजस्वलायाः कन्याया गुरुशुद्धिं न चिंतयेत् । अष्टमेपि प्रकर्तव्यो वि  
 वाहस्त्रिगुणार्चनात् । अर्कगुर्वर्कबलं गौर्यारोहिण्यर्कबलास्मृता ॥ कन्याचंद्रव  
 जाप्रोक्ता वृषलीलग्नतोबला ॥ अष्टवर्षाभिवेदगौरीनववर्षाचरोहिणी ॥ दश  
 वर्षाभिवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला (अथ बृहस्पतिशान्तिः ॥ शौनकः) कन्यको  
 द्वाहकाले तु आनुकूल्यं न विद्यते ॥ ब्राह्मणस्योपनयने गुरोर्विधिरुदाहृतः ॥ सुव  
 र्णं न गुरुं कृत्वा पीतवस्त्रेणावेष्टयेत् ॥ ईशान्यांधवलंकुंभं धान्योपरि निधाय च ॥  
 दमनं मधुपुष्टपंचपलाशं चैव सयंपानम् ॥ मांसीगुडूच्यपामागीं विडंगीं शंखिनीवचा ॥  
 सहदेवी हरिक्रांता सर्वौषधि शतावरी ॥ बलाच सहदेवी च निशादितयमेव च ॥  
 कृत्वा ज्यभागपर्यंतं स्वशाखोक्तविधानतः ॥ ग्रहोक्तमंडलेभ्यश्च्यपीतपुष्टपासता  
 दिभिः ॥ देवपूजोत्तरे काले ततः कुंभानुसंव्रणम् ॥ अश्वत्थसमिधश्चाज्यं पायसं  
 सर्पिषा युतम् ॥ यवव्रीहितिलाः साज्यामंत्रेणैव बृहस्पतेः ॥ अष्टोत्तरशतं सर्वहो  
 मशेषं समापयेत् ॥ पुत्रदारसमेतस्य अभियेकं समाचरेत् ॥ कुंभाभिसंव्रणोक्तैश्च  
 समुद्रज्येष्ठसंव्रतः ॥ प्रतिमाकुंभवस्त्रंच आचार्याय निवेदयेत् ॥ ब्राह्मणान्नभोजये

तपश्चाच्छुभदः स्यान्नसंशयः ॥ इतिबृहस्पतिर्शांतिः (शौनकः) गुर्वादित्येव्य  
 तीपातेवक्रातीचारगेगुरौ ॥ नष्टेशाशिनिशुक्रेवावालेवृद्धेऽथवागुरौ ॥ पौषेचैत्रेऽथ  
 वर्षाशुशरद्यधिकमासके ॥ केतुदगमेनिरंशेऽर्कसिंहस्थेसरसंविणि ॥ विवाहव्रत  
 यात्रादिपुरहर्म्यगृहादिकं ॥ सौरंविद्योपविद्यांचयत्नतःपरिवर्जयेत् (सदनपा  
 रिजातेऽप्योतिः सागरे) बालेशुक्रेवृद्धेशुक्रेवृद्धेजीवेनष्टेजीवे ॥ बालेजीवेजीवे  
 सिंहेसिंहादित्येजीवादित्ये ॥ तथामलिम्लुचेमासिसुराचार्येऽतिचारगे ॥ बापी  
 कूपविवाहादिक्रियाःप्रागुदितास्त्यजेत् ॥ सिंहस्थमंकरस्थंचगुरुंयत्नेनवर्जयेत्  
 (ललः) अतिचारगतोजीवस्तंराशिर्नैवचेत्पुनः ॥ लुप्तःसंवत्सरोज्ञेयःसर्वकर्मव  
 हिष्ठकृतः (सिंहस्थगुरोरपवादमाहपराशरः) गोदाभागीरथीमध्येनोद्वाहःसिं  
 हगेगुरौ ॥ मघास्थेसर्वदेशेषुतथामीनगतैरवौ (वाशिष्ठोपि) विवाहोदसिगोकू  
 लेगौतस्यानेतरवत् ॥ भागीरथ्युत्तरेकूलेगौतस्यादसिरोतथा ॥ विवाहोव्रतव  
 धप्रचसिंहस्थेज्येनदुष्यति (कन्यादातृक्रममाहयाज्ञवल्क्यः) पितापितामहोभ्रा  
 तासकुल्योजननीतथा ॥ कन्याप्रदःपूर्वनाशेप्रकृतिस्थःपरः परः ॥ अप्रयच्छन्  
 समाप्नोतिभूराहत्यामृतावृतौ ॥ गम्यत्वाभावेदातृणांकन्याकुर्यात्स्वयंवरं (भ्रा  
 तृणांसंस्कृतानामेवाधिकारमाहसखयाज्ञवल्क्यः) असंस्कृतास्तुसंस्काराभ्रा  
 तृभिःपूर्वसंस्कृतैः ॥ भगिन्प्रचनिजादंशादत्वांशंतुतुरीयकम् ॥ अवचकारे  
 णापूर्वसंस्कृतैरित्यस्यानुवृत्तेर्विवाहपर्याप्तद्रव्यदाने स्वांशसमांशचतुर्थभागदाने  
 वासंस्कृतग्रहाण्व्यर्थस्यात् ॥ अतःकृतंनियमेयं ॥ तेनानुपनीतभ्रातृमात्रादिस  
 त्वेमात्रादेरेवाधिकारोऽनभ्रातुरित्युक्तं संबंधतत्त्वादौ ॥ कन्यास्वयंवरेमातुर्दातृ  
 त्वेचताभ्यामेवनांदीश्राद्धंकार्यम् ॥ तत्रचस्वयंप्रधानसंकल्पमात्रं कृत्वान्यब्राह्म  
 णाद्वाराकारयेदितिप्रयोगपारिजाते ॥ वरस्तुसंस्कृतभ्रात्राद्यभावेस्वयमेवनांदी  
 श्राद्धंकुर्यात् ॥ नमातापुत्रेषुविद्यमानेषुनान्यवैकारयेत्स्वधामितिनिषेधात् उ  
 पनयनेनकर्माधिकारस्यजातत्वाच्चेतिपृष्ठवीचंद्रोदयः (साधवीयेपरार्केचना  
 रदः) पितादद्यात्स्वयंकन्यांभ्रातावानुमतेपितुः ॥ मातामहोमातुलश्चसकुल्यो  
 बांधवस्तथा ॥ मातात्वभावेसर्वेषांप्रकृतौयदिवर्तते ॥ तस्यासंप्रकृतिस्थायीक



न्यांदद्युःस्वजातयः ॥ सकुल्यःपितृपक्षीयोबांधवोमातृवंशजः ( मदनपारिजा  
तेकायायनः ) स्वयमेवैरसींदद्यात्पित्रभावेस्वबांधवाः ॥ मातामहस्तस्तोन्यां  
हिमातावाधर्मजांसुताम् ॥ ततो न्यामौरसींभिन्नां धर्मजांनियोगात्क्षेत्रजांमा  
तामहोमातामातुलोवादद्यात् । तेनौरसीदानेपितृबंधुयुस्तसुमातामहादीनां  
धिकारःअनुमतिंविना (अस्यापवादस्तत्रैव ) दीर्घप्रवासयुक्तेषुपौगंडेषुतुबंधु  
मातातुसमयेदद्यादौरसीमपिकन्यकाम (मनुः) यदातुनैवकप्रिचत्स्यात्कन्यारा  
जानमाव्रजेत् (परकीयकन्यादानेविशेषोमदनरत्नेस्कांदे) आत्मीकृत्यबुवर्णेन  
परकीयांतुकन्यकाम् ॥ धर्मेणाविधिनादानमसगोत्रेपियुज्यते ॥ अत्रप्रकृतिग्रहणा  
दप्रकृतिस्थेनकृतमकृतमेव । स्वतंत्रोयदितत्कार्यंकुर्यादप्रकृतिगतः । तदप्यकृतमे  
वस्यादस्वातंत्र्यस्यहेतुतइत्यपरार्केनारदोक्तेः । यदितुसप्तपदीविवाहहोमादिप्र  
धानंजातंतदंगवैकल्येपिनावृत्तिर्विवाहस्य । गौडाअप्येवमाहुः (तत्रैवमरीचिः)  
गौरींददन्नाकपृष्ठेवैकुंठरोहिणींददत् ॥ कन्यांददद्ब्रह्मलोकंरौरवंतुरजस्वला  
म् (अथमासिनिर्यायः ॥ तत्रजन्ममासेविशेषःप्रागुक्तः ज्योतिःप्रकाशेव्यासः )  
माघफाल्गुनवैशाखेयदूडामार्गशीर्षके ॥ ज्येष्ठेवायाहमासेचसुभगावित्तसंयुता ॥  
आवरोवापिपौषेवाकन्याभाद्रपदेतथा ॥ चैत्राश्वयुक्कार्तिकेयुयातिवैधव्यतांल  
घु(नारदः) माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासाःशुभप्रदाः ॥ कार्तिकोमार्गशीर्षश्च  
मध्यमौनिदिताःपरे ( वशिष्ठः ) पौषेपिकुर्यान्मकरस्थिते ॥ कर्केचैवेभवेन्मेघगतोय  
दास्यात् ॥ प्रशस्तमायाहकृतंविवाहंवर्दतिगर्गामिथुनस्थिते ॥ कर्के(आचार्यचूडाम  
राौज्योर्पतिर्गर्गराजमार्तंडौ) मांगल्येषुविवाहेषुकन्यासंवरणोयुच ॥ दशमासाः  
प्रशस्यंतेचैवेपौषविर्वर्जिताः ॥ अपस्तंबःसर्वऋतवोविवाहस्य । शैशिरौमासौ  
परिहाय्योत्तमंचनैदाघम् । अत्रमाघफाल्गुनायाहवर्जनवमासामुख्यःकालइति  
सुदर्शनभाष्येडविलायांब्रह्मतीर्थेप्रचोक्तम् (बौधायनसूत्रेपि) सर्वमासाविवाह  
स्यशुचितपस्तपस्यवर्जमित्येके । तेनपूर्वात्तराशिशिरसंबन्धिनौमासौपौषचैत्रौ  
विवाहइति । निर्यायामृतव्याख्यानंमौख्यकृतमित्युपेक्ष्यं । निशिचेत्सर्वेषुद्वाद  
शस्त्रपिमासेषुदहेदितिकालादर्शः । यत्तुज्योतिषेमाघादि विधयस्तेगृह्यसूत्रा

गां द्विजपरत्वेन प्राबल्याच्छूद्रादिपराः ( ज्योतिषे ) वात्स्योर्व्यमननमिच्छति  
 तथारैभ्योयनंचोत्तरं श्रीवासंतमृतं विहाय मुनयो मांडव्याशिर्याजयुः ॥ चैत्रं प्रो  
 उक्त पराशरः परिगायेत्पौषं च दौर्भाग्यदंष्ट्रायाहादि चतुष्टयं न निनदं कौष्ठिक  
 प्रदिसंनुधैः ( चण्डेश्वरः ) मार्गमासितथा ज्येष्ठे सौरं परिगायंत्रतम् ॥ ज्येष्ठपुत्र  
 दुहित्रोस्तु यत्नेन परिवर्जयेत् ॥ द्वातिकास्थं रविं त्यक्त्वा ज्येष्ठ पुत्रस्य कारयेत् ॥  
 उत्तरादिषु कार्येषु दिनानि दशवर्जयेत् ( रत्नकोशे ) जन्मर्क्षजन्मदिवसे जन्म  
 मासे शुभं त्यजेत् ॥ ज्येष्ठे मास्याद्यगर्भस्य शुभं वर्ज्यं स्त्रिया अपि ( पराशरः ) अज्ये  
 ष्ठाकार्यं प्रकायत्रज्येष्ठपुत्रो वरो यदि ॥ व्यत्ययो वातयोस्तत्र ज्येष्ठमारः शुभप्रदः मि  
 हिरः ॥ ज्येष्ठस्य ज्येष्ठकन्याया विवाहे न प्रशस्यते ॥ तयो रन्यतरे ज्येष्ठे ज्येष्ठो  
 मासः प्रशस्यते ॥ द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्ता वेकं ज्येष्ठं शुभावहम् ॥ ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत  
 विवाहे सर्वसंमतम् ॥ यत्तु सार्वकालमेकं विवाहमिति तदा सुरादिविवाहविययम् ।  
 धर्म्येषु विवाहेषु कालपरीक्षणानां धर्म्येति गृह्यपरिशिष्टात् ॥ रत्नमालायाम  
 प्येवं ॥ तेनाहुरादयो माघचैत्रादिनिषिद्धकालेऽपि भवन्ति । मासाः सौराः ।  
 सौरो मासो विवाहादावित्युक्तेः । भूयो न निन्द्यो यदि फाल्गुने स्यादजस्तु वैशाखग  
 तो न निन्द्य इति त्वपवादः । अथ दशदोषाः ( व्यवहारोच्ये ) वेधप्रचलत्तचतथै  
 वपातः खर्जूरवेधो दशयोगचक्रम् ॥ युतिप्रचजामित्रमुपग्रहप्रचबाणाख्यवर्जचद  
 शौवदोषाः ॥ स्यालसरां ज्योतिषे ज्ञेयम् ( अतिचारोगुरौ तुर्वाशयः ) अतिचा  
 रगते जीवे वर्जयेत्तदनंतरम् ॥ विवाहादिषु कार्येषु अष्टाविंशतिवासराव ( रत्नमा  
 लायाम् ) सक्रपं वनवयुग्मं द्वादशत्रीणि सप्तचतुरसृलाभगः ॥ द्वादशाब्जवृषभा  
 दिराशितो घातचन्द्र इति कीर्तितो दुधैः ( नारदः ) भूबाणानंदहस्ताप्रचरसदिव  
 ह्निशैलजाः ॥ वेदावसुशिवादित्याघातचंद्रो यथाक्रमम् ॥ यात्रायां युद्धकार्येषु घात  
 चंद्रं विवर्जयेत् ॥ विवाहे सर्वसांगल्ये चोलादौ ब्रतबंधने ॥ घातचंद्रो नैव चिंत्य इति  
 पाराशरोऽब्रवीत् ॥ ( ज्योतिर्निबंधे ) विवाहचौलब्रतबंधयज्ञेयपट्टाभिषेके चतथैव  
 राज्ञाम् ॥ सीमंतयात्रासु तथैव जाते नोचिंतनीयः खलु घातचंद्रः ( नारदः ) अकालजा  
 भवेयुश्चेद्विद्युन्नीहारवृष्टयः ॥ प्रत्यर्कपरिवेयेद्द्रवापाफाध्वनयो यदि ॥ दोषा



यसंगलेतनंदोयायैवकालजाः ॥ अकालवृष्टिस्वरूपमाहललः पौषादिचतुरो  
 मासाः प्रोक्तावृष्टिरकालजेति ॥ ( शाङ्गधरः निर्घातिस्तिचलनेग्रहयुद्धे राहु  
 दर्शनेचैव ) आपंचदिनात्कन्यापरिणीतानाशमुपयाति ॥ उत्कापातेद्रचापप्रबल  
 घनरजोधूमनिर्घातविद्युद्वृष्टिप्रत्यर्कदोषादियु सकलबुधैस्त्याज्यमेवैकरात्रम  
 दुःस्वप्नेदुर्निमित्तेह्यशुभफलदृशोदुर्मनोभ्रांतबुद्धौचौलेभौजीनिबंधेपरिणयनवि  
 धौसर्वदात्याज्यमेव ( ज्योतिःप्रकाशे ) अर्वाकृषोडशनाड्यः संक्रांतेः पुरायदाः  
 परतः ॥ उपनयनव्रतयात्रापरिणयनादौविवर्ज्यास्ताः ( गर्गः ) दिग्दाहेदिनमे  
 कंचगृहेसप्तदिनानितु ॥ भूकंपेचसमुत्पन्नेऽयहमेवतुवर्जयेत् ॥ उत्कापाते दिव  
 संधूमेपंचदिनानिच ॥ वज्रपातेचैकदिनंवर्जयेत्सर्वकर्मसु ॥ दर्शनादर्शनाद्राहुके  
 त्वोः सप्तदिनंत्यजेत् ॥ यावत्केतुद्वयमस्तावदशुभः समयोभवेत् ॥ अस्यापवादो  
 १३ तसागरे अथादिवसत्रयमध्येमृदुपानीयंयदाभवति ॥ उत्पातदोषशमनंतदेव  
 संप्राहुराचार्याः ( संबधतत्वे ) भूकंपादेर्नदोषोस्तिवृद्धिश्चाद्धेकतेसति ॥ अथपरि  
 हार्येकन्यायावैधव्ययोगेविशेषउच्यते ( मार्कंडेयपुराणे ) बालवैधव्ययोगेतुकुं  
 भेद्रुप्रतिमादिभिः ॥ कृत्वालग्नंततः पश्चात्कन्योद्वाह्योतिचापरे ( अत्रपुन  
 र्दोषाभावंउक्तोविधानखंडे ) स्वर्णांबुपिप्पलानांचप्रतिमाविष्णुहूपिणी ॥ त  
 यासहविवाहेतुपुनर्भूत्वंनजायते ( सूर्यासुरासंवादे ) विवाहात्पूर्वकालेच चंद्रता  
 राबलान्विते ॥ विवाहोक्तेचतांकन्यांकुंभेनसहचोद्धहेत् ॥ सूत्रेणावेष्टयेत्पश्चा  
 द्दशतंतुविधानतः ॥ कुंकुमालंकृतंदेहंतयोरेकांतसंदिरे ॥ ततः कुंभंचनिःसार्यप्रभ  
 ज्यसलिलाशये ॥ ततोऽभियेचनंकुर्यात्पंचपल्लववारिभिः ॥ कुंभप्रार्थनातत्रैव ॥  
 वरुणांगस्वरूपायजीवनानांसमाश्रय ॥ पतिंजीवयकन्यायाश्चिरंपुत्रसुखंकुरु ॥  
 देहिविष्णोवरंदेवकन्यांपालयदुःखतः ॥ ततोऽलंकारवस्त्राद्व्यांवरायप्रतिपाद  
 येत् ॥ इतिकुंभविवाहः ॥ मूर्तिदानमपितत्रैवोक्तं ॥ ब्राह्मणांसाधुमामंज्यसंपूज्यवि  
 विवाहर्गोः ॥ तस्मैदद्याद्विधानेनविष्णोर्मूर्तिचतुर्भुजां ॥ शुद्धवर्णासुवर्गोर्नवित्तश  
 क्तयाथवापुनः ॥ निर्मितांरुचिरांशंखगदाचक्राब्जसंयुताम् ॥ दधानांवाससी  
 पीतेकुमुदोत्पलमालिनीं ॥ सदसिगांचनादद्यांसंभ्रमेनमुदीरयेत् ॥ यन्मयाप्रांचजनु

विश्वं व्यापितसमागमस्य ॥ विद्योपविष्य शस्त्राद्यैर्हतोर्वातिविरक्तया ॥ प्राप्यात्म  
नंसहोघोरं यशःसौख्यधनापहम् ॥ वैधव्याद्यतिदुःखैर्धनाशायशुभलब्धये ॥ ब  
हुसौभाग्यलब्धये च महाविष्णोरिमांस्तनुम् ॥ सौवर्गीं निर्मितां शक्त्या तुभ्यं संप्र  
ददेद्विज ॥ अनघाद्याहमस्मीति त्रिवारं प्रजपेदिति ॥ स्वमस्ति त्वत्तस्योक्तिं गृही  
त्वा स्वगृहं विशेत् ॥ ततो वैवाहिकं कुर्याद्विधिं दातामृगीदृशः ॥ अन्येष्वप्यथ  
विवाहवृत्तसेचनादयस्तत्रैव ज्ञेयाः ( विस्तरभयान्नोच्यते अथ प्रतिकूलादिज्यो  
तिर्निबंधेर्गर्गः ) कृते तु निश्चये पश्चान्मृत्युर्भवति कस्यचित् ॥ तदानमंगलं कुर्या  
त्कृते वैधव्यमाप्नुयात् ( ज्योतिर्मैधातिथिः ) वधूवरार्थं घटिते सुनिश्चिते वरस्य  
गेहेऽप्यथ कन्यकायाः ॥ मृत्युर्यदि स्यान्मनुजस्य कस्यचित्तदानकार्यं खलु मंगलं  
बुधैः ॥ मंगलं विवाहः ( स्मृतिचंद्रिकायां ) कृते वाङ्निश्चये पश्चान्मृत्युर्मर्त्य  
स्य गोत्रिणाः ॥ तदानमंगलं कार्यं नारी वैधव्यदं ध्रुवसंभूतः ( भृगुः ) वाग्दानानंतरं यत्र कुल  
योः कस्यचिन्मृतिः ॥ तदोद्वाहो नैव कार्यः स्ववंशस्य दौयतः ( शौनकः ) वरव  
ध्वोः पितामातापितृव्यश्च सहोदरः ॥ एतेषां प्रतिकूलं च महाविघ्नपदं भवेत् ॥  
पितापितामहश्चैव माताचैव पितामही ॥ पितृव्यः स्त्रीसुतो भ्राता भगिनी चावि  
वाहिता ॥ एभिरत्र विपक्षैश्च प्रतिकूलं बुधैः स्मृतम् ॥ अन्यैरपि विपक्षैस्तु केचिद्  
चूर्णतद्भवेत् ( मांडव्यः ) वाग्दानानंतरं मातापिताभ्राताविपद्यते ॥ विवाहो नैव कर्त  
व्यः स्ववंशस्थितिमिच्छता ( संकटे तु मेधातिथिः ) वाग्दानानंतरं यत्र कुललोकस्य  
चिन्मृतिः ॥ तदा संवत्सरादूर्ध्वं विवाहः शुभदो भवेत् ( स्मृतिरत्नावल्यां ) पितुर  
वदमशौचं स्यात्तदूर्ध्वमातुरेव च । मासत्रयं तु भार्यायास्तदूर्ध्वं भ्रातृपुत्रयोः ॥ अन्ये  
षां तु सपिंडानामाशौचं मासमीरितं ॥ तदंते शांतिकं कृत्वा ततो लग्नं विधीयते ॥  
( ज्योतिःप्रकाशे ) प्रतिकूलेऽपि कर्तव्यविवाहो मासतः परः ॥ शांतिविधायगां द  
त्वा वाग्दानादिचरेत्पुनः ॥ शांतिं विनायकशांतिं ( तथा च मेधातिथिः ) संकटे स  
मनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिना । शांतिरुक्ता गणेशस्य कृत्वा तां शुभमाचरेदिति ॥  
प्रतिकूलेन कर्तव्यो गच्छेद्यावद्धुत्रयम् ॥ प्रतिकूलेऽपि कर्तव्यमित्याहुर्बहुविधे ॥  
प्रतिकूले सपिंडस्य मासमेकं विवर्जयेत् ( ज्योतिःसारे ) दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे च पित्रोर्वा



प्राणसंशये ॥ प्रौढायामपिकन्यायां नानुकूल्यं प्रतीक्ष्यते (मेधातिथिः) पुरुषत्रय  
पर्यंतं प्रतिकूलं स्वगोत्रिणां ॥ प्रवेशान्निर्गमस्तद्वत्तथा मंडनमंडने ॥ प्रेतकर्मण्य  
निर्वर्त्य चरेन्नाभ्युदयक्रियां ॥ आचतुर्थततः पुंसि पंचमेषु भवेत् ॥ अथ रजोदो  
ये निर्णयः ( साधवीये ) प्रारंभात् प्राग्विवाहस्य मातायदिरजस्वला ॥ निवृत्ति  
स्तस्य कर्तव्या सहत्वश्रुतिचोदनात् ॥ आरंभात् नांदीश्राद्धात् । नांदीमुखं विवा  
हादावित्यादिना तस्यैव प्रारंभोक्तेः ( मेधातिथिः ) चौले च व्रतबंधे च विवाहे यज्ञ  
कर्मणा ॥ भार्यारजस्वलायस्य प्रायस्तस्य न शोभनं ॥ वधूवरान्यतमयोर्जननी चे  
द्रजस्वला ॥ तस्याः शुद्धेः परं कार्यं मांगल्यं मनुरब्रवीत् ( वृद्धमनुः ) विवाहव्रतच  
डासु मातायदिरजस्वला ॥ तदानमंगलं कार्यं शुद्धौ कार्यं शुभेषुभिः ( गार्गः ) य  
स्योढाहादिमांगल्ये मातायदिरजस्वला ॥ तदानतत्प्रकर्तव्यमायुः सयकरं यतः  
( नांदीश्राद्धोत्तरं रजोदोषेतु कपर्दिकारिकासु ) सत्तिकोदकययोः शुद्धेऽङ्गादद्या  
द्धोमपूर्वकम् ॥ हैमीमायमितां पञ्चांशीं सुक्तविधिना चयेत् ॥ प्रत्यृचं पायसं हुत्वा  
अभिषेकं समाचरेदिति ( सूतकादिसंकरेण ) कूष्मांडीभिर्घृतं हुत्वा पयस्विनीं गां  
च दत्त्वा विवाहादिकुर्यादिति च प्रागुक्तं ( अथैकक्रियानिर्णयः ज्योतिर्निबन्धे वृद्ध  
मनुः ) एकमात्रजयोरेकवासरे पुरुषस्त्रियोः ॥ न समाना क्रियां कुर्यान्मातृभेदे विधी  
यते ॥ एतेन एकस्य पुंसो विवाहद्वयमेकदिने निषिद्धं मातृभेदाभावात् ( नारदः ) पु  
त्रोढाहात्परंपुत्रीविवाहेन ऋतुत्रये ॥ न तयोर्ब्रतमुढाहान्मंडनादपि मंडनम् ( वरा  
हः ) विवाहस्त्वेकजातानां ग्रामासाभ्यंतरे यदि ॥ असंशयं त्रिभिर्बर्षैस्तत्रैकावि  
धवा भवेत् ( सदनरत्नेर्वाशिष्ठः ) न पुंविवाहोर्ध्वमृतुत्रयेऽपि विवाहकार्यं दुहितुः प्रकु  
र्यात् ॥ न मंडनाच्चापि हि मंडनं च गार्त्रैकतायां यदि नाब्दभेदः ॥ एकौदारप्रातर्विवा  
हकृत्यं स्वर्गं पाणिग्रहणं विधेयम् ॥ ग्रामासमध्ये मुनयः समूचुर्न मंडनं मंडनतोऽपि  
कार्यम् ॥ एतदपवापस्तत्रैव ॥ ऋतुत्रयस्य मध्ये चेदन्याब्दस्य प्रवेशनम् ॥ तदा ह्येकोद  
रस्यापि विवाहस्तु प्रशस्यते ( सारावल्यां ) काल्पुनचैव मासे तु पुत्रोढाहोपनायने ॥  
भेदाब्दस्य प्रकुर्वीत न तु त्रयविलंघनं ( संहिताप्रदीपे ) ऊर्ध्वविवाहात्तनयस्य नैव का  
र्यं विवाहो दुहितुः सार्धम् ॥ अप्राप्य कन्यां शुरालयं च वधूः प्रवेश्यास्त्वगृहं च नादौ

(मदनरत्नेवशिष्यः) द्विशोभनं त्वेकगृहेऽपि नेष्टुं शुभं तु पञ्चान्नवभिर्दिनैस्तु ॥ आवश्य-  
कं शोभनमुत्सवोवाहारेयवाचार्यविभेदेतोवा ॥ एकोदरप्रसूतानां नारिकार्यत्रयं  
भवेत् ॥ भिन्नोदरप्रसूतानां नेतिशातातपोऽब्रवीत् (ज्योतिर्निबन्धेकात्यायनः) कु-  
लेऽतुत्रयादवाङ्मुंडनात्तुमुंडनं ॥ प्रवेशान्निर्गमेनेष्टोक्तकुर्यान्मंगलत्रयम् ॥ कुर्व-  
तिमुनयः केचिदन्यस्मिन्वत्सरेलघु ॥ लघुवागुरुवाकार्यप्राप्तनैमित्तिकंतुयत् ॥  
पुत्रीवाहः प्रवेशाख्यः कन्योवाहस्तु निर्गमः ॥ मुंडनं चौलमित्युक्तं व्रतोवाहौ तु मंगल-  
म् ॥ चौलं मुंडनमेवोक्तं वर्जयेन्मंडनात्परम् ॥ मौंजीचोभयतः कार्याय तोमौंजीनमुं-  
डनम् ॥ अभिन्नवत्सरेऽपि स्यात्तदहस्तत्रभेदेयत् ॥ अभेदे तु विनाशः स्यान्नकुर्यादेकमं-  
डपे ॥ संकटे तु कपर्दिकारिका सुवराहमिहिरश्च । उवाह्यपुत्रीं न पिता विदध्यात्पु-  
ज्यंतरस्योद्वहनं कदाचित् ॥ यावच्चतुर्थदिनमत्र पूर्वसमाप्य चान्योद्वहनं विदध्यात्  
(कश्यपः) मौंजीबन्धस्तथोवाहः यरासासाभ्यंतरेऽपि वा ॥ पुन्युवाहनं कुर्वीत विभक्ता-  
नां न दोषकृत (ज्योतिर्निबन्धे) विवाहसारभ्यचतुर्थिमध्ये प्राद्विदिनं दर्शदिनं यदि  
स्यात् ॥ वैधव्यमाप्नोति तदा शुक्रः याजीवेत्पतिश्चेदनपत्यता स्यात् (तथा) विवा-  
हमध्ये यदि चेत्सयाहस्तत्रस्वसुख्याः पितरो न यांति ॥ वृत्ते विवाहे परतस्तु कुर्या-  
द्वह्नाद्वस्त्रधाभिर्नतुदूषयंति ॥ स्वधाभिरिति श्रुतेष्व (मासिकवियये कालहेमा-  
द्रौशाह्यायने) प्रेतश्राद्धानि सर्वाणि संपिंडीकरांतथा ॥ अपक्वव्यापिकुर्वीत क-  
र्तुर्नादीमुखं द्विजः ( वृद्धिं विनापकर्षे दोषमाह तत्रैवोशनाः ) वृद्धिश्चाद्विहीनस्तु  
प्रेतश्राद्धानि चरेत् ॥ सश्राद्धी नरके घोरेऽपि तृभिः सह मज्जतीति ॥ मेधातिथिः ॥  
प्रेतकर्मण्यनिर्वर्त्य चरेत्तन्नाभ्युदयक्रियाम् ॥ आचतुर्थे ततः पुंसि पंचमेशु भद्रं भवेत्  
(स्मृत्यंतरे) संपिंडीकरणादवागपक्वव्याकृतान्यपि ॥ पुनरप्यपक्वव्याकृतं तद्व्याप्य  
नियेधनात् (स्मृतिसारावल्यास) भ्रातृयुगे स्वसृयुगे भ्रातृस्वसृयुगे तथा ॥ एकस्मि-  
न्मंडपे चैव न कुर्यान्मंडनद्वयम् ॥ सोदरविययमेतत् (यसः) एकोदरप्रसूतानामेक-  
स्मिन्वासरे पुनः ॥ विवाहे नैव कुर्वीत मंडनोपरिमंडनम् (गार्ग्यः) भ्रातृयुगे स्वसृयु-  
गे भ्रातृस्वसृयुगे तथा ॥ न कुर्यान्मंगलं किंचिदेकस्मिन्मंडपे हनि ॥ एकस्मिन्वा-  
सरे प्राप्ते कुर्याद्यमलजातयोः ॥ सौरं चैव विवाहं च मौंजीबन्धनमेव च (ज्योतिर्व



वरणो ) एकोदरयोरेकदिनोद्वहनेभवेन्नाशः ॥ नद्यंतर एकदिनेकेप्याहुः संकटेशु  
 भम् ॥ ऊर्ध्वविवाहाच्छुभेनरस्यनारीविवाहोनश्वतुत्रयं स्यात् ॥ नारीविवाहा  
 त्तदहेपिशस्तंनरस्यपारिग्रहमाहुरार्याः ॥ भिन्नमातृजयोस्तु एकवासरेविवाह  
 माहमेधातिथिः । पृथङ्मातृजयोः कार्योविवाहस्त्वेकवासरे ॥ एकस्मिन्मंड  
 पेकार्यः पृथग्वेदिकयोस्तथा ॥ पृथग्भट्टकयोः कार्यदर्शनं न शिरस्थयोः ॥ भगि  
 नीभ्यामुभाभ्यांचयावत्सप्तपदीभवेत् ॥ यमयोस्तुविशेषः (भट्टकारिकायाम्) स  
 कस्मिन्वत्सरेचैकवासरेमंडपेतथा ॥ कर्तव्यमंगलंस्वस्रीभ्रात्रोर्यमलजातयोः  
 (ज्योतिर्निबधेनारदः) प्रत्युद्वाहेनैवकायेनैकस्मैदुहित्वद्वयम् ॥ नैवैकजन्ययोः  
 पुंसोरेकजन्येतुकन्यके ॥ नैवंकदाचिदुद्वाहेनैकदामुंडनद्वयम् ॥ नैकजन्येतुक  
 न्येदेपुत्रयोरेकजन्ययोः ॥ नपुत्रीद्वयमेकस्मैप्रदद्यात्तुकदाचनेति ॥ कन्यायार  
 जोदर्शनेतुअपराकैसंवर्तः । माताचैवपिताचैवज्येष्ठभ्रातातथैवच ॥ त्रयस्तेनरकंयां  
 त्तिदृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् (हारीतः) पितुर्गेहेतुयाकन्यारजःपश्यत्यसंस्कृता ॥  
 साकन्या वृषलीज्ञेयात्तत्पतिर्वृषलीपतिः ॥ देवलात्रिकश्यपाः पूर्वार्धितदेव ।  
 भूराहत्यापितुस्तस्याः साकन्यावृषलीस्मृता ॥ यस्तांसमुदहेत्कन्यां ब्राह्मणो  
 ज्ञानदुर्बलः ॥ अग्राद्धेयमपांकतेयंतंविद्याद्वृषलीपतिम् (माधवीयेबोधायनः)  
 वीणावर्षाशयृतुमतीकां क्षेत्पितृशासनम् (विष्णुः) ऋतुत्रयमुपास्त्वेवकन्या  
 कुर्यात्स्वयंवरम् (अत्रवरस्यदोषाभावमाहयमः) कन्याद्वादशवर्षाणिआप्र  
 दत्तावसेद्वृहे ॥ भूराहत्यापितुस्तस्याः साकन्यावरयेत्स्वयम् ॥ एवंचोपनतांप  
 तींनावमन्येत्कदाचन ॥ नतुतांबंधकोविद्यान्मनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत् (मनुः) अ  
 लंकारंनाददीतपितृदत्तंस्वयंवरे ॥ पितृदत्तंमातृदत्तंस्तेयीस्याद्यदिसंहरेत् (वरं  
 प्रत्याह) पित्रेनदद्याच्छुल्कंतुकन्यामृतुमतींहरन् ॥ सहस्वाम्यादतिक्रामेदूतनां  
 प्रतिबोधनात् (अत्रप्रायश्चित्तमुक्तमाश्वलायनेन) कन्यामृतुमतींशुद्धांकृत्वा  
 निष्ठकृतिमात्मनः ॥ शुद्धिंचकारयित्वातामुदहेदनृशंस्यधीः ॥ पिताऋतूनस्वपु  
 ज्यास्तुगणयेदादितःसुधीः ॥ दानावधिगृहेयत्नात्पालयेच्चरजोवतीम् ॥ दद्यात्तद्व  
 तुसङ्ख्यागाःशक्तःकन्यापितायदि ॥ दातव्यैकापिनिःस्वेनदानेतस्यायथाविधि ॥

दद्याद्वाब्राह्मणोऽवन्नमतिनिःस्वःसदसिगाम ॥ तस्यातीतर्तुसंख्येयुवरायप्रतिपा  
दयेत् ॥ उपोष्यत्रिदिनंकन्यांरात्रौपीत्वागवांपयः ॥ अदुष्टरजसेदद्यात्कन्या  
यैरत्नभूषणम् ॥ तामुहहन्वरप्रचापिकूटमांडैर्जुहुयाद्द्विजइति (मदनपारिजाते  
यज्ञपार्थः) विवाहैविततेयज्ञेहोमकालउपस्थिते ॥ कन्यामृतुसंतोदुष्टवाक्यंकु  
र्वीतियाज्ञिकाः ॥ स्नापयित्वातुतांकन्यामर्चयित्वायथाविधि ॥ युंजानामाहु  
तिंहुत्वाततस्तंत्रंप्रवर्तयेत् (बौधायनसूत्रे) अथयदिकन्योपसाद्यमानाचोह्यमा  
नावारजस्वलास्यात्तामनुमंत्रयेत् ॥ पुमांसौमित्रावरुणौपुमांसावश्वनावुभौ ॥ पुमा  
निंद्रप्रवसूर्यप्रचपुमांसंचदधात्वियमिति ॥ अथद्वादशरात्रमलंकृत्यप्राशयेत्पंचग  
व्यमयशुद्धांकृत्वाविवहेत् । अत्रगांधर्वाद्यष्टौविवाहास्तद्व्यवस्थाचाकरेज्ञेया (म  
नुः) षडानुपूर्व्याविप्रस्यक्षत्रस्यचतुरोवरान् ॥ विदूशूद्रयोस्तुतानेवविद्याहस्यनिरा  
क्षसान् (चतुरः) आसुरगांधर्वराक्षसपैशाचान्नानराक्षसवज्र्याचित्रैश्चशूद्रयोः स  
प्त । आसुरवैश्यशूद्रयोः (हेमाद्रौपैठीनसिः) राक्षसोवैश्यस्यपैशाचः शूद्रस्यप्र  
चेताः । पैशाचोसंस्कृतप्रसूतानांप्रतिलोमजानांच (मनुः) राज्ञस्तथासुरोवैश्येशूद्रे  
चांत्यस्तु ॥ हितः (क्षत्रियादेःसंकटेपैशाचमाहमाधवीयेवत्सः) सर्वोपायैरसाध्या  
स्यात्सुकन्यापुरुषस्यया ॥ चौर्येणापि विवाहेनमाविवाह्यारहःस्थिता (गान्धर्वा  
दिविवाहेष्वप्युदकपूर्वकंदानमाहतत्रैवयमः) नोदकेननवावाचाकन्यायाःपतित  
रुच्यते ॥ पाणिग्रहणसंस्कारात्पतित्वंसप्तमेष्टे (पराशरमाधवीयेदेवलोपि) ।  
गांधर्वादिविवाहेषुपुनर्वैवाहिकोविधिः ॥ कर्तव्यश्चत्रिभिर्वर्णैःसमर्थेनारितसा  
क्षिकः ॥ त्रैवर्णोक्तोगांधर्वादौविप्रवर्जसधिकारउक्तः (तत्रैवपरिशिष्टे) गान्ध  
र्वसुरपैशाचाविवाहाराक्षसप्रचयः ॥ पूर्वपरिश्रयस्तेषुपप्रचाहोमोविधीयते ॥  
अतोहोमादावकृतेभार्यात्वाभावाद्धरांतरायदेया (तथाचतत्रैववशिष्टवीधायनौ)  
बलादपहताकन्यासंत्रैर्यदिनसंस्कृता ॥ अन्यस्मैविधिवदेयायथाकन्यातथैवसे  
ति ॥ अत्रमंत्रसंस्काराभावेऽन्यस्मैदानस्यसर्वविवाहेषुमान्याहलादपहारेराक्षस  
पैशाचयोर्विशेषवचनंव्यर्थतेनतयोर्यदिनसंस्कृतासंस्कृतावेत्यावृत्य कन्यानुम  
त्याभावेन्यस्मैदेयेतिव्याख्येयं (मदनपारिजातेनारदः) पाणिग्रहणिकामंत्रा



नियतंदारलक्षणम् ॥ तेषांचनिष्ठाविज्ञेयाविद्विज्ञः सप्तमेपदे ॥ स्मृतिचन्द्रिकाया  
मपरार्कैचैवं (आशीचेतुयाज्ञवल्क्यः) दानेविवाहेयज्ञेचसंग्रामेदेशविज्ञवे ॥ आ  
पद्यापिचकथायांसद्यःशौचंविधीयते ॥ केषामित्यपेक्षिते (ब्रह्मपुराणोक्तं) दातुः  
प्रतिगृहीतुश्चकन्यादानेचनोभवेत् ॥ विवाहयिष्णोः कन्यायालाजहोमादिक  
मशीति ॥ व्रतयज्ञविवाहेषुग्राह्येहेमेऽर्चनेजपे ॥ आरब्धेसूतकंसंनस्यादनारब्धेतु  
सूतकमिति विष्णुवचनाच्च (प्रारम्भस्तेनैवोक्तः) प्रारम्भोवरणायज्ञेसंकल्पोव्रत  
सत्रयोः ॥ नान्दीमुखविवाहादौग्राह्येपाकपरिक्रियेति ॥ वरणासितिसधुपर्कप  
रं । गृहीतसधुपर्कस्ययजमानाचक्रत्वजः ॥ पश्चादशौचेपतितेनभवेदितिनि  
श्चयइतिब्राह्मोक्तेः ॥ सधुपर्कात्पूर्वतुभवत्येवाशौचमितिशुद्धिविवेकः । रामा  
राडारभाष्येप्येवम (नान्दीमुखावधिपूचस्मृत्यन्तरे) एकविंशत्यहयज्ञेविवाहे  
दशवासराः ॥ त्रिदशौलोपनयनेनांदीग्राह्यंविधीयते (आरम्भाभावेपिलगनां  
तराभाविगद्यविष्णुः) तदेवप्रतिष्ठाविवाहयोःपूर्वसंभृतयोरपीति (अत्रप्रायश्चि  
त्तमाहमदनपारिजातेविष्णुः) अनारब्धविशुद्ध्यर्थकूष्माण्डैर्जुहुग्राह्यतम । गां  
द्यात्पञ्चाग्न्याशीततःशुद्ध्यतिसूतकी(संग्रहेपि)संकटेसमनुप्राप्तेसूतकेसमुपागते ।  
कूष्माण्डीभिर्घृतंहुत्वागांचदद्यात्पयस्विनीम् ॥ चण्डोपनयनोद्वाहप्रतिष्ठादि  
कमाचरेत् ॥ यदैवसूतकप्राप्तिस्तदैवाभ्युदयक्रिया (अन्नादियुविशेषःग्रहविंश  
त्सते) विवाहेत्सवयज्ञेयुत्वंतरामृतसूतके ॥ परैरन्नप्रदातव्यंभोक्तव्यंचद्विजोत्त  
मैः ॥ परैरसगोत्रैः । भुजानेयुतुविप्रेयुत्वंतरामृतसूतके ॥ अन्यगोहोदकाचांताः  
सर्वतुशुचयःस्मृताः ॥ एकदाशौचात्पूर्वमपृथक्कृतान्नविषयं ॥ तत्रशेषमन्नंत्या  
ज्यमित्यर्थः (पृथक्कृतैयुतुबृहस्पतिराह) विवाहेत्सवयज्ञेयुत्वंतरामृतसूतके ॥ पूर्व  
संकल्पितान्नेयुनदोषःपरिकीर्तितइति (धर्मार्थविवाहकरणफलमुक्तंमहाभार  
ते) ज्ञात्वास्त्ववित्तसाध्यादिकंचोद्वाहयेद्विजं ॥ तेनाप्याप्रोतितत्स्थानंशिव  
भक्तोनरोध्रुवम् (अपरार्कदक्षः) मातापितृविहीतंतुसंस्कारोद्वाहनादिभिः ॥ यः  
स्थापयतितस्येहपुरायसंख्यानविद्यते (मदनरत्नेभविष्ये) विवाहादिक्रियाका  
लेतत्क्रियासिद्धिकारणम् ॥ यःप्रयच्छतिधर्मज्ञःसोश्चमेधफलंलभेत् (कन्यागृहे

भोजननिषेधोपितत्रैव अप्रजायान्तुकन्यायां न भुंजीत कदाचन ॥ दौहित्रस्य मुखं  
दृष्ट्वा किमर्थमनुशोचति (अपराधं आदित्यपुराणे) विष्णुं जामातरं मन्येत स्य को  
पं न कारयेत् ॥ अप्रजायां तु कन्यायां न श्रियात्तस्य वै गृहे ॥ ब्रह्मदेयां न वै कन्यां दत्त्वा  
श्रियात् कदाचन ॥ अथ भुंजीथ मोहाच्चेत्पूयाशेन रकेवसेत् (तत्रैव कप्रयपः) अहतं  
यंत्रनिर्मुक्तं वासः प्रोक्तं स्वयं भुवा ॥ शास्तं तन्माङ्गलिको युतावत्कालं न सर्वदा ॥ यन्त्रनि  
र्मुक्तं न तन्म (विवाहमध्ये स्त्रिया सह भोजने पि न दोष इत्याह हेमाद्रौ प्रायश्चित्तका  
ण्डे गालवः) विवाहकाले यात्रायां पथि चौरसमाकुले ॥ असहायो भवेद्दिप्रस्तदा  
कार्यं द्विजन्मभिः ॥ सक्रयानसमारोह सकपात्रे च भोजनम् ॥ विवाहे पथि यात्रायां  
कृत्वा विप्रो न दोषभाक् ॥ अन्यथा दोषमाप्नोति पश्चाच्छां द्रायणां चरेत् ॥ मित्ता  
क्षरायामध्ये वस (रत्नमालायाम्) मलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णामासु तमघोत्त  
रान्मिहैः ॥ भौमसौररविवारवर्जिते पाणि पीडनविधिर्विधीयते (अत्रानिष्टनक्ष  
त्रादौ दानमुक्तं ज्योतिषे) विपत्तारे गुडं दद्याच्चिधने तिलकां च नम ॥ प्रत्यरे लवणां द  
द्याच्छागं दद्यात्त्रिजन्मसु ॥ चंद्रे च शंखं लवणां च तारे त्रिंशो विरुद्धे त्वथ तंदुलांश्च ॥  
धान्यं च दद्यात्करणे च वारे योगे विरुद्धे कनकं प्रदेयम् (विवाहसंज्ञपमाह वशिष्ठः)  
षोडशारत्नं कंकुर्वाचतुर्द्वारोपशोभितम् ॥ मंडपं तारयोर्युक्तं तत्र वेदिं प्रकल्पयेत् ॥  
अष्टहस्तं तुरचयेन्मंडपं वा द्विद्वारं (देवज्ञमनोहरः) चित्राविशाखाशततार  
काच्चिनीज्येष्ठाभररायौ शिवभाचतुष्टयम् ॥ हित्वा प्रशस्तं फलतैलवेदिकाप्रदान  
कं कंडनमंडपादिकम् (हेमाद्रौ व्यासः) कंडलदलनयवारकमंडपमृद्धे दिवर्गा  
काद्यखिलम् ॥ तत्संबन्धिगवागतमृक्षे वैवाहिके कुर्यात् ॥ यवारकं चिकसा इति  
प्रसिद्धम् ॥ वैवाहिके तु दिवसे शुभे वाद्यत्रिंशो शुभे ॥ चतुर्थिकं प्रकुर्वीत विधिदु  
ष्टेन कर्मणा (वेदिमाहनारदः) हस्तोच्छ्रितां चतुर्हस्ते च तुरसां समंततः ॥ स्तंभे  
श्चतुर्भिः सुप्रलक्षणां वामभागे तु सन्नानि ॥ समांतया चतुर्दिक्षु सोपानैरतिशोभि  
ताम् ॥ प्रागुदक् प्रवृत्तारं भां स्तंभं सहस्रशुक्रादिभिः ॥ सर्वविधामासु रक्षेन्मिथुनं सा  
गिनवेदिकामिति (सप्तयिसते) संगलेषु च सर्वेषु मंडपो गृहमानतः ॥ कार्यः  
षोडशहस्तो वा द्यू न हस्तो दशावधि ॥ स्तंभे प्रचतुर्भिरेवात्र वेदीमध्ये प्रतिष्ठिता ॥



हस्तोवध्वाः सोपानं पश्चिमतः उपरिभागे उक्तपरिमाणाद्विज्ञम् ( अथमृदाह  
 रणां ज्योतिर्निबन्धेनारदः ) कर्तव्यमंगलेठ्ठादौ मंगलायां कुरारपणम् ॥ नवमे  
 सप्तमेवापि पंचमेदिवसेपि वा ॥ तृतीये बीजनक्षत्रे शुभवारे शुभोदये ॥ सम्यग्गृ  
 हारायलंकृत्यवितानध्वजतोरणौः ॥ सहवादित्रनृत्याद्यैर्गत्वा प्रागुत्तरां दिशम् ॥  
 तत्रमृत्तिसकतां प्रलक्षणांगृहीत्वा पुनरागतः ॥ मृन्मये ठवयवावैरावेष्टुपात्रेष्टुयोज  
 येत् ॥ अनेकबीजसंयुक्तां तोयपुठपोपशोभिताम् ( शौनकः ) आधानं गर्भसं  
 स्कारं जातकर्म च नाम च ॥ हित्वान्यत्र विधातव्यमंगले कुरुवापनम् ( बृह  
 स्पतिः ) आत्यंतिकेषु कार्येषु कार्यसद्योऽकुरारपणम् ( तत्रैव वाग्दानं हरिद्रावंद  
 नं च कार्यम् । ज्योतिः प्रकाशे ) चतुर्थे मंडपः श्रेष्ठः सप्तमः पंचमस्तथा ॥ नव  
 मैकादशौ श्रेष्ठौ नैष्ठौ यष्टतृतीयकौ ॥ विवाहभेस्वोदये वा कन्यावरणमाचरेत् ( व  
 रस्यापि वरणासाहचंडेश्वरः ) उपवीतं फलं पुठपं वा सांसि विविधानि च ॥ देयं वराय  
 वरगो कन्याभ्रात्रा द्विजेन वेति ( वाग्दानोत्तरं वरमरणोऽपरार्कस्मृतिचंद्रिकायां  
 वशिष्ठः ) अर्द्धिर्वाचा च दत्तायां प्रियेतोर्ध्ववरो यदि ॥ न च मंत्रोपनीतस्यात्कुमा  
 रीपितुरेव सा ( यत्तु नारदः ) उद्वाहितापि सा कन्या न चेत्संप्राप्तमैथुना ॥ पुनः  
 संस्कारमर्हत्यथा कन्या तथैव सेति ( यच्च कात्यायनः ) वरो यद्यन्यजातीयः पति  
 तः क्लोवणवच ॥ विकर्मस्थः स गोत्रो वा दासो दीर्घमियोपि वा ॥ ऊढापि देयासान्य  
 स्मै सहा वरणाभ्यशोति ॥ इदं कलौ निश्चितम् । देवरेण सुतोत्पत्तिर्दत्ता कन्या न दीय  
 त इत्यादित्यपुराणो कलौ निषेधात् । दत्ताशब्द ऊढापरः ऊढायाः पुनरुद्वाहमिति हे  
 माद्रावुक्तेः ( अतस्त्वसगोत्रासपिंडादिविवाहेऽपि ) भोगस्ततां परित्यज्य पालये  
 ज्जननीमिवेत्युक्तम् ( देशान्तरगमने तु कात्यायनः ) वरयित्वा तु यः कश्चित् प्रणा  
 श्येत पुरुषो यदा ॥ ऋत्वा गमां स्त्री न तीत्य कन्या न्यं वरयेद्हरम् ( अपरार्के नारदो  
 पि ) प्रतिगृह्यतु यः कन्यां वरो देशान्तरं व्रजेत् ॥ वीनूतूनसमतिक्रम्य कन्याऽन्यं व  
 रयेद्हरम् ( शुल्कदाने तु मनुवशिष्टौ ) कन्यायां दत्तशुल्कायां प्रियते यदि शुल्कदः ॥  
 देवराय प्रदातव्या यदि कन्या नुमन्यते ( चंद्रिकायां कात्यायनः ) प्रदाय शुल्कं ग  
 ष्ठेयः कन्यायाः स्त्रीधनं तथा ॥ धार्यासावर्षमेकं तु देयाभ्यस्मै विधानतः ॥ अनेके

भ्योहिदत्तायामनूढायांतुतत्रै । पूर्वागतप्रचसर्वेषांलभेताद्यवरस्तुताम् ॥ पप्रचा  
द्वरेणायदत्तं तस्याः प्रतिलभेतसः ॥ अथागच्छेन्नवोढायांदत्तं पर्ववरोहरेत् ( याज्ञव  
ल्क्यः ) सक्तप्रदीयते कन्याहरं स्तां चौरदंडभाक् । दत्तामपि हरेत्पुत्राच्छ्रेयांश्चे  
द्वरआव्रजेत् ॥ पूर्वस्य दोषसत्त्वे इदमिति विज्ञानेश्वरः ( संबन्धतत्त्वे वैशिष्ट्यः ) कुल  
शीलविहीनस्य पप्रचाद्विपतितस्य च ॥ अपस्मारिविधर्मस्य रोगिणां वैषधारि  
णाम् ॥ दत्तामपि हरेत् कन्यासंगोत्रोढांतथैव च ॥ ( मनुः ) यंढांधवधिरादीनां वि  
वाहेऽस्ति यथोचितम् ॥ विवाहसंभवे तेषां कनिष्ठो विवहेत्तदा ॥ पितृव्यपुत्रे साप  
त्ने परदारसुतेषु च ॥ विवाहाधानयज्ञादौ परिवेदो न दूयणाम् ॥ अन्यद्वक्तव्यं वि  
स्तरभीतेर्नोच्यत इति दिक् । अत्र नां दीश्राद्धे विशेषतः अधिकारिविशेषं चाग्रे वक्ष्या  
मः । इदं चाद्यविवाहे पिता कुर्याद् द्वितीयादौ वरस्य । नां दीश्राद्धं पिता कुर्यादाद्ये पा  
णिग्रहे पुनः ॥ अत ऊर्ध्वं प्रकुर्वीत स्वयमेव तु नां दिकमिति स्मृतेः ( त्रिकांडमंड  
नोपि ) पित्रोस्तु जीवतोः कुर्यात्पुनः पाणिग्रहं यदा ॥ पितुर्नां दीमुखं श्राद्धं नोक्तं तस्य  
सनो विभिरिति ( रेणुकाकारिका ) उक्तकाले विवाहां गंकुर्यान्नां दीमुखं पिता  
देशांतरे विवाहप्रचेत्तत्र गत्वा भवेदिदम् ( लग्नघटीस्थापनमाह नारदः ) यडंगुल  
मितोत्सेधं द्वादशांगुलमायतम् ॥ कुर्यात्पितालवत्ताम्रपात्रं तद्वशाभिः पलैः ॥ ताम्र  
पात्रे जलैः पूर्णो मृत्पात्रे वोथवा शुभे ॥ मंडलार्धोदयं वीक्ष्य रवेस्तत्र विनिक्षिपेत् ( तत्र  
मंत्रः ) सुख्यं त्वमसियं त्राणां ब्रह्मणानिर्मितं पुरा । भवभावाय दंपत्योः कालसा  
धनकारणमिति ( वरस्य मधुपर्कमाह याज्ञवल्क्यः ) प्रतिसंवत्सरं त्वर्च्यः स्ना  
तकाचार्यपार्थिवाः ॥ प्रियो विवाहश्च तथा यज्ञप्रत्युत्तिवजः पुनः ( अत्र विशेषो  
गृह्यपरिशिष्टे ) वरस्य याभवेच्छाखातच्छाखागृह्यचोदितः ॥ मधुपर्कः प्रदात  
व्यो ह्यन्यशाखेऽपि दातरि । अत्र वरदाहशब्दोऽत्र विवाहोपलक्षणम् ( तदाहुः )  
अर्च्यशाखयामधुपर्क इति । अर्च्यस्य यच्छाखीयं कर्म तच्छाखयामधुपर्क इति  
याज्ञिकाः । जयंतस्तु वरणावत्सर्वत्र यजमानशाखयैव मधुपर्क इत्याह । यत्तनाद्रि  
यं ते वृद्धाः । अत्र पंचाशता भवेद्ब्रह्मातर्धेन तु विष्टर इत्यादि गृह्यपरिशिष्टादेर्विष्ट  
रादिलक्षणां मधुपर्कादिविधिश्च गृह्यादेर्ज्ञेयः ( कन्यादानेऽपि पितामहपूर्वकमि



त्युक्तं स्मृत्यर्थसारे) नांदीमुखे विवाहे च प्रपितामहपूर्वकम् ॥ नामसंकीर्तयेद्विद्वान-  
 न्यत्रापि पूर्वकम् ॥ नांदीमुखे इति बह्वृचाद्यतिरिक्तविषयम् (गृह्यपरिशिष्टेषु  
 ब्राह्मणानुलोम्यान्तानात् । व्यासः) भुक्तासमुद्धहेत्कन्यां सावित्रीग्रहात् प्रा ॥ उ-  
 पोषितः सुतांदद्यादर्चिताय द्विजाय तु ॥ भुक्त्वेति सधुपर्कवेधभोजनपरम् (गृह्यप-  
 रिशिष्टे) कन्यां वरयमाणानामेषधर्मा विधीयते ॥ प्रत्यङ्मुखं वा वरं यंति प्रतिगृह्णं-  
 ति प्राङ्मुखाः (मदनरत्ने ऋष्यशृंगे) वरगोत्रं समुच्चार्य प्रपितामहपूर्वकम् ॥ नामसं-  
 कीर्तयेद्विद्वान्कन्यायाश्चैव मेव हि ॥ तिसृष्वेव पूर्वमुखो दाता वरः प्रत्यङ्मुखो भवेत् ॥  
 सधुपर्काच्चितायै नांतस्मै दद्यात्सदसि गाम् ॥ उदयावंततो गृह्यमंत्रेणानेन दापयेत्  
 गौरीं कन्यामिमां विप्रयथाशक्तिविभूषिताम् ॥ गोत्राय शर्मणो तुभ्यं दत्तां विप्रस-  
 माश्रय ॥ भूमिगां चैव दासीं च वासांश्चिचस्वशक्तिः । महिषां वा जिनश्चैव दद्या-  
 त्स्वर्गामणीनां पि ॥ ततः स्वगृह्यविधिना होमाद्यं कर्म कारयेत् ॥ यथाचारं विधेया-  
 नि मांगल्यकुतुकातिच (एतत्कन्यादानं विःकार्यमिति शौनकः । गृहप्रवेशनीय-  
 होमे विशेषमाहाप्रवलायनः ) अर्धरात्रे व्यतीते तु परेद्युः प्रातरेव हि ॥ गृहप्रवेश-  
 नीयः स्यादिति यज्ञविदो विदुरिति ( औपमनहोमे विशेषमाह शौनकः ) यदि  
 रात्रौ विवाहारि न रुतपन्नः स्यात्तथा सति ॥ उपक्रम्योत्तरस्याहः सायं परिचरेदमु-  
 म् ॥ यदि रात्रौ न वनाडीमध्येऽग्न्युत्पत्तिस्तदा तदैव होमारंभः तदुत्तरं चेत्परदिने  
 सायमारंभ इति सुदर्शनभाट्टे उक्तम् ( अथ देवकोत्थापनं ) समेचदिवसे कुर्वाद्देव-  
 कोत्थापनं बुधः ॥ यद्यं च विप्रमनेष्टं मुक्त्वा पंचमसप्तमौ ( निर्णयदीपे गार्ग्यः )  
 नांदीग्राह्ये कृते प्रचाद्या वन्मातृविसर्जनम् ॥ दर्शग्राह्यं क्षयग्राह्यं स्नानं शीतोदके  
 न च ॥ अपसव्यं स्वधाकारं नित्यग्राह्यं तथैव च ॥ ब्रह्मयज्ञं चाध्ययनं नदीसीमांति-  
 लंघनम् ॥ उपवासं व्रतं चैव ग्राह्यं भोजनमेव च ॥ नैव कुर्युः सपिंडाश्च मंडपोद्वासना-  
 वधि ( बृहस्पतिः ) तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविस्तरे ॥ नगरग्रामदाहे च  
 स्पृष्ट्वा स्पृष्ट्वर्न दुष्यति ( योगयाज्ञवल्क्यः ) न स्नायादुत्सवे तीते मंगलं विनिवर्त्य-  
 च ॥ अनुव्रज्य सुहृदं धूतर्चयित्वेष्टदेवताम् ( ज्योतिषे ) स्नानं सचैलं तिलमिश्रकर्म-  
 प्रेतानुयानं कलशप्रदानम् ॥ अपूर्वतीर्थमिरदर्शनं च विवर्जयेन्मंगलतोद्धमेकम् ॥

मासंयत्कंविवाहादौव्रतप्रारंभगोनच ॥ जीर्णभांडादिनत्याज्यंगृहसंमार्जनंतथा ॥  
ऊर्ध्वविवाहात्पुत्रस्यतथाचव्रतबंधनात् ॥ आत्मनोमुंडनैववर्षवर्षार्धमेवच ॥  
अभ्यंगोसतकेचैवविवाहेपुत्रजन्मनि ॥ सांगल्येषुचसर्वेषुनधार्यगोपिचंदनस (ज्यो  
तिर्निबंधे ) उद्वाहात्प्रथमेशुचौयदिवसेद्धर्तुगृहेकन्यकाहन्यात्तज्जननींक्षयेनि  
जतनुंज्येष्टेपतिंज्येष्टकम् ॥ पौषेचश्रवणुरंपतिंचमलिनेचैत्रेस्वपित्रालयेतिशृंतीपि  
तर्हतिहंतिनभयंतेशामभावेभवेत् (निबंधे) विवाहात्प्रथमपौषेआषाढेचाधिसा  
सके ॥ नसाभर्तुगृहेतियेचैत्रेपितृगृहेतथा (हेमाद्रौस्मृत्यंतरे) विवाहव्रतचडासुवर्ष  
सर्वतदर्धकम् ॥ पिंडदानंमृदास्नानंनकुर्यात्तिलतर्पणम् (तथा) अर्धपूर्ववत् । सपि  
डानैवकुर्वीरक्षिःस्नानमृतुत्रये ॥ तीर्थेसंवत्सरेप्रेतेपितृयज्ञेमहालये ॥ कृतोद्वाहो  
पिकुर्वीत्पिंडनिर्वपणंसदा (अथबंधप्रवेशः जयतुंगे) मार्गशीर्षीतथामाघेमाधवे  
ज्येष्ठतंज्ञके ॥ सुप्रशस्तेभवेद्देवप्रवेशोनवयोयिताम् (नारदः) आरभ्योद्वाह  
दिवसात्तद्वेवाप्यष्टमेदिने ॥ वधूप्रवेशः संपत्त्यैदशमेथसमेदिने (संग्रहे) विवाह  
मारभ्यवधूप्रवेशोयुग्मेतिथौषोडशवासरांतात् ॥ ऊर्ध्वततोऽब्देयुजिपंचमांता  
दतःपरस्तीक्ष्ण्यमोनचास्ति (नारदः) समेवर्षेसमेसासेयदिनारीगृहंव्रजेत् ॥ आ  
युष्ट्यंहरतेभर्तुःसानारीसरणां व्रजेत् (प्रयोगरत्नेतु) वधूप्रवेशः प्रथमेतृतीयेशुभप्र  
दःपंचमकेयवाह्नि ॥ द्वितीयकेवायचतुर्थकेवायष्टेवियोगामयदुःखदः स्यादि  
त्युक्तं तत्रसूत्रं चिंत्यम् (वृद्धवशिष्ठोपि) दद्याद्यमेवादशमेदिनेवाविवाहमारभ्यव  
धूप्रवेशः ॥ पंचांगसंशुद्धिदिनंविनापि विधावसद्गोचरगोपिकार्यः (लल्लः) स्वभुव  
नपुरवेशेदेशानांविप्लवेतथोद्वाहे ॥ नववध्वागृहगमनेप्रतिशुक्रविचारणानास्ति  
(सांडव्यः) नित्ययानेगृहेजीर्णोप्राशनांत्युसप्तसु ॥ वधूप्रवेशेसांगल्येनमौढ्यं शु  
रुशुक्रयोः (ज्योतिःप्रकाशे) वामेशुक्रेनवोडायाःमुखंहानिश्चदक्षिणे ॥ धनं  
धान्यंचपृष्ठस्थेसर्वनाशःपुरःस्थिते ॥ नवोडायास्तुवैधव्यंयदुक्तंसंमुखेभृगौ ।  
तदेवविबुधैर्ज्ञेयंकेवलंतुडिरागमे ॥ पृथ्वीभ्युदितेशुक्रेप्रयायाहसिणापरे ॥ प  
श्चादभ्युदितेचैवयायात्पूर्वात्तरेदिशौ (व्यवहारतत्त्वे) पौष्पात्कराचश्रवणाच्च  
युग्मेहस्तत्रयेसूलमधोत्तरासु ॥ पुष्येचमैत्रेचवधूप्रवेशोरिवतेतरेव्यर्ककुजेचशस्तः



(गर्गः) व्यतीपातेचसंक्रांतीग्रहोवैधृतावपि ॥ आङ्गविनाशुभंनैवप्राप्तकालेपि  
मानवः (तथा) अमासंक्रांतिविषयादौप्राप्तकालेपिनाचरेदिति (अथद्विराग  
मनस ॥ ऋक्षोच्चये) माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदिने ॥ गुर्वादित्यविशुद्धौ  
स्यान्नित्यंपत्नीद्विरागमः (वादरायणाः) नीहारांशुदिनोत्तरादितिगुरुब्रह्मानुरा  
धाश्विनीशुक्रेभास्करवायुविष्णुवरुणात्वाष्टे प्रशस्तेतिथौ ॥ कुंभोजालिगतेर  
वौशुभकरेप्राप्तोदयेभार्गवेजीवज्ञास्फुजितांदिनेनववध्वेषमप्रवेशः शुभः (अथ  
पुनर्विवाहः । श्रीधरीये) पुनर्विवाहंवक्ष्यामिदंपत्योः शुभवृद्धिदम् ॥ लगनेदुल्लग्न  
योर्दोषेग्रहतारादिसंभवे ॥ अन्येष्टवशुभकालेषुदुष्टरोगादिसंभवे ॥ विवाहेचापि  
दंपत्योराशौचादिसमुद्भवे ॥ तस्यदोषस्यशांत्यर्थपुनर्वैवाह्यमिष्यते (याज्ञवल्क्यः)  
सुरापीव्याधिताधूतविंध्यार्थदन्यप्रियंवदा ॥ स्त्रीप्रसूत्राधिवेत्तव्यापुस्त्यहेषि  
णीतथा (मनुः) वंध्याष्टमेधिवेत्तव्यादशमेतुमृतप्रजा ॥ एकादशेस्त्रीजननीसद्य  
स्त्वप्रियवादिनी (संग्रहेतु) अप्रजादशमेवर्षेस्त्रीप्रजाद्वादशेत्यजेत् ॥ मृतप्र  
जापंचदशेसद्यस्त्वप्रियवादिनीम् (याज्ञवल्क्यः) एकामुत्क्रम्यकामार्थमन्योल  
ब्धयश्छति ॥ समर्थस्तेष्वयित्वार्थैः पूर्वोढामपरां वजेत् ॥ आज्ञासंपादिनींद  
सांवीरसुंप्रियवादिनीम् ॥ त्यजन्दाप्यस्तृतीयांशमद्रव्योभरणांस्त्रियाः (मनुः)  
अधिवेत्तातुयानारीनिगच्छेद्रोयितागृहात् ॥ सासद्यः सन्निरोद्धव्यात्याज्यावाकु  
लसन्निधाविति (हेमाद्रौकात्यायनः) अग्निशिष्टादिशुश्रूयांबहुभार्यः सवर्गाया ॥  
कारयेत्तद्वहुत्वंचेज्ज्येष्ठयागर्हितानचेदिति (याज्ञवल्क्यः) सत्यामन्यांसवर्गा  
यांधर्मकार्येनकारयेत् ॥ सवर्गासुविधौधर्म्येज्येष्ठयानविनेतरा (द्वितीयविवा  
हहोमेग्निसाहकात्यायनः) सदारोऽन्यास्पुनर्दाराबुद्धोहुंकारणांतरात् ॥ यदी  
च्छेदग्निमानकतुंक्रहेमोस्यविधीयते ॥ स्वेगनावेवभवेद्धोमेलौकिकेनकदाचन  
(त्रिकांडसंडनोपि) आद्यायांविद्यमानायां द्वितीयामुदहेद्यदि ॥ तदावैवाहिकं  
कर्मकुर्यादावसथेग्निसान् (सुदर्शनभाट्येतु) द्वितीयविवाहहोमेलौकिकसवनपू  
र्वोप्राप्तनेइत्युक्तम् (इदंचासंभवेतत्रचाग्निहव्यसंसर्गः कार्यस्तदाहशौनकः) अथा  
ग्न्योर्गृह्ययोर्व्योसंपत्नीभेदजातयोः ॥ सहाधिकारसिद्धयर्थमहंवक्ष्यामिशौनकः

अरोगामुद्वहेत्क्रन्यांधर्मलोपभयात्स्वयम् ॥ कृतेतत्रविवाहेचव्रतांतेतुपरेहनि ॥  
 पृथक्स्थंडिलयोरग्निसमाधाययथाविधि ॥ तत्रकृत्वाज्यभागांतमन्वाधाना  
 दिकृततः ॥ जुहुयात्पूर्वपत्यग्नौतयान्वारब्धआहुतिः ॥ अग्निमीष्टेपरोहितं  
 सूक्तेनवर्चेनतु ॥ समिद्धोत्तमसारोप्यअयंतेयोनिरित्यूचा ॥ प्रत्यवरोहेत्यन  
 याकनित्यग्नौनिधायतम् ॥ आज्यभागांततंत्रादिकृत्वारभ्यतदादितः ॥ समन्वा  
 रब्धसताभ्यांपत्नीभ्यांजुहुयाद्वृत्तम् ॥ चतुर्गृहीतमेताभिर्हविःषड्भिर्यथाक्र  
 मम् ॥ अग्नौवग्निरुचरतीत्यग्निराग्निःसमिध्यते ॥ अस्तीदमितितिसभिःपाहि  
 नोअग्नस्तथा ॥ ततःस्विष्टकृदारभ्यहोमशेषं समापयेत् ॥ गोयुगंदक्षिणादेया  
 ओत्रियायाहितारगये ॥ पत्न्योरेकायदिमृतादग्ध्वातेनैवतांपुनः ॥ आदधीतान्य  
 यासाद्धमाधानविधिनागृहीति(बौधायनसूत्रेण) अथयदिगृहस्थोद्वेभार्येविंदेतक  
 थंतत्रकुर्यादितियस्मिन्कालेविंदेतोभावग्रीपरिचरेदपरग्निसुप समाधायपरि  
 स्तीर्यज्यंविलाप्यसुचिचतुर्गृहीतंगृहीत्वाऽन्वारब्धयां जुहोतिनमस्तत्तद्वेरा  
 दाव्यधायैत्वास्वधायैत्वामानइंद्राभिमतस्त्वद्वृद्धारिष्टां समवब्रह्मन्वेदसुस्वाहेत्य  
 थाऽयंतेयोनिर्हवित्वयइतिसमिधिसमारोपयेत् । पर्वग्निसुपसमाधायजुह्वा  
 नउद्बुध्यस्वग्नइतिसमिधिसमाधायपरिस्तीर्यसुचिचतुर्गृहीत्वाद्वयोभार्ययोरन्वा  
 रब्धयोर्यजमानोभिमृशति योब्रह्मा ब्रह्मणाइत्येते नसक्तेनैकंचतुर्गृहीतं जुहात्य  
 ग्निसुखानकृत्वापक्वांजुहातिसंसितंसंकल्पेधमितिपुरीनुवाक्यामनुचारानेपुरीर्ये  
 इतियाज्ययाजुहात्प्रयाज्याहुतीरुपजुहातिपुरीर्यमस्तमित्यंतादनुवा कस्यस्वि  
 ष्टकृतप्रभृतिमिद्धमाधेनुवरदानादयाग्रेणाग्निरंदर्भस्तंबेहुतंशेषंनिदधातिब्रह्मजज्ञा  
 नंपिताविराजामितिद्वाभ्यांसंसर्गविधिःकार्यः ( द्वितीयादिविवाहेकाल उक्तः  
 संग्रहे ) प्रसदामृतिवासरादितःपुनरुद्वाविधिर्वरस्यच ॥ विद्यमेयुगवत्सरेषुभो  
 युगलेचापिमृतिप्रदोभवेत् ( तृतीयविवाहेनियेधोमात्स्ये ) उद्वहेइतिसिद्धयर्थं  
 तृतीयांनकदाचन ॥ मोहादज्ञानतोवापिर्यादिगच्छेतुमानुयोस ॥ नश्यत्येवमसंदे  
 होगर्गस्यवचनंयथेति ( संग्रहे ) तृतीयांयदिचोद्वहेत्तर्हिसाविधवाभवेत् ॥ च  
 तुर्थदिविवाहार्थतृतीयेऽर्कसमुद्वहेत् ( तद्विधिस्तु ) रविशान्योर्हस्तेवावरःसं



कल्प्यस्वस्तिवाचनं नदीश्राद्धं कृत्वा चार्घ्यं कृत्वा । आकृष्योनेति छायायुतं सूर्यम  
 कंसं पञ्चगुडौ दत्तं कृत्वा । वस्त्रेणातंतुभिरावेश्य । त्रिलोकवासिनः संप्राप्त्यवच्छायया  
 सहितो रवे ॥ तृतीयोद्वाहजं दीप्य निवारय सुखं कुर्वित्संप्राप्त्यजलेन त्रिः सिंचेत्  
 समप्रीतिकरायेयं मया सृष्टा पुरातनी ॥ अर्कजा ब्रह्मणा सृष्टा अस्माकं प्रतिरक्षतु ॥  
 नमस्ते सकले देवि नमः सवितुरात्मने ॥ ब्राह्मिणं कृपया देवी पत्नी त्वं मे इहा गती ॥  
 अर्कत्वं ब्रह्मणा सृष्टः सर्वप्राणिहिताय च ॥ वृक्षाणां मादिभूतस्त्वं देवानां प्रीतिवर्ध  
 नः ॥ तृतीयोद्वाहजं पापं मृत्युं चाशुविनाशयेति ॥ ततश्चाचार्यः काश्यपगोत्रा मा  
 दित्यप्रपौत्रीं सवितुः पौत्रीं समपुत्रीं मर्ककन्यासमुक्त्वा गोत्राय वराय दास्ये इति वाग्दा  
 नं कृत्वा वरस्य सधुपकं कृत्वा ॥ ततः पदं धृत्वा स्वस्ति न इति सूक्तं जप्त्वा पर्ववत्कन्यां  
 दत्वा । अर्ककन्यामिमां मित्युहेन कन्यादानं मंत्रमुक्त्वा दक्षिणां दद्यात् । ततो गा  
 यत्र्या वेष्टितं सवेणा वृहत्सामेति मंत्रेणा कंकरां बध्वा ॥ कस्याचतुर्दिक्षु कुंभेभ्यु विष्णां सं  
 पूज्याग्निप्रतिष्ठाप्याधारं ते संगोभिरिनिबृहस्पतये यस्मै त्वा काम कामायेत्युच्चा  
 ॥ नयेव्यस्तं समस्तव्याहृतभिराज्यं हुत्वा चार्घ्याय गोयुगं दत्वा । मया कृतमिदं क  
 मस्थावरं युजरायुगा ॥ अर्का ॥ पत्यानि नो देहितत्सर्वं संतु मर्हसीति न मे दिर्तिदक्  
 इति निर्णयसिन्धौ विवाहः ( रत्नमालायाम् ) प्राजापत्ये पूषभे सद्भिर्देवे पुष्टये ज्ये  
 ष्ठास्त्वं दवे कृत्तिकासु ॥ अग्न्याधानं ह्युत्तराणां त्रयेऽपि चित्रादित्ये कीर्तितं गर्गमुख्यैः  
 ( आश्वलायनः ) अग्न्याधनं कृत्तिकासुरोहितायां मृगाशिरसि फल्गुनीयुविशा  
 खयोः रुत्तरयोः पौषपदयो रतेयां कस्मिंश्चिद्दसंते पर्वणि ब्राह्मणा आदधीत् प्रीक्ष  
 वग्नाशरत्नसत्रियवैश्योपक्रुष्टा यस्मिन् कस्मिंश्चिद्दृतावादाधीतसोमेन यक्ष्यमा  
 राणो नर्तुं पृच्छेन्न सत्रम् । सोमाधाने ऋत्वाद्यनालोचनमार्तपरम् । अथोखलु यदै  
 वै न रवं श्रद्धोपनमेदया दधीतसैवास्य विधिरिति सोमेन यक्ष्यमाणा नर्तुं पृच्छेन्न स  
 त्रं तदेतदार्त्तस्यातिबलं वा श्रद्धा युक्तस्य भवतीति बौधायनोक्तेरिति ( सदनरत्ने बृह  
 गार्यः ) पुष्याग्नेऽप्युत्तरादित्यपौषाज्येष्टा चित्रार्कद्भिर्देवैर्दुभेभ्यु ॥ कुर्युर्वह्न्या धानमा  
 द्यं वसंतं प्रीक्षोऽस्मिंतेऽवेव विप्रदिबर्णाः ( कालादर्शे ) अग्निहोत्रं दर्शपरां मासा  
 वप्युत्तरायणे ॥ उपक्रम्य यथाकालमुपासीर न हि जातयः ॥ सोमं च पशुवं च सर्वा

प्रचविक्रतीरपि ॥ सौम्यायनेयथाकालंविदध्युर्गृहमेधिनः ॥ अत्रविशेषःपूर्व  
मुक्तः । अग्निहोत्रकालउक्तः ( छंदोगपरिशिष्टे ) उदितेनुदितेचैव समयाध्यु  
षितेतथा ॥ सर्वथावर्ततेयज्ञइतीयंवैदिकीश्रुतिः ( स्यांस्वरूपंतत्रैव ) रात्रेस्तु  
योडशेभागेग्रहनक्षत्रभूषिते ॥ कालंत्वनुदितंज्ञात्वाहोमंकुर्याद्विचक्षणाः ॥ तथा  
प्रभातसमयेनष्टेनक्षत्रमंडले ॥ रविर्याविन्नदृश्येतसमयाध्युषितंचतत् ॥ रेखासा  
त्रंप्रदृश्येतरस्मिभिश्चसमन्वितः ॥ उदितंसद्विजानीयात्तत्रहोमंप्रकल्पयेत् ( आ  
श्वलायनः ) उद्योदयंव्युषितउदितेवा । सायंतुसख ॥ अस्तमितेहोमइति ( गौ  
णाकालमाहसख ) प्रदोषांतोहोमकालःसंगवांतःप्रातरिति ( छंदोगपरिशि  
ष्टे ) यावत्सम्यङ्नुभवाव्यंतेनभस्यृक्षाणिसर्वतः ॥ नचलोहितमापैतितावत्सायं  
तुह्यते ॥ औपासनेप्येवम् तस्याग्निहोत्रेणाप्रादुर्भवाहोमकालोव्याख्याता  
वित्याश्वलायनोक्तेः ( अथावसथयाधानम् ॥ पारस्करः ) अवसथयाधानंदारका  
लेदायाद्यकालमकेयामिति । दायाद्यकालोविभागकालः ( मदनरत्नेव्यासः )  
अग्निर्वैवाहिकीयेननगृहीतःप्रमादिना ॥ पितर्युपरतेतेनगृहीतव्यःप्रयत्नतः ॥  
योगृहीत्वाविवाहाग्निंगृहस्थइतिमन्यते ॥ अन्नंतस्यनभोक्तव्यंवृथापाकोहिसः  
स्मृतः ॥ ज्येष्ठभ्रातरिपितरिवासाग्नौकनिस्यपुत्रस्यवाऽन्यभावेपिनदोषः ( त  
दाहतत्रैवगार्ग्यः ) पितृपाकोपजीवीवाभ्रातृपाकोपजीविकः ॥ ज्ञानाध्ययन  
निस्योवानदुष्येताग्निनाविना ( गृहस्थस्याप्ययनमाहसत्यव्रतः ) अनधीत्यद्वि  
जोवेदंस्मात्वोद्वाह्ययथातथा ॥ अधीतेब्रह्मचर्येणासांगवेदंगुरोगृहे ॥ इदंचाधा  
नंज्येष्ठे कृताधानेनकार्यम् ॥ दाराग्निहोत्रसंयोगंकुरुतेयोग्रजेस्थिते ॥ परिवे  
त्तासविज्ञेयः परिवर्तितस्तुपूर्वजइतिमनुशातातपोक्तेः । स्मार्तेप्येवम् । सौदर्जे  
तिष्ठतिज्येष्ठेत्कुर्यात्तद्वारसंग्रहम् ॥ आवसथ्यंतथाधानंपतितस्तुतथाभवेदिति  
तत्रैवगार्ग्योक्तेः ( आज्ञायांत्वदोयमाहसुमंतुः ) ज्येष्ठोभ्रातायदातिष्ठेदाधानंनेव  
चाश्रयेत् ॥ अनुज्ञातस्तुकुर्वीतशंखस्यवचनंयथा ( वृद्धवशिष्ठः ) अग्रजस्तुयदाऽन  
ग्निरादध्यादनुजःकथम् ॥ अग्रजोनुमतंकुर्यादग्निहोत्रंयथाविधि ( हारीतः )  
सोदराणांतुसर्वेषांपरिवेत्ताकथंभवेत् ॥ दारैस्तुपरिविद्यंतेनाग्निहोत्रेणानेज्यया ॥



अधिकारिणोपिभ्रातुरनुज्ञयाकुर्यादिति मदनपारिजातः ॥ विवाहस्त्वनुज्ञया  
 पिनेत्यर्थः ॥ सोदरोक्तेरसोदराणां सापत्नदत्तकादीनां न दोषः । दत्तकस्यापि  
 सोदराविवाहाभावे दोष एव ( तदाह हेमाद्रौ विशिष्टः ) पितृव्यपुत्रान् सापत्ना  
 न परनारीसुतांस्तथा ॥ दाराग्निहोत्रसंयोगेन दोषः परिवेदने । परनारीसुताः  
 दत्तकादयः ( देशान्तरे विशेषमाह सख्य ) अष्टौ दश द्वादश वर्षाणि वा ज्येष्ठभ्रातर  
 मनिविष्टमप्रतीक्षमाणाः प्रायश्चित्तं भवतीति ( क्लीवादावप्यदोषमाह कात्या  
 यनः ) देशान्तरस्थ क्लीवैकवृत्त्या न सहोदारान् ॥ वेश्यानिष्ठं प्रचरति तशद्रु  
 त्यातिरोगिणाः ॥ जडमकां धवधिरकुञ्जवामनखं जकान् ॥ अतिवृद्धानभार्या  
 प्रचक्षुषिसक्ताश्च पश्य च ॥ धनवृद्धिप्रसक्तांश्च कामतो कारिणास्तथा ॥ कुटिलो  
 न्मत्तचोरांश्च परिर्विन्दन्नदुष्यति ( आशार्क्येऽपि ) उन्मत्तः कित्वधीकुप्यति त  
 क्लीवस्य वा ॥ राजयक्ष्मा मया वोचनन्याय्याः स्यात्प्रतीक्षतुम् ॥ एवं ज्येष्ठेऽपि  
 हस्तादावपि न परिवेत्तुत्वम् ( तदाह त्रिकांडमंडनः ) दर्शयिष्यौ रीमासेष्टिसोमेज्यां  
 मग्निसंग्रहम् ॥ अग्निहोत्रं विवाहं च प्रयोगे प्रथमे स्थितम् ॥ न कुप्यज्जनके ज्येष्ठे  
 सोदरे चाप्यकुर्वति ॥ सेवजादावनीजाने विद्यमानेऽपि सोदरे ॥ नाधिकारविधातो  
 स्तिभिन्नोदर्यपि चौरसे ॥ एवं धर्मकवधिरपतिर्नामाददूषणो ॥ संन्यस्तच्छिन्न  
 हस्तादौ यद्वा यद्वादिदूषणो ॥ जनके सोदरे ज्येष्ठे कुर्यादेवेतरः क्रियामिति । आरोह  
 तं दशतं शकरीर्ममेत्याधाने मंत्रवर्णाच्च ॥ शकरीरंगुलीः । तंत्ररत्नेऽप्युक्तम् । अंगवै  
 कल्यातपर्वमाहिताग्नित्वेऽधिक्रियेते नित्येषु । आधानं तु न कुर्यात्तस्य नैमित्ति  
 कत्वादिति ॥ एवं चतुरंगुलेऽपि । यदंगुलकाणां विवरादिस्त्वस्त्येवाधिकारः । स  
 कादशमुदर्शात्तर्गतेः । शरीरकाप्रथं वा विप्रतिषिद्धमिति हिरण्यकेशिसूत्रे कर्मा  
 शक्तिहेतोरेवांगवैकल्यस्य नियेधात् ॥ अतस्त्वद्राह्यायणसूत्रेऽप्यत्र प्रथमैस्त्रि  
 मित्गुणैरि न्यूनं गस्याप्यधिकार उक्तः ( अपरार्क्येऽपि उक्तः ) पितापितामहाय  
 स्य अग्रजो वायकस्य चित् ॥ तपोग्निहोत्रमंत्रेयुन दोषः परिवेदने ( पितुराज्ञायाम  
 प्यदोषमाह मदनरत्ने सुमंतुः ) पित्राय स्य तु नाधानं कथं पुत्रस्तु कारयेत् ॥ अग्निहो  
 वेधिकारोऽस्ति शास्त्रस्य वचनं यथेति ॥ नाधानं कृतमित्यर्थः । ( एतदाज्ञायामेवेति हे

माद्रिः । यत्तु) पितुःसत्यप्यनुज्ञानेनादधीतकदाचनेति ॥ तत्सत्यधिकारे ज्ञेयम्  
(अथशूद्रसंस्काराः ॥ यमः) शूद्रोप्येवंविधः कार्यो विनासंवेगासंस्कृतः ॥ न केन  
चित्समसृजच्छन्दसातंप्रजापतिः (छन्दसामंवेगा । व्यासोपि) गर्भाधानंपुंसवनंसी  
मंतोजातकर्मच ॥ नामक्रियानिष्ठक्रमोन्नप्राशनंवपनक्रिया ॥ कर्णवेधोव्रतादे  
शोवेदारंभक्रियाविधिः ॥ केशांतस्नानमुद्वाहोविवाहाग्निपरिग्रहः ॥ वेताग्नि  
संग्रहश्चैव संस्काराः षोडशस्मृता इत्युक्त्वाह । न वैताः कर्णवेधांतामंत्रवर्जस्त्रियाः  
क्रियाः ॥ विवाहेमंत्रतस्तस्याः शूद्रस्याः मंत्रतोदशेति (मदनरत्नेहिररायगर्भदा  
नेतु) गर्भाधानंपुंसवनंसीमंतोन्नयनंतथा ॥ कुर्युर्हिररायगर्भस्यततस्तोद्विजपुं  
वा इत्युक्त्वाजातकर्मादिकाः कुर्यात्क्रियाः षोडश आपरा इत्यत्रस्त्रियाजातकर्म  
नामकरणानिष्ठक्रमोन्नप्राशनच्छूडविवाहाः षट् । शूद्राणांतुषडेतेपंचमहायज्ञा  
श्चेत्येकादशेत्युक्तम् । रूपनारायणाहरिहरभाष्ययोरप्येवम् (शाङ्गधरस्तु)  
द्विजानां षोडशैवस्युः शूद्राणां द्वादशैवहि ॥ पंचैवमिथ्यजातीनांसंस्काराः कुतश्च  
र्मतः ॥ वेदव्रतोपनयनमहानाम्नीमहाव्रतम् विनाद्वादशशूद्राणांसंस्कारानामसं  
व्रतइत्याह । अपरार्कस्तुगर्भाधानमृतौपुंसइत्यब्राह्म । एतच्चातुर्वर्ग्यपरम् । न द्वि  
जातिमात्रपरम् । तथासत्युपनयनविधायवाच्यंस्यादिति । तेनतन्मतेषोभवंति ।  
ब्राह्मेतुविवाहमात्रसंस्कारंशूद्रोपिलभतांसदेत्युक्तम् । अवसदसच्छूद्रगोचरत्वेन  
देशभेदाद्व्यवस्था(यत्तुमनुः)तशूद्रेपातकांकिंचिन्नचसंस्कारमर्हतीति (तदर्थमाह  
मेधातिथिः) यत्तुसामान्यतोनिषिद्धंस्तेयानृतादिनतदतिक्रमेऽस्यप्राप्यथाद्विजा  
नामुपनयनरूपसंस्कारंचनार्हतीति।तेचतृष्णींकार्याः शूद्रोवर्णाप्रचतुर्थोपिवर्णा  
त्वाद्धर्ममर्हतिवेदमंत्रस्वधास्वाहाव प्रट्कारादिभिर्विनेतिव्यासोक्तेः । असंव्रस्य  
तुशूद्रस्यविप्रोमंत्रेणागृह्यतेइतिमरीच्युक्तेप्रच । इयंपरिभाषासर्वाथितिनशूद्रध  
र्मेषुसर्वविप्रेणामंत्रःपठनीयः । सोपिपौराणस्येतिशूलपाणिः । एवंस्त्रीणांम  
पीतिदिक् ॥

इति रामकृष्ण भट्टात्मज कमलाकरभट्ट कृते निर्णयसिन्धौ संस्कार निर्णयः ॥



(अथसुद्रकालाःतत्रजलाशयस्यवाराहः) हस्तेचांबुपपौषाकेशवमघामित्रो  
 तरारोहिणीदेवेज्येयुचशुकसौम्यशशभृङ्गाशिवारांशके ॥ रिक्तांछिद्रतिथिं  
 विहायवृषभेनक्रेकुलीरेघदेमीनेकूपतडागकर्ममुनयःशंसंतिशुद्धेऽष्टमे ॥ हस्तोम  
 घानुराधापुष्यधनिष्योत्तराशिरारोहिणयः॥ शतभिषगित्यारंभेकूपानांशस्यतेभग  
 णाः(हेमाद्रौभविष्ये)तस्मिन्सलिलसंपूर्णोकार्तिकेतुविशेषतः ॥ मुनयःकेचिदि  
 दृष्टंतिद्वयतीतेचोत्तरायणो॥नकालनियमस्तत्रसलिलंतत्रकारणम्(दीपिकापि)  
 मार्तण्डेदुशुद्धौमुरजिदशयनेमाघयदकस्यशुक्लेसूलायाढोत्तराश्विश्चवराणशुक  
 रेपौषाशुक्राज्यचंद्रे॥मंत्रेब्राह्मेचपूणांमदन१३रवि१२तिथौ॥द्वितीयातृतीयेका  
 र्थातीयप्रतिष्ठाज्ञशुसितदिनेकालशुद्धेसुलग्ने(वराहः)आग्नेयेयदिकोरोग्राम  
 स्यपुरस्यवाभवतिकूपः॥नित्यंसकरोतिभयंदाहंचसमानसंप्रायः॥नैर्ऋत्येबालभ  
 यंवनितास्यंचवायव्ये ॥ दिक्त्रयमेतत्त्यक्ताशेषास्तुशुभावहाःकूपाः(वास्तुशा  
 स्त्रे)भूतिंपुष्टिंपुत्रहानिंपुरंध्रीनाशंमृत्युंसंपदंशत्रुवाधाम ॥ किंचित्सौख्यंशंभुको  
 णादिकुर्यात्तकूपौमध्येगेहमर्थस्यंच ॥ उत्सर्गविधिप्रचोक्तोबहुवृचपरिशिष्टे  
 (अथातोवापीकूपतडागयज्ञंव्याख्यास्यामः)पुरायेह्युदकसमीपेऽग्निंसमाधा  
 यवास्तुांचरुंश्रपयित्वाज्यभागांते अज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ समुद्रज्येष्टेतिप्रत्यृचंत  
 तोहविष्याष्टोत्त्वायामीतिपंचत्वंना अग्नेर्इतिद्वेइमंवेवसुतोतिचस्विष्टंकृतंनवमस  
 मार्जनांतेधेनुंतारयेत् । अवतीर्यमाणासनुसंत्रयेत् । इदंसलिलंपवित्रंकुरुष्वशुद्धा  
 पूताअमृताःसंतुनित्यम् ॥ सांतारयंतिकुरुतीर्थाभिषेकंलोकालोकं तरतेतीर्थतैचे  
 तिपुच्छाग्नेन्वारब्धउत्तीर्थापोअस्मान्मातरः शुंध्यंतित्वंयथापरांजितायांदिश्यु  
 पस्याप्रयेत्सुयवसाङ्गवतीतिहिंक्षातंचेद्विंक्षरावतीत्यलंकृतांविप्रायदद्यादि तरां  
 नाशक्त्यादसिणांततःउत्सृजेद्देवपितृमनुष्याः प्रीयंतामितिब्राह्मणान्भोजयि  
 त्वप्रावस्त्ययनंवाचयीतेति ॥ विस्तरस्तुमात्स्योक्तोऽस्मत्कृतेजलाशयोत्सर्गवि  
 धौज्ञेयः(कूपादेरुत्सर्गाकिरणोदोयउक्तोभविष्ये) सदाजलंपवित्रंस्यादपवित्रम  
 मसंस्कृतं ॥ कुशाग्रेणापिराजेंद्रनस्पृष्टव्यमसंस्कृतं(तथा)वापीकूपतडागादौ  
 यज्जलंस्यादसंस्कृतं ॥ अपेयंतद्भवेत्सर्वपीत्वाचांद्रायणांचरेत् (अथवृक्षारोप

राचंदेप्रवरः) आदित्यचांद्रिपतिव्यविशाखपौष्णमूलोत्तरात्रयतुरंगमवारुणा  
 ष्च । सतेषुतारकगणेषुहितंनराणांवृक्षादिरोपणमिहोपदिशतिधीराः ( अ  
 थसूतिप्रतिष्ठा वशिष्ठः ) हस्तत्रयेमित्रहरित्रयेचपौष्णाद्व्यादित्यसुज्यभेषु ॥  
 तिस्रोत्तराधातृशशांकभेषुसर्वास्रस्थापनमुत्तमंस्यात् ( मातस्ये ) चैत्रेवाफाल्गु  
 नेवापज्येष्टेवामाघवेतथा ॥ माघेवासर्वदेवानांप्रतिष्ठाशुभदाभवेत् ॥ नारदस्तु  
 चैत्रंनियेधयति । विचैत्रेष्टेवमासेषुमाघादियुचपंचस्विति । तेनाभिविकल्पः ।  
 अत्रमाघमासेविष्णु प्रतिष्ठाव्यतिरिक्तविषयः ॥ माघेकर्तुर्विनाशायफाल्गु  
 नेशुभदाभवेदिति ( विष्णुधर्मोक्तोरितिहेमाद्रिः मातस्ये ) दृढाधनकरीस्फी  
 तातथाप्रतिपदिस्मृता ॥ द्वितीयायांधनोपेतातृतीयायांधनप्रदा ॥ चतुर्थ्या  
 नाशमाप्नोति यमस्यस्यात्सुखावहा ॥ विनायकस्य देवस्यतथा तत्रहित  
 प्रदा ॥ पञ्चम्यांश्रीयुताकर्तुर्वरदाचतथाभवेत् ॥ षष्ठ्यांलक्ष्मीयुतानित्यंसप्त  
 म्यांरोगनाशिनी ॥ अष्टम्यांधान्यबहुलानवम्यांचविनश्यति ॥ भद्रकाल्यःकृता  
 तत्रकर्तुर्भवतितुष्टये ॥ धर्मवृद्धिकरीज्ञेयादशम्यांतुतथातिथौ ॥ एकादश्यांत  
 थायुक्ताद्वादश्यांसर्वकामदा ॥ त्रयोदश्यांतथाज्ञेयाचतुर्दश्यांविनश्यति ॥ कृष्णा  
 पक्षेपंचदश्यांकर्तुःसयकरीभवेत् ॥ पंचदश्यांतथाशुक्लेसर्वकामकरीभवेत् आ  
 याढेहेतथामूलमुत्तरात्रयमेवच ॥ ज्येष्ठाश्रवणारोहिण्यःपूर्वाभाद्रपदातथा ॥ ह  
 स्तोश्विनीरेवतीचपुष्योमृगशिरास्तथा ॥ अनुराधातथास्वातीप्रतिष्ठासुप्रशस्य  
 ते ( श्रीपतिः ) रोहिण्युत्तरपौष्णात्रैष्णावकरादित्याश्विनीवासवानूरार्धेद्वजीव  
 भेषुगदितंविष्णोःप्रतिष्ठापनम् ॥ पुष्यश्रुत्यभिजित्तुरेश्वरकयोर्वित्ताधिपस्कंद  
 योर्मैत्रेतिगमरुचेःकरेनिर्ऋतिभेदुर्गादिकानांशुभम् ॥ गणापरिवृढरक्षोयक्षभता  
 सुराणांप्रमथफणासरस्वत्यादिकानांचपौष्णो ॥ अवसिसुगतनाम्नोवासवेलौक  
 पानांनिगदितमखिलावांस्थापनंचस्थिरेषु ॥ तेजस्विनीक्षेमकृदग्निदाहविधा  
 यिनीस्याद्धनदोदृढाच ॥ आनंदकृत्कल्पविनाशिनीचसूर्यादिवारेषुभवेत्प्रति  
 ष्ठा ( माघवीयेवैखानसः ) मातृभैरववाराहनरसिंहविविक्रमाः ॥ सहिष्यासुर  
 हंश्चस्थाय्यावैदक्षिणायने ( वैशद्धोप्यर्थेलिंगप्रतिष्ठायांविशेषः ॥ हेमाद्रौ



लक्षणासमुच्चये ) उत्तराशागतेभानौलिंगस्थापनमुत्तमम् ॥ दक्षिणोत्त्वयनेपूज्य  
 विवर्द्धिभयावहम् ॥ स्वगृहेस्थापनंनेष्टं तस्माद्दैर्दक्षिणायने ॥ स्थापनं तु प्रकर्त  
 व्यंशिशिखरवृत्तये ॥ प्रावृद्धिस्थापितंलिंगंभवेद्वरदयोगदम् ॥ हेमन्तेज्ञानदं  
 चैवलिंगस्यारोपणंमत्तम् ( रत्नावल्याम् ) साधफाल्गुनवैशाखज्येष्ठायाऽप्युपंच  
 सु ॥ मासेषु शुक्लपक्षेषुलिंगस्थापनमुत्तमम् ( विष्णोरप्याह तत्रैवदैर्दक्षानसः ) मार्ग  
 शीर्षादिमासौद्वौनिर्दिता ब्रह्मणापुरा ॥ मासेषु फाल्गुनः श्रेष्ठश्चैत्रो वैशाखसर्व  
 च ॥ वृषेवाप्याश्वयुजः सासेषावगोमासिवाभवेत् ॥ बौधायनसूत्रेविष्णुप्रतिष्ठां  
 मुपक्रम्यद्वादश्यांश्रोणायांवायानिचान्यानिपुणयनक्षत्राणीति । कृत्तिकादि  
 विशाखांतिष्ठित्यर्थः ( सर्वदेवेषुमासविशेषोहेमाद्रौविष्णुधर्मः ) साधेकर्तुर्विनाशा  
 यफाल्गुनेशुभदाभवेत् ॥ लोकानन्दकरीचैत्रेवैशाखेवरसंयुता ॥ आज्ञायुतासदा  
 ज्येष्ठे आषाढेधर्मवृद्धिदा । । श्रावणोधनहीनास्यात्तपौष्यादेविः प्रयति ॥ आश्वि  
 नेनाशमप्नोति बह्विनाकार्तिकेतथा । सौम्येसौभाग्यमतुलं पौष्येपुष्टिरनुत्तमा ॥  
 दोषान्चिताधिसासेस्यात्कर्तुं रात्मनस्यचेति ॥ तत्रश्रावणाश्विनयोर्निर्येधो  
 मार्गशीर्षविधिश्चविष्णुव्यतिरिक्तविषयः ॥ पूर्वोक्तवचनादितिहेमाद्रिः ॥  
 साधश्रावणाभाद्रपदनियेधः ॥ शिवव्यतिरिक्तविषयः । तत्रतस्योक्तेः ( देविस्था  
 पनेतत्रैवविशेषोदेवीपुराणो ) देव्यासाधेऽश्विनेमासेउत्तमासर्वकामदा ( तथा )  
 नतिथिर्नचतस्रन्तोपवासोत्रकारणम् ॥ सर्वकालंप्रकर्तव्यंकृष्णपक्षेविशेषतः ॥  
 अन्यश्चात्र विचारोहेमाद्रौज्ञेयः ( नारदः ) हंत्यर्थहीनाकर्तारं मंत्रहीनातु  
 ऋत्विजम् ॥ स्त्रियंलक्षणाहीनातुनप्रतिष्ठासमोरिपुः ( अत्राधिकारिणाउक्ताः  
 कृत्यकल्पतरौदेवीपुराणो ) वशांश्चमविभेदेनदेवाःस्थाप्यातुनान्यथा ॥ ब्रह्मा  
 तुब्रह्मणोःस्थाप्योगायत्रीसहितःप्रभुः ॥ चतुर्वर्गोस्तथाविष्णुःप्रतिष्ठाप्यःसुखा  
 र्थिभिः ॥ भैरवोपचतुर्वर्गोरंत्यजानांतथामतः सातरःसर्वलोकैस्तुस्थाप्याःप  
 ज्याःसुरोत्तमाः ॥ लिंगंगृहीयतिर्दापिसंस्थाप्यतुयजेत्सदा ॥ ( शिवसर्वस्वेभवि  
 र्ये ) यस्तुपूजयतेलिंगंदेवादिमांजगत्पतिम् ॥ ब्राह्मणाःसत्रियोवैश्यःशूद्रोवाम  
 त्परायणाः ॥ तस्यप्रीतःप्रदास्यामिशुभांलोकाननुत्तमान् ( तिथितत्त्वेस्कांदे )

शूद्रः कर्मणिगो नित्यं स्वीयानि कुरुते प्रिये ॥ तस्याहमर्चा गृह्णामि चंद्रखंडं विभू  
 यिते ॥ ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वा न प्रस्थश्च सुव्रते ॥ सर्वदिने दिने देवपूजयेदं विष्णो  
 पतिम् ॥ संन्यासी देवदेवेशं प्रणम्य नैव पूजयेत् ॥ नमो ते न शिवे नैव स्त्रीणां पूजा वि  
 धीयते ॥ सतत्तत्पुराणा प्रसिद्धजीर्णालिंगपूजा विषयम् ॥ यान्ति तु ( त्रिस्थलीसे  
 तौ नारदीये ) यः शूद्रेणार्चितं लिंगं विष्णुं वा प्रणम्येन्नरः ॥ न तस्य निष्कृतिर्दुःखा  
 प्रायश्चित्तायुतैरपि ॥ न मेघः शूद्रसंस्पृष्टं लिंगं वा हरिमेव वा ॥ स सर्वयानातं भो  
 गीयावदा चंद्रतारकम् ॥ पाखंडं पूजितं लिंगं नत्वा पाखंडतां व्रजेत् ॥ आभीरपू  
 जितं लिंगं नत्वा नरकमश्नुते ॥ यो विद्भिः पूजितं लिंगं विष्णुं वापि न मेत्तुयः ॥ स  
 कोटिकुलसंयुक्तमाकल्पं रौरवं सेदित्यादीनि ॥ तानि नूतनस्थापितं लिंगादिवि  
 षयाणां ॥ यदा प्रतिष्ठितं लिंगं मंत्रविद्विष्यथा विधिः ॥ तदा प्रभृत्य शूद्रश्च यो  
 विद्वापि न संस्पृशेदिति तत्रैवोक्तेः ॥ प्रतिस्थायां तु शूद्रादीनां नाधिकारः । स्त्री  
 णामनुपनीतानां शूद्राणां च जनेश्वर ॥ स्पर्शनेनाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वाशंकर  
 स्य वा ॥ यः शूद्रसंस्कृतं लिंगं विष्णुं वापि न मेन्नरः ॥ इहैवाप्यंतदुःखानि पश्यत्या  
 मुठिमकोकिमु ॥ शूद्रोऽनुपनीतो वा स्त्रियो वापि ततोऽपि वा ॥ केशवं वा शि  
 वं वापि स्पृष्ट्वा नरकमश्नुते इति बृहन्नारदीयस्कांदोक्तोरिति त्रिस्थलीसेतौ पिता  
 महचरणाः । चतुर्वर्गोरिति पर्वाक्तवचनाद्विष्णोर्वादि प्रतिस्थायां शूद्रस्य विक  
 लपडित्युक्तं पश्यामः ( तत्रैव गौतमः ) शिवार्चनं सदाप्येवं शुचिः कुर्यादुदङ्मु  
 खः ॥ वाचस्पतिमतम् । प्राकृष्य च मोदगास्यस्तु प्रातः सार्यं निशाक्षुचेति ( प्र  
 योगपारिजाते गृह्यपरिशिष्टे ) प्रतिमाप्राङ्मुखी रुदङ्मुखो यजेताऽन्यत्र प्रा  
 ङ्मुखः । सतत्तत्स्थिरप्रतिमा विषयं । अन्यत्र च लार्चासु ( अथ प्रतिमाः ॥ भार्ग  
 वार्चनदीपिकायां भविष्ये ) सौवर्गीराजतीताम्रीमृन्मयी च तथा भवेत् ॥ पायाणां  
 धातुयुक्ता वारीतिकां स्य मयी तथा ॥ रीतिः पित्तले । शुद्धदारुमयी वापि देवता चर्या  
 प्रशस्यते ॥ अंगुष्ठपर्वदाश्च विस्तृत्यावदेव तु ॥ गृहेषु प्रतिमाकार्यानां अधिका  
 शस्यते बुधैः ( पंचरात्रे तु ) मृदा रुता भागो मेदं धूच्छिद्यमयी न त्विति नियेधउ  
 क्तः ( भागवते ) शैलीदारुमयी लौहीलेप्यालेप्या च सैकती ॥ मनोमयी मणिम



यीप्रतिमाष्टविधास्मृता ॥ काष्ठंमधुकस्यैव । तत्रकाष्ठेषुमधुकमानीयचवसुंधरे ॥  
 कृत्वातत्प्रतिमांचैवप्रतिष्ठाविधिनाचर्चयेदितिवराहेवतेः (देवीपुराणी) सप्तांगु  
 लंसमारभ्ययावच्चद्वादशांगुलम् ॥ गृहेष्टवर्चासमाख्याताप्रासादेवाधिकाशुभा ॥  
 (तिथितत्त्वेकालिकापुराणी) प्रतिमायाःकपीलौढौस्पृष्टवार्दक्षिणापारिणा  
 प्राणाप्रतिष्ठाकुर्वीततस्यदेवस्यबाहरेः ॥ अन्येयामपिदेवानांप्रतिमाश्चपार्थिव ॥  
 प्राणाप्रतिष्ठाकर्तव्यातस्यां देवत्वसिद्धये ॥ वासुदेवस्यबीजेनतद्विष्णोरित्यनेनच ॥  
 तथैवहृदयेगुप्तं दत्वाशश्चमंत्रवित् ॥ कर्मिर्मन्त्रैःप्रतिष्ठांतुहृदयेपिसमाचरेत् ॥ अ  
 स्यैप्राणाःप्रतिष्ठांतुअस्यैप्राणाःसरंतुच ॥ अस्यैदेवत्वमर्चयैमामहेतिचकचन ॥  
 (हयशीर्षपंचरात्रे) अर्चकस्यतपोयोगादर्चनस्यातिशायनात् ॥ आभिरूपाच  
 बिंबानां देवः सार्चिष्यमृच्छति (प्रयोगपारिजातेव्यासः) प्रतिमापत्यंत्राणांनि  
 त्यंस्नानंनकारयेत् ॥ कारयेत्पर्वदिवसेषदाद्यामलधारणम् (लिङ्गेविशेष्यस्तिथि  
 तत्त्वेभविष्ये) मृदस्मगोशकृत्पिष्टताम्रकांस्यमयंतथा ॥ कृत्वालिङ्गं सकृत्पूज्यव  
 सेत्कल्पायुतं दिवि ॥ वासैवित्तप्रदं लिङ्गंस्फाटिकं सर्वकामदं ॥ कृत्वापूजयेद्विप्रे  
 द्रलप्स्यसेवार्द्धितंफलम् ॥ (तत्रैवकालकौमुद्यांस्कांदे) असादरूपपरीमारांनलिं  
 गं कुर्वीतचक्ररः ॥ कुर्वीतांगुष्ठोहृस्वन कदाचित्समाचरेत् ॥ असौऽशीतिर्गजा  
 गंजाःपंचालिपमायकः॥तेषोऽङ्गुलःकर्योस्त्रीत्यमरकोशात् प्रयोगपारिजातेक्रि  
 यासारे) नवाष्टतप्तांगुलिकलिङ्गं प्रैष्टुमिहीच्छते ॥ यत्पंचकचतुर्मानिमध्यमं विवि  
 धंस्मृतम् ॥ विदधे कांगुलिमालंयत्त्रिविधं तत्कनीयम् ॥ सर्वजवचिं प्रोक्तं चर  
 लिङ्गं यथाक्रमम् (अथपंचसूत्रीनिर्णयः ॥ गौतमीतथै) लिङ्गमस्तकविस्तारो लिं  
 गोच्छायायुक्तः ॥ परिधिस्तत्रगुणातस्तद्वत्पीठं व्यवस्थितम् ॥ प्रवालिकात  
 थैवस्यात्तपंचसूत्रविनिर्णयः ॥ अत्रैवंतत्त्वम् ॥ लिङ्गमस्तकविस्तारं लिङ्गोच्चतास  
 मं कृत्वा तत्त्रिगुणसंवेष्टुमर्हं लिङ्गस्थौल्यं कृत्वा तत्समं चतुरस्रं वा पीठं विस्ता  
 र्मध्वं चोर्ध्वं च कुर्यात् ॥ पीठोच्चतातुलिङ्गोच्चतातोद्विगुणापीठसध्वे लिङ्गादुद्विगु  
 णास्थौल्यं पीठोच्चतातुतीयांशेन कष्टं कृत्वा तस्योर्ध्वं अथचसमं च प्रद्वयं प्रथमां कृत्वा  
 लिङ्गविस्तारयष्टीं न पीठोपरि बाह्यमेखलां कृत्वा तदंतः संलग्नं तत्समं वा तं कृत्वा



पीठाद्वर्गहर्लिङ्गसमदीर्घापीठार्धदीर्घावामूलैर्देव्यसमविस्तारां तृतीयांशेनमध्ये  
 खातांपीठवत्समेखलांप्रणालिकांकुर्यादिति । अत्रमलंसिद्धांतशेषेव शैवागमेचजे  
 यम(तिथितत्त्वेब्राह्मे)सर्वत्रैवप्रशस्तोवज्रः शिवसूर्यार्चनंविना ( तत्रैववाराहपाञ्च  
 योः)गृहेलिङ्गद्वयंनार्च्यंशालग्रामद्वयंतथा । द्वेचक्रेदारकायास्तुनार्च्यसूर्यद्वयंतथा ।  
 शक्तित्रयंतथानार्च्यंराशौशत्रयसेवच ॥ द्वौशांखौनार्चयेच्चैवभरतांचप्रोतमांतथा ॥  
 नार्चयेच्च । थामत्स्यकूर्मदिदशकंतथा ॥ गृहेषितदग्धाभ्युपनाच्यनाच्यः पूज्यावसुं  
 धरोरतासांपूजनार्चित्यमुद्गेपांशुयाद्गृही । शालग्रामाः सप्ताः पूज्याः समेषु द्वितयंन  
 हि ॥ विप्रमानैवपूज्यास्तु विप्रमेठवेकसर्वहि ॥ शालग्रामशिलाभरनापूजनीयासच  
 क्रका ॥ खंडिताः स्फुटिताश्चापिशालग्रामशिलाशुभा ( वाराहे) दद्याद्भक्त्या योदेवि  
 शालग्रामशिलांनरः ॥ सुवर्णसहितार्चिद्व्यांपृथ्वीदानफलंलभेत् ( तत्रैव) यः पुनः पूज  
 येद्भक्त्या शालग्रामशिलांशतमा तत्फलंनैवशक्तोऽहं वक्तुं वर्यशतैरपि ( देवीपुराणो)  
 ब्राह्मणाः क्षत्रियोवैश्यः शूद्रश्च पृथिवीपते ॥ स्वधर्मतत्परो विष्णुमारधयति नान्य  
 था ( अविभक्तानामपृथग्देवप्रजासाहप्रयोगपारिजाते आश्रयायनः ) पृथगप्येक  
 पाकानां ब्रह्मयज्ञो द्विजार्तिनाम् ॥ अत्रिकहेचं सुरार्चाचसंध्या नित्यं भवेत्तप्यक ( तत्रै  
 वविष्णुवर्से) शालग्रामशिलांवापि चकारां कर्तुं शिलांतिथ्या ॥ ब्राह्मणाः पूजयेच्चित्त्यं  
 क्षत्रियार्चिर्न पूजयेत् ॥ इहंस्पृशसहितपूजाविषयम् । शूद्रोवातु प्रतीतोवास्त्रियोवा  
 पतितोपिवा ॥ केशवंवाशिषंवापिस्पृष्टानरकमश्नुते ॥ ब्राह्मणायपिहरंविष्णुं  
 नस्पृशेच्छेयइच्छती ॥ सनाग्रामृतनाश्रावातस्यानस्तीहतिरुक्तिः ॥ स्त्रीणामनुप  
 नीतानां शूद्राणांच जनेश्वर ॥ स्पर्शनेताधिकारोस्तिविष्णोर्वाशंकरस्यचैतिस्कां  
 दात् ॥ स्पर्शरहितस्तुत्योर्भक्त्येव । शालग्रामंनस्पृशेत्तुहीनवर्गांश्चसंधरे ॥ स्त्री  
 शूद्रकरसंस्पर्शोवज्रस्पर्शधिकोमतः ॥ मोहाद्यः संस्पृशेच्छूद्रोयोऽपिडापिकदा  
 चन ॥ स्पर्शनेनमकेप्रोयेयात्तदाभूतसंभवम् ॥ यदिभक्तिर्भवेत्तस्यस्त्रीणांवापि वसुं  
 धरे ॥ दूरदेवास्पृशप्रभुर्जाकार्येत्तुवर्माहितशतकाराहोक्तेः ॥ शालग्रामशिला  
 मात्रेनिर्धनंनप्रतिमादौ ॥ सर्वत्रसोऽस्तुसंपूज्याः प्रतिमाः सर्वदेवताः ॥ लिङ्गान्यपि  
 तुपूज्यानिमहाभिः कल्पितानिर्च्येति तत्रैवोक्तिः । चत्वारो ब्राह्मणैः पूज्यास्त्रयोरा



जन्यजातिभिः ॥ वैश्यैर्द्विवेसंपूज्योत्तमैः शूद्रजातिभिरितस्कांदात् ॥ अ  
न्येतदीक्षितविषयत्वेनव्यवस्थामाहुः (विष्णुधर्म) तयोरसंभवेचवैसाचेहनव  
धास्मृता ॥ रत्नजाहेमजाचैवराजतीताग्रजातथा ॥ रैतिक्यर्चातथालौहीशैलजा  
द्रुमजातथा ॥ अधमाधमाचविज्ञेयामृन्मयाप्रतिमाचया ॥ सधाफलानितत्रैवज्ञे  
यानि । नाचर्यागृहेऽप्रमजामूर्तिश्चतुरंगुलतोधिका ॥ नवितस्त्यधिकाधातुसंभ  
वाश्चेयदृच्छता ॥ एवंलक्षणासंपन्नापारंपर्यक्रमागता ॥ उत्तमासातुविज्ञेयागुरु  
दत्तापितत्समा (तत्रैवपात्रे शालग्रामंप्रक्रम्य) तत्राप्यासलकीतुल्यापूज्यासूक्ष्मे  
वयाभवेत् ॥ यथायथाशिलासूक्ष्मातथास्यात्तु महत्फलम् (तथा) यवमात्रं तुग  
र्तःस्याद्यवार्धलिंगमुच्यते ॥ शिवनाभिरितित्व्यातस्त्रियुलोकेषुदुर्लभः (तत्रैव)  
शालग्राममयीमुद्रासंस्थितायन्नकुवचित् ॥ वाराणास्यायवाधिक्यंसमंताद्योजनत्रय  
म् ॥ योमृतस्तत्समीपेतुमृतेवान्नीयतेति ॥ सर्वैर्मोक्षमवाप्नोतिसत्यंसत्यंनचान्य  
था (तत्रैव) चक्रांकमिथुनंपूज्यं चक्रांकमर्चयेत् ॥ चक्रांकमिथुनात्साईशा  
लग्रामंप्रपूजयेत् (तत्रैववाराहे) स्लेच्छदशेषेषुचौवापिचक्रांकोयत्रतिष्ठति ॥ योज  
नानांतथावीणासमसंबंधसंधरे (तत्रैवशालग्रामंप्रक्रम्य) क्रयक्रीतापरिज्ञेयासध्य  
मायाचित्ताधमा (प्रयोगपारिजातेवाराहे) एवंलक्षणासंपन्नापारंपर्यक्रमागता ॥  
उत्तमासातुविज्ञेयागुरुदत्तापितत्समा (अथपार्थिवपूजानंदीपुराणो) आयुष्मान्न  
लवान्प्रथीमात्पुत्रवान्नवनवान्मुखी ॥ वरमिष्टंलभेल्लिंगं पार्थिवंयःसमर्चयेत् ॥ त  
स्मात्तुपार्थिवंलिंगंज्ञेयंसर्वार्थसाधकम् (तत्रैव) गोभूहिरण्यवस्त्रादिवलिपुष्टपनिवे  
दने ॥ ज्ञेयोनमःशिवार्येतिमंत्रःसर्वार्थसाधकः ॥ सर्वमंत्राधिकप्रचायमोकाराद्यः  
षडक्षरः (भविष्ये) मूर्तयोष्टौशिवस्यैताःपूर्वादिक्रमयोगतः ॥ आग्नेय्यांताःप्रपू  
ज्यास्तुवेद्यालिंगे शिवंयजेत् ॥ अथनप्राचीमग्रतःशंभोरितिरुद्रयामलेनियेधात् ।  
नांतरालंप्राचीकिंतुप्रसिद्धैव (तिथितत्त्वेदेवीपुराणो) मृदाहरणसंघट्टेप्रतिष्ठाह  
वानमेवच ॥ संपन्नपूजनंचैवविसर्जनमतःपरम् ॥ हरोमहेश्वरश्चैवशालपारिणाःपि  
नाकवृक् ॥ शिवःप्रपूजतिप्रचैवमहादेवइतिक्रमः (स्कांदे) शठकारायपिचपत्रा  
णिशोच्यस्यनिवेदयेत् (तत्रैवभविष्ये) धतूरकौश्लयोऽलिंगं सदापूजयतेतरः ॥ स



गीलक्षफलंप्राप्यशिवलोकेसहीयते (योगिनीतंत्रे) शिवागारेमल्लकंचसूर्यागारे  
 चशंखकम ॥ दुर्गागारेवंशवाद्यंमधूरीनचवादयेत् (आद्यहेमाद्रौस्कांदे) स्पृष्ट्वा  
 द्रस्यनिर्मल्यंवाससाआप्तुतः शुचिः (प्रयोगपारिजातेक्रियासारे) मध्यमानामि  
 कामध्येपुष्टपंसंगृह्यपूजयेत् ॥ अंगुष्ठतर्जन्यग्राभ्यांनिर्मल्यमपनोदयेत् ॥ अपनीतं  
 चनिर्मल्यंचंदेशायानिवेदयेत् ॥ अशन्यमस्तकंलिंगंस्तदाकुर्वीतपूजकः (शूलपा  
 णौलैंगी) वरंप्राणापरित्यागः शिरसेवापिकर्तनम् ॥ नचैवाप्यज्यभंजोतशिर्वालंगेम  
 हेध्वरम् ॥ सूतकेमृतकेचैवनत्याज्यंशिवपूजनम् (तिथितत्त्वलैंगी) विनाभस्मविपुंडे  
 गाविनासुद्राक्षमालया ॥ पूजितोपिमहादेवेनस्यात्तस्यफलप्रदः ॥ तस्मान्मृदार्प  
 कर्तव्यंललाटेवैत्रिपुंडकम् (सुद्राक्षधारणोविशेषः शिवरहस्ये) एकवक्रः शिवः सा  
 साद्व्रह्महत्यांव्यपोहति ॥ अंबध्वस्वंप्रतिस्रोतोवह्निस्तंभं करोति च ॥ द्विवक्रो हर  
 गौरी स्याद्गोवधाद्यधनाशकः ॥ त्रिवक्रो ह्यग्निजन्मायपापराशिंप्राणाशयेत् ॥  
 चतुर्वक्रः स्वयं ब्रह्मानरहत्यांव्यपोहति ॥ पंचवक्रस्तुकालाग्निरगम्याभक्ष्यपाप  
 नुत्त ॥ षड्वक्रस्तुगृहेक्षेयोभूराहत्यादिनाशयेत् ॥ सप्तवक्रः स्मृतो विष्णुभूतप्रेतभ  
 यापहः ॥ अष्टादशमुखोसुद्रोवा नायज्ञफलप्रदः ॥ द्वादशास्यस्तथादित्यः सर्वरोग  
 निवर्हताः ॥ त्रयोदशमुखः कामः सर्वकामफलप्रदः ॥ चतुर्दशास्यः श्रीकण्ठो वंशो  
 क्षारकरः परइति ॥ तथा । विनासधेरायोधत्ते सुद्राक्षंभुविमानवः ॥ स्यात्तिनर  
 कान्धोरानयावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ पंचामृतं पंचगव्यंस्नानकालेप्रयोजयेत् ॥ सुद्रा  
 क्षस्यप्रतिष्ठायांमंवंपंचाक्षरंतथा ॥ त्रयंवकादिमंवंचतथातत्रप्रयोजयेत् ॥ यद्वा  
 ओंअथोरओह्रैअथोरतरओह्रौह्रानमस्तेरुद्ररूपह्रैस्वाहाअनेनाभिमंत्र्य धारयेत्  
 (तथा) अष्टोत्तरशतंकार्याचतुःपंचाशदेववा ॥ सप्तविंशतिमानावाततोहीनाध्वसाः  
 स्मृताः (प्रजापतिः) मोक्षार्थीपंचविंशत्याध्वनार्थीविंशताजपेत् ॥ पुत्रार्थीपंचविंश  
 त्यापंचदश्याभिचारके ॥ सप्तविंशतिसुद्राक्षमालयादेहसंस्थया ॥ यत्करोतिन  
 रः परायंसर्वकोटिशुभंभवेत् ॥ द्वादशतिह्रजेभ्यश्चसुद्राक्षंभुविसन्मुखम् ॥ तस्यप्रो  
 तोमवेद्रुद्रः स्वपदं च प्रयच्छतीति (पदार्थादर्शोवापदेवः) सुद्राक्षावकण्ठदेशेदशनं परि  
 मितान्मस्तकेविंशतिह्रै यद्वद्वीराप्रदेशेकरयुगलकृतेद्वादशद्वादशैव ॥ बाह्वो



रिंदोः कलाभिर्नयनयुगकृते एकमेकं शिखायां वक्षस्यष्टाधिकं यः कलयति शतकं  
सः स्वयं नीलकण्ठः (हेमाद्रौ शिवधर्मे) स्नानं पलशतं ज्ञेयमभ्यंगः पञ्चविंशतिः पला  
नां द्वे सहस्रे तु महास्नानं प्रकीर्तितम् ॥ पञ्चविंशत्पलं लिङ्गे अभ्यंगं कारयेदथ ॥ शिव  
स्य सर्पिषा स्नानं प्रोक्तं पलशतेन च ॥ तावता मधुना चैव दधना चैव ततः पुनः ॥ तावतै  
व च क्षीरेणागव्येनैव भवेत्ततः ॥ भयः सार्द्धं सहस्रेणापलानां भैक्षवेणा च ॥ रसेन कार  
येत् स्नानं भक्त्या चोष्णां बुनात्ततः (विठरावा दौ तु स्कांदे) क्षीराद्विशुणां दधना घृतेनैव  
दशोत्तरम् ॥ घृताद्विशुणां क्षौद्रं क्षौद्राच्चैव जंतथा (ब्राह्मे) देवानां प्रतिमाय वधृता  
भ्यंगस्तमा भवेत् ॥ पलानि तत्र देयानि श्रद्धया पञ्चविंशतिः ॥ इदं क्रोडीकृताभिप्रा  
येणा (तत्रैव संग्रहे) विठवकुसेनायदा तव्यं नैवेद्यस्य शतांशकम् ॥ पादोदकं प्रसादं च  
लिङ्गे चंदे श्वराय तु (पंचायतनसंज्ञिवेशमाह बोपदेवः पदार्थादिर्गच्छ) शंभौ सध्यसा  
ते हरो न हारभूदेव्यो हरी शंकरे भास्ये नागसुतारवौ हरप्राणो राजां विक्ताः स्थापि  
ताः ॥ देव्यां विष्णुहरे भवकरवयो लंबोदरे जेश्वरे नांवाः शंकरभागतोऽति सुखदाव्य  
स्तास्तुहानिप्रदाः ॥ शंकरभागतः । ईशानकोणादारभ्य प्रदक्षिणामित्यर्थः (अत्र  
दिकस्वरूपमुक्तं प्रयोगपारिजाते संग्रहास्त्रे) देवस्य मुखमभ्युदितं प्राचीं प्रकल्प  
येत् ॥ तदादिपरिवाराणां संगच्छावरणास्थितिः (प्राचीं मुखः प्राग्) अत्र विविनायक  
श्चंडी ईशो विष्णुस्तु पंचमः ॥ अनुक्रमेणापूज्यं ते व्युत्क्रमेण पूज्यं (पूज्यपूज  
कयोर्मध्ये प्राचीं प्रोक्ता विचक्षणैः) (अथ केशवादिमूर्तयः । अथ देव) केविमोवा  
दापुरुषे प्रजाच्यहममात्रिना ॥ बाधो नृहसानि श्रीपाशाचो वि ॥ अत्र कोवि  
राविद्याद्यैः केशवविठरावादिचतुर्विंशतिमूर्तयोऽभिधीयन्ते । शान्तशंखात्तत्र गोच  
क्रादे ज्ञेयेत्यर्थः । शिष्टे भुजे पञ्चत्वर्थतः सिद्धम् ॥ अत्र दक्षिणाधः करक्रमेणाज्ञेय  
म् । दक्षिणोऽधः करक्रमादिति हेमाद्रौ वचनात् । तेन हेमाद्रिणा संवादः । विश  
ब्देन विपरीतं गच्छेदित्यर्थः अत्रापि शब्दादनुवृत्तिः । शंखाद्गदाचक्रे इत्यर्थः ।  
गपे इत्यत्रापि शब्दादनुवर्तते । शंखाद्गदापद्मे इत्यर्थः । विपरीते पद्मगदे इत्यत्रापि  
शंखाज्ज्ञेये । चपे चक्रपद्मे । शंखाच्चक्रपद्मे इत्यर्थः विदित्यत्रापि पद्मचक्रे इति ।  
तेन च गदे इत्यष्टौ मूर्तयः । गपे इत्यष्टौ मूर्तयः । चपे इत्यत्र च । अत्र मलं हेमाद्रौ ज्ञेय



स (अथबौधायनसूत्रम् । वैविक्रमीचानुस्मृत्यलिंगार्चाप्रतिष्ठोच्यते ) यजमानः  
पूर्वाक्तकालेपर्वद्युः । दशद्वादशथोडशान्यतरहस्तमंडपंकृत्वाग्नेयेहस्तमात्रं च  
तुरसंकुंडस्थंडिलंवापर्वतीहस्तमात्रंवेदीनैर्ऋतेवास्तुमंडलमध्येवेदीं तदुपरिसर्व  
तोभद्रं कृत्वा प्राणानाग्न्यास्यांमूर्तीदेवस्य सान्निध्यसिद्धयर्थं दीर्घायुर्लक्ष्मी सर्व  
कामसमृद्धयस्य सुखकामोऽमुकमूर्तिप्रतिष्ठांकरिष्येइतिसंकल्प्य। गणेशपूजा  
पुरायाहवाचनमाहकापूजननादौ श्रौद्धानि कृत्वाचार्यं चतुरोक्तृत्वजप्रचयृत्वा  
वस्त्राद्यैः पूजयेत् । अथाचार्यः । यद्वसंस्थितमिति सूर्यपानविकीर्यापोहिष्टेति कु  
शोदकेनभूमिंप्रोक्ष्यादेवात्रायांतु। यातुधानाअपयांतु । विष्णोदेवयजनंरक्षस्वेति  
भूमौ प्रादेशं कृत्वाऽस्मत्कृततुलापद्मतिमार्गेणामंडपप्रतिष्ठां कृत्वाऽकृत्वा वापर्वरा  
वौहिरयपोपधानं देवं पंचमव्यहिराययवदूर्वाप्रवत्थपलाशपरोरापोहिष्टेति तित  
सृभिर्हिरायवतांइति चतसृभिः पवमानः सुवर्चन इत्यनुवाकेनाभियिच्यव्याहति  
भिरिदं विष्णुरिति फलयवदूर्वाः समर्प्य रक्षोहरामिति हस्तेकंकणां बध्वा वाससा  
च्छायां अवततेहेडुदुत्तममिति जले धिवासयेत् । इदंबौधायनोक्तम् । ततश्चललिंगा  
र्चायां वा अत्राग्निं प्रतिष्ठाप्य गोक्षीरनीवारचसंकृत्वा विष्णुश्चेत् कृत्वा स रमपि अथ  
यित्वा ज्यभागांते पलाशोद्वराश्चत्थशस्यधामार्गसमिद्धिः आज्येन चरुणातिलै  
र्वप्रत्येकमष्टाविंशतिमष्टौ वाहुतीर्लोकपालमूर्तिमूर्तिपतिभ्यो हुत्वा स्थाप्य देवसं  
ज्ञेयापूर्वाक्तसमित्तिलनैवारचर्वाज्यैरष्टसहस्रमष्टशतमष्टाविंशतिं वा हुत्वा अग्नि  
र्यजुर्भिरित्यनुवाकेन दशाहुतीर्जुहुयात् । प्रतिद्रव्यहोमांते देवंपादनाभिर्गिरः स्पृशे  
त्तत्राज्यहोमेचोत्तरतः सजलकं भेसंपातान्नयेत् । तेषां संवाः । इन्द्रायेंदो इतींद्रस्य ।  
स्योनेति पृथिवीमूर्तेः । अथोरेभ्य इति तत्पतेः सर्वस्य । अग्न आयाहीत्यग्नेः ।  
अग्निं दूतमित्यग्निमूर्तेः । नमः शर्वाय पशुपतये चेति पशुपतेः यमाय सोमं यस्य  
असिंहवीरितियजमानमूर्तेः । स्तुहि श्रुतं तत्पतेः उग्रस्य । असुन्वंतं निऋतेः ।  
आकृष्यो न सूर्यमूर्तेः । यो सुद्री अग्नौ इति तत्पतेः रुद्रस्य । इमं मे वरुणास्य । शंनो  
देवी जलमूर्तेः । नमो भवायेति भवस्य । आनो नियुद्धिरिति वायोः । वात आवातु  
वायुमूर्तेः । तमीशानं तत्पतेरीशानस्य । आप्यायस्वेति कुबेरस्य । वयं सोमेति सो



ममूर्तेः । तत्पुण्याय महादेवस्य । अभित्वा ईशानस्य । आदितप्रत्नस्येत्याकाश  
 स्य ॥ नमउग्राय चेतितत्पतेर्भीमस्य ततो देवस्य पादौ स्पृशेत् । सर्वद्वितीये हत्वा ना  
 भित्तीये मध्यं चतुर्थे उरः पंचमेश्वरः स्पृष्ट्वा प्रतिपर्यायं संपातजलेन देवं अभिवि  
 चेत् । ततः स्थिष्टकृदादिहोमशेषं समाप्या चार्चा शोभयेत् । स्थिरलिङ्गा चर्चादौ तु नेदानी  
 मग्निस्थापनहेमादिकार्यम् । ततो देवं नत्वा ॥ स्वागतं देवदेवेश विश्वरूपनमोस्तुते  
 शुद्धे पितृवद्विष्टानेषु द्विः कुर्मः सहस्रतामिति संप्राप्य । उत्तिष्ठ ब्रह्मणास्पते इति स  
 ऋत्विगुत्थाप्य । पूर्वमकृतेन्युत्तारणोऽधुना वा कार्यम् । अग्निः सप्तिमितिसूक्त  
 मग्निपदहीनं पठित्वा तत्सहितं पुनः पठेत् । स्वमष्टसहस्रमष्टशतमष्टाविंशतिं वा पठ  
 न्नजलं पातयेत् । ततो चार्चाद्दशवारं मृदाजलेन च प्रक्षाल्य मंत्रवत् पंचगव्यं कृत्वा पयः  
 पृथिव्यामावो राजानमिति च संस्त्राप्या आप्याय स्वर्धिका व्यास्तेजो सिमधुवाता  
 आयुर्गौरिति चामृतैः संस्त्राप्या । लिङ्गं चेन्नमस्ते रुद्रमन्यव इत्यष्टाभिः संस्त्राप्य धृते  
 नाभ्यज्योद्वर्तनेनोद्वर्त्योद्यादकेन प्रक्षाल्य गंधं दत्वा संपातोदकेनाभिविच्य संपल  
 वः चतुर्भिः कुम्भैरापोहिष्येति विभिराकलशेठिवति च प्रत्येकं समुद्रज्येष्ठा इति चतुर्भि  
 राकलशेठिवति च मीलितैः संस्त्राप्योदुंबरादिपीठे चामिषवेष्ट्य परितोऽष्टदिक्षु  
 सजलकुंभान् संस्थाप्य तेषु गंधपुठपदूर्वाः क्षिप्त्वा द्ये सप्तमृदः द्वितीये पुष्करपर्णा श  
 मौविकं कृताप्रसंतकत्वचः पल्लवांश्च तृतीयादियुसप्तधान्यं पंचरत्नफलपुष्पा  
 रिक्तशदूर्वागौरोचनसंपातोदकगंधफलसर्वौषधीः क्षिप्त्वा । क्रमेणापोहिष्येति  
 तिसृभिर्हिरण्यवर्णा इति चतुर्भिः । पवमानानुवाकेन चाभिविच्यैककुम्भेशसीप  
 लाशवटस्वदिरवित्वा श्वत्थविकंकतपनसाप्रशिरीयोदुंबराणां पल्लवान् कयायां  
 प्रक्षिप्त्वा आश्वत्थैव इत्यभिविच्य । पंचरत्नोदकेन हिरण्यवर्णा इति संस्त्राप्य  
 वासुकीदत्वा उपवीतादिदीर्घां तद्वत्वा हिरण्यगर्भः । यत्रात्मदा । यः प्राणातः ।  
 यस्येधे । येन द्यौः । यं क्रंदसी । आपो हयन । यश्चिदशपो । इत्यष्टौ पिष्ट्वा पीपान्  
 दत्वा । सुवर्णशलाकया तैजसपात्रस्थं मधुघृतं च गृहीत्वा रोचनं देवानां तेजोसीति  
 संवाभ्यां ओनमो भगवते तुभ्यं शिवाय हरये नमः ॥ हिरण्यरेतसे विष्णो विश्वरूपाय  
 ते नम इति च दक्षिणासव्ये देवनेत्रे मंत्रावृत्यालिखेत् अंजं तित्वेत्यंजनेन मधुना वा कृत्वा

देवस्यत्वेतिमध्वाज्यशर्कराभिरंकत्वातेनैवांजनेनपुनरंजयेत्। अत्रानज्मीतिशेषः।  
स्थिरलिङ्गेतुस्त्रासिचयागंधेन । उंनमोभगवतेरुद्रायहिरण्यरेतसेपरायपरमा  
त्मनेविश्वहृपायोमोप्रियायनमस्त्यङ्गत्वांजनादिनांजयेत् ॥ ततःआदर्शभक्ष्या  
दिदर्शयेत् ॥ ततःकर्ताआचार्यायिगामृत्विग्भ्यश्चदक्षिणांदद्यात् । अथाचार्यः  
प्रत्यृचमादौप्रणावंदन्पुरुषसूक्तेनस्तुत्वा । वंशपात्रेपंचवर्णादनेनदेवस्यनीराज  
नंकारयित्वांरुद्रायचतुष्टयादौदद्यात् । संवस्तुओंनमोरुद्रायसर्वभूताधिपतयेदौ  
मृगशलधरायोमादयितायविश्वाधिपतयेरुद्रायवैनमोनमः । शिवमगर्हितंकर्मा  
स्तुत्वाहेति ॥ अथत्यपणोभतेभ्योनमइति । केचिदेतद्वात्रौस्थिरप्रतिष्ठायासि  
च्छंति । अथाचार्यःसर्वतोभेदेदेवानावाहयेत् । मध्येब्रह्मणाम् । पूर्वादिदिक्षु  
इन्द्रादिलोकपालान् । ईशानेन्द्राद्यंतरालेषुवसून् । रुद्रान् । आदित्यान् । अश्वि  
नौ । विश्वान्देवान् । पितॄन् । नागान् । स्कंदवृक्षौ । ब्रह्मेशानाद्यंतरालेषुदक्ष  
विष्णुदुर्गास्वधाकारमृयुरागान् । समुद्रान्सरितःसरतःगणाधिपंचेति । मध्येसर्व  
पृथिवीमेतसंस्थाप्यदेवंचावाह्य । प्रागादिवज्रं शक्तिं दंडं खड्गं पाशं अंकुशं  
गदां शूलं । तद्बाह्ये गौतमं भरद्वाजं विश्वामित्रं कश्यपं जमदग्निं वशिष्ठं  
अत्रिं अरुंधतीं च । तद्बाह्ये नवग्रहान् । तद्बाह्ये ऐन्द्रीं कौमारीं ब्राह्मीं वारा  
हीं चामुंडां वैष्णवीं माहेश्वरीं वैनायकीमिति । सताः नामभिरावाह्यसंपूज्य ।  
अर्चायां देवं तन्मंत्रेणावाह्य । मंडलमध्येर्चासुप्रतिष्ठोभवेतिनिवेष्ट्यसंपूज्य ।  
ब्रह्ममंडलं देवतानां नामभिस्तिलाजयेत् दशदशाहुतीर्हुत्वा शय्यायां देवसारा  
ध्यं पुरुषसूक्तोत्तरनारायणाभ्यां स्तुत्वा देवेभ्योऽसंकुर्यात् ( तद्यथा ) पुरुषा  
त्मनेनमः ॥ प्राणात्मनेन० प्रकृतितत्त्वाय० बुद्धितत्त्वाय० अहंकारतत्त्वाय०  
मनस्तत्त्वाय० इतिसर्वांगे ॥ प्रकृतितत्त्वाय० बुद्धितत्त्वाय० हृदितत्त्वाय०  
शब्दतत्त्वाय० शिरसि ॥ स्पर्शतत्त्वाय० त्वचि ॥ रूपतत्त्वाय० हृदि ॥ स्रवं  
रसगंधश्रोत्रत्व नुदक्षुर्जिह्वाघ्राणावाक्पाणिपादपायूपस्थपृथिव्यप्तेजोवाय्वा  
काशसत्त्वरजस्तमोदेहतत्त्वानि विन्यसेत् ॥ ततःपुरुषसूक्तस्याद्यमृगद्वयं करयोः ॥  
तदुत्तरं जान्वोः ॥ तदुत्तरं कर्तव्योः ॥ तं यज्ञमिति तिस्रः ॥ नाभिहृत्कंठेषु तस्माद



श्वेतिद्वयं ब्रह्मोः ॥ ब्राह्मणास्येतिद्वयं नास्योः ॥ नाभ्येतिद्वयमक्षरानोः ॥ अंत्यां  
 शिरसि ॥ केचित्तत्त्वन्यासमन्यथैवाहुः । पुरुषप्रकृतिसहदहंकारतत्त्वानि । श  
 ब्दस्पर्शरूपरसगंधतन्मात्राणि । आकाशवायुतेजोमृथिवीश्रोत्रत्वक्चक्षुरसना  
 घ्राणावाक्पाणिपादपायूपस्थमनस्तत्त्वानीति । केचिदेतानिस्थिरलिंगादावे  
 वेच्छन्ति । ततःसुखशान्तिर्भवेतिशय्यायां देवंस्त्रापयित्वा मंडलशय्ययोरंतरा  
 लेन गंतव्यमिति प्रीयंदत्वा मंडलदेवताभ्योनामभिः पायसेन च रुगावाबलिंदद्या  
 त । नीवारचरुशेषेणादिग्वलितम् । नेदंस्थिरप्रतिष्ठायाम् । स्थिरलिंगार्चादौ  
 त्वयं विशेषः अग्निस्थापनहोमवर्ज्यं सर्वपूर्ववत्कृत्वा इदानीमग्निस्थापनं कृत्वा  
 पूर्वाक्तहोमं कुर्यात् ॥ नात्र नैवारश्चरुः विष्णुश्चेत्पूर्वाक्तहोमं कृत्वा पुरुषसूक्ते  
 न प्रत्यृचमाज्यं हुत्वा इदं विष्णुरिति पादौ स्पृष्ट्वा पुनस्तावेव हुत्वा विष्णो  
 र्नुक्तमिति नाभिं स्पृष्ट्वा पुनस्तावेव हुत्वा । अतो देवेति शिरः स्पृष्ट्वा पुनस्तावेव हु  
 त्वा पुरुषसूक्तेन सर्वांगं स्पृशेत् । स्थिरलिंगं चेदग्निस्थापनादिपूर्वाक्तसमिदाज्य  
 तिलाहुतीर्हुत्वा । यातइयुरित्यनुवाकांतं द्रापे सहस्राणीत्यनुवा काभ्यां च प्रत्यृच  
 माज्यं हुत्वा सर्वावेरुद्र इति मूलं स्पृशेत् । पुनस्तावेव हुत्वा क्रद्रु द्रायेति मध्यं । पुनस्ता  
 वेव हुत्वा । नमो हिरण्यवाहव इत्यग्रम् । पुनस्तावेव हुत्वा सर्वरुद्रेणा सर्वांगं स्पृशेत् ।  
 ततो धामंत इति पूर्णाहुतिं जुहुयात् न वासवमधिवासनं कृत्वा परेद्युः सद्यो वापीठिकां  
 स्त्रापयित्वा महीमठिवत्यावाह्य । अदितिर्द्यौरिति स्तुत्वा । ह्रीं नम इति संपूज्यते  
 नैव पूर्णाहुतिं हुत्वा । उत्तिष्ठ ब्रह्मणास्यत इति देवमुत्थाप्य पुठपांजलिंदत्वा । पुरुष  
 सूक्तेन स्तुत्वा उदुच्यमित्युत्थाप्य कनिष्ठादि तिसूक्तेन विष्णुसद्योजातमिति पंचा  
 नुवाकैर्लिङ्गगृहं प्रवेष्ट्य पीठिकायां इंद्रादिनामभिरष्टरत्नानि क्षिप्त्वा सप्तभान्यरू  
 प्यवृथमनःशिलाः क्षिप्त्वा पायसेन संलिप्य प्रगावेनांगन्यासं कृत्वा सुवर्गाशलाका  
 मंतरितां कृत्वा ओंसुलग्ने प्रतितिय परमेश्वरेत्युक्त्वा अतो देवेति विष्णुं रुद्रेणा च लिं  
 गं स्थापयेत् । ततः प्राणाप्रतिष्ठा । चला चार्चदौ त्वधिवासनांते परेद्यु रुत्तिष्ठ ब्रह्मणास्यत  
 इति देवमुत्थाप्य पुरुषसूक्तोत्तरनारायणाभ्यां स्तुत्वा धृते ब्रीहि च संकृत्वा तद्देवता  
 मंत्रेणादशाहुतीर्हुत्वा नामभिर्जुहुयात् । अग्नये स्वाहा । सोमाय स्वाहा । धन्वंतरये

स्वाहा । कुह्वे स्वाहा । अनुमत्यै स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । परमेष्ठिने स्वाहा ।  
 ब्रह्मणे स्वाहा । अग्नये स्वाहा । सोमाय स्वाहा । अग्नये न्नदाय स्वाहा । अग्नये  
 न्नपतये स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । सर्वेभ्यो देवेभ्यः  
 स्वाहा । भूर्भुवः स्वः अग्नये स्विष्टकृते इति । ततः सप्तते पुनस्त्वेत्याभ्यां पूणाहुतिः ।  
 ततः आचार्याया ओषधीरिति सर्वे ओषधीः समर्प्य । संपातोदकं देवमंत्रेण शतवारम  
 भिमन्त्र्य तेनैवाभियंचेत् । ततः उत्तिष्ठेति देवमुत्थाप्य । विश्वतश्चक्षुरित्युपस्थाय  
 देवं ध्यात्वा जपेत् ब्रह्मणो नमः । एवं विष्णवे रुद्राय । इंद्रादीनष्टौ वसुभ्यो रुद्रेभ्यश्चा  
 दित्येभ्योऽश्विभ्यां मरुद्भ्यः कुबेराय गंगादिमहानदीभ्योऽग्नीषोमाभ्यां मित्रा  
 रितभ्यां द्यावापृथिवीभ्यां धन्वंतरये सर्वेणाय विश्वेभ्यो देवेभ्यो ब्रह्मणो नम इति । ततः  
 संपातोदकेन यजमानमभियंच्य । देवं ध्यात्वा प्रतितिष्ठ परमेश्वरेति पुष्टपांजलिं नि  
 वेद्य । सच्चिदानंदं ब्रह्मैव भक्तानुग्रहाय गृहीतविग्रहं करचरणाद्यवयविनं शंखचक्रा  
 द्यायुधवंतं निजवाहनाद्युपेतं निजहृत्कमलेऽवस्थितं सर्वलोकसाक्षिणमणीयां संप  
 परमेश्वरसि परमांश्रियं गमयेति । मंत्रेण पुष्टपांजलावागतं विभाव्याऽर्चायां विन्य  
 स्य प्राणाप्रतिष्ठां कुर्यात् (यथा) प्राणाप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मविष्णु रुद्रा ऋषयः । ऋषय  
 जुः सामानि हंदांसि । क्रिया मयवपुः । प्राणाख्या देवता । आं बीजम् । क्रौं शक्तिः  
 प्राणाप्रतिष्ठायां विनियोगः । ततोऽऋष्यादीनक्रमेण शिरोमुखहृदयगुह्यपादेभ्यो वि  
 न्यस्य । ओं कं खं गं घं ङं अंपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने अंह दयाय नमः । ओं  
 चं छं जं भं ङं इंशब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने ईं शिरसे स्वाहा । ओं टं ठं डं तां उं ओं वत्स्व  
 क्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने उं शिखायै वयट् । ओं तं थं दं धं नं सं वाक्पाणिपादपायप  
 स्थात्मने एं कवचाय हुस् । ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानंदात्मने औं ने  
 त्रययाय वौयट् । ओं यं रं लं वं शं यं सं हं लं स्रं अं मनोबुद्धयहंकारचित्तात्मने । अः अस्त्रा  
 यफट् । एवं आत्मनि देवे च कृत्वा देवं स्पृष्ट्वा जपेत् । ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं यं सं हं  
 सः देवस्य प्राणा इह प्राणाः । ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं यं सं हं सः देवस्य जीव इह स्थितः  
 ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं यं सं हं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि । ओं आं ह्रीं क्रौं अं यं रं लं वं शं  
 यं सं हं सः । देवस्य वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणा प्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन लुचिरंति



संतुस्वाहेति । ततोऽर्चाह्वयं गुह्यं दत्वा जपेत् अस्यै प्राणाः प्रतियंतु अस्यै प्राणाः सरंतु  
 च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कचनेति ॥ ततः प्रगावेन संसृज्य सजीवं ध्यात्वा ध्रु-  
 वाद्यौरिति तद्वचं जप्त्वा कर्णो गायत्रीं देवमंत्रं च जप्त्वा कर्णो गायत्रीं देवमंत्रं च जप्त्वा पु-  
 रुषसक्तेनोपस्थाय पादनाभिं शिरः स्पृष्ट्वा । इहैवैधीति विजिपेत् ततः कर्ता स्वागतं  
 देवदेवेशमद्वाग्यात्त्वमिहागतः । प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बलवत् परिपालय ॥ धर्मार्थका-  
 मसिद्धयर्थं स्थिरो भव शुभाय नः ॥ सान्निध्यं तु सदा देवस्त्वा र्चायां परिकल्पय ॥ याव-  
 चंद्रावनी सूर्यास्ति संत्य प्रतिघातिनः ॥ तावत्त्वया न देवेश स्थेयं भक्तानुक्रंपया ॥ भ-  
 गवन् देवदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम् ॥ येन रूपेणा भगवंस्त्वया व्याप्तं चराचरम् ॥ ते-  
 न रूपेणा देवेश स्त्वा र्चायां सान्निध्यौ भवेति न मे त्वा सततं ते सर्वदेवानां समानम् ॥ देवमंत्रं प्रच-  
 मूलमंत्रो वैदिको वाग्राह्यः । अथाचार्यः कर्ता वा लिङ्गमर्चा वा ओं ॐ ॥ पुरुषमावा-  
 हयामि ओं भुवः पुरुषमावाहयामि ॥ ओं ॐ सुवः पुरुषमावाहयामि ॥ ओं ॐ भूर्भुवः सुवः  
 पुरुषमावाहयामि ॥ त्यावाह्य ॥ प्रगावेना सनंदत्वा तेनैव दूर्वाश्यामा कविष्णुक्रांता पञ्च  
 मिश्रं पाद्यम् । इमा आपः शिवतमाः पताः पतत मा मे ध्या मे ध्या तमा अमृता अमृतरसाः पा-  
 द्यास्ता । जुषतां प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यातु भगवान् महाविष्णुर्विष्णावेनम इति पाद्य-  
 म् । भगवान् महादेवो रुद्राय नम इति लिङ्गो । इमा आप आचमनीयास्ता जुषतामित्य-  
 चमनीयम् । अर्घ्या इत्यर्घ्यम् । ततो वेदमंत्रैः संस्नाप्य इदं विष्णु रिति विष्णो । न-  
 मो अस्तु नीलग्रीवायेति लिङ्गे प्रतिसरं विस्रस्य । इमे गंधाः शुभादिव्याः सर्वगंधैर-  
 लंकृताः ॥ पूता ब्रह्मप्रवित्रेणा पूताः सर्वस्य रश्मिभिः । पूता इत्यादि पूर्ववत् । इति गंध-  
 म् । इमे साल्याः शुभादिव्याः सर्वसाल्यैरलंकृताः ॥ पूता इत्यादि साल्यम् इमे पठपाः  
 शुभा इत्यादि पठपम् । वनस्पतिर सोऽङ्गु तो गंधा ल्यो धूप उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवा-  
 नां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ प्रतिगृह्णाति त्वित्यादि धूपम् । ज्योतिः शुक्रं च ते जश्च  
 देवानां सततं प्रियः ॥ प्रभाकरः सर्वभूतानां दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति दीपं दत्वा  
 विष्णो संकर्यावा सुदेव प्रद्युम्नानि रुद्रपुरुषोत्तमा धोक्षज नृसिंहाच्युत जनार्दनो  
 पेद्रह रश्मीकृष्णो तिद्वादशनामभिः केशवादिद्वादशनामभिर्वापुठपाणिना मर्त्य-  
 तैरेव तर्पणां कृत्वा । पायसमुडौदनचित्रौदनानि । धावित्रं ते विततमिति नैवेद्यक

सरंपूर्वाक्तनामभिर्हुत्वा तेनैव शाङ्गि गोश्रियैः सरस्वत्यै विष्णावे इति हुत्वा । विष्णो  
नुर्कं वीर्याणि । तदस्य प्रियमभिपाद्ये । प्रतद्विष्णुस्तव ते वीर्येण । परेमात्रया  
तन्वावृधानं विचक्रमे पृथिवीमेष सतां । त्रिदेवः पृथिवीमेष सतां । इति द्वाद  
शनामभिप्रचासुष्टमैस्त्वाहेति जुहुयात् । लिंगे तु दोषांतं कृत्वा । भवाय० देवाय०  
शर्वाय० ईशानाय० पशुपतये० रुद्राय० उग्राय० भीमाय० महते देवाय नम इति  
पुष्टपाणिना इत्वा । तैरेव तपसां कृत्वा । पवित्रं ते इति पायसं गुडौदनं च तिवेद्यपूर्वाक्त  
नामभिः कृत्वा । भवस्य देवस्य पत्न्यैस्त्वाहेत्याद्यष्टभिर्गुडौदनं हुत्वा । भवस्य  
देवस्य सुतायस्त्वाहेत्याद्यैर्हरिद्रौदनं हुत्वा । इयस्व कंय जासहे० । मानो महान्तमुत  
मानो० । मानस्तोकेतनये० आरात्ते गोघ्नमुत पुरुषघ्ने० विकिरिद विलोहितं  
सहस्राणि सहस्रशो इति द्वादशशतैर्हुत्वा । शिवाय शंकराय सहमानाय शिति  
कंठाय कपर्दिने ताम्राय अरुणाय अपगुरमाणाय हिरण्यवाहवे सस्पिंज  
राय बभ्रुशाय हिरण्यार्येति च जुहुयात् । ततः स्विष्टकृदादि होमशेषं समाप्य  
पूर्वाक्त सर्वहविभिर्विष्णावे लिङ्गाय वा बलिं दद्यात् (सत्रस्तु) त्वामेकमाद्यं पुरुषं  
पुरातनं नारायणं विश्वसृजं यजासहे ॥ त्वमेव यज्ञो विहितो विधेयस्त्वमात्मना  
त्मन प्रतिगृह्णीष्वहव्यमिति । लिंगे तु नारायणपदे रुद्रं शिवमिति वदेत् । ततो  
२ अत्यर्पो भूभुवः स्वरोमिति हुतशेषं निधाय प्रदक्षिणीकृत्य विश्वभुजे आत्मने  
परमात्मने नम इति नत्वा आचार्याय शतं तदर्धं तदर्धं द्वादशतिस्रः कांवागां दत्वा  
ऋत्विग्भ्योऽपि दक्षिणां दत्वा शतं द्वादश ब्राह्मणान् भोजयेदिति संक्षेपः । प्रसाद  
मात्रेण तने तु मात्स्योक्तजलाशयं प्रतिष्ठा विधिमेव कुर्यात् ॥ गोरुत्तारणापात्रो प्रक्षे  
पादितु न भवति द्वारलोपात् । वासुगाहोमस्थाने वास्तुहोमः । अन्यत्तद्वदे ॥

इति भट्टकमलाकरकृतौ लिङ्गाचार्याप्रतिष्ठाविधिः ॥

अथ पुनः प्रतिष्ठातामधिकृत्य हयशीर्षपंचरात्रे ॥ चांडालमद्यसंस्पर्शदूयिता  
बहिनाथवा ॥ अपुराय जनसंस्पृष्टा विप्रसतजदूयिता संस्कार्येति शेषः (पदार्थादर्शो  
ब्राह्मो) खंडिते स्फुटिते दग्धे भ्रष्टे मानविवर्जिते ॥ यागहीने पशुरपृष्टे पतिते दुष्टभू



सिन्धु ॥ अन्यसंवाचिते चैव पतितस्पर्शदूषिते ॥ दशस्वेते युनोचक्रुः सन्निधानं दि  
 वौकसः ॥ यागः पूजा । पशुर्गर्दभादि (पंचरात्रे) खंडितास्फुटितादग्धायरमाद  
 चमियावहा ॥ तस्मात्समुद्धरेत्तांतु पूर्वाक्तविधिनानरः ॥ अर्चभिं गादावुपवासः का  
 यः । नराज्ञो विल्लवे श्रीयात्तुरार्चा विल्लवे तथेति विष्णुधर्मोक्तेः (सिद्धांतशेखरे) चो  
 रचंडालपतितश्चोदक्याः स्पर्शने सति ॥ शिवाद्युपहते चैव प्रतिस्यां पुनराचरेत् (पंच  
 रात्रे) अंगादंगादिसंधाने प्रतिस्यां पुनराचरेत् ॥ जलाधिवासविहितनेत्रोन्मीलनवर्जि  
 तां (शुद्धिविवेके विष्णुः) द्रव्यवत्कृतशौचानां देवतार्चनाभयः प्रतिस्यापनेन शुद्धि  
 रिति । अर्चाः प्रतिमाः । तद्द्रव्यस्य तावदादेरुक्तशौचं कृत्वा पुनः प्रतिस्यां कुर्यादि  
 त्यर्थः । स्मृत्यर्थसारेऽप्येवम् (तद्विधिर्बोधायनसूत्रे) पूर्वप्रतिष्ठितस्या बुद्धिपूर्वमेक  
 रात्रं द्विरात्रमेकमासं द्विमासं वा र्चनादिविच्छेदे शूद्ररजस्वलाद्युपस्पर्शने पूर्वाक्ते  
 काले पुरायाहं वाचयित्वा युग्मान् ब्राह्मणान् भोजयित्वा निशायां जलाधिवासं कृ  
 त्वा चोभिते कलशपूर्णां पंचगव्येन तत्तन्मंत्रैः स्नापयित्वा १२ न्यंकलशं शुद्धोदकेना  
 पूर्य तस्मिन् नवरत्नानि प्रक्षिप्य तं कलशं तत्तद्गायत्र्याष्टसहस्रसष्टं शतमष्टाविंशति  
 वारं वा भिमं त्र्यप्तेनोदकेन देवं स्नापयेत्ततः शुद्धोदकेन स्नापयेदष्टसहस्रसष्टशतमष्टा  
 विंशतिवापुस्तु प्रसक्तं तनमलमंत्रेणाच । ततः पुठपाणिदत्वा यथासंभवमर्चयित्वा शु  
 ड्ढोदकं निवेदयेदिति । बुद्धिपूर्वतु विच्छेदे पूर्वाक्तां प्रतिस्यां पुनः कुर्यात् । पूर्वाक्तविष्णु  
 वचनात् इदं मलमासशुक्रास्तादावपि कार्यमिति मदनरत्ने हेमाद्रौ च (देवार्चा  
 प्रासादभेदेनेतु शूलपाणीकाश्रयः) वापीकूपारामसेतुसभातडागवप्रदेवतायन  
 भेदेने प्रायश्चित्तं च तस्मिन् आज्याहुतीर्जुह्यात् । इदं विष्णुसर्गस्तोत्रे विष्णौ कर्मा  
 णि पादोऽस्येति यां देवतामुत्सादयति तस्ये देवतायै ब्राह्मणान् भोजयेदिति । शंखे  
 लिखितौ प्रतिमाराभकूपसंक्रमध्वजसेतुनिपातभंगेषु तत्समुत्थानं प्रतिसंस्कारो १२  
 वृशतंच निपातितानामिति । समुत्थानं प्रतिक्रियाप्रतिसंस्कारः । पुनः प्रतिस्या ।  
 अष्टशतं पगादंडप्रचेत्यर्थः (अथ जीर्णोद्धारः) सचलिंगादौ दग्धे भग्ने च लिते वा  
 कार्यः । अयंचानादिसिद्धप्रतिष्ठितलिंगादौ भंगादिदुष्टेऽपि न कार्यः । तत्र तु महाभि  
 येकं कुर्यादिति विविक्रमः । कर्त्ता मुक्तदेवस्य जीर्णोद्धारं करिष्ये इत्युक्त्वा पुराया

हंवाचयित्वा आचार्यमृत्विजाश्च वृत्त्वा । लिंगेऽत्रोऽन्यापकेऽश्वरहृदयायनमः । अत्रो  
 व्यापकेऽश्वरशिरसेऽस्वाहेत्येवं यङ्गं कृत्वा धोरमंत्रं शतं जप्त्वाऽग्निं प्रतिष्ठाप्याधो  
 रेणाधृतसर्पैः सहस्रं हुत्वा । इंद्रादिभ्यो नाम्ना बलिं दत्त्वा जीर्णादेवं प्रणावेन संप्रज्य  
 ब्रह्मादिमंडलदेवतानां होमं पूर्वाकृतं कृत्वा देवं प्रार्थयेत् । जीर्णाभग्नमिदं चैव सर्व  
 दोषावहं नृणाम् ॥ अस्योद्गारे कृते शांतिः शास्त्रेऽस्मिन् कथिता त्वया ॥ जीर्णाद्वा  
 रविधानं च नृपराष्ट्रहिता वहम ॥ तदधस्तिष्ठतां देवप्रहरामित्वा ज्ञयेति ॥ ततः सा  
 राज्यमधुदूर्वाभिः समिद्धाभिश्चाष्टोत्तरसहस्रं शतं वा देवमंत्रेणाहुत्वाऽगानां दशांशे  
 न लिंगचालनार्थं सहस्रं शतं वा पायसेन हुत्वा लिंगं प्रार्थयेत् । लिंगं रूपं समागत्य येन दं  
 समधिष्ठितम् ॥ यायास्त्वं संमितं स्थानं संत्यज्यैव शिवाज्ञया ॥ अत्र स्थाने च  
 याविद्या सर्वविद्येश्वरैर्युता ॥ शिवेन सह संतिष्ठेति मंत्रितजलेनाभिश्चिद्य विसर्जये  
 त् । ततोऽस्त्रमंत्रितेन खनित्रेणात्वा लिंगमादाय नद्यादौ वामदेवेन लिंगं प्रणावेन  
 मूर्तिसिपेत् । दारुजंतुमधुनाऽभ्यज्याधो रेणादहेत् । हेमरत्नादिमयंतुदग्धं चलितं  
 वापुनस्तत्रैव स्थापयेत् । ततः शांत्यैः अघोरेणातिलैः सहस्रं हुत्वा प्रार्थयेत् । भगवन्  
 भूतभव्येश लोकाय जगत्पते ॥ जीर्णालिंगसमुद्धारः कृतस्तवाज्ञया मया ॥ अग्नि  
 नादारुजंदग्धं क्षिप्तं शैलादिकं जले ॥ प्रायश्चित्ताय देवेश अघोरास्त्रेणातर्पितम् ॥  
 ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यथोक्तं न कृतं यदि ॥ तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वरे  
 ति ॥ ततो यजमानः प्रार्थयेत् । गोविप्रशिल्पभतानामाचार्यस्य च यज्वनः ॥ शां  
 तिर्भवतु देवेश अच्छिद्रं जायतामिदम् (मूर्तौ तु विशेषः) त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं देहं  
 निर्माययत्यसौ ॥ वासंकुरुहुरग्रेयतावत्त्वं चात्पके गृहे ॥ वसनक्षेत्रं सहित्वेह म  
 र्तिवैतवपर्ववत् ॥ यावत्कारयते भक्तः कुरुतस्य च वांछिता मिति ॥ ततो नवां मूर्तिलिं  
 गं वा कृत्वा कृत्वा विधिना स्थापयेत् । मूलं त्वग्निपुराणोऽप्यस्य ॥ इति जीर्णाद्धारः  
 (अथ तुलसीग्रहणम् । देवयाज्ञिककृते स्मृतिसारे) वैधृतौ च व्यतीपाते भौमभार्गव  
 भानुयु ॥ पर्वद्वये च संक्रांतौ द्वादश्यां सुतकद्वये ॥ तुलसीये विचिन्वन्ति ते किंदंति  
 हरेः शिरः (विष्णुधर्मोत्तरे) रविवारं विना दूर्वां तुलसीं द्वादशीं विना ॥ जीवितस्य  
 विनाशाय प्रविचिन्वीत धर्मवित् (तथा) संक्रांतावर्कपक्षांते द्वादश्यां निशिस



न्ध्ययोः ॥ यैश्चिन्नंतुलसीपत्रं तैश्चिन्नंहरिमस्तकम् ( पात्रे ) द्वादश्यां  
 तुलसीपत्रं धात्रीपत्रंचकार्तिके ॥ लुनातिसनरोयच्छेन्निरयानतिगर्हितान्  
 ( रुद्रयामले ) द्वादश्यांच दिवास्वापस्तुलस्यवचयस्तथा ॥ विष्णोश्चैवदि  
 वास्नानंवर्जनीयंसदाबुधैः ( विष्णुधर्मे ) नक्ष्त्रांतुलसीविप्रोद्वादश्यांवैष्णवः  
 क्वचित् ॥ देवार्थेतुलसीछेदोहेमार्थेसमिधांतथा ॥ इन्दुक्षयेनदुष्टयेतगवार्थेद्रुह  
 णास्यच ( ग्रहणामन्त्रस्तुपात्रे ) तुलस्यमृतजन्मासिसदात्वंकेशवप्रिये ॥ केशवार्थं  
 विचिन्वामिवरदाभवशोभनेर्इति ( पारिजातेदक्षः ) समितपुठपकुशादीनांहिती  
 यः प्रहरोमतः ॥ अथपुठपादेः पर्युषितत्वम् ( भार्गवार्चनेभविष्ये ) प्रहरंतिष्ठतेजा  
 तीकरवीरमहर्निशम् ॥ तुलस्याविल्वपत्रेयुसर्वेषुजलजेषुच ॥ नपर्युषितदोषो  
 स्तिमालाकारगृहेपिच ( बृहन्नारदीये ) वज्र्यपर्युषितंपुठपं वज्र्यपर्युषितंज  
 लम् ॥ नवज्र्येतुलसीपत्रंनवज्र्यंजाह्नवीजलम् ( तत्रैवपात्रे ) तुलसीपर्युषिता  
 नैवविल्वंतुत्रिदिनावधि ॥ पञ्चपंचदिनात्त्याज्यशेषंपर्युषितंविदुः ( स्कान्दे )  
 पालाशादिनमेकन्तु पंकजंचदिनत्रयम् ॥ पंचाहंविल्वपत्रंच दशाहंतुलसीदलम्  
 ( पदार्थादिर्शोपदेवस्त्वन्यथाह ) विल्वापामार्गजातीतुलसिशमिशता केत  
 कीभृङ्गदूर्वा मन्दारभोजाहिदभमुनितिलतगरब्रह्मकल्लारमल्लयः ॥ पंचाश्वा  
 रातिकुम्भीदमनमसुवकाविल्वतोहानिशस्तास्त्रिंश ३० ज्येष्ठा १ र्यं र्द रीशो  
 ११ दधि ४ निधिर वसु ८ भू १ भू १ । यमा २ भयसवम् ॥ अस्यार्थः ॥ शताशताव  
 री । मन्दः मन्दारः । अहिर्नागकेशरः । मुनिरगस्त्यः । अश्वासतिः । करवी  
 रः कुम्भीपाटलेतिकैदेवनिघंटुः । अरयः षट् ईशाः स्रकादश । उदधयप्रचत्वारः  
 निधयोन्व । वसवोऽष्टौ । भूः स्रकः । यमौ द्वौ । विल्वमारभ्याऽहिपर्यंतंगणा  
 यित्वादभमारभ्य पुनस्त्रिंशदादिगणार्थेदित्यर्थः । सतिदिनोत्तरपर्युषितानीत्य  
 र्थः ( टोडरानंदेस्कान्दे दमनमुपक्रम्य ) तस्यमालाभगवतः परमप्रोतिकारि  
 णी ॥ शुठकापर्युषितावापिनदुष्टाभवतिक्वचित् ( तिथितत्त्वेमात्स्ये ) विल्व  
 पत्रंचसाध्यंचतमालामलकीदले ॥ कल्लारंतुलसींचैवपञ्चमुनिपुठपकं ॥ सतत  
 पर्युषितंनस्यात् कुशाप्रचकलिकास्तथा ( स्मृतिसारावल्याम् ) जलजानांच

सर्वेषांपञ्चाशामहतस्यच ॥ कुशपुष्पस्यरजतसुवर्गाकृतयोरपि ॥ नपर्युषित  
 दोषोस्तितीर्थतोयस्यचैवहि ॥ मुकुलैर्नार्चयेद्देवं पंकजैर्जलजैर्विना ( अथ  
 शिवनिर्माल्यनिर्णयः सिद्धान्तशेखरे ) धराहिरण्यगोरत्नताम्ररौप्यांशुकादि  
 कान्च ॥ विहायशेषंनिर्माल्यंचण्डेशायनिवेदयेत् ॥ अन्यदन्नादिपानीयंतांबूलं  
 गन्धपुष्पकम ॥ दद्याच्चण्डायनिर्माल्यंशिवभक्तान्तुसर्वशः ॥ आचार्यशिवच  
 ण्डानामाज्ञाभंगेतुलक्षकम् ॥ धनस्यभक्षणेतेषांपादोनलक्षमीरतम् ॥ निर्माल्ये  
 भक्षितेलक्षपादतःशुद्धिसीरिता ॥ दानंचभक्षणासमं तदर्धन्तदुपेक्षणे ॥ अकासा  
 द्वक्षणेयद्वा निर्माल्यस्यजपेत्सुधीः ॥ ब्रह्मपंचकसाहस्रं धर्मेणासहितंततः ॥  
 कामतोभक्षणेदीक्षाप्रायश्चित्तंनचान्यतः ॥ निर्माल्यंलंघनेधोरंप्रजपेदयुतंततः ॥  
 स्पर्शश्चलंघनसमो विक्रयोभक्षणेनच ( स्मृत्यर्थसारेपि ) शैवसौरनिर्माल्येनैवे  
 द्यभक्षणेचान्द्रमभ्यासेद्विगुणमभ्यासेप्रतपनम् ॥ अन्यनिर्माल्येनाप्येवमि  
 तिइदंचज्योतिर्लिङ्गाद्यतिरिक्तविषयम् ( तथाचपुरुषार्थप्रबोधेभविष्ये ) ज्योति  
 र्लिङ्गंविनालिङ्गंयःपूजयतिसत्तमः ॥ तस्यनैवेद्यनिर्माल्यभक्षणात्तप्तकृच्छ्रकम् ॥  
 शालग्रामोद्भवेलिङ्गेवाणालिङ्गेस्त्वयम्भुवि ॥ रसलिङ्गेतथार्थंचसुप्रसिद्धप्रतिष्ठि  
 ते ॥ हृदयेचन्द्रकान्तेच स्वर्गारोप्यादिनिर्मिते ॥ शिवदीक्षावताभक्ते नेदंभ  
 क्षयमितीर्यते ( तथा ) बाणालिङ्गेस्त्वयम्भुतेचन्द्रकान्तेहृदिस्थिते ॥ चान्द्राय  
 णासमंज्ञेयंशम्भोर्नैवेद्यभक्षणां । लिङ्गेस्त्वयम्भुवेवाणोरत्नजेरसनिर्मिते ॥ सिद्धप्र  
 तिष्ठितेचैवनचण्डाधिकृतिर्भवेत् ॥ यत्रचण्डाधिकारोस्ति तद्भोक्तव्यंनमानवैः ॥  
 चण्डाधिकारोनेयत्रभोक्तव्यंतत्रभक्तितः ( त्रैविक्रम्याम् ) बाणालिङ्गेचलोहेच  
 सिद्धलिङ्गेस्त्वयम्भुवि ॥ प्रतिमासुचसर्वासुनचण्डोधिकृतोभवेत् ॥ अब्रह्महा  
 पिशुचिर्भूत्वानिर्माल्यंयस्तुधारयेत् ॥ तस्यपापंसहस्रंघ्ननाशयिष्येसहाव्रतेइ  
 तिस्कांदादशुचिनानग्राह्यंशिवनिर्माल्यं । किंतुस्नात्वेतिस्मार्तःअनुपनीतेनग्रा  
 ह्यमितिश्रीदत्तःशिवदीक्षाहीनैर्नग्राह्यमितिशैवाः । तिथितत्त्वेहेमाद्रौपरिशिष्टे  
 अग्राह्यंशिवनैवेद्यंपुष्पंफलंजलं ॥ शालग्रामशिलासंगात्सर्वथातिपवित्रताम् ॥  
 पंचायतनपूजायांतंत्रेणाचनिवेदितमित्यर्थः ( शिवपुराणे ) येवीरभद्रशमिताःशि



चर्माक्षिप्राङ्मुखाः । शंभोरन्यत्रदेवेषुयेभक्तायेनदीक्षिताः॥ तेषामनर्हमीशस्य  
 तत्प्रसादचतुष्टयम् (काशीखण्डे) जलस्यधारणंमूर्ध्निविश्वेशस्नानजन्मनः ॥  
 स जालधरोबन्धःसमस्तसुखवल्लभः (तथा ) स्नापयित्वाविधानेनयोर्लिंगस्नप  
 नोदकं ॥ त्रिःपिवेत्त्रिविधं पापं तस्येहाशुविनश्यति॥लिंगस्नपनवार्भिर्यःकुर्यान्मू  
 ष्ण्यभिषेचनम् ॥ गंगास्नानफलं तस्य जायतेऽवविपाप्मनः । इदं पूर्ववाक्यवशादि  
 श्वेश्वरविषयमितिकेचित् । काशीस्थपुराणाप्रसिद्धसर्वलिंगविषयम् (काशीखं  
 ढेरत्नेश्वराख्याने ) तथैव दर्शनादित्यन्ये (अथ कृषिः । राजसार्तडः) ऋक्षेयुत्तर  
 पौष्णावैष्णावमघामलानुराधाश्विनी प्राजापत्यकरिद्विदेवतगुरुप्रालेयपादेषुच ॥  
 निर्देयैर्वृषभैर्हलैश्च सुमनोमालाभिरभ्यर्च्यैर्देवाक्षेत्रपतेर्बालिंहलधरः क्षेत्रततः  
 कर्षयेत् ॥ प्राजेशश्रवणोत्तरादितिसमघामार्तडतिष्ठ्याश्विनीपौष्णानुष्णामरीचयः  
 शतभिषकस्वातीविशाखातथा ॥ जीवार्कन्दुसितेन्दुनन्दनदिनेलगनेचतौम्योदयेस  
 स्यान्नांवपनेतथैवलवनेशस्तास्तधारोपगो ( चण्डेश्वरः ) हस्तचित्रादितिस्वाती  
 रेवत्यांश्रवणात्रये ॥ स्थिरलगनेगुरोर्वारेबीजधार्यैश्शुक्रयोः ॥ औधनदायसर्व  
 लोकहितायदेहिमेधान्यंस्वाहा ॥ लेखयित्वाहमसंवेधान्यागारेनिधापयेत् ॥ स  
 स्यवृद्धिंपरांकुर्यात्पूजितंप्रतिपूजयेत् ॥ दक्षिणादिङ्मुखगमनंगमनमभिनवासुना  
 रीषु ॥ व्ययमपिसस्यधनानांबुधाबुधवासरेकुर्युः ॥ शनिवारेचनोकार्योधन  
 धान्यव्ययोबुधैः (अथवस्त्रंश्रीपतिः) रोहिणीयुकरपंचकेप्रिवभेद्युत्तरासुच  
 पुनर्वसुद्वये ॥ रेवतीचवसुदेवतेचभेनव्यवस्त्रपरिधानमिच्छते ॥ जीर्णोर्वौसततमंबु  
 भिराद्रिमिन्दौभौमेशुचेबुधदिनेतुभवेद्वनाय ॥ ज्ञानायमंत्रिणाभृगौप्रियसंगमाय  
 मंदेमलायचनवांब्रधारणांस्यात् ॥ रोहिणीयुरुपुनर्वसुत्तरेयात्रिभर्तिनववस्त्रभूष  
 णो ॥ सानयोधिदवलंब्रतेपतिंस्नानमाचरतिवास्तोपिया ॥ अथालंकारवलय  
 दि ( देवजवल्लभः ) नासत्यपद्यवभुभिःकरपंचकेनमार्तडभौमगुरुदानवमंत्रिवारे  
 सुक्तासुवर्णमणिविद्रुमशंखदंतरक्तांबराणाविधृतानिभवंतिसिद्धौ (उग्रोतिर्नि  
 बन्धे)हस्तानुराधमृगपूषधनिष्ठयुक्ताचित्रोत्तरासुचपुनर्वसुरोहिणीषु ॥ लगनेस्थ  
 रैरविमुतेन्दुजजीववारेहेमादिधारणाविधिःकथितोनराणाम् ( तत्रैवश्रीपतिः )

पौष्णाश्चिनीवसुकरादियुपंचकेयुकौसुंभहेमसर्गाविद्रुमकाचशंखाः ॥ नार्या  
धृताः सुतसुखार्थकरा भवन्ति ब्रह्मोत्तरादिति गुरुवसुखाय भर्तुः (तत्रैव) शंखादि  
वररत्नानि पुष्पादित्युत्तरासुच ॥ रोहिण्यानैव गृह्णीत भर्तुर्जीवितकांक्षिणी  
(अथ सूचीकर्म) वासवादिति भत्वाष्ट्रमैत्रचंद्राश्चिनीयुच ॥ सूचीकर्मतनुवागामे  
भिर्हस्तैः प्रशस्यते (अथ शय्या) हस्तादिति ब्रह्मगुरुत्तराणि पौष्णाश्चिनीमूलैर्दु  
र्भाचित्रभानि ॥ वारेषु जीवेदुसितेदुजानां शय्यासनारंभरामुत्तमं स्यात् (अथ शस्त्र  
धारणम्) पुष्ये चादिति चित्रपद्मतनये शक्रोत्तरा रेवती स्वाती वाजि विशाखमि  
श्रसहिते भानौ गुरौ भार्गवे ॥ कुम्भे कोट्युद्गृहे वृषे मृगपती चेंदौ शुभेर्वीक्षिते सन्नाहः श  
रखड्गकुंतलुरिकाधार्या नृपाणां हिताः (अथ स्वाभिसेवा चंडेश्वरः) रोहिण्या  
त्तरपौष्णो वसुवा रुगा योरपि ॥ सेवेतस्वामिनं भृत्यः शुभवारीदये तथा (ज्योति  
निबंधे) दासी दासादिभृत्यानां कुर्यात्संग्रहणं बुधैः ॥ स्थिरलग्ने शुभेर्दुष्टे मंदवारे  
विशेषतः (अथ राजाश्वदोलाः ॥ सख) पौष्णाप्रजेशादिति भद्र्यानि हस्तादि  
घटुकश्रवणोत्तराणि ॥ दोलादिमातंगतुरंगमाराणामारोहणोभीष्टफलप्रदानि ॥  
(अथ नृत्यम्) हस्तः पुष्यो वासवं रोहिणी च ज्येष्ठा पौष्णां वा रुगां चोत्तराश्च ॥ प  
र्वाचार्यैः कीर्तितः चक्रवर्ती नृत्याभिशोभनोऽयं भवर्गः (अथ राजदर्शनं श्रीपतिः)  
मृगाप्रिवपुष्यश्रवणाश्रविसाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रमपूषभानि ॥ मैत्रेयायुक्तानि नरेश्वरा  
णां विलोकने भानि शुभप्रदानि (अथ क्रयविक्रयौ) भाद्रपदयत्रिदशमं त्रिदि  
वाकरेषु मलानिलोत्तरतुरंगमरेवतीषु ॥ सारंगपाणिरजनीकरमैत्रभेद्युलाभः  
सदैव भवति क्रयविक्रयाभ्यां (वस्त्रे तु) चित्राशतभिया स्वाती रेवती चाश्चिनी  
शुभा ॥ श्रवणाप्रचतया प्रोक्ता वस्त्राणां क्रयशुभाः (अथ सेतुः) स्वातीयु  
क्ते मंदवारे वृषलग्ने शुभे दिने ॥ सेतुनां लंघनं कार्यं ध्रुवभेचार्यजीवयोः (अथ प  
शुकृत्यम् श्रीपतिः) चित्रोत्तरा वैष्णवरोहिणीयुचतुर्दशीदर्शदिनाष्टमीषु ॥  
स्थानप्रवेशो गमनं विदध्यात्पुमानपशूनां न कदाचिदेव (चंडेश्वरः) हस्तमूलवि  
शाखादुरेवत्यां श्रवणोत्तरा ॥ मैत्रेचवास्तुरोरेषुं पशुक्रयणमुच्यते ॥ पूर्वात्रयामृ  
तमयूखहुताग्नेषु इंद्राग्निवाजिवसुवास्तुराशंकरेषु ॥ एते युगो महिष्यदितुरंग



मादिनानाप्रकारपशुजातिगतिःप्रशस्ता ( अथराजदंतच्छेदः ॥ ज्योतिर्निबन्धे )  
 त्वाष्ट्रवैष्णवश्चिन्त्यामादित्येवमुदैवते ॥ दंतिनां शुभदं कर्मपुष्टये हस्ते च कर्तन  
 म् (अथ निक्षेपः) भरणीत्रीणि पूर्वाणि आर्द्राश्लेषा मघा तथा ॥ चित्राज्येष्ठा वि  
 शाखा च मूलं मृगपुनर्वसू ॥ रभिर्दत्तं प्रयुक्तं च यद्यन्निक्षिप्यते धनम् ॥ पृथुतो धाव  
 मानस्यनिधेनो नोपपद्यते (अथ ऋणामोक्षः । श्रीधरः) वागीशमंददिवसांशकल  
 गनयुक्ते रिक्तासु मंददिवसे कुलिकोदये च ॥ सैत्रे द्वितीयपदमैत्रमुहूर्तयुक्ते राशुद  
 गमे च ऋणामोक्षमुशंति संतः (अथ राजमुद्रा) मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु भेषु योगप्रशस्तेश  
 निचंद्रवर्ज ॥ वारेतिथौ पूर्णजयाह्वये च मुद्राप्रतिष्ठा शुभदा हिराज्ञास (अथ नौः ।  
 चण्डेश्वरः) पौष्णाश्चिनीतुरगवास्तु मित्रचित्राशीतोष्णारश्मिवसवो नलवंत्यमू  
 नि ॥ वारे च जीवभृगुनंदनके प्रशस्ते नौकादिसंघटनवाहनमेषुकुट्यात् (अथ भो  
 गः) गुरुभरविभानुराधा विधातु पौष्णाश्चिरोहिणीयु स्यात् ॥ स्वात्युत्तरासुकुर्या  
 च्छयनासनभोगभोगादि (अथ ऋणशुक्रमश्रीपतिः) पुष्टये पौष्णाश्चिनीर्त्वे दवे च  
 शाक्रे हस्ताद्ये चिके भेष्यदित्याः ॥ सौरं कार्यवैष्णवादिष्वे च मुक्ताभौमादित्यपा  
 तंगिवारान् ॥ नक्षत्रात् भुक्तोत्कटभूयितानामभ्यक्तयात्रासमरोत्सुकानां ॥ सौरं  
 विदध्यान्निशिसंध्योर्वाजिजीवियुक्तानवमेन (विस्थलीसेतौ वृद्धगार्यः)  
 रव्यारसौरवारेयुरात्रौ पाते ब्रताहनि ॥ आह्वाहः प्रतिपद्विक्ताभद्राः सौरेषु वर्जयेत् ॥  
 (गार्यः) यद्ययमापर्णमापातचतुर्दश्यष्टमी तथा ॥ आसुसन्निहितं पापं त्रिभु  
 ले भगेश्वरे (राजमार्तंडः) देवकार्येऽपि तुः श्राद्धे रवेरंशपरिहरे ॥ सौरकर्मनकुर्वीत  
 जन्मसासे च जन्मभे (बृहस्पतिः) राजकार्ये न्युक्तानां नराणां भपजीविनाम् ॥ ऋ  
 शुलोमनखच्छेदो नास्तिकालाविशोधनम् (तथा) सौरं नैमित्तिकं कार्यं निषेधे  
 सत्यपि ध्रुवम् ॥ पित्रादिमृतिदीक्षाप्रायश्चित्तचतुर्थके ॥ केचित्तत्तरार्धमन्य  
 थापहंति सुंदनस्य निषेधेऽपि कर्तनं विधीयत इति (नारदः) नृपविप्रान्तिग्रायज्ञे मर  
 गो बन्धमोक्षयो ॥ उद्वाहे खिलवारर्क्षे तिथियुक्तौ रमिष्टदम् (भारते) प्राङ्मुखः ऋ  
 शुक्रमश्रीकारयतीतसमार्हितः ॥ उदङ्मुखो वायुभूत्वा तथा युर्विदत्ते महत् (अप  
 रार्क्षे) उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वावपतंकारयेत् सुधीः ॥ केशश्मश्रुलोमनखान्यु

दक्षसंस्थानिवापयेत् ॥ दक्षिणांकराभारभ्यधर्मार्थपापसंक्षये ॥ शिखाद्येनेवमं  
स्कारेशिखाद्यंतीशरोवपेत् (यतीनांतुविशेषोत्तिगमे) कक्षोपस्थशिखावर्जमु  
तुसंधिषुवापयेदिति ॥ अन्येपि विधिप्रतिषेधाः प्रागुक्ताः (अथेधनसंग्रहः) ब्रह्मा  
निलार्कमधसूलात्रिपूर्वरौद्रपौष्णानुराधगुस्विष्णाविशाखयुक्ते ॥ वारेकुजार्कभु  
गुनंदनसोमजानां श्रेष्ठेधनस्यकरणां भवतिप्रशस्तम् (अथनवान्नम् । श्रीपतिः)  
रेवतीश्रुतिपुनर्वसुहस्तब्राह्मणतः पृथगापि द्वितये च ॥ अतरेयुगदितपृथुकानां प्राशनं  
नवनवान्नविधानं (अथनवभोजनपात्रम् । ज्योतिर्निबंधे) भोज्यपात्रसुधासिंधौ  
घटयेद्वासमाहरेत् । तत्रान्नप्राशनप्रोक्तेकालेभोजनमाचरेत् (अथनवपर्णाफला  
दिभक्षणात् । चंडेश्वरः) मलाश्विभैत्रकरतिष्यहरींद्रभेषुपौष्णोत्तरेदवपुनर्वसुवा  
सवेषु ॥ वारेषुभूमितनयार्कजवारवर्जतांबूलनूतनफलाद्यशनंहिताय (अथहोमे  
आहुतिपातः (ज्योतिषे) तरणिविद्धं शुभास्करिचन्द्रमाः कुजसुरेज्याविधुंतुद  
केतवः ॥ रविभतोदिनभंगरायेत्क्रमात्प्रतिखगांत्रितयंत्रितयंत्रयसेत् ॥ दिनकरा  
र्कितमः कुजकेतवोहुतभुजेनशुभाश्वित्वतरेषुभाः ॥ हवनचक्रमिदंप्रविलोक्यतां  
हवनकर्मणि सर्वसमृद्धये (अत्रशांतिरुक्ताविष्णुधर्मे) क्रूरग्रहमुखेचैवसंजातेहव  
नेशुभे ॥ शांतिविधायगांदद्यात् ह्यगायकुटुंबिने ॥ आयसींप्रतिमांकृत्वानि  
क्षिपेत्तामधोमुखीं ॥ गोमूत्रमधुगंधाद्यैरर्चितं प्रतिमांततः ॥ स्वस्थांनिधायसंप्र  
प्रयत्नहोमोविधीयते (अत्रापवादः क्रियासारे) नित्येनैमित्तिकेदुर्गाहोमादौ नै  
विचारयेत् (अथज्वरादौफलम् । श्रीपतिः) स्वात्याप्लेशारौद्रपूर्वाशुशाकरो  
गोहपत्तिर्जायतेयस्यपुंसः ॥ तद्वैयज्यं व्यापृतोनिःप्रयत्नः स्यादुग्धाब्धेर्लब्धजन्मा  
पिवैद्यः ॥ व्याध्युत्पत्तिर्यस्यपौष्णोत्तमैत्रेप्राणात्रांजायतेतस्यकृच्छ्रात् ॥ वैश्वे  
सौम्ये रोगमुक्तिस्तुमासाद्विंशत्यास्याद्वासराणांमघासु ॥ पक्षाद्वस्तेवासवेसद्वि  
दैवमूलाश्विन्योरग्निधिरायेनवाहात् ॥ आस्येत्वायूदैषावेवास्तौ चनैरुज्यंस्या  
ज्जनमेकादशाहात् ॥ आहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञेयमाख्येप्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रा  
त् ॥ रोगान्मुक्तिर्जायतेमानवानांनिःसंदिग्धंजल्पतंगार्मुख्यैः (ज्योतिषे) सक्ता  
होनिधनंदशाहमनिलादुवासाविद्यत्पर्वताः सप्ताङ्गाविलयप्रचमासयुगुलंसासोमृ



तिःपक्षकः ॥ द्वौमासावथविंशतिर्दशानिशाःपक्षांतपक्षानखामासीपक्षदशांत  
 पक्षककुभःपीडादिनान्यश्चिभात ( देवज्ञः ) उरगवस्तुगारौद्रावासर्वेद्रत्रिपर्वयिम  
 वहनविशाखापापवारेणायुक्ताः ॥ तिथियुनवसिख्यष्टीद्वादशीवाचतुर्थीभिर्वातिस  
 रणयोगोरोगिगां कालहेतुः ॥ अत्रकुंभेहैमीनक्षत्रदेवताप्रतिमांसंपूज्यद्वादशद  
 लेयुसंकर्षणादिद्वादशमूर्तीर्द्वादशादित्याचवासंपूज्य दूर्वासिमित्तिलक्षीराज्यैर्गा  
 यज्यातहेवतायैअष्टोत्तरशतंहुत्वादध्योदनंबलिंदत्वाचार्याय गांप्रतिमांचदत्वा  
 विप्रान्भोजयेदितिसंक्षेपः । विशेषस्तुव्रतहेमाद्रौपदार्थादर्शचज्ञेयः (अथभेष  
 जं । चंडेश्वरः) मलानुराधमृगातिथ्यपुनर्वसौचपौष्णाश्विनीश्रवणाशुक्रकरत्रयेच  
 वारेयुवाकप्रतिदिनेयुसितेंदुशस्तेभैयज्यभक्षणासमीयुहितंनराणाम् (अथारोग्य  
 स्नानम् । श्रीपतिः) इन्दोवारेभार्गवेचध्रुवेषुसार्पादित्यस्वातियुक्तेषुभेषु ॥ पि  
 ष्येचांतेवापिकुर्यात्कदाचिन्नैवस्नानंरोगनिर्मुक्तजंतुः ॥ चरेविलग्नैरविभौमवा  
 रेरिक्तेतिथीस्याद्बहुलेचपक्षे ॥ विद्यायेचरैरोगनिपीडितानांस्नानंनराणानि  
 रुजत्वकारि ) अथदंतधावनंपृथ्वीचन्द्रोदयेविष्णुः ) प्रतिपदशय्यष्टीषु चतुर्द  
 श्यष्टमीषुच ॥ नवम्यांभानुवारेचदंतकायंविबर्जयेत् (नारदः) चतुर्दश्यष्टमीपौ  
 र्णमासीसंक्रमणेषुच ॥ नंदासुचनवम्यांचदंतकायंविबर्जयेत् ॥ आद्धेयज्ञेचनिय  
 मेतथाप्रोश्रितभर्तृका ॥ व्यतीपातेचसंक्रांत्यांनंदाभताष्टपर्वसु ॥ तैलंक्षौरंरत्तिंसां  
 संदंतकायंचवर्जयेत् (वशिष्ठः) शन्यर्कशुक्रवारेयुकुजाहेत्रतवासरे ॥ जन्माहे  
 आद्धदिवसेदंतकायंचवर्जयेत् ( हेमाद्रौस्कांदे) अभ्यंगेजलविस्नानेदंतधावनमै  
 थुने ॥ जातेचनिधनेचैव तत्कालव्यापिनीतिथिः (संवर्तः) रवौविवाहआशी  
 चैवर्जयेदंतधावनम् ( व्यासः) अलाभेदंतकायानां निषिद्धानांतथातिथौ ॥ अ  
 पांद्वादशगंड्यैर्विदध्यादंतधावनम् (अथामलकस्नानं । व्यासः) श्रीकामःस  
 र्वदास्नानंकुर्वीतामलकैर्नरः ॥ सप्तमीनवमीचैवपर्वकालंविबर्जयेत् ॥ चन्द्रसूर्या  
 परागेचस्नानमामलकैस्त्यजेत् (ऋतुः) यक्षीचसप्तमीचैवनवमीचत्रयोदशी ॥ सं  
 क्रान्तौरविवारेच स्नानमामलकैस्त्यजेत् (यत्तु) नवमीदशमीचैव तृतीयाच  
 त्रयोदशी ॥ प्रतिपत्तद्वादशीकृष्णा स्नानंतामुविबर्जयेत् (यच्च) दर्शस्नानं

नकुर्वीत मातापित्रोःसुजीवतोः ॥ पुत्रःकुर्वन्निराचक्षे पित्रोरुत्ततिजीविते  
इति करावयमाद्यैःस्नानमात्रंनिघ्नं । तद्भोगार्थस्नानपरं । ननित्यनैमित्तिक  
परमितिहेमाद्रिः ( अथतैलस्नाननियेधः । कात्यायनः ) पक्षादौचरवी  
यस्ययां रिक्तायाञ्चतथातिथौ ॥ तैलेनाभ्यज्यमानस्तु चतुर्भिःपरिहीयते  
( गार्गः ) पञ्चदश्यांचतुर्दश्यामष्टम्यांरविसंक्रमे ॥ द्वादश्यांसप्तमीयस्योस्तैल  
स्पर्शविवर्जयेत् ॥ नचकुर्यात्तृतीयायां त्रयोदश्यान्तिथौतथा ॥ शाश्वतौगतिम  
न्विच्छत्तदशम्यामपिपण्डितः ( तत्रैवायुर्वेदे ) यस्ययांदिनक्षयेष्टम्यामेकादश्यांच  
पर्वसु ॥ द्वादश्यांचचतुर्दश्यांपंचम्यांप्रतिपत्तिथौ ॥ व्रतेष्वद्विदिनेजन्मव्रितये  
अवशाद्वयोः॥ ज्येष्ठोत्तराफाल्गुनीयुव्यतीपातेचवैधृतौ ॥ विष्टियोगेचसंक्रांतौ  
मन्वादिषु युगादिषु ॥ नाभ्यंगंतव्रबालानांवृद्धानांतुनदोयकृदिति ( व्यवहारत  
त्वे ) संक्रांतिभद्राव्रतिपातवैधृतिदस्यसमीपर्वसुनार्कभूसुते ॥ स्नानेद्वितीयादश  
मीचगर्हिताःप्रसूयादिमाद्यारदधावनेधमाः ( अस्यापवादमाहतत्रैवप्रचेताः ) सा  
र्यपंगंवैलंचयत्तैलंपुष्टपवासितं ॥ अन्यहृदययुतंतैलंनदुष्यतिकदाचन( आयुर्वेदे )  
निघ्नद्वितीयावारस्यहृदयपिरात्रिषु । किंचिद्गोघृतयुक्तंवाविप्रपादरजोन्वि  
तं ॥ भानौदूर्वान्वितंभौमेभूयुक्तंपुष्ययुरगुरौ ॥ सर्वेषांसर्वदातैलमभ्यंगेयुनदुष्यति ॥  
मंगलेष्वप्यदोषः । मांगल्यंविद्यतेस्नानंवृद्धिपूर्वात्सवेयुच ॥ स्नेहमात्रसमायुक्तंम  
ध्याह्नात्प्राक्तदिष्यते ॥ इतिमदनपारिजातेकात्यायनोक्तेः ( हेमाद्रौबृहन्मनुः )  
तैलाभ्यंगोनार्कवारेनभौमेनोसंक्रांतौवैधृतौविष्टियस्योः ॥ पर्वस्वस्यम्यांचनेष्टः  
सदृष्टः प्रोक्ताचमुक्तावासरेसूर्यसूनेः ( तिलस्नाननियेधस्तुषट्त्रिंशन्मते ) तथास  
प्तम्यमावास्यासंक्रांतिग्रहजन्मसु ॥ धनपुत्रकलत्रार्थीतिलपिष्टंनसंपृशेत्( अथगृ  
हारंभः । ज्योतिर्निबंधेबादरायणः ) वैशाखेफाल्गुनेषौयेथावरोमार्गशीर्षके ॥  
सूत्रारंभःशिलान्यासःस्तंवारंभःप्रशस्यते( नारदः ) सौम्यफाल्गुनवैशाखमाघश्रा  
वणाकार्तिकाः॥ मासाःस्युर्गृहनिर्माणपुत्रारोग्यधनप्रदाः॥ अत्रवृषसिंहवृश्चि  
काःवैशाखश्रावणाकार्तिकाःसौराजेयाइतिकालादर्शः( तत्रैवकारणातंत्रे ) स्थिर  
मासेस्थिरेराशीस्थिरेशेनववेप्रमनास ॥ कुर्वीतस्थापनंशंकोःशंभूस्थापनमेववा ॥



कार्तिकान्त्येधस्तुलापरः । कुम्भेमाघेपि सर्वेषां संधिराणामुपक्रमस ॥ महर्षयः प्र  
 शंसन्ति धान्यागारं विहाय च ॥ नित्येधो धान्यगृहपरः । पाकभोजनशालादौ मार्ग  
 शीर्षश्च फाल्गुनः ॥ रथ्यागेहमठादौ च सहस्यः शुचिरेव तु ॥ पौषायादन्ति येधस्तु  
 प्रधानगृहपरः । न प्रधानगृहारंभं कुर्यात्पौषे शुचावुपीतितत्रैवोक्तेः ( ज्योतिस्तत्त्वे )  
 पूर्वापरास्यंतु नभोत्यपौषेयान्योत्तरास्यंसहसिद्धितीये ॥ कार्यगृहं जीवबुधसंगा  
 कर्कनीचास्तगौ जीवसितौ चाहित्वा ( रत्नमालायां ) कर्कनक्रहरिकुम्भगतेऽर्के  
 पर्वपश्चिमं मुखानि गृहार्गा ॥ तौलिमेप्रवृष्वृश्चक्रयाते दक्षिणोत्तरं मुखानिव  
 र्दति ( देवज्ञवल्लभः ) शोकांधान्यं पंचतानिः पशुत्वं स्वाप्तिनैस्त्वं संगरं भृत्यनाशम् ॥ स्व  
 श्रीप्राप्तिं बह्विभीतिं चलहमीकुर्युश्चैवाद्यागृहारंभकाले ( गार्गः ) द्युत्तरासृगरो  
 हि गार्गापुठ्येभैत्रेकरत्रये ॥ धनित्याद्वितये पौषो गृहारंभः प्रशस्यते ॥ रोहितायांश्च  
 वसात्रयेदित्युगेहस्तत्रये मूलक्रेरेवत्युत्तरफाल्गुनीष्वुरगभैत्रोत्तरायादयोः ॥ श  
 स्तं वास्तुकुजार्कवर्जितदिने गोकुम्भसिंहेमुखे कन्यायां मिथुने नभः शुचिसहे राधा  
 र्कजे फाल्गुने ( कालादर्शसत्कुमारः ) आदित्यभौमवर्जितु सर्वे वाराः शुभप्रदाः  
 ( वास्तुशास्त्रे ) मार्गशीर्षेतथापौषे वैशाखे श्रावणे तथा ॥ फाल्गुने च कृतं वै प्रमसर्व  
 संपत्प्रदं भवेत् ॥ कार्तिके माघमासे च चैत्रे ज्येष्ठे तथा श्विने ॥ मास्यायादौ भाद्रपदे न  
 कुर्यात्सर्वथा गृहं ॥ द्वितीया च तृतीया च पंचमी सप्तमी तथा ॥ त्रयोदशी च दशमी  
 पणार्चैकादशी तथा ॥ वैश्वमारंभे शुभाय स्युर्विशेषाच्छुक्लपक्षगाः ( व्यवहारसारे )  
 शिलान्यासः प्रकर्तव्यो गृहाणां श्रवणो मृगे ॥ पौषो हस्ते च रोहितायां पुष्याश्चिन्यु  
 त्तरात्रये ( वास्तुप्रदीपे ) अधोमुखैर्भौर्विदधी तस्वातं शिलास्तथैवोर्ध्वमुखैश्च पङ्क्तम् ॥  
 तिर्यङ्मुखैर्द्वारिकपाट्यानां गृहप्रवेशो मृदुभिर्ध्रुवैश्च ( ललाः ) स्नानं च पाकं शयनं  
 च भोजनं गजालयं वाजिगृहं धनस्य ॥ देवस्य पूर्वादिदिशक्रमेण मध्ये सभाभूपनिवेश  
 नाय ( शिल्पशास्त्रे ) कन्यासिंहे तुलायां भुजगपतिमुखं शंभुकोरो गिनस्वातं वाय  
 व्ये स्यात्तदास्यं त्वलिधनमकरे ईशस्वातं वदति ॥ कुम्भे सोने च मेघे निऋतिदिशि मु  
 खं स्वातवायव्यकोरो चाग्नेः कोऽसौ मुखं वैश्वमिथुनगते कर्कटे रक्षस्वातं ( तत्त्वचिं  
 तामणौ ) यत्र देव्यगृहादीनां द्वाविंशद्वस्ततोधिकं ॥ न तत्र चिंतयेद्दीमान् गुणानाय

व्ययादिकान् (राजमार्तंडः) आयव्ययीमासशुद्धिं तृणागारेन चिंतयेत् ॥ शिला  
न्यासादिनोक्त्यात्तिथागारपुरातने (व्यवहारतत्त्वे) निधिद्वेष्टापिकालेयस्वानु  
कूलेशुभेदिने ॥ तृणाकाशगृहारंभेमासदोषोनविद्यते (चंडेश्वरः) पूर्णादित्वष्ट  
मीयावत्पूर्वास्यं वर्जयेद्गृहं ॥ उत्तरास्यं न कुर्वीत नवम्यादिचतुर्दशीं ॥ अमावा  
स्यासमीयावत्पश्चिमास्यं विवर्जयेत् ॥ नवम्यादौ तथायास्यं यावत्क्षणाचतुर्दशी  
ध्रुवं दृष्ट्वा यवास्मृत्वा कर्तव्यं वास्तुरोपगाम ॥ सायाह्ने वर्जदिवसे रात्रौ त्यक्त्वा महानि  
शाम (वराहः) दक्षिणापूर्वकोणोक्तत्वा पूजां शिलान्यसेत्प्रथमाम् ॥ शेषाः प्रद  
क्षिणोत्तरस्तंभाश्चैवं समुत्थाप्याः (कालादिर्गोवास्तुशास्त्रे) स्वाते चैव शिलान्या  
सेष्ट्यचक्रं प्रशस्यते (तच्चोक्तं शांतिरत्ने) चतुर्हस्तप्रमाणां तु स्वात्वागर्तं समंततः  
कुंभोदकैः सेचयेद्युःशांतिपाठपुरःसरं ॥ ततश्चैवान्तरिक्षे साक्षं रत्नपंचकम्  
साङ्गं कुंभं स्थिरं मुक्त्वा वास्तुपूजनपूर्वकं ॥ कुंभोपरिशिलान्यासः कर्तव्यस्तद  
न्तरं (अथ गृहप्रवेशः ॥ गृहस्पर्शः) नदायां दक्षिणां द्वारं भद्रायां पश्चिमेन तु  
जयायामुत्तरद्वारं पूर्यायां पूर्वतो विशेषतः (वशिष्ठः) कृत्वा शुक्रं पृष्ठतो वामतो  
र्कविप्रान् पूज्यान् ग्रतः पूर्णकुंभं ॥ हर्म्यं रम्यं तोरणास्रग्वितानैः स्त्रीभिः स्रग्वीगीत  
वाद्यैर्विशेषतः (व्यवहारतत्त्वे) सौम्यायने श्रावणमार्गपौषे जन्मर्क्षलग्नोपचयोद  
येषु ॥ वामंगतेर्के गृहवास्तुपूजां कृत्वा विशेषेण भद्राशुद्धम् (वास्तुशास्त्रे) ल  
ग्नान् प्रागादितो दिसु द्वौ द्वौ राशीनियोजयेत् ॥ एकमेकं न्यसेत्कोणोत्तरं वामं वि  
चिंतयेत् (वशिष्ठः) चंद्रजार्जसितवासरेषु च श्रीकरं सुतमहार्थलाभदं ॥ सूर्यसूनु  
दिवसे स्थिरप्रदं किंतु चौरभयमत्र निर्दिशेत् (रत्नकोशे) पुण्ये धनिष्ठा मृगवास्तुषु  
स्वायं भुवर्क्षेत्रेषु चोत्तरासु ॥ अक्षीणा चंद्रेशुभदेनृपस्य तिथावरित्ते च गृहप्रवे  
शः (नारदः) प्रवेशो मध्यमे ज्ञेयः सौम्यकार्तिकमासयोः ॥ माघफाल्गुनवैशा  
खज्येष्ठमासेषु शोभनः ॥ अक्रपाटमनाच्छृणुमदत्तबलिभोजनं ॥ गृहं न प्रविशेद्द्वी  
मानापदामाकरोहितम् ॥ ज्येष्ठः सुद्रगृहपरः (वृद्धगार्ग्यः) भानोश्च भौमस्य वि  
वाहवारौ शुलादियोगानशुभाच्च वापि ॥ रिक्तातिथिप्रचापि मृदुध्रुवर्क्षे सौम्या  
यने च प्रविशेद्गृहाणा (रत्नमालायासः) त्वाष्ट्रमित्रशशिपुटयदैवतान्यामनंति



मुनयोमृदुन्यथ ॥ मैत्रगेहरतिभूषणांबरोदगीतमंगलविधानमेषुच ॥ रोहिण्यु  
 त्तरात्रयंचध्रुवार्णा । प्रवेशप्रववास्तुपूजांकृत्वाकार्यः । जीर्णोद्वारेतथोद्यानेत  
 थागृहनिवेशने ॥ नवप्रसादभवनेप्रासादपरिवर्तने ॥ द्वाराभिवर्तनेतद्वत्प्रासादेषु  
 गृहेषुच ॥ वास्तूपसमनंकुर्यात्पूर्वमेवविचक्षणाइतिमात्स्योक्तेः (तत्रैव) कृत्वाग्रहो  
 द्विजवरानथपूर्णाकुंभं दध्यक्षताम्रदलपुष्पफलोपशोभम् ॥ दत्वाहिरण्यवसनानित  
 थाद्विजेभ्योमांगल्यशांतिनिलयंस्वगृहंविशेच ॥ गृह्योक्तहोमविधिनावलिकर्म  
 कुर्यात्प्रासादवास्तुशमनेचविधिर्युक्तः ॥ संतर्पयेद्द्विजवरानथभक्ष्यभोज्यैः शु  
 क्लांबरः स्वभवनंप्रविशेत्सुरूपं (अथकलिवर्ज्यानिबृहन्नारदीये) समुद्रयातुः स्त्री  
 कारः कसंडलुविधारणां ॥ द्विजानामसवर्गासुकन्यासूपयमस्तथा ॥ देवराच्च  
 मुतोत्पत्तिर्मधुपर्कपशोर्वधः ॥ मांसदानंतथाश्राद्धेवानप्रस्थाश्रमस्तथा ॥ दत्ता  
 क्षतायाः कन्यायाः पुनर्दानंपरस्यच ॥ दीर्घकालंब्रह्मचर्यंनरमेधाश्चमेधकौ ॥ रहः  
 प्रस्थानगमनंगोमेधश्चतथासखः ॥ इमानधर्मानिकलियुगेवर्ज्यानाहुर्मनीषिणाः  
 कमराडलुः । सोदकंचकसंडलुमित्युक्तः । मृन्मयोवा । दत्ताऊडा । ऊढायाः  
 पुनरुद्धाहंज्येष्ठांशंगोवधस्तथा ॥ कलौपंचनकुर्वीत श्राद्धजायांकसंडलुमिति  
 हेमाद्रौवचनात् । ऊढायाः पुरपुरुषसंयोगान्मृतेदेयेतिकेचनेत्यादिभिर्विवाह्यतो  
 क्ता (हेमाद्रौब्राह्मे) गोत्रान्मातुः सपिंडाच्चविवाहोगोवधस्तथा ॥ नराश्वमेधोम  
 द्यंचकलौवर्ज्याद्विजातिभिः ॥ गोत्राद्गोत्रजायाः पितृवसुः मातृसपिंडात्तमातु  
 लात्तत्कन्यायाविवाहः कलौनकार्यः । तेनयानितद्विधायकानितानियुगांतर  
 विषयाणि (तथाव्यासः) तृतीयांमातृतः कन्यांतृतीयांपितृतस्तथा ॥ शुक्तेन  
 चोद्धिष्यंतिविप्राः पापविसोहिताः ॥ इति कलौतन्निंदामाहभातृतस्तृतीयां  
 मातुलकन्यामित्यर्थः । उक्तंचैतत्प्राक् । मद्यंस्त्रीभ्यश्चसुरामाचाममित्यादिना  
 विहितसपिवर्ज्यं ( हेमाद्रौआदित्यपुराणो ) विधवायांप्रजोत्पत्तौदेवरस्यनियो  
 जनं ॥ बालायाः क्षतयोन्यास्तुवरेणान्येनसंस्कृतिः ॥ कन्यानामसवर्गानांविवा  
 हश्चद्विजन्मभिः ॥ आततायिद्विजाग्याणां धर्मयुद्धेनहिंसनम् ॥ द्विजस्याध्वौ  
 तुनीयातुः शोधितस्यापिसंग्रहः ॥ सप्तदीक्षाचसर्देयांकसंडलुविधारणाम् ॥ महाप्र

स्थानगमनंगोसंज्ञाप्तेश्चगोसवे ॥ सौत्रामण्यामपिसुराग्रहणस्यचसंग्रहः ॥ अ  
ग्निहोत्र हवन्याश्चलेहोलीढापरिग्रहः ॥ वृत्तस्वाध्यायसापेक्ष्यमद्यसंकोचनंत  
या ॥ प्रायश्चित्तविधानंचविप्राणामरणांतिकं ॥ संसर्गदोषस्तेयान्यमहापा  
तकानिठकृतिः ॥ संसर्गदोषस्तत्संसर्गीचपंचमइत्युक्तः । स्तेयंचतदन्यानिमहापा  
तकानि । ब्रह्महत्यासुरापशुरुतल्पानित्रीणा । तेषां कामकृतानांमरणांतिकं  
प्रायश्चित्तंविप्राणांकलौनेत्यर्थः । मरणांतिकेहिजातिवधनिमित्तद्वादशाब्दहि  
गुणाब्रह्मवधनिमित्तंचद्विगुणांभवति । तच्चतुर्थेनास्तिनिठकृतिरितिनिश्चिद्वत् । न  
चात्महत्याविधिनातद्विवाधः । तेनह्यात्महत्यानिमित्तस्येवबाधोनजातिवधनिमि  
त्तस्याभिन्नविषयत्वात् । संसर्गिणास्तु कामतोपिब्रतस्थेवोक्तेर्नमरणांतिकम् ।  
नापिस्तथेतन्नराज्ञोवधकृत्त्वात् । तेनतयोर्मरणांतिकाभावात् । तयोरेवनिठकृ  
तिर्नान्येषांत्रयाणां युगांतरेतुकलौनियेधवलात्प्रवृत्तिः । सतद्विप्रपरंनसत्रिया  
देः । तदुक्तंविप्राणामरणांतिकमिति । विशेषोस्मत्कृतेप्रायश्चित्तरत्नेज्ञेयः ।  
वरार्तिथिपितृभ्यश्चपशपाकरणाक्रिया ॥ दत्तौरसेतरेषांतुपुत्रत्वेनपरिग्रहः ॥ स  
वर्णान्यांगनादुष्टैः संसर्गः शोधितैरपि ॥ अयोनौसंग्रहेवृत्तेपरित्यागो गुरुस्त्रियः ॥  
परोद्देशान्यसंत्यागउद्दिष्टस्यापिबर्जनम् ॥ प्रतिमाभ्यर्चनार्थायसंकल्पश्चसधर्म  
कः ॥ अस्थिसंचयनादूर्ध्वसंगस्यर्शनमेवच ॥ शामित्रंचैवविप्राणांसोमविक्रयणां  
तथा ॥ षड्भक्तानशनेचान्नहरणांहीनकर्मणाः (साधवीयेपृथ्वीचंद्रोदयेच) शूद्रेषु  
दासगोपालकुलमित्रार्धमीरिणां ॥ भोज्यान्नतागृहस्थस्यतीर्थसेवातिदूरतः ॥  
शिष्यस्यगुरुदारेषुगुरुवदृत्तिशीलता । आपदृत्तिर्द्विजाग्याणामश्वस्तनिकृता  
तथा ॥ प्रजार्थतुद्विजाग्याणांप्रजारणापरिग्रहः ॥ ब्राह्मणानांप्रवासित्वंमुखाग्नि  
धमनक्रिया ॥ बलात्कारादिदुष्टस्त्रीसंग्रहेविधिचोदितः ॥ यतेप्रचसर्ववर्षेषुभिक्षा  
चर्याविधानतः ॥ नवोदकेदशाहंचदक्षिणागुरुचोदिता ॥ ब्राह्मणादियुशूद्रस्यप  
चनादिक्रियापिच ॥ भृगवाग्निघतनैश्चैववृद्धादिमरणोतथा ॥ गोहृत्तिशिष्टेषु  
सिशिष्टैराचमनक्रिया ॥ पितापुत्रविरोधेषुसाक्षिणांदंडकल्पनं ॥ यतेःसायंगृ  
हत्वंचसूरिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ सतानिलोकगुप्यर्थकलेरादौमहात्मभिः ॥ नि



वर्तितानि विद्वद्भिर्व्यवस्थापूर्वकं बुधैः ॥ सुराग्रहस्य तत्कर्तुः संग्रहो व्यवहारकः ॥  
 न च मद्यं चेति सामान्ये न निर्णयद्वयस्याऽनेनोपसंहार इति वाच्यम् । निर्णयद्वयस्य नि  
 वृत्तिमात्रफलत्वेन विशेषानपेक्षत्वात् । न हि स्यादित्यस्य न ब्राह्मणां हन्यादित्यने  
 नोपसंहारे हिंसां तरस्यादोषत्वापत्तेः च निरूपितं चेत्तद्वेमाद्रिणाऽन्यत्रेत्युपरम्य  
 ते । सुराग्रहस्योद्देश्यस्य सौत्रामणिविशेषणाविवक्षया वाजपेयेऽपि निषेधः । सौत्रा  
 मण्यां तु पयोग्रहावास्त्युरित्यापस्तम्बोक्तेर्वैकल्पिकपयोग्रहैरप्यधिकारः । वाज  
 पेये तु तत्प्रप्राप्तौ मानाभावात्सोमसुरयोः सहत्यागेनांशे सुराद्रव्यत्वात्तत्र प्रत्यक्षतया  
 यागनामत्वेन तां विना संज्ञायोगात्कलौ नाधिकार इति युक्तं प्रतीतिः । त्रिकांडमं  
 इति दिति खनंतु निर्मूलमनाकरं च । वृत्तेति एकाहाद्व्रह्मणाः शुद्धोद्योगिनवेदस  
 मन्वित इति उक्तः । आद्यस्याशौचस्य संकोचो न तस्य निवृत्तिर्दुष्टाभृग्वग्निपत  
 नादुत्ते इत्युक्तस्य प्रायश्चित्तस्य विधानं उपदेशः । कलौ कर्तव्यं लिप्यते इति व्याप्ते  
 कतेः । पतितसंसर्गो दोषसत्त्वेऽपि पातित्यनेत्यर्थः । अन्यथा संसर्गः शोधितैरपीति  
 विरोधापत्तेः । स्तेयभिन्ने महापापे रहस्यकृते प्रायश्चित्तनेत्यर्थः । सवर्गान्या  
 असवर्गास्त्रिधा विस्तृत्यादुष्टेऽत्र योनौ शिष्टादौ च तत्तत्परित्याज्याः शिष्टयगा  
 गुरुगात्रयेत्युक्तस्त्यागः । परोद्देशेन ब्राह्मणाद्यर्थ आत्मस्त्यागः । यद्वा परोद्देशा  
 त्महत्यागो गोदानं मनसा पात्रमुद्दिश्येत्युक्तं । उद्दिष्टस्य तत्तत्सर्वजनं प्रति ग्रहसम  
 र्थोऽपीत्युक्तं । वेतनग्रहणं प्रतिमापूजा । स्वाशौचकालाद्विज्ञेयं स्पर्शनं तु त्रिभागत  
 इत्युक्तस्पर्शः । यद्विति । उपोषितस्य हंस्थित्वाधान्यमब्राह्मणाद्धरेदित्युक्तम  
 न्नचौर्यम् । आपदि क्षात्रादिवृत्तिः । मुखेनैव धमेदग्निमित्युक्तं धमनम् । दशाहेनै  
 व शुद्धोत्तममिष्टं च न वोदकमित्युक्तो दशाहः । गुरवे तु वरं दत्त्वेत्युक्त्वादक्षिणाशू  
 द्रेषु दासगोपालेतु । कंदूषकं स्नेहपक्वं यक्षदुग्धेन प्राचितम् ॥ सतान्यशूद्रान्यभुजो  
 भोज्यानि मनुरब्रवीदित्यपरार्कं सुसंतुक्ताशूद्रस्य पाकक्रिया ॥ पिता पुत्रविवादे तु  
 साक्षिणां त्रिपणोदम इत्युक्तः । सायंगृहत्वं विधूमे सन्नमुसले इत्युक्तं ( पृथ्वीचंद्र  
 यौतु ) अतंति वसुधां विप्राः पृथ्वीदर्शनाय च । अनिकेता ह्यनाहारयत्र सायंगृहा  
 स्तुते इति विष्णुपुराणोक्तो निर्णयद्वयः । तेन ज्ञातशीलपांथादेः श्राद्धादौ विनियोगो

नकार्यः । कलावित्यर्थउक्तः । सतानिवर्जनीत्यर्थः ( निगमः ) अग्निहोत्रंगवा  
लंबंसंन्यासंपलपैतृकं ॥ देवराचमुतोत्पत्तिः कलौपंचविर्वर्जयेत् ॥ अग्निहोत्रंत  
दर्शसमाधानं । सतच्चसर्वाधानपरं । अर्धाधानंस्मृतौश्रौतस्मात्तान्न्योस्तुपृथक्कृतिः ॥  
सर्वाधानंतयोरैककृतिः पूर्वयुगाश्रयेतिलौगासिखचनादितिस्मृतिचंद्रिकायास ॥  
सतेनचत्वार्यब्दसहस्राणिचत्वार्यब्दशतानिच ॥ कलेर्यदागमिष्यतितदात्रेता  
परिग्रहः ॥ संन्यासप्रचनकर्तव्योवाह्यगोनविजानतेतिव्यासवचनंव्याख्यातस ॥  
(सर्वाधानेपि विशेषमाह देवलः) यावद्वर्णाविभागोस्तियावद्देदः प्रवर्तते ॥ संन्या  
संचाग्निहोत्रंचतावत्कुर्यात्कलौयुगेइति ॥ अत्रपूर्वयुगाश्रितेति लौगासिखाकोप  
र्वयुगानि कृतादीदित्येकोऽर्थः । अन्येत्युगस्य पूर्वकलेः पूर्वाभागाः । सचत्वार्यब्दे  
सहस्राणीतिपूर्वाक्तवाक्याच्चतुश्चत्वारिंशच्छतवर्षाविच्छन्नः ॥ तस्मिन्भागेस  
र्वाधानंकार्यम् । तदुत्तरेतुयावद्वर्णाविभागोस्तीतिवाक्यात्तवर्णा विभागपर्यंतमर्धा  
धानमित्याहुः । संन्यासस्त्रिदंडः ॥

इति श्रीमन्नारायणभट्टसूरिसूनुरामकृष्णभट्टात्मजदिनकरभट्टानृजकमलाकरभट्टकृत  
निर्णयसिन्धौतृतीयपरिच्छेदेकलिवर्ज्यानि समाप्तानि ॥

## अथतृतीयपरिच्छेदेश्राद्धप्र०प्रारभ्यते

अथश्राद्धनिर्णयः ॥ नानानिबंधवैमत्यभ्रांतचित्तोद्बिधीर्यया ॥ कमलाकर  
संज्ञेनक्रियतेश्राद्धनिर्णयः (तत्स्वरूपमाहपृथ्वीचंद्रोदयेमरीचिः) प्रेतंपितृंश्च  
निर्दिश्यभोज्यंयत्प्रियमात्मनः ॥ श्रद्धयादीयतेयत्रतच्छ्राद्धंपरिकीर्तितम् ॥  
ब्राह्मणास्वीकारांतप्रचतुर्थ्यं तपदोपनीतपिशाद्युद्देश्यकस्त्यागःश्राद्धमित्यर्थः ।  
तत्रयद्यपिहोमपिंडभोजनानि प्रधानमितिहेमाद्रिः । होमश्चपिंडदानंचतथा



ब्राह्मणभोजनं ॥ आह्नशब्दाभिधेयं स्यादेकस्मिन्नोपचारिकमिति ॥ श्रीधरप्रच ।  
 तथापि क्वचिद्विशेषं वक्ष्यामः । निमित्तभेदे भोजनस्य पिंडानां वानियेधो न प्राधा-  
 न्यं विरुणाद्धि । असौमयाजिनो दधिपयोयागवत् (यच्च शूलपाणिः) नित्य आह्न  
 सदैवं स्यादध्वं पिंडविवर्जितमिति ॥ हरीतीयेनित्य आह्नमाघादौ पिंडनियेधो  
 स्ति न च प्राप्तिविनासः । न चादेशं विना प्राप्तिः । न चांगत्वेन विना तिदेशः । प्रधा-  
 नस्यानतिदेशात् । सप्तमे उपकारकत्वेनातिदेशोक्तेः । तेन भोजनप्रधानं पिंडो गम ।  
 पिंडदानमात्रविधिस्त्वं गमतात् कर्मांतरमेव प्रकर्णांतरन्यायादिति । तन्न । जा-  
 त आह्नेन दद्यात् पक्वान्नं ब्राह्मणोऽथवापि ॥ न पक्वं भोजयेद्विप्रान्सच्छूद्रोऽपि कदाचने-  
 त्याद्यैर्जात आह्न शूद्र आह्नादौ भोजनस्य नियेधेनांगत्वापत्तेः । न तौ पशौ करोतीति  
 वदुपजीव्यविरोधेन विकल्पापत्तेश्च । तेन आह्नशब्दाभिधेयत्वेनोभयप्राप्तौ नि-  
 येधः । पर्युदासोवादीक्षितो न ददाति न जुहोति नासौमयाजीमन्नयेदिति तत्त्वम् । ध-  
 र्मप्रदीपेऽपि । यजुषां पिंडदानं तु बह्वचानां द्विजार्चनम् ॥ आह्नशब्दाभिधेयं स्यादु-  
 भयं सामवेदिना ॥ तच्च पितृ नृयजेत पितृभ्यो दद्यादित्युभयप्रयोगदर्शनाद्यागदा-  
 नोभयात्मकं । पितरे देवता इति पित्रुद्देश्यकत्वाद्यागत्वं विप्रापेक्षया च दानत्वमि-  
 त्यविरुद्धम् । एतेन नायं यागः । देवतोद्देशेन त्यागो यागः यागोद्देशेन त्यागदेवतेत्या-  
 त्माश्रयादिति गौडमतमपास्तं वैधशब्द विशेषोद्देश्यत्वस्य तस्योदमित्यस्त्वत्वारो-  
 पप्रतियोगित्वस्य वा देवतात्वात् (तत्रैव ह्युच्यते) आह्नात्परतरं नान्यच्छूयस्कर-  
 मुदाहृतम् (आदित्यपुराणो) न संति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः ॥ आह्नं न कु-  
 रुते तत्र तस्य रक्तं पर्वतिते (तद्धेदानाह विश्वामित्रः) नित्येनैमित्तिकं काम्यं वृद्धि-  
 आह्नसं पिंडनम् ॥ पार्वणां चेति विज्ञेयं गोष्ठ्यां शुद्धार्थमष्टकं ॥ कर्मांगं न वमं प्रोक्तं  
 दैविकं दशमं स्मृतम् ॥ यात्रास्वेकादशं प्रोक्तं पुष्ट्यर्थं द्वादशं स्मृतमिति (संयां ल-  
 क्षणां निभविष्ये) अहन्यहं नित्यच्छादं तन्नित्यमितिकीर्तितं ॥ वैश्वदेवविहीनं त-  
 दशक्तावुदकेन तु ॥ एकोद्विंशं तु यच्छादं तन्नैमित्तिकमुच्यते ॥ तदप्यदैवं कर्तव्य-  
 मयुग्मान् भोजयेद्द्विजान् ॥ कामाय विहितं काम्यमभिप्रेतार्थसिद्धये ॥ वृद्धो य-  
 त्क्रियते आह्नं वृद्धि आह्नं तदुच्यते ॥ गन्धोदकतिलैर्युक्तं कुर्यात्तृपात्रचतुष्टयं ॥ अ-

धर्याथीपितृपात्रेयुप्रेतपात्रंप्रसेचयेत् ॥ येसमानाश्चित्ताभ्यामेतदज्ञेयंसपिराडनम  
नित्येनतुल्यशेषस्यादेकोद्विष्टस्त्रियात्रापि ॥ एतदुभयमेवस्त्रियः । तेनस्त्रीकर्तृकं  
स्त्रीसंप्रदानकंचेत्युभयनियमइति कल्पतरुः ॥ अमावास्यायांयत्क्रियतेतत्पा  
र्वणामितिस्मृतम् । क्रियतेवापर्वणायत्तत्पार्वणामितिस्थितिः (अत्रपर्व) चतुर्द  
श्यसमीचैवअमावास्याचपौर्णिमा ॥ पर्वणयेतानिराजेन्द्ररविसंक्रमणान्तथेति॥  
विष्णुपुराणोक्तंसंक्रांत्यादिगोसृष्ट्यांयत्क्रियतेश्राद्धंगोष्ठीश्राद्धंतदुच्यते ॥ बहू  
नांविदुषांसंपत्सुस्वार्थपितृतृप्तये ॥ क्रियतेशुद्धयेयत्तुब्राह्मणानांतुभोजनम् ॥  
शुद्ध्यर्थमितितत्प्रोक्तंवैनतेयमनीषिभिः ॥ निवेककालेसोमेचसीमन्तोन्नयने  
तथा ॥ ज्ञेयंपुंसवनेचैवश्राद्धंकर्मांगमेवच ॥ देवानुद्दिश्ययच्छ्राद्धंतत्तुदैविकमुच्य  
ते ॥ गच्छन्देशांतरंयस्तुश्राद्धंकुर्यात्तुसर्पिषा ॥ यावार्थमितितत्प्रोक्तंप्रवेशे  
चनसंशयः ॥ शरीरोपचयेश्राद्धमर्थोपचयसर्वच ॥ पुष्ट्यर्थमेतद्विज्ञेयमौपचा  
रिकमुच्यते ॥ गोसृष्ट्यांश्राद्धकर्तृसमुदायेसंभूयसामग्रीसंपादनेनश्राद्धमित्यर्थः ।  
युगपत्तीर्थादिप्राप्तौविदुषां श्राद्धसंपदासुस्वार्थभिन्नपाकाशक्तौबहुपितृकश्राद्ध  
मेकःकुर्यादितिकल्पतरुः । शङ्खधरश्चशुद्धिश्राद्धंप्रायश्चित्तांगमितिमैथि  
लाः । अत्रपार्वणौकोद्विष्टवृद्धिसपिराडीकरणात्मकंचतुर्विधमेवमुख्यमतस्यैवा  
यंप्रपंचः (अथश्राद्धदेशाः । मनुः) शुचिदेशंविविकतंतुगोमयेनोपलेपयेत् ॥  
दक्षिणाप्रवरांचैवप्रयत्नेनोपपादयेत् (पृथ्वीचन्द्रोदयेविष्णुधर्मे) दक्षिणाप्रवरो  
देशेतीर्थादौचगृहेपिवा ॥ भूमंस्कारादिसंयुक्तेश्राद्धंकुर्यात्प्रयत्नतः(तत्रैवप्रभास  
खण्डे) तीर्थादिसृष्टगुणंपुरायस्त्रगृहेददतःशुभे (भारते) तस्यदेशाःकुरुक्षेत्रगयाग  
ङ्गासरस्वती ॥ प्रभासंपुठकरंचेतितेयुश्राद्धमहाफलं (स्कांदे) तुलसीकाननछा  
यायत्रयत्रभवेद्द्विज ॥ तत्रश्राद्धंप्रदातव्यंपितृणांतृप्तिहेतवे (साधवीयेश्राद्धोप  
क्रमेव्यासः) महेदधौप्रयागेचकाश्यांचकुरुजांगले (शङ्खः) गङ्गायमुनयोस्ती  
रेपयोष्यायसरकंटके ॥ नर्मदाबाहुदातीरेभृगुलिंगोहिमालये ॥ गङ्गाद्वारेप्रयागे  
चनैमियेपुठकरेतथा ॥ सन्निहत्यांगयायांचदत्तमक्षयतांब्रजेत् ॥ अपिजायेत्सो  
स्माकंकुलेकश्चिन्नरोत्तमः ॥ गयाशीर्षवटेश्राद्धेनोदद्यात्समार्हितः ॥ स



घट्यावहवः पुत्रायद्येकोपि गायत्रिजेत ॥ यजेतवाञ्चमेधेन नीलं वातृ यमुस्तृजेत (आ  
 दित्यपुराणे) पंचक्रोशं गायत्रीं क्रोशमेकं गायत्रिः ॥ महानद्याः पश्चिचमे  
 नयावद्गृध्रेऽथ रोगिरिः ॥ उत्तरे ब्रह्मयूपस्य यावद्दक्षिणामानसम् ॥ सतद्गयाशि  
 रो नाम त्रियुलोकेषु विश्रुतमिति (शूलपाशावृहस्पतिः) गङ्गायां धर्मपृष्ठे च सर  
 सि ब्रह्मणा स्तथा ॥ गयाशीर्षे सयवते पितृणां दत्तमक्षयं ॥ धर्मररायं धर्मपृ  
 ष्ठे नु कारगयमेव च ॥ दुष्टैतानि पितृन् प्रचार्यन् वंशान् विंशतिमुद्धरेत् (त्रिस्थली  
 सेतौ वायवीये) शमीपत्रप्रमाणेन पिण्डदद्याद्गयाशिरे ॥ उद्धरेत्सप्तगोत्राणां  
 कुलमेकोत्तरं शतं (सप्तगोत्राणां) पितामाता च भार्या च भगिनी दुहिता तथा ॥  
 पितृमातृष्वसाचैव सप्तगोत्राणां वै विदुरिति ॥ सप्तगोत्राणामेकोत्तरशतं कुलं पु  
 रुषा इत्यर्थः (ते चोक्तास्तत्रैव) तत्त्वानि विंशतिनृपाद्वादशैकादशादशाः ॥ अष्टाविति  
 च गोत्राणां कुलमेकोत्तरं शतं (तत्त्वानि चतुर्विंशतिः) ते च द्वादशपूर्वादशादशपरः ।  
 सवमग्रेऽपि (प्रयोगपारिजाते पात्रे) शालग्राममयी मुद्रा संस्थिता यत्र कुत्रचित् ॥  
 वाराणास्यां यत्राधिकं समन्ताद्योजनत्रयं (तथा) यत्किंचित्पैतृ कंकुर्यात्स पिण्डं  
 वा तदन्तिके ॥ विष्णुलोकं सगच्छेत्तु लभते शाश्वतं पदम् (तत्रैव वाराहे) चक्रां क  
 स्य तु सांनिध्यं यत्कर्म क्रियते नरैः ॥ स्नानं दानं तपः श्राद्धं सर्वमक्षयतां व्रजेत् (अथ  
 नियिद्धदेशः पृथ्वी चन्द्रोदये स्कान्दे) विशंकोर्वर्जयेद्देशं सर्वद्वादशयोजनं ॥  
 उत्तरेण महानद्या दक्षिणेन तु कीटकान् ॥ देशस्त्रैशंकोनाम श्राद्धकर्मणां वर्जि  
 तः (वायवीये) प्रनष्टाश्च मधमाश्च देशावर्ज्याः प्रयत्नतः (यमः) खसं कृमि  
 हतं क्लृप्तं संकीर्णानिष्टगन्धिकं ॥ देशं त्वनिष्टशब्दं च वर्जयेच्छ्राद्धकर्मणां  
 (तत्रैव शंखः) गोगजाश्वादिजुष्टेषु हविर्मायां तथा भुवि ॥ न कुर्याच्छ्राद्धमेतेषु  
 पारकासु च भूमिषु (यमः) परकीये प्रदेशेषु पितृणां निर्वपेत्तु यः ॥ तद्धूमि  
 स्वाभिपितृभिः श्राद्धकर्मविहन्यते (ब्राह्मभारतयोरपि) परकीयगृहे यस्तु  
 स्नानपितृवत्तर्पयेद्यदि ॥ तद्धूमिस्त्वामिनस्तस्य हरन्ति पितरो बलात् ॥ अग्रभागं  
 ततस्तेभ्यो दद्यान्मूलं च जीवितम् ॥ श्राद्धार्हाणामग्रभागश्राद्धं तदनर्हाणां शूद्राणां  
 तु मूल्यमिति केचित् । योऽङ्गशीपिण्डे बान्धवानामपिण्डोक्तेः । ये बान्धवा बान्धवा

वेत्यादितर्पणावाधापत्तेश्च । नामगोत्रपूर्वश्राद्धनिषेधोनान्यत्रेतिगौडाः । विप्रा  
सुतस्यशूद्रापुत्रश्राद्धनिषेधोनान्यत्र । अन्नदानचान्नत्यागात्पूर्वकार्यमितिमैथि  
लाः । तन्न । अग्रभागस्यश्राद्धपरत्वेमानाभावात् । अन्नदानेचनिषेधाभावात् ॥  
त्यागात्पूर्वकरणेनंगेनव्यवधानापत्तेः । अंगत्वेचमानाभावात् ( इदंचस्वाम्यनु  
ज्ञाभावेतेदुक्ततत्रैवब्राह्मे ) स्वनुलिप्तेषुगेहेषुस्वेष्टवनुज्ञापितेषुच ॥ श्राद्धमेतेषुदात  
व्यंवर्ज्यमेतेषुनोच्यते ॥ किरातेषुकालिंशेषुकौंकशेषुखसेष्टवपि ॥ सिन्धोरुत्तर  
कुलेषुनर्मदायाश्चदक्षिणे ॥ पूर्वगाकरतोयायानदेयंश्राद्धमुच्यते ॥ इदंकास्य  
विषयं । अन्यथातत्रत्यानांसर्वश्राद्धाकरणापत्तेः ( नर्मदादक्षिणोपवादःस्कांदे )  
संहस्यचोद्भवोयत्र यत्रगोदावरीनदी ॥ पृथिव्यासंपिक्तस्नायांसप्रदेशोतिपा  
वनः ( परकीयत्वापवादश्चादित्यपुराणे ) अस्वीपर्वताःपुराया नदीतीराणि  
यानिच ॥ सर्वाण्यस्वामिकान्याहुर्नहितेषुपरिश्रहः ॥ वनानिगिरयो नद्यस्ती  
र्थान्यायतनानिच ॥ देवत्वात्ताप्रचर्तप्रचनस्वाम्यन्तेषुविद्यते ( स्मृतिसारे ) नै  
कवासानचद्वीपेनांतरिक्षेकदाचन ॥ श्रुतिस्मृत्युदितंकर्मनकुर्वाद्दशुचिःकचित् ॥  
( दिवोदासीये ) स्लेच्छदेशेतथारात्रौसंध्यायाविप्रवर्जितः ॥ नश्राद्धमाचरेद्विहा  
न्नचाकाशेकथंचन ( अथश्राद्धकालाः ) तेचसंक्रांतियुगादिमहालयादयः ।  
प्रायेणापूर्वपरिच्छेदद्वयेउक्तागव । केचित्तुच्यन्ते ( पृथ्वीचंद्रोदयेवृद्धपराशरः )  
श्राद्धवृद्धावचन्द्रेभ क्वायाग्रहणसंक्रमे ॥ नवोदकेनवान्नेचनवच्छन्नेतथागृहे ॥  
नवैस्सवेयुंचेहतेपितरोहिमघास्त्वपि ॥ पितरःस्पृहयन्त्यन्नमद्युक्तालुमघालुचेति ॥  
शातातपपाठः । नवोदकेनवकपवाप्यादावितिकेचित् । वर्योपक्रमेआर्द्राप्रवेश  
इतिगौडाः ( नवान्नश्राद्धेविशेषोज्योतिषे ) ज्येष्ठाशेथार्धगोसूर्यमृगनेत्रानिशा  
त्मके ॥ नवान्नभोजनश्राद्धंजन्मचन्द्रतितथौनच ॥ आप्लेष्टाह्वातिकाज्येष्ठामूला  
जपदगेषुच ॥ गुरुभौमदिनेरिक्तोतितथौनाद्यान्नवोदनं ( तत्रैव ) दृष्टिचक्रेशुक्त  
पक्षेतुत्त्वान्नंशस्यतेबुधैः ॥ अतःकृष्णापक्षेनेतिगौडाः ( मैथिलास्तु ) अह्नातग्रय  
णांचैवधान्यजातंनरोत्तमइतिवाराहोक्तेः । प्रतिधान्यंश्राद्धमाहुः । तन्न । जात  
प्रदस्यश्राद्धयोग्यसमूहपरत्वात् ( हेमाद्रौजातकरायः ) ग्रहोपरागेचसुतेचजाते



पिङ्गेगायामयनद्वयेच ॥ नित्यं च शंखे च तथैव पद्मे दत्तं भवेच्चिठकसहस्रतुल्य  
 म् ॥ शंखं प्राहुरमावास्यां क्षीराचंद्रां द्विजोत्तमाः ॥ अष्टकासु भवेत्पञ्च तत्र दत्तन्त  
 याक्षयम् ( तथैव शंखः ) यदा विष्टव्यतीपातो भानुवारस्तथैव च ॥ पञ्चकं नाम  
 तत्प्रोक्तमयनाच्चतुर्गुणम् ( याज्ञवल्क्यः ) अमावास्यास्य कावृद्धिः कृष्णापक्षोऽय  
 नद्वयं ॥ द्वयं ब्राह्मणसम्पत्तिर्विद्युवत्सूर्यसंक्रमः ॥ व्यतीपातो गजच्छायाग्रहरां  
 चन्द्रसूर्ययोः ॥ आर्द्धप्रतिरुचिश्चैव आर्द्धकालाः प्रकीर्तिताः ॥ कृष्णापक्षः सर्वो  
 पि । शाक्रेणापरपक्षं नातिक्रमेत् । मासि मासि वाशनमिति श्रुतेः । ऊर्ध्वं वाचतु  
 र्य्याग्रदहः सम्पद्यते ऋते चतुर्दशीमिति कात्यायनोक्तेः । मासि मासि कार्यमपर  
 पक्षस्यापराहः । श्रेयानित्यापस्तंबोक्तेषु च वीप्सया सर्वकृष्णापक्षेऽनित्यम् । ते  
 नोपसंहारान्महालयपरत्वं परास्तं । अवप्रत्यहं पंचम्यादियदहः संपत्तिर्वैतित्रयः  
 पक्षाः । यदैकदिने आर्द्धं तदा दार्शपृथगेव । याज्ञवल्क्येनामावास्यायाः पृथङ्निर्दे  
 शात् । सतेन कृष्णापक्षेऽयदहः संपद्यते । अमावास्यायां तु विशेषेणोतिनिगमोक्तेर्गु  
 णोपरपक्ष आर्द्धस्यामावास्येति शूलपाणिमतमप्यपास्तम् । अशक्तो दर्शो नापि  
 मासि आर्द्धसिद्धिरिति नारायणावृत्तिः निरग्निकानां कस्मिंश्चिद्दिने । आहिता  
 ग्नेस्तु दर्शोऽयम् । न दर्शो न विना आर्द्धमाहिताग्नेर्द्विजन्मन इति मनवक्तेः ( सर्वकृष्णाप  
 क्षाशक्तौ मात्स्ये ) अनेन विधिना आर्द्धं विरुद्धस्येह निर्वपेत् ॥ कन्याकं भवत्यस्ये  
 र्ककृष्णापक्षे च सर्वदा ( कर्कोऽपि ) आहिताग्नेः संवत्सरे त्रिः आर्द्धनियम इति देवलः ।  
 अनेन विधिना आर्द्धं कुर्यात्संवत्सरं सकृत् ॥ द्विश्चतुर्वयया आर्द्धमासे मासे दिने दि  
 ने ॥ कृष्णापक्षेऽपि महालयस्य श्रेयस्त्वम् । तच्चोक्तं प्राक् ( व्यतीपाते विशेषमाहि  
 हेमाद्रौ शंखः ) फलं लक्ष्मणमुत्पत्तौ भ्रमरो कोटिरुच्यते ॥ पतने शतकोट्यस्तु पाते  
 वैदत्तमक्षयम् ( ज्योतिःशास्त्रे ) द्वाविंशतिस्तथोत्पत्तौ भ्रमरो चैकविंशतिः ॥ प  
 तने दशनाड्यस्तु पतिते सप्तनाडिकाः ( अंत्यौ च द्वौ व्यतीपातौ प्रागुक्तौ हिमाद्रौ मा  
 र्कड्यः ) यदा च श्रोत्रियोभ्येति गृहं वेदविदग्निवित् ॥ तेनैकेनापि कर्तव्यं आर्द्धं च  
 विद्युवच्छुभं ॥ इदं चापि ङ्कार्यमिति हेमाद्रिः । सतज्जीवत्पितृको कुर्यात् । उ  
 द्वाहेऽप्युज्जनेऽपि ज्येष्ठ्यां सौमिके मखे ॥ तीर्थे ब्राह्मणा आयातेऽप्युज्जते जीवतः पितुरि

तिमैत्रायणीयपरिशिष्टोक्तेः । तिथिविशेषेफलविशेषो याज्ञवल्क्येनोक्तः ।  
 कन्यांकन्यावेदिनश्चपशून्त्रैस्तनुतानपि ॥ द्यूतं कृषिं च वारिण्यं द्विशफैकश  
 फांस्तथा ॥ ब्रह्मचर्यस्त्रिनः पुत्रान्स्वर्गारौप्येसकुप्यके ॥ ज्ञानिश्चैष्टयं सर्वका  
 मानाप्रोतिश्रद्धदः सदा ॥ प्रतिपत्प्रभृतिष्वेकां वर्जयित्वा चतुर्दशीं ॥ सताः कृष्णा प  
 क्षस्था एव । महालये तु फलभूमेति पृथ्वी चंद्रोदयः (पौर्णमास्यां हेमाद्रौ पितृमहः)  
 अमावास्या व्यतीपाते पौर्णमास्यां शुक्लपक्षे ॥ विद्वान्श्राद्धमकुर्वानो नरकं प्रति  
 पद्यते ॥ सतन्माध्यादिपरम । ब्रीहिपाके च कर्तव्यं यवपाके च प्रार्थिव ॥ पौर्ण  
 मासी तथा माघी श्रावणी च नृपोत्तम ॥ प्रौष्ठपद्या मतीतायां तथा कृष्णा त्रयोदशी ॥  
 सतांस्तु श्राद्धकालान्त्रैतित्यानाह प्रजापतिरिति ॥ विष्णुधर्मोक्तेः (विष्णुः) मा  
 घी प्रौष्ठपद्युर्ध्वं कृष्णा त्रयोदशीति । अवसाधी पौर्णमासीति कल्पतरुः ॥ श्रावणयू  
 र्ध्वमपि मघायोगसंभवात् त्रयोदशी विशेषणमिति गौडाः ( नक्षत्रेष्ठविध्या ज्ञव  
 ल्क्यः ) स्वर्गह्यपत्यभोजश्च शौर्यक्षेत्रं बलं तथा ॥ पुत्रान् च ह्यैष्टयं च सौभाग्यं समृद्धिं  
 मुख्यतां शुभम् ॥ प्रवृत्तचक्रतां वापि वारिण्यप्रभृतीनां पि ॥ अरोगित्वं यशो वीतशो  
 कतां परमां गतिं ॥ धनं वेदान् भिषक् सिद्धिं कुप्यं गामप्यजाविकं ॥ अश्वा नायुश्च वि  
 धिवद्यः श्राद्धं संप्रयच्छति ॥ कृत्तिकादिभररायंतं सकामान् प्राप्नुयादिमान् ॥ फ  
 लांतरायार्थमसहाभारते कौमदिर्ज्ञेयानि (साधवीये मरीचिः) कृत्तिकादियुक्तेषु  
 युश्राद्धेयत्वं फलमीरितम् ॥ विष्कंभादियुगे युतदेव फलमिष्यते (बृहस्पतिः) आ  
 रोग्यं चैव सौभाग्यं शत्रूणां च पराजितं ॥ सर्वाविकामान् प्रियां विद्यां धनमायुर्यथा क्र  
 मम् ॥ सूर्यादिदिवसे ठेवे तच्छ्राद्धं कृत्वा फलं ॥ बवादि करणो ठेवे तच्छ्राद्धं कृत्वा फलं  
 फलम् (अन्यानि च यस्मात् सर्वांश्चाद्यादीति प्रागुक्तानि मार्कण्डेयपुराणे) श्राद्धार्हद्र  
 व्यसंपत्तौ तथा दुःस्वप्नदर्शने ॥ जन्मर्से ग्रहपीडांश्चादं कुर्वीत चेच्छ्रद्धा (अथ श्राद्धा  
 धिकारिणः । चन्द्रिकायां सुमन्तुः) मातुः पितुः प्रकुर्वीत संस्थितस्यै रसः सुतः ॥ पै  
 तृमेधिकसंस्कारं मंत्रपूर्वकमाहृतः (तत्रैव हेमाद्रौ शंखः) पितुः पुत्रेणाकर्तव्या पिंड  
 दानेदकक्रिया ॥ पुत्राभावे तु पत्नी स्यात्तदभावे तु सोदरः ॥ अवयद्यपि पुत्रपदं सेत्वा  
 जादिहादशविधपुत्रपरम् (ते च द्वादशपुत्रा याज्ञवल्क्येनोक्ताः) औरसो धर्मपत्नी



जस्तत्समः पुत्रिकासुतः ॥ क्षेत्रजः क्षेत्रजातस्तु सगोत्रेणोत्तरेणावा ॥ गृहे प्रचक्षन् उत्प-  
 न्नो गृहजस्तु सुतः स्मृतः ॥ कानीनः कन्यकाजातो मातामहस्तुः स्मृतः ॥ असतायां  
 क्षतायां वा जातः पौनर्भवस्तथा ॥ दद्यान्मातापितावायं स पुत्रो दत्तको भवेत् ॥ क्रीत-  
 पञ्चताभ्यां विक्रीतः कृत्रिमः स्यात्स्वयं कृतः ॥ दत्तान्मातुः स्वयंदत्तो गर्भविन्नः सहाद-  
 जः ॥ उत्सृष्टो गृह्यते यस्तु सोऽपविद्धो भवेत्सुतः ॥ पिंडदोऽंशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः पर-  
 इति ॥ तथापि दत्तोरसे तरेषां तु पुत्रत्वेन परिग्रह इति हेमाद्रावादिपुराणौ कलावितरे-  
 षां पुत्रत्वनिषेधादौ रसदत्तकपरमेव ॥ यद्यपि पिंडदोऽंशहरश्चैषां पूर्वाभावे परः पर-  
 इति याज्ञवल्क्योक्तौ रसाभावे दत्तकप्राप्तिस्तथाप्यौ रसाभावे पौत्रैः तदभावे प्रपौत्र-  
 रसदभावे दत्तकादय इति ज्ञेयम् ॥ पुत्रेण लोकान् जयति पौत्रेणानन्त्यमश्नुते ॥ अथ  
 पुत्रस्य पौत्रेणावधनस्याभ्युक्तिविष्टमिति जीसतवाहनधृतवशिष्ठहासीतशंखलि-  
 खितोक्तेः ॥ लोकानन्त्यं दिवः प्राप्तिं पुत्रपौत्रप्रपौत्रकैरिति याज्ञवल्क्योक्तेः प्रचापुत्रः  
 पौत्रप्रचतत्पुत्रः पुत्रिकापुत्रस्रवच । पत्नीभ्राता च तज्जप्रचपितामातास्तु या तथा ॥  
 भगिनीभगिनेयप्रचसपिंडः सोदकस्तथा ॥ अस्मिन्निधाने पूर्वेषामुत्तरे पिंडदाः स्मृ-  
 ताः (स्मृतिसंग्रहे) प्रपौत्रानंतरं पुत्रिकापुत्रोक्तेस्तत्समत्वाच्च दत्तकस्य (यद्यपि बृह-  
 स्पतिना) पुत्रप्रचपुत्रिकापुत्रः स्वर्गप्राप्तिकरावुभौ ॥ रिक्थेऽपि पिंडदाने च समानी-  
 परि कीर्तिताविति पौत्रसाम्यमुक्तं (याज्ञवल्क्येन च) औरसोऽथर्मपत्नीजस्तत्समः  
 पुत्रिकासुत इति औरससाम्यम् (तथापि) लोके राजसमोऽसंजीत्यादौ किंचिन्न्यने-  
 समशब्दप्रयोगात् । गौणमुख्ययोः साम्ययोगाच्चस्तुत्यर्थतत् । न तु समविकल्पे इ-  
 ति श्रुतमव्ययम् । पुत्रः पौत्रः प्रपौत्रो वा भ्राता वा भ्रातृसंततिः ॥ सपिंडसंस्मृतिर्वापि  
 क्रियार्हानृपजायते ॥ तेषामभावे सर्वेषां समानोदकसंततिः ॥ मातृपक्षसपिंडेन  
 संबन्धो योजनेन वा ॥ कुलद्वयेऽपि चोच्छिन्ने स्त्रीभिः कार्या क्रियानृप ॥ तत्संघातग-  
 तैर्वापि तद्विकथात्कारयेन्नृपेति विष्णुपुराणाच्चेति । प्रपौत्रानंतरं दत्तकादय इति  
 पृथ्वीचंद्रमदनरत्नकालादशादयः । मदनपारिजातेऽप्येवम् (बोपदेवरुद्रधरादय-  
 स्तु) पुत्रेषु विद्यमानेषु नान्यवैकारयेत्स्वधामिति (सुसंतकौ) पितामहः पितुः प्र-  
 चचात्पंचत्वं यदि गच्छति ॥ पौत्रेणैकादशाहादिकर्तव्यं श्राद्धयोऽष्टशम् ॥ नैतत्पौ-

वेणाकर्तव्यं पुत्रवांश्चेत्पितामह इति ( कंदोरापरिशिष्टे च ) पुत्रशब्दस्य द्वादशवि  
धसुतपरत्वात्पूर्वाभावेपरः पर इत्यस्यानन्यपरत्वाच्च दत्तकाद्यभावे पुत्रादीनामप्य  
धिकार इत्याहुः ॥ तद्गौणमुख्ययोः साम्यायोगादत्तके सति पौत्रस्यांशहरत्वस्या  
प्यभावात्प्रतेः पुत्रपदस्यौरससावपरत्वाच्चिंत्यम् । अतस्वनियेधादुपनीतपौत्रसत्त्वे  
प्यनुपनीतपुत्रस्यैवाधिकारः ( औरसप्रचानुपनीतोपिकुर्यादित्याह पृथ्वीचं  
द्रोदये सुमंतुः ) आङ्कुर्यादवश्यंतु प्रसीतपितृको द्विजः ॥ व्रतस्थो वा व्रतस्थो वा स  
कावमवेद्यदि ( वृद्धमनुः ) कुर्यादनुपनीतोपि आङ्गमेको हि यः सुतः ॥ पितृयज्ञाहुतिं  
पाराणैर्जुहुयाद्ब्राह्मणस्य सः ॥ एको मुख्य औरस इत्यर्थः ( मनुः ) न ह्यस्मिन् युज्य  
ते कर्म किंचिदामौजिबन्धनात् । नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मस्वधानिनयनादुते ॥ ब्रह्म  
वेदः ( सुमंतुरपि ) नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मयावनमौजीनिबद्धयते । मंत्राननुपनीतो  
पि पठेदेवैक औरसः ॥ अयं मंत्रपाठः त्रिवर्यकृतचूडस्यैव ॥ अनुपनीतोपि कुर्वीत  
मंत्रवत् पितृमेधिकस । यद्यसौ कृतचूडः स्याद्यदिस्याच्च त्रिवत्सर इति सुमंतुक्तेः ( य  
तुव्याग्रः ) कृतचूडस्तु कुर्वीत उदकं पिंडमेव च । स्वधाकारं प्रयुंजीत वेदोच्चारणका  
रयेदिति ( यच्च स्मृतिसंग्रहे ) कृतचूडोनुपेतश्च पित्रोः आङ्गसमाचरेत् । उदाह  
रेत्स्वधाकारं न तु वेदाक्षराण्यसाविति तत् प्रथमवर्षचूडाविययमिति साधवमद  
नरत्तिपृथ्वीचंद्राः ॥ त्रिवर्योर्ध्वमंत्रवत्त्वस्य विकल्प इति चंद्रिकावोपदेवश्च । इ  
त्तकादिपरो नियेध इति वयस ( मदनरत्ने स्कांदे ) यज्ञेषु मंत्रवत्कर्मपत्नौ कुर्याद्यथा  
नृपे ॥ तत्रोर्ध्वदैहिकं कर्म कुर्यात्साधर्मसंस्कृता ( अशक्तौ तु कात्यायनः ) असंस्कृ  
ते तु पितृयाच ह्यग्निदानं संवत्स्रम् ॥ कर्तव्यमितरत्सर्वकारयेदन्यमेवाहि ॥ पुत्र  
प्रचतं जन्तुसतोधिकारी ( किंतु वर्षोत्तरमित्याह कालादर्शः ) चौलादाद्याद्विदका  
द्वर्षाङ्गुलकुर्यात्पैतृमेधिकस ॥ पुत्रश्चेत्पितृसामवेगासंस्कुर्याद्विषामोचनात् ॥ पि  
तरं जामिद्विदकाचौलात्पैतृमेधेन कर्मणा ॥ एतच्चौरसस्यैव । दत्तकादीनां तुपनीता  
नामेवाधिकार इति कालादर्शः ( पृथ्वीचंद्रोदये पिस्कान्दे ( पित्रोरनुपनीतो  
पि विद्व्यादौरसः सुतः ॥ और्ध्वदैहिकमन्येतु संस्कृताः आङ्गकारिणा इति ॥  
अन्यत्रापि । दर्शमहालयादावनुपनीतस्याधिकारोस्माभिः पूर्वमुक्तः प्रपौत्राभा



वेदत्तकादयस्यकादशपुत्राः । तदभावेभर्तुः पत्नी तस्याप्रचसः । अपुत्राशयनंभर्तुः पा-  
लयंतीव्रतेस्थिता ॥ पत्न्यैवदद्यात्तत्पिण्डं कृत्स्नसंशतभेततचेति वृद्धमनूक्तेः ॥  
भार्यापिण्डं प्रतिर्दद्याद्भर्तुर्भायतिथैवच । अथादेशचस्तुषाचैव तदभावेसपि-  
ण्डका इति ॥ पुत्राभावेतुपत्नीस्यात्पत्न्यभावेतुसोदर इति चहेमाद्रौशंखीक्तेः  
(पृथ्वीचंद्रोदयस्तु) कानीनगूढसहजपुनर्भूतनयाश्चये । पत्न्यभावेधिकुर्युस्तेअ-  
प्रशस्ताः स्मृताहिते इति स्मृतिसंग्रहात् । पत्न्यभावेकानीनादय इत्याह । पत्युर-  
पिसपत्नीपुत्रेसतिनाधिकारः । पितृपत्न्यः सर्वामातर इति सुसंतुक्तेः ॥ विदध्या-  
दौरसः पुत्रो जनन्याश्चौर्ध्वदेहिकं । तदभावेसपत्नीजः श्वेज्याद्याः स्मृतास्तथा ॥  
तेषामभावेतुपतिस्तदभावेसपिण्डका इति ॥ मदनरत्नेकात्यायनोक्तेश्च ॥ बह्वी-  
नामेकपत्नीनामेयसर्वविधिः स्मृता ॥ सकाचेतुपुत्रिणीतासांसर्वासांपिण्डस्तु-  
स इति बृहस्पतिवचनाच्च ॥ अपरार्कोग्येवस । तेनयच्छुद्धिविवेके उक्तं सत्यापिस-  
पत्नीपुत्रेपत्युरेवाधिकार इति तन्निरस्तम् (यच्चतत्रैवकात्यायनः) नभार्यायाः प-  
तिर्दद्यादपुत्राया अपिक्वचित् (यच्चविष्णुपुराणां) कुलद्वयेपिचोत्सन्नेस्त्रीभिः का-  
र्याक्रियानृपेति (यच्चमार्कंडेयपुराणम्) सर्वाभावेस्त्रियः कुर्युः स्वभर्तृणामसं-  
क्रमितितदासुरादिविवाहोऽविषयम् ॥ धर्मैर्विवाहैरूढायासापत्नीपरिकी-  
र्तिता ॥ क्रयक्रीतातुयानारीनसापत्न्यभिधीयते ॥ नसाद्वैवेनसापिष्येदासीतां-  
मुनयोविदुरितिमाधवीयेशातातपोक्तेः (यत्तुशुद्धिरत्नाकरः शूलपाणिश्च )  
अपुत्रस्यचयापुत्रीसापिपिण्डप्रदाभवेत् ॥ तस्यापिण्डान्नदशैकवासकाहेनैवनि-  
क्षिपेदितिजाबालोक्तेः ॥ भर्तुर्धनहरापत्नीतांविनादुहितास्मृता ॥ अंगादंगा-  
त्सम्भवतिपुत्रवदुहितानृणामितिबृहस्पतिदुहितुर्धनहारित्वोक्तेश्चापुत्राभावे-  
कन्यातदभावेसपत्नीपुत्र इत्याहतुः तत्पूर्वविरोधात् । मातुर्दुहितरः शेषमृणांता-  
शयक्तेन्वये इति दुहितुर्मतिधनग्राहित्वेनपुत्रस्यतच्छादनाधिकारापत्तेश्चोपे-  
क्ष्यम् । वचनन्तुपुत्राद्यभावविषयम् पत्न्यभावेअविभक्तस्यसोदरः पूर्वोक्त-  
शंखवचनात् । विभक्तस्यतुदुहिताधनहारित्वात् । पूर्वोक्तजाबालवचनाच्च ।  
तत्राप्यूहानूढसमवायेऽहैव । दुहितापुत्रवत्कुर्यान्मातापित्रोस्तुसंस्कृता ॥ आ

शौचमुदकं पिण्डमेकोदिसं सदा तयोरिति भरद्वाजोक्तेः ॥ तदभावे दौहित्रः धन-  
हारित्वात् । साता पित्रो रूपाध्यायाचार्ययोरौर्ध्वदैहिकं ॥ कुर्वन्मातामहस्या-  
पिप्रतीजप्रश्रयतेव तादिति चंद्रिकायां वृद्धमनुक्तेः । यथावतस्थोपि सुतः पितुः कु-  
र्यात्क्रियां नृप ॥ उदकाद्यां महाबाहो दौहित्रोपि तथार्हतीत्यपरा कर्मे भविष्यो-  
क्तेष्वच (एतद्धनहारिणा आवश्यकं नान्यस्येत्याह तत्रैव स्कन्दः ) आहं मातामहा-  
नांतु अवश्यं धनहारिणा ॥ दौहित्रे नार्थनिष्ठकृत्यैकतर्क्यं पूर्वमुत्तरमिति । तेन दौहि-  
त्रोऽपुत्रीकृत इति देवयज्ञिकोक्तिः परास्ता ॥ अत्र पत्नी दौहित्रसमवायेऽप्यपरत्वा-  
त्पत्न्यैव कुर्यात् । दौहित्रभ्रातृपुत्रसत्त्वे विभक्तस्य दौहित्रः अविभागो भ्रातृपुत्रः ।  
भ्रातृतत्पुत्रसत्त्वे कनिष्ठश्चेत्तत्पुत्रः । ज्येष्ठश्चेत्तत्तत्पुत्रः कुर्यादिति दाक्षिणात्य-  
ग्रन्थाः (हारलतादौ तु) भ्रातृभ्रातास्वयंचक्रेत जायचित्तविद्यते । तस्य भ्रातृसुत-  
श्चक्रेत्यस्यानास्ति सहोदर इति ब्राह्मणोक्तेः । पत्नी कुर्यात्सुताभावे पत्न्याभावे स-  
होदर इति कौर्मचिज्येष्ठभ्रातैव कुर्यान्न तत्पुत्रः ॥ यत्तु नानुजस्य तथाग्रज इति तत्तत्क-  
निष्ठभ्रातृसत्त्वविषयं स (यच्च मनुः) सर्वेषामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान् भवेत् ॥  
सर्वास्तास्तेन पुत्रेणापुत्रिणो मनुर्ब्रवीदिति तत्सहोदरभावविषयमित्युक्तं ॥ एते-  
न पुत्रत्वातिदेशोऽयम् । अतस्तस्मिन् सति सत्कादशपुत्राः प्रतिनिधेयानकार्याः ।  
सर्वपिण्डदोऽंशहरश्चेति अत्रापि वाचस्पतिमनुकीदाकल्पतरुरत्नाकरादयः प्र-  
रास्ताः । द्वादशपुत्राभावे पत्नी दुहितर इति याज्ञवल्क्योक्तेष्वच ॥ तस्माद्वत्त-  
त्कपुत्रप्रशंसेयमिति विज्ञानेश्वरः । अविभक्तविषयं वा ( मदनरत्ने स्मृतिसंग्रहे )  
पुत्रः कुर्यात्पितुः आहं पत्नी च तदसन्निधौ । धनहार्यथ दौहित्रस्ततो भ्राता च त-  
त्सुतः ॥ भ्रात्रोः सहोदरो भ्राता कुर्याद्वाहादितत्सुतः ॥ ततस्त्वसोदरो भ्राता तद-  
भावे च तत्सुत इति भ्रातृपुत्राभावे क्रमेणापितृस्नुयास्त्वसुतत्पुत्रादयः ॥ धनहारि-  
त्वात् ( भगिनी तत्सुतयोर्विशेषमाह मदनरत्ने कात्यायनः ) अनुजा अग्रजा वापि  
भ्रातुः कुर्वीत संस्क्रियां ॥ ततः स्वसोदरास्तद्वत्क्रमेणातनयस्तयोः (अपरा कर्मे कार्या-  
जिनिः ) पुत्रः शिष्योऽथ वा पत्नी पिता भ्राता स्नुयायुः ॥ स्त्रीहारी धनहारी च कु-  
र्यात्पिण्डोदकक्रियां ( मार्कण्डेयपुराणे ) पुत्रो भ्राता च तत्पुत्रः पत्नी माता च



ध्यापिता ॥ वित्ताभावेऽपिशिष्यप्रचक्रुर्वीरन्तौर्ध्वदैहिकं ॥ तेष्वनहारीपुत्रद्विच  
 इतिकालादर्शः ॥ अत्रप्राठक्रमोऽनविवक्षितः । पूर्ववाक्येऽवयवतः शब्दादिभिः  
 श्रौतकमोक्तः ॥ अथजिह्वायाश्चयवससइतिवत् ( पृथ्वीचन्द्रोदयेऽवयवमनुः )  
 स्नुयास्वसोयतत्पुत्रजातिसम्बन्धवान्धवाः ॥ पुत्राभावेतु कुर्वीरन्सपिराडांत्यथा  
 विधि ( मार्कराडेयपुराण ) पुत्राद्युत्सन्नबन्धोश्चसखापिश्चशुरस्यच ॥ जस्मा  
 तास्नेहवत्कुर्यादखिलं पैतृमेधिकं ( चन्द्रिकायां वृद्धशातातपः ) मातुलोभाग्निने  
 यश्चस्वसोयोमातुलस्यच ॥ अशुरस्यगुरोश्चैवसस्युर्मातामहस्यच ॥ एतेषां  
 चैवभार्याणां स्वसुर्मातुःपितुस्तथा ॥ आहमेयांतुर्कर्तव्यमिति वेदविदोऽत्रिदुः  
 ( शुद्धिविवेके पृथ्वीचन्द्रोदये च ब्राह्मे ) दत्तानां चाप्यदत्तानां कन्यानां कुस्ते  
 पिता ॥ चतुर्थेऽहनि तास्तेषां कुर्वीरन्सुसमाहिताः ॥ दत्तावाग्दत्ताः ॥ मातासहा  
 नां दौहित्राः कुर्वत्यहनि चापरे ॥ तेऽपि तेषां प्रकुर्वति द्वितीयेऽहनि सर्वदा ॥ जामातुः  
 अशुराश्च कुस्तेषां तेऽपि च संयताः ॥ मित्राणां तदपत्यानां श्रोत्रियाणां गुरोस्तथा ॥  
 भाग्निनेयसुतानां च सर्वेषां त्वपरेऽहनि ॥ राजासतिसपिराडे तु निरपत्ये पुरोहितः ॥  
 मंत्री व्रातं दशौ चन्तु पुराचीर्त्वा करोति सः ( अत्र द्वितीयाहादौ आह विधानमस्थि  
 संचयपरं । कालादर्श ) दाहादिसंवत्तपित्रोर्विदध्यादौ रसः सुतः ॥ तदभावे तु  
 प्रौत्रश्च प्रपौत्रः पुत्रिका सुतः ॥ दौहित्रोऽनहारी च भ्राता तत्पुत्रस्य च ॥ पिता मा  
 ता स्नुया चैव स्वमातुः पुत्रस्य च ॥ सपिराडः सोदको मातुः सपिराडश्च सहोदकः ॥  
 स्त्री च शिष्या त्विगाचार्या जामाताश्च सखापि वा ॥ उत्सन्नबन्धोरिक्थेन कारयेद्  
 वत्तीर्षतिः ( भौतसः ) पुत्राभावे सपिराडा मातुः सपिराडाः शिष्याश्च दद्यात् तदभावे  
 ज्वलित्वाचार्यौ ( यत्तुर्चन्द्रिकायां वृद्धशातातपः ) प्रीत्या आहं प्रकर्तव्यं सर्वेषां वरा  
 लीङ्गिनामिति तत्सर्वार्थविषयस्य ॥ ब्राह्मणास्त्वन्यवरानानां कुर्यात्किं कर्म किंचन ।  
 कामास्त्रोभाज्यान्मोहात्कृत्वा तज्जातितां व्रजेदिति ब्राह्मोक्तेः ॥ न ब्राह्मणो न क  
 र्तव्यं गृहस्थाप्यौर्ध्वदैहिकं ॥ शूद्रेणावा ब्राह्मणस्य विना पारसवात्काचिदिति पा  
 रसवो विदुः ॥ पारसव ऊह शूद्रपुत्रः ॥ अत्रेदंतत्त्वं ॥ सर्वत्र पुत्रादेः सर्वस्याभावेऽपि  
 तन्यादेरविकार इत्युक्तः ॥ तत्राभावोऽसन्निधिर्नाशश्चोच्यते ॥ अतएव पूर्वत्र अस

निधानेपूर्वेयामित्युक्तम् । तत्रासन्निधौपत्न्यादेः सर्वाधिकारेप्राप्ते ॥ प्रोयितावसि  
तेपुत्रः कालादपिचिरादपि ॥ एकादशाद्याः क्रमशोऽप्येष्टस्यविधिवत्क्रियाः ॥  
ऽप्येष्टेनैवतुयत्कृतमित्याद्यैर्देशान्तरेऽपवादात्पुत्रनाशेऽप्यपत्न्यादेः सपिण्डनादाव  
धिकारः ॥ असन्निधौतुतत्पर्वमेवनेर्ध्व ॥ अतोऽनधिकारिणाभ्रात्रादिनाकृतमप्य  
कृतमेवेतिपुनरावर्तनीयम् । मासिकापकर्षोऽप्यावर्तनीयः ॥ एकादशाहमासि  
कानिनावर्तते । तज्ज्यायसापिकर्तव्यंसपिण्डीकरणांपुनरितिवदावृत्तिविधाना  
भावादितिकेचित् ॥ तन्न ॥ अस्यनिर्मूलत्वात् । अतस्तदपिकनियुक्तमावर्तते । वृ  
द्धिश्चोत्पिण्डपितृयज्ञार्धतुक्तंनावर्तते । नासपिण्ड्याग्निमानुपुत्रः पितृयज्ञसमा  
चरेत् । नपार्वणानाभ्युदयंकुर्वन्नलभतेफलमितिवृद्ध्युत्तरनिषेधनादिति ॥ भ्रातावा  
भ्रातृपुत्रेवेत्यादिहारोतादिवचोभ्यः कनिष्ठादेरप्यधिकारात् । यथात्रऽप्येष्टकर्तृ  
कत्वबाधस्तथापुत्रकर्तृकत्वस्यापिबाधः । सपिण्डनेतुबहुवक्तव्यंतन्निर्यायेवद्व्या  
मः । अधिकारविशेषेणाक्रियाव्यवस्थोक्ता (विष्णुपुराणो) पूर्वाः क्रियामध्यमा  
श्चतथाचैवोत्तराः क्रियाः । विप्रकाराः क्रियाह्येतास्तासांभेदानुशृणाठवमे ॥ आ  
दाहाद्द्वादशाहमध्यमेयाः स्युः क्रियानृपाः ताः पूर्वामध्यमामासिमास्येकोऽद्विष्टसं  
ज्ञिताः ॥ प्रेतेपितृत्वमापन्नेसपिण्डीकरणादनु । क्रियन्तेयाः क्रियाः पुत्रप्रेत्यन्तेता  
नृपोत्तराः ॥ पितृमातृसपिण्डैश्चस्वमानसलिलैस्तथा । तत्संघातगतैश्चैवराज्ञावा  
धनहारिणाः ॥ पूर्वामध्याश्चकर्तव्याः पुत्राद्यैरेवचोत्तराः ॥ दौहित्रैर्वानरश्रेष्ठकार्या  
स्तत्तनयैस्तथा ॥ मृताहनितुकर्तव्याः स्त्रीणामप्युत्तराः क्रियाः ॥ दौहित्रतत्पुत्रयोर्ध  
नहारिणोरिदं ॥ एवमन्यस्यधनहर्तुः यश्चार्थहरः सपिण्डदायीत्यापस्तंबोक्तेः ॥  
प्रेतस्यप्रेतकार्याणिअकृत्वाधनहारकः ॥ वर्णानांयद्वधेप्रेक्तंतद्वतंप्रयतश्चरेदि  
तिपृथ्वीचंद्रोदयेव्याघ्रपादोक्तेः ( मदनरत्नेस्कांदेपि ) मलमेतन्मनुष्याणांद्रवि  
णांयत्प्रकीर्तितमित्युक्त्वा । ऋषिभिस्तस्यनिर्दिष्टानिठकृतिः पावनीपरा । आदेह  
पतनात्तस्यकुर्यात्पिण्डोदकक्रियामित्युक्तं ( क्रियानिबन्धेकात्यायनः ) नचमाता  
नचपिताकुर्यात्पुत्रस्यपैतृकम् । नाग्रजश्चतथाभ्राता भ्रातृणांतुकनीयसां ( पृ  
थ्वीचंद्रोदयेबौधायनः ) पित्राश्राद्धंनकर्तव्यंपुत्राणांतुकथंचन ॥ भ्रात्राचैव नक



त्वयं भ्रातृणां च कनीयसा ॥ यदि स्नेहेन कुर्यात्तां संपिंडीकरणां विना ॥ गयायां  
 तु विशेषेण जयायानपि समाचरेत् ॥ अन्याभावे पित्रादिरपि कुर्यात् ॥ उत्सन्नवां  
 धवं प्रेतं पिता भ्राताथ वाग्रजः ॥ जननीचापि संस्कृत्यन्मिह देनोन्यथा भवेदिति सुमं  
 त्वक्तेः (ब्रह्मचारिणां तु शुद्धिविवेके पृथ्वीचंद्रोदये च ब्राह्मे) असमाप्तव्रतस्यापि  
 कर्तव्यं ब्रह्मचारिणाः ॥ आहंतु मातापितृभिर्न तु तेयां करोति सः ॥ आहं मासिका  
 द्विदकादिसर्वकार्यमित्यर्थः ॥ न त्विति नियेधोन्यसत्त्वे (यत्तु छंदोगपरिशिष्टे) न  
 त्यजेत्सुतके कर्म ब्रह्मचारी स्वयं क्वचित् ॥ नदीक्षणात्परं यज्ञेन कृच्छ्रादितपश्चर  
 न् ॥ पितर्यपि मृतेनैषां दोषो भवति कर्हिचित् ॥ आशौचं कर्मणां ते स्यात्तज्यहं वा  
 ब्रह्मचारिणां (यच्च याज्ञवल्क्यः) न ब्रह्मचारिणाः कुर्युः रुद्रकंपतितास्तथेति तदप्य  
 न्यसत्त्वे ॥ अन्याभावे तु ब्रह्मचारिणां पिकार्यपूर्वोक्तवृद्धमनुवचनात् ॥ आचार्य  
 पित्रुपाध्यायान्निहत्यापि व्रती व्रती ॥ संकटान्नं च नाप्रनीयान्नचतैः सह संवसेदि  
 तितेनैवोक्तेः ॥ ब्रह्मचारिणाः शवकर्मिणां व्रतान्निवृत्तिरन्यवसातापि प्रेरिति  
 वशिष्ठोक्तेः ॥ अत्राशौचमेकाहं वक्ष्यामः ॥ प्रागुपनयनान्मृतस्य तु पंचवर्षात्तर  
 संपिंडीकरणावज्ययोऽष्टादश आह्वादिसर्वकार्यमित्युक्तं देवजानीये ॥ असंस्कृतानां भू  
 मौपिंडं दद्यात्संस्कृतानां कुशेष्टिविति प्रचेतो वचनाच्च ॥ एतच्चाग्रे वक्ष्यामः (अविभक्तानां  
 नां विशेषमाह पृथ्वीचंद्रोदये मरीचिः) बहवः सूर्यदापुत्राः पितुरेकववासिनः ॥  
 सर्वेषां तु मतं कृत्वा ज्येष्ठेनैव तु यत्कृतम् ॥ द्रव्येणाचा विभक्तेन सर्वैरेव कृतं भवेत् ॥ ज्ये  
 ष्ठस्य कर्तृत्वेऽपि सर्वे फलभागिन इत्यर्थः । तेन ये ब्रह्मचर्यपरां व्रजनादयः । फ  
 लसंस्कारास्ते सर्वेषां भवन्तीति सिद्धम् । संसृष्टीनामप्येवं तुल्यत्वात् (विभक्तानां  
 विशेषमाहोशनाः) नव आहं संपिंडत्वं आहान्यपि च योऽष्टा ॥ एकेनैव तु कार्या  
 ग्नां संविभक्तधनेऽपि (लघुहारीतः) संपिंडीकरणां तानि यानि आहानि यो  
 ऽष्टा ॥ पृथङ् नैव तु ताः कुर्युः पृथग्द्रव्या अपि क्वचित् ॥ ऊर्ध्वं संपिंडीकरणात्सर्वे  
 कुर्युः पृथक् पृथक् (मदनरत्ने) विभक्तास्तु पृथक् कुर्युः प्रतिसंवत्सरादिकम् ॥ एकेनै  
 वा विभक्ते युक्ते सर्वे स्तुतं कृतम् ॥ एतेनाद्विदकादिष्वविभक्तानां नियम इति वद  
 न्मूलपाणिः परास्तः ॥ दत्तकस्तु जनकस्य पुत्राद्यभावे दद्यात्तत्सत्त्वे ॥ गोत्ररिक्थे

जनयितुर्नभजेदत्तिमः सुतः ॥ गोत्ररिक्थोनुगः पिंडोव्यपैतददतः स्ववेतिमनूक्तेः ॥  
इदं जनकस्य पुत्रसत्त्वविषयम् । एतच्च प्रवरमंजर्यां कात्यायनलौगाक्षिभ्यां स्पष्टमु-  
क्तं ॥ अथ ये दत्तकक्रीतकृत्रिमपुत्रिकापुत्राः परपरिग्रहेणानार्येया जातास्ते ह्यत्र  
मुख्यायणा भवन्ति ॥ यथा शौगशौशिरीषां यानि चान्यान्यवेतमुच्छित्तिनिकुला-  
नि भवन्तीत्यादिना द्वयोः पित्रोः प्रवरानुक्त्वोक्तम् । अथ यद्येवं स्वाहभार्या स्वप-  
त्यंनस्यादृक्थं हरेयुः पिंडं चैभ्यां स्त्रिपुरुष्यंदद्युर्ग्यद्युभयोर्न स्यादुभाभ्यामेव द्युरेक-  
स्मिन्नश्राद्धे पृथग्द्विप्रथैकपिण्डे द्वावनुकीर्तयेत्परिगृहीतारं चोत्पादयितारं चाह-  
तीयात्पुरुषादिति (हेमाद्रौ काष्ठांजिनिः) यावन्तः पितृवज्ज्याः स्युस्तावद्भिर्दत्त-  
कादयः ॥ प्रेतानां योजनं कुर्युः स्वकीयैः पितृभिः सह ॥ द्वाभ्यां सहाथ तत्पुत्राः पौ-  
त्रास्त्वेकेन तत्समम् ॥ चतुर्थपुरुषे ह्येदस्तरमादेया त्रिपुरुषी ॥ साधारणेषु कालेषु  
विशेषो नास्ति वर्गिणाम् ॥ मृताहेत्वेकमुद्दिश्य कुर्युः श्राद्धं यथाविधीति ( अस्या-  
र्थमाह हेमाद्रिः । दत्तकादयः ) जनकपालकयोः कुले प्रेतानां स्ववर्गीयैः सपिण्डनं कुर्युः ।  
दत्तकानां पुत्रास्तु पितुर्दत्तकस्य पितृभ्यां जनकपालकाभ्यां स्वपितामहाभ्यां  
सपिण्डनं कुर्युः ॥ तेषां पौत्राः स्वपितरंदत्तकेन पितामहेन तज्जनकेन च सपिण्डये-  
युः । चतुर्थोपतत्कुलस्थस्य । तेषां प्रपौत्रस्तु दत्तकस्य प्रपितामहस्य पालककुल-  
स्थं चतुर्थं योजयेन्नया ॥ छंदश्छादश्महालयदौतुद्वयोः पित्रोः पितामहयोः प्र-  
पितामहयोर्वा श्राद्धं देयम् । तत्र द्वयोः पित्राद्योः पृथक्पिण्डदानं द्वयोरुद्देशेनैको-  
वेति (अत्रकोचित्) आबयोरयमिति परिभाष्ययो दत्तस्तस्येदं द्वयोः पित्रोः श्राद्धं ।  
यस्त्वपरिभाष्यदत्तः सग्रहीतुरेव । सपालकायैव दद्यादित्याहुः ॥ अत्रमूलंतमवप्र-  
वृत्त्याः ॥ वस्तुतस्तु जनकस्य पुत्रपत्न्याद्यभावे दत्तको द्वयोर्दद्यादन्यथा पालकायैव  
प्रायुक्तकात्यायनवचनात् । सान्वीयमप्येतद्विषयमेव । गोत्रंतु श्राद्धे पालकस्यैव  
विवाहादौतुभयोरित्यादिसत्त्वतः प्रवरदर्पणोद्देशं । यस्तु मूल्यक्रीतायां परिभाष्या-  
यां दास्यां चोत्पन्नः स्वकीजिगमवदद्यात् । मूल्यविना स्वपुत्रपत्न्यां चोत्पन्नस्य  
(तदुक्तं पृथ्वीचंद्रोदये कौर्मै) अनियोगात्तु तैयस्तु मूल्यक्रीता जायते त्विह ॥ प्रदद्या-  
द्द्वीजिने पिण्डं लेजिगोतु ततोऽन्यथेति ॥ क्षेत्रजादेर्विशेषस्तु कलौ तदभावात्कोऽप्य



तद्विदिकु ( जारजानां विशेषमाहापराकनारदः ) जायंते त्वनियुक्तायामेकेन  
 बहुभिस्तथा ॥ अरिक्थभाजस्ते सर्वे बीजिनामेव ते सुताः ॥ द्युस्ते बीजिने पिण्डं  
 माता चेच्छुल्कतोहता । अशुल्कोपहतायां तु पिण्डदावोदुरेवते ( धर्मार्थं श्राद्ध  
 करणो फलमाह चन्द्रिकायां शातातपः ) प्रीत्या श्राद्धं तु कर्तव्यं सर्वेषां वर्णाङ्गि  
 नाम ॥ एवं कुर्वन्मरः सम्यङ्महतीं श्रियमाप्नुयात् ( गायामापितत्रैव ब्रह्मवैवर्ते )  
 आत्मजो वा यवान्योऽपि गया शीर्षे यदा तदा ॥ यन्नाम्ना पातयेत् पिण्डं तन्नयेद्ब्रह्म  
 शाश्वतम् ॥ एतच्च यदा फलभूमार्थिना द्विस्त्रिर्वा क्रियते तदा प्रेतशिला श्राद्धवज्यं कु  
 र्यात्तस्य प्रेतत्वा विमोक्षार्थत्वात्तस्य च जातत्वादितिकेचित् । वस्तुतस्तु संन्यासि  
 श्राद्धवदपि सर्वकार्यम् । स्वांगो धिकारादित्युक्तं प्रतीमः ॥ संन्यस्तपि प्रादिस्तु  
 पितुः पित्रादिभ्यः सर्वश्राद्धेषु दद्यादित्युक्तं प्राक् । वक्ष्यते च जीवत्पितृकश्राद्धे ।  
 अत्र स्त्रीशूद्राणां श्राद्धं संव्रज्यं तृणी भवति । स्त्रीणामसंव्रकं श्राद्धं तथा शूद्रासु तस्य  
 च ॥ प्राग्निजपचव्रतादेशात्ते च कुर्युस्तथैव तदिति हेमाद्रौ मरीचिवचनात्सिद्ध  
 म् ॥ अयमेव विधिः प्रोक्तः शूद्राणां संव्रवर्जितः ॥ असंव्रस्य तु शूद्रस्य विप्रो संव्रेणागृ  
 ह्यतद्वति ब्राह्मोक्तेष्व ॥ गृह्यते संव्रद्वयते । अस्य श्राद्धप्रकरणोपादेः पिपरिभाषा  
 त्वान्नप्रकरणेन संकोचो युक्तः तेन शूद्रस्य स्नानदानादावपि विप्रेण संव्रपाठः कार्यः ।  
 असंव्रश्चेति विशेषणम् । स्त्रिया अपीति शूलपाणिः । यत्तु तेनोक्तं संव्रजन्य  
 नियमादृष्टसिद्धिस्तु नमस्कारेण । अनुमतोऽस्य नमस्कारो मन्त्रइति गौतमोक्तेरि  
 तितन्न । दृष्टद्वारैर्वाहिततप्राप्तिर्न स्वातन्त्र्येण । अन्यथानखविपतेष्ववघातजन्या  
 दृष्टार्थोऽपि क्रियतेति किञ्चिदेतत् ॥ तेन पितृणां नाम गोव्रतइत्यादौ यत्र द्विजाना  
 मपि नाम मन्त्रउक्तस्तत्र प्रतिप्रसवमात्रार्थयुक्तम् । नतिलावपनादावपि । अत्र के  
 चित् । वैदिकमन्त्रो विप्रस्य पौराणास्तु शूद्रैः पठनीयः । नहि वेदेऽवधिकारः क्व  
 चिच्छूद्रस्य विद्यते । पुराणोऽवधिकारो मेदशितो ब्राह्मणैरिहेतितत्रैव पाद्योक्ते  
 रित्याहुः ॥ गौडा अप्येवंतन्न ॥ नाध्येतव्यमिदं शास्त्रं वृथालस्य तु सन्निधावितिकौ  
 र्मे । पुराणानियेधेन वेदस्य दूरापास्तत्वात् । अध्येतव्यं ब्राह्मणेन वैश्येन क्षत्रिये  
 ण च ॥ श्रोतव्यमेव शूद्रेण नाध्येतव्यंकदाचन ॥ श्रौतं स्मार्तं च वैधर्मं प्रोक्तमस्मि

ज्ञपोत्तम ॥ तस्माच्छ्रद्धैर्विनाविप्रं न श्रोतव्यं कदाचनेति तत्रैव पुराणाधिकारे भवि  
 श्योक्तेष्वच ॥ एतेन नाध्येतव्यमिति निषेधो मंत्रेतरपुराणापरइति श्रौतत्वादिसमतमपा  
 स्तम । तेन पुराणसंवाणामेव विप्रेणापाठो न वैदिकानामिति सिद्धम् । द्विजस्त्रि  
 यस्तु संकल्पमात्रं स्वयंकृत्वा वैदिकमंत्रयुक्तं सर्वब्राह्मणाद्वारा कारयेयुरिति प्रयोग  
 पारिजातः । अतएव स्त्रीणामित्युक्तविवाहस्त्रीपरमिति हेमाद्रिराह । अनुपनी  
 तस्तु वैदिकमंत्रयुक्तं सर्वस्वमेव कुर्यादित्युक्तं प्राक् । यत्तु प्राक् द्विजाप्रचव्रतादे  
 शादिति तदशक्तविषयमचूडविषयं वेति दिक् ॥ शूद्रस्तु सदा मश्राद्धमेव ॥ सदा  
 चैव तु शूद्राणामामश्राद्धं विधीयत इति सुमंतुक्तेः ( पृथ्वीचन्द्रोदये मात्स्येऽपि ) एवं  
 शूद्रोऽपि सामान्यं वृद्धिश्राद्धं च सर्वदा ॥ नमस्कारेण मंत्रेण कुर्यादामान्नवत्सदा  
 ( तत्रैव वृद्धपराशरः ) आमान्नेन तु शूद्रस्य तूष्णीं तु द्विजपूजनं ॥ कृत्वा श्राद्धं तु नि  
 र्वाप्य सजातीनाशयेदथ ॥ सख ॥ आसं शूद्रस्य पक्वान्नं पक्वमुच्छिष्टमुच्यते ॥  
 ( हेमाद्रौ भविष्ये ) धर्मेऽस्य वस्तु धर्मज्ञाय दिशूद्राः प्रकुर्वते ॥ अग्नौ करणमंत्रप्रच  
 नमस्कारो विधीयते ॥ आवाहनादिकर्तव्यं यथा शूद्रेणातच्छृणा ॥ देवानां देवना  
 म्नातुं पितृणां नाम गोव्रतः ॥ पिंडादीन्निर्वपेद्दीरनामतो गोव्रतस्तथा ॥ शूद्राणां  
 गोत्राभावेऽपि काश्यपगोत्रं ज्ञेयम् ॥ तस्मादाहुः सर्वाः प्रजाः काश्यप्यइति श्रुतेः ।  
 गोत्रनाशे तु काश्यपइति व्याघ्रपादोक्तेः प्रचेति हेमाद्रिः ॥ स्वमन्यत्र गोत्राज्ञाने तर्प  
 णादियुच्यते ( तत्रैव भविष्ये ) शूद्रस्तु गृहपाकेन न पिंडान्निर्वपेत्तथा ॥ सक्तु  
 मूलं कलं तस्य पायसं वा भवेत्स्मृतम् ( गौतमः ) अनुमतोऽस्य नमस्कारो मंत्रइति ।  
 देवताभ्यः पितृभ्यः प्रचेत्ययं नमस्कारमंत्रइति केचित् । विज्ञानेश्वरोऽप्येवमाह  
 ( हेमाद्रिस्तु ) शूद्रोऽप्यमंत्रवत् कुर्यादनेन विधिनावुधइति मात्स्ये ( मंत्रनिषेधान्ना  
 ममंत्रेणोत्थाह पृथ्वीचन्द्रोदये स्कांदे ) राजकार्येऽनियुक्तस्य बंधनिग्रहवर्तिनः ॥ व्य  
 सने युच सर्वेषु श्राद्धविप्रेणाकारयेत् ( यत्तु भारते राजधर्मेषु ) यवनाः किरातागां  
 धाराश्चीनाः शबरबर्वराः ॥ शकास्तु शाराः कंकाश्च पल्लवाश्चाम्रद्रका इत्यु  
 क्त्वा ॥ ब्रह्मक्षेत्रे प्रसूताश्च वैश्याः शूद्राश्च मानवाः । कथं धर्माश्च रित्यंति स  
 र्वे विषयवासिनः ॥ इति चोक्त्वा । वैदधर्माक्रियाश्चैव तेषां धर्मा विधीयते । पितृ



यज्ञास्तथाकूपाः प्रपाञ्चशयनानि च ॥ दानानि च यथाकालं द्विजेभ्यो विसृजेत्स  
दा ( तथा ) दक्षिणा सर्वयज्ञानां दातव्या भूतिमिच्छता ॥ पाकयज्ञा महाहोत्रं च  
कर्तव्याः सर्वदरयुभिरिति स्तेच्छादीनां श्राद्धविधानम् । तदपि सजातीयभोजनद्र  
व्यदानादिपरं न तु श्राद्धपरमिति ॥

इति श्रीनारायणभट्टसूरिसूनु रामकृष्णभट्टात्मज कमलाकरभट्टकृते निर्यासिन्धौ अधिकारनिर्यायः ॥

(अथ पितरः हेमाद्रौ मात्स्यदेवलौ) नाम गोत्रं पितॄणां तु प्रापकं हव्यकव्ययोः  
अग्निठवात्तादयस्तेषां माधिपत्येव्यवस्थिताः ॥ नाम मंत्रास्तदादेशाभवांतरगता  
नपि ॥ प्राणिनः प्रीणयंत्येव तदाहारत्वमागताम् ॥ देवो यदि पिता जातः शुभकर्मा  
नुयोगतः ॥ तस्याक्षममृतं भूत्वा देवत्वेऽप्यनुगच्छति ॥ गांधर्वभोगरूपेण पितृत्वे च  
हृणं भवेत् ॥ श्राद्धाक्षं वायुरूपेण नागत्वेऽप्युपतिष्ठति ॥ पानं भवति यक्षत्वे राक्षस  
त्वे तथा मयिम् ॥ दनुजत्वे तथा मयिं प्रेतत्वे रुधिरौदकम् ॥ मनुष्यत्वे च पानादिनां  
भोगकरं भवेत् ॥ अत्र पित्रादिशब्दैर्जनकादीनामेव देवतात्वमुच्यते न वस्त्रादीनाम्  
असावेव तद्विजमानस्य पित्रे इति शतपथश्रुतेः ॥ यस्य पिता प्रेतः स्यात्स पित्रे  
पिंडं निवायेति विष्ठावादिस्मृतेषु च ( यत्तु मनुदेवलौ ) वसवः पितरो ज्ञेया रुद्रा ज्ञे  
याः पितामहाः ॥ प्रपितामहास्तथादित्याः श्रुतिदेशासनात् तनी ( यच्च याज्ञवल्क्यः )  
वसुरुद्रादिति मुताः पितरः श्राद्धदेवता इति ॥ तदभेदज्ञानार्थम् ( यानि तु हेमाद्रौ न  
दिपुराणौ ) विष्णुः पितास्य जगतो दिव्यो यज्ञः स एव च ॥ ब्रह्मा पितामहो ज्ञेयो ह्य  
हं च प्रपितामह इति ( यच्च भविष्ये ) अनिरुद्धः स्वयं ज्ञेयः प्रद्युम्नश्च पितास्मृतः  
संकर्षणस्तज्जनको वासुदेवस्तु तत्पिता स्वयं कर्ता ( यत्तु तत्रैव ) प्रथमो वसु  
सो ज्ञेयः प्राजापत्यस्तथापरः ॥ तृतीयोऽग्निः स्मृतः पिंडो ह्येव पिंडविधिः स्मृतः  
( यच्च मनुः ) सोमपानामविप्राणां क्षत्रियाणां हविर्भुजः ॥ वैश्यानामाज्यपानाम  
शूद्राणां तु सुकालिनः ( यच्च दित्यपुराणौ ) मासाश्च पित्रो ज्ञेया ऋतवश्च पि  
तामहाः ॥ संवत्सरः प्रजानां च सुद्वेकः प्रपितामहः ( यच्च नंदिपुराणौ ) अग्निठवा  
त्ता ब्राह्मणानां पितरः परिकीर्तिताः ॥ राज्ञां बर्हिषदो नाम विशांकाव्याः प्रकीर्ति

ताः॥सुकालिनस्तुशूद्राणांव्यामास्लेच्छांत्यजातियु ॥ अत्रावाहनादियुपित्रादयः  
समुच्चयेनविकल्पेनवायथाचारंतत्तदेवतारूपेणावाच्याइतिहेमाद्यादयः (हेमाद्रौ  
ब्राह्मे) पार्वणांकुस्तेयस्तुकेवलंपितृहेतुकम् ॥ मातामह्यंनकुस्तेपितृहासप्रजाय  
ते (धौम्यः) पितरोयत्रपूज्यंते तत्रमातामहाध्रुवम् ॥ अविशेषेणाकर्तव्यं वि  
शेषान्नरकंव्रजेत् (अस्यापवादमाहकात्यायनः) कर्षूसमन्वितमुक्त्वातथा  
द्यंश्राद्धयोडशम् । प्रत्यादिदकंतुशेषेषुपिंडाःस्थुःयडित्तिस्थितिः ॥ कर्षूसमन्वि  
तंसंपिंडीकरणात् । दशादौसपत्नीकानामेवदेवतात्वम् ॥ स्वेनभर्वासिमंश्राद्धंमाता  
भुंक्तेसुधासमं ॥ पितामहीचस्वेनैव तथैवप्रपितामहीतितत्रैवोक्तेः (चंद्रिका  
यांचतुर्विंशतिमते) स्याहंवर्जयित्वैकंस्त्रीणांनस्तिपृथक्क्रिया ॥ केचिदि  
च्छंतिनारीणांपृथक्श्राद्धमहर्षयः ॥ अन्वष्टकासुवृद्धौचगयायांचक्षयेहनि ॥  
अत्रमातुःपृथक्श्राद्धमन्यत्रपतिनामहेतिकात्यायनोक्तेश्च ॥ अस्यनिर्मूलतांवदं  
तोर्गौडास्त्वज्ञासवःअत्रभागइत्यध्याहारः॥अन्यथासपत्निकायैमात्रेइतिप्रयोगा  
पत्तेः । अत्रमातृशब्दोजनन्यामेवमुख्यः । तेनसपत्नमातृभ्योनदद्यात् । एवंपिताम  
ह्यादिशब्दैः पितृजनन्यादयसवोच्यंतेइतितत्सपत्नीभ्योनदेयमितिहेमाद्रिःका  
रुण्येनतुमहालयादौदेयमितिसगव(अथविश्वेदेवाः॥हेमाद्रौशंखबृहस्पती)इष्टि  
श्राद्धेकृतदक्षौसत्यौनांदीमुखेवम् ॥ नैमित्तिकेकामकालौकाम्येचधुरिलोचनौ॥  
पुल्लरवाद्देवौचैवपार्वणोसमुदाहृतौ ॥ तत्रैव । उत्पत्तिनामचैतेयां नविदुर्येद्विजात  
यः ॥अयमुच्चारणीयस्तैःप्रलोकःश्रद्धासमन्वितैः॥आगच्छंतुमहाभागाविश्वेदेवा  
महाबलाः ॥ येयत्रविहिताःश्राद्धेसावधानाभवंतुतेइति॥ इष्टिश्राद्धंप्रतिरुचिरि  
त्युक्तमितिकल्पतरुः । आधानादिकर्माणमित्यन्ये । नैमित्तिकमेकोहिष्टम् । स  
कोहिष्टंतुयच्छ्राद्धंतन्नैमित्तिकमुच्यतेइतिभविष्योक्तेः । एतद्यद्यपिकोहिष्टंदै  
वहीनमिति तत्रविश्वेदेवनियेधस्तथापि नवश्राद्धेद्वादशमासिकेच कामकालौ  
ज्ञेयौ । नवश्राद्धं दशाहानिनवमिश्रंतुयडूतम् । अतःपरंपुराणांविधिविश्रामु  
च्यते ॥ यस्मिन्नेवपुराणोवाविश्वेदेवानलेभिरे ॥ आसुरंतद्भवेच्छ्राद्धंवृथालंमंत्रव  
र्जितमितिवह्वृचपरिशिष्टात् । एतच्चबह्वृचानामेवतेयामेवोक्तेः । अन्येषां



तुनात्रविश्वेदेवाइतिकात्यायनोक्तेस्तन्निषेधस्येति पृथ्वीचंद्रोदयः । अन्येतुर्नै  
 मित्तिकंसपिंडीकरणासाहुः । भविष्येयद्यप्येकोद्विष्टंतच्छब्देनोक्तं तथापितद  
 प्यदैवंकर्तव्यमयुग्मानभोजयेत्तद्विजानिति तत्रैवविश्वेदेवनियेधात् । यद्यपिस  
 पिंडीकरणोशतस्रकोद्विष्टत्वं तथापिसपिंडीकरणाश्राद्धं देवपर्वनियोजयेदिति  
 वचनात्तत्परत्वम् (हेमाद्रावादित्यपुराणो ) विश्वेदेवौकतुर्दक्षः सर्वास्त्रिष्टियुकी  
 र्तिता ॥ नित्यं नांदीमुखे श्राद्धे वसुसत्यौ च पैतृके ॥ नवान्नलभने देवौ कामकालौ  
 सदैव हि ॥ अपिकन्यागते सूर्ये काम्ये च धुरिलोचनौ ॥ पुष्करवार्द्रौ चैव विश्वे  
 देवौ तु पार्वणौ (क्वचिद्विश्वेदेवापवादमाह हेमाद्रौ शातातपः) नित्यं श्राद्धमदैवं स्यादे  
 कोद्विष्टं तथैव च ॥ मातुः श्राद्धं च युग्मैः स्याददैवं प्राडः मुखैः पृथक् ॥ योजयेद्देवपू  
 र्वाणि श्राद्धान्यन्नानियत्नतः ॥ नांदी श्राद्धे भिन्नप्रयोगपक्षे मातुः श्राद्धं सदैव मिति  
 हेमाद्रिः । अथ विप्राः ॥ ते चोत्तममध्यमाधमभेदेन त्रिविधाः । तत्राद्याः । अत्रम  
 दीयाः प्रलोकाः । त्रिणाचिकेतस्त्रिमधुप्रचबहुवृचोप्याथर्वणोयाजुषसामगौ च ॥  
 षडंगविच्च त्रिसुपर्णावेत्ताप्यथर्वशीर्षोऽध्ययने रतश्च । शतायुर्वेदार्थं विदोऽप्रवक्ता  
 स्याद्ब्रह्मचारी च तथाग्निविच्च ॥ सीददृत्तिः सत्यवाक्पुरुषैः स्वैर्मातापित्रोः पंच  
 भिः ख्यातवंशः ॥ पत्नी युक्तो ज्येष्ठसामापुराणावेत्ता पुत्री चेति हासे खभिज्ञः ॥ योगी  
 भिक्षुः सामगो ब्रह्मवेत्ता पंचाग्निश्च श्रोत्रियस्तत्सुतो वा ॥ शंभूध्यायी श्रीशपादा  
 व्रजसेवी पांथश्चैते तत्तमाः संप्रदिष्टाः ॥ भिक्षुर्योगी पांथस्तत्त्वलभ्या भारग्याल्लब्धा  
 ऽचेत्तदा भोजनीयाः । श्राद्धे विप्रेषूपविष्टेषु पश्चात्संप्राप्ताश्चेद्विप्रपंक्तौ तु भोज्याः ।  
 अत्रमलं हेमाद्रौ ज्ञेयम् (तत्रैव नारदः) ये वै यती ननादृत्य भोजयेदितरान् द्विजान् ॥  
 विजानन् वसतो ग्रामे कव्यं तद्यातिराक्षसान् (दीपकालिकायां दक्षः) विना मांसेन  
 मधुना विना दक्षिणाया शिष्या ॥ परिपूर्णा भवेच्छ्राद्धं यतिषु श्राद्धभोजियु ॥ सतश्च  
 ज्ञानविषयम् । त्रिणाचिकेतस्त्रिसुपर्णो यजुर्वेदे कदेशौ तद्व्रतेन तदध्यायिनौ । च  
 यस्य सप्तपूर्वसोमपाः त्रिसुपर्णा इति बोधदेवः । त्रिमधुः ऋग्वेदे कदेशस्तदध्यायी । के  
 चिन्नाचिकेतं च यनं त्रिः कृतवानित्यर्थमाहुस्तद्देमाद्रिविरुद्धम् (हेमाद्रौ गौतमः)  
 युवभ्योदानं प्रथमं पितृवयस इत्येके (मात्स्ये मनुः) यच्च व्याकुरुते वाचं यश्च मीमां

सतेध्वरस ॥ सामस्वरविधिज्ञश्चपंक्तिपावनपावनः (कौर्म) असमानप्रवरै  
 कोह्यसगोत्रस्तथैवच ॥ असंबंधीचविज्ञेयोब्राह्मणाःश्राद्धसिद्धये ( गारुडे )  
 श्राद्धेषुविनियोज्यास्तेब्राह्मणाब्रह्मवित्तमाः ॥ येयोनिगोत्रसंबन्धेवासिसंबन्धव  
 र्जिताः (मनुः) नमित्रंभोजयेच्छ्राद्धेधनैःकार्योस्यसंग्रहः ॥ नारिर्नमित्रंविद्यात्तं  
 तुश्राद्धे निसंव्रयेत् ॥ द्वयोर्भ्रात्रोःश्राद्धे भोजनंनिषिद्धम् । पितृपुत्रौभ्रातरौद्वौ  
 निरग्नितुर्विणीपतिम् ॥ सगोत्रप्रवरंचैवश्राद्धेषुपरिवर्जयेदिति श्राद्धदीपकलि  
 कायांजातुकरार्थोक्तेः ( अथमध्यमाः । हेमाद्रौकौर्मगार्ग्यौ ) नैकगोत्रेहविर्द  
 द्याद्यथाकन्यातथाहविः ॥ अभावेह्यन्यगोत्राणामेकगोत्रांस्तुभोजयेत् (अथके  
 चित्स्वशाखीयानमुख्यानाहुःपठंतिच ) निसंव्रयीतपूर्वद्युःस्वशाखीयानद्विजो  
 त्तमान् ॥ स्वशाखीयद्विजाभावेद्विजानन्यान्निमंत्रयेदिति ॥ इदंतुनिर्मूलत्वाद्दे  
 माद्रिणादूयितत्वाच्चोपेक्ष्यम् ( मनुरपि ) यत्नेनभोजयेच्छ्राद्धेब्राह्मणावेदपार  
 गं ॥ शाखांतगमथाध्वर्युं छंदोगंवासमाप्तिगम् ॥ यथासम्यक्तसोयस्यभुंजीतश्रा  
 द्धमर्चितः ॥ पितृणांतस्यहृत्पिःस्याच्छ्राद्धतोःसाप्तपौरुषी ( अत्रसामकाःश्लो  
 काः ) मातामहोमातुलभागिनेयदौहित्रजामातृगुरुस्त्रिशिठयाः ॥ ऋत्विक्चय  
 ज्यश्चशुरौस्त्वबंधुश्यालागुणाढ्यास्त्वनुकल्पभूताः ॥ बांधवोमातृवसृपित्रवसृ  
 मातुलपुत्रादितिबोपदेवः ( अत्रमूलंहेमाद्रौज्ञेयम् ॥ सगुणास्त्वस्त्रीयाद्यतिक्रमेदो  
 यसव ) सप्तपूर्वन्निमंत्रपरानपुरुषानात्मनासह ॥ अतिक्रम्यद्विजानेताचरके  
 पातयेत्स्वगं ॥ संबन्धिनस्तथासर्वान्दौहित्रंविदुपतितथा ॥ भागिनेयंविशेषेणात  
 थाबंधुंस्वगाधिपेतिमदनरत्नेभविष्योक्तेः । अतसवयाज्ञवल्क्योब्राह्मणाप्रतिवे  
 श्यानामेतदेवनिमंत्रणादितिगुणयतिक्रमेदशपरांदंडमाह । आसन्नमात्रपरमिदम्  
 मूर्खेतुनदोषः । ब्राह्मणातिक्रमोनास्तिमूर्खेचैवविवर्जिते ॥ ज्वलंतमग्निमुत्सृज्य  
 नहिभस्मनिहूयतइतिकात्यायनोक्तेः ॥ विप्रस्यापिदोषः । अविद्वान्प्रतिगृह्णा  
 नोभस्मीभवतिदारुवदितिमनुक्तेः (अपरार्केश्रुतिः) यदुभ्यस्तु पुरुषेभ्योर्वाग  
 श्राद्धेयास्तुगोत्रिणाः ॥ यदुभ्यस्तुपरतोभोज्याः श्राद्धेयुर्गोत्रजाअपि ॥ सतच्च  
 ब्राह्मणालाभेअपिशब्दात् ( असंभवेहेमाद्रौगौतमः ) शिष्यांश्चैकेसगोत्रांश्च



भोजयेदूर्ध्वविभोगुणावतः ( आपस्तम्बः ) ब्राह्मणान्भोजयेद्योनिगोत्रसंज्ञांतेवा  
 स्यसंबन्धिनः । गुणाहान्यांतुपरेषांसमुदितःसोदर्योपिभोजयितव्यः । एतेनांतेवा  
 तिनोप्याख्याताइति(अत्रविशेषमाहात्रिः ) पितापितामहोभ्रातापुत्रोवाथर्षापि  
 डकः ॥ नपरस्परमर्घ्याःस्युर्नग्राह्येऽहृत्विजस्तथा ॥ ऋत्विक्पुत्रादयोप्येतेसकु  
 ल्याब्राह्मणाःस्मृताः ॥ वैश्वदेवंनियोक्तव्यायद्येतेगुणावतराः ॥ सगोत्रान्नियो  
 क्तव्याःस्त्रियश्चैवविशेषतइति(अथवज्याः । अत्रसामकाःप्रलोकाः) वज्यानिप्रव  
 द्येत्वथरोगिवैरहीनाधिकांनगान्कितवान्कृतवान् ॥ नक्षत्रशास्त्रेणाचजीवमा  
 नान्भैषज्यवृत्त्यापिचराजभृत्यान् ॥ संगीतकायस्थकुसीदवृत्त्यावेदकयेणापिक्  
 वित्ववृत्त्या ॥ देवाचनेनापिचजीवमानान्स्वाध्यायदाराग्निमुतासकाणान् ॥ दु  
 र्बालखल्वात्कुनख्यधर्मिनतांप्रचपौनर्भवह्य्यादंतान् ॥ अगारदाहीगरदःसमुद्र  
 यायीचकुंडाशयकूटकारी ॥ बालांप्रचयोध्यापयतेस्त्वपुत्रादवाप्तविद्यस्त्वथकुंड  
 गोलौ ॥ अग्नेदिधिठ्वाःपतिरस्त्रकर्तासोमक्रयीतैलिककेकरासौ । युद्धांचायःप  
 क्षिणांपोषकश्चस्रोतोभेत्तावृक्षसंरोपकश्च ॥ मेघाणांवानहिघ्राणांचपृष्ट्या  
 स्त्रोयस्त्रोषुप्रहितैर्यश्चजारैः ॥ जीवत्यधेनुश्चदत्तानुयोगात्तद्रव्यप्राप्त्यावेदमुद्धा  
 रयंतः ॥ योग्रामयाजिपशुकेशविक्रयीस्तेनशिल्पिपितृवादकारकान् ॥ अथ  
 कामरतशूद्रयाजकश्मश्रुहीनजटिमुंडिनिर्घृणान् । यस्यचैवगृहीरणीरजस्वला  
 स्वार्थपाककरशापदायकान् ॥ क्लीवकुसुम्यतिभिलोहितेक्षणावकुब्जवामनमृषा  
 तिशापिनः । पुत्रहीनमथकूटसाक्षिणांप्रेतहारिकमथाज्ययाजकं ॥ स्वात्मदातृ  
 परिवेत्त्याजकस्तेनहिंसकमुखान्निवर्जयेत् ॥ अत्रमूलंहेमाद्रौपृथ्वीचंद्रोदयेचज्ञे  
 यं (भारतेदानधर्मेयुग्राह्यवर्ग्यविप्राधिकारे) कितवोभ्रगाहायस्मीपशुपालो  
 निराकृतिः ॥ ग्रामप्रेष्योवार्धुयिकोगायकःसर्वविक्रयी ॥ सासुद्रिकोराजभृत्य  
 स्तेलिकःकूटकारकः ॥ पित्राविवदमानश्चयस्यचोपपतिगृहे ॥ अभिशस्तस्त  
 थास्तेनःशिल्पयश्चोपजीवति ॥ पर्वकारश्चसूचीचमित्रध्रुकुपारदारिकः ॥  
 अत्रतानामुपाध्यायःकांडपृष्टस्तथैवच ॥ अभिश्चयःपरिक्रामेद्यः शुनादष्टगव  
 च ॥ परिवित्तस्तथास्तेनोदुश्चर्मागुरुतल्पगः ॥ कुशीलकोदेवलकोनक्षत्रैर्य

प्रचजीवति ॥ इदुशात्रह्मणाज्ञेयाप्रपांक्तेयायुधिष्ठिर(तथा) ऋणाकर्तृचयोरा  
जनयप्रचवार्धुधिकेनरः (काण्डपृष्ठः) स्वशाखांत्यक्त्वापरशाखयोपनीतस्त  
दध्यायीच ( सत्रियवैश्यवृत्तौनारदस्तु ) तस्यामेवतुयोवृत्तौ ब्राह्मणोवसतेर  
सात । कांडपृष्ठपृष्ठ्युतेमार्गत्सोपांक्तेयः प्रकीर्तितः ( इत्याहहारीतः ) शूद्राणु  
त्रास्त्रयंदत्तायेचैतेकीर्तकाःसुताः ॥ तेसर्वेसनुनाप्रोक्ताःकांडपृष्ठानसंशयः (अन्ये  
पिहेमाद्रौमात्स्ये ) विशंकुवर्बरानंध्रावचीनद्रविडकौंकणाच ॥ कर्णाटकांस्त  
याभीरानकालिंगांप्रचविवर्जयेत् (तत्रैवसौरपुराणे ) अंगवंगकालिंगांप्रचसौरा  
ष्टानगुर्जरांस्तथा ॥ आभीरानकौंकणांप्रचैवद्राविडानदासिरायायनाच ॥ आवंत्या  
नुमागधांप्रचैवब्राह्मणांस्तुविवर्जयेत् ( चंद्रिकायांयमः ) काणाःकुब्जाप्रचयंढा  
प्रचकटवनागुरुतल्पगाः ॥ मानकूटास्तुलाकूटाःशिल्पिनोग्रामयाजकाः ॥ राज  
भृत्यांधवधिरमकरखल्वाटपंगवः ॥ वरिणजोमधुहर्तारोगरदावनदाहकाः । सम  
यानांचभेत्तारःप्रदानेयेनिवारकाः । प्रव्रज्योपनिदृत्ताप्रचतथाप्रव्रजिताप्रचये ।  
यप्रचप्रव्रजिताज्जातःप्रव्रज्यावसितप्रचयः । अवकीर्णीचवीरद्वेनगुरुद्वेनःपितृदू  
यकः ( आहकाशिकायांकात्यायनः ) द्विर्नःकीलदुप्रचर्माशुक्लोत्तिकपिल  
स्तथा ॥ द्विन्नोष्ट्रिहृन्नलिंगप्रचनैवकेतनमर्हति ॥ द्विर्नःपित्रोर्विशेषिपुस्तं  
विहृन्नवेदारिणः ( हेमाद्रौमरीचिः ) अविहृकर्णाःकृष्णाप्रचलंबकर्णास्तथैवच ।  
वर्जनीयाःप्रयत्नेनब्राह्मणाःआहकर्मणि ( ब्राह्मे ) सूक्ष्मपूतिनाशप्रचद्विज्जांग  
प्रचाधिकंगुलिः ॥ गलरोगीचगडुमानस्फुटितांगप्रचसज्वरः ॥ यंढतुवरसंदां  
प्रचआह्वेद्वैतान्विवर्जयेत् ( लंबकर्णाचाहतत्रैवगोभिलः ) हनुमूलादधःकर्णौलं  
बौतुपरिकीर्तितौ ॥ इयं गुलौघ्यंगुलौशस्तावितिशातातपोब्रवीत् ( चंद्रिकायां  
यमः ) इयंगुलातीतकर्णस्यभुंजतेपितरोनतु । यंढप्रचाचंद्रिकोक्तोसप्तविधो  
ग्राह्यः(यथा)यंढकोवातजःयंढःपंडःक्लीबोनपंसकः ॥ कीलकप्रचेतिसप्तैवक्लीव  
भेदाःप्रकीर्तिताः ॥ पराशरमाधवीयेतुचतुर्दशार्थाधुक्तः । तेषांस्वरूपाणितातत्रैव  
ज्ञेयानि(चंद्रिकायांशातातपः) अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैर्यजंत्यल्पदक्षिणैः ॥ तेषां  
मन्त्रमोक्तव्यमपांक्तास्तेप्रकीर्तिताः ॥ एतच्चशक्तौसत्यां(अपरार्कभारते) अत्र



लोकि तव स्तेनः प्राणि विक्रयकोऽपि वा ॥ पञ्चाचेतपीतवानसोऽसोऽनिकेतनमर्हति  
 ( आद्वदीपिकलिकायां यमः ) अपत्नीकश्च वज्र्यस्या तस्य पत्नी कोऽप्यनग्निः  
 ( तत्रैवाश्वलायनः ) प्रतिमा विक्रयं यो वै करोति पतितस्तु सः ॥ जीवनार्थं परास्थीनि  
 धृत्वा तीर्थं प्रयाति यः । सात्रापि वोर्बिनासोऽपि पतितः परिकीर्तितः ( तत्रैव जातक  
 र्णः ) यत्र मातुलजोऽहो यत्र वातुली पतिः ॥ आङ्गनगच्छेत्तद्विप्राः कृतं यच्च निरा  
 मियं ॥ पितृपुत्रौ भ्रातरौ द्वौ निरग्निगुर्विणी पतिम् ॥ सगोत्रप्रवरं चैव आद्वेषु परिव  
 र्जयेत् ( बृहन्नारदीये ) शंखचक्रं मृदायस्तुकुर्यात्तस्मात्सेनवा ॥ सशूद्रवद्बहि  
 ष्ठकार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणाः । शंखचक्राद्यं कनं च गीतनृत्यादिकं तथा ॥ एकजा  
 तेरयं वर्म जातु स्यात्तद्विजन्मनः ॥ तेन ये तप्तमुद्रादिविषयस्ते शूद्रविषया इति  
 ( पृथ्वीचंद्रोदये ) शिवकेशवयो रंकान् शूलचक्रादिकान् द्विजः ॥ न धारयेत्तस्मिन्  
 मातृवैदिके वर्मनि स्थित इत्याश्वलायनोक्तेषु च । नृत्यं चोदराद्यर्थं निषिद्धमिति  
 श्रीधरस्वामी । अन्येऽपि निषिद्धानि बंधेषु ज्ञेया इति दिक् ॥ अत्र विप्राणां ग्राह्यत्वे  
 क्त्यैव तद्वज्र्यानां निषेधे सिद्धे पुनर्वज्र्यपरिगणनं निषिद्धवज्र्यनिर्गुणाप्राप्त्यर्थमि  
 ति विज्ञानेश्वरः ( कुष्टिकाणां देववादो हेमाद्रौ विशिष्टः ) अपि चैन्मंत्रविद्युक्तः शा  
 रीरैर्पंक्तिदूषणैः ॥ अदृश्यं तं यमः प्राह पंक्तिपावनमवसः ॥ क्वचिद्विप्राणां जातिमा  
 त्रेणा ग्राह्यत्वमुक्तं ( चन्द्रिकायामाग्नेये ) यदि पुत्रो गयां गच्छेत्कदाचित्कालपर्य  
 यात् ॥ तानेव भोजयेद्द्विप्रान् ब्राह्मणाये प्रकल्पिताः ॥ ब्रह्मणा कृतसंस्थाना विप्रा  
 ब्रह्मसमाः स्मृताः ॥ अमानुषा गया विप्रा ब्राह्मणाये प्रकल्पिताः । ते युतुष्टेषु संतुष्टाः  
 पितृभिः सह देवताः ( तत्रैव ) न विचार्य कुलं शीलं विद्या च तपसवच ॥ पूजितैस्ते  
 स्तु संतुष्टा देवाः सपितृगुह्यकाः । गयायां निर्गुणा अपि ते सर्वभोज्या इति हेमाद्रौ च ।  
 क्षय्यवत्प्राद्वसवत्त्रियमो नान्यत्रेति त्रिस्थली सेतौ पितामहचरणाः ( पृथ्वीचं  
 द्रोदयेऽपि पात्रे ) तीर्थेषु ब्राह्मणानैव परीक्षेत कदाचन ॥ अन्नार्थिनमनुप्राप्तं भोज्यं तं  
 मनुरब्रवीत् ॥ ( स्कांदेऽपि ) ब्राह्मणां परीक्षेत तीर्थेऽपि निवासिनः ( मनुः ) न  
 ब्राह्मणां परीक्षेत देवैर्कर्मणा धर्मवित् ॥ पित्र्ये कर्मणा तु प्राप्ते परीक्षेत प्रयत्नतः ॥  
 असंभवपरमेतदिति मेधातिथिः ( हेमाद्रौ व्यासः ) गायत्री सारमात्रोऽपि वरं विप्रः सु

यंत्रितः॥ नार्यंत्रितश्चतुर्वेदीसर्वाशीसर्वविक्रयी॥ कारणाः कूटाश्चक्रवर्जाश्चदरि  
द्राव्याधितास्तथा॥ सर्वे श्राद्धेनियोक्तव्यामिश्रितावेदपारगैः (अथविप्रनिमंत्रणस्य  
चंद्रिकायां वाराहे) वस्त्रशौचादिकर्तव्यं चः कर्तास्मीति जानता॥ स्थानेनोपलेपनं कृ  
त्वा ततो विप्रान्निमंत्रयेत् ॥ दंतकायं च विस्मृजेद्ब्रह्मचारी शुचिर्भवेत् (तत्रैव प्रचे  
ताः) दक्षिणां चरणां विप्रः सव्यं वैश्वत्रियस्तथा॥ पादावादाय वैश्यो द्वौ शूद्रः प्रणातिपू  
र्वकम् (बृहस्पतिः) उपवीतीततो भूत्वा देवार्थं तु द्विजोत्तमान् ॥ अपसव्येन पित्र्ये  
यस्त्वयं शिष्यो यवास्तुतः (प्रचेताः) सवर्णां प्रेषयेदाप्तं द्विजानां तु निमंत्रणो (पृथ्वीचं  
द्रोदयेस्कांदे) राजकार्येनियुक्तस्य बंधनिग्रहवर्तिनः॥ व्यसनेषु च सर्वेषु श्राद्धं वि  
प्रेणाकारयेत् (चंद्रिकायां यमः) अभोज्यं ब्राह्मणास्यान्नं वृषलेन निमंत्रितम् ॥ तथै  
व वृषलस्यान्नं ब्राह्मणेन निमंत्रितम् (तत्रैव पैनीनसिः) सप्तपंचद्वीवाश्चोत्रियान्नि  
मंत्रयेत् (अश्वलायनसूत्रेपि) एकैकमेकैकस्य द्वौ द्वौ त्रींस्त्रीन्वावृद्धो फलभूयस्त्वं द्वा  
विति (वृद्धिश्राद्धे गौतमः) नवावरान्नभोजयेद्युजोवायथोत्साहम् (याज्ञवल्क्यः)  
द्वौ देवै प्राक्त्रयः पित्र्ये उदगे कौकमेव वा । मातामहानामप्येवं तंत्रवा वैश्वदेविकम्  
(दीपिकालिकायां पराशरः) संपत्तावर्थपात्राणामेकैकस्य त्रयस्त्रयः॥ पित्रादेर्ब्राह्म  
णाः प्रोक्ताश्चत्वारो वैश्वदेविके (वृद्धयाज्ञवल्क्यः) दशैकं पंचवा विप्रान् पावर्च्यो  
विनियोजयेत् ॥ अत्र वैश्वदेवे द्वौ चतुरो वोपवेश्य पित्रादीनामेकैकस्य स्थाने एकं त्री  
नपंच सप्तनववोपवेश्ये शयेदितनसुसौर्यः (मनुः) द्वौ देवै पितृकृत्ये त्रीने कौकमुभय  
त्रवा । भोजयेत्सुसमृद्धोऽपि न प्रसज्येत विस्तरे । शतक्रियां देशकालौचशौचं ब्राह्म  
णसंपदम् ॥ पंचैतान्विस्तरोर्हंति रस्मान्नेहेतविस्तरम् (पृथ्वीचंद्रोदये शातातपः)  
द्वौ देवैथर्वणौ विप्रौ प्राङ्मुखानुपवेशयेत् ॥ पित्र्ये तदङ्गुः सुखांस्त्रींश्च बह्वृचा  
ध्वर्युसामगान् (अत्यशक्तौ हेमाद्रौ देवलः) एकेनापि हि विप्रेणा यदा पंडं श्राद्धमाचरे  
त् ॥ यदृष्ट्यनिदापयेत्तत्र यदुभयोदद्यात्तथा हविः (गोभिलः) यद्येकं भोजयेच्छ्राद्धे  
छंदोगंतत्र भोजयेत् । ऋचो यजुं यिसामानि त्रितयं तत्र विद्यते (अत्र वैश्वदेवे विशेष  
माह तत्रैव विशिष्टः) यद्येकं भोजयेच्छ्राद्धे देवं तत्र कथं भवेत् ॥ अन्नं पात्रे समुद्धृत्य स  
र्वस्य प्रकृतस्य च ॥ देवतायतने कृत्वा ततः श्राद्धं समाचरेत् ॥ प्रास्येदग्नौ तदन्नं तु द



द्याद्वाब्रह्मचारिणो ॥ सततसंपिंडीकरणावर्ज्यज्ञेयम् । न तत्रैकैकं सर्वेषां काममना  
 द्ये इत्याद्यन्ताय नोक्तेः (अस्यार्थ उक्तो नारायणवृत्तौ) आद्यसंपिंडीकरणांतद्वर्जेषु  
 आद्ये युक्तसंन्यासागमेऽभोजयेत् ॥ संपिंडीकरणोत्तुनियतं विभिर्भवितव्यमिति ।  
 अनाद्ये पार्वणावर्जिते वा । अभोजने आसहेम आद्यादौ वा । अन्नाभावे तित्याख्यां  
 तरंतत्रैव ज्ञेयम् (कारिकापि) दैवे पित्र्ये च वैकैकं संपिंडीकरणां विनेति (अत्रैकं वि  
 प्रेसाग्नेर्विशेषमाह पृथ्वी चंद्रोदये प्रचेताः) सकस्मिन् ब्राह्मणो दैवे साग्ने रग्निर्भवे  
 त्सदा ॥ अत्रग्नेः कुशमुष्टिः स्याच्छाद्धकर्मणि सर्वदा (सर्वथा विप्रालाभे तत्रैव हेमा  
 द्रौ वसत्यत्रतः) निधाय दर्भं निचयमासनेषु समाहितः ॥ प्रैथानुप्रेषु संयुक्तं सर्वथा  
 ह्यप्रकल्पयेत् ॥ अत्र प्राप्त्यभावात्सवे इव सत्त्वकार्यं यजमानविधौ न दक्षिणोत्तिके  
 चित्तम् । अदृष्टार्थायाः दक्षिणायाः प्राप्तेः । सर्वतस्त्रिजटे तु भयं च आह स दक्षिणा  
 मिति पात्रात् ॥ विदध्याद्धौ वसन्यश्चेदक्षिणाद्ध हरो भवेत् ॥ स्वयं चेदुभयं कुर्याद  
 न्यस्मै प्रतिपादयेदिति ह्यंदोगपरिशिष्टाच्च (सर्वं यति आद्वैपिकात्यायनः) यज्ञ  
 वस्तुनि मुष्टौ च स्तंभे दर्भवदौ तथा ॥ दर्भसंख्या न विहिता विष्टरास्तरणोद्युच (साह  
 आद्ये तु विप्रालाभे सुवासिन्योपि भोजनीया इत्याहापरा र्के तु ह्यवशिष्टः) साह आ  
 द्ये तु विप्राणां मलाभे यजयेदपि ॥ पतिपुत्रान्विता भव्या योषितोऽष्टौ कुलोद्भवा इति ॥  
 अष्टावितिवृद्धि आह विषयम् (पात्रे उत्तरखंडे) सकृदभ्यर्चितं लिङ्गं शालग्रामं शि  
 लांचयः ॥ पीठे संस्थापयित्वा तु आह च कुरुते नरः ॥ पितरस्तस्य तिष्ठति कल्प  
 कोत्तिशान्तिं दिवि (चंद्रिकायां मात्स्ये) पठन्निमं ग्रनियमान् आचरेत्तपैतकाद्युबुधः ॥  
 अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः ॥ भवितव्यं भवद्भिश्च मया च आह कारि  
 णा (यत्तु मनुः) सर्वायासविनिर्मुक्तैः कामक्रोधविर्वर्जितैः ॥ भवितव्यं भवद्भिर्नः  
 शोभते आह कर्मणी तितत्पूर्वद्युर्निमंत्रणापरं न तदहः (तदैव देवलः) असंभवे परेद्यु  
 र्वा ब्राह्मणां स्तान्निमंत्रयेत् । अज्ञाती न समानार्थानियुग्मानात्मशक्तितः (कात्याय  
 नः) अनिद्येनामंत्रितो नापक्रामेत्केतनं गृह्यशक्तः अथ आह कर्तुं भवतु नियमाः (त  
 त्रनिमंत्रितविप्रत्यागोऽपरार्क्यमः) केतनं कारयित्वा तु योतिपातयति द्विजम् ॥ ब्र  
 ह्महत्यामवाप्नोति शूद्रयो नौ च जायते ॥ आसंन्य ब्राह्मणायस्तु यथान्यायं न पूजये

त ॥ अतिहृच्छासुधोराहुतिर्यग्योनियुजायते (प्रमादान्यागेतुहारीतः) प्रमादा  
 द्विस्मृतंज्ञात्वाप्रसाद्यैनंप्रयत्नतः ॥ तर्पयित्वायथान्यायंसर्वतत्फलमप्नुते (प्रमा  
 दाभावेतुनारायणाः) सकास्मिन्नेतसिप्राप्तेब्राह्मणोनियतःशुचिः ॥ यतिचांद्रा  
 यणांकृत्वातस्मात्पापात्प्रमुच्यते (यमः) आसंघितस्तुयोविप्रोभोक्तुमन्यवग  
 च्छति ॥ नरकाणांशतंगत्वाचांडालेठवभिजायते (तत्रैवदेवलः) पूर्वनिमंत्रितो  
 २न्येनकुर्यादन्यप्रतिग्रहम् ॥ भुक्ताहारोयवाभुंक्तेरुक्तंतस्यनश्यति (यदिविप्रो  
 विलंबेततदोक्तमादित्यपुराणो) आसंघितश्चिरंनैवकुर्याद्विप्रःकदाचन ॥ देवता  
 नांपितृणांचदातुरन्नस्यवैवहि ॥ चिरकारीभवेद्रोहीपच्यतेनरकारिणना (पृ  
 थ्वीचंद्रोदयेयमः) निमंत्रितस्तुयोविप्रोह्यध्वानंयातिदुर्मतिः ॥ भवंतिपितरस्त  
 स्यतंसासंपांशुभोजनाः ॥ आसंघितस्तुयःश्राद्धेहिंसावैकुरुतेद्विजः ॥ पितरस्त  
 स्यतंसासंभवंतिसुधिराशनाः ॥ आसंघितस्तुयोविप्रोभारमुद्धहतेद्विजः ॥ पितर  
 स्तस्यतंसासंभवंतिसिद्धेभोजनाः ॥ निमंत्रितस्तुयोविप्रःप्रकुर्यात्क्रलहंयदि ॥ पि  
 तरस्तस्यतंसासंभवंतिसलभोजनाः (शंखः) निमंत्रितस्तुयःश्राद्धेसैथुनंसेवतेद्वि  
 जः ॥ श्राद्धं दत्वाचभुक्त्वाचयुक्तःस्यान्महतैनसा ॥ सैथुनंऋतावपिनिशिद्धं ।  
 ऋतुकालेनियुक्तोवर्त्तव्यगच्छेतस्त्रियकचित् ॥ तत्रगच्छन्नवाप्नोतिह्यनिष्ठानिफ  
 लानित्वितितत्रमाधवीयेचवृद्धमनूक्तेः ॥ श्राद्धं करिष्यन्नृत्वावाभुक्त्वावापि  
 निमंत्रितः ॥ उपोष्यचतथाभुक्त्वानोपेयाचऋतावपि ॥ भोक्ष्यन्नकरिष्यन्नश्चः  
 श्राद्धं पर्वरात्रौप्रयत्नतः ॥ व्यवायंभोजनंचापिऋतावपिविवर्जयेदितितत्रैवाश्च  
 लायनोक्तेषुच (विज्ञानेधरेणातु) श्राद्धेऋतौगच्छतोपिनदोयइत्युक्तंतत्त्वगति  
 कगतित्वेज्ञेयं (बृहस्पतिः) द्विनिशंब्रह्मचारीस्याच्छ्राद्धकृद्ब्राह्मणैःसह ॥ अ  
 न्यथावर्तमानोतुस्यातांनिरयगामिनौ ॥ पुनर्भोजनमध्वानंभारमायाससैथुनं ॥  
 श्राद्धकृच्छ्राद्धभुक्चैवसर्वमेतद्विवर्जयेत् ॥ स्वाध्यायंकलहंचैवदिवस्वापंतथैवच  
 (यत्तु श्राद्धकारिकायांपुराणसमुच्चये)कृत्वातुसुधिरसावनंदिद्वान्श्राद्धमाचरेत् ॥  
 एकंदेव्रीणावाविद्वान्दिनानिपरिवर्जयेदितितन्निर्मूलम् (पृथ्वीचंद्रोदयेयमः)  
 पुनर्भोजनमध्वानंभाराध्ययनसैथुनम् ॥ संध्यांप्रतिग्रहंहोमंश्राद्धभोक्ताऽष्टवर्जयेत् ॥



इतिसंध्यानियेधः प्रायश्चित्तात्पूर्वज्ञेयः (यथाहोशनाः) दशकृत्वः पिवेदापोगा  
यज्याश्चाद्भुक्तद्विजः ॥ ततः संध्यामुपासीत जपेच्च जुहुयादपि (गौडास्तु) सायंसं  
ध्यांपरान्नंचछेदनंचवनस्पतेः ॥ अमावास्यां न कुर्वीतरात्रिभोजनमेव च ॥ द्यूतंच  
कलहंचैव सायंसंध्यां दिवा शयं ॥ आह्नकर्ता च भोक्ता च पुनर्भुक्तिंच वर्जयेदिति  
कामधेनौ वराहाद्युक्तेः ॥ आह्नकर्तुरपि सायंसंध्यानियेधमाहुः ॥ शिष्टास्तु नि  
र्मूलत्वमाहुः ॥ होमनियेधस्तु स्वविषयः ॥ सूतके च प्रवासे च अशक्तौ आह्नभोजने ॥  
एवमादिनिमित्ते युहावयेन्न तु हापयेदिति छंदोगपरिशिष्टात् (तत्रैवादित्यपुराणो)  
निमंत्रितस्तु न आह्नं कुर्याद्भार्यादिताडनं (चंद्रिकायां प्रचेताः) आह्नभुक् प्रातरु  
त्थाय प्रकुर्याद्विंतधावनं ॥ आह्नकर्तान कुर्वीत दंतानां धावनं बुधः (हेमाद्रौ जाबालिः)  
दंतधावनतांबूलंतैलाभ्यंगमभोजनं ॥ रत्यौ यध परान्नंच आह्नकृत्सप्तवर्जयेदिति (वि  
ष्णुरहस्ये) आह्नोपवासदिवसे खादित्वादंतधावनं ॥ गायत्र्या शतसंपूतसंबुध्रा  
श्रयविशुद्ध्यति ॥ पुनर्भोजनमध्वानं यानमायासमैथुनं ॥ दानप्रतिग्रहौ होमं आह्न  
भुक्तवर्जयेत् (सोमोत्पत्तौ) वनस्पतिगते सोमेयस्तु हिंस्याद्वनस्पतिम् ॥ घोरायां भू  
राहत्यायां युज्यते नात्र संशयः ॥ एतद्विहिते धर्मादिव्यतिरेकेणा । वनस्पतिगते  
सोमे संथानं यस्तु कारयेत् ॥ गावस्तस्य प्रगाप्यति चिरकालमुपस्थिताः (वनस्प  
तिगतस्वरूपमाह पृष्ठवीचंद्रोदये व्यासः) त्रिमुहूर्तवसेदर्के त्रिमुहूर्तवसेज्जले ॥ त्रिमु  
हूर्तवसेदगोयु त्रिमुहूर्तवनस्पतौ (कलिकायां वृद्धमनुः) निमंज्य विप्रांस्तदहर्वर्ज  
येन्मैथुनं क्षुरं ॥ प्रसत्तांच स्वाध्यायं क्रोधशौचतथानृतम् ॥ केचिन्निमंत्रणात्पूर्  
वं शुद्ध्यर्थं पूर्वेन्हसौ रंकुर्वतितत्रमूलं मृग्यम् (मरीचिः) यद्यथा पर्वसु पक्षादौ रि  
क्ता भद्रातिथिर्वापि ॥ पाते आह्नं व्रताहेच सौरं वर्ज्यं निशा सुच ॥ यदाकर्तुरश  
क्तायात्पुत्रशिष्यादिः आह्नं करोति तदा कर्त्ता प्रतिनिधिना च प्राशुक्ता नियमाः का  
र्याः ॥ न शक्नोति स्वयं कर्तुं यदा ह्यनवकाशतः ॥ आह्नं शिष्येणापुत्रेणातदान्येना  
पि कारयेत् ॥ नियमानाचरेत्सोपि नियतांश्च वसुंधरे ॥ यजमानोपितान्सर्वाणां  
चरेत्सु समाहित इति हेमाद्रौ वाराहोक्तेः ॥ (स्त्रियस्तु पात्रे) मुक्तकच्छातु यानां  
रीमुक्तकेशीतथैव च ॥ हसते वदते चैव निराशाः पितरोगताः (आश्वलायनः)

अद्विभोजयेद्वास्तौनबालानपियत्नतः ॥ प्राक्पिंडदानाद्गंधाद्यैर्नलंकुर्या  
त्स्वविग्रहम् ॥ वास्तौगृहे ( अथप्राद्वस्तूनि ॥ तत्राशौकुशाः । पृथ्वीचंद्रोदये  
दक्षः ) समित्पुटपकुशादीनां द्वितीयः परिकीर्तितः ॥ अष्टधाभक्तदिने द्वितीयो भा  
गइत्यर्थः ( तत्रैवयमः ) समूलस्तुभवेद्दर्भः पितृणां प्राद्वक्स्मृति ॥ मलेतलो  
कानजयतिशक्रस्यसुमहात्मनः ( व्यासः ) तपसादीनिकार्याणि पितृणां या  
निकानि चित् ॥ तानिस्युर्द्विगुणोर्दर्भः सप्तपत्रैर्विशेषतः ( शालंकायनः ) सपिंडी  
करणां यावदुजुर्दर्भः पितृक्रिया सपिंडीकरणादूर्ध्वद्विगुणोर्विधिवद्भवेत् ( शंखः )  
अनन्तगर्भितांसाग्रं कौशाद्विदलमेव च ॥ प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्  
( हारीतः ) पवित्रं ब्राह्मणास्यैव चतुर्भिर्दर्भपिंजुलैः ॥ एकैकं न्युदमुद्दिष्टं  
गोवर्गो यथाक्रमम् ( स्मृत्यर्थसारे ) सर्वेषां वा भवेत्तद्वाभ्यां पवित्रं ग्रैथितं नवम्  
( रत्नावल्यास ) द्वयोस्तु पर्वणोर्मध्ये पवित्रं धारयेद्बुधः ( हेमाद्रौस्कांदे ) अ  
नामिकाधृतादर्भाह्यो कानां मिकयापि वा ॥ द्वाभ्यामनामिकाभ्यां तु धार्ये दर्भप  
वित्रके ( पवित्राभावे तु तत्रैव समंतुः ) समूलाग्रौ विगर्भौ तु कुशौ द्वौ दक्षिणोकरे ॥  
सव्ये चैव तथा त्रीन्त्रैविभ्यात्सर्वकर्मसु ( बौधायनः ) हस्तयोस्तु भयोर्द्वाद्वा वासने  
पितृथैव च ( दर्भग्रहणोर्मंत्रमाह शंखः ) विरिंचिनासहोत्पन्नपरमेष्ठिनिसर्गज ॥  
नुदसर्वाणि पापानि दर्भस्त्वस्ति करो भव ( स्मृत्यर्थसारे ) हुं कटुकारेण मंत्रेण सक्त  
चिह्नत्वासमुद्धरेत् ( भारद्वाजः ) प्रेतक्रियार्थं पित्र्यमभिचारार्थमेव च ॥ दक्षिणा  
भिमुखं प्रिच्छ्यात्प्राची तावीतिको द्विजः ( कुशाभावेऽपराकसुमंतुः ) कुशः काशः  
शरोगुंद्रो यवादूर्वाऽथ बिल्वजाः ॥ गोकेशमुजकुंदाश्च पूर्वाभावे परः परः ( काशा  
दौ विशेषमाह शंखः ) काशहस्तस्तु नाचामेत्कदाचिद्विधिशंकया ॥ प्रायश्चित्ते  
न युज्येत्तदूर्वाहस्तस्तथैव च ( पृथ्वीचंद्रोदयेयमः ) सासिमास्युद्धृतादर्भासासिमा  
स्येव चोदिताः ( यद्विंशन्मते ) सासेन स्वादमावास्यादर्भो ग्राह्यो नवः स्मृताः ( गृ  
ह्यपरिशिष्टे ) ये च पिंडाश्चितादर्भायैः कृतं पितृतर्पणम् ॥ अमेध्याशुचिलिप्ताये  
तेषां यागो विधीयते ( लघुहारीतः ) पथिदर्भाश्चित्तौ दर्भविदर्भाय जभमियु ॥ स्तर  
णासर्नपिंडेषु यदुक्ता तत्परिवर्जयेत् ॥ ब्रह्मयज्ञे च ये दर्भा ये दर्भाः पितृतर्पणम् ॥ हता



मन्त्रपुरीयाभ्यांतिषांत्यागोविधीयते ( हेमाद्रौ ) अन्यानिचपवित्राणि कुशदूर्वा  
 त्मकांनिच ॥ हेमात्मकपवित्रस्य ह्येकांनार्हातिवैकलास ( अथहविः ) ( हेमा  
 द्रौप्रचेताः ) कृष्णामायास्तिलाश्चैव श्रेयाः स्युर्यवशालयः ॥ महायवात्रीहियवा  
 स्तथैवचसधूलिकाः ॥ कृष्णाः प्रवेताश्चलोहाश्चग्राह्याः स्युः प्राद्वकर्मणि ॥ महा  
 यवावेणुबीजं । सधूलिकायावनाला इति हेमाद्रिः ( कल्पतरुश्चभारते ) वर्धमा  
 नतिलं प्राद्वमसद्यं मनुरब्रवीत् ॥ सर्वकामैः सयजतेयस्ति लैर्यजतेपितृन् ( चंद्रि  
 कायां देवलः ) इष्टापूर्तमृताहेचदर्शतृद्वयष्टकासुच ॥ पात्रेभ्यस्तेषु कालयुदेयं  
 नैवकुभोजनं ( सायणीये ) अगोधूमं च यच्छ्राद्धं मायमुद्रगविवर्जितं ॥ तैलपक्वेतर  
 हितं कृतमप्यकृतं भवेत् ( हेमाद्रावविः ) अगोधूमं च यच्छ्राद्धं कृतमप्यकृतं भवेत्  
 ( तत्रैवब्राह्मे ) यवैर्ब्रीहितिलैर्मयिर्गोधूमैश्चराकैस्तथा । संतर्पयेत्पितृन्मुद्रगै  
 र्प्रयामाकैः सूर्यपद्मैः ॥ नीवारैर्हरिण्यामाकैः प्रियंगुभिरथार्चयेत् ॥ ( हेमाद्रौका  
 र्णाजिनिः ) यदि संजीवतश्चासीत्तद्दद्यात्तस्य यत्नतः ॥ सत्पुत्रोदुस्तरं मार्गं ततोया  
 तिनसंशयः ( कलिकायामाश्वलायनः ) कदल्यादिफलैः शस्तेर्मूलैराद्रादिकैरपि  
 गोरसैर्मधुना दध्नाश्चाद्धे संतर्पयेत्पितृन् ॥ कदल्याम्रफलादीनिश्चाद्धे संपादयेत्सु  
 धीः ( हेमाद्रौ पृथ्वीचंद्रोदये च मार्कंडेयः ) गोधूमैरिसुभिर्मुद्रगैः सतीनैश्चराकैर  
 पि ॥ श्राद्धेषु दत्तैः प्रीयंते मासमेकां पितामहाः ॥ विदार्याचभसंडैश्चतिलैः शुद्धा  
 टकैस्तथा ॥ कंचुकैश्चतथा कंदैः कर्कधूवदरैरपि ॥ पालेवतैरासुकैश्चाप्यसौदैः  
 पनसैस्तथा ॥ काकोल्यासीरिकाकोल्या तथा पिंडालकैः शुभैः ॥ लाजाभिश्च  
 सधानाभिस्त्रपुसैश्चासुविर्भटैः ॥ सूर्यपाराजकाशाभ्यामिंशुदैराजजंबुभिः ॥  
 प्रियालामलकैर्मुख्यैः फल्गुभिश्चतिलं टकैः ॥ वेवांकुरैस्तालकंदैश्चक्रिका  
 सीरिकावचैः ॥ लोचैः समोचैर्लकुचैस्तथा वैबीजपूरकैः ॥ कुंजातकैः पद्मकलै  
 र्भक्ष्यभोज्यैश्च संस्कृतैः ॥ रागखांडवचोदयैश्च विजातकसमन्वितैः ॥ दत्तैस्तु  
 मासं प्रीयंते श्राद्धेषु पितरो नृणां ॥ सयांकोशहेमाद्यादिव्याख्यावैद्यकाद्यनुसारे  
 रामध्यदेशभाषयानामान्युच्यंते । सतीनैः कलापैः । कलापस्तु सतीनक इत्यमरः ।  
 बहूरीति प्रसिद्धैः ॥ विदार्यातत्कंदेन भसंडजलजं । मखारा इति श्राद्धमंजर्या ।

भूकूष्मांडमित्यन्ये । शृङ्गाटकसिंघाडा । कंचुकः कंचनारः । कंदः सुरगाः ।  
 आशीघ्नः सुरगाः कंदइत्यमरः । कर्कधूः वन्यं सूक्ष्मंबदरं । पालेवतं कोशातकी ।  
 आरुक् अरुई । असोटं अखरोटः । काकोलीं सीरकाकोल्यौ गौडेयुप्रसिद्धौ । पिं  
 डालकं सुयनी । महाराष्ट्राणां मोहलकंद इति प्रसिद्धम् । त्रपुसादयस्त्रयः कर्कटी  
 भेदाः । चिर्भटं खर्बुजम् । सयपाइति दीर्घश्छांदसः । प्रियालं विरौजी । फल्गु  
 उदुंबरं । तिलं टकं पटोलकं । तालकंदः कंदविशेषः । चक्रिकांतिं तिलीविंबा ।  
 सीरिका खीरिणी । मोचं कदलीफलं । लकुचं वडहरम् । मुंजातकं गौडदेशे  
 प्रसिद्धं । पद्म मलंगडा । रागखांडवः पिप्पलीशुंठियुक्तस्तुमुदगयपस्तुखांडवः ॥  
 रागखांडवतांयाति शर्करासंयुतं तु तत् इत्युक्तः पानविशेषः ॥ विजातं लवंगैलाप  
 वक्राणि (मदनरत्ने कौर्म) कालशाकं च वास्तुकं मूलकं कथानालिका ॥ प्रशस्ता  
 नीतिशेषः (हेमाद्रौ पृथ्वीचंद्रोदये च वायुपुराणौ) कालशाकं महाशाकं द्रोणाशा  
 कं तथाद्रिकम् ॥ दिल्वासलकमृद्धीकापनसाघ्रातदाडिमं ॥ चव्यं पालिवटासोट  
 खर्जूरं च कसेरुकम् ॥ कोविदारश्च कंदश्च पटोलं बृहतीफलं ॥ पिप्पलीमरिचं  
 चैव गलाशुंठी च सैधवं ॥ शर्करागुडकपूरंबदरी द्रोणापत्रकं (तथा) मधुकं रामठं  
 चैव कपूरं गुडमेव च ॥ आद्वकर्मणि शस्तानि सैधवं त्रपुसं तथा ॥ रामठं हिंगुः ॥ क  
 सेरुः कोविदारश्च तालकंदस्तथा विसम् ॥ तमालं शतकंदश्च मध्वालुः शीतकंद  
 कम् ॥ कालेयं कालशाकं च सुनिषसं सुवर्चलं ॥ मांसं शाकंदधिसीरं चांबुवेत्रां  
 कुरस्तथा ॥ कटुफलं कौकरीद्राक्षालकुचं मोचमेव च ॥ अलाबं ग्रीवकं चारं कर्क  
 धुर्मधुसाह्वयम् ॥ वैकं कतं नारिकेलं शृङ्गाटकपल्लवकं ॥ पिप्पलीमरिचं चैव पटो  
 लं बृहतीफलं ॥ सबसादीनि चान्यानि स्वादूनि मधुराणि च ॥ नागरं चार्द्रकंदेयं  
 दीर्घमूलकमेव चेति (तथा) शर्करासीरसंयुक्ताः पृथुकानित्यमक्षयाः ॥ द्रोणा  
 शाकं गम इति प्रसिद्धम् । मृद्धीद्राक्षा । आघ्रातं आंबाडा इति प्रसिद्धोदसः । तत्क  
 लं च पालिवतं जंबीरं । पालिआलनि तिगौडप्रसिद्धं वा । खर्जूरं खजूर इति प्रसिद्ध  
 म । कसेरुः जलजः कंदः । कोविदारः कंचनारसदृशः । तालकंदः तालमूली । वि  
 संभसीडं । शतकंदः शतावरी ॥ शीतकंदः । शालुकं सेरुकीति प्रसिद्धम् । का



लेयंकरालसंज्ञःशाकः । दासहरिद्रावेति ( पृथ्वीचंद्रोदयः ) सुनियसंक्र  
 र्कटी । सुदृशंसुलदीयाइतिगौडप्रसिद्धं सुवर्चलं शाकविशेषः । कटुफलं श्री  
 पर्णावृक्षफलं । कौंकणीअम्लतरसाद्राक्षा । तिंदुकांडिंडिसमितिकैदेवः । तिंदु  
 फलंवा । श्रीवक्रफलविशेषः । चारंसुद्रतालं । मधुसाह्वयंमधुकपुष्पंफलंवा ।  
 वैकंकतंचैचीतिगौडाख्यातम् । परुषकंपरुषसमिधप्रसिद्धम् । नागरंशुंठी  
 ( पृथ्वीचंद्रोदयेब्राह्मे ) आम्रमाप्रातर्कंबित्वंदाडिमंबीजपूरकं ॥ प्राचीनामल  
 कंसीरंनारिकेरंपरुषकं ॥ नारंगकंचखर्जूरंद्राक्षानीलकर्पित्यक्रम ॥ एतानिफ  
 लजातानिआद्धेदेयानिन्यत्नतः ( मात्स्ये ) अन्नंतुसदधिसीरंगोघृतंशर्करान्वि  
 तम् ॥ मासंप्रीणातिसर्वान्पितृ नित्याहकेशवः ( याज्ञवल्क्यः ) हविष्यान्ने  
 नवैमासंपायसेनतुवत्तरम् ॥ मात्स्यहारिणाकौरभ्रशाकुनच्छागपार्वतैः ॥ से  
 रारौरववाराहशाशैर्मासैर्यथाक्रमं ॥ मासवृद्ध्याभितृप्यंतिदत्तैरिहपितामहाः  
 खड्गामियंमहाशाल्यंमधुमुन्यन्नमेवच ॥ लोहामियंकालशाकंमांसंवाध्रीणाम  
 स्यच ( निगमः ) त्रिःपिबंतित्रिंद्रियसीणांश्वेतंवृद्धमजापतिम् ॥ वाध्रीणास्तुतंप्रा  
 हुर्याज्जिह्वाःश्राद्धकर्मणि ॥ वाध्रीणासोजरच्छागइतिमेधातिथिःकात्यायनः ।  
 छागोस्तनपानालभ्यःशेयारिणाक्रीत्वालब्धवावास्वयंमृतानांवाहृत्यपचेत् । ( कौ  
 र्मे ) क्रीत्वालब्धवान्स्वयंवायमृतानाहृत्यप्रवाहिजः ॥ दद्याच्छाद्धेप्रयत्नेनतदस्यास  
 द्यमुच्यते ( आद्धेदत्तस्यमांसस्याभसरोदोयमाहमनुः ) नित्युक्तस्तुयथान्यायं  
 योमांसंनान्तिमानवः । सप्रेत्यपशुतांयांतिसभवानैकविंशतिम् ॥ अत्रबहुयुवच  
 नेषुआद्धेमांसमधुनोःप्राशस्त्योक्तेः ॥ विनामांसेनयच्छाद्धंघृतमप्यकृतंभवेदिति  
 हेमाद्रौदेवलोक्तेः । यच्छाद्धंमधुनाहीनंतद्रसैःसकलैरपि ॥ सिष्टाक्षैरपिर्युक्तंपि  
 तृणांनैवतृप्तये ॥ अणुमात्रमपिआद्धेयदिनस्याच्चमाक्षिकम् ॥ नासापिकीर्तनी  
 यंस्यात्तपितृणांप्रीत्येतत्तदितिहेमाद्रौब्राह्मोक्तेश्च ॥ मांसमधुनोःआद्धेनियतत्वं  
 गम्यतेगौडनिबंधेमात्स्यसुसंतुक्तेः ॥ मध्वभावेगुडोदयःसीरस्यचतथादधि ॥  
 नलभ्यतेघृतंयत्रकुर्यात्तघृतवतीजपं ( आद्धकर्तृकायांनागरखंडे ) कथंचिद्यदि  
 विप्रेभ्योनदत्तंभोजनेमधु ॥ पिंडास्तुनैवदातव्याःकदाचिन्मधुनाविना ॥ वृहत्प

राशरस्तुमांसनिषेधति ॥ यस्तुप्राणावधं कृत्वा मांसैस्तर्पयते पितृ न ॥ सविद्वां  
 ष्च दनं दग्धवाकुर्यादंगारविक्रयम् ॥ क्षिप्त्वा कूपे यथा कचिद्बाला आदातुमिच्छ  
 ति ॥ पतत्यज्ञानतः सोऽपि मांसेन श्राद्धकृतया ( सप्तव ) सर्वथान्नं यदानस्यात्तदैवा  
 मिषमाश्रयेत् ॥ ब्राह्मणाश्च स्वयं नाद्यात्तच्च श्रादिह तं यदि ( भागवतेऽपि ) न दद्यादा  
 मिषं श्राद्धे न चाद्याद्धर्मतत्त्ववित् मुन्यन्नैः स्यात्पराप्रीतिर्यथानपशुहिंसया ॥ त  
 येति शेषः । अत्र केचित् । मुन्यन्नं ब्राह्मणास्योक्तं मांसं सत्रियवैश्ययोः ॥ मधुप्रदा  
 नं गृहस्थसर्वेषां वा विरोधिरिति हेमाद्रौ पुलस्त्योक्त्याः व्यवस्थामाहुः ( पृथ्वी  
 चंद्रोदयस्तु ) असता गोपशुश्चैव श्राद्धे मांसं तथा मधु ॥ देवराचक्षुतोत्पत्तिः कलौ  
 पंचविवर्जयेदिति निगमोक्तेः ॥ वरातिथिपितृभ्यश्च पशूपाकरणाक्रियेति क  
 लिवर्ज्येषु हेमाद्रावा दित्यपुराणात् ( बृहन्नारदीये ) मांसदानं यथा श्राद्धेवानप्रस्था  
 श्रमस्तथे त्युक्त्वा इमान् धर्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्मनीषिणा इति बृहन्नारदीयेभि  
 र्वा नाच मांसविधिः कलिव्यतिरिक्तविषयः ॥ कलौ मांसनिषेधानां च देशाचारा  
 त्वव्यवस्था ॥ तथा च बृहन्नारदीये श्राद्धं प्रकृत्य । यथाचारं प्रदेयं तु मधुमांसादिकं त  
 था ॥ देशाचाराः परिग्राह्यास्तत्तद्देशीयजैर्नरैः ॥ अन्यथा पतितो ज्ञेयः सर्वधर्मव  
 हिठकृत इति ॥ यस्मिन् देशे पुरे ग्रामे वै विद्ये नगरेऽपि वा ॥ यो यत्र विहितो धर्मस्तं धर्मं  
 न विचारयेदिति भृगूक्तेः प्रचेत्याहुस्तन्न ॥ होतृकाधिकरणान्यानेन देशविशेष  
 व्यवस्थापकप्रदकल्पनायोगात् । निरूपितं च तत्पितामहद्वरगौर्मांससोमां  
 सायामिति दिक् ॥ ( मनुः ) संवत्सरं तु गव्येन पयसा पायसेन च ॥ वाध्रीणासस्य  
 मांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्यिकी । त्रिप्रिवत्त्वं द्वियक्षीणांश्चेत्तं वृद्धमजापतिं । वाध्रीणा  
 संतुतं प्राहुर्वाजिकाः श्राद्धकर्मणि ॥ ( क्षीरादीं विशेषमाह हेमाद्रौ हुमंतुः ) पयो  
 दधिघृतं चैव गवां श्राद्धेषु पावनम् ॥ महिषीणां घृतं प्राहुः श्रेष्ठं तु पयः क्वचित् ( या  
 जवल्क्यः ) संधिन्यनिर्देशावत्सा गोपयः परिवर्जयेत् ॥ औष्ट्रमेकशफं स्त्रैरासार  
 रायकमथा विक्रम ( हेमाद्रौ हारीतः ) नवतूतायाः सप्तरात्रादित्येके दशरात्रादि  
 त्यपरे मासे नोपेयुषं भवतीति धर्माविदः ॥ सतद्रजोभावपरम् ( देवलः ) अजाविम  
 हिषीणां तु पयः श्राद्धेषु वर्जयेत् । विकारानपयसश्चैव माहिषं तु घृतं हितम् ( तत्रै



ब्राह्मे ) माहियं वामरं मार्गमाविकैकशफोद्धवम् । स्त्रैरामौष्टु पाचितं च दधि  
 क्षीरं त्यजेत्तद्वृतम् ॥ सगुडं मरिचाक्तं तु तथा पर्युषितं दधि । दीर्घातक्रमपेतं च  
 नद्यास्वादं च फेनवत् ( माहियापवादोपराक् ब्राह्मे ) देयं तक्रंतुसद्यस्कं नवनी  
 तादनुद्धृतम् । आरगय माहियीक्षीरं शर्करासुतिसंयुतम् ॥ मध्वक्तन्तुहिनं चैव द  
 द्यात्तदमृतं यतः ॥ सुतिः क्षीरशरः । आद्वकौमुद्यां चैवम् ( यद्यपि याज्ञवल्क्येन )  
 अन्नं पर्युषितं भोज्यं स्नेहाक्तज्विरसंस्थितम् । अस्नेहात्प्रिगोधूम यवगोरस  
 विक्रिया इति पर्युषितं दध्यादिभोज्यमुक्तं तथा पिण्डमरीचाक्तस्य पर्युषितदेवो  
 वोच्यते इति हेमाद्रिः ( तत्रैव ब्राह्मे ) कालं शाकं तंदुलीयं वास्तुकं मूलकं तथा ॥  
 शाकसारगयकं चैव दद्याच्छादयेत्तु नित्यशः ॥ तन्दुलीयं सूक्ष्मपत्रमिति हेमाद्रिः ॥  
 महाराष्ट्राणां माठ इति प्रसिद्धम् ॥ आरगय कंफांजीचूचादि ( तत्रैव ) दाडिमं  
 सागधीं चैव नागराद्रकृतिन्तिणीः । आम्नातकज्जीरकञ्च कुवरं चैव योजयेत् ॥  
 सागधीपिप्पली । नागरं शुंठी । कुवरं कुस्तुम्बरं । धागिया इति प्रसिद्धम् ( वाय  
 वीये ) अगस्तस्याशिवास्ताम्राः कायायाः सर्वसर्वच । शिखानवपल्लवाः ( प्रभा  
 सखंडे ) आरामस्य तु सीमंताः कलापाः सर्वसर्वच ॥ सीमन्तानवपल्लवाः ( कौर्म )  
 तमालं शतकन्दज्ज्वमध्वालुं शीतकन्दली । मध्वालुः मोहलकन्दः । शीतकन्दली  
 रातालु इति प्रसिद्धम् ( अथ वज्र्यं मार्कण्डेयपुराणे ) यच्चोत्कैचादिना प्राप्तं पतितं  
 द्युपार्जितम् । अन्यायकन्याशुल्कार्यद्रव्यञ्चात्र विगर्हितम् ॥ पित्र्यर्थमेप्रयच्छ  
 स्वेत्युक्ताय चाप्युपाहतं ( चन्द्रोदये शंखः ) भूस्त्वगांशिरसाशिग्रुपालङ्कीमृचु  
 कन्तया । कूष्माण्डालाम्बुवार्त्तिक कोविदारं प्रचवर्जयेत् ॥ पिप्पलीं मरिचं  
 चैव तथा वैपिण्डमूलकम् । कृतञ्च तवरां सर्ववंशाग्रं च विवर्जयेत् ॥ राजमायान  
 मसूरांश्च कोद्रवानकोरदूयकान् । लोहितानवृक्षानियसिान् आद्वकर्मणा वज्र  
 येत् ॥ भूस्त्वगांकाशमीरदेशे प्रसिद्धम् । सुरसानिर्गण्डीति माधवः ॥ तुलसीति पृ  
 थ्वीचन्द्रोदयः । साचभक्ष्यत्वेन निषिद्धान् पृष्ठपत्वेनेति गौडाः ॥ पालंकीपाल  
 क इति प्रसिद्धा । मृचुकं जलजः शाकः । समुक्कमिति पाटेखादिरशाक इति हेमाद्रिः ।  
 मरीचान्याद्रीणीति हेमाद्रिः । कृतं लवरां सांभरभिन्नम् । सैधवं लवरां चैव तथा

मानससम्भवम् । यच्चसामुद्रिकंभवेदिति शूलपाणौपाठः । पवित्रेपरमेह्येतेप्रत्य  
 क्षेत्रपिनित्यशक्तिवायवीयोक्तेः । मानससाम्भरम् ( यत्तुभविष्यम् ) तर्जन्या  
 दन्तकायञ्चप्रत्यसंलवणांतयेति । तत्रक्षारलवणांस्वारितप्रसिद्धनिधिद्वं ॥ भुक्त्वा  
 तुक्षारलवणांविरात्रन्तुवनेवसेदिति ब्राह्मोक्तेरिति शूलपाणिः । क्षीरलवणा  
 मितियावत् । क्षीरमिश्रलवणांनिधिद्वमित्तिवाचस्पतिः ॥ राजमायाःरतरादिति  
 प्रसिद्धाः । कोरदूयकः चराकोद्वः ( चन्द्रिकायांशंखः ) पिण्डालकंचतुंडी  
 रंकरमर्दचनालिकं । कूष्माण्डंबहुबीजानिश्चाद्वेदत्वाव्रजत्यधः । पिण्डालकंम  
 हाराष्ट्रेयुपेण्डरमितिप्रसिद्धम् । तुण्डीरंदिम्बीफलमितिकैदेवः । करमर्दकरवं  
 दमितिप्रसिद्धम् । तत्रैव । विडालोच्छिष्टमाघ्रातंश्चाद्वेयत्नेनवर्जयेत् । कूष्माण्डं  
 माहिषीक्षीरमाढक्योराजसर्षपाः ॥ चराकाराजमायाप्रचदनन्तिश्चाद्वन्नसंश  
 यः ( वृद्धपराशरः ) करीरफलपुष्पाणि विडंगसरिचानिच । जम्भारिकास  
 जम्बीरासपक्वबीजपरकम् ॥ जंत्वलांबूनिपिप्पल्यःपटोलंपिण्डसूलकम् । स  
 सूरजंनपुठपंचश्चाद्वेदत्वापतत्यधः ॥ जम्बूसूक्ष्मा ( माधवीयेचतुर्विंशतिमते  
 यावनालानकुलित्यांप्रच वर्जयन्तिविपश्चितः ॥ यावनालाजोधला ॥ अत्र  
 यानिचराकादीनिविहितनिधिद्वानितेयांविकल्पः । अन्यथा । श्यामाक्षेच  
 राकैःशाकैर्विरेचप्रियंगुभिः । गोधूमैश्चतिलैर्मुद्गैर्मांसंप्रीणायतेपितृ नि  
 ति । गोधूमैरिषुभिर्मुद्गैःसतीनैश्चराकैरपीतिहेमाद्रौकौर्मविष्णुधर्मादिविरो  
 धःस्यात् ॥ पिप्पलीसरीचादेस्तुप्रत्यक्षस्यनिधेधेनत्वन्यद्रव्यमिश्रय ॥ सौवी  
 रतिकतैलवणादिभिस्तुपाकस्यसिद्धिर्महतीहयैस्तु । तद्बीजपूरानसरिचादि  
 योगात्सिद्धम्प्रदेयंनतुदुष्यतीहेतिपृथ्वीचन्द्रोदयेवृद्धपराशरोक्तेः ( तत्रैव ) दा  
 तुश्चयस्मिंसनसोभिलायः श्रद्धाभवेद्यत्रचदीयमाने । आद्वेयुदेयंविधिवत्तदेव  
 तद्वत्तमक्षय्यमितिव्रवन्ति ॥ सतन्निधिद्वेतरविषयम् ( चन्द्रिकायां ) कृष्णा  
 धान्यानिस्वर्गाणावर्जयेच्छाद्वकर्मणि । नवर्जयेत्तिलांप्रचैवमुद्गमायांस्तथैवच  
 ( मात्स्ये ) ससूरशणानिठपावराजमायकुमुम्भिकाः । पद्मविल्वार्कधतूरपारि  
 भद्राट्कृष्काः ॥ नदेयाःपितृकार्येषुपयश्चाजाविकन्तथा । कोद्वोहारवरक



कपित्थमधुकातसी ॥ सतान्यपिनदेयानिपित्थभ्यः श्राद्धमिच्छता ॥ निठपावाः व  
 लाः ( यत्तुमार्कडैयः ) प्रियंगवः कोविदारनिठपावाश्चावशोभनाइतितत्रनि  
 ठपावः श्वेतशिंबीतिदानसागरेश्राद्धप्रकाशेचोक्तम् ॥ द्वित्वंचरिक्तनिषिद्धं ॥ जं  
 बीरं रक्तवित्वंचशालस्यापिफलंत्यजेदितिब्राह्मोक्तेः ॥ पारिभद्रोनिंबतरि  
 त्यमरः ( रक्तमंदारइतिहेमाद्रिः ) आटरूयोवासातपुठपं । उद्धारः कांचनारः । म  
 धूकं ज्येष्ठोसध्वीतिचंद्रिका । चरकावनमुद्गाः ( हेमाद्रौवल्गांडे ) आसतरूढ  
 मन्नाद्यं पादोपहतमेव च । अमेध्यैर्जगमैः स्पृष्टं शुठकंपर्युषितंचयत् । द्विःस्त्रिचंय  
 रिदग्धंचतथैवाग्रावलेहितम् ॥ शर्कराकीटपायाणैः केशैर्यच्चाप्युपद्रुतम् ॥ पि  
 रायाकंसंयितंचैवतथातिलवणांचयत् ॥ सिद्धाः कृताश्चयेभक्ष्याः प्रत्यक्षलवणी  
 कृताः । वाससाचावधूतानिवर्ज्यानिश्राद्धकर्मणि ॥ द्विस्त्रिचंयत्सकृत्पाकेनभ  
 क्ष्यमपिहिंशुजीरकादेसंस्कारार्थंपुनःवच्यतेतद्वर्ज्यम् ॥ यत्तुतिक्तशाकान्नवि  
 कारादिद्विःपाकेनैवभक्षणाहंतर्त्तनिषिद्धम् ॥ अग्रावलेहितमास्वादितपूर्वं । प  
 र्युषितस्यसदानियेधेपिपुनर्वचनम् । अपूपार्द्धकरंभाश्चधानावटकसंस्तवः ।  
 शाकंमांसममूरंचसुषंक्षुसरमेव च । यवागः पायसंचैवयच्चान्यत्स्नेहसंयुतम् । स  
 र्वं पर्युषितंभोज्यंशुठकंचेत्परिवर्ज्ययेदितिमाधवीयेयमोक्तावटकादेरपिपर्युषि  
 तस्यनियेधार्थमितिचंद्रिकादयः ( वर्ज्येषुविश्वाभिन्नः ) कपित्थंकुरुकंचैवनालि  
 केचपैत्तिकम् । जंबूफलादिपक्वंचपिरायाकंतंदुलोयकम् ( हेमाद्रौयटुत्रिंशन्म  
 ते ) वर्ज्यामर्कटकाः श्राद्धेराजमायास्तथैव च ॥ मर्कटकाः लाकाइतिप्रसिद्धाः  
 ( पैडोतसिः ) वृत्ताकंनलिकापोतकुसुंभाप्रमंतकानिच । शाकानामभक्ष्याइति ।  
 पोतंपोईतिप्रसिद्धम् ( मार्कडैयः ) वर्ज्याश्चाभियवानित्यंशतपुठपागवेधुकाः ।  
 जंबीरकंफलंवर्ज्यकोविदाराश्चनित्यशः ॥ अभियवंशुक्ताइतिचंद्रिका । सं  
 धानकमितिपृष्ठवीचंद्रः । शतपुठपाओंवाइतिप्रसिद्धम् ( शाठ्यायनः ) मारियं  
 नालिकाचैवरक्तायाचकलंबिका । असुरान्नमिदंसर्वपितृणानोपतिष्ठते ॥ मा  
 रियंमध्यदेशेमरुसाइतिसहाराष्ट्रेयुराजगिराइतिचप्रसिद्धम् ॥ कलंबिकावेरावा  
 इतिपत्रा ॥ तत्रैवगांधारिकापटोलानिश्राद्धकर्मणिवर्जयेत् ॥ गांधारिकातंदु

लीयमितिचंद्रिका । जवासारव्यादुरालिभेतिकैदेवः (भारते) हिंगुद्रव्येषुशाके  
 युअलाबुलशुनंतथा । कुकुंडकान्यलाबुनिहृणांतवरामेवच । पुनरलाबुग्रहणामु  
 भयालाबुनियेधार्थमितिपृथ्वीचंद्रः ॥ कुकुंडकंवर्तुलकृपाकम ( तत्रैव ) कुस्तुंबु  
 संकलिगोत्थंवर्जयेदाम्लवेतसं (हेमाद्रौब्राह्मे ) वार्ताकिंपंचशिंवंचलोमशानिफ  
 लानिच । कलिंगंरक्तचारंचवीणाकंधृतचारकम ॥ कपालंकाचमारिचकरंजं  
 पिडमूलकम । गृञ्जनंचुलिकांचैवगाजरंजीवकंतथा ॥ वृन्ताकंश्चेत । कंडुरांश्चेत  
 वृन्ताकंकूठमांडंचविवर्जयेदितिदेवलोक्तेः ॥ तेनहृणास्यनियेधइतिचंद्रिकामा  
 धवौवस्तुतस्तुसदाश्चेतनियेधात्पुनःश्राद्धेनियेधोव्यर्थः । तेनभक्ष्यस्यकृणावृन्ता  
 कस्यापि नियेधार्थमिदमिति वयम् ॥ कंदूराकपिकच्छूः । कुंभांडंवृत्तालाबुः ।  
 पं वंशिंवंचलमसूरराजमायमठकुलित्याः । लोमशानिकपित्थानि । रक्तचारंलो  
 हितचारफलम् । वीणाकंकृणादीर्घकर्कटी । घृतचारकंचिरस्थितचारफलम् ।  
 चारोलीतिप्रसिद्धम् । कपालंनारिकेलम् । काचंकचूवृक्षफलं । मारीचंआइ  
 मरीचानि । गृञ्जनंपलांडुभेदः । पश्चिमदिशिप्रसिद्धः । नतुगाजरम् । तस्यघृ  
 थयुक्तेः । हेमाद्रिणातुगृञ्जनंगाजरमेवोक्तम् । गौडश्राद्धकौमुद्यामप्येवंतंचिंत्य  
 म ॥ चुक्रिकाचिरकालशुक्लं पानकम् (चंद्रिकायांहारीतः) नवदल्लक्षोदुंबरशो  
 लुर्दक्षित्यनीपमातुलिंगानिभक्षयेत् ॥ शेलुःभोकरसंज्ञः । दक्षित्यंकपित्थं (स्मृ  
 तिसारे) क्षीरेतुलवगांदत्वाउच्छिष्टं पिचयद्वृतम् । स्नानंरजकतीर्थेषुताम्रेण  
 व्यंशुरासमम् (गौडनिबंधसागरेस्मृतिः) नारिकेरोदकंकांस्ये ताम्रपात्रेस्थितंम  
 धु । गव्यंचताम्रपात्रस्थंमद्यतुल्यंघृतंविना ॥ ताम्रपात्रेघृतंमांसंपंचरात्र्यंघृतेतरत्र  
 आमिषंतुगावांसांसंदधिमद्यंपयोः ॥ द्रव्यांतरयुतंमांसंपयसासंयुतंक्षि ॥ पयो  
 नुघृतमारिचताम्रपात्रेनदुहयति (अथजलम् याज्ञवल्क्यः) शुद्धिरोद्धृष्टिकृतोयंप्र  
 कृतिस्थंमहीगतं (वर्ज्यजलमुक्तंहेमाद्रौब्रह्माण्डे) दुर्गंधिफेनिलंसासंयुक्तं  
 पल्वलोदकम् । नभवेद्यत्रगीतृतिर्नक्तंयच्चाप्युपाहृतम् ॥ यच्चसर्वार्थमुत्सृज्यंवा  
 भोज्यनिपानजम् ॥ तद्वर्ज्यंखिलंतातसदैवश्राद्धवर्त्तमानम् ॥ निषाचोजलाशयः  
 (शुद्धितत्त्वेशोखः) स्नानमाचमनंदानं देवतापिदत्तप्राप्तम् । शूद्रोदकैर्नकुर्वीतत



धामेध्यादिनिःसृतैः ( हेमाद्रावादिन्यपुराणो ) चिरंपर्युषितंवापिशूद्रस्पृष्टमथापि  
 वा ॥ जाल्व्याः स्नानदानादौ पुनायेव सदापयः ( कात्यायनः ) अपोनिशिनगृ  
 लोयाचपिबेचक्रदाचन ॥ उद्धृत्यास्तिमुपर्थग्नेधीम्नोधास्नइतीरयेत् ( रजोदो  
 येतुप्रागुक्तंनारदीये ) रयंजेत्पर्युषितेपुष्टपंत्यजेत्पर्युषितंजलम् । नत्यजेज्जाल्व  
 वोतोयंतुलीसीविल्वंपचकम् ( अन्यान्यपिपृष्टवीचद्रोदयेमात्स्ये ) मध्याह्नः  
 खड्गपात्रंचतथानेपालकंरत्नः । रौप्येदर्भास्तिलागावोदौहित्रपचाष्टमःस्मृतः ॥  
 पापंकुर्त्तिसतमित्याहुस्तस्यसंतापकारिणः । अष्टावेतेयतस्तस्मात्कुतपाइतिविश्रु  
 ताः ( ब्राह्मे ) यतिस्त्रिदंडः कसत्तारजंतपात्रमेवच । दौहित्रकुतपः कालपचाष्टमः क  
 ष्णाजिनंतथा ॥ श्रेष्ठानीतिशेषः ॥ दौहित्रंखड्गपात्रमितिकल्पतस्तः ( अपरा  
 केस्मृत्यंतरे ) अपरंदुहितुश्चैवखड्गपात्रंतथैवच । घृतंचकपिलायागोर्दौहित्र  
 मितिकीर्तितम् ( ब्रह्मांडे ) अमावास्यामतेसोमेयातुखादतिगोस्तराम् । तस्या  
 गोर्ध्रवेत्सीरंतदौहित्रमुदाहृतम् ( स्मृतिसंग्रहे ) उच्छिष्टंशिवनिर्माल्यंवांतंचमृ  
 तकपर्दम् । आद्वेसप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः ॥ उच्छिष्टं वत्सस्यदुग्ध  
 मित्यर्थः ॥ शिवनिर्माल्यंगोदकं । वांतंमधु । मृतकपर्दंतसरीपट्टम् ( तिलेष्टवा  
 पस्तंबः ) अटव्यायेसमुत्पन्नाअकृष्टफलितास्तथा । तेवैशाद्वेपवित्राः स्युस्तिला  
 स्तेवेत्तिलास्तिलाः ॥ अभावेग्राह्याः ॥ गौराः कृष्णास्तथाररायास्तथैवत्रिविधास्ति  
 लाइतिब्राह्मीक्तेः ( अथवज्यानिचंद्रिकायांयमः ) कुक्कुरोविड्वराहश्चकाक  
 ष्चाथैविडालकः । वृथलीप्रतिप्रचवृथलः यंदेवीरारजस्वला ॥ एतेतुशास्त्रकाले  
 वैवर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ खंजः काराः कुराः श्वीदातुः प्रेक्ष्यकरस्तथा । न्यनांगो  
 र्प्रतिरिक्तंमस्तसप्यप्रत्येत्ततः ( वायवीये ) अक्षिपप्रयेयुरेतेतुर्वादेवैहव्यैकव्य  
 योऽउत्सृष्ट्यंप्रधानित्यंसंस्कारस्वाप्रदिस्मृतः ( सुमंतुः ) चांडालादिब्रीक्षितम्  
 त्रसमीप्यसंत्यवमृद्धस्मिहिराद्यैवकस्यंशति ( तत्रैवजमदग्निः ) शुद्धप्रत्योथकू  
 य्वांड्यः पावसान्यस्तरतसमाः । पुतेनवर्षिणास्मिर्चिदोयमपानुदत्त ( चंद्रोदये )  
 पादुकोपाचहौचर्वाचवर्त्तावरंतथा ॥ रक्तपुष्टंरक्तमाजरि अक्षिभूमौविधर्जयेत्  
 ( निरायदीपि ) घंटानिनादौहयसंनिधानिशंखकंशंखकदलीदलंच ॥ एतन्मत्तजात्य



कहयारिजानिश्चाद्वस्यवैराग्यकरायमनि ॥ हयारिजंमहिषीसीरादि । अ  
यश्चाद्वदिनकृत्यस (चन्द्रोदयेउशताः ) गोमयोदकैर्भूमिभाजनशौचंकुर्यात् (प  
राशरः) कांजिकंदधितक्रंचशृतंवाशृतमेवच । पूर्वमेव नदातव्यमेकोहिष्ठेथपार्व  
गो (हेमाद्रौपराशरः) गृह्णाग्निशिशुदेवानांब्रह्मचारितपस्विनाम् । तावन्नदीय  
तेकिंचियावत्पिंडाच्चनिर्वपेत् ॥ ( कौर्म ) तिलानर्वाकिरेत्तत्रसर्वतोबंधयेदजान  
(तत्रैवदेवलः) तथैवयंत्रितोदाताप्रातःस्नात्वासहांवरः । आरभेतनवैःपात्रैरन्नारं  
भंचवांधवैः ॥ अत्रात्मनेपदात्स्वयमेवपाकःकार्यः ॥ अशक्तौपत्न्यातदभावेबां  
धवैः ॥ ततस्तुनिपपाचाशुसीताजनकनंदिनीतिपाञ्चलिंगादितिहेमाद्रिः (आद्व  
दीपकलिकायामाश्वलायनः) समाप्तप्रवरैर्मित्रैःसपिडैश्चशुभान्वितैः । कृतोप  
कारिभिश्चैवपाककार्यप्रशस्यते (व्यासः) गृहिणीचैवमुस्तातापाकंकुर्यात्प्रय  
त्नतः । निरुपक्षेयुचपाकेयुपुनःस्नानंसमाचरेत् ( पृथ्वीचंद्रोदयेब्राह्मे ) रजस्व  
लांचपाखंडांपुंश्चलींपतितान्तथात्यजेच्छूद्रांतथाबंध्यांविधवांचान्यगोत्रजाम् ॥  
व्यंगकर्णांचतुर्थाहःस्नातामपिरजस्वलाम् । वर्जयेच्छूद्राद्वपाकार्यसमाप्तपितृवं  
शजाम् ॥ साहपितृवंशजभिन्नात्यजेदित्यर्थः ( स्मृतिसारे ) नपाकंकारयेत्पुत्री  
सत्यांवाप्यन्यगोत्रजाम् । सुतबंध्यांचगर्भद्वनीं गर्भिणींचैवदुर्मुखीम् ( पाक  
भांडानितुहेमाद्रौनाराखंडे ) सौवर्गाज्ययरोप्याणिकांस्यताम्रोद्वज्जिह्व ।  
मार्तिकान्यपिभन्यानि नूतनानिदृढानिच ( तत्रैवादित्यपुराणे ) पचेदन्नानि  
सुस्तातःपात्रेयुशुचियुस्वयं । स्वर्गादिघातुजातेयुमृन्मयेद्वोपवादिजः ॥ अर्चि  
द्रेष्टव्यलिलिप्तेयुतथानुपहतेयुच । नायसेयुनभिन्नेयुद्वयितेद्वपिकर्हिचित् ॥ पूर्व  
कृतोपयेषेयु मृन्मयेयुनतुक्चित् ( वायुपुराणे ) तृकदाचित्पचेदन्नमयस्था  
लीयुमेतकं ॥ अयसोदर्शनादेवपितरोपिद्वन्तिहि ॥ कालाग्रसंविशेद्वेद्यानिंदति  
पितृकर्मणि ॥ फलानांचैवशाकावीर्येदुनार्थंनियानितु ॥ जहोनसेपिशुस्त्राणि  
तेषामेवहिंसनिधिः । इत्यतेनेतदस्यान्नस्यमिन्नस्यदर्शनं ॥ आद्वदेशेनुविदुया  
मिपत्तृणांतीर्त्तमिच्छता । महानसेपियुक्तातःसपिकार्यंनदर्शतम् (तत्रैव) पचमा  
नस्तुर्भाण्डेषुभक्त्याताम्रमयेयुच ॥ समुद्रसर्पिर्गोराव पितृन्दुःखमहार्णवात् ॥



तैजसानामभावेतुपिठरेमृन्मयेपिच । त्वेशुचौप्रकुर्वीतपाकंपित्रर्थमादरात्  
 ( तत्रैवादित्यपुराणे ) पक्वान्नस्थापनात्तुशस्यन्तेदारुजान्यपि । द्रव्यादीन्य  
 पिकायागिण्याज्यैरपिदारुभिः ( यमः ) विवाहेप्रेतकार्येचमातापित्रोःस्ये  
 हनि । नवभागडानिकुर्वीतयज्ञकालेविशेषतः ( अथपाकाग्निः ) हेमाद्रौप्रजा  
 पतिः ) औपासनेनान्नसिद्धिरग्नौकरणामेवच ( पृथ्वीचंद्रोदर्योगिराः ) शाला  
 ग्नौतुपचेदन्नलौकिकेवापिनित्यशः । यस्मिन्नग्नौपचेदन्नं तस्मिन्नेहोमोविधीय  
 ते ( मनुः ) वैवाहिकेग्नौकुर्वीतगृह्यंकर्मयथाविधि । पंचयज्ञविधानंचरंपंक्ति  
 ज्वान्वाहिकीं द्विजः ॥ आदिस्यगृह्यत्वंचोक्तमपरार्कणा(अत्रविशेषःकर्मप्रदीपे)  
 प्रातर्होमन्तुनिर्वर्त्यसमुद्धृत्यहुताशनात् । शेषंमहानसेकृत्वातत्रपाकंसमाचरेत् ॥  
 पाकांतेग्नितमाहृत्यगृह्यारग्नौतुपुनःसिपेत् । ततोस्मिन्वैश्वदेवादिकर्मकुर्यादितं  
 द्रितः ॥ तदभावेलौकिके । ततःपचेयुरन्नानिनिर्वापानंतरंग्रनैः । वैवाहिकेग्न्या  
 वन्यवलौकिकेवापिसंयत इतिकालिकायांसंग्रहेक्तेः ॥ पितृर्थनिर्वापंकृत्वेत्य  
 र्यः ( अतएवहेमाद्रौवायुपुराणे ) पितृर्थनिर्वपेद्भूमौकुर्वेदादर्भसंस्कृते ( तत्रैव  
 पाप्ममात्स्ययोः ) अग्निमात्रिर्वपेत्पैत्रचरुंवासममुष्टिभिः । पितृभ्योनिर्वपासी  
 तिसर्वदक्षिणतोऽन्यसेत् ॥ चरुग्रहणाच्चशाकादावितिहेमाद्रिः ॥ पिण्डपितृह्य  
 ज्ञार्थपाकविषयोऽयंनिर्वापइतितुयुक्तं ॥ अयंचेतरेयामग्निः ॥ आश्वलायनाना  
 न्तुगुरुणाभिमुताग्रन्यतोवापक्षीयमाणाअमावास्यायांशान्तिकर्मकुर्वीरन्नि  
 त्यादिसूत्रेणापचनाग्नेस्त्यागमुक्ता इहैवायमितरोजातवेदाइत्यर्धर्चनंशमामयी  
 ग्रामरिणाभ्यामग्निमंथेत्सपचनाग्निर्भवतीतिसूत्रेऽतौचोक्तेः ॥ पचनापनावे  
 वपाकः ॥ बौधायनेनाप्युक्तंआहृतपचनार्गिसमीपासतंवाभिप्रव्रजन्तीति ॥ स्मा  
 त्त्विग्नौपाकस्त्वन्यशाखाविषयइतिकेचित् ॥ वस्तुतरतुपूर्वाक्तस्यसर्वाधानवि  
 षयत्वंयुक्तम् ॥ शिष्टाचारेपिपचनोद्दिश्यते ॥ अण्डविलायासपिसर्वाधानप  
 लेवैश्वदेवग्राह्यं पचनेकुर्यादन्यथोपानेइत्युक्तं ॥ अग्नौकरणान्तुप्रयोगापरि  
 जातादिभिरान्दिस्कादिसर्वग्राह्येषु पिण्डपितृह्यज्ञव्यतियंशोक्तेलौकिकेपचने  
 वापाकेकृतेपिगृह्यारग्नौपक्वचरुंलौकिककार्यमितिप्रतिभाति ॥ मदनरत्नेष्वेवम् ॥

विधुरोत्सन्नाग्न्यादेस्तुपृष्ठोर्दिविविधानेनानिग्नसम्पादनमित्युक्तंहरिहरभाट्ये  
 इतिपाकारिणः ( चन्द्रिकायांमार्कण्डेयः ) अह्नःयत्सुमुहूर्तेषु रातेषुप्रयतान्दि  
 जान । प्रत्येकंप्रेषयेत्तेषां प्रदायामलकैदकम् ( देवतः ) ततोनिवृत्तेमध्याह्ने  
 कृत्तरोमनखान्द्विजान् । अभिराग्न्ययथान्यायंप्रयच्छेदंतधावनम् ॥ तैलमभ्य  
 ज्ञनंस्नानंस्नानीयं चपृथग्विधम् । पात्रैरौदुम्बरैर्दद्याद्देवैकपूर्वकम् ॥ औदुम्ब  
 रैस्ताम्रमयैः । अत्रक्षौरामलकस्नानादिनिधिद्वितीय्यादिव्यतिरिक्तविषयमि  
 तिहेमाद्रिर्माधवश्च ( यत्तुचन्द्रिकायांप्रचेताः ) तैलमुद्धर्तनंस्नानंदद्यात्पूर्वाह्ण  
 वच । आह्णभुग्भ्योनखप्रमथुच्छेदनंतुनकारयेदितितन्निधिद्वितीय्यादिविषयम्  
 निधिद्वितीय्यादितुप्राणक्तम् ( अभ्यंगेतुर्कलिकायांकात्यायनः ) तैलमुद्धर्तनेदेये  
 ब्राह्मणोभ्यःप्रयत्नतः । तैरभ्यंगश्चकर्तव्योवर्ज्यकालंनचिन्तयेत् ( अपरार्कंप्र  
 चेताः ) स्नातोधिकारीभवतिदेवैपिच्येचकर्मणि । आह्णकृच्छुक्लवासाःस्यान्मौ  
 नीचविजितेन्द्रियः ( हेमाद्रौजाबालिः ) ताम्बूलंदन्तकायंचस्नेहस्नानमभोज  
 नम् । रत्यौषधंपरान्नानि आह्णकर्ताविवर्जयेत् ( वस्त्रेविशेषमाहतत्रैवभृगुः )  
 नग्नःस्यान्मलवद्वासा नग्नःकौपीनकेवलः । द्विकच्छोनुत्तरीयश्चअकच्छो  
 वस्त्रसवच ॥ नग्नःकाषायवासाःस्यान्नग्नप्रचाद्रपटःस्मृतः । नग्नोद्विगुणा  
 वस्त्रःस्यान्नग्नोरक्तपटःस्मृतः ॥ नग्नस्तुस्निग्धवस्त्रःस्यान्नग्नःस्युतपटस्तथा ॥  
 ततःकर्ताऊर्ध्वपुंड्रं कुर्यात् ॥ जपेहेमेतथादानेस्वाध्यायेपितृकर्मणि । त  
 त्सर्वनश्यतिसिप्रसूध्वपुंड्रं विनाकृतमितिहेमाद्रावुक्तेः ॥ यज्ञोदानंजपोहोमः  
 स्वाध्यायःपितृकर्मच । वृथाभवतिविप्रेद्रऊर्ध्वपुंड्रं विनाकृतमितिबृहन्नारदीया  
 त् ॥ ऊर्ध्वचतिलकंकुर्यात्तदेवैपिच्येचकर्मणीतिवृद्धपराशरोक्तेश्च(अन्येतु )  
 ऊर्ध्वपुंड्रं द्विजातीनामग्निहोत्रसमोविधिः । आह्णकालेतुसंप्राप्तेकर्ताभोक्ताच  
 तत्त्यजेत् ॥ वामहस्तेचक्षुस्तुगृहेरंगावलितथा । तलाटेतिलकंदृष्ट्वानिराशाः  
 पित्तरोगताइतिसंग्रहोक्तेः ॥ ऊर्ध्वपुंड्रं त्रिपुंड्रं वाचंद्राकारमथापिवा । आह्णक  
 र्त्तनिकुर्वीतथावत्पिंडान्ननिर्वपेदितिविष्वक्प्रकाशेवचनाचनकार्यमित्याहुः ॥ अ  
 त्राचाराद्व्यवस्था ( अतस्त्वबृहन्नारदीये ) ऊर्ध्वपुंड्रं चतुलसींआह्णेनेच्छांतिक्तेच



नेति ॥ ऊर्ध्वपुंड्रविधिर्विप्रविषयः ॥ निषेधः कर्तृपरइति पृथ्वीचन्द्रः ( यत्तु  
 हेमाद्रौ देवलः ) ललाटे पुंड्रकंद्विष्वास्कांधे माल्यंतथैव च ॥ निराशाः पितरो यांति  
 दृष्ट्वा च वृषलीपतिमिति तद्गंधेन त्रिपुंड्रविषयम् ॥ प्राक् पुंड्रदानाद्गंधाद्यैर्नालं कु  
 र्यात्स्त्रिविग्रहमित्याश्रयाय नोक्तेः ॥ पुंड्रं वर्तुलमित्यपरा कर्ममदनरत्ने च ॥ पृथ्वी  
 चंद्रस्तु पुंड्रं त्रिपुंड्रम् ॥ ऊर्ध्वं च तिलकं कुर्यान्न कुर्याद्वै त्रिपुंड्रकम् । निराशाः पित  
 रो यांति दृष्ट्वा चैव त्रिपुंड्रकमिति बृहत्पराशरोक्तेः ॥ भोक्तुं स्तिर्यग्लेपो भवत्ये  
 व ॥ वर्जयेत्तिलकं भाले श्राद्धकाले च सर्वदा । तिर्यगाप्यूर्ध्वपुंड्रं वाधारयेत्तु प्रय  
 त्ततइति व्यासोक्तेरित्याह ( पृथ्वीचन्द्रोदये ब्राह्मे ) सदर्भात्तुहस्तेन यः कुर्यात्ति  
 लकं बुधः । आचम्य सर्वशुद्धयेत दंभत्यागेन चैव हि ( श्राद्धारंभकालमाहापरा कर्म  
 गौतमः ) आरभ्य कुतपे श्राद्धं कुर्यादारोहणां बुधः । विधिज्ञो विधिमस्था यरौ  
 हिणां तु न लंघयेत् ॥ सतदेकोद्दिष्टे ( पार्वणोत्कृतं मात्स्ये ) ऊर्ध्वमुहूर्तं त्कुतपाद्य  
 न्मुहूर्तचतुष्टयम् । मुहूर्तपंचकं ह्येतत्स्वधा भवन्मिष्यते ( तथा ) मध्याह्ने सर्वदा  
 यस्मान्मन्दी भवति भास्करः । तस्मादनंतफलदस्तत्रारम्भो विशिष्यते ( अथ श्रा  
 द्धपरिभाषा ( चन्द्रिकायां कात्यायनः ) दक्षिणां पातयेज्जानुं देवान्परिचरन् स  
 दा । पातयेदितरं जानुं पितृन्परिचरन् सदा ( बौधायनः ) प्रदक्षिणान्तु देवानां पि  
 तृणां प्रदक्षिणाम् । देवानां मृजवोदर्भां पितृणां द्विगुणास्तथा ( पृथ्वीचन्द्रोद  
 येशंखः ) आवाहनाद्यसंकल्पेऽपि राडदानाच्चदानयोः । पिण्डाभ्यंजनकाले तु त  
 थैवांजनकर्मणि । अक्षय्यासनयोः पाद्ये गोत्रं नाम प्रकाशयेत् ( तत्रैव परिशिष्टे )  
 सगोचं पिण्डदाने च गन्धधूपपाशयेत्तथा । संकल्पे चासने दीपे अंजनाभ्यंजने तथा ।  
 अन्नाद्यदानाद्यंतेषु गोत्रं नाम च कीर्तयेत् ( कलिकायां संग्रहे ) आसनावाहने पाद्ये  
 अन्नदाने तथैव च । अक्षय्येऽपि राडदाने च घटसु नामानि कीर्तयेत् ( मात्स्ये ) सम्ब  
 न्धं प्रथमं ब्रूयाद्गोत्रं नाम तथैव च । पश्चाद्गोत्रं विजानीयात्क्रमण्य सनातनः ( त  
 र्त्रैव ) सकारेणा तु वक्तव्यं गोत्रं सर्वत्र धीमता । सकारः कुतपो ज्ञेयस्तस्माद्यत्नेन तं व  
 देत् ॥ यथा काप्यपसगोत्रेति ॥ पराशरसगोत्रस्य तु महात्मनः । भिक्षोः  
 पंचशिखस्याहं शिष्यः परमधार्मिक इति मोक्षधर्मे युप्रयोगाच्च ॥ तेन गोत्रमगोत्र

योः पर्यायत्वाच्छाखाभेदादव्यवस्थेति शूलपाणिः ॥ एतद्येषामास्नातंतेषामेव (हे  
माद्रौ वृहत्प्रचेताः) गोत्रं स्वरान्तं सर्वत्र गोत्रस्यास्य कर्मणि । गोत्रस्तु तर्पणो प्रोक्त  
खंडात्तानमुह्यति ॥ सर्वत्रैव पितः प्रोक्तः पिता तर्पणकर्मणि । पितुरस्य काले  
तु पित्र्ये संकल्पने तथा ॥ शर्मन् अर्थादिके कार्यं शर्मति तर्पणकर्मणि । शर्मणोऽस्य  
काले तु पितृणां दत्तमस्य । स्वरान्तं संबुद्धं तमिति हेमाद्रिः ( तत्रैव चन्द्रिका  
यां च स्मृत्यन्तरे ) गोत्रस्य त्वपरिज्ञाने काश्यपं गोत्रमुच्यते । यस्मादाह श्रुतिः सर्वाः  
प्रजाः कश्यपसम्भवाः (यत्तु सत्यायादः) अथाज्ञातबन्धोः पुरोहितगोत्रेणाचार्य  
गोत्रेणावेतितद्विवाहपरम (नामोच्चारणो विशेषमाह हेमाद्रौ बौधायनः) शर्मन्तं  
ब्राह्मणास्योक्तं वर्मान्तं क्षत्रियस्य तु । गुप्तान्तं चैव वैश्यस्य दासान्तं शूद्रजन्मनः (पित्रादि  
नामाज्ञाने तत्रैव) पृथिवीवत्पितावाच्यस्तत्पिताचांतरिखवत् । अभिधानापरि  
ज्ञाने दिविवत्प्रपितामहः ॥ पित्रादीनां नाम यदा पुत्रैर्न ज्ञायते तदा ॥ आपस्तम्बस्य  
त्रेप्येवम् ॥ एतदन्यशाखापरम् (आश्वलायनानां तूक्तं तत्सूत्रे) यदि नामान्यवि  
द्वांस्तत्पितृपितामहप्रपितामहेति ब्रूयात् (तत्कारिकापि) नामानि चेन्न जानी  
यात्तत्तेत्यादिवदेतक्रमात् ॥ तत्तेति संबंधमात्रपरम् ॥ तेन पितृव्यादावपितर्थेति  
गौडाः ॥ स्त्रीणां दांतं नाम ज्ञेयम् ॥ दांतं नाम स्त्रीणामिति पृथ्वीचंद्रोदये गोभि  
लोक्तेः ॥ केचिद्देवीशब्दांतमाहुः ॥ अन्येतु देवीदा इति द्वयोः समुच्चयमाहुः (हे  
माद्रौ नारायणाः) विभक्तिभिस्तु यत्किंचिद्दीयते पितृदेवते । तत्सर्वं सफलं ज्ञेयं  
विपरीतं निरर्थकम् (चंद्रिकारस्मृत्यर्थसारयोश्च नारदीये) अस्य व्यासनयोः यथौ  
द्वितीयावाहने तथा । अन्नदाने चतुर्थीस्याच्छेयाः संबुद्धयः स्मृताः (यत्तु व्यासः)  
चतुर्थीचासने नित्यं संकल्पे च विधीयते । प्रथमा तर्पणो प्रोक्ता संबुद्धिमपरे जगु  
रिति ॥ अत्र शाखाभेदादव्यवस्थेति हेमाद्रिः (हेमाद्रौ भृगुः) अर्घ्यावने जर्नापिंड  
सन्नं प्रत्यवने जनम् । संबुद्धिं तत्र कुर्वीत शेषे यथौ विधीयते (तत्रैव मातुर्विशेषो नारा  
खंडे) मातर्मित्रे तथा मातुरासने कल्पने स्ये । गोत्रे गोत्रायै गोत्रायाः प्रथमाद्या वि  
भक्तयः (हेमाद्रौ प्रभासखंडे) यज्ञोपवीतिना कार्यं दैवं कर्म प्रदक्षिणाम् । प्राचीना  
वीतिना कार्यं पितृकर्म प्रदक्षिणाम् ॥ अनुपनीतस्त्रीशूद्रादेस्तृतीये गोवसव्यापस



व्येजेये ॥ तस्योपवीतस्थानीयत्वात् ॥ अपसव्यं क्रमाद्वस्त्रं कृत्वा कश्चित्सगीत्र  
जडतिब्राह्मणेति वाचस्पतिः ॥ यत्तु केचित् । सदोपवीतिनाभाव्यमित्यस्य पुरु  
षार्थत्वात् ॥ प्राचीनावीतिकालेषु पूर्वीतां तरेणात्तत्कार्यमेवेति तन्न ॥ विशेषे  
णावाधात् (जमदग्निः) सक्तस्तोत्रजपंत्यक्त्वा पिंडाघ्राणां च दक्षिणां ॥ आह्वानं  
स्वागतं चार्घ्यं विना च परिवेषणम् ॥ विसर्जनं सौमनस्यमाश्रित्यां प्रार्थनं तथा ॥  
विप्रप्रदक्षिणां चैव स्वस्तिवाचनं विना ॥ पितृ नृदिश्यकर्तव्यं प्राचीनावीतिना  
मदा (हेमाद्रौ संग्रहे) आदौ विप्रांश्चि शौचांतेभ्यर्चने विकिरेकृते । पिंडानप्यर्च  
यित्वा च विसर्ज्य ब्राह्मणांस्तथा ॥ आचमेच्छाद्वकर्ता च स्थाने ष्वेतेषु सप्तसु । आ  
द्यंतये । द्विराचमेच्छेयेषु तु सक्तसकृत् (तत्रैव) आहारं भेषाने च पादशौचा चर्चनां  
तयोः । विकिरे पिंडदाने च यदुस्वाचमनमिष्यते (आश्रवलायनः) दानाध्ययनदे  
वार्चाजपहोमव्रतादिकान् । न कुर्याच्छाद्वदिवसे प्राग्विप्राणां विसर्जनात् ॥ एत  
न्नित्यवर्ज्यमिति । नोपदेवः ॥ इदं विष्णुभिन्नदेवपरम् ॥ विष्णोर्निवेदितान्नेन  
यष्टव्यं देवतांतरम् । पितृभ्यश्चापि तद्देयं तदन्त्याय कल्पते ॥ पितृशेषं तु यो दद्याद्  
रये परमात्मने । रेतोधाः पितरस्तस्य भवंति क्लेशभागिन इति स्कांदात् ॥ पितरः  
सर्वे स नु यथा विष्णुना शितमश्नन्तीति श्रुतेः ॥ यः श्राद्धकाले हरिभुक्तशेषं ददाति भ  
क्त्या पितृदेवतानाम् । तेनैव पिंडांस्तुलसीविमिश्रानां कल्पकोटिं पितरस्तुल्यं इ  
ति ब्राह्मोक्तेः चैतिश्रीधरस्वामि नृसिंहपरिचर्यादयः ॥ एतत्सर्वं निबन्धविरोधा  
न्निर्मूलं (अथ विशेषो हेमाद्रौ विष्णुधर्म) श्राद्धाह्निं तु समभ्यर्च्य नृवराहं जनार्दनम्  
(शिवपुराणो) पूजयित्वा शिवं भक्त्या पितृश्राद्धं प्रकल्पयेत् ॥ पूर्वनिषेधस्तु वि  
हितभिन्नपरः (तथा हेमाद्रौ) देव्यर्चादक्षिणां गादिः पादजान्वंसमूर्धनि । शिरोऽस  
जानुपादेष्वासांगादिचपैद्वक्त्रं (कालिकायां स्मृत्यंतरे) श्राद्धारंभे तु ये दर्भाः पा  
दशौचे विसर्जयेत् । अर्चनादौ तु ये दर्भा उच्छिष्टांते विसर्जयेत् ॥ माज्जनादौ तु ये  
दर्भाः पिंडोत्थाने विसर्जयेत् ॥ उत्थानादौ तु ये दर्भा दक्षिणांते विसर्जयेत् ॥ प्रार्थ  
नादौ तु ये दर्भानिमस्कारे विसर्जयेत् (ऊहमाह विष्णुः) मातामहानामप्येवं श्राद्धं  
कुर्याद्विचक्षणाः ॥ संत्रोहेन यथान्यायं शेषाणां सर्ववर्जितम् ॥ यथान्यायमिति यत्र

बहुवचनांतः पितृशब्दस्तत्रसर्व्वपितृवाचित्वाच्चोहः ॥ तत्रापिशुंधंतांपितरइत्यत्रो  
हस्य । सर्व्वपितृवाचित्वेउत्तरसंज्ञयवैयर्थ्यात् ॥ बहुवचनन्तुनोह्यते ॥ प्रकृ  
तावसमर्थत्वात्पाशानितिवत् ॥ ऋगंतेचनोहः ॥ तस्माद्वचनोहेदितिनिषेधात्  
सकोद्दिष्टेप्येवम् ॥ प्रेतैकोद्दिष्टेत्वेकवन्मंत्रानूहेनैकोद्दिष्टे इतिविट्पाठतेरूहः ॥  
अत्रबहुवचनस्याप्युहेवचनात् ॥ वृद्ध्यादौतुविशेष्यं वक्ष्यामः ॥ शेषाणामिति  
पितृव्याद्येकोद्दिष्टेआवाहनादिसंज्ञवर्ज्यकार्यमतिकल्पतरुः ॥ ऊह्योर्यपितृ  
पदवान्नसंज्ञस्यतत्रनप्रयोज्यः ॥ नतूहः । नापिपितृपदरहितःप्रयोज्यइतिशूल  
पाणिः ॥ अर्थान्तरंचोक्तंप्राक् (बहुवचकारिकापि) अर्थप्रदानमंत्रेतुमात्रादि  
पदमावपेत् । शुंधंतामितिपित्रादौमात्रादिपदमावपेत् ॥ मातृश्राद्धेपिंडदानेयेच  
त्वामत्रान्वित्यत्रनोहइतिवृत्तिकृत ( तथा ) मातुःश्राद्धेप्यनूहेनकुर्यात्पिंडानुसं  
वगाम् । दशदानमुपस्थानंतद्वत्कार्यमितिस्थितिः ॥ प्रवाहणामनूहेनतद्वत्प्राशन  
मिष्यते ( तथा ) आयंतुनस्तिलोसीतिउशंतस्त्वेतियानितु ॥ अनूह्यःपितृशब्दो  
त्रपितृसामान्यवाचकः ( आपस्तम्बानांतुवक्ष्यते । हेमाद्रौमार्कण्डेयः ) स्नातः  
स्नातानसमाहूतान् स्वागतेनार्चयेत्पृथक् ( कलिकायांनारदीये ) प्रायश्चित्त  
विशुद्धात्मातेभ्योऽनुज्ञांप्रगृह्यच । दद्याद्ब्रह्मदण्डार्थहिरण्यंकुशमेवच ( तत्रैव  
संग्रहे ) तिथिवारादिकंज्ञात्वा संकल्प्यचयथाविधि । प्राचीनावित्तिनाकार्यं  
सर्व्वसंकल्पनादिकम् ॥ सम्बन्धंप्रथमंयन्नामगोत्रेतथैवच । वस्त्रादिरूपतांचा  
पिस्त्रपितृणामनुकृमात् ( पृथ्वीचन्द्रोदयेनारदीये ) श्राद्धार्थसमनुप्राप्तान्वि  
प्रान्भूयोनिमंत्रयेत् ॥ आपस्तंबस्तुपर्व्वेद्युर्निमंत्रणंपरेद्युर्द्वितीयंतृतीयमामंत्रणा  
मित्याह ॥ ययंसयानिमंत्रणीयाइतिनिवेदनरूपंश्राद्धम् ( तद्विधिसाहशौनकः )  
गृहीत्वामुकसंज्ञस्यामुकगोत्रस्यचामुकेः । श्राद्धेतुवैश्वदेवार्थंकरणीयःसरास्त्व  
या ॥ इत्येवंश्राद्धद्वय्यादौतथेतिवदेत्तुसः । श्राद्धस्यकर्तृसंब्रूयात्तंप्राप्नोतु  
भवानिति ॥ सवदेत्प्राप्नोतीतिइतरस्तंप्रतिद्विजः ॥ देवौपार्वणौपुनरुवाद्रिवौ  
वाच्यौ ॥ पित्रादेरप्यनेनैववृणोतविधिनाद्विज्ञान । ततःकर्तृबहुवचोऽनाहितां  
ग्निःपिण्डपितृयज्ञंपरिस्तरणादीधमाधानांतंकुर्यात् ॥ अर्धाधानिनोप्येवमिति



प्रयोगपाठे रजातेपरिशिष्टेच ॥ भाष्यकारमते आदिकेप्येवम् ॥ वृत्तिकारमते  
 नेदम् (हेमाद्रौशम्भुः) समार्जितोपलिप्तेतु द्वारिकुर्वीतमण्डले ॥ उदकस्रवमुदीच्यं  
 स्यादक्षिणां दक्षिणां स्रवम् (व्याघ्रः) उत्तरेक्षतसंयुक्तानुपूर्वाग्रान्विन्यसेत्तकुशान् ।  
 दक्षिणोदक्षिणाग्रान्स्तु सतिलान्विन्यसेत्तकुशान् (तत्रैवबोधायनः) चतुरस्रं त्रिको  
 णां च वर्तुलं चार्धचन्द्रकम् ॥ कर्तव्यमानुपूर्वेणाब्राह्मणादियुमण्डलम् (तत्रैवलौगा  
 क्षिः) हस्तद्वयमितं कार्यं वैश्वदेविकमण्डलम् ॥ दक्षिणोचचतुर्हस्तां पितृणां मंघ्रिणो  
 धने (कलिकायां संग्रहे) प्रादेशमात्रं देवानां चतुरस्रन्तुमण्डलम् ॥ त्यक्त्वा यदं  
 गुलंतस्मादक्षिणो वर्तुलन्तथेत्युक्तम् (स्मृत्यन्तरे) गर्तः पञ्चांगुलो विप्रे जानुमा  
 षोमहीभुजि । प्रादेशमात्रो वैश्ये च साधिकः स तु शूद्रके ॥ तिर्यग्गूर्ध्वप्रसारणेन  
 ध्याख्यातो देवपिण्डयोः । चतुरस्रं वर्तुलञ्च कथितं गर्तलक्षणम् ॥ पादप्रक्षा  
 लनं प्रोक्तं मुपवेश्यासने द्विजान् । तिसृंचेतस्सालनं कुट्या चिराशाः पितरो गता  
 इति तत्समूलत्वे मण्डलाग्रे पृथक् ज्ञेयम् (तत्र गोमये हेमाद्रौ भृगुः) अत्यन्तजी  
 र्णादेहाया वन्ध्यायाश्च विशेषतः । आर्त्तायानवसूताया नगोर्गोमयमाहरेत्  
 (मात्स्ये) अक्षताभिः सपुठपाभिस्तदभ्यर्च्य सव्यवत् । विप्राणां सालयेत्पा  
 दा न भिवन्ध्य पुनः पुनः ॥ प्रत्यङ्मुखः स्थितः कुट्या द्विप्रपादाभिवेचनम् (तत्रैव  
 भविष्ये) प्रसालयेद्विप्रपादान् शन्नो देवीरिति तृचा (पृथ्वीचन्द्रोदये वृद्धवशि  
 ष्ठः) न कुशग्रन्थि हस्तस्तु पाद्यं दद्याद्विचक्षणाः (कलिकायां संग्रहे) ततः प्रसालये  
 त्पादौ भार्यास्त्रावितवारिणा (तथा) आह्निकाले यदा पत्नी वामेनोरप्रदा भवेत् ।  
 आसुरन्तर्जवे च्छाद्वं पितृणां नोपतिष्ठते (तत्रैव) नाधः प्रसालयेत्पादौ कर्त्ता पित्रा  
 दिकर्मसु ॥ पाद्यानंतरमर्घ्यमपि दद्यादिति हेमाद्रिः (तत्रैवलौगाक्षिः) मण्डलादुत्त  
 रे देशे दद्यादाचमनीयकम् (तत्रैव) विधाय सालनं तेषां द्विराचमनमिच्छते । स्वयं  
 चार्पि द्विराचामेद्विविज्ञः श्रद्धयान्वितः (हेमाद्रौ नारदीये) यत्राचमनवारीणां पा  
 दप्रक्षालनोदकैः । संगच्छन्ते बुधाः आह्नमासुरन्तत्प्रचक्षते (हेमाद्रौ व्यासः) सव्ये  
 नैवासनं वृत्त्वादक्षिणोदक्षिणां करम् ॥ व्याहृतीभिः समस्ताभिरासने यपवेशयेत् ॥  
 समाध्वमिति चैवोक्तत्वादक्षिणां जानुसंस्पृशन् । आस्यतामिति तान्ब्रूया दासनं

संस्पृशन्नपि (हेमाद्रौ शातातपः) द्वौ देवेथर्वणो विप्रौ प्राङ्मुखान् उपवेशयेत् । पित्र्ये  
तदं मुखान् स्त्रींश्च बह्वृचाध्वर्युसामगान् (याज्ञवल्क्यः) द्वौ देवे प्राक् त्रयः पित्र्ये उ  
दगे कौकमेव वा (यत्तु हेमाद्रौ हारीतः) दक्षिणाग्रदर्भेषु प्राङ्मुखान् भोजयेदुदङ्मुखान्  
नित्येकेः तितन्मैत्रायणीयविययम् ॥ प्राङ्मुखान् भोजयेदुदङ्मुखान् नित्येके  
इति तत्परिशिष्टात् ॥ विकल्प इति हेमाद्रिः (माधवीयेयम्) भिक्षुको ब्रह्मचारी  
वा भोजनार्थमुपस्थितः उपविष्टे ठवनुप्राप्तः कामन्तमभिभोजयेत् (कौर्मै) अतिथिर्य  
स्य नाश्नाति न तच्छाङ्गं प्रचक्षते (विप्रनियमो माधवीये) पवित्रपारायः सर्वे ते च मौ  
नव्रतान्विताः ॥ उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पर्शवर्जयन्तः परस्परम् (तत्रासनानि पृथ्वीचं  
द्रोदयेयम्) आसनं कुतुपदद्यादितरद्वापि विवक्तम् (हेमाद्रौ चमत्कारखंडे) पितृ  
णां घटितं हैमं राजतं वा पिचासनम् ॥ येन ताम्रमयं दत्तमासनं पितृकर्मणि ॥ सर्वे  
दिद्यासनास्तद्धो न हि प्रच्यवते दिवः (हेमाद्रौ नागरखंडे) अयः शंकुमयं पीठं प्रदेयं  
नोपवेशने (कालिकायां संग्रहे) क्षौमदुकूलं नैपालमा विकंदा रुजं तथा ॥ तारुपाणी  
वृषींचैव विष्टरादिच विन्यसेत् ॥ अग्निदग्धान्यायसानि भग्नानि च विवर्जयेत् (हे  
माद्रौ छागलेयः) पञ्चाङ्गागादुपक्रम्य प्राच्यां पंक्तिर्यथा भवेत् ॥ दक्षिणा संस्थिता  
ह्येषा पितृणां श्राद्धकर्मणि (पुलस्त्यः) औपराणी वारुणी क्षीरी जंबुका म्रकदंबक  
मा सप्तमं वा कुलं पीठं पितृणां दत्तमक्षयं (संग्रहे) शमी च काष्मरी शेलुः कदंबो वारु  
णास्तथा । पञ्चासनानि शस्तानि श्राद्धे देवा र्चने तथा (कारिका) द्वौ देवे प्राङ्मु  
खौ पित्र्ये त्रीन् विप्रानुदगान्नान् (पैठीनसिः) कुतपः श्राद्धवेलायां श्रोत्रियो यदि  
दृश्यते (आश्वलायनः) नोवी वा सो दशांतेन स्वरक्षार्थं प्रबंधयेत् (वृद्धयाज्ञव  
ल्क्यस्तु) दक्षिणोक्तदिशे तु तिलैः सह कुशत्रयम् (यस्तु कातीयम्) नोवी कार्या  
दशाणुष्विर्वामकुक्षौ कुशैः सहेतितद्वृद्धि श्राद्धे ॥ पितृणां दक्षिणोपार्श्वे विपरीता तु दै  
विक इति स्मृत्यन्तरात् ॥ वामे दक्षिणे चेत्याचाराद्व्यवस्थेति मुदनपारिजाते (आ  
चार्यः) प्राणाग्रामत्रयं कृत्वा गायत्री स्मरणां तथा । श्राद्धं कर्त्ता स्मीति वदेद्विप्रै  
र्वाच्यं कुसुमं च (ब्राह्मे) ततस्ति लान् गृहेतस्मिन् विकिरेचाग्रदक्षिणात् । श्रद्ध  
या परया युक्तो जपेदपहता इति (स्मृत्यर्थसारे) अपहता इति तिलान्विकीर्य उदी



रतामित्युच्चाप्रोक्षेत् (पराशरः) तद्विष्णोरिति मन्त्रेणागायत्र्या च प्रयत्नतः । प्रो  
क्षयेदन्नजातंतु शुद्धदृष्ट्यादिशुद्धये (हेमाद्रौ ब्रह्मांडे) आह्वयमौ गयां ध्यात्वा ध्या  
त्वा देवंगदाधरम् । वस्त्रादींश्च पितृन् ध्यात्वा ततः आह्वं प्रवर्तते ॥ देवताभ्यः पितृ  
भ्यश्च महायोगिभ्यः सवच । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ आदिम  
ध्यावसाने युत्रिरावृत्तं जपेद्बुधः । पितरः क्षिप्रमायातिराक्षसाः प्रवर्तन्ति च (तत्रैव  
स्कांदे) तिलारक्षंस्त्वसुरानुदर्भारक्षंतुराक्षसान् । पंक्तिर्वैश्रोत्रियोरक्षेदतिथिः स  
र्वरक्षकः (वशिष्ठः) शुद्धवतीभिः कूष्मांडीभिः पावमानीभिश्च पाकादिप्रोक्ष  
येत् (अथ देवार्चा) तत्र प्रत्युपचारमाद्यंत्योरपोदद्यादित्युक्तं तृतीयस्मृत्यर्थसारे  
च (हेमाद्रौ ब्राह्मे) आसनेऽवासनन्दद्याद्दामेवादक्षिणोऽपि वा । पितृकर्मणि गामे  
च देवेदद्यात्तुर्दक्षिणो (प्रचेताः) आसनेऽवासनन्दद्यात्तु पाणौ कदाचन । धर्मोऽसी  
त्यथ मंत्रेणागृह्णीयुस्ते तु तान् कुशान् ॥ धर्मोऽसि विशिराजा प्रतिष्ठित इति मंत्रः (गा  
लवः) दर्भानादाय हस्ताभ्यां गृहीत्वा दक्षिणोऽकरे । देवेक्षणाः क्रीयतांतु निरंगुष्ठं  
करंततः ॥ ओं तथेति द्विजाब्रूयुस्ते प्राप्नोतु भवानिति ॥ कर्ता ब्रूयात्ततो विप्रः प्राप्न  
वानीति देवदेत (पृथ्वी चन्द्रोदये बृहन्नारदीये) यवैर्दर्भैश्च विष्टेयां देवानामिद  
मासनम् । दत्वेति भयोदद्याद्देवेक्षणा इति क्षणात् ॥ तच्च यष्ट्या चतुष्टया वा कार्य  
मितिसग्व ॥ ततोऽर्घ्यं कल्पयेदिति मन्वादयः ॥ शौनके जयंताभ्यामर्घ्यं रहित  
स्येदवार्चनस्योक्तेः ॥ आश्वलायनानां देवेर्घ्यदानं बोपदेवस्तन्न ॥ परिशिष्टप्र  
योगपारिजातविरोधात् ॥ वृद्धिश्चाह तु देवेभ्यर्घ्यं दद्यात् ॥ देवेभ्योऽपि पृथग् दद्या  
दित्याहाऽर्घ्यश्रुतिचोदनादिति शौनकोक्तेः (अथाऽर्घ्यपात्रपृथ्वी चन्द्रोदये मा  
त्स्यपात्रयोः) पात्रं वनस्पतिसयं तथा पर्णमयं पुनः । जलजं वापि कुर्वीत तथा सा  
गरसंभवम् (ब्राह्मे) सौवर्गाताम्ररौप्याग्रमस्फाटिकं शंखशुक्लयः । भिन्नान्यपि  
हियोऽयानि पात्राणि पितृकर्मणि (हेमाद्रौ प्रजापतिः) सौवर्गाराजतंताम्रम्  
खाङ्गं मणिमयं तथा । यज्ञियं च समं वापि अर्घ्यार्थं पूरयेद्बुधः ॥ अत्र विप्रैकत्वा  
हित्वचतुष्पादावर्घ्यपात्रे द्वे सव ॥ मानवसूत्रे तु देवैश्च देविके वीणापिड्ये गकैकमुभ  
यत्र चेत्त्युक्तं तदेकविप्रपरम् ॥ पात्रालाभपरं चेति हेमाद्रिः ॥ सदनरत्ने तु देवे

कपात्रमुक्तम् ॥ पृथ्वीचन्द्रोदयेपित्रीणिपैतृकपात्राणि द्वेदेवैश्चदेविकइति बृह  
त्पराशरोक्तेर्देसवेत्याह ॥ बह्वृचानांतुदैवैविप्रदित्वेप्येकमर्घ्यपात्रमधर्षोदद्या  
दित्युक्तंपरिशिष्टेप्रयोगपारिजातेच (कलिकायांहारीतः) दत्तमक्षयतांयाति  
खाड्गोनार्घ्यतुयत्कृतम् (वृद्धमनुः) मृन्मयं दारुजं पात्रमयः पात्रं च यद्भवेत् । राजतन्दै  
विकेकार्ये शिलापात्रं च वर्जयेत् (पुराणसमुच्चये) मृत्स्नाभवं तथा कांस्यमारक्तं जतु  
संभवम् । वपुसीसलोहभवं सदा पात्रं विवर्जयेत् (तत्रैव) अष्टांगुलं भवेत् पात्रं पितृणां  
राजतं शुभम् । दशांगुलं तु देवानां सौवर्गां शक्तितः कृतम् ॥ स्थापयेदर्घ्यपात्रे द्वे न्युब्जे  
तत्र कुशोपरि । द्वे द्वे पवित्रे विधिवत् पात्रयोश्चोपरि सिपेत् (यज्ञपार्श्वः) पवित्रस्ये  
ति मंत्रेणापवित्रे द्येत्तुते । ओषधीमंतरे कृत्वा अंगुलं गुलिपर्वणोः । स्फ्येन का  
ष्ठेन लोहेन नमृन्मयनखादिभिः (वशिष्टः) तूष्णीं प्रोक्ष्यां भसा पात्रे कुर्याद्बुध्वं बिले  
ततः । पूरयेत् पात्रयुग्मं तु कृत्वोपरि पवित्रके (वृद्धपराशरः) पात्रद्वयमथार्घ्यार्थं  
तैजसं चैकवस्तुनः । प्राङ्मुखो मरतीर्थे न शन्नो देव्योदकं सिपेत् । यवोसीतियवां  
स्तत्र तूष्णीं पुठपात्राणि चंदनम् (मानवसूत्रे) मुमनसः प्रक्षिप्येत् पूयवान् प्रक्षिप्येत् (य  
वोसीति मंत्रः पात्रे) यवोसिधान्यराजोवावास्तुरासोमधुमिश्रितः । निर्गोदः सर्वपा  
पानां पवित्रमृषिभिः स्मृतः ॥ राजोवावास्तुरासोमधुसंयुतइति परिशिष्टपाठः ॥ गो  
भिलेन तु यवोसिसोमदेवत्यइति तिलमंत्रो वस्त्राहायुक्तोक्तः (हेमाद्रौयमः) यवह  
स्तस्ततो देवान् विज्ञाप्यावाहनं प्रति । आवाहयेत्यनुज्ञातो विश्वे देवास इत्युच्चा (वृ  
द्धपराशरः) ततः सव्यं करं न्यस्य विप्रदक्षिणाजानुनि । देवानावाहयिष्येहमिति  
वाचमुदीरयेत् ॥ आवाहयेत्यनुज्ञातो विश्वे देवास आगत । विश्वे देवाः शृणुते ममि  
ति मंत्रद्वयं पठेत् (आह्वयिष्ये विप्रदेवानामज्ञाने हेमाद्रौ बृहस्पतिः) उत्पत्तिनाम  
चैतेषां न विदुर्ये हि जातयः । अयमुच्चारणीयस्तैर्मंत्रः अद्वासमन्वितैः ॥ आगच्छंतु  
महाभागा विश्वे देवास महाबलाः । ये अत्र विहिताः आह्वेसावधाना भवंतुते ॥ इदं चा  
वाहनमर्घ्यपत्रासादनात् प्राक् हेमाद्रिगोक्तम् ॥ तत्र कातीयैः प्राकार्यं तथैव तत्सूत्रा  
त् ॥ अन्यैस्तदुत्तरम् (पृथ्वीचंद्रोदये शांखः) सयवं पुठपमादाय चरणादिशिरोति  
कम् । अर्चतेत्यर्चनं कुर्यादंतरे चोदकं तथा । पित्र्येतु मूर्धादिपादांतम् ॥ पादप्रभृति



मूर्द्धातंदैविकेपूजनंभवेत् । शिरःप्रभृतिपादांतंनमोवडितिपैतृकेइतिमदनरत्नेप्रचेत  
 सौक्तेः(कलिकायांसंग्रहे) तिस्रवृक्तांजलिभूत्वापठेन्मंत्रं समाहितः । विश्वेदेवाः  
 शृणुतेइत्यागच्छत्वपरंततः (हेमाद्रौजातुकार्यः) ततोऽर्घ्यपात्रसंपत्तिंवाचयित्वा  
 द्विजोत्तमान् । तदग्रेचाध्यपात्रंतुस्वाहाध्यर्घ्यादिति विन्यसेत् (गार्ग्यः) दत्त्वाहस्तेप  
 वित्रंचकृत्वापूजांचपादतः । यादिव्याइतिसंवेगाहस्तेष्वर्घ्याविनिक्षिपेत्(संग्रहे)  
 विश्वेदेवाइदंबोध्यमितिदानं समादिशेत् । तदंतेस्वाहानमइतिवाच्यम्॥ यादिव्या  
 इतिसंवेगास्वाहाकारंनमोतकमितिहेमाद्रौनागरखंडात्(आथर्वणसूत्रेण) पाद्यम  
 र्घ्यमाचमनीयमितिद्विजकरेनितयेदित्यस्यैवत्रयमुक्तम्(गभस्तिः) अर्घ्यंचपिंड  
 दानंचस्वस्त्यक्षय्येतथैवच । गंधपुष्पादिकंसर्वहस्तेनैवतुदापयेत्॥ प्रतिविप्रंयादि  
 व्येत्यावृत्तिः॥ बहुवृत्तानांत्वनेनदत्ताध्यनुमंत्रणम्॥ ततःपात्रंदक्षिणोदेवेभ्यःस्था  
 नमसीतिन्युब्जमुत्तानंवाकार्यमितिगारुडेउक्तम्॥ सतदापस्तंबानांनियतमन्येषां  
 न(हेमाद्रौविष्णुधर्म) गंधैःपुष्पैश्चधूपैश्चवस्त्रैश्चाप्यथभूयसोः । अर्चयेद्ब्राह्म  
 णानशक्त्याश्रद्धानःसमाहितः(पृथ्वीचंद्रोदयेमार्कंडेयः) चंदनागरुकर्पूरकुंकु  
 मानिप्रदापयेत्(विठ्ठाः)चंदनकुंकुमकर्पूरागरुपद्मकान्यनुलेपनायेति(व्यासः)  
 अप्रवित्रकरोगंधैर्गंधद्वारेतिपूजयेत् (कलिकायांस्मृतिः)गंधद्वारेतिवैगंधमायने  
 तेचपुष्पकम् । धूरसीत्यमुनाधूपमुद्दीप्यस्वेतिदीपकम् ॥ युवंवस्त्राणामंत्रेणाव  
 स्त्रंदद्यात्प्रयत्नतः । आसनेस्त्वासनंब्रूयादध्यस्त्वर्घ्यद्विजोत्तमः ॥ सुगंधिश्चसुपु  
 ष्ठपाणिमुमाल्यानिमुधूपकः ॥ सुज्योतिश्चैवदीपेतुस्वाच्छादनमितिक्रमः ॥ वि  
 प्राणांगंधेनवर्तुलंविपुंडं वानकार्यम् (हेमाद्रौदेवलः)ललाटेपुंडकंदुसृवास्कंधेमा  
 लांतथैवच । निराशाःपितरोयांतिदुसृवाचवृथलोपतिम् ॥ पुंडं वर्तुलमित्यपरा  
 र्कमदनरत्नेच । पुंडं विपुंडं वर्तुलमध्वचंद्रं च ॥ ऊर्ध्वंचतिलकंकुर्यान्नकुर्याद्वैविपु  
 ङ्कं॥ऊर्ध्वंचतिलकंकुर्याद्वैपिप्येचकर्मणि । निराशाःपितरोयांतिदृष्ट्वाचैव  
 विपुंडकमितिदृष्ट्वापराशरोक्तेस्तिर्यग्लेपोभवत्येव॥ वर्ज्योत्तिलकंभालेशाद्वका  
 लेचसर्वदा । तिर्यगप्यध्वपुंडं वाधारयेत्तुप्रयत्नतइतिव्यासोक्तेरितिपृथ्वीचंद्रः  
 (यत्तुबृहन्नारदीये) ऊर्ध्वपुंडं चतुलसींश्राद्धेनेच्छंतिकेचनेतितत्तत्कर्तृपरम् ( हेमा

द्रौब्राह्मे) पूतिकंमृगनाभिचरोचनंरक्तचंदनम् । कालेयकंतुग्रगंधंतुसठकंचापिव  
 र्जयेत् ॥ कस्तूर्याविकल्पइतिहेमाद्रिः ( वृद्धशातातपः ) पवित्रंतुकरेकत्वायःस  
 मालभतेद्विजान् । राक्षसानांभवेच्छाङ्गनिराशैःपितृभिर्गतेः ( पुष्टपंतुब्राह्मे ) जा  
 तीचंपकलोधाप्रचमलिकाबाणाबर्बरी । चताशोकाठरूपंचतुलसीशतपत्रकं ॥  
 कुब्जकंतगरंचैवभृंगमारगयकेतकी । यूथिकामतिमुक्तंचश्राद्धेयोऽग्यानिभोद्वि  
 जाः ॥ कमलंकुमुदंपसंपुंडरीकंचयत्नतः ॥ इंदीवरंकोकनदंकहलारंचनिवेदयेत्  
 ( हेमाद्रौवायुभविष्ययोः ) सुकुमारैःकिसलयैर्यवदूर्वाकुरैरपि । संपूजनीयाः  
 पितरःश्रेयस्कामेनसर्वदा ( स्कांदे ) जातिश्चसर्वादातव्यामलिकाप्रवेतयूथि  
 का । जलोद्भवानिसर्वाणिगुह्यमानिचचंपकम् ( तत्रैववृद्धमनुः ) ननियुक्तःशि  
 खावर्ज्यमात्यंशिरसिधारयेत् ( वज्र्यानिपृथ्वीचंद्रोदयेभविष्ये ) केतकींतुल  
 सीपत्रंबिल्वपत्रंचवर्जयेत् । द्रोणांचकरवीरंच धत्त रंकिंशुकंतथा ( माधवीये  
 स्मृत्यर्थसारेतुलसीनिषिद्धा ) तुलसीनिषेधोनिर्मूलइतिहेमाद्रिः ॥ समूलत्वेपि  
 पिंडपरः ॥ तुलसीगंधमाघ्रायपितरस्तुष्टमानसाः । प्रयांतिगरुडाखुडास्तत्पदं  
 चक्रपाणिनइतिप्रयोगपारिजातेपाद्योक्तेरितिबोपदेवः ( वृद्धपराशरः ) नजा  
 तीकुभुमैर्विद्वान्बिल्वपत्रैश्चनार्चयेत् । जपादिगुह्यमंभिंदीरूपिकासकुरंदिका  
 पुष्टपाणिवर्जनीयानिश्चाद्वकर्मणानित्यशः(हेमाद्रौशंखः) उग्रगंधीन्यगंधीनिचै  
 त्यवृक्षोद्भवानिच । पुष्टपाणिवर्जनीयानिरक्तवर्णानिन्यानिच ॥ जलोद्भवानिदेया  
 नि रक्तान्यापिविशेषतः ( अंगिराः ) नजातीकुह्यमानिदद्यान् कदलीपत्रमि  
 तिजातांविकल्पइतिहेमाद्रिः ॥ निषेधःपिंडविषयः ॥ कंदशंभौचनोदद्यान्ने  
 न्मत्तं गरुडध्वजे । पिंडेजातीचनोदद्याद्देवीमर्केणानार्चयेदिति वृद्धयाज्ञवल्क्यो  
 क्तेरितिबोपदेवः ( स्मृतिसारे ) आगस्त्यंभृंगराजंचतुलसीशतपत्रिका । चं  
 पकंतिलपुष्टपंचयुडेतेपितृवल्लभाः ॥ केतकींकरवीरंचबकुलंकंदकंतथा । पाट  
 लांचैवजातींचश्राद्धेयत्नेनवर्जयेत्(केचित्पिंडेतुलसीमाहुः) पितृपिंडार्चनश्राद्धे  
 यैःकृतंतुलसीदलैः ॥ पीडिताःपितरस्तैस्तुयावच्चंद्रार्कमेदिनीति मार्कंडेयोक्तेः  
 ( धूपस्तत्रैवविष्णाधर्मे ) धूपस्तुगुग्गुलुर्देयस्तथाचंदनसारजः । अगस्त्यश्चसकृपू



रस्तुसुठकस्त्वक्नयैवच ( विष्णुः ) घृतमधुयुक्तंशुगुलुंश्रीखंडदेवदारुसरला  
दिदद्यादिति ( तत्रैवदेवलः ) येहिप्रारायंगजाधूपाहस्तवाताहताप्रचये ॥ नतेश्रा  
द्धेनियोक्तव्यायेचकेचोग्रगंधयः ॥ घृतंनकेवलदद्याद्दृष्टंवात्तराशुगुलुम् ( दीपसा  
हविष्णुः ) घृतेनदीपोदातव्यस्तिलतैलेनवापुनः । वसामेदोद्भवंदीपंप्रयत्नेनविवर्ज  
येत् ( वस्त्रब्राह्मे ) कौशेयंक्षौमकार्पासंदुकूलमहतंतथा । आद्धेष्टवेतानियोदद्या  
त्क्रामानाप्नोतिचोत्तमान् ( हेमाद्रौब्रह्मवैवर्ते ) यज्ञोपवीतंदातव्यंवस्त्राभावेविजा  
नता । पितृभ्योवस्त्रदानस्यफलंतेनाप्नुतेखिलम् ( तत्रैवपाप्मे ) निष्क्रयोवाय  
थाशक्तिवस्त्राभावेप्रदीयते । अन्यान्यपिचदेयानि ( तत्रैवकालिकापुराणोवा  
त्वादिनिर्मितारस्यादीपिकाःश्राद्धकर्मणि । पितृनुद्दिष्ययोदद्यात्सभवेद्वाज  
नंश्रियः ॥ योवपदानपात्रंतु पात्रमारार्तिकस्यच । दद्यात्पितृभ्यःप्रयतस्तस्य  
स्वर्गसयागतिः(विष्णुधर्म) यःकंचुकंतयोष्णीषंपितृभ्यःप्रतिपादयेत् । ज्वरोद्भ  
वानिदुःखानिसकदाचिन्नपश्यति । स्त्रीणांश्राद्धेसिंदूरंद्युष्चंडातकानिच॥नि  
मंत्रिताभ्यःस्त्रीभ्योयेतेस्युःसौभाग्यसंयुताः ( हेमाद्रावादित्यपुराणो ) नक्त्यावर्णा  
दातव्यंनार्पिकार्पाससंभवम् । पितृभ्योनापिमलिनंनोपयुक्तंकदाचन ॥ नचिह  
द्रितंनोपदर्शनधौतंकारुणापिच । कार्पासिनियेधोन्यसंभवे ( तत्रैव ) पितृनुस  
त्कचवासोभिर्दद्याद्यज्ञोपवीतकम् । यज्ञोपवीतदानेनविनाश्राद्धंतुनिष्फलम् ॥ स  
तद्यतिस्रीशूद्रश्राद्धेपिदेयमितिहेमाद्रिः ( तत्रैवनृसिंहपुराणो ) कसंडलुंताम्रमयं  
श्राद्धेषुप्रददातिदः ॥ काष्ठेननिर्मितंवापिनारिकेलमथापिवा ॥ दद्यात्कसंडलुं  
श्राद्धेसःश्रीमानभिजायते । योमृत्तिकाविरचितान्श्राद्धेषुचघटानशुभान् ॥ प्रद  
द्यात्करकान्वापिसोऽक्षयंविंदतेमुखम् ( तत्रैव ) उपानच्छत्रवस्त्राणिभुक्तिपात्रंक  
संडलुम् । शयनासनयानानिदर्पणाव्यजनानिच ॥ अन्नंसुसंस्कृतंगंधांस्तांबूलंदी  
पचामरम् । पितृभ्योयःप्रयच्छेत्तुविष्णुलोकंसगच्छति ( सौरपुराणो ) चाम  
रंतालवृन्तंचश्वेतच्छत्रंचदर्पणम् । दत्त्वापितृणामेतानिभूमिपालोभवेदिह ( तत्रै  
वनंदिपुराणो ) अलंकाराःप्रदातव्यायथाशक्तिहिरण्यमयाः ॥ केयूरहारकटक  
मुद्रिकाकुंडलादयः(तथा) स्त्रीश्राद्धेषुप्रदेयाःस्युरलंकारास्तुयोषिताम् । मंजीर

मेखलादामकर्णिकाकंकणादयः ॥ आदर्शव्यजनच्छत्रशयनासनपादुकाः ॥  
मनोज्ञाः पद्मवासाप्रचसुगंधाप्रचरामुष्टयः । अंगारधानिकाः शीतेयोगपद्माप्रचदु  
ष्टयः ॥ कटिसूत्राणि रौप्याणि मेखलाश्चैव कंबलाः ॥ कर्पूरादेशचभांडानितां  
बलायतनंतथा ॥ भोजनाधारयंत्राणि पतद्ग्रहांस्तथैव च । तथांजनशलाकाप्रच  
केशानां च प्रसाधनम् ॥ एतान्दद्यात्तु यः सम्यक् सोऽश्वमेधफलं लभेत् (स्कांदे) सौ  
वर्णराजतं वापिकां स्येनाप्यथ निर्मितम् । दत्त्वा भोजनपात्रं तु स भ्रातृभवंति भूतले ॥  
( वामनपुराणे ) बंदीकृतास्तु ये केचित्स्त्रयं वायदिवापरैः । येनैकेनाप्युपायेन  
यस्तान्मोचयते नरः ॥ पितरस्तस्याच्छ्रंतिं शाश्वतं पदमव्ययम् ( पराशरः ) वाच  
येत्यरिपूर्णात्वं वा सो दत्त्वा विधानतः ( नारदीये ) देवैश्च समनुज्ञातो यजेत्पितृणां  
त्वय ॥ तत्र पित्र्येऽसनाद्यशेषं समर्चनक्रांते वैश्वदेविकं ज्ञेयं ( विशेषस्तूच्यते ॥ तत्रा  
सने द्विगुणा भुग्नाः कुशाः ) अत्रावाहनमासनात्पूर्ववाच्यं पूरणोत्तरं वाग्नौ करणो  
त्तरं वेति स्मृतिर्युपसादकताः ॥ सघांशाखाभेदेन व्यवस्था ॥ द्वितीयपक्षस्य बहुसं  
मतः ( तत्राचर्यमाश्रयायतः ) तैजसाश्च मयमृन्मयेषु त्रिषु पात्रेऽथैकद्रव्येषु वा दर्भां  
तर्हितेऽथर्पः प्रसिद्धः । शन्नो देवीरित्यनुमंज्यतिलानां वपति । तिलोसिसोमदेव  
त्यो गोसवे देवनिर्मितः । प्रत्नवद्भिः प्रत्तत्त्वव्यापितृनिमालोक्तान् प्रीणायाहिनः  
स्वधानमश्नति ॥ अश्वमयं स्फाटिकादिमृन्मयं हस्तकृतमेव ॥ कुलालचक्रनिष्ठप  
न्नमासुरंदैविकं न तत् ॥ तदेव हस्तघटितंदैविकं केवलंतथेति क्वांदिगपरिशिष्टात् ॥  
( अन्यान्यपि पात्राणि पूर्वमुक्तानि मनुः ) अन्नाभावे द्विजाभावे यद्येको ब्राह्मणो भ  
वेत् । पात्रायासादयेत्रीणां तु ब्राह्मणसंख्यया ॥ दत्तकादेः कर्तुं विपितृत्वादा  
वपिवचनात् ॥ त्रीरायेव पात्राणीति हरिहरः ( माधवीये वैजवापः ) अथैर्यपि  
तृणां त्रीरायेव कुड्यात् पात्राणि धर्मवित् ॥ सकस्मिन्नावहुषुया ब्राह्मणो युयथा  
विधि ॥ हेमाद्रावप्येवम् ॥ अत्रानुसंज्ञासंस्कृत ॥ तिलोसीत्यस्य प्रतिपादसावृत्तिः  
पितृशब्दस्यानुहश्चेति वृत्तिरुक्त ॥ दर्भश्च त्रिगुणं पवित्रम् ॥ तिस्रः शलाकास्तु  
पितृपात्रेषु पार्वणो । सकोऽद्विष्टशलाकैकां निधायोदकमाहरेदिति हेमाद्रौ च तु  
द्विर्वांशतिमतात् ( तथैव विष्णुः ) दक्षिणाग्रदर्भेषु दक्षिणापवर्गचमसेषु पवित्रां



तर्हि तेऽवपत्रासिंचेच्छन्नेदेवीति मंत्रेण जलसेचनं बह्वृचभिर्न विषयम् ॥ अत्रा  
स्मिन्पक्षे प्रतिपात्रं संवत्तः (कारिकायां) गंधपुष्टपाणिचैतेषु पात्रेषु प्रक्षिपेद  
थ (ब्राह्मे) जलं क्षीरं दधि घृतं तिलं तंडुलं सर्यपान् । कुशाग्रमधुपुष्टपाणिदत्वा चामे  
त्ततः स्वयम् (जातकार्यः) ततोऽर्घ्यपात्रसंपत्तिं वाचयित्वा द्विजोत्तमान् ॥ तदग्रे  
चाऽर्घ्यपात्राणि स्वधाऽर्घ्या इति विन्यसेत् ॥ ततस्ति लहस्तो विप्रसव्यजानौ दक्षिणा  
करं न्यस्यावाहनं पृच्छेत् ॥ अत्र गोत्रसम्बन्धनामानि द्वितीयां तत्त्वं च प्रागुक्तम् (वैज  
वापगृह्ये) तिष्ठन् पिबूनावाहयिष्यामीत्यासंज्य (कौर्म) अपसव्यं ततः कृत्वा पिबू  
णां दक्षिणां मुखः आवाहनं ततः कुर्यादुशंतस्त्वेत्यृचाबुधः ॥ आवाह्यतदनुज्ञातो ज  
पेदायंतु नस्ततः ॥ अत्र सव्यस्यापि प्रागुक्तेर्विकल्पः ॥ अत्राद्यमंत्रावृत्त्याऽस्मत्पित  
रमुक्कशर्माणां मुक्कगोत्रं वसुहूपमावाहयामीत्युक्त्वा मूर्धादि पादांतं तिलान्वि  
कीर्यायंतु न इति सर्वांते सक्कजपेदिति निबन्धाः ॥ अत्रोपवेशनसंवेशनपाद्याऽर्घ्याच  
मनीयान् ग्रहिहेमाद्रिगोक्तानि तान्यथर्ववेदिनानि यतानि नान्येषाम् ॥ तेषां च  
प्रपितामहादिपितृवंतं प्रातिलोभ्येन सर्वः प्रयोगः (वाराहे) गंधपुष्टपात्रं न कृत्वा दद्या  
द्धस्ते तिलोदकम् (गार्ग्यः) शिरस्तः पादतो वापि सव्यगभ्यर्चयेत्ततः ॥ ततः स्वधा  
र्घ्या इति पिबूनामहादिविप्राग्रे प्रत्येकं निवेदयेदिति कारिकायां वृत्तौ च (आ  
श्वलायनः) प्रसव्येनेतरपारायं गुह्यं तरेणो ववीतित्वा दक्षिणो न वा सव्यो पगृहीतेन  
पितरि दंते अर्घ्यं पितामहे दंते अर्घ्यं प्रपितामहे दंते अर्घ्यं मित्यप्युर्वताः प्रतिग्राहयि  
ष्यन् सक्कत्सक्कत्स्वधा अर्घ्या इति प्रसुह्या अनुमंत्रयीत् ॥ यादित्य आपः पृथिवि सं  
बभूवुर्या अंतरिक्ष्या उत पार्थिवीर्याः ॥ हिरण्यवर्गाय ज्ञियास्तान् आपः शंस्यो  
ना भवंतु ॥ अर्घ्यादिप्राग्गंधादेर्यज्ञोपवीतमेव ॥ अर्घ्यदानात् प्रागन्या अपो  
दद्यात् ॥ यद्यप्यत्र सव्येन दक्षिणो न वाऽर्घ्यं दद्यादित्युक्तं तथापि दक्षिणेनेत्यभिमतो  
र्थः ॥ कारिकायां वृत्तौ चैवम् ॥ पित्रादेस्त्रिभिः पात्रैर्दद्यात् ॥ पितुः स्थाने विप्र  
त्रयं चेदेकमर्घ्यं विभज्य दद्यात् ॥ त्रयाणां स्वधा अर्घ्या इति सक्कच्चि वेदनम् ॥ एवं  
पैतामहादापि ॥ अन्यजलदानमर्घ्यमंत्राश्च प्रतिविप्रमावर्तते ॥ तेषु गंधादौ च  
प्रतिविप्रं पदार्थानुसमयः क्राण्डानुसमयो वापि प्रादिव्रयाणां मेकविप्रपक्षेत्रिभिः

पात्रैरेकस्यैवाध्यदद्यादिति वृत्तिः (कारिकापि) स्वधाऽध्यदित्यपोऽध्यास्ताड  
 पवीतीनिवेदयेत् ॥ निवेदनात्प्राक्प्राचीनावीतमेवेत्यर्थः ॥ अर्घ्यसंशेषमादाय  
 दक्षिणेनतुपाणिना । सव्यहस्तगृहीतेनानयेत्पितृतीर्थतः ॥ दत्त्वादत्त्वानिनी  
 तास्तायादिव्यार्चानुसंवेयेत् (यत्तु) यादिव्याइतिमंत्रेणाहस्तेऽवध्यर्चानिनिक्षिपे  
 दिति (यच्चवाराहे) तिलांबुनाचापसव्यंदद्यादध्यर्चादिकं द्विजइति (यच्चव्यासः)  
 गोत्रसंबंधनामानिपितृणामनुकीर्तयन् : एकैकस्यतुविप्रस्यअर्घ्यपात्रंविनिक्षि  
 पेदितितद्वहृच्चातिरिक्तविषयम् ॥ ततश्चाचामेत् ॥ सर्वसातामहेऽवपि (आश्व  
 लायनः) संस्रवान्समवनीयताभिरद्भिः पुत्रकामोमुखमनक्ति । संस्रवशेषः । संस्र  
 वोहिपरिशिष्टोभवतीतिशतपथश्रुतेः ॥ केचित्तुहस्तगालितांबुवदंति ॥ समवनीया  
 त्येद्वेपात्रेपितृपात्रंआयिचेतिवृत्तिः प्रथमेपात्रे संस्रवान्समवनीयेति कातीयसूत्रा  
 च ॥ ब्राह्मेतुप्रतिबिंबाबलाकनमुक्तम् ॥ स्कांदेत्वायुः कामस्यनेत्रासेचनमुक्तम् ॥  
 पित्र्यविप्रैः प्राङ्मुखस्यकर्तुंरभिषेकः कार्यइतिकेचित् (आश्वलायनः) नोद्धरे  
 तप्रथमंपात्रंपितृणामर्घ्यपात्रितम् । आबृतास्तत्रतिष्ठंतिपितरः शौनकोऽब्रवीत् ॥  
 यावद्विप्रविसर्जनमितितुर्यपादेयमौयः पाठः (अबृत्तिः) पितृपात्रंसमवनीयनदे  
 शाच्चालयेदाश्राद्धसमाप्तेः । यस्मात्तत्रतृतीयपात्रेणाबृत्ताइति ॥ यद्वा । प्रथम  
 पात्रमेवन्यगिद्वलंकुर्यादिति ॥ कामाभावेपीदमेवशेषप्रतिपादनम् (हेमाद्रौकौर्म)  
 संस्रवांश्चततः सर्वानुपात्रेकुर्यात्समाहितः । पितृभ्यः स्थानमसीतिन्युब्जंपात्रंनि  
 धापयेत् (शूलपाणीयमस्तु) पैतृकंप्रथमंपात्रंतस्मैपैतामहंन्यसेत् । प्रपितामहततो  
 न्यस्यनोद्धरेन्नचचालयेदित्याह ॥ अथसंस्रवानानीयतृतीयेनाच्छाद्यन्युब्जंकु  
 र्यादितिसर्वैकवाक्यतयार्थ इति केचित् (अत्रिः) गंधादिभिस्तदभ्यर्च्यतृ  
 तीयेनापिधापयेत् । पितृभ्यः स्थानमसीतिशुचौदेशेऽर्चितेऽर्चयेत् ॥ अर्चनंन्युब्जो  
 क्तेपितृत्यंन्युब्जमुत्तरतोन्यसेदितिप्रचेतसोक्तेः ॥ सर्वविप्रोत्तरतीन्यसेदिति  
 हेमाद्रिकल्पतरुः ॥ विप्रवामेइतिहलायुधः ॥ कर्तुर्वामेइतिशूलपाणिः ॥ उक्ता  
 नंब्रूतंवापिपितृपात्रंनतद्भवेदित्युशनसोक्तेन्युब्जतैवसाधुः ॥ मातामहादिसंस्र  
 वानपिपितृपात्रमवगृहीत्वाप्रयजवत्तन्त्रेणान्युब्जं कुर्यादिति शूलपाणिः सको



द्विष्टेतूहेनन्युद्भजतेतिपितृभक्तौश्रीदत्तः(यमोपि) स्पृष्टमुत्तानमन्यवनीतमुदघाटि  
तंतथा ॥ पात्रंदृष्ट्वाव्रजंत्याशुपितरस्तंशपंतितच(वैश्वदेवेउत्तानमितिमदनपारिजा  
तःवैजवापः)तस्योपरिकुशानदत्त्वाप्रदद्याद्देवपूर्वकंगंधपुष्पाणिधूपंचदोपंवस्त्रो  
पवीतके॥अत्रगंधादेर्देवेपिड्येचपदार्थानुसमयस्ययाज्ञवल्क्योक्तकांडानुसमयेन  
विकल्पोज्ञेयः ॥ बह्वृचानांतुसूत्रेदेवानुक्तेःकांडानुसमयस्य ॥ अत्रप्राचीनावी  
तीनामगोत्रसंबुद्ध्याद्युक्तंप्राक् ॥ अन्यद्देववत्तदंतेआचमनंच(हेमाद्रौकालिका  
परागे)निर्वर्त्यब्राह्मणादेशात्क्रियामेवंयथाविधि । भाजनानिततोदद्याद्वस्तशौ  
चंपुनःक्रमात् ॥ आदेशात्पात्राणिदद्यादित्यन्वयः ॥ तेनतत्रापिप्रश्नानुज्ञेज्ञेये ।  
(तत्रैवब्राह्म) मंडलानिचकार्याणिनैवारैश्चूर्णाकैःशुभैः । गौरमृत्तिकयावा  
पिभस्मनागोमयेनवा(भृगुः)भस्मनावारिणावापिकारयेन्मंडलंततः । चतुःको  
णांदिजाग्रयस्यत्रिकोणांक्षत्रियस्यतु । मंडलाकृतिवैश्यस्यशूद्रस्याभ्युक्षणांस्मृतां॥  
(बह्वृचपरिशिष्टे) देवेचतुरसंपित्र्ये वृत्तमंडलंकृत्वाक्रमेणसयवानुसतिलां  
श्चदर्भान्दद्यादित्युक्तम् (मार्कंडेयः) यातुधानाःपिशाचाश्चक्रूरायेचैवराक्ष  
साः । हरंतिरसमन्नस्यमंडलेनविर्वर्जितम् (हेमाद्रौहारीतः) भूमावेवनिदध्या  
न्नोपरिपात्राणीति (तानिचहेमाद्रावत्रिराह) भोजनेहैसरौप्याणिदेवेपित्र्ये  
यथाक्रमम् (हारीतः) राजतपार्णाताम्रकांस्यपात्राणिभोजनेइति(तत्रैववाराहे)  
सौवर्णानिहरौप्याणिकांस्यानितदसंभवे । अन्यान्यपिहिकार्याणिदारुजा  
न्यपिजानता ॥ नायसान्यपिकार्याणिपैतलानिनतुक्चिन्त । नचसीसमयानी  
हशस्यंतेन्नपुजान्यपि (अत्रिः) पंचाशत्पलिकंकांस्यंद्वयधिकंभोजनायवै । गृ  
हस्थैस्तुसदाकार्यमभावेहैसरौप्ययोः ॥ पालाशेभ्योविनानस्युःपर्णापात्राणिभो  
जने (पृथ्वीचंद्रस्तु) कांस्यपात्रेहविदृष्टानिराशाःपितरोगताइतिब्राह्मोक्तेः  
कांस्यपात्रनियेधमाह (बोपदेवस्तुस्मृतिसंग्रहमुदाजहार) आद्वेपलाशपात्राणि  
मधुकौटुंबराणिच । पारिकाकुटजलक्षककचानिक्रमाज्जगुः ॥ कदलीचतप  
नसजंबुपुन्नागचंपकाः । अलाभेमुख्यपात्राणांग्राह्यास्युःपितृकर्मणीति ( हेमा  
द्रौतुंकदलीपात्रनियेधमाहांगिराः ) नजातीकुसुमानिदद्यान्कदलीपात्रमिति

(क्रतुः) असुराणांकुलेजातारंभापूर्वपरिग्रहे । तस्यदर्शनमात्रेणानिराशाःपित  
 रोगताः ॥ सर्वपात्रारायासाद्यभस्ममर्यादांकृत्वाविप्रहस्तशोधनंकुर्यात् ॥ तत्रपि  
 शंगारसारागोदितिसंघट्टयंकेचित्पठंति (मात्स्ये) अकृत्वाभस्ममर्यादांयःकुर्या  
 त्पाणिशोधनम् । आसुरंतद्वेच्छाद्विपित्वाणांनोपतिष्ठते (तत्रैवब्रह्मांडे) प्रक्षाल्य  
 हस्तपात्रादिपश्चाद्विधिर्विधानवत् । प्रक्षालनजलंदर्भेस्तिलैर्मिश्रंक्षिपेच्छुचौ ॥  
 मंडलोपरीतिहेमाद्रिः (अथाग्नौकरां ॥ हेमाद्रौमार्कडेयः) आहिताग्निस्तु  
 जुहुयादक्षिणाग्नौसमाहितः । अनाहितान्निप्रचौपसनेऽग्न्याभावेद्विजेषुवा ॥  
 (वायवीये) आहयदक्षिणाग्निंतुहोमार्थवैप्रयत्नतः । अग्न्यर्थलौकिकेवापि  
 जुहुयात्तर्कमसिद्धये ॥ आहिताग्निःसर्वाधानी ॥ अर्धाधानीतुगृह्यसर्वविचंद्रि  
 कापरार्कमिताक्षरामाधवादयः ॥ तस्यापिदक्षिणाग्नौलौकिकोगृह्यइतिहेमा  
 द्रिःकल्पतरुप्रच ॥ आद्यपक्षसंबतुयुक्तोबहुसंमतप्रच ॥ यद्यपिस्मात्तग्निौकर  
 रांश्रौतेदक्षिणाग्नौनयुक्तंतथापिवचनाद्भवतीतिहेमाद्रिचंद्रिकादयः ॥ इदंदर्श  
 याद्वसव ॥ आद्विदकादिषुतुसर्वाधानीपारागौअर्धाधानीगृह्येकुर्यादितिहेमाद्रिर्मा  
 धवादयः च ॥ पक्षान्तंकर्मनिर्वर्त्यवैश्वदेवंचसाग्निकः । पिंडयज्ञंततःकुर्यात्ततोन्वा  
 हार्यकंबुधइतिलौगाद्यादिभिःक्रमोक्तेर्विहृतदक्षिणाग्निस्तत्त्वात् ॥ अतएवात्र  
 वचनेसाग्निकआहिताग्निरुक्तोहेमाद्रिणा ॥ सतदापस्तंबादीनामेव ॥ आ  
 श्वलायनस्याहिताग्नेःपारावेवेतिवृत्तिः ॥ अर्धाधानिनोगृह्येसर्वप्रतियंगोरोति  
 प्रयोगपारिजातेपरिशिष्टेच ॥ बोपदेवस्त्वाहहोमशब्दःपिंडपितृयज्ञपरःपितृ  
 यज्ञेतुजुहुयादक्षिणाग्नौसमाहितः । आद्वेत्वौपासनाग्नौतुनिरग्निर्लौकिकेन  
 ले ॥ अनाग्निर्दूरभार्यश्चपार्वणोसमुपस्थिते । संध्यायाग्निंततःकुर्याद्धोममग्निं  
 समुत्सृजेदितिचक्रांडमंडनोक्तेः ॥ आद्वेगृह्याग्नावेवेतिलौकिकाग्न्यादिवि  
 धानंचतैत्तिरीयादिविषयम् ॥ बहुवृद्धस्यत्वन्गनेरपिपाणिहोमसवअग्निपारागौ  
 विनासत्रेविधानांतरानुक्तेः ॥ अग्न्यभावेतुविप्रस्यप्राणावेवोपपादयेदितिमन्  
 क्तेश्च ॥ वृत्तावप्येवम् ॥ क्वचित्तान्नेरपिपाणिहोमउक्तोगृह्यपरिशिष्टे ॥  
 अन्वष्टकांचपूर्वेद्युर्मासिमास्यथपार्वणम् । कान्यमाभ्युदयेसुन्यामेकोहिष्टमथाष्ट



मम ॥ चतुर्वाद्येषु चार्गनीनां वह्नौ होमो विधीयते । पित्र यत्राह्मणा हस्ते स्यादुत्तरे  
 युचतुर्वपीति ॥ एकोद्दिष्टं संपिंडीकरणां शुद्धे तन्निधेधात् ॥ बहुवृचभाष्यकारा  
 स्तु सर्वैकोद्दिष्टेषु पाणिगोहोममाहुः ॥ इदं बहुवृचानामेव ॥ अत्रेदं त्वम् । स्थाली  
 पाकेन सह पिंडार्थमुद्धृत्येति सत्रेनात्रापूर्वः स्थालीपाकश्चोद्यते ॥ सर्वश्राद्धेषु प्र  
 संगत्तेनानुवादो यस्मिन् तद्वृत्तिकारोक्तेः ॥ पार्वशो आर्थिकस्यानंगस्य व्यतिथंग  
 स्य वार्त्तिकादिद्वितीति देशादध्वानिनोऽपि पाणिगोहोमसर्वेति वृत्तिस्वरसः ॥ एवं  
 मासिकादावपि ॥ योऽङ्गो मासिके श्राद्धे संपिंडीकरणीतथा । पाणावेव तु  
 होतव्यमन्यत्राग्नौ तु हूयते इति बोधो देवादाह त्वचनाच्च ( भाष्यकारमते तु ) स  
 त्रे स्थालीपाकेनेति करणात्वाच्च यच्च चूत्राणाञ्च पार्वशोऽङ्गम् ॥ ततः काम्यादि  
 युतदभावे कार्यस्य पिंडदानस्याप्यभावः ॥ एतदेवानुसृत्य विकृतावपि वार्त्तिका  
 दौ व्यतिथंग उक्तः प्रयोगपारिजाते परिशिष्टे च ॥ तेनैतन्मतेऽध्वानिनोऽग्नौ वा ॥  
 वस्तुतस्तु स्थालीपाके सहशाखया प्रस्तरप्रहरतीति तत्सहभावमावश्रुतेः ॥ पत्नी  
 वते त्वष्टुरुपलक्षणमिव नां गत्वम् ॥ तत्त्वेवानां गानुरोधेन प्रधानभूतं पिंडदानं त्या  
 गीयुक्तः ॥ तेन व्यतिथंगभावेऽप्यग्नौ होमो भवतीति बोधो देवः ॥ अनाहिताग्नेर्गृ  
 ह्याग्निं सतस्तु सर्वसतेरनावेव ॥ वार्त्तिकादौ वृत्तिमते व्यतिथंगो न ॥ अन्यमते  
 त्वस्ति ॥ अत्र यथाचारमनुष्ठेयम् ( आश्वलायनः ) उद्धृत्य घृताक्तमन्नमनुज्ञापय  
 त्यग्नौ करिष्ये । करवैकरवाणीति वा प्रत्यनुज्ञा । क्रियतां कुरुष्व कुर्वित्यथाग्नौ  
 जुहोति यथोक्तं पुरस्तादितं ॥ व्यतिथंगपक्षे इदमिति वृत्तिः ॥ करवैकरवाणी  
 त्यत्राग्नौ विद्यनुयगः पुरस्तात् पिंडपितृयज्ञे ॥ तच्चैवम् । मेक्षणीनावदायावदानसंप  
 दा जुहुयात् सोमाय पितृमते स्वधा नमोऽग्नये कव्यवाहनाय स्वधानमइति स्वाहाका  
 रेणावार्त्तिपूर्वयज्ञोपवीती मेक्षणा मनुप्रहयेति ॥ अवदानसम्पदा उपस्तरणाद्यपे  
 क्षयेत्यर्थः ॥ व्यतिथंगपक्षे अतिप्रणीते यंहोमोन्यथा मुख्ये अतिप्रणीते र्ना विधम  
 मुपसमाधयेति बहुवृचपरिशिष्टात् ॥ केचित्तस्य रसो निबर्हणार्थत्वात् मुख्येव दं  
 ति ॥ तदेतद्विरोधाच्चिन्त्यमप्रयोगपारिजातेऽप्येवम् ( शौनकः ) स्वाहाकारगोहो  
 मेतु भवेद्यज्ञोपवीतवानतत्र प्रागग्नये हुत्वा पश्चात् सोमाय हूयते ॥ अग्नौ यज्ञोपवी

त्येवप्रक्षिपेन्मेक्षणांततः (छंदोगपरिशिष्टे) अग्नौकरणाहोमश्चकर्तव्यउपवीति  
ना । अपसव्येनवाकार्योदक्षिणाभिमुखेनच ॥ कातीयानांत्वपसव्यमेवपिंडपितृ  
यज्ञवद्भुत्वेतिसर्वातिदेशात् ॥ सव्यंतुछंदोगपरम ॥ गोभिलेनेतदुत्तरमेवापसव्यो  
क्तेः ॥ छंदोगाजुहुयुःसव्येनापसव्येनयाजुयाइतिवृद्धयाज्ञवल्क्योक्तेश्च (अथ  
पाणिहोमः ॥ आश्वलायनः) अभ्यनुज्ञायां पाणिठवेवेति ॥ पिंडपितृयज्ञकल्पा  
भावेनाग्न्याभावेकाग्न्यादिठिवत्यर्थः ॥ तेनबहुवृत्तानामेकोद्विष्टपाणिहोमोभव  
त्येव ॥ निषेधोऽन्यपरः ॥ पाणिठवितिबहुवचनात्सर्वविप्रपाणिगुहोमइतिवृ  
त्तिः ॥ एवंमातामहेपि (शौनकोपि) सर्वेयामुपविष्टानांविप्राणामथपाणिगु  
विभज्यजुहुयात्सर्वनसोमायेत्यादिमंत्रतः (यत्तुहेमाद्रौकात्यायनः) पित्र्येयः  
पंक्तिमूर्धन्यस्तस्यपाणावनग्निकः ॥ हुत्वासंभवदन्येयांतृणांपात्रेषुनिक्षिपेदिति  
बहुवृत्तानाम (यत्तु तत्रैवमात्स्ये) अग्न्यभावेतुविप्रस्यपाणौवाथजले  
पिवा ॥ अजकरोश्चकरोवागोषेवाथशिलान्तिकइतितत्तीर्थयाद्विविधयम् ॥ त  
द्यदापांसमीपेस्याच्छादंज्ञेयोविधिस्तदेतितत्रैवकात्यायनोक्तेः ॥ निर्जलेत्वजक  
रादौ (यत्तुचन्द्रोदयेयमः) देवविप्रकरेऽग्निः कृत्वाग्नौकरणाद्विजइतितदभार्य  
परम् ॥ अपत्नीकोयदाविप्रः आदंकुर्वीतपाव्वराम् ॥ पित्र्यविप्रैरनुज्ञातोविश्वे  
देवेषुहयते इतितत्रैवकात्यायनोक्तेः ॥ हयतेइतिछान्दसोव्यत्ययः (हेमाद्रौ  
वायवीये) विधुरोदैविकेकुर्याच्छेयंपित्र्येनवेदयेत् (दैवविप्रानेकत्वेतत्रैव)  
विप्रवेदेवेयदैकस्मिन् भयेयुद्वयदयोद्विजाः ॥ कदैकपाणौहोतव्यंस्याद्विधि  
र्विहितस्तदा ॥ सोप्याद्यः प्रथमंवानियम्यतेतिन्यायात् ॥ तेनमृतभार्यस्य  
दैवेहोमः ॥ अनुपनीतब्रह्मचार्यादेस्तुपित्र्ये ॥ अग्न्याभावःस्मृतस्तावद्याव  
द्धार्यांनविन्दतीतिहेमाद्रौजातकार्योक्तेः ॥ सभार्यनष्टाग्नेरपिपित्र्यविप्रकरे  
इतिपृथ्वीचन्द्रः ॥ उपवीतित्वेनदैवेहोमः प्राचीनावीतेनपित्र्ये ॥ यदासर्वत्र  
दैवपित्र्यकरयोर्विकल्प इति हेमाद्रौमदनरत्नेपारिजातेच ॥ यदातुपितृमाता  
महयोदैवपित्र्यविप्रभेदस्तदाभेदेनपाणिहोमइत्यपरार्कचन्द्रिकादयः ॥ यदातु  
दैवन्तंत्रतदातंत्रेणसकृदेवपाणिहोमइतिकेचित् (हेमाद्रिस्तु) मातामहस्यभेदे



पिक्वर्ग्यत्तन्वेरासाग्निनक इति कातीयस्मृतेर्भेदमाह ॥ सर्वपिड्येपि ॥ माधवी  
येप्येवम ॥ एवंसाग्नेरपि विदेशादौ पाणिहोमे ज्ञेयः ॥ यत्तु कर्केणाग्निं विनाश्या  
द्वमेव नास्तीत्युक्तं तत्सपिंडीकरणावार्थिकाद्यकरणापत्तेर्यत्किंचिदेव (यत्तु वृ  
हन्नारदीये) अग्निरनूर्ध्वार्थप्रचपार्वगोसमुपस्थिते । आहूतिभिः कारयेच्छादंसा  
ग्निर्कैर्विधिवत्तद्विजाः ॥ क्षयाहदिवसे प्राप्ते स्वस्याग्निर्दूरगो यदि । तथैव भ्रातरः  
स्युश्चेल्लौकिकाग्नाविति स्थितिः ॥ औपासनाग्नौ दूरस्थे समीपे भ्रातरि स्थि  
ते । यद्यग्नौ जुहुयाद्वापि पाणौ वासि हपातकी ॥ औपासनाग्नौ दूरस्थे केचिदि  
च्छंतिसत्तमाः ॥ पाणावेव तु होतव्यमिति नैतत्संजसमिति तद्ब्रह्मनादरादुपेक्ष्य  
म (हेमाद्रौयमः) अग्नौ करणावत्तत्र होमे विप्रकरे भवेत् । पर्युक्ष्यदर्भानास्तीर्य  
यतो ह्यग्निं समो द्विजः ॥ मेक्षणेन करेणावाहोमः ॥ मेक्षणाप्रहरणानेति वृत्तिः ॥  
(स्मृतिरत्नावल्यास) नानुज्ञा पाणिहोमे स्यान्नस्तः पर्यहो नोक्षणे । नाग्नेतमद्यादि  
ति च न स्थातामिधममेक्षणे ॥ कर्काचार्योप्येवमाह ॥ माधवीये चंद्रिकायां चानु  
ज्ञादिसर्वं भवतीत्युक्तं (पाणिहोमे प्रश्नाद्याहापराकर्कशौ नकः) अग्निरप्येदाज्यं  
गृहीत्वा भवत्स्वेवाग्नौ करणमिति पूर्ववत्तथास्तिवति (आश्वलायनः) यदि पा  
णिठवाचांते वन्यदन्नमनुदिशत्यन्नमन्ने सृष्टं दत्तमधुवमिति ॥ पाणौ हुतं पात्रे  
निधाय विप्रैराचम्य भोजनार्थमन्नेपरिविष्टे हुतशेषं पात्रे युदद्यादित्यर्थः ॥ सृष्टं प्र  
भृतं ॥ नैमित्तिकं चेदमाचमनं न हुतभक्षणानिमित्तम् । अन्नं पाणि तले दत्तं पूर्वमप्यन्नं  
त्यबुद्धयः । पितरस्तेन तृप्यंति शेषान्नं न लभंति ते ॥ यच्च पाणि तले दत्तं यच्चान्यदु  
पकल्पितम् ॥ एकैर्भावेन भोक्तव्यं गृथगभावो न विद्यते इति बहुवचपरिशिष्टात् ॥  
हेमाद्रावप्याचमने हेत्वर्थवाद उक्तः पाण्यास्यो हि द्विजः स्मृत इति ॥ भाष्ये त्वाचां  
तेषु भक्षितेषु ॥ चमुभक्षणो इति ॥ भक्षणोत्तरं चनाचमनमग्निं साध्यात् ॥ पूर्वनि  
षेधस्तु सपिंडीकरणो ज्ञेयः ॥ ददाति चोदितत्वाच्च त्ववजुहोति चोदितत्वादित्यु  
क्तं ॥ न त्वेतद्बहुसंमतम् (यत्तु बौधायनेन) तास्मस्तु प्राशिते दद्याद्यदन्नं प्रकृतं भवे  
दिति भक्षणमुक्तं तत्तच्छारवीयानामेवेति हेमाद्रिः ॥ (तत्रैवयमः) पिड्यपा  
णि हुताच्छेषं पितृपात्रेषु निक्षिपेत् । अग्नौ करणाशेषं तु न दद्याद्वैश्वदेविके ॥

सतदग्निहोमोपसमम् ॥ तथाकर्कस्तुसूत्रेहुतशेषं दत्त्वेत्यविशेषात्सर्वविषयेषु दद्या  
दित्याह ( तत्रैव वृद्धवशिष्टः ) पित्र्यविप्रकरेहुत्वाशेषं पात्रेषु निक्षिपेत् । पिंडे  
भ्यःक्षेपयेत्किंचिन्नदद्याद्वैश्वदेविके ( अथापस्तंबानां सूत्रे ) उद्धीयतामग्नौ च  
क्रियतामित्यामंत्रयते ॥ काममुद्धीयतां काममग्नौ चक्रियतामित्यतिसृष्ट उद्धरे  
उज्जुह्याच्च ( नष्टाग्निविधुरादेर्विशेषो वृहन्नारदीये ) नष्टाग्निर्दूरभार्यश्च पार्वणो  
समुपस्थिते ॥ संध्यायाग्निततो होमं कृत्वा तं विस्मृजेत्पुनः ॥ अथाप्रचेतितत्काले  
ग्निसंधाय हुत्वा च जेदित्यर्थः ॥ सतदापस्तंबानामेव ॥ पारिाहोमस्तु द्वंद्वोपादी  
नाम् ( विप्रप्रकाशेऽपि ) साग्निरौपासने नाग्निरग्नौ कृत्रीतलौकिके ॥ पारिाहो  
संप्रशंसंति तत्त्वापस्तंबशाखिनाम् ॥ स्नातका विधुरावास्तुर्यदिवा ब्रह्मचारिणाः ।  
अग्नौ करणाहोमं तु कुर्युस्ते लौकिके न ले ॥ अथाप्रचाग्नेमनो ज्योतिरुद्बुध्य न्याह  
ती हुनेत् ॥ ततो नुजातोऽग्नीधनाद्याज्यभागां ते यन्मे मातेत्याद्यैर्जुह्यात् ॥ तत्र सन्ना  
न्नाहुतयः प्रडाज्यस्येति त्रयोदश ॥ व्यत्ययोवा ( यथा ) यन्मे माता प्रलुलोभतन्मे  
रेतः पिता वृंक्तां यास्तिष्ठंतीति द्वाभ्याममुठमैस्त्वाहेति पितुर्नाम्ना द्वौ होमौ ॥ यन्मे  
पितामही प्रलुलोभतन्मे रेतः पितामहो वृंक्तामंतर्दधे इति तन्नाम्ना पितामहाय द्वौ ॥  
यन्मे प्रपितामही प्रलुलोभतन्मे रेतः प्रपितामहो वृंक्तामंतर्दधे इति तुभिरिति तन्ना  
म्ना प्रपितामहाय द्वौ ( मातामहे युतूहः ) यन्मे मातामही तन्मे मातामही वृंक्तां ॥  
अन्यमातामहा इवृद्धमित्यादौ ॥ यन्मे मातुः पितामही प्रलुलोभतन्मे रेतो मातुः ॥  
पितामहो वृंक्तां ॥ अन्यमातुः पितामहा इवृद्धम् ॥ यन्मे मातुः प्रपितामही  
प्रलुलोभतन्मे रेतो मातुः प्रपितामहो वृंक्तां । अन्यमातुः प्रपितामहा इवृद्धम् सर्व  
त्राप्यमुठया इत्यत्र डे तंतन्नाम योज्यम् ( तत्र गृह्यसंग्रहे ) योज्यः पित्रादिशब्दानां  
स्थाने मातामहादिकः । अन्नहोमे तथा स्पर्शजलपिंडादिदानके ॥ यन्मे मातामही  
त्यादितत्रोदाहरणं भवेत् । ततो ये केचेत्येकान्नाहुतिः ॥ ततः स्वाहापित्र्ये इत्या  
द्यैराज्यं हुत्वा स्विष्टकृतं हुत्वा सर्वभक्ष्यां किंचिदादायोदगुणां भस्मापो ह्यतत्र तया  
मस्वाहाकारेण जुहोति ॥ परियेचनां तं स्थालीपाकवत् ॥ अयमग्नौ करणाहोमो  
मासिकश्चाह्वयः ॥ तच्च स्मातर्गन्यभावेन कार्यमितिकेचित् ॥ कार्यमेवेति बहवः ॥



अतएवसर्वाधानिनोहोमवर्ज्यमासिकश्राद्धमुक्तंसुदर्शनभाटये ॥ महालयेतद्वदित्ये  
के ॥ प्रकरणांतरत्वात् ॥ कर्मांतरत्वेनस्मार्तपार्वणावत्कार्यमितित्वस्मदगुणवः ॥  
श्राद्धिकादियुतुस्मार्तपार्वणाविधिरेव ॥ एवंमातृवार्यिकादियु ॥ मासिश्राद्धवि  
हतावष्टकायांमातृश्राद्धेवैकतहोमेनप्राकृतहोमबाधः ॥ अन्वष्टकासुमातृश्राद्धेने  
तिभाटये ॥ तत्रापिश्राद्धांतरवत् ॥ क्रियमाणोतुयन्मेमातेत्यादौगुणात्वेपिमातृप्रा  
धान्यविवक्षितं ॥ मासिश्राद्धेनकल्पोव्याख्यातइतिस्मृतात् ॥ आग्नेयेवमनोता  
कार्यमितिवचनादग्निशब्दस्यैवैकतदेवताभिधायित्वम् ॥ तेनामुठ्याइत्यत्रासु  
कशर्मभ्यांपितृभ्यामित्याद्यहःकार्यः ॥ तच्चमासिश्राद्धजीवत्पित्रादीनांव्युत्क्र  
ममृतपित्रादीनांचकार्यमित्युक्तंसुदर्शनभाटये ॥ तत्प्रकारस्तुवक्ष्यते ॥ माता  
पित्रोर्द्वित्वादीतुनोहः ॥ तस्मादुच्येनोहेदितिनिषेधात् ॥ प्रकृतावूहाभावाच्चप  
त्नीसन्नह्येतिवत् ॥ उपदेशिमतेतूहः ॥ यथायन्मेमातरौप्रलुलोभतुश्चरत्यावन  
नुव्रतेइत्याद्यस्मत्पितृकृतमासिश्राद्धनिर्यायेजेयमितिदिक् ॥ अन्यतप्राग्वत् (अ  
थपरिवेषणां) तच्चौपवीत्येवाज्येनदेवपूर्यमामासुपक्वमितिपात्रारायुपस्तीर्यकु  
र्यादितिहेमाद्रिः (भारतेदानधर्मेपि) आजग्राहुतिंविनानैवयत्किंचित्तपरिविध्य  
ते । दुराचारैश्चयद्भुक्तंतंभांगंरक्षसांविदुः (तत्रैवशौनकः) विधिनादेवपूर्वतुप  
रिवेषणामाचरेत् (तत्रैवधर्मः) फलस्यानंतताप्रोक्तास्त्वयंचपरिवेषणो (तत्रैववायु  
भविष्ययोः) भार्यायाःश्राद्धकालेतुप्रशस्तंपरिवेषणम् (ब्रह्मांडे) नापवित्रेणानै  
केनहस्तेननविनाकुशम् । नायसेनायसेनैवश्राद्धेतुपरिवेषयेत् (वशिष्ठः) आय  
सेनतुपात्रेणायदन्नंसंप्रदीयते । भोक्ताविद्यासमंभुक्तेदाताचनरकंव्रजेत् (पैठीन  
सिः) सीसकायसरीतीपात्राराययज्ञियानि (तत्रैवहारीतः) सौवर्गाराजता  
भ्यांचखड्गोनौदुंबरेणावा । दत्तमस्ययतांयातिफलमुपात्रेणावापुनः (काशार्जि  
निः) दद्यादियंघृतंचान्नंसमस्तद्व्यंजनानिच । उदकंचैवपक्वान्नोदव्यातुकदा  
चन(यमः)पंत्यांविद्यमदातुश्चनिष्ठकृतिर्नैवविद्यते (पृथ्वीचन्द्रोदयेपराशरः)  
सर्वदाचतिलाग्राह्यःपितृकृत्येविशेषतः । भोज्यपात्रेतिलानदृष्ट्वानिराशाःपितरो  
गताः (चन्द्रिकायांवृद्धशातातपः) हस्तदत्तास्तुयेस्नेहालवणाव्यंजनादयः ।

पितृणां नोपतिष्ठति भोक्ता भुंजीत किं त्वयम् (घृतपात्रे विशेषो ग्रन्थांतरे) ओद  
ने परमाज्ञे च पात्रमासाद्य मुग्धधीः । घृतेन पूरयेत्पात्रं तद्घृतं सुधिरं भवेत् ॥ घृता  
दिपात्राणि भूमौ स्थापयेन्न भोजनपात्रे इति मदनरत्ने (संग्रहे) हस्तदत्तं तु नाश्रिया  
ल्लवणाव्यंजनादिकम् ॥ अपक्वं तैलपक्वं च हस्तेनैव प्रदीयते ( पात्रालंभनमुक्तं च  
तुर्विंशतिमते ) उत्तानंदक्षिणांसव्यं नीचं पात्राण्युपस्पृशेत् ( याज्ञवल्क्यः ) द  
त्त्वान्नं पृथिवीपात्रमिति पात्राभिसंभ्रणम् । कृत्वेदं विष्णुरित्यन्ने द्विजांगुष्ठं निवेश  
येत् ( बौधायनः ) त्रिप्रांगुष्ठेनानखेनानुदिशति ॥ पृथिवीतेपात्रं द्यौरपिधानं ब्रा  
ह्मणास्यमुखेऽमृतेऽमृतं जुहोमि ॥ ब्राह्मणानां त्वाविद्यावतां प्राणापानयोर्युहो  
म्यसितसंसिसामे पितृणां स्येष्टा अत्रासुष्ठिमलोके इति ॥ अद्य जुहोम्यग्रे स्वाहाश  
ब्दः क्रांतीयसूत्रे उक्तः ॥ पैंत्रे स्वधाशब्दः ( अंगुष्ठे विशेषमाह हेमाद्रौ धौम्यः ) परि  
वृत्य नवांगुष्ठं द्विजस्थाने निवेशयेत् ( तथा ) उत्तानेन तु हस्तेन द्विजांगुष्ठं निवेशनम् ।  
यः करोति द्विजो मोहात्तद्वै रक्षांसि भुंजते ( तत्रैव यमः ) विष्णोर्हव्यं च कव्यं च ब्रूया  
द्रक्षस्व चक्रमात् ॥ दैवे पित्र्ये चेत्यर्थः ( तत्रैवात्रिः ) सम्बन्धनाम गोत्राणि इदमन्नं  
ततः स्वधा । पितृक्रमादुदीर्येति स्वसत्तां विनिवर्तयेत् ॥ हस्तेनाभुक्तमन्नाद्यमिद  
मन्नमुदीरयेत् । अत्रान्नदाने चतुर्थी स्यादित्यादिविशेषाः पूर्वमुक्ताः ॥ अत्र पूर्वोक्त  
संवांते पुनरुवाद्रवसंज्ञकाविश्वेदेवा देवता इदमन्नं सपरिकरं हव्यं अयं ब्राह्मणा  
स्त्वाहवनीयार्थं दत्तं दास्यमानं चातृप्तेः । मयेयं भः गदाधारो भोक्ता इदमन्नं ब्रह्मसौ  
वर्णापात्रस्थमन्नमक्षयवत्तच्छायास्थं अमुकेभ्यो विष्टेभ्यो देवेभ्य इदमन्नममृतं  
पंपरिविष्टं परिवेष्टयमाणां चातृप्तेः स्वाहा नमोनममेति बह्वृचपरिशिष्टहेमाद्या  
द्यनुमतः प्रयोगः ॥ सर्वापित्र्ये अमुकगोत्र वसरूपादितत्तन्नामज्ञेयम् ॥ ततो ये दे  
वास इति दैवेये चेहपितर इति पित्र्ये केचिज्जपति ॥ ततो छिद्रं वाचयेत् ( तत्रै  
व प्रचेताः ) आपोशानकरे विष्टे संकल्प्याच्छिद्रं भाषणात् । निराशाः पितरो यां  
ति देवैः सह न संशयः ( पारस्करः ) संकल्प्य पितृदेवेभ्यः सावित्रीमधुमज्जपः ।  
आहं निवेद्यापोशानं जुय प्रैषेयं भोजनम् ॥ निवेद्येति ब्रह्मार्पणां कृत्वेत्यर्थः ॥ अत  
एव बृहन्नारदीये च त्रयागमुक्तोक्तम् ॥ दत्तं हविश्च तत्कर्म विष्णावेवै समर्पयेदिति



(यत्तु कृत्यरत्ने काष्ठाजिनिः) अपसव्येन कर्तव्यं पितृकृत्यमशेषतः । अन्नदाना-  
द्विषे सर्वमेवं मातामहेष्टव्यं (तच्च) ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः हरिर्दिता हरिर्भोक्ता चतु-  
र्भिश्चेति केचित्पठन्ति (धर्मप्रदीपे) ततोऽर्च्यं पितृदेवेभ्यः संकल्प्य च यथाविधि ।  
दत्तं यद्वा स्यमानं च आतृप्तेर्नममेति च (तथा) आद्वीयान्नस्य संकल्पो भूमावेव प्रदी-  
यते ॥ हस्तेषु दीयमानं तु पितृणां नोपतिष्ठते ॥ वैश्वदेवस्य वामेर्तु पितृपात्रस्य द-  
क्षिणे । संकल्पो दक्षिणे स्थाप्य आद्वीयथारुचि (प्रचेताः) आपोशानं प्रदाया-  
थ सावित्रीं विजपेदथ । मधुवाता इति त्वचं मध्वित्येतत्त्रिकं तथा (मिताक्षरायां  
पारस्करः) संकल्प्य पितृदेवेभ्यः सावित्रीं मधुसज्जपः । आद्वीय निवेद्या पोशानं जु-  
ष्य प्रैषेय भोजनम् ॥ गायत्रीं विःसृज्य वापि जपेद्दद्यात्पूजितं । मधुवाता इति त्व-  
चं मध्वित्येतत्त्रिकं तथा ॥ (याज्ञवल्क्यः) सव्याहृतिकां गायत्रीं मधुवाता इति त्व-  
चम् । जपत्वा यथासुखं वाच्यं भुञ्जीरं स्तेपिवारयताः ॥ यथासुखं जुष्य ध्वनिं तिवा-  
च्यम् (अत्रिः) असंकल्पितमन्त्राद्यं पारिभाष्यां यद्युपस्पृशेत् । अभोज्यं तद्भवेदन्नं पि-  
तृणां नोपतिष्ठते ॥ अन्नं दत्तं न गृह्णीयाद्यावत्तोयं न संपिबेत् (अपोशाने विशेष-  
साहसृतिः सुचये) आपोशानं वामभागे दुरापानसंभवेत् । दक्षभागे तु यः कुर्या-  
त्सोमपानसंभवेत् (तथा) पुनरापूर्य आपोशानं दुरापानसंभवेत् (हेमाद्रौ अत्रिः)  
दत्ते वाप्यथ वा दत्ते भूमौ यो निक्षिपेद्ब्रालिम् । तदन्नं निष्ठफलं याति निराशैः पितृ-  
भिर्गीतैः ॥ केचिदो ज्येन कुर्वन्ति तन्न । पायसेन तथा ज्येन मायात्वेन तथैव च । न कु-  
र्याद्ब्रालिपानं तु श्रोतृनेन प्रकल्पयेदिति स्मृतिसारे निषेधात् (शंखः) आद्वीय्यु-  
क्तान् भुञ्जानान् पृच्छेत्स्वयमादियु । उच्छिष्टाः पितरो यांति पृच्छन्तो नावसंशयः  
(कात्यायनः) अन्नं वत्सु जपेत्सव्याहृतिकां गायत्रीं सकृत् त्रिवारं सोऽन्वीः पौरुषं  
सूक्तमप्रतिरयामिति (हेमाद्रौ सौरपुराणे) सैन्द्रज्जपौरुषं सूक्तं यावयेद्ब्राह्मणा-  
स्ततः (मात्स्यपाद्योः) ब्रह्मविठरावर्कसूद्राणां स्तोत्राणि विविधानि च । इन्द्रेश-  
सोमसूक्तानि पावसानि प्रचशक्तितः ॥ मंडलं ब्राह्मणां तद्वत् प्रीतिकारि च यत्पुनः ।  
अभावे सर्वविद्यानां गायत्री जपमाचरेत् (पृथ्वी चंद्रोदये वा ह्ये) दीणां वंशध्वनिं चा-  
थ विप्रेभ्यः संनिवेदयेत् ॥ जपेच्च पौरुषं सूक्तं नाचिकेत्ययं तथा ॥ त्रिसंभु त्रिसुपर्णा च

पावमानीर्यजुंश्चि ( हेमाद्रावत्रिः ) हुंकारेणापियोब्रूयाद्धस्ताहापिवदेद्गु  
 राच । भूतलाचोद्धरेपात्रमुचेद्वस्तेनवापिवेत ॥ प्रौढपादोर्वाहःकच्छोर्वाहजानु  
 करोपिवा । अंगुष्ठेनविनाश्रातिमुखशब्देनवापुनः ॥ पीतावशिष्टतोयानिपुनरु  
 दृत्यवापिवेत । खादितार्धात्पुनःखादेन्मोदकानिफलानिच ॥ मुखेनवाधमेदन्नं  
 निसीवेद्वाजनेपिवा । इत्थमश्वनिद्विजःश्राद्धं हत्वागच्छत्यधोगातिस ( जावालः )  
 इष्टमुष्णं हविष्यं दद्यादन्नं शनैःशनैः ( वृद्धश्रातातपः ) अपेक्षितं याचितव्यं श्राद्धार्थं  
 उपकल्पितम् । नयाचतेद्विजोमूहःसभवेत्पितृधातकः ( यत्तुयमः ) श्राद्धेद्विजेनै  
 वदद्यान्नयाचेन्नैवदापयेदितितदसंपादितवस्तुविषयमिति हेमाद्रिः ( हारीतः ) ऊ  
 र्वपाशाश्चविहसन्सक्रोधोविस्मयान्वितः । भुग्नपृष्ठप्रचयङ्कतेनतत्तुप्रीणा  
 तिवैपितृन् ( प्रचेताः ) नस्पृशेदामहस्तेन भुंजानोन्नकदाचन । नपादेनशिरोव  
 स्तितंजप्रदाभाजनंस्पृशेत् ( शंखः ) श्राद्धपंक्तौतुभुंजानोब्राह्मणोब्राह्मणंस्पृशेत् ॥  
 तदन्नमत्यजनुभुक्त्वागायत्र्यष्टशतंजपेत् ( उग्रनाः ) भोजनंतुनतिःशेषंकुर्यात्प्रा  
 जःकथंचन ॥ अन्यत्रदधतः क्षीराद्या सौद्रात्सक्तुभ्यसवच ( ब्राह्मो ) नचाश्रुपा  
 तयेज्जातुनशुठ्कांगिरसीरयेत् ॥ नचोद्दीक्षेतभुंजानान्नचकुर्वीतमत्सरम् ( यमः )  
 स्वाध्यायंश्रावयेत्सम्यग्धर्मशास्त्रागाधैर्वाह ( प्रचेताः ) भुंजानेषुतुविप्रेषुऋषय  
 जुःसामतक्षगाम । जपेदभिमुखोभूत्वापित्र्यंचैवविशेषतः ॥ यजुंश्चिचैवरुद्रंचरा  
 क्षोदनीक्षचमवच । राक्षोदनीक्षगुठ्वरक्षोहणमित्याद्याः ( तत्रैवनिगमः ) भुंज  
 त्तुजपेत्पावमानीरुदिरतामध्वन्नवतीश्च ॥ अन्नवत्यःपितुंनुस्तोषमिति ( पृथ्वी  
 चंद्रोदयेभरद्वाजः ) भुंजानेषुतुविप्रेषुप्रसादात्सवनेषुदम् । पादकृच्छ्रं ततःकृत्वा  
 अन्यंविप्रंनियोजयेत् । क्षणापाद्यादिसत्त्वेत्यर्थः ( विप्रवसनेतत्रैवदक्षः ) निमंत्रित  
 स्तुयःश्राद्धेभोजनेमुखनिःसृते । तदैवहोसंकुर्वीतस्वागतोविप्रःसमाहितः ॥ प्रा  
 णादिपंचभिर्मंत्रैर्यावत्तद्वात्रिंशसंरव्यया ॥ ब्राह्मणास्तुततःकृत्वाघृतप्राशनमा  
 चरेत् ॥ ( ऋग्विधानेतु ) इन्द्रायसोमसक्तेनश्राद्धंविधेनायदाभवेत् । अग्न्यादिभि  
 र्भोजनेनश्राद्धसंपूर्णमेवहीत्युक्तम् ॥ अग्न्यादिभिरितिलौकिकाग्निस्थापनचरु  
 निर्वापाज्यभार्गातेनामगोत्रपूर्वमग्नौपितृनावाह्यसंपूज्यान्न त्यागंकृत्वाप्राणा



दिभिर्द्वाविंशदाहुतीहुनेदित्यर्थः ॥ भोजनेन पुनः श्राद्धेन ॥ तेन होमः पुनः श्राद्धं चे-  
ति पक्षद्वयमुक्तम् ॥ सक्तजपस्तभयानुगतः (स्मृतिसंग्रहे) प्राधान्यं पिंडदानस्य भो-  
जनस्य तदंगता । अतो भुक्तिक्रियाहानौ श्राद्धवृत्तिं नमन्वते ॥ पिंडदानोत्तरं वां-  
तौ होमस्य नावृत्तिः ॥ पिंडदानात् प्राग्वांतौ तद्दिने उपवासं कृत्वा परेद्युः पुनः श्राद्धं  
कार्यमित्यर्थः (तत्रैव) श्राद्धपंक्तौ तु भुंजानो ब्राह्मणो वसते यदि ॥ लौकिकारणौ  
प्रतिष्ठाप्य अर्चयेच्च हुताशनम् (तथा) एकस्य वयदा विप्रो भोजने हृदि तोयति । तदे-  
व अग्निं समाधाय होमं कुर्याद्यथाविधि (द्वितीयपक्षे ऋग्विधाने) भोजनोपक्रमादू-  
र्ध्वं प्रक्रमात् पूर्वतो यदि ॥ श्राद्धविघ्ने पुनः कार्यं जपहोमौ न तृप्तिदौ (स्मृतिसंग्रहे)  
अकृते पिंडदाने तु भुंजानो ब्राह्मणो वसेत् । पुनः पाकात् कर्तव्यं पिंडदानं यथावि-  
धि (पिंडदानं श्राद्धम्) अकृते पिंडदाने तु पिताय दिवमेत्तदा । पुनः पाकं प्रकुर्वीत श्रा-  
द्धं कुर्याद्यथाविधीत तत्रैवोक्तेः (तथा) पित्रार्थानां त्रयाणां च पिता च वसते यदि ।  
तद्दिने चोपवासः स्यात् पुनः श्राद्धं परे हनि ॥ वसने वा विरेके वा तद्दिनं परिवर्जयेत् ॥  
सद्युवचने युमलं चिंत्यं ॥ इदमासिकादिदकविषयम् ॥ दशादौ तु वांता वामेन तदेव  
कार्यम् ॥ श्राद्धविघ्ने द्विजातीनामाम श्राद्धं प्रकीर्तितम् ॥ अमावास्यादिनियतं मास-  
संवत्सरादृतमरीचिस्मृतेः ॥ श्राद्धे पिंडदानमेव प्रधानमिति कर्काचार्याः ॥ तन्म-  
तेदक्षोक्तो होमस्य नावृत्तिः ॥ विप्रभोजनमिति मेधातिथिः ॥ भोजनं पिंडदाना-  
रणौ करणानीति कपर्दिधूर्तस्वामिहेमाद्यादयः ॥ श्राद्धस्य होमदानोभयस्य रूपत्वात्सं-  
पूर्णादालाभावाद्भोजनस्यांगत्वेऽपि सोमवसते इति युक्तम् ॥ तन्मते पूर्वाक्तो निर्णयः ॥  
अन्नयागमात्रं प्रधानमा भोजनं तु प्रतिपत्तिरूपसंगमतो वांतौ तद्द्वानेऽपि नावृत्तिरिति  
गौडभैथिलादयः ॥ नैमित्तिकविधानमिति युक्तं प्रतीमः ॥ अत्रेदंतत्त्वम् । वैश्व-  
देविकस्य वसने होमस्य नावृत्तिः । अंगत्वात् । तच्च रक्षार्थत्वादिष्टि श्राद्धे कृतदक्ष-  
इत्यादि स्मृतेष्व ॥ तत्र जयान् जुहुयादिति वत् । पिता महादेरपि तथा । पितेत्युक्ते-  
रितिकेचित् । तस्यापि प्रधानत्वात् पितृवदितितु युक्तम् । सपिंडीकरणौ वैश्व-  
कवत् सपिंडीकरणादीन्यानि श्राद्धानि योऽङ्ग ॥ तत्रापिंडप्रधानत्वं प्रेतत्वं विनि-  
वर्तकमिति स्मृते ॥ सहैकोऽदिष्टादौ तूभयप्राधान्यादावृत्तिरेव । एकस्य द्विजोभो

उयः पिंडोप्येकोविधीयतइतिस्मृतेः ॥ वृद्धिसंकल्पनित्यश्राद्धादौतुभोजनप्राधान्याद्वातावावृत्तिरेव ॥ वृद्धिश्राद्धेविकल्पेनपिंडदानं बुधैः स्मृतम् । नित्यश्राद्धमदैवं स्यात्पिंडदानविवर्जितमितिस्मृतेः ॥ भुक्तिक्रियायाः प्राधान्यंश्राद्धेसंकल्पसंज्ञके । तत्रैवपितृविप्रस्यतूपधातेपुनः क्रियतेतिसंग्रहाक्तेश्च ॥ सघादावप्येवम् ॥ तीर्थमहालयदौदर्शवदित्याशार्काद्यालोचनेनप्रतीमः (आश्वलायनः) तृप्तान्नज्ञात्वामधुमतीः श्रावयेदक्षन्मीमदंतेति चसंपन्नंस्पृष्ट्वा यद्यदन्नमुपभुक्तंतत्तत्स्थालीपाकेनसह पिंडार्थमुद्धृत्यशेषंनिवेदयेत् ॥ अभिमतेनुमतेचेति ॥ अत्रगायत्रीमध्वितिर्विक्रजपोपिज्ञेयः तृप्तान्नबुध्वाक्षमादायसतिलं पर्ववज्जपोदितिप्रचेतसोक्तेः (व्यासः) तृप्ताः स्थेतिपृष्टास्तेब्रयुस्तृप्ताः स्मृत्यय । अभिमतेविप्रैः स्वीकर्तुमीष्टे (शौनकोपि) अन्नशेषैश्चकिंकार्यमितिपृच्छेततांस्ततः । तेइष्टैः सहभोक्तव्यमितिप्रत्युक्तिपूर्वकमाप्रदद्युः सकलंतस्मैस्वीकुर्युर्वायथारुचि (श्राद्धविशेषेप्रश्नभेदमाहहेमाद्रौविष्णुः) पिष्ट्येस्वदितमितिगोष्ठ्यामुश्रुतंसंपन्ननित्यभ्युदयेदैवेरोचतइतिआयुष्यमितिस्वैरियु । स्वैरमिच्छाश्राद्धम् (याज्ञवल्क्यः) अन्नमादायतृप्ताः स्थ शेषंचैवानुमान्यच । तदन्नंप्रकिरेद्भूमौदद्यादापः सकृत्सकृत् । इदंचावविकिरदानमन्यशाखिनाम् ॥ आश्वलायनानांतुपिंडांतमवसूत्रकृतोक्तम् (कात्यायनस्तु) विकिरोत्तरंगायत्र्यादिजपंतृप्तिप्रश्नंचाह (हेमाद्रौदेवलः) ततः सर्वाशनं पात्रेगृहीत्वाविविधंबुधः । तेषामुच्छेयरास्थानेविकिरंभुविनिक्षिपेत् (माधवीयेप्रचेताः) सार्ववर्णिकमादाययेअग्नीतिभुविनिक्षिपेत् । सचकुशेकार्यः ॥ दर्भेषु विकिरश्चयइत्युक्तः ॥ मंत्रः कातीयः ॥ अग्निदग्धाप्रचयेजीवायेप्यदग्धाः कुले मम । भूमौदत्तेनहृष्यंतुतृप्तायांतुपरांगतिमिति (अन्येतु) असोमपाप्रचयेदेवायज्ञभागविवर्जिताः । तेषामन्नंप्रदास्यामिविकिरंवैप्रवदेविकमितिहेमाद्रौगोभिलोक्तेनदैवो॥ असंस्कृतप्रसीतायेत्यागिन्योयाः कुलस्त्रियः । दास्यामितेभ्योविकिरमन्नंताभ्रप्रश्चपैतकमित्यग्निपुराणोक्तेनपिष्ट्येन्नविकीर्ययेअग्निदग्धाइत्युच्छिष्टपिंडंकुशोपरिपृथग्दद्यादित्याहुः ॥ पृथ्वीचंद्रोदयेप्येवम् (ब्राह्मो) ततः प्रसाल्य हस्तौचद्विराचम्यहरिंस्मरेत् (माधवीयेगौतमः) विकिरमुच्छिष्टैः प्रतिपादयेत् ॥



(हेमाद्रौव्यासः) उच्छिष्टैरेवविकिरंसदैवप्रतिपादयेत् (भृशः) पिंडवत्प्रतिपत्ति  
स्याद्विकिरस्येतितील्वलिः (आहकारिकायाम्) यजमानस्यदासादीनुद्दिश्य  
द्विजसत्तम । तस्मादन्नंयजेद्भूमौवासभागेषुपैतृके (मनुः) उच्छेष्टांभूमिगतम  
जिह्मस्याशठस्यच । दासवर्गस्यतत्पिण्ड्येभागधेयंप्रचक्षते (विष्णुः) उदङ्मु  
खेऽवाचमनमादौदद्यात्ततःप्राङ्मुखेषुपिण्ड्येदेवेचेत्यर्थः (शातातपः) विश्वेदेव  
निविष्टानांचरमंहस्तधावनम(हेमाद्रौवाराहे)हस्तंप्रक्षालय्यप्रचापःपिवेद्भुक्त्वा  
द्विजःसदा ॥ तदन्नमसुरैर्भुक्तंनिराशाःपितरोगताः (मरीचिः)हस्तंप्रक्षालय्यगं  
डयंयःपिवेदविचक्षणाः । आसुरंतद्वेच्छाद्वंपितृणानोपतिष्ठते (तत्रैवसंग्रहे) प  
वित्रग्रंथिमुत्सृज्यमंडलेभुविनिक्षिपेत् । हस्तादीनक्षालयेद्विद्वानशरावादीनकुत्र  
चित् (व्यासः) तांबूलोद्गिरसांचैवगंडुघोद्गिरसांतथा । कांस्यपात्रेतथाताम्रेन  
कुर्वीतकदाचन ॥ उष्णोदकैर्धान्यचर्गैःकरौष्मशूणिशोधयेत्(अथपिंडदानम्)  
तच्चार्चनोत्तरमग्नौकरणोत्तरंभोजनोत्तरं विकिरीत्तरंस्वधावाचनोत्तरंविप्रविस  
र्जनोत्तरंचेतिहेमाद्रौस्मृतियुचपक्षाउक्ताः ॥ तेषांशाखाभेदेनव्यवस्था ॥ प्रेतश्राद्धे  
युपूर्वमन्येषुभोजनोत्तरमितिचंद्रिकामाधवौ ॥ सर्वत्रभोजनोत्तरमितिबहवः  
(आश्वलायनः)भुक्तवत्स्वनाचांतेयुपिंडाच्चिदध्याचांतेऽवेके ॥ भुक्तवत्स्व  
तिपूर्वनियेधार्थम् । साग्निरितिप्रणीतसमीपेऽनग्निरिद्विजसमीपे(हेमाद्रौजातूक  
रायः) व्यामसात्रंसमुत्सृज्यपिंडांस्तत्रप्रदापयेत् । प्रसारिताभुजांतरंव्यासः(संक  
हेतुव्यासः)अरत्निमात्रमुत्सृज्येति ) (यत्तुतत्रैव) सिकताभिर्मृदावापिवेदीद  
क्षिणानिम्नगोतितदन्यशाखिपरम (देवलः) ततस्तैरभ्यनुजातोदक्षिणांदिशमे  
त्यत्र (चंद्रिकायाम्) पिंडनिर्वापणांकार्यकुशाभावेविचक्षणाः । काशेषुराजदू  
र्वासुपवित्रेपरमेहिते(आश्वलायनः) स्फयेनरेखामुल्लिखेत् ॥ अपहृताअसुरारक्षां  
सिवेदिष्यदइतितामभ्युक्ष्यसकृदाच्छिन्नैरवस्तीर्य प्राचीनावीतीरेखांत्रिसदकेना  
पनयेच्छुधंतांपितरःशुधंतांपितामहाःशुधंतांप्रपितामहा इतितस्यांपिंडाच्चिपृ  
णीयात्पराचीनपाणिःपिवेपितामहायप्रपितामहायैतत्तैसौयेचत्वामत्रान्विति  
(हेमाद्रौपारस्करः) कराभ्यामुल्लिखेत्स्फयेनकुशैर्वापिमहींद्विजःबह्वृचानां



करेणौवलेखाचारनेप्यभिमुखेतिवृत्तिः ॥ दक्षिणाप्राचीनेदिमुद्धृत्येसापस्तंबोक्ते  
 प्रच (देवलः) आवाहयित्वादर्भाग्रैस्तेषांस्थानानिकल्पयेत् ॥ तेष्वपिनेषुप्राचि  
 साप्रयच्छेत्सतिलोदकम् ॥ पश्चाच्चेनेनतिस्नपितुमीर्धने (वायवीये) सधुसर्पिस्त  
 लयुतांस्त्रीवपिंडानिर्वपेद्बुधः (त्रिस्थलीसेतौ) तिलमज्जं चपाजोयुग्मं संपप्यस्त  
 था । सधुसर्पिः खंडयुक्तापिंडमष्टांगमुच्यते (याज्ञवल्क्यः) सर्वमज्जंमुपादायसति  
 लंदक्षिणामुखः । उच्छिद्यसन्निवोपिंडानिद्वयद्वैपितयजंयत् ॥ कोचत्विपिंडेषुसा  
 यानवर्जयति ॥ मायाः प्रादेषुवैप्राह्मवज्रयन्त्रिचैवार्निर्वापिंडये ॥ प्राह्मण्यमुपायास  
 हंतथासायोरिनिपिंडयेरितिस्मृतिस्मृतिस्मृति ॥ साध्यात्सर्ववैद्व्यादिपिंडेभ्योप्रवित्र  
 ज्येदितिस्मृतेप्रच ॥ अत्रमूलं चिह्नम् ॥ हेमाद्रौर्वापसर्वमज्जंस्वप्रकृतार्थेवतिष्ठ  
 र्वाचप्रहणमुक्तम् ॥ अत्रमूलमज्जंमनुजाप्यसर्वमेकमोद्धृत्योर्ध्वकक्षसमीपेदर्भयुत्री  
 स्त्रीवपिंडान्दद्यादितिगोभिलसूत्रे ॥ सर्वस्मात्प्रकृतार्थेवतिष्ठतिपिंडोऽसधुतिलाजिब  
 तान्निर्वातच ॥ शेषान्यसाधुदभावेपिंडानिवृत्तिः प्राप्तेतीर्तितमैथिलवाचस्पती (तन्त्र)  
 सुयोपवापकसप्रयुक्तव्यवहृत्वेप्यर्थकर्मत्वाद्युपायानुरोधेनप्रधानत्वात्प्राप्तोद्यतो  
 ह्येपिद्रव्यांतरेसाकार्यम् ॥ अतोनेयंप्रतिप्रतिः ॥ किंचिद्विप्रमार्गान्त्युक्तं प्राक् ॥  
 अन्यथासपिंडीकरणादौसंयोजनादेः प्रधानस्थलेपिप्राप्तेरितिचिह्नम् ॥ अथपिंडप्र  
 माणाः । हेमाद्रौर्वापराः) कर्मिष्ठचित्त्वमावाज्ज्वापिंडान्दद्याद्विप्रान्तः ॥ प्राक्  
 दंडप्रमाणान्वीमलकैर्बद्धैः सुमान्ति (तवैकव्रतः) कर्मिष्ठस्यप्रमाणोपिंडान्  
 दद्यात्समाहितः । तत्समं चिकिंदद्यात्पिंडान्तेषुदंडुलैः (अंतिप्रवृत्तौभाषा  
 स्तु) वक्तोद्विष्टेसपिंडेतुर्वापत्यंतुविधीयते ॥ तारिकेत्प्रमाणं प्रचक्षतेवैरिस  
 केतव्यम् ॥ तीर्थेदर्थेचसंप्राप्तेककुदंडप्रमाणाः । तेष्वप्येगयायाद्विष्टादौसज  
 केपसमसित्प्राहुः ( कर्मिष्ठक्यामसायः ) यत्रसुव्रतः पिंडास्तवद्विष्टतिलो  
 पगाः । यत्रचैकोभवेत्पिंडस्तत्रवज्रसंज्ञितम् ॥ अतोपिंडस्तुर्वापेतादौसज  
 दद्यत्तद्वि (वायवीये) पत्नीपिंडास्तुमृदनीयान्निर्वाप्यपहर्षिनी (हेमाद्रौ  
 लौमांसिः) महालयेगयायांचप्रेतप्राद्वेदप्राद्विके पिंडाद्व्यप्रमाणः प्राद्वेदम  
 न्यत्रकीर्तयेत् ( शास्त्रायनिः ) असावेत्तद्विद्युक्त्वातदंतेचस्वभावः । अथ







वृत्त्ययथाशक्तिप्राणाच्चसित्वाऽभिपर्यावृत्त्याऽमीमदंतपितरो यथाभागमावृ  
 यायीयतेतिचरोः प्राणभक्षभक्षयेन्नियंतिनेयनमिति ॥ नित्यग्रहरांशेषाभावेपि  
 कुर्यादित्यर्थः (शौनकः) अथैषामवपितरइत्याद्येनानुमन्त्रणम् ॥ अमीमदन्तेत्या  
 द्येनमन्त्रेणाभ्यनुमन्त्रयताम् ॥ पिराडिशिष्टचरोरन्तर्किञ्चिदाप्रायतस्यजेत ॥ प्र  
 साह्यचक्षुशंभतामित्याद्यैरेवपर्ववत्तमन्त्रैः पिराडेयुषानीयानियिचेतपितृतीर्थ  
 तैः (व्याघ्रः) अद्विः प्रसाह्यतत्प्राञ्जित्पिराडंप्रतिपूर्ववत् । कृत्वावनेजनंकुर्यात्पि  
 राडपात्रमधोमुखम् ॥ सतत्कातीयादीनाम् (आचार्यः) ततःसम्यग्द्विराचम्यनी  
 बीविस्त्रस्यवापयतः (आचलायनः) असावभ्यंश्वासार्वभवेतिपिराडेयभयंजनां  
 जनेवासौदद्यादशामूलास्तुकांवापंचाशद्व्यतायाऊर्ध्वस्त्रलोमैर्तद्विःपितरोकाशो  
 मामीतोऽन्यत्पितरोयुडुध्वमिति (आद्विचिन्तामणौब्राह्मणे) सतद्विःपितरोवागद  
 त्तिजल्पवपृथक्पृथक् । अनुकामुकमोत्रैस्तुभ्यंवासोपदेदुधुः ॥ इदंक्रांतिया  
 नाम ॥ सतद्विःपितरोवागदप्रतिपिराडमिति तत्समात् (हेमाद्रौब्राह्मणे) श्रेयमाहुस्ते  
 ककुदमन्त्रसमित्यनेवहि ॥ तैलक्ष्णातिलैश्चदद्यादभयंजनेहितम् । तैलक्ष्णैश्च  
 रापीडितिप्रसिद्धम् ॥ आचनेप्रायश्चर्मपिस्तम्बाश्चिन्निययम् (तथैवक्यावः) तान्त्र  
 कृत्वाग्निधर्पचरीपंचविनिवेश्येत (हेमकः) दक्षिणां सर्वभोगांपंचप्रतिपिराडंप्र  
 सापयेत् । भिक्षुग्राह्यप्राणिनां प्रयत्नं ज्ञानान्यशान्तिश्च (तत्रैवब्राह्मणः) । अर्चकं  
 चित्तपदयतेगृहेभ्यः भिक्षुभ्योर्हितम् ॥ अनिर्वह्यनं प्रोक्तव्यं पिराडं लोकयंचन ॥  
 सतत्सव्येनेतिकेचित् ॥ युक्तत्वंपसव्येन (मनुः) । अथद्विधेचतुर्षां पिराडाचम्यथा  
 न्युत्तानसमाहितैः । ततोभिमन्त्रः पितरइत्यादित्रोपस्थानम् (मात्स्ये) अथाचांति  
 यंचाचम्यवारिदद्यात्सकृत्सकृत् । तिलपुठपासतान्पंचादसव्येदकमेवच ॥  
 अथदेवसव्यं पिच्येत्पसव्यमिति कर्कः ॥ परिभाषी क्तवचनात्सव्यमितियुक्तं ॥  
 अथशिवात्रापःसन्तु । सीमनस्यमस्त्वित्यादिप्रयोगो ज्ञेयः (मात्स्ये) नत्वाग्निः  
 प्रतिगृह्णीयाद्विजेभ्यः प्राडमुखोबुधः । अधोराः पितरः संतु सन्ति वत्युक्ते पुनर्हि  
 जैः ॥ गोत्रतथावर्धतांस्तयेत्युक्तः सतोः पुनः ॥ दातारो नो भिष्यतामन्नं देवेत्यु  
 दीरयेत् ॥ स्वस्तिवाचनंकुर्यात्पिराडानुवृत्त्यभक्तिः ॥ स्वस्तिवाचनात्प्राक्



पात्रचालनकार्यम् (हेमाद्रौ बृहस्पतिः) भोजने युचति यत्सुस्वस्ति कुर्वति यो द्विजः  
तदन्नमसुरैर्भुङ्क्तं निराशैः पितृभिर्गतैः (जातूकरायः) पात्राणि चालयेच्छुद्धेस्व  
यं शिष्योऽथ वा सुतः । तस्मात्पितृचवालेन नाम जात्या कथंचन (याज्ञवल्क्यः) स्वस्ति  
वाचयन्ततः कुर्यादस्य योदकमेव च (तत्रैव वृद्धशातातपः) । पितृणां नामांति नेण  
करे देयं तिलोदकम् । प्रयेकं पितृतीर्थे न अक्षय्यमिदं सस्ति वेति ॥ अथ सखी प्राश  
क्ता (तत्रैव नामांति खण्डे) उत्तममध्यपात्रं तु कृत्वा दत्त्वा च दक्षिणां हि रसयं देव  
तोनां च पितृणां रजतं तथा (बृहस्पतिः) तस्मात्प्रांजा क्रियां वा फलपुष्टयमया  
पितृणां ॥ प्रदद्यादक्षिणां यज्ञेऽथ सफलं भवेत् ॥ अथ प्रभुदेशेन दक्षिणादानेन  
पसव्यं विप्रो देशेन सव्यमिति साध्वः (कालिकायां माचार्यः) दद्याद्यज्ञोपवीत्येत  
त्वात्फलं दक्षिणां तथा (अग्निः) वदेच्च तस्मात्ते विप्रान् पितृदिभ्यः स्वप्नोद्यतीनां  
(शौमिलः) अथोरापितरः संस्त्वित्युक्ते स्वधां वाचयिष्यादिति पुत्रकृतिपितृभ्यः  
स्वप्नोद्यतीनां संस्त्वित्युक्तेऽस्तु स्वधेत्युच्यमाने वासां दद्यात्पूर्ववर्तीति ॥ आपस्तम्बेन  
तु पुत्रान्पितृभिरभितर्पयन्तीरित्यपि परिचये चने संवदतः (आश्वलायनः) अथैतत्  
प्रवाहयेत् ॥ परेतनपितरः सोम्या सोमंभीरेभिः पशुभिः पूर्वगोभिः ॥ इत्थीत्याह  
स्यंदविगोहभद्रं रथिचनः सर्ववीरं नियच्छतेति (मार्कण्डेयः) ब्राह्मणे ब्राह्मणं पितृ  
प्रायेणा विमर्जयेत् (प्रचेताः) स्वस्ति वाचयन्ततः कृत्वा पितृपुर्वं विमर्जयेत् (आश्व  
लायनः) अन्नं प्रकीर्या पवीत्योस्त्ववेति विसृजेदस्तु स्वर्वात्तमि (प्रह्लादवैवर्तः) आसा  
ब्राह्मणेति संवदतु पितृवाचं प्रदक्षिणां ॥ द्वारोपितेततः कृत्वा संप्रतः प्रविप्रोऽपृहम् ॥  
प्रांजलिश्चर्ततः प्राह तान् विप्रान् स्तु प्रवादिनः ॥ दातारो नो भिवर्धतामिन्नं च न इति  
महि ॥ सर्वमस्त्विति ते तं च कथयति समाहिताः ॥ एतन्मण्डलदेशे कार्यमिति  
हेमाद्रिः (मनुः) दातारो नो भिवर्धतां वेदाः सन्ततिरेव च ॥ अद्याचनो नाम प्रसमं  
स्रुध्वेयं च नोस्त्विति (बोधायनः) अन्नं च नो बहु भवेदतिथीं प्रचलभेमहि ॥ याचि  
तारप्रचनः संतु मां च याचिष्यं क्रुं चनेति ॥ अथ दातारो नो भिवर्धतां लोभध्वं याचिद्व  
मित्याद्युहेन पितृवा विप्रैः प्रतिवचनं कार्यमिति सुदर्शनभाष्ये ॥ स्वादुषं स ददति  
ब्राह्मणासः पितर इति च संवदयं पठति (शौनकः) ब्राह्मणानथ निर्याता च परित्य



त्रिः प्रदक्षिणाम् ॥ सस्त्रीकः स्वजनैः सार्द्धं प्रणामेद्रवितांजलिः ॥ कनियप्रथमाज्येषु  
चरमास्युः प्रदक्षिणो (हेमाद्रौ बृहस्पतिः) अद्यमेसफलं जन्म भवत्पादाब्जवन्दनात्  
अद्यमेवं शजाः सर्वे दातावो नुग्रहादिवम् ॥ पत्रशाकादिदानेन क्लेशताययमीदृ  
शाः ॥ तत्तत्केशजातं चित्तात्तु विस्मृत्य संतुमर्हथ (प्रचेताः) विसृजेद्भक्तिसंयुक्तः सी  
मांते चाप्यनुव्रजेत् (अथ पिण्डप्रतिपत्तिः ॥ हेमाद्रौ ब्रह्माण्डे) पिण्डमग्नौ सदा  
दद्याद्भोगार्थी प्रथमं नरः । पत्न्यै प्रजार्थं दद्याद्द्वैमध्यमं संवत्सर्वकम् ॥ उत्तमां गतिं  
सन्विच्छन् गोयुनित्यं प्रयच्छति । आज्ञां प्रज्ञायशः कीर्तिमप्सु पिण्डं प्रवेशयेत् ॥  
प्रार्थयन् दीर्घमायुष्यं वायसेभ्यः प्रयच्छति ॥ आकाशं समयेदप्सु स्थितो वा दक्षि  
णामुखः (आश्वलायनः) वीरमेदत्तपितर इति पिण्डानां मध्यमं पत्नीं प्राशयेत् ॥  
आवत्तपितरो गार्भकुमारं पुष्टकरमजम् ॥ यथायमरपात्रसदिति भर्वादत्तस्याद्ये  
नादाय द्वितीयेन प्राशनम् (आपस्तम्बस्तुदाने संवत्समाह) अपां त्वोयधीनारं संप्राश  
यामि भतक्तं गार्भं यत्स्वेति मध्यमं पत्न्यै प्रयच्छतीति (प्राशनेऽपि) यथेह पुरुषो  
असदिति तत्तद्वितीयः पाठो अन्येषां तत्तच्छाखायज्ञेयः (तत्रैव शङ्खः) पत्नी वा  
मध्यमं पिण्डमग्नीयादार्तवान्विता (कलिकायां छागलेयः) प्राचीना वीतिना  
संन्य पत्नी पिण्डो विभज्यते ॥ प्रतिपत्न्यस्य संवत्स्य कर्तव्या वृत्तिरत्र तु (साधवीये  
विष्णुधर्मे) तीर्थे याद्वे सदा पिण्डानि क्षिपेत्तीर्थे समाहितः (याज्ञवल्क्यः) पिण्डां  
स्तु गौजविप्रेभ्यो दद्यादग्नौ जलेऽपि वा (बृहस्पतिः) अन्यदेशगता पत्नी रोगिणी  
गर्भिणी तथा ॥ तदा तं जीर्णवृषभं छागो वा भोक्तुमर्हति (अथ पिण्डोपघाते हे  
माद्रौ प्रायश्चित्तकारादे देवलः) श्वसृगालखरैः पिण्डः स्पृष्टो भिन्नः प्रसादतः ॥ कर्तुं  
रायुष्यनाशः स्यात्तप्रेतस्तनोऽपसर्पति (जातकरार्थः पूर्वश्लोकांते) तद्वोषपरिहा  
रार्थं प्राजापत्यं प्रकल्पयेत् ॥ पुनः स्नात्वा तदा कर्त्ता पिण्डं कुर्याद्यथाविधि ॥ का  
कस्पर्शस्तु च दोषः ॥ पिण्डोपघातं प्रकल्प्य ॥ धनस्य तु विनाशः स्यात्तत्काकस्पर्शा  
दिकं विनोति तत्रैव श्वलोके गौतमोक्तेः (स्मृतिदर्पणोऽत्रिः) माज्जरिमूयकस्पर्शोऽपि  
च द्विदलीकृते पुनः पिण्डाः प्रदातव्यास्तेन पाकेन तत्तत्सणात् (वौशायनः) श्वचांडा  
लादिभिः स्पृष्टः पिण्डोऽयद्युपहन्यते । प्राजापत्यं चरित्वाथ पुनः पिण्डं समाच



रेत्त (बोपदेवोप्येवमाह) अथदिनान्तरेतुप्राजापत्यमात्रम् ॥ शेषप्रतिपत्तिश्चेन  
 पिण्डावृत्तौमानाभावादितिभैथिलास्तत्र ॥ सपिण्डीकरणादौशेषनाशेसंयोज  
 नादिलोपापत्तेः ॥ तेनवचनादमनइवात्रापितन्मात्रपिण्डदानावृत्तिः ॥ अतएव  
 नचनक्तंश्राद्धकुर्वीतारब्धेवा ॥ भोजनसमापनादित्यापस्तंबसूत्रम् ॥ रात्रौभोजन  
 मात्रंपूर्वद्युःकार्यम् ॥ श्राद्धसमाप्तिस्तुपरदिनेएव ॥ समाप्तिपर्यन्तंकर्तुंरूपवास  
 ष्चेतिहरिदत्तेनव्याख्यातम् ॥ तस्मात्प्राकान्तरेणापिण्डदानमात्रंकार्यम् ॥  
 अथपिण्डनिषिद्धकालः ॥ सचप्रायेणमहालयदिनिर्णयेपूर्वमुक्तः (हेमाद्रौवृ  
 हत्पराशरः) युगादियुग्मयायांच विद्युवत्ययनेतथा ॥ भरणीयुचकुर्वीत पिण्ड  
 निर्व्वपणानहि (स्मृतिरत्नावल्याम्) पुत्रेजातेव्यतीपाते ग्रहसौचन्द्रसूर्ययोः ॥  
 श्राद्धंकुर्यात्प्रयत्नेन पिण्डनिर्व्वपणादृते (तत्रैवकात्यायनः) वृद्धेरनन्तरंचैवया  
 वन्मासःसमाप्यते ॥ तावत्पिण्डाच्चैवदद्यान्नकुर्यात्तिलतर्पणम् (बौधायनः) सं  
 स्कारेषुतथान्येषु मासंमासाद्धमेवच (तथा) भानौभौमेवयोदश्यां तन्दाभृगुम  
 घासुच ॥ पिण्डदानंमृदास्तनं नकुर्यात्तिलतर्पणम् (विश्यलीसेतौकाशार्जि  
 निः) विवाहव्रतचूडासु वर्षसर्धन्तदर्धकम् ॥ उत्तरार्धंप्राग्वत् ॥ वृद्धिमात्रेतथा  
 न्यत्र पिण्डदानानिराक्रिया ॥ कृतागर्गादिभिर्मुख्यैर्मासमेकन्तुकर्मणां (हेमा  
 द्रौज्योतिःपराशरः)विवाहेविहितेमासांस्त्यजेयुर्वादिशैर्वाहि ॥ सपिण्डाःपिण्ड  
 निर्व्वप्यं मौजीवनन्धेयदैर्वाहि (तत्रैव) महालयेगयाश्राद्धे मातापित्रोःक्षयेर्हनि ॥  
 यस्यकस्यापिमर्त्यस्य सपिण्डीकरणेतथा ॥ कृतोद्वाहेषिकुर्वीत पिण्डनिर्व्वप  
 णंसदेति ॥ मातापित्रोरितिसयाहविशेषणम् ॥ हविस्तभयत्तवर्वाद्धवसितम् तेन  
 श्राद्धपितृव्यादिवार्षिकेपिपिण्डदानंकार्यमिति केचित् ॥ सपिण्डीकरणांनव  
 श्राद्धयोऽथश्राद्धोपलक्षणार्थमितिनिर्णयामृतेउक्तम् (सयाहेविशेषः संग्रहे)  
 मातापित्रोरान्दिकेतुविवाहादियुसर्वदा ॥ तिलैःपिण्डाःप्रदातव्याअन्यश्राद्धे  
 विवर्जयेत् ॥ अत्रमूलचिन्त्यम् (रामकौतुके) तन्दाश्चकामरव्यार भृग्वरिणपि  
 त्कालभे ॥ पिण्डवैधृतिपातेच पिण्डास्तथाज्याःसुतेष्टुभिः (विश्वरूपनिबन्धे)  
 तिथिवारप्रयुक्तयो दोषेबैसमुदाहृतः ॥ सश्राद्धेतिचित्तेस्यान्नान्यश्राद्धेकदा

चन ॥ अन्यत्तुक्तं प्राक् ( उच्छिद्योद्वासनमाह हेमाद्रौ विशिष्टः ) आद्वेनोद्वासनी  
यानि उच्छिद्यान्यादि न स्यात् ॥ अच्योतन्ते वैशुधाधारास्ताः पिवन्त्यक्तोदकाः  
( व्यासः ) उच्छिद्यनप्रमृज्यात्तु यावन्नास्तमितो रविः ॥ इदं गृहान्तरसत्त्वे ( एक  
गृहे तु मनुः ) उच्छेद्यं तु तत्तिष्ठेद्यावद्विप्रवि सर्जिताः ॥ ततो गृहवलिंकुर्यादिति  
धर्म्मोच्यवस्थितः ॥ बलिं वैश्वदेवादि नित्यकर्मति मेधातिथिः ( ब्रह्मराडे ) शूद्रा  
यचानुपेताय आद्वोच्छिद्यं न दापयेत् ( तथा ) कामंद्याच्च सर्वन्तु शिष्याय च सु  
ताय च ॥ भोक्तुरिति शेषः ( जातूकरायः ) द्विजभुक्ता विशिष्यन्तु शुचिभूमौ निखा  
नयेत् ( अथ वैश्वदेवादि अवसामकः श्लोकः ) आद्वेन गिनककर्तृके गिनकरणात्प  
श्चाज्जुहोतिर्बलिस्त्वन्ते स्यादथवा भवेद्विकिरतः पश्चात्पृथक्त्वेपचे ॥ आद्व  
न्ते त्वयवामहालयविधावर्ध्वभुजे स्यात् सये त्वन्ते साऽसुवमध्यतासु भविधावा दौ  
तथा सा गिनके ( अस्यार्थः ) सारणेः पृथक्पाकेन सर्वत्रादौ वैश्वदेवः ॥ पक्षान्तं कर्म  
निर्वर्त्य वैश्वदेवं च सारिनकः ॥ पिराडयजंततः कुर्यात्तितो न्वाहार्यं कंबुधः ॥ पित्र  
र्थं निर्वपेत्पाकं वैश्वदेवार्थमेव च ॥ वैश्वदेवं न पित्रर्थं न दर्शवैश्वदेविकर्मिति लौगा  
क्षिस्मृतेः ॥ अवसारिनक आहिताग्निरिति हेमाद्रिः ॥ आद्वान्प्रागेव कुर्वीत वै  
श्वदेवं तु सारिनकः ॥ एकादशाहिकं भुक्त्वा तत्र ह्यन्ते विधीयते इति हेमाद्रौ शालं  
कायनेोक्तेश्च ( तत्रैव परिशिष्टे ) सम्प्राप्ते पार्वणा आद्वे एकोद्विष्टे तथैव च ॥ अ  
ग्रतो वैश्वदेवः स्यात् पश्चादेकादशे हनि ॥ स्मात्ताग्निमतांतद्रहितानां वाग्नौ कर  
णोत्तरं विकिरोत्तरं वा ॥ हेमसात्रं पृथक्पाकेन ॥ भूतयज्ञादितु आद्वान्तस्य ॥  
अवमलं हेमाद्रिचन्द्रिकादौ स्पष्टम् ॥ सर्वेषां आद्वान्ते वा तत्पाकेन वैश्वदेवनित्यं आ  
द्वोद्विष्टे तृतीयः ॥ आद्वान्निर्वर्त्य विधिवद्वैश्वदेवादिकंततः ॥ कुर्याद्विष्ठांततो दद्या  
दन्तकारादिकन्तथेति पैठीनसिस्मृतेः ॥ ततः आद्वशेषात् ॥ आद्वान्निष्ठाद्वशेषे  
सा वैश्वदेवं समाचरेदिति चतुर्विंशतिमता च ॥ एवं वैश्वदेवकालत्रयस्य आशार्क  
शांखायनपरिशिष्टमुदाहर्येव न्यवस्थोक्ता ॥ आद्वोद्विष्टोस्ये चांते दर्शमध्ये महा  
लये ॥ एकोद्विष्टे निवृत्ते तु वैश्वदेवो विधीयत इति बहुस्मृत्युक्तत्वात् सर्वेषां आद्वान्ते  
सवेति मेधातिथिस्मृतिरत्नावलयादयो ब्रह्मः ॥ वोपदेवस्तु वृत्तिकारेणाविसर्जनां



तंश्राद्धमुक्ताउच्छेप्राणां त्वितिपूर्वोक्तमनुवाक्योदाहरणादब्रह्मचर्यानां श्राद्धान्त  
 एव ॥ मध्यपक्षस्त्वन्यशाखोपरइत्याह ॥ हेमाद्रिस्तुवृद्धवयन्तेएववैश्वदेव  
 माह ॥ कातीयानांतुश्रौतस्मात्तृग्निसमादावेकेनैवपाकेनेतिकर्कः ॥ अन्ये  
 ग्रामतेतैत्तिरीयाणांतुसाग्निकानांसर्वत्रादौवैश्वदेवः ॥ पंचयज्ञाश्चअंतेचेतिसुद  
 र्शनभाष्येउक्तम् ॥ अस्यपक्षद्वयस्यपूर्ववद्वयवस्था (हेमाद्रौसार्कडेयः) ततो नित्य  
 क्रियांकुर्याद्भोजयेच्च ततोतिथौ ॥ ततस्तदन्नभुंजीत सहभृत्यादिभिर्नरः ॥ त  
 तःश्राद्धशेषात् ॥ नित्यक्रियानित्यश्राद्धम् (तत्र) पृथक्पाकेनैत्यकर्मितितेनै  
 वोक्ते ॥ पाकैकोविकल्पः (अथनित्यश्राद्धमाहेमाद्रौव्यासः) एकमप्याशये  
 द्विप्रं यस्माप्यन्वहंगृही ॥ अपीत्यनुकल्पः (प्रचेताः) नामंत्राणानहोमंचनाह्वा  
 नंनविसर्जितम् ॥ नपिण्डदानंविकिरंनदद्यादत्रदक्षिणां (अत्र) निर्दिश्यभोज  
 यित्वातु किंचिद्वत्वाविसर्जयेदितितेनैवोक्तेर्दक्षिणाविकल्पः (यत्तु) नित्य  
 श्राद्धदैवहोतं नित्यमादिविर्जितम् ॥ दक्षिणारहितंचैव दातृभोक्तृव्रताज्जित  
 मितिकाशीखण्डे ॥ तद्विप्राभावपरमित्तिपृथ्वीचन्द्रः (भविष्ये) आवाहनंस्व  
 धाकारं पिण्डाग्नौकरणादिकम् ॥ ब्रह्मचर्यादिनियमा विश्वेदेवानचैवहि ॥  
 दातृणामथभोक्तृणां नियमो नचविद्यते ॥ एतद्विवासम्भवेरात्रावपिकार्यम् ॥  
 दिवोदितानिकर्माणि प्रमादादकृतानिवै ॥ यामिन्याः प्रहरंयावत्तावत्कर्माणि  
 कारयेदिति वृहन्नारदीयोक्तेः ॥ रात्रौप्रहरपर्यंतंदिवाकृत्यानिकारयेत् ॥  
 ब्रह्मयज्ञंचसौरंच वर्जयित्वाविशेषतश्चितपृथ्वीचन्द्रधृतसंग्रहोक्तेष्व ॥ नचदा  
 र्शिकाद्विदकाद्यपिरात्रौस्यादितिवाच्यम् ॥ इष्टापत्तेः ॥ तस्यतिथिसम्बन्धित  
 त्वात् ॥ संध्यारात्रौनकर्तव्यंश्राद्धंलुविचक्षणीरिति विप्रावाद्यैरात्रौनियेधात् ॥  
 (अतएवाल्पहादृष्यां) ऊयःकालेद्वयंकुर्यात् प्रातर्मध्याह्निकंतदेत्याद्यैर्वाक्यै  
 स्वयोदशीश्राद्धनापकृत्यते ॥ भिन्नविषयत्वादित्युक्तंमदनरत्ने ॥ नित्यत्वंप  
 कृत्यते ॥ अन्वहमित्युक्तेस्तिथिसवार्धिकाभावात् (यथाचसुदर्शनभाष्ये) पर  
 पक्षेपिच्यारातीतिनियमेपिनित्यश्राद्धत्वेसंवत्सरमित्यत्यंतसंयोगोद्वितीया ॥ व  
 लाचकुल्कपक्षेपीयुक्तम् ॥ तथारात्रावपि ॥ तथाचमाध्वेनप्रतिपत्प्रकरेस्पष्ट

मुक्तम् ॥ वयं चाग्रे वक्ष्यामः ॥ अस्यादिने करणोलापे सव ॥ रात्री आङ्मन्तकुर्वीतेति  
 निषेधादिति पृथ्वीचन्द्रोदयः ( पात्राभावे कौर्म ) उद्धृत्य वायथाशक्ति किंचिद  
 न्नं प्रकल्पयेत् ( तत्प्रतिपत्तिमाह विष्णुः ) भिक्षुकाभावे अन्नं गोभ्यो दद्यादग्नौ वा  
 प्रक्षिपेदिति ( हेमाद्रौ नागरखंडे ) नित्य आङ्मन्तकुर्वीत प्रसंगाद्यत्र सिद्ध्यति ॥ आ  
 ङ्मांतरे कृतेन्यत्र नित्यत्वात्तन्नहापयेत् ॥ यद्देवते पृथङ्नेत्यर्थः ( मात्स्ये ) तत्  
 स्तु वैश्वदेवांते समृत्य सुतवांधवः ॥ भुंजीतातिथिसंयुक्तः सर्वपितृनिषेवितम् ॥ सर्व  
 पर्वनिषिद्धं मांसमायाद्यपीत्यर्थः ॥ सर्वं कृणौकादप्रयादौ गृहिणोऽपि भोजनम् ॥  
 अस्य वैधत्वेन निषेधाप्रवृत्तेः ॥ सर्वग्रहावेधेऽपि ॥ यत्त्वनाहितारणे रमायममांसं  
 व्रतयोदित्युक्तं तद्वैयमेव ॥ श्रौतत्वेन तस्य बलवत्त्वात् ( देवलः ) आङ्मन्तत्वात्तु यो  
 मर्त्येन भुंक्तेऽथ कदाचन ॥ देवाहव्यं न गृह्णाति कव्यानि पितरस्तथा ॥ शिवरा  
 ज्यैकादप्रयादौ त्ववधारामेवेत्युक्तं प्राक् ॥ यत्र तपसा सोनावप्रयकस्तत्रैकभक्तम्  
 याचितं वा कार्यमिति हेमाद्रिः ( जातूकरायः ) अहन्येव तु भोक्तव्यं कृते आदौ द्विज  
 न्मभिः ॥ अन्यथा ह्यासुरं आङ्मन्तं परपाके च सेविते ( आङ्मन्तं भोजनस्य क्वचिन्न  
 येधमाह हेमाद्रौ प्रायश्चित्तकाण्डे मार्कण्डेयः ) पित्रादीनामथाऽन्येषां आङ्मन्तं  
 न्नभोजनम् ॥ व्रतिनां विधवानां च यतीनां च विगर्हितम् ॥ अन्येभिर्न गोत्राः ॥ व्र  
 तिनां ब्रह्मचारिणः ॥ आङ्मन्तं शिष्टभोक्तारस्ते वै निरयगामिनः ॥ सगोत्राणां सकु  
 ल्यानां ज्ञातीनां च न दोषकृदिति तत्रैवोक्तेः ( तत्रैव जावालिः ) विप्रस्त्वन्यगृहे आङ्मन्तं  
 शिष्टान्नं भोजनं चरेत् ॥ प्राजापत्यविशुद्धिः स्याज्ज्ञातिगोत्रेन दोषकृत् ॥ यतीनां व  
 पनं लक्षप्रणवजपश्चेति तत्रैवोक्तम् ( अस्यापवादमाह सगव ) श्वशुरस्य शुरोर्वापि  
 मातुलस्य महात्मनः ॥ ज्येष्ठभ्रातुश्च पुत्रस्य ब्रह्मनिष्ठस्य योगिनः ॥ सप्तैषां आङ्मन्तं शि  
 ष्ठान्नं भुक्त्वा दोषो न विद्यते ॥ इति केचित् प्रशंसन्ति मुनयस्तदसांप्रतम् ॥ विशेषां  
 तरं तत्रैव ज्ञेयम् ( हेमाद्रौ जावालिः ) तांबूलदंतकाष्ठं च स्नेहस्नानमभोजनम् ॥ रत्यौ  
 यधिपरान्नानि आङ्मन्तं विवर्जयेत् ( पृथ्वीचन्द्रोदये आचार्यः ) न शूद्रं भोजये  
 तस्मिन् गृहे यत्नेन तद्दिने ॥ आङ्मन्तं न शूद्रेभ्यः प्रदद्यादखिलेऽपि ॥

इति कमलाकरभट्टकृते निर्यायसिन्धौ पार्वणश्राद्धम् ॥



अथनुकल्पः (तत्रविप्रालाभे) भोजयेदथवाप्येकंब्राह्मणांपंक्तिपावनम् ॥ दे-  
वेकृत्वातुनैवेद्यंपश्चात्तस्यतुनिर्वपेदितिशंखोक्तेरेकोविप्रःपूर्वमुक्तः ॥ विप्र-  
भावेदर्भवतुः ॥ निधायवादर्भवतूनासनेयुसमाहितः ॥ प्रेषानुप्रेषसंयुक्तंविधानं  
प्रतिपादयेदितिदेवलोक्तेः ॥ अशक्तावामश्राद्धम् ॥ आपद्यनग्नौतीर्थेचप्रवासे  
पुत्रजन्मनि ॥ आमश्राद्धंप्रकुर्वीतभार्यारजसिसंक्रमेदितिकात्यायनोक्तेः (पृथ्वी  
चन्द्रोदयेजमदग्निः) यावत्स्यान्नाग्निसंयुक्तउत्सन्नाग्निरथापिवा । आमश्राद्धं  
तदाकुर्याद्विस्तेरग्नौकरणांभवेत् (कौर्मै) अनग्निरधनोवार्पितथैवव्यसन्नान्वितः ।  
आमश्राद्धंविजःकुर्याद्विद्यलस्तुतदैवहि ॥ आहिताग्नौप्रवासस्थेतत्पत्नीगृहेदर्श-  
नंत्विगदिनाकारयेत् ॥ अमावास्यादिनियतंप्रोषितेधर्मचारिणि ॥ पत्यौतु  
कारयेन्नित्यमन्येनाप्यृत्विगादिनेतिलघुहारी तोक्तेरितिपृथ्वीचन्द्रोदयः ॥  
आदिपदमादिकादिसर्वपार्वणापरमितिशूलपाणिः (सुमंतुः) पाकाभावेधि-  
कारःस्याद्विप्रादीनांनराधिप । अपत्नीनांसहावाहेविदेशगमनादिभिः ॥ स-  
दाचैवतुशूद्राणामामश्राद्धंविदुर्बुधाः (प्रचेताः) स्त्रीशूद्रःस्वपचप्रचैवजातकर्म-  
णाचाप्यथ । आमश्राद्धंसदाकुर्याद्विधिनापार्वणोनतु । स्वयंपचतीतिस्वप-  
चअपत्नीकः (विष्णुशनसौ) आत्मनोदेशकालाभ्यांविप्लवेसमुपस्थिते ॥  
आपद्यनग्नौतीर्थेचप्रदानेपत्न्यसंभवे ॥ चंद्रसूर्यग्रहेचैवदद्यादामंविशेषतः । न-  
प्रकंभोजयेद्विद्वानसच्छूद्रोपिकदाचन ॥ भोजयन्प्रत्यवायीस्यान्नचतस्यफ-  
लंलभेत् ॥ अत्रप्रवासतीर्थग्रहणादावामहेमश्राद्धमेव ॥ पाकश्राद्धतुनभवत्येवे-  
तिहेमाद्रिरत्नावल्यादयः (अपरार्कविज्ञानेश्वरादयस्तु) पाकाभावेद्विजाती-  
नामामश्राद्धंविधीयत इतिमुमंतुक्तेः ॥ साग्निकैर्निरग्निकैश्चप्रवासादौसर्व-  
त्रपाकाभावेआमादिकार्यम् ॥ पाकसंभवेत्वन्नेनैवेत्याहुः (अतएवपाकश्राद्धमु-  
क्त्वा) एतच्चानुपनीतोपिकुर्यात्सर्वेषुकर्मसुभार्या विरहितोप्येतत्प्रवासस्थो-  
पिनित्यशइतिमात्स्येनिरग्नेरपिपाकेनोक्तमितिशूलपाणिःकल्पतरुः ॥ एतच्छ-  
ब्दःश्राद्धमात्रपरइत्यन्ये ॥ एकोद्विष्टंतुकर्तव्यंपाकेनैवसदास्वयमिति लघुहारी-  
तीयमपिसाग्नेरेव ॥ निरग्नेर्महैकोद्विष्टमप्यामेन ॥ शूद्रस्यतुदशाहंपिंडाद्या

मेनेतिहलायुधः ॥ उत्सन्नाग्नीनांत्वामश्राद्धमेवपूर्वाक्तजमदग्निवाक्यात् ( म  
रीचिः ) श्राद्धविद्वेद्विजातीनामश्राद्धप्रकीर्तितम् अमावास्यादिनियतंमा  
ससंवत्सरादृते ( स्मृतिदर्पणो ) मृताहंचसपिंडंचगयाश्राद्धमहालयम् । आ  
पन्नोपिनकुर्वीतश्राद्धमामेनकर्हिचित्त ( हेमाद्रौव्यासः ) आसंददतुर्कौतेयदद्यादा  
मंचतुर्गुणम् । द्विगुणांत्रिगुणांवापिनत्वेकगुणामर्पयेत् ॥ सिद्धान्तेतुविधिर्यःस्या  
दामश्राद्धेप्यसौविधिः ॥ आवाहनादिसर्वस्यात्पिंडदानंचभारत ॥ दद्याद्यच्चद्वि  
जातिभ्यःशृतंवाशृतमेववा ॥ तेनारग्नौकरणांकुर्यात्पिंडास्तेनैवनिर्वपेत् ( पक्षां  
तरमाहसगव ) आसंददन्निहिकौन्तेयतदामंद्विगुणांचरेत् । त्रिगुणांचतुर्गुणांवापि  
नत्वेकगुणामर्पयेत् ( स्मृत्यर्थसारेसममप्युक्तं ॥ बयट्त्रिंशन्मते ) आमश्राद्धंयदा  
कुर्यात्पिंडदानंकथंभवेत् । गृहपाकात्समुद्धृत्यसक्तुभिःपायसेनवा ॥ पिंडान्द  
द्याद्यथालाभंतिनैःसहविसत्सरः ( पृथ्वीचन्द्रोदयेव्यासः ) आमश्राद्धंयदाकुर्या  
द्विधिज्ञःश्राद्धदःसदा । हस्तेरग्नौकरणांकुर्याद्विवाह्यस्याविधानतः ॥ एतत्सा  
ग्नेर्निरग्नेःसदातत्सत्त्वात् ( यत्तु ) आमेनपिंडंदद्याच्चेद्विप्रान्पाकेनभोजयेत् । प  
क्वेनकुरुतेपिंडमामान्नयःप्रयच्छति ॥ तावुभौभानुजौप्रोक्तौनरकार्हीनसंशयइ  
तितद्वर्णादिपरम् ॥ देशाचाराद्व्यवस्थेति युक्तम् ( मरीचिः ) आवाहनेस्वधाका  
रेमंत्राकुर्याद्विसर्जने । अन्यकर्मरायनूत्यास्युरामश्राद्धविधिःस्मृतः ॥ आवाह  
नेहवियेअत्तवइत्यत्रस्वीकर्तवेइत्यूहः ॥ स्वधाकारेणमोवःपितरइत्येइत्यत्रइत्येपद  
स्थानेआमद्रव्यायेत्यूहः ॥ विसर्जनेवाजेवाजेइत्यत्रतृप्ता इतिस्थानेतत्स्यहृत्प्य  
तेतिवोहः ॥ यद्यपितस्माद्वचनोहेदितिअद्वयूहोनिविद्धस्तथापिचचनादभवति ॥  
तृप्तिप्रश्नोवगाहप्रचजुषप्रश्नोयथासुखम् । आमश्राद्धेभवेन्नैतदापोशानंचपंच  
मस ॥ अयंचानुवादःखलेवाल्यांछेदनादीनामिवायार्थाभावालोपसिद्धेः ( धर्मप्रदी  
पेतु ) आसंचतुर्गुणांदद्याद्यवाद्विगुणांतथा । हेमंचाष्टगुणांतद्वदामेहेमेप्यसौवि  
धिः ॥ आमेहेमेतथानित्येनांदीश्राद्धेतथैवच । व्यतीपातादिकेश्राद्धेनियमान्  
परिवर्जयेत् ॥ गृहपाकात्समुद्धृत्यसक्तुभिःपायसेनवा । पिंडदानंप्रकुर्वीतआमे  
हेमेकतेसति ॥ आमश्राद्धेचतृद्धौचप्रेतश्राद्धेतथैवच । विकिरनैवकुर्वीतमुनिः



कात्यायनोऽब्रवीत् आसश्चाद्वसमं शुभमग्नौ करणावर्जितम् । त्वपि प्रश्नविहीनं तु क  
 र्त्तव्यमानवैधु वसश्चावाहनाग्नौ करणां विकिरं पात्रपूरणम् । त्वपि प्रश्नं न कुर्वीत  
 आमेहेमेकदा चनेत्युक्तम् ( एतच्च ) आवाहनं भवेत्कार्यमर्घ्यदानं तथैव चेति हेमा  
 द्रौ भविष्यादिविरोधाच्चिंत्यम् ॥ शाखांतरविषयवास्तु ॥ विकिरोप्यामेनेति हे  
 माद्रिः ॥ शूद्रस्तु तत्रैवोक्तम् ॥ अग्नौ करणमंत्रश्च नमस्कारो विधीयते । अग्न  
 ये कव्यवाहनाय नमः ॥ सोमाय पित्रुमते नम इत्ययं मंत्रः ( मात्स्ये ) मंत्रवज्र्यं हि  
 शूद्रस्य सर्वमेव विधीयते । एवं शूद्रोपि सामान्यं तृद्विश्वाङ्गं च सर्वदा ॥ नमस्कारेण  
 मंत्रेण कुर्यादामान्नबहुधः ॥ तच्च पूर्वाह्णे कार्यम् ॥ आसश्चाद्वं तु पूर्वाह्णे एको हि  
 ष्ठं च मध्यतः । पार्वणां चापराह्णे तु प्रातर्द्विनिमित्तकमिति हारीतोक्तेः ॥ एतत्  
 द्विजविषयम् ॥ शूद्रकर्तृकं त्वपराह्णम् ॥ मध्याह्नात् परतोयस्तु कुतुपः समुदा  
 हतः । आसश्चाद्वन्तु तत्रैव पितृणां दत्तमक्षयसितिसुमन्तुक्तेरित्यपराकर्के हेमाद्रौ  
 चोक्तम् ( तदभावे हेमश्चाद्वमाह हेमाद्रौ मरीचिः ) आमानस्याप्यभावे तु श्राद्धं कुर्वी  
 त्बुद्धिमान् । धान्याच्चतुर्गुणैव हिरण्येन सरोचिया ( धर्मः ) आसन्तु द्विगुणं  
 प्रोक्तं हेमन्तद्वच्चतुर्गुणम् ( स्मृत्यर्थसारे ) हिरण्यमष्टगुणं चतुर्गुणं संवादद्यात्  
 ( हेमाद्रौ भविष्ये ) अन्नाभावे द्विजाभावे प्रवासे पुत्रजन्मनि । हेमश्चाद्वसंग्रहे च त  
 यास्त्री शूद्रयोरपि ( यद्विशन्मते तु र्यपादे ) वर्जयित्वा सयेहनीति पाठः यस्य भा  
 यारजस्वलोति च व्यासपाठः ( पुत्रोत्पत्तौ तु हेमनियममाह संवर्तः ) पुत्रजन्मनि कु  
 र्वीत श्राद्धं हेमैव बुद्धिमान् । न पक्षेन न चामेन कल्याणान् ग्रभिकामयन् ( भविष्ये )  
 गृहपाकात् समुद्धृत्य सक्तुभिः पायसेन वा । पिण्डदानं प्रकुर्वीत हेमश्चाद्वेकते सति ॥  
 शूद्रस्तु गृहपाकेन तत्पिण्डानिर्वपेत्तथा । सक्तुमूलं फलं तस्य पायसं वा भवेत्स्मृ  
 तम् ॥ हेमश्चाद्वेपिण्डदानं नेति दिवोदासः ॥ स्मृत्यर्थसारे तु विकल्प उक्तस्तदाश  
 यं न विघ्नः ( यद्विशन्मते ) नासं वराग्नौ करणां विकिरो नैव दीयते । त्वपि प्रश्नो  
 पि नैवात्र कर्त्तव्यः केन चिद्वेत् ॥ अत्र मरीचिना आमाभावे हेमविधानेन स्थाना  
 पत्त्या धर्मप्राप्तेः पूर्ववत्संग्रहः पूर्वाह्णकालताचक्षेयेति दिक् पूर्वोक्तधर्मप्रदीपो  
 क्तेश्च ( व्यासः ) हिरण्यसामं श्राद्धीयं लक्षं ग्रत्क्षत्रियादितः । यथेष्टं विनियो

इयंस्याङ्गुजीयाद्ब्राह्मणात्स्वयम् ॥ विप्रलब्धंभुञ्जीयात् ॥ सत्रियादिलब्धेत्य  
 थेष्विन्नियोगः ॥ तेनापिश्राद्धवैश्वदेवादिनकार्यम् ॥ द्वेवोद्देशेनत्यक्तस्यदेवतांत  
 रायत्यागायोगादितिदेवयाज्ञिकः (शूद्रलब्धेत्युक्तंतत्रैवयद्विंशन्मते) आसंशुद्र  
 स्ययत्किंचिच्छादिकंप्रतिगृह्यते । तत्सर्वभोजनायालं नित्यनैमित्तिकेनर्चेति  
 (शुद्धितत्त्वैंगिराः) शूद्रवेष्मनिविप्रेणा क्षीरंवायद्विवादधि । निवृत्तेननभोक्तव्यं  
 शूद्राच्चंतदपिस्मृतम् । शूद्राद्विप्रगृहेष्टवन्नं प्रविष्टन्तुसदाशुचिः (पराशरः) ताव  
 द्भवतिशूद्राच्चं यावन्नस्पृशतिद्विजः । द्विजातिकरसंसृष्टं सर्व्वतन्नविरुध्यते  
 (विष्णुपुराणो) संप्रोक्षयित्वागृह्णीयाच्छूद्राच्चंगृहमागतम् (अंगिराः) पात्रांतर  
 गतंग्राह्यं दुग्धंस्वगृहमागतम् (सपिराडश्राद्धशक्तावाहहेमाद्रौसंवर्तः) समग्रंयस्तु  
 शक्नोति कर्तुर्नैवेहपार्वणम् । अपिसंकल्पविधिना कालेतस्यविधीयते ॥ पात्र  
 भोज्यस्यचाक्षस्य त्यागःसंकल्पउच्यते (व्यासः) सांकल्पन्तुयदाकुर्यान्नकुर्या  
 त्पात्रपूरणम् । नावाहनारनौकराणो पिराडांप्रचैवनदापयेत् ॥ पात्रमर्ध्यस्य ॥  
 समंत्रकावाहनस्यनिषेधः ॥ तूष्णींतुभवत्येवेतिहेमाद्रिः (स्मृत्यर्थसारे) विकिर  
 न्तुनदातव्यमितितृतीयपादेपाठः (स्मृत्यन्तरे) त्यजेदावाहनंचाध्यं सग्नौकर  
 रामेवच । पिराडांप्रचविकिराक्षये श्राद्धेसांकल्पसंज्ञके (हेमाद्रौवृद्धशातातप  
 स्तु) पिराडनिर्वापरहितं यत्तुश्राद्धंविधीयते । स्वधावाचनलोपोव विकिरस्तु  
 न्तुप्यतइत्याह (पृथ्वीचन्द्रोदयेवशिष्यः) आवाहनंस्वधाशब्दं पिराडारनौक  
 रणान्तथा । विकिरंपिराडदानंच सांकल्पेषड्विवर्जयेत् (विकिरेविकल्पःस्मृ  
 त्यन्तरे) अंगानिपितृयज्ञस्य यदाकर्तुंनशक्नुयात् । सतदावाचयेद्विप्रान् संक  
 ल्पात्सिद्धिरस्त्विति (छागलेयः) पिराडोयत्रनिवर्तेत मघादियुक्तयंचन । सांक  
 ल्पन्तुतथाकार्यं नियमाद्ब्रह्मवादिभिः (काष्ठाजिनिः) मौंजीवन्धादत्सरार्धं  
 वत्सरंपारिणीडनात् । पिराडानसपिराडानेदद्युः प्रेतपिराडंविनात्रतु ॥ अस्या  
 पवादःपित्रोरादिकादौपूर्वमुक्तः (त्यक्ताग्नेरपिसांकल्प मुक्तंतयद्विंशन्मते)  
 अनग्निर्कोयदाविप्र उत्सन्नान्निस्तथैवच । तथावृद्धियुसर्वासु संकल्पश्राद्धमा  
 चरेत् (अशक्तौपृथ्वीचन्द्रोदयेवृहन्नारदीये) द्रव्याभावेद्विजाभावे अन्नमावन्तु



पाचयेत् । पितृकेनतुसूक्तेन होमंकुर्याद्विचक्षणाः ( देवलः ) पिण्डमात्रं प्रदात  
व्यसभावेद्रव्यविप्रयोः । आद्वीयाह्निसंप्राप्तेभवेन्निरशनोपिवा ( वृद्धवशिष्ठः )  
किंचिद्दद्यादशक्तस्तु उदकुम्भादिकं द्विजे । तृणानिवागवेदद्यात्पिण्डांवाप्यथ  
निर्वपेत् ॥ तिलदर्भैः पितृन्वापि तर्पयेत्स्नानपूर्वकम् ( हेमाद्रौभविष्ये ) अग्नि  
नावादहेतुकसंश्राद्धकाले समागते । तस्मिन्वोपवसेद्विजपेद्वाश्राद्धसंहिताम् ॥  
श्राद्धसंहितासमंत्रश्राद्धसंकल्पः ( विष्णुवराहपुराणायोः ) असमर्थान्नदानस्य धा  
न्यमांसंस्वशक्तितः । प्रदास्यतितिलान्वापि स्वल्पांवापि च दक्षिणां ॥ सत्त्वा  
भावेवनंगत्वा कक्षामलप्रदर्शकः । सूर्यादिलोकपालानां मिदमुच्चैः पठिष्यति ॥  
नमेस्तिवित्तं न धनं न चीनं श्राद्धोपयोगित्वं पितृन् नतोस्मि । तृप्यन्तु भक्त्या पित  
रो मयैतौ भुजौ कृतौ वर्त्मनि सारुतस्य ॥ इत्येतत्पितृभिर्गीतं भावाभावप्रयोजनम् ॥  
यः करोति हतं तेन श्राद्धं भवति भारत ( प्रभासखण्डे ) गत्वाररायममानुष्यसू  
र्ध्वबाहुर्विरोत्यदः । निरन्नो निर्धनो देवाः पितरो मानृणां कथाः ॥ नमेस्तिवित्तं  
न धनं न भार्या श्राद्धं कथं वः पितरः करोमि । वनं प्रविश्ये हतु तन्मयोच्चैर्भुजौ कृतौ व  
र्त्मनि सारुतस्य ॥ श्राद्धर्गमेतद्भवतां प्रदत्तं मत्स्यं दध्वां पितृदेवताद्याः । आख्यायचो  
दक्षिण्यभुजौ ततो वै दिवा च रात्रिं समुपोठयति स्येत् ॥ भवेत्सर्वैतेन कृतेन ते यामृगो  
नमुक्तः पितृदेवतानाम् ॥ इत्यनुकल्पः ( अथ श्राद्धभोजने प्रायश्चित्तम् ) दर्शयत्  
प्राणायामाः ॥ वृद्धौ त्रयः ॥ संस्कारेषु जातकर्मादि चूडान्तेषु सांत्पनम् ॥ आद्ये  
चान्द्रं वा ॥ अन्यसंस्कारेषु पवासः ॥ सीमन्ते चान्द्रमिति विज्ञानेश्वरः ॥ आपदि  
नवश्राद्धैकादशाहेषु भोजनैकायः ॥ द्वादशाहे ऊनमासे च पादेनः ॥ द्विमासे त्रि  
पक्षे ऊनयस्यो नान्दयोश्चार्धकृच्छ्रः ॥ त्रिमासाद्यान्दिक्कान्तेषु सपिण्डने च पाद  
कृच्छ्र उपवासे वा ॥ गुरुद्रव्यार्थभोजने ऽर्धम् ॥ जपशीले तदर्धम् ॥ अनापदितन  
मासां तेषु चाद्रुद्राद्यं वा ॥ द्विमासादौ पादेनं ॥ त्रिमासादावर्धकायः ॥ आन्दिक्के  
पादेनकायः ॥ पुनराद्दिक्के सक्ताहः ॥ सत्रियादिश्राद्धेषु द्वित्रिचतुर्गुणानि ज्ञे  
यानि ॥ चारुडालसर्पश्चादिहतपतितक्तीवादिनवश्राद्धे चांद्रम् ॥ आद्यमासि  
कांतिचांद्रं पराक्रश्च ॥ द्वादशाहादौ पराकः ॥ द्विमासादावति कृच्छ्रः ॥ त्रिमा

सादौकायः ॥ आदिकेपादः ॥ अभ्यासेसर्वद्विगुणम् ॥ आमहेमसंकल्पश्राद्धेषु  
तत्तद्वर्ति ॥ यतिर्ब्रह्मचारीचोक्तंप्रायश्चित्तं कृत्वात्रोपवासानप्राणायामा  
न्युताशनंचाधिकं कृत्वा ब्रतं शेषं समापयेत् ॥ अनापदिद्विगुणम् ॥ दशादौ दशगा  
यत्री संविता आपः पिवेत् प्रदुप्राणायामावा ॥ संस्कारेषु चौलेकच्छः ॥ सीमंते चां  
द्रम् ॥ अन्येषूपवास इति दिक् ॥ अवसाधवमिताक्षरादौ कचिद्विरोधो विषयभेदात्प  
रिहार्यः ॥ एकादशाहेचांद्रपुनः संस्कारश्चेति प्रायश्चित्तकांडे हेमाद्रिः (यत्तु  
शनाः) दशकृत्वः पिवेदापो गायत्र्या श्राद्धभुगुद्विज इति तदनुक्तं प्रायश्चित्तश्राद्ध  
परमिति विज्ञानेश्वरः (अथ स्याद्दशश्राद्धम् ॥ तत्स्वरूपमाह हेमाद्रौ व्यासः)  
मासपक्षतिथिस्पृष्टेयोयस्मिन्प्रियतेहनि । प्रत्यब्दंतु तथा भूतं स्यात्तस्य तं विदुः  
(नारदीये) पारगो मरगो नृणां तिथिस्तात्कालिकी स्मृता । अवचांद्रं मानं ज्ञेयं ॥  
आदिकेपितृकार्ये च चांद्रो मासः प्रशस्यत इति गर्गोक्तेः ॥ मलमासमृतस्य तु सौर  
म् ॥ मलमासमृतानां तु सौरं मानं समाश्रयेदिति हेमाद्रावुक्तेः ॥ एतन्मृतमासस्यै  
वाधिक्ये ज्ञेयम् (ब्राह्मे) प्रतिसंवत्सरं कार्यमातापित्रोर्मृतेहनि । पितृव्यस्याप्य  
पुत्रस्य भ्रातुर्ज्येष्ठस्य चैव हि ॥ अपुत्रस्येति भ्रात्राप्यन्वयः ॥ ज्येष्ठस्येति कनिष्ठस्या  
नावश्यकत्वार्थम् (मदनरत्ने भविष्ये) सर्वेषामेव श्राद्धानां श्रेष्ठं सांवत्सरं मतम् ॥  
(तथा) भोजकोयस्तु वै श्राद्धं न करोति खगाधिप ॥ मातापितृभ्यां सततं वर्धयेत्तु  
तेहनि ॥ सयाति नरकं घोरं तामिस्रं नामनामतः ॥ तच्च नानास्मृतिष्वेकोहिष्ठं पार्व  
णांचोक्तम् (आद्यमाहयमः) सपिंडीकरणादूर्ध्वं प्रतिसंवत्सरं सुतैः । मातापित्रोः  
पृथक् कार्यमेकोहिष्ठं मृतेहनि (व्यासः) एकोहिष्ठं तु कर्तव्यं पित्रोश्चैव मृतेहनि । स  
कोहिष्ठं परित्यज्य पार्वणां कुरुते नरः ॥ अकृतं तद्विजानीयाद्भवेच्च पितृघातकः (अं  
त्यमाह शातातपः) सपिंडीकरणां कृत्वा कुर्यात्त पार्वणावत्सदा ॥ प्रतिसंवत्सरं श्राद्धं  
छागलेनोदितो विधिः ॥ यः सपिंडीकृतं प्रेतं पृथक् पिंडेनियोजयेत् । विधिघ्नस्ते  
न भवति पितृहाचोपजायते ॥ अवौरसक्षेत्रजयोः पार्वणां दत्तकादीनामेकोहिष्ठमि  
त्येकः पक्षः ॥ साग्नेः पार्वणां निरग्नेरेकोहिष्ठमित्यपरः ॥ तद्द्वयं माताक्षरादौ ज्ञे  
यं (कल्पतरुस्तु) साग्न्योरौरसक्षेत्रजयोः पार्वणम् ॥ निरग्निं कयोस्त्वेकोहिष्ठं



मित्याह ॥ अपरार्क्येवम॥ दत्तकादयोदशपुत्रास्तुसाग्नयोनिरग्नयप्रचैकोहिष्ठ  
मेवकुर्युः ॥ प्रत्यब्दं पार्वणो नैव विधिनाक्षेत्रजौरसौ । कुर्यात्तामितरेकुर्युरेकोहिष्ठं  
सुतादशेतिज्ञातुकरार्थोक्तेः ॥ यदातुदत्तकस्यपितादर्शमहालयेवामृतस्तत्र पार्वणौ  
कोहिष्ठयोर्विकल्पः ॥ वस्तुतस्तु सर्वेषां पार्वणौकोहिष्ठयोर्वीहि्यववद्विकल्पः ॥  
सचदेशाचाराद्व्यवस्थितइतिसर्वनिबंधसिद्धांतः ( अतस्वपृथ्वीचंद्रोदयेवृद्धप  
राशरः ) मातापित्रोः पृथक्कार्यमेकोहिष्ठमृतेहनित्युक्त्वाह ॥ देशधर्मसमाश्रित्य  
वंशधर्मतथापरे । सूरयः श्राद्धमिच्छन्ति पार्वणां च क्षयाद्वाप्यपीति ॥ तच्च केवलपितृ  
णां न स पत्नीकानामिति हेमाद्रिः ॥ अत्र मातामहानकार्याः ॥ कर्तुं समन्वितं भु  
क्त्वा तथाद्यं श्राद्धयोऽडशं प्रत्याब्दिकं च शेषेषु पिंडाः स्युः यडिति स्थितिरितिका  
त्यायनोक्तेः ॥ कर्तुं समन्वितं सपिंडनयैरेकोहिष्ठं क्रियते तेषामपि क्वचित् पार  
वणामेवेति शंखोक्तेः ( एवं संन्यासिनोऽपि ) सकोहिष्ठं यतेनास्ति त्रिदंडग्रहणा  
दिह । सपिंडीकरणाभावात् पार्वणां तस्य सर्वदेति प्रचेतसोक्तेः ( वायवीये ) संन्या  
सिनोऽप्याब्दिकादिपुत्रः कुर्याद्यथाविधि । महालये तु यच्छ्राद्धं द्वादश्यां पार्वणां  
हितत्वं ( पृथ्वीचंद्रोदयेवृद्धपराशरः ) संग्रामे संस्थितानां च प्रेतपक्षे शिष्ये ॥  
तेषां पार्वणामेवोक्तं क्षयाहेपि च सत्तमैः ॥ चंद्रक्षयानाशकसंयुगे युयः प्रेतपक्षे मृत  
वान्सपिंडः । सपिंडितानामपि चाब्दिकानि भवन्ति तेषामिह पार्वणानि ( तथा )  
भ्रातृज्येष्ठस्य कुर्वीत ज्येष्ठे भ्रातृनुजस्य च । दैवहीनं तु तत्कुर्यादिति धर्मविदब्रवीत् ॥  
दैवहीनमेकोहिष्ठम् ॥ ज्येष्ठे भ्रातृनाद्यगर्भजः ( तथा च तत्रैव शातातपः ) अनाद्यगर्भ  
ज्येष्ठेऽपि भ्राता सद्भिर्निगद्यते । ऋते सपिंडनात् तस्य नैव पार्वणमाचरेत् ॥ आद्यग  
र्भे तु पार्वणमेकोहिष्ठं वेत्यर्थः ( मातुस्तु हेमाद्रौ कात्यायनः ) प्रत्यब्दं यथा कुर्या  
त्पुत्रः पित्रे सदा द्विजः । तथैव मातुः कर्तव्यं पार्वणां चान्यदेव वा ( यत्तु तेनैवोक्तं ) स  
पिंडीकरणादूर्ध्वपित्रोरेव हि पार्वणम् । पितृव्यभ्रातृमातृणामेकोहिष्ठं सदैव त्वि  
तितत्सापत्नमातृपरम् ( यत्तु वृद्धपराशरः ) अपुत्रस्य पितृव्यस्य तत्पुत्रो भ्रातृजो भवे  
त् ॥ ससवा स्य तु कुर्वीत पिंडदानादिकां क्रियाम् ॥ पार्वणां तेन कार्यं स्यात्पुत्रवद्भातृ  
जेन तु । पितृस्थाने तु तं कृत्वा शेषं पूर्ववदुचरेदिति तत्पितृवद्देशाचारवद्व्यवस्थित

मिति पृथ्वीचंद्रः (आह्वादीपकालिकायांचतुर्विंशतिमतेषु) पितृव्यभ्रातृमातृ  
 रांज्येषानां पार्वणां भवेत् । एकोद्दिष्टं कनिष्ठायां दंपत्योः पार्वणां सिद्धः ॥ अपुत्रस्य  
 पितृव्यस्य भ्रातृश्चैवाग्रजन्मनः । मातामहस्य तत्पत्न्याः आह्वां पार्वणावद्वेदित्यु  
 क्तं तत्पत्न्याः कर्तृत्वेऽपि पार्वणमेव ॥ सर्वाभावे स्वयंपत्न्याः स्वभ्रातृणामग्र  
 क्रमः । सपिंडीकरणां कुर्युस्ततः पार्वणमेव चेत्तिलौगाक्षिस्मृतेः ॥ ततः पत्न्यापि कु  
 र्वीतसापिंड्यं पार्वणांतथेति सुसंतुक्ते प्रचेत्ति निर्णयास्मृते उक्तम् ॥ अन्यत्वे तत्पाक्षि  
 कपार्वणापरमाहुः ॥ अतएव भर्तुः आह्वांतु यानारीमोहात् पार्वणमाचरेत् । न तेन  
 हृष्यते भर्ता कृत्वा तु नरकं ब्रजेदिति च न संशयाद्देवाक्षिर्कोद्दिष्टप्रशंसार्थम् ॥ न पा  
 र्वणानिये धार्थमित्युक्तं त्रिस्थलीसेतौ भट्टचरणौः ॥ स्वभर्तृ प्रभृतिविभ्य इत्येतेन  
 विरोधाच्च (अपुत्राणां चाहहेमाद्रावापस्तंबः) अपुत्रायेऽमृताः केचित् स्त्रियोवापु  
 रुषाश्च ये । तेषामपि च देयं स्यादेकोद्दिष्टं न पार्वणम् ॥ सिद्धबंधुसपिंडेभ्यः स्त्री  
 कुमारिभ्य एव च । दद्याद्देमासिकं आह्वांसां वत्सरमतोऽन्यथा ॥ पारिजाते च अ  
 न्यथा पार्वणमित्युक्त्वा सर्वत्र पार्वणमित्युक्तम् । एकोद्दिष्टवाक्यानि तु तीर्थस  
 हातयपराणीत्युक्तम् (पृथ्वीचन्द्रोदये वृद्धगार्यः) मातुः सहोदरायाश्च पितुः स  
 ह भवाचया ॥ तयोश्च नैव कुर्वीत पार्वणां पिंडनादृते (प्रचेताः) सपिंडीकरणादू  
 र्वमेकोद्दिष्टं विधीयते । अपुत्राणां च सर्वेषामपत्नीनांतथैव च ॥ अपत्नीनां ब्र  
 ह्मचार्यादीनाम् (मार्कंडेयपुराणो) प्रतिसम्बत्सरं कार्यमेकोद्दिष्टं नरैः स्त्रियाः । मृ  
 ताहानियश्चान्द्रायणं नृणां यद्वदिहोदितं ॥ नृणामिति दुष्टांताद्गोविप्रहतपाखंड्या  
 दीनां सपिंडनाभावेऽपि सां वत्सरमेकोद्दिष्टं कार्यमेवेति शूलपाणिः (अत्रिबृद्धवर्षि  
 ष्ठी) सपिंडीकरणादूर्ध्वयत्रयत्र प्रदीयते । भ्रात्रेभ्योऽप्युत्राय स्वाभिनेमातुला  
 यच । पितृव्यगुरवे आह्वमेकोद्दिष्टं न पार्वणम् (यत्तु जातकार्यः) पितृव्यभ्रातृ  
 मातृणामपुत्राणांतथैव च । मातामहस्यासुतस्य आह्वादिपितृवद्वेदितं तदाव  
 श्यकत्वात् न तु पार्वणार्थमिति हेमाद्रिः ॥ युक्तं त्वेवम् ॥ मातुः पितरमारभ्य त्र  
 यो मातामहः स्मृताः । तेषां तु पितृवच्छ्राद्धं कुर्युर्दुहितृसूनव इति पुलस्त्योक्तेर्मा  
 तांमहस्य पार्वणमेव ॥ तत्साहचर्यात् पितृव्यादौ तथा ॥ पितृव्यभ्रातृमातृणां



मेकोद्दिष्टं च पार्वणमिति क्षयाहोक्तोपक्रमेणुलस्त्योक्तेष्वविकल्पः ( केचित्त्वा  
 पस्तंवादिवाक्यानि ) व्युत्क्रमाच्च प्रसीतानां नैव कार्यासिपिंडतेत्यस्यपितृव्यादि  
 परत्वादकृतसिपिंडनपितृव्यादिपराणीत्याहुः ॥ मातासपत्नमाता ॥ एकोद्दिष्टं  
 तु कनिष्ठपरमिति ॥ पृथ्वीचंद्रोदयेष्वेवम् ॥ विशेषस्त्वधिकारिनिर्णये प्राण  
 क्तः ॥ केचित्पुत्रांतराभावेपि पितामहवार्धिकमप्यावश्यकम् ॥ पुत्राभावेच  
 तत्पुत्राः पत्नीमातातथापिता । वित्ताभावेपि सच्छिष्यः कुर्यात्तस्योर्ध्वदेहिक  
 मिति मातृदेयपुराणादित्याहुस्तन्न ॥ पौत्रेणैकादशाहादिकर्तव्यं श्राद्धयोडश  
 मितिकातीये विशेषोक्तेः ( अथक्षयाहर्द्धे निर्णयः ) तत्रैकोद्दिष्टमध्याह्नेका  
 र्यम् ॥ मध्याह्नप्रचपंचधाविभक्तादिनत्वीयभागइतिमाधवः ॥ आसश्राद्धंतु पर्वा  
 स्त्वेकोद्दिष्टंतु मध्यमे । पार्वणांचापरास्त्वेतु प्रातर्दृष्टिनिमित्तकमितिहारीतो  
 क्तौ प्रातःशब्दसाहचर्यात् ॥ तत्रापि कुतुपादियुमुहूर्तद्वितये ज्ञेयम् ॥ प्रारभ्य कुरु  
 तेश्राद्धं कुर्यादारोहणांबुधः । विधिज्ञो विधिमास्थाय रौहिणांतु नलंघयेदिति गौ  
 तमोक्तेरेतत्परत्वात् ॥ रौहिणो नवमो मुहूर्तः ॥ सैथिलाः श्राद्धकौमुदीचैवम् ॥  
 ( अन्यथा ) ऊर्ध्वमुहूर्तत्तु कुतुपाद्यं मुहूर्तचतुष्टयम् । मुहूर्तपंचकं ह्येतत्स्वधाभव  
 नमिष्यत इत्यादिविरोधात् ( दीपिकापि ) एकोद्दिष्टमुपक्रमेत्कुतपइति ( सा  
 धवीयेव्यासोपि ) कुतुपप्रथमे भागे एकोद्दिष्टमुपक्रमे । आवर्तनसमीपे वा तत्रैव नि  
 यतात्मवान् ॥ पृथ्वीचंद्रोदयेष्वेवम् ॥ तेन कुतुपादिरौहिणांतो मुख्यः कालः ॥  
 दिनद्वयेतद्व्याप्तौ समव्याप्तौ च पूर्वा ॥ विषमव्याप्तावाधिक्येन निर्णयः ॥ अव्या  
 प्तौ पूर्वैव ॥ परविद्यायानियेधात् ॥ साचपूर्वदिने रौहिणालंघनापत्ते परैवेति गौ  
 डाः ॥ शुक्लकृष्णावशात्स्वर्वदर्पाद्यैर्वाव्यवस्थेत्यन्ये ॥ तन्न ॥ परविद्यानियेध  
 प्रावल्यात् ॥ अवमूलंकालमाधवीये ज्ञेयम् ॥ पार्वणां त्वपरास्त्वे कार्यपूर्वोक्तवच  
 नात् ॥ मध्याह्नव्यापिनीयास्यात्सैकोद्दिष्टेति स्थिर्भवेत् । अपरास्त्वे व्यापिनीया  
 पार्वणोसातिथिर्भवेदिति पृथ्वीचंद्रोदये वृद्धगौतमोक्तेश्च ॥ पूर्वद्युरेव परेद्युरेव  
 वापरास्त्वे व्याप्तौ सैव ग्राह्या ॥ दिनद्वयेतद्व्याप्तौ तदस्पर्शोऽशतः समव्याप्तौ च पूर्व  
 व ॥ विषमव्याप्तौ त्वधिका ग्राह्या ॥ इयंपरास्त्वे व्यापिनीस्यादाब्दिकस्य यदा

तिथिः । महतीयत्रतद्विद्वां प्रशंसन्ति महर्षय इति मरीचिस्मृतेः ॥ दर्शचपूर्वमासं  
चपितुः सांवत्सरं दिनस ॥ पूर्वविद्वामकुर्वाणो नरकं प्रतिपद्यत इत्यपराकर्णनारदो  
क्तेः ॥ इद्यहेष्यव्यापिनी चेत्स्यान्मृताहस्ययदातिथिः । पूर्वविद्वामप्रकर्तव्यात्रि  
मुहूर्तभवेद्यतीति सुसंतुक्तेः ॥ पूर्वस्यां निर्वपेत् पिंडानित्यागिरसभाषितमिति हे  
माद्रौपाठः ( तत्रैव वृद्धमनुः ) न इद्यहव्यापिनी चेत्स्यान्मृताहस्यचयातिथिः ।  
पूर्वविद्वैवकर्तव्यात्रिमुहूर्तचयाभवेत् ॥ मदनरत्नेऽप्येवम् ( यत्तु काष्ठाजिनिव्या  
सौ ) अह्नोस्तमयवेलायां कलामात्रायदातिथिः । सैव प्रत्याब्दि के ज्ञेयानां परा  
पुत्रहानिर्देति त्रिमुहूर्तस्तुतिः ॥ पूर्वद्युःसायं त्रिमुहूर्तभवेत्तु परैव ॥ त्रिमुहूर्तान्चे  
त्प्राह्या परैव कुतुपेहि सेतिका लादर्शो गोभिलोक्तेः ॥ कालादर्शोऽपि । प्रत्याब्दि के  
प्येवमेव तिथिर्ग्राह्या परात्क्षिकी । उभयत्र तथात्वे तु महत्वेन विनिर्गायः ॥ सम  
त्वे पूर्वविद्वैव ह्यतथात्वेऽपि सायदि । त्रिमुहूर्तभवेत्सायं सर्वेष्टोयं विनिर्गायः ( अ  
न्यत्रापि ) सायंतन्यपरत्र चेन्मृतातिथिः सैवाब्दि के मासिके ग्राह्या साव्य परात्क्ष  
योर्यदि तदायत्राधिका सामता । तुल्या चेदुभया परात्क्ष समये पूर्वान्चेत्तु द्वये पूर्वैव  
त्रिमुहूर्तगास्त समये नो चेत्परैवोचिता ( माधवपृथ्वीचंद्रौ तु ) दिनद्वये परात्क्ष  
व्याप्तौ अंशतः समव्याप्तौ च सये पूर्वावृद्धौ परा ॥ खर्वदपौ परौ पूज्या वित्युक्तेः ॥ अ  
परात्क्ष द्वयव्यापि न्यप्रतीतस्य चयातिथिः । सये पूर्वाचकर्तव्या वृद्धौ कार्यातिथो  
त्तरेति बौधायनोक्तेः ॥ सयाहस्यतिथिर्वा त्रिपरत्क्ष द्वये यदि । पूर्वासये तु क  
र्तव्या वृद्धौ कार्यातिथोत्तरेति वृहन्नारदीया चेत्याहुः ॥ वृद्धिसयौ चात्र परतिथेर्न तु  
ग्राह्यतिथेः ॥ तस्याः सये परात्क्ष द्वयव्याप्तेरसंभवात् ( तदाह माधवः ) न ग्राह्यतिथि  
गौ वृद्धिसयावर्ध्वतिथेस्तु ताविति ( यत्तु पृथ्वीचंद्रः ) पूर्वोक्तवचने युयवसायाह्ना  
स्तमययोगिनीतिथिरुक्ता तत्रा परात्क्ष व्यापिनी ज्ञेया ॥ सायाह्नस्त्रिमुहूर्तः स्या  
त्तत्र ग्राह्यकार्येदिति मात्स्यादौ सायाह्ननिषेधात् ॥ यच्च त्रिमुहूर्तादिग्रहणांत  
च्छाद्वाह्ना परात्क्ष त्रिमुहूर्तपरमित्याह ॥ तद्वेमाद्रिमदनरत्नकालादर्शादिग्र  
न्थविरोधात् सणापत्तेर्चा विन्यस ॥ तस्मात्पूर्वोक्तमेव साधु ॥ यदा विद्वज्ज  
दिने सांवत्सरयाह्नं न कृतं तदारात्रावपि कार्यम् ॥ मृताहंसमतिक्रम्य चण्डालेऽव



भिजायतइतिमरीचिनामृताहातिक्रमेदोयोक्तेः ॥ नचनक्तंश्राद्धंकुर्वीतारब्धेवा  
 भोजनसमापनमित्यापस्तंबेनगौणाकालोक्तेश्चेतिमाधवः ॥ आरब्धेश्राद्धेविघ्न  
 वशाद्रात्रिभागेपातेभोजनसमाप्त्यंतेरात्रौकार्यम् ॥ शेषसमाप्तिःपरदिनस्येति  
 हरदत्तः ॥ ग्रहणादिनेवार्यिकप्राप्तौतद्दिनसवाच्चेनामेनहेम्नावाकुर्यात् ॥ नेत्तर  
 दिनेइत्युक्तंप्राक्ग्रहणानिर्याये ॥ तच्चप्रथमाब्दिकंत्रयोदशेमलमासेकाढ्यम् ॥ अ  
 न्यथान ॥ प्रत्यब्दंद्वादशेमासिकायापिपण्डिक्रियासुतेः ॥ क्वचित्त्रयोदशेपिस्या  
 दाद्यंमुक्तातुवत्सरमितिलघुहारीतोक्तेः ॥ इदमन्त्याधिकमासपरम् ॥ द्वादशेव  
 योदशेवातीतइत्यर्थः ॥ तेनयत्रद्वादशमासिकंशुद्धमासेभवति तत्रत्रयोदशेधिके  
 सवाब्दिकंकार्यम् ॥ यज्ञाधिकमध्योद्वादशमासिकंतत्रतस्यद्विरावृत्तिंकृत्वा चतु  
 र्दशेशुद्धेयवप्रथमाब्दिकमितिसाधवीये ॥ हेमाद्रौचैवम् ॥ द्वितीयाब्दिकन्तुशु  
 द्धमासे सवनाधिकेनाप्युभयोः ॥ मलमासमृतानांतुयदासस्वाधिकःस्यात्तदात  
 त्रैवकार्यमन्यथाशुद्धस्येतिप्रायुक्तम् ॥ दर्शेवार्यिकंचेतदापूर्ववार्यिकंकृत्वाततः  
 पिण्डपितृयज्ञोद्दर्शश्राद्धञ्चेति निर्यायदीपेकमउक्तः (स्मृतिसारेपि) दर्शसया  
 हेमप्राप्ते कथंकुर्वीतियाज्ञिकाः ॥ आदौसयाहंनिर्वर्त्य पश्चाद्दर्शोविधीयत  
 इति ॥ युक्तंत्वेवम् ॥ तद्वचनेमलाभावात् ॥ पिण्डयज्ञंततःकुर्यात्ततोन्वाहाढ्यं  
 कम्बुध इति दर्शश्राद्धेपिण्डपितृ यज्ञानंतर्यात्तस्याब्दिकेप्यति देशात्प्राप्तेः ॥  
 पितृयज्ञानंतरंवार्यिकंततोदर्शश्राद्धमिति ॥ व्यतिषंगस्तुनभवत्येव ॥ तस्यार्थि  
 कत्वात् (कालादर्शेपि) निमित्तानियतश्चात्रपूर्वानुष्ठानकारणमिति ॥ सर्वा  
 नप्रत्येकस्त्वप्याभावात् सयाहंनिमित्तस्य । नियतत्वेन ॥ देवजानीयेप्येवम् ॥  
 सर्वमासिकादिष्वपिज्ञेयम् ॥ प्रत्यब्दंयोयथाकुर्यात्सतान्यपीतिसर्वातिदेशात्  
 (मृताहेवृषोत्तर्गउक्तोहेमाद्रौविष्णुधर्म) अग्रनद्वितयेचैव मृताहेवांधवस्यच ।  
 उत्सृजेन्नीलवृषभं कौमुद्याःसमुपागमे ॥ कौमुदीकार्तिकी (अथशुद्धिश्राद्धम् ।  
 दिवोदासीये ) सपिण्डीकरणादूर्ध्वं यावदब्दप्रयंभवेत् । तावदेवनभोक्तव्यं स  
 येहनिकदाचन ॥ वर्षान्तसपिण्डनेप्येतत्तुल्यम् ॥ मृताहनितुसम्प्राप्ते यावदब्द  
 चतुष्टयम् । बहिःश्राद्धप्रकुर्यात् नकुर्याच्छ्राद्धभोजनम् ॥ प्रथमेस्थीनिमज्जाच

द्वितीयेमांसभक्षणम् । तृतीयेरुधिरं प्रोक्तं आङ्गुलं चतुर्थकमिति आङ्गकारि  
 कोक्तेः ॥ शुद्धां किंचिदिति ज्ञेयम् (स्मृत्यन्तरे) सप्तविंशच्चयोमासान् आङ्गेभुंक्ते  
 तमेहतः । संपत्तिदूषितः पापः प्रेताशी च भवेत्तु सः ॥ तत्र प्रथमे देवर्ष्यात्सपिण्डन  
 पक्षे मृताहात्पूर्वहिसापिण्डनमब्दयति आङ्गञ्च कृत्वा परेद्युर्वार्यिकं कुर्यादिति  
 स्मृत्यर्थसारे उक्तम् ॥ हेमाद्रिस्तु मृताहेसापिण्डीकरणेनैव वार्यिकसिद्धिः ॥ पर्णो  
 संवत्सरेपिण्डः षोडशः परिकीर्तितः । तेनैव च सापिण्डत्वं तेनैवाब्दिकमिष्येत  
 इति वचनादित्याह ॥ इदमेव युक्तम् (अथ स्यात्तथाज्ञाने मरीचिः) आङ्गविघ्ने समु  
 त्पन्ने अविज्ञातमृते हनि । सकादश्यान्तु कर्तव्यं कृष्णापक्षे विशेषत इत्युक्तेः  
 ( शुक्लैकादश्यामपि बृहस्पतिः ) न ज्ञायते मृताहश्चेत् प्रसीते प्रोषिते सति ॥  
 मासश्चेत्प्रतिविज्ञातस्तद्वर्षे स्यादधाब्दिकम् ॥ दिनमासौ न विज्ञातौ मरणास्य  
 यदा पुनः । प्रस्थानमासदिवसौ ग्राह्यौ पूर्वाक्तयादिशा (सदनरत्ने भविष्ये) मृता  
 हं येन जानाति मानवो विनतात्मज । तेन कार्यसमावास्यां आङ्गसांवत्सरं सदा ॥  
 दिनमेव तु जानाति मासं नैव तु येनरः । मार्गशीर्षे तथा भाद्रे माघे वा तद्दिनं भवेत्  
 (निर्णयामृते तु) यदा मासेन विज्ञातो विज्ञातं दिनमेव तु । तदा चाथाह के मासि माघे  
 वा तद्दिनं भवेदिति बृहस्पतिस्मृतेरायाहोप्युक्तः (कालादर्शेऽपि) मासाज्ञाने दिन  
 ज्ञाने कार्यमायाह माघयोरित्युक्तम् (हेमाद्रौ प्रभासखण्डे) मृताहं येन जानाति सा  
 संवापिकथंचन । तेन कार्यसमावास्यां आङ्गमाघेयमार्गके (भविष्ये) मृतवा  
 त्पुते ग्राह्यौ तौ पूर्वाक्तक्रमेणातु । पूर्वाक्तेति प्रस्थानदिनाज्ञाने मासज्ञाने च तद्वर्षे ॥  
 मासाज्ञाने दिनज्ञाने च मार्गादिर्वितिवच्छ्रवणादिनेपि ज्ञेयमित्यर्थः ॥ अथवा दिने  
 मासाज्ञाने माघमार्गदर्शे कार्यपूर्वाक्तप्रभासखण्डात् ॥ अतो ब्रलोप इति शल  
 पारायुक्तं हेयम् ( तिथितत्त्वेऽयम् ) गतस्य न भवेद्वा त्रियावत्तद्वादशवार्यिकी ॥  
 प्रेतावधारणांतस्य कर्तव्यं सुतवांधवैः ॥ यन्मासि यदहर्यातस्तन्मासितदहः क्रि  
 या । दिनाज्ञानं कुहस्तस्य आयाहस्याथवा कुहूः ( अथ आङ्गविघ्ने निर्णयः )  
 तत्र विप्रस्य निमन्त्रणोत्तरं सूतके मृतके चाशौचाभावः । निमन्त्रितेषु विप्रेषु प्रार  
 ब्धे आङ्गकर्मणि । निमन्त्रणादिविप्रस्य स्वाध्यायादिरतस्य च ॥ देहेऽपि तृप्तिश्च



त्मुनाशौचं विद्यते कचिदिति ब्राह्मोक्तेः ( कर्तुस्तु विष्णुराह ) व्रतयज्ञविवाहेषु  
 आद्धेहोमेऽर्चने जपे । आरब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम् ॥ आद्धे प्रारम्भस्तेनै  
 वोक्तः ॥ प्रारम्भो वरणां यज्ञसं कल्पो व्रतसत्रयोः । नादीमुखं विवाहादौ आद्धे पा  
 कपरिक्रियेति ( माधवीये ब्राह्मणे ) आद्धादौ पितृयज्ञे च कन्यादाने च नो भवेत्  
 ( मिताक्षरायां स्मृत्यन्तरे । सद्यः शौचं प्रकृत्य ) यज्ञे सम्भूतसम्भारे विवाहे आद्ध  
 कर्मणीति ॥ तिथितत्त्वादिगौडग्रंथास्तु निमन्वराणोत्तरं कर्तुर्भोक्तुप्रचनाशौचम् ॥  
 निमन्वराणोत्तरं आद्धे प्रारम्भः स्यादिति स्मृतिरिति विष्णोक्तेः ॥ यत्तु आद्धे पाक  
 परिक्रियेति तद्वर्षाद्धविषयमित्याहुः ॥ दातृगृहे मरणादौ ब्राह्मे उक्तम् ॥ भोज  
 नाद्धे तु संभुक्ते विप्रैर्दातुर्विपद्यते ॥ गृहे इति शेषः ॥ यदा कश्चित्तदोच्छिद्यं शेषय  
 क्त्वासमाहितः । आचम्य परकीयेन जलेन शुचयो द्विजा इति ॥ अस्य आद्धविष  
 यत्वं हेमाद्रिगोक्तम् पृथ्वीचन्द्रोदयेऽप्येवम् ॥ मम तु प्रतिभातीदं विवाहादिविष  
 यम् ॥ न तु आद्धविषयं तत्पदाभावात् ( विवाहेत्सवयज्ञेऽवित्युपक्रम्य ) भुञ्जानेषु  
 तु विप्रेषु त्वन्तरासूतसूतके । अन्यगोहेदकाचान्ताः सर्वे ते शुचयः स्मृता इति यत्  
 त्रिंशन्मौक्तवाक्यात् ॥ निमन्वितेषु विप्रेषु प्रारब्धे आद्धकर्मणीति पूर्वोक्तविरो  
 धाच्च ॥ आद्धे तु यद्यपि विष्णुना पाके उत्तरमाशौचाभाव उक्तस्तथापि कर्तुरेव सः ॥  
 भोक्तुर्दोषोस्त्येव ॥ अपि दातृगृहीत्रो प्रचसूतके सूतके तथा । अविज्ञानेन दोषः  
 स्याच्छाद्धादिषु कथंचन ॥ विज्ञाने भोक्तुरेव स्यात् प्रायश्चित्तादिकं क्रमादिति  
 माधवीयब्राह्मोक्तेः ॥ आदिशब्देनाशौचमुच्यते ( तच्चाह विष्णुः ) ब्राह्मणा  
 दीनामाशौचेयः स ह्येवाह्नमश्नाति तस्य तावदाशौचम् ॥ यावत्तेषामाशौचव्यप  
 रमे प्रायश्चित्तं कुर्यादिति ( यत्तु ) देहे पितृयुतिषु त्मुनाशौचं विद्यते कचिदिति  
 ब्राह्मन्तत् आद्धकालीनस्य नियेधकम् ॥ न तु उत्तरकालीनस्य ॥ शुद्धिदीपस्तु नि  
 मन्वितेऽवित्याम आद्धपरम् ॥ भोजनार्थेऽवित्यादित्वन्न आद्धपरमित्याह ( प्राय  
 ष्चित्तं त्वाहमार्कडेयः ) भुक्ता तु ब्राह्मणाशौचे चरेत्सांतपनां द्विजः ॥ एतत्का  
 मतः ( अभ्यासे शंखः ) ब्राह्मणास्य तथा भुक्ता मासमेकं व्रती भवेदिति ( अज्ञानात्तु  
 छागलेयः ) सकाहं च न्यहं पंच सप्तरात्रमभोजनम् । ततः शुचिर्भवेद्विप्रः पंचगव्यं

पिवेन्नरइतिवर्णाक्रमेणोदस ॥ अभ्यासेतुद्वैगुण्यमित्यादिसिताक्षरामाधवीयादौ  
 ज्ञेयम् ॥ सिताक्षरामाधवादौतुआद्धेकर्तुर्भाक्तुश्चसर्वथादोषाभावउक्तः ( आ  
 शौचमध्येआद्धदिनप्राप्तेतुमाधवीयेकालादर्शेचक्षुष्यशृङ्गः ) देयेपितृणांआ  
 द्धेतुआशौचंजायतेयदा । आशौचेतुव्यतिक्रांतेतेभ्यःआद्धं प्रदीयते ( आद्ध  
 चिन्तामणौज्योतिषे ) प्रतिसंवत्सरंआद्धमाशौचात्परितंचयत् । मलमासेपि  
 तत्तत्कायमितिभागुरिभाषितम् ॥ आशौचांत्यदिनत्वेननिमित्तत्वादित्यर्थः ॥  
 सतन्मासिकादिपरंनदार्शिकादौ अतस्वदुर्दर्शनभाष्ये अपरपक्षेपिपञ्चाशीति  
 नियमात्कृष्णापक्षआद्धलोपेप्रायश्चित्तमेव ॥ नतुगौणकालेकरांनचोपवा  
 सः ॥ वेदादितानानित्यानांकर्मणांसमतिक्रमे । स्नातकव्रतलोपेचप्रायश्चित्त  
 सभोजनमितिमनूक्तेरियुक्तम् ॥ आशौचेतुप्रायश्चित्तमपिन ॥ मुख्यकालेअन  
 धिकारात् ( आशौचांतेसम्भवेतुव्यासः ) आद्धविघ्नेसमुत्पन्नेत्वंतरामृतसूत  
 के । अमावास्यांप्रकुर्याद्वैशुद्धावेकेमनीषिणाः ( हेमाद्रौषट्त्रिंशन्मतेपि ) मा  
 तिकेचाद्धिकेत्वहिसंप्राप्तेमृतसूतके । वदन्तिशुद्धौतत्कार्यं दर्शेचापिविचक्ष  
 णाः ( गोभिलः ) देयेप्रत्याद्धिकेआद्धेअन्तरामृतसूतके । आशौचानंतरं  
 कुर्यात्तिन्मासेदुस्येतथा ( मरीचिः ) आद्धविघ्नेसमुत्पन्नेप्यविज्ञातेमृतेहनि ।  
 एकादश्यांतुर्कर्तव्यंकृष्णापक्षेविशेषतः ॥ विशेषतइत्युक्तेःशुक्लैकादश्यामपि ॥  
 आशौचेतरविघ्नेसतदितामाधवपृथ्वीचंद्रौ ( यत्त्वत्रिः ) तदहप्रचेतप्रदुष्येतके  
 नचित्सूतकादिनासूतकानंतरंकुर्यात्पुनस्तदहरेवचेतितत्पूर्वकालाभावेज्ञेयम् ॥  
 एतदाद्धिकेतरआद्धपरम् ( यच्चदेवलः ) एकादश्येतुसंप्राप्तेयदिविघ्नःप्रजायते ।  
 मासेन्यस्मिंस्तिथौतस्मिन्आद्धंकुर्यात्प्रयत्नतइति ॥ तदपिमासिकपरमितिम  
 दनरत्नेहेमाद्रौच ॥ इदमपिपूर्वकालासंभवेव्याध्यादौविस्मरणौचैवंज्ञेयम् ( अथ  
 भार्यारजोदर्शने ) तत्रदार्शिकमामेनकार्यम् ॥ आद्धविघ्नेद्विजातीनामामआद्धं  
 प्रकीर्तितम् ॥ अमावास्यादिनियतंमाससंवत्सरादृतेइतिहेमाद्रौहारीतोक्तेः ॥  
 ( व्याघ्रपादोपि ) आर्तवेदेशाकालानांविष्ववेसमुपस्थिते । आमआद्धंद्विजैःका  
 र्यशूद्रःकुर्यात्सदैवहीति ( दीपिकापि ) दर्शेतुभार्यार्तवेत्यामआद्धंविधिंप्रवासिवि



धुराद्याप्चाचरेयुर्द्विजाः ॥ वस्तुतस्तुपाकाभावेद्विजातीनामस्यद्विविधीयतइ  
 तिसुमंतुक्तेः ॥ पाककर्तृतरसत्वेऽन्नेनान्यथामेनेत्युक्तम् ॥ मासिकानिसपिण्डानि  
 अमावास्यातथाद्विदकम् । अन्नेनैवतुकर्तव्यंयस्यभार्यारजस्वलेतिकलिकायाव  
 चनाच ॥ कालादर्शेतुस्त्रियारजोदर्शनेदर्शश्चाद्वपंचमेहनीतिपक्षांतरमुक्तम् ॥ पा  
 रिजातेप्येवम् ॥ एवंमहालययुगादावपि ॥ आद्विक्रंतुरजोदर्शनेपित्तिहनेसर्वका  
 र्यम् ॥ पुष्टपवत्स्वर्पिदारेषुविदेशस्योप्यनरिक्तः ॥ अन्नेनैवाद्विकंकुर्याद्विस्ना  
 वामेननक्वचिदितिमाधवीयेलौगाक्षिस्मृतेः ( मरीचिरपि ) अनरिक्तःप्रवा  
 सीचयस्यभार्यारजस्वला । आसश्चाद्वंप्रकुर्वीतनततकुर्यान्मृतेहनि ( काष्ठा  
 जिनिः ) आपन्नोप्याद्विक्रंतैवकुर्यादामेनकुत्रचित् । अन्नेनतदमायांवाक्कृषो  
 वाहरिवासरे ( प्रयोगपारिजाते ) रजस्वलायांभार्यायांक्षयाहंयःपरित्यजेत् ।  
 सर्वेनरकमाप्नोतियावदाभूतसंज्ञवम् ॥ मासिकानिसपिण्डचअमावास्यातथाद्वि  
 दकम् । अन्नेनैवतुकर्तव्यंयस्यभार्यारजस्वला ( देवयाज्ञिकनिबन्धेपि ) भर्तुःश्चाद्वं  
 पंचमेहिकुर्याद्भार्यारजस्वला ॥ पुत्रःपित्रोःप्रकुर्वीतमृताहनिशुचिर्यतः ( काला  
 दर्शेपि ) रजस्वलांगनेनरिक्तविदेशस्थोयवाद्विके ॥ दर्शादाविवनामेतत्त्वन्नेन  
 आद्वमाचरेत् ( अन्यत्रापि ) विदेशकोवाविगताग्निर्कोवारजस्वलायामपिधर्म  
 पत्न्यां । आद्वंमृताहेविदधीतपाकैर्नामेनहेज्जानतुपंचमेहिक ॥ एवंमासिकेपि ॥  
 ( यत्तुमरीचिः ) आद्विकेसमनुप्राप्तेयस्यभार्यारजस्वला । पंचमेहानितच्छाद्वं  
 नततकुर्यान्मृतेहनि ( माधवीये ) आद्वंतदानकर्तव्यंकर्तव्यंपंचमेहनीत्युत्तराद्वं  
 तदपुत्रकर्तृकश्चाद्विविद्यम् ॥ अपुत्रातुयदाभार्यासम्प्राप्तेभर्तुराद्विके । रजस्व  
 लाभवेत्सातुकुर्यात्तत्पंचमेहनीति ॥ प्रलोकगौतमोक्तेः ॥ दैवेकर्मणिपिच्येवा  
 पंचमेहनिशुद्धयतीतिप्रभासखण्डाच्च ॥ नन्वशुचित्वादेवतत्रपंचमेहन्यार्थति  
 आद्वंप्राप्तिमितिवचनंव्यर्थम् ॥ नैवम् ॥ गर्भिणीसूतिकादिश्चकुमारीवाप्यरो  
 गिणी । यदाशुद्धातदान्येनकारयेत्प्रयतास्त्वयसिंहितादौभविष्योक्तेः ॥ अ  
 नुपनीतस्त्रीशूद्राश्चआद्वमृत्विजावाकारयेयुः ॥ स्वयंवाऽमंत्रकंकुर्युरितिस्मृत्य  
 र्यसाराच्चान्यद्वाराकरणानिवृत्त्यर्थत्वात्तस्यत्वदुक्त दिशाआशौचानंतरमश्चाद्व

कर्तव्यताऽवेदकवाक्यवैयर्थ्याच्च ॥ अतः प्रागुक्तमरीच्युक्तेः पत्नीपंचमेहनीतियु  
क्तम् (यत्तु) सप्ताहात्पितृदेवानां भवेद्योग्याव्रताचनेर्ज्ञातद्रजोनिवृत्तिपरमिति  
हेमाद्रिभिन्नसर्वनिबन्धसिद्धांतः हेमाद्रिस्तुग्राह्यादौ स्त्रियासहैवाधिकारात्तस्यां  
रजोदुष्टायांतन्निवृत्तेरेकभार्येणपंचमेहनिकार्यम् ॥ प्रागुक्तमरीच्युक्तेः ॥ भार्या  
तरसत्वेतुपुष्टपवत्स्वपीतिवचनात्तद्दिनेष्वेत्याह (दीपिकापि) भार्येणैवसतिपं  
चमेचदिवसेस्याहार्थिकंमासिकंपक्वान्नैर्बहुभार्यकस्त्वधिकृतेपत्न्यंतरेतिवृत्तिः ॥  
कुर्यात्तद्विदितं स्वमुख्यदिवसेर्ज्ञातचित्यम् ॥ सहाधिकारः सहत्वश्रुत्यावासक  
फलभाक्त्वेनवापाककर्तृत्वेनवा ॥ नाद्यः । तदभावात् । पाणिग्रहणाद्विसह  
त्वंकर्मस्त्रित्यस्याग्निसाध्यकर्मविययत्वात् ॥ आर्द्धिकस्यचनिररनेरपिपाकेनै  
वोक्तेः ॥ स्मार्ताग्निसाध्यत्वानियमात्तामपरुध्योतिपूर्वाक्तवचनासत्वाच्च ॥ क  
थंचभार्यातरसत्वेधिकारः ॥ ज्येष्ठायानविनेतरेति नियमात् ॥ ज्येष्ठापरत्वेच  
तेनैवसिद्धेर्वचनवैयर्थ्यात् ( नद्वितीयः ) अविभक्तभ्रातृत्वेकस्याऽशुचित्वे  
न्यस्याधिकारापत्तेः ( नतृतीयः ) प्रवासनिर्देशसत्तिका रोगिरायादिष्ठवप्य  
करणापत्तेः ॥ आरभेतनवैः पात्रैरन्वारम्भंचब्रांधवैरिति देवलोक्तावात्मनेप  
दात्स्वस्यब्रांधवानांच पाककर्तृत्वोक्त्याविरोधाच्च ॥ ततस्तानिपपाचाशुसी  
ताजनकनंदितोतिपात्रादिलिङ्गात्प्राशस्त्यंभार्यापाकस्योच्येत ॥ नततकस्या  
प्यनियमः ॥ तेनैतद्वचनंयुक्त्याद्यभावात्पूर्वाक्तवचोविरोधाच्चयत्किंचिदेव  
( यदपि ) आह्वीयाह्निसंप्राप्ते यस्यभार्यारजस्वला । आह्वंतवनकर्तव्यंक  
र्तव्यंपंचमेहनीतिप्रलोकणौतमपातोऽन्यथादर्शितः ॥ माधवीयेचतद्वशात् पक्षांत  
रमुक्तम् ॥ तेनापिनाभिप्रेतार्थसिद्धिः ॥ यस्यप्रेतस्येत्यर्थात् ॥ तेनावहेमाद्रिर्व  
भ्रामेतिबहुवक्तव्येपिनोच्यते (अथान्वारोहणोनिर्णयः । लौगाक्षिः) मृताहनि  
समासेन पिण्डनिर्वपणांपृथक् ॥ नवश्राद्धञ्चदम्पत्योरन्वारोहणागवतु ॥ समा  
सेनतुतंत्रेणाद्विपितृकश्राद्धवद्वयोरेकः पिण्डोविप्रश्च ॥ पिंडशब्दः श्राद्धपरः ॥  
नवश्राद्धपृथगितिहेमाद्रिपृथ्वीचन्द्रौ ॥ अत्रमृताहनीत्येकत्वात् ॥ दिनभेदेदि  
नैक्येवामृततिथेरेकत्वेकालैक्यंकर्तव्यंपाकैक्यंच ॥ एकचित्यविरोहेतुतिथि



रेकैव जायते । एकपाकेनपिण्डैक्ये द्वयोर्गुल्मीतनासनी इति स्मृत्यन्तराच्च ॥ अ  
 न्त्येष्टिपद्धतौ भद्रेरप्युदाहृतम् ॥ अन्वारो हेतुनारीणां पत्युश्चैकोदकक्रिया ।  
 पिंडदानक्रिया तद्वच्छादप्रत्यादिदकन्तथा ॥ नवश्राद्धानिसर्वाणि सपिंडीक  
 रणां पृथक् । एकस्यैव वृषोत्सर्गो गौरेकातत्र दीयते इति ॥ तिथिभेदे तु वार्षिकं पृ  
 थगेव ॥ तथा वार्षिके समासविधानादन्यत्र सर्वत्र पृथक्त्वे प्राप्तेन नवश्राद्धमेव पृथगि  
 ति परिसंख्ययान्यत्र पृथगुक्तेष्वपि वार्षिकयोऽशश्राद्धतीर्थसपिंडान्वष्टक्यादि  
 युसमाससर्वेति मदनपारिजातनिर्णयामृतादयः ॥ अतः समासविधिवलात्तज्येष्टपु  
 त्रस्य कर्तृत्वे सपत्नमातुरन्वारो हरो तत्पुत्रे सत्यापितद्वार्षिकादिकमविभक्तः साप  
 त्तपुत्रसवज्येष्टः कुर्यान्नौरसः ॥ बह्व्यसारा पृथ्वीचंद्रादिमते तु औरसस्य मातुः पृथ  
 कुर्यात् ॥ एवं बह्वीठ्ठापि मातृयुजेयम् ॥ विस्थलीसेतौ पितामहचरगौरप्येव  
 मुक्तम् (यत्तु गार्ग्यः) एकचित्यां समाकूढौ दंपती निधनंगतौ । पृथक् श्राद्धंतयोः  
 कुर्यादोदनं च पृथक् पृथक् ॥ ओदनं पिंडः ॥ तन्न नवश्राद्धविययं (यत्तु भृगुः) या  
 समारोहणां कुर्याद्वर्तुप्रचित्यां पतिव्रता । तामृताहनि संप्राप्ते पृथक् पिंडेन योजये  
 त ॥ प्रत्यब्दं च नवश्राद्धं युगपत्तु समाचरेत् । तद्येषां वार्षिकमेकैर्द्विष्टमुक्तं तद्विष  
 यम् ॥ प्रत्यब्दं च मृताहनीत्यन्वयः ॥ नवश्राद्धं युगपदिति दर्शवर्गद्वयवदेकतंत्रेणापृ  
 थगित्यर्थमाह हेमाद्रिः ॥ सतन्मृततिथेर्भेदविययमिति पृथ्वीचंद्रनिर्णयामृता  
 द्याः ॥ देवयज्ञिकोऽप्येवम् (पराशरमाधवस्तु) गार्ग्यभृगवादिवचनाल्लौगाक्षि  
 वाक्ये समासेन पाकादितंत्रैक्येन दर्शवर्गद्वयवत् पृथक् श्राद्धं कुर्यात् ॥ नवश्राद्धं च  
 तथेत्याह (पृथ्वीचंद्रचंद्रिकादयस्तु) द्वयोरेकपिंडदानं लौगाक्षिवचनं चापदि  
 ययम् ॥ पृथक् पिंडदानं तु मुख्यः कल्पः (तदाह वृद्धपराशरः) आरुह्य भर्तुप्रिच  
 तिरंगनायाः प्राप्नोति मृत्युं खलु सत्त्वयुक्ता ॥ एकादशा हेतुतयोर्विधेयं श्राद्धं पृथक्  
 स्वर्गमपेक्ष्य सद्भिः ॥ एकत्वमिच्छंति मतिप्रहीणा एकादशाहादियु येनृना  
 र्याः ॥ ते स्वर्गमार्गं विनिहत्य कुर्युः स्त्रीसत्त्वघातान्नरकाधिवासं ॥ भर्तृसहमृता  
 या तु नाकलोकमभीप्सती । सार्हच्छाद्धं पृथक् पिंडान्नैकत्वं तु स्मृतं तयोः ॥ पृथ  
 गेव हि कर्तव्यं श्राद्धमेकादशाहिकं । यानि श्राद्धानिसर्वाणि तान्युक्तानि पृथक्

पृथक् ( विश्वादर्शोपि ) मातुर्गयाष्टकावृद्धिर्मुताहेयुमहालये । आङ्गकुट्यात्  
 पृथग्देवंतंत्रवानुगतावपि ॥ एकचित्यांसमारूढमृतयोरेकवर्हिषि । पित्रोः  
 पिंडानपृथग्दद्यात्पिंडंत्वापत्सुतत्सुतइत्यग्निस्मृतेरित्याहुः ( यत्तुषट्त्रिंशन्मते )  
 एकत्वंसागताभर्तुः पिंडेगोत्रेचसुतके । नपृथक्पिंडदानंतुतस्मात्पत्नीयुविद्यते  
 इतितह शादिपरं ( चंद्रप्रकाशोपि ) एकचित्यांसमारूढौदंपतीप्रमितौयदि । पृ  
 थक्पृथक्प्रकुर्वीतपत्युरेवस्येहनि ॥ मृतानामपिभृत्यानांभार्याणांपतिनासह ।  
 पूर्वकस्यमृतस्यादौद्वितीयस्यततःपुनः ॥ तंत्रेणाश्रपणांकृत्वा आङ्गस्वामिस्येह  
 नि । तृतीयस्यततःकुर्यात्संनिपातेष्वयंक्रमइति ॥ सहगमनेसर्वत्रआङ्गार्थमेक  
 पाकइत्याह ( मदनरत्नेप्रचेताः ) एकचित्यांसमारूढौप्रियेतेदंपतीयदि । तंत्रेणा  
 श्रपणांकुर्यात्पृथक्पिंडंसमावपेत् ॥ पृथ्वीचंद्रोदयेष्वेवम ॥ अत्रभर्तुराशौचम  
 ध्येऽन्यदिनेस्त्रीमरणोपतिसरणादिनगरानया शौचपिंडदानैकादशाहादिकार्य  
 म् ॥ नात्रपक्षिणीवृद्धिः ॥ मृतंपतिमनुव्रज्यपत्नीचेदनलंगता । नत्रपक्षिणी  
 कार्यापैतृकादेवशुद्धयति ॥ पुत्रोन्योवाग्निदस्तस्यास्तावदेवाशुचिस्तयोः । न  
 वआङ्गंसंपिंडंचयुगपत्तुसमापयेदितिषडशीतिमतात् ॥ यदानारीविशेदग्निंप्रि  
 यस्यप्रियवांकृत्वा । तदाशौचंविधातव्यंभर्वाशौचक्रमेणाहीतिलघुहारीतोक्ते  
 ष्च ॥ भर्वाशौचोत्तरमन्वारोहरोतत्त्र्यहमाशौचं ॥ ऋग्वेदवादात्साध्वीस्त्रीन  
 भवेदात्मधातिनी ॥ इयहाशौचेतुनिर्वृत्तेआङ्गंप्राप्नोति शास्त्रतइतिब्राह्मोक्तेरि  
 तिपृथ्वीचंद्रापरार्कौ ॥ सतदन्वारोहरोसवनत्वेकचितौ ( ऋग्वेदवादः ) इमाना  
 रीरविधवेत्यादिः ॥ सतदसवर्णापरमित्यन्ये ( स्मार्तगौडारतु ) देशांतरमृतेप  
 त्यौसाध्वीतत्पादुकाद्वयमित्युपक्रम्य ( ब्राह्मे ) इयहाशौचेतुनिर्वृत्तेइत्युक्ते  
 र्मात्राशौचोत्तरमन्वारोहरोऽग्रहः ॥ सहगमनेतुपूर्णादशाहादि ॥ पिंडास्तुदशा  
 पिसहैव ( तथाचजनकशूलपाणिशुद्धितत्त्वधृतव्यासः ) संस्थितंपतिमालिङ्ग्यप्र  
 विशेषाहुताशनम् । तस्याःपिंडादिकंज्ञेयंक्रमशःपतिपिंडवत् ॥ अन्वितापिंड  
 दानंतुयथाभर्तुर्दिनेदिने । तदथरिोहिणीयस्मात्तस्मात्सानात्मधातिनीतिदिष्टा  
 क्तेष्व ॥ पृथक्चित्तौतुभर्वाशौचमध्येतदूर्ध्ववासत्यांइयहेषादशापिंडाः ॥ अ



निवृत्तायाः प्रदातव्या दशपिंडाश्च्यहेणातु ॥ स्वाम्याशौचे व्यतीते तु तस्याः श्राद्धं प्र-  
 दीयत इति तत्रैव पैठीनसि स्मृतेः ॥ भर्त्राशौचोत्तरं मृतौ तु चतुर्थेऽह्नि श्राद्धम् ॥ शाल-  
 पाणिना त्विदमग्निपुराणीयत्वेनोक्तम् ॥ युद्धहतस्य सद्यः शौचे त्वन्वारो हराशौच-  
 रात्रम् ॥ एकचित्तौ तु संस्थितपतिमिति प्राणुक्तव्या सोक्तेः सद्यः शौचमित्याहुः ॥  
 अन्यसपिंडाशौचमध्ये विदेशमृतान्वारोहरां त्वनाशक्यमेव ॥ शुचिताया अंग-  
 त्वात् ॥ अन्येतुरजोवत्याः सूतिकायाः च गमननिषेधादितराशौचस्यानिषे-  
 धः ॥ अन्यथा प्रत्यक्षभर्तृसरणोका गतिरित्याहुः ॥ तन्मूलवचनं विना चिंत्यमे-  
 व (स्मृत्यर्थसारेऽपि) सहगमने सर्वत्र श्राद्धपिंडादौ पाकौक्यं कालौक्यं कर्त्रौक्यं चेति ॥  
 यातुपतिमुद्दिश्याऽन्यकालेऽन्यतिथावन्वाह्यता तस्याः श्राद्धं तत्तत्सयतिथौ कार्य-  
 म् ॥ न भर्तृतिथौ ॥ पारणोमरणो नृणां तिथिस्तात्कालिकी रमृतेति स्कांदात् ॥ ति-  
 थिरेकैव जायत इत्यादिवचनाच्चेति मदनरत्नपारिजातपृथ्वीचंद्रादयः ॥ अन्येतु-  
 तस्याः पतिमरणो न मृतप्रायत्वात् ॥ सहाग्रतः पृथतो वा तद्वक्त्या म्रियते यदि । तस्याः  
 श्राद्धं प्रदातव्यं पृथक्पत्युः सयेहनीति स्मृत्यन्तरात् ॥ अग्रतः पृथतो वा पितृद्वक्त्या  
 म्रियते यदि । तस्याः श्राद्धं सुतैः कार्यं पत्युरेव सयेहनीति पुराणा समुच्चया च भर्तृति-  
 थिविवेक्याहुः ॥ अत्र मूलं चिंत्यम् (अत्र विशेषो हेमाद्रौ स्मृत्यन्तरे) मातासंगलसूत्रे  
 णाम्रियते यदि तद्दिने । उद्दिश्य विप्रपंक्तौ तां भोजयेच्च सुवासिनीम् (अथ श्राद्धं सं-  
 पाते निर्णयः) अत्र पित्रो मृततिथ्यैकत्वे मरणाक्रमेणादर्शवर्गद्वयवत्तत्रेणा श्राद्धं  
 कुर्यात् ॥ पौर्वापर्याज्ञाने तु पितृपूर्वकं कुट्यदि तद्दिनादिः (माधवादयस्तु) पि-  
 त्रोः श्राद्धं समंप्राप्तेन वेपर्युषितेऽपि वा । पितृपूर्वसुतः कुर्यादन्यत्रासतिथो गत इति  
 कार्याजिनि स्मृतेः ॥ सर्वत्र पितृपूर्वभिन्नप्रयोगमाहुः (पार्वणौ कोद्दिष्टयोः संपा-  
 ते माधवीये जावालिनः) यद्येकत्र भवेद्याता मेकोद्दिष्टश्च पार्वरां । पार्वरां त्वभि-  
 निर्वर्त्य सकोद्दिष्टं समाचरेत् (गृहदाहादिनायुगपन्मरणोभृगुः) एककाले गतास-  
 नां बहूनामथवा द्वयोः । तत्रेणाग्रपरां कृत्वा कुर्याच्छ्राद्धं पृथक्पृथक् ॥ पूर्वकं  
 स्य मृतस्यादौ द्वितीयस्य ततः पुनः । तृतीयस्य ततः कुर्यात्सन्निपातेऽवयंक्रमः (ऋ-  
 ष्यशृङ्गः) भवेद्यदि सपिंडानां युगपन्मरणान्तदा । संबन्धासन्निपातोऽत्र तत्तत्क्रमा-

च्छादमाचरेत् (गमसुडे) एकेनैवतुपाकेनश्राद्धानिकुरुतेवहि । विकिरंत्वेकतः  
 कुर्यात्पिण्डावदद्यात्पृथक्पृथक् ॥ अत्रानुगमनेचदाहसपिण्डनादौविशेषं  
 स्यामः (अत्रिः)बहूनामथवाद्वाभ्यांश्राद्धञ्चेत्स्यात्समेहनि । तंत्रेणश्रपरांकृत्वा  
 पृथक्श्राद्धानिकारयेत् (पुलस्त्यः) महालयेगयाश्राद्धेगतासुनांसयेहनि । तं  
 त्रेणश्रपरांकृत्वाश्राद्धंकुर्यात्पृथक्पृथक् ॥ इदंचपृथक्पाकेर्नाभिनश्राद्धाशक्तौ  
 पृथक्पाकेनसंबन्धासत्याश्राद्धभेदस्तुमुख्यःपक्षः ॥ एकत्रैवदिनेश्राद्धद्वयंप्राप्तंय  
 दातदा । चरेदेवपुरावर्यात्पितुर्मातुश्चयस्सुतः ॥ एकस्मिन्यःकरोत्यह्नियोः  
 श्राद्धंयदाद्विजः । तदापूर्वमृतस्यादौकृत्वास्नात्वायथाविधि ॥ पश्चात्पश्चा  
 न्मृतस्यैवपृथक्पाकैःसमाचरेत् । नैकस्मिन्दिनसेश्राद्धत्रयाणांकुर्वचित्द्विजः ।  
 एकःकुर्यात्तथाप्राप्तेअन्योभ्रातासमाचरेत् ॥ भ्रातर्यविद्यमानेतुतत्तपरेहिसमाच  
 रेत् । अन्यथाश्राद्धहंतास्याच्छादसंकरकृद्भवेदित्याप्रवलायनोक्तेरितिपृथ्वी  
 चन्द्रः (कात्यायनः) देवहूनिनिमित्तानिजायेरन्नेकवासरे ॥ नैमित्तिकानिका  
 र्याणिनिमित्तोत्पत्त्यनुक्रमात् (जाबालिः) श्राद्धंकृत्वातुतस्यैवपुनःश्राद्धंनत  
 दिने । नैमित्तिकंतुकर्तव्यंनिमित्तानुक्रमोदयस (कालादर्श) नित्यदार्शिक  
 योश्चोदकुंभमासिकयोरपि । दार्शिकस्ययुगादेश्चदार्शिकालभ्ययोगयोः ॥  
 दार्शिकस्यचमन्वादेःसंपातेश्राद्धकर्मणाः । प्रसंगादितरस्यापिसिद्धेस्तत्तमाचरेत्  
 (अस्यदेवताभेदेऽपवादमाहसग्व) नित्यस्यचोदकुंभस्यनित्यमासिकयोरपि  
 दर्शस्यचोदकुंभस्यदर्शमासिकयोरपि ॥ नित्यस्यचाद्विदकस्यापिदार्शिकाद्वि  
 कयोरपि । युगाद्याद्विदकयोश्चैवमन्वाद्याद्विदकयोस्तथा ॥ प्रत्याद्विदकस्यचा  
 लभ्ययोगेयुर्विहितस्यच । संपातेदेवताभेदाच्छादयुग्मंसमाचरेत् ॥ निमित्तानि  
 यतश्चात्रपर्वानुष्ठानकारणां ॥ पित्रोस्तुपितृपूर्वत्वंसर्वंश्राद्धकर्मणा (माधवी  
 येस्मृतिसंग्रहे) काश्यतंत्रेणानित्यस्यतंत्रंश्राद्धस्यसिद्धयति (अथश्राद्धांगतर्पणम् ।  
 पारिजातेपृथ्वीचंद्रोदयेचर्गाः) पर्वतिलोदकंकृत्वाआमश्राद्धंतुकारयेत् । प्र  
 त्यह्नेनभवेत्तत्पर्वपरेऽह्नितिलोदकम् ॥ पक्षश्राद्धंहिरण्येनअनुव्रज्यतिलोदकम् ।  
 नचनित्यार्पणस्यायंपरेह्युत्कर्षः ॥ नतुश्राद्धांगतर्पणमस्तीतिवाच्यम् ॥ यस्त



पयतितानविप्रः श्राद्धं कृत्वा परेहनि । पितरस्तेन हृष्यन्ति न चेत्कुप्यन्ति वै भृशमि  
 ति गर्गेण फलनिन्दार्थवादाभ्यामंगत्वेनोक्तेः ॥ श्राद्धप्रक्रमादार्थिकम् ( बृहन्ना  
 रदीयेऽप्यादिदकंप्रक्रम्य ) परेद्युः श्राद्धकृन्मर्त्योद्योनतर्पयते पितॄन् । तस्य ते पि  
 तरः क्रुद्धाः शापदत्त्वा व्रजन्ति हि ॥ पितृशब्दश्च श्राद्धेऽप्यवर्गपरः ॥ तेन तर्पणस्य  
 पशुपुरोडाशयागवत्प्रस्तरप्रहरणवच्छेषदेवतासंस्कारकृता ॥ तेनादिके दिने  
 नित्यं स्वपित्रादितर्पणकार्यमेव ॥ श्राद्धांगभूतस्यैव परेद्युस्तर्पयतेः ( तदुक्तं ) प्र  
 त्यब्दांगं तिलदद्यान्निषिद्धेऽपि परेहनि । वर्गेकस्य वचोयेयामन्येषां तु विवर्जयेत्  
 ( क्वचिद्विशेषमाहर्गः ) कृष्णभाद्रपदे मासि श्राद्धं प्रतिदिनं भवेत् । पितृणां प्र  
 त्यहंकार्यं निषिद्धाहे पितृपणम् ॥ तर्पणं तिलतर्पणं ॥ निषिद्धाहे पीत्युक्तेः ॥  
 सकृन्महालयेषु वः स्यादष्टकास्त्वं त एव हि ॥ अत्र सप्तमी निर्देशात् अंगितास्फुटैव ॥  
 तत्र जयात् जुहुयात् ॥ मंदं प्रायणीयायां मंदं प्रातः सवने इत्यदिवत् ( अस्यापवादो  
 बृहन्नारदीये ) वृद्धिश्चाद्धेऽपि ङञ्च प्रेतश्चाद्धेऽनुमासिके । संवत्सरविमोके च कुर्यात्तु  
 तिलतर्पणम् ॥ तदयमर्थः ॥ दर्शे विप्रनिमंत्रणोत्तरं पाकारं भोत्तरं वा श्राद्धप्रयोगस्या  
 रब्धत्वात् ब्रह्मयज्ञोत्तरं नित्यतर्पणं ॥ नैव श्राद्धांगतर्पणस्य तत्रैवाप्रसंगेन वासिद्धिः ॥  
 ततः पूर्ववै प्रवदेवोत्तरं वा ब्रह्मयज्ञकरणे श्राद्धांगतर्पणं पृथक्कार्यं ॥ पित्रोर्वार्थिके तु  
 नित्यतर्पणं तिलवर्ज्यं कार्यम् ॥ नैव श्राद्धदिने कुर्यात्तिलैस्तु पितृतर्पणम् । श्राद्धं कृ  
 त्वा पराक्लेषतर्पणं तु तिलैः सहेति वचनात् ॥ सप्तम्यां भानुवारे च माता पित्रोर्मृतेह  
 नि । तिलैर्यस्तर्पणं कुर्यात्स भवेत्पितृघातक इति स्मृतिरत्नावल्यां वृद्धमनुक्तेश्च ।  
 अत्र नित्यतिलतर्पणो तिलमात्रनिषेधेन तु तर्पणस्य तिलैरित्यस्य वैयर्थ्यपित्तेः  
 ( यत्तु कातीयम् ) उपरागेऽपि तु श्राद्धे पातेऽमायां च संक्रमे । निषिद्धेऽपि हि सर्वत्र  
 तिलैस्तर्पणमाचरेदितितत् परेद्युः श्राद्धांगतर्पणविषयमिति केचित् ॥ श्राद्धा  
 शक्तस्य तत्स्थानापन्नतर्पणविषयमित्युक्तम् ॥ सकृन्महालये परेद्युस्तर्पणं ॥  
 अष्टकासु सप्तम्यष्टमी श्राद्धयोरन्ते तदैव वर्गद्वयस्य ॥ अन्वष्टक्येतु मातृवर्गस्यापि  
 तीर्थश्राद्धे दर्शवत् ॥ माघाद्यादिष्वष्टकावदन्ते ॥ अनेकश्राद्धसंपाते तु यदितत्प्रसं  
 गमिद्विस्तदा तदीयमेव तर्पणम् ॥ तत्र त्वेतु श्राद्धसमसंख्यत्वे आदावन्ते वा ॥ विष

मसंख्यायां बहूनीति ॥ तस्माच्छाङ्गागतर्पणांसिद्धम् (तद्विधिः संग्रहे) स्नात्वा  
तीरं समागत्य उपविश्य कुशासने ॥ संतर्पयेत्पितृन् सर्वान् स्नात्वा वस्त्रं च धारयेत् ॥  
तर्पणोत्तरं नित्यस्नानं कृत्वेत्यर्थः ॥ अपसव्यं ततः कृत्वा सव्यं जान्वा च्यभूतले । ना  
मगोत्रस्वधाकारैर्द्वितीयां तेन तर्पयेत् (अववस्वादिरूपतोक्ता स्मृत्यर्थसारे) व  
सुसुद्रादिति सुतान् आद्वार्यै तर्पयेत्पितृन् ॥ तत्र बह्वृचानां दक्षिणो नैव ॥ अनादेशे  
दक्षिणां प्रतीयादिति सूत्रात् ॥ अत्र प्रत्यंजलिमंत्रावृत्तिः ॥ निर्वापवत्तत्संध्याध्य  
दानवच्चद्रव्यभेदात् ॥ अवघातवेदिप्रोक्षणादौ तु द्रव्यैकत्वाच्च मंत्रावृत्तिः केचित्तु  
परिव्याणामंत्रवत्क्रियमाणानुवादित्वेन करणात्वाभावात् सकृदिच्छंति ॥ तत्र ॥  
तत्रापूपद्रव्यैक्यात् परवीरसीति करणीभूतमन्त्रांतरसत्त्वादन्ये तरेण व्यवधानाप  
र्योभयोः कारणात्वायोगात् कर्तृभेदेन विकल्पायोगाच्च क्रियमाणानुवादित्व  
म् ॥ न त्वत्र तथेति बौधायनादिवचनात् करणात्त्वमेव ॥ तेनावृत्तिरेव युक्ता ॥ एवं  
नित्येपि ॥ यत्तु संग्रहेनाम्ना पठंति ॥ पित्रोः स्याद्देसं प्राप्तेयः कुर्यान्नित्यतर्पणम् ।  
आसुरंतद्भवेच्छाङ्गततोयं रुधिरं भवेत् ॥ सर्वदा तर्पणां कुर्याद्ब्रह्मयज्ञपुरःसरं ।  
मृताहेनैव कर्तव्यं कृतं चेन्निरुद्धफलं भवेत् ॥ तत्समूलत्वे सति फलविषयं ॥ यच्च पठंति  
( कपिलः ) मन्वादिषु युगाद्यासु दर्शसंक्रमणेषु च । पौर्णमास्यां व्यतीपाते द  
द्यात्पर्वतिलोदकं ॥ अर्घ्यादये गजच्छाये यद्युचमहा लये । भरगयां च मघाया  
द्देतदंते तर्पणां विदुः ( शौनकः ) मातापित्रोर्मृताहे च परे हनि तिलोदकं । कास  
रायश्चाद्विषये सद्यो दद्यात्तिलोदकं ॥ एतन्निर्मूलम् (अथ तिलतर्पणानियेधः ।  
गार्ग्यः) भानौ भौमे त्रयोदश्यां नन्दा भृगुमघासु च । पिण्डदानं मृदास्नानं न कुर्यात्ति  
लतर्पणां ( स्मृत्यर्थसारे ) विवाहव्रतचूडासु वर्धमर्धतदर्धकं । अर्धतदेव ॥ वृद्धौ  
सत्यां च तन्मासिनेत्याहुस्ति तलतर्पणां ( हेमाद्रौ मरीचिः ) सप्तम्यारं विवारे च गृहे  
जन्मदिने तथा । निशासन्ध्यासु पुत्रार्थं न कुर्यात्तिलतर्पणां (यत्तु संग्रहे) नन्दायां  
भार्गवादिने कृत्तिकासु मघासु च । भरगयां भानुवारे च गजच्छाया ह्वये तथा ॥ अय  
नद्वितये चैव मन्वादिषु युगादिषु ॥ पिण्डदानं मृदास्नानं न कुर्यात्तिलतर्पणमि  
तित्ति चिंत्यं ॥ पानीयमप्यत्र तिलैर्विमिश्रं दद्यात्पितृभ्यः प्रयतो मनुष्य इत्यादिवि



रोधात् ( अत्रापवादः पृथ्वीचन्द्रोदये ) तीर्थेतिथिविशेषेचगयायांप्रेतपक्षके ।  
 निषिद्धेपिदिनेकुर्यात्तर्पणांतिलमिश्रितम् ( स्मृत्यर्थसारेपि ) तिथितीर्थविशेषे  
 युकार्यप्रेतेचसर्वदेति ( गोभिलः ) तिलाभावेनिषित्वाहेसुवर्गारजतान्वितम् ।  
 तदभावेनिषिंचेत्तु दर्भमन्त्रेणावापुनः ॥ पतितस्यतिलोदकंवक्ष्यामः ॥ अथवृत्ति  
 आहं ( तन्निमित्तंपृथ्वीचन्द्रोदयेब्राह्मे ) जन्मन्यथोपनयनेविवाहेषु त्रकस्य  
 च । पितृन्नादीमुखान्नामतर्पयेद्विधिपूर्वकं ॥ देवव्रतेयुचाधानयज्ञपुंसवनेयुच ।  
 नवान्नभोजनेस्नानेऊढायाःप्रथमार्तवे ॥ देवारामतडागादिप्रतिष्ठासत्सवेषुच ।  
 राजाभिषेकेबालान्नभोजनेवृत्तिसंज्ञकान् ॥ वनस्थाद्याश्रमंगच्छन्पर्वद्युःसत्यग  
 ववा । पितृन्पूर्वाक्तविधिनातर्पयेत्तर्कर्मसिद्धये ( विष्णुपुराणे ) यज्ञोद्वाहप्रति  
 ष्ठासुमेखलाबधमोक्षयोः ॥ पुत्रजन्मवृथोत्सर्गोवृद्धिश्चात्थ्वंसमाचरेत् ( तत्रैव )  
 नामकर्मणिबालानां चूडाकर्मादिकेतथेत्युक्तोर्निष्कमान्नप्राशनयोर्नश्चात्थ्वमि  
 तिमैथिलाः ॥ पूर्वाक्तविरोधात् ॥ नानिष्ट्वेतिविरोधात् ॥ हुतोत्पत्तौतथाश्चा  
 द्देअन्नप्राशनिकेनयेतिराजमार्तडाच ( यत्तुचन्द्रोदगपरिशिष्टं ) सूर्येद्वोःकर्म  
 णीयेचतयोःश्राद्धंनविद्यते इतितत्तेयामेवेतिकल्पतरुः ( बह्वृचकारिकायां )  
 स्यादाभ्युदयिकंश्रात्थ्वंवृद्धिपूर्तयुक्कर्मसु । पुंसःसवनसीमंतचौलपनयनेठिवह ॥  
 विवाहेचानलाधेयप्रभृतिश्रौतकर्मणि । इदंश्राद्धंप्रकुर्वीतिद्विजावृद्धिनिमित्त  
 कम् ॥ अन्यैःषोडशसंस्कारश्चावरायादिष्वपीष्यते । वाप्याद्युद्यापनादौतुक्युः  
 पूर्तनिमित्तकं ( बोपदेवकालादर्शौ ) सीमंतव्रतचौलनामकरणाच्चप्राशनेपाय  
 नस्नानाधानविवाहयज्ञतनयोत्पत्तिप्रतिष्ठासुच । पुंसृत्यावसथप्रवेशनमुताद्यास्या  
 वलोकाग्रमस्त्रीकारसितिपाभिषेकदयिताद्यर्तौचर्नादीमुखं ( यत्तुकासधेनौ )  
 जलाशयप्रतिष्ठायांवृथोत्सर्गादिकर्मसु । वत्सराभ्यंतरेपित्रोर्वृथस्योत्सर्गकर्म  
 णि ॥ वृद्धिश्चाद्धंनकुर्वीत तदन्यत्रसमाचरेदिति ॥ तत्रजलाशयेवृद्धिश्चाद्धस्य  
 नियेधोनतुकर्मागस्येतिकेचित् ॥ अन्येत्वस्यनिर्मूलतामाहुः ( श्राद्धकौमुद्यां  
 निर्णयामृतेचमात्स्ये ) अन्नप्राशेचसीमंतेपुत्रोत्पत्तिनिमित्तके । पुंसवेचनिये  
 केचनवेवेषमप्रवेशने ॥ देववृक्षजलादीनांप्रतिष्ठायांविशेषतः । तीर्थयात्रावृथो

त्सर्गेष्टुष्टिश्चाङ्गप्रकीर्तितम् ॥ इदंचावश्यकम् ॥ वृद्धौनर्पितायेवैपितरोऽगृहमेव  
भिः । तद्धीनमफलं ज्ञेयमासुरोविधिरेवमिति शातातपोक्तेः ॥ अत्राष्टत्रयं  
सवाह ॥ मातृश्राद्धंतुपूर्वस्यात्पितृणां तदनंतरम् । ततोमातामहानांचवृद्धौश्राद्ध  
त्रयंस्मृतम् (तत्कालमाहपृथ्वीचंद्रोदयेगार्ग्यः) मातृश्राद्धंतुपूर्वद्युःकर्माह्नितु  
पैतृकम् । मातामहंचोत्तरेद्युर्वृद्धौश्राद्धत्रयंस्मृतम् (अत्राप्यशक्तौसगव) पृथक्  
दिनेष्टवशक्तप्रचेदेकस्मिन्पूर्ववासरे । श्राद्धत्रयंप्रकुर्वीत वैश्वदेवंतुतांत्रिकमिति  
(वृद्धमनुरपि) अलाभेभिन्नकालानां नांदीश्राद्धत्रयंबुधः । पूर्वद्युर्वैप्रकुर्वीतपूर्वाह्णे  
मातृपूर्वकम् ॥ अत्रमहत्सुपूर्वद्युस्तदहरत्पेठिवितिगृह्यपरिशिष्टाद्व्यवस्थाज्ञेया ॥  
तच्चप्रातरेव ॥ पार्वणांचापराह्णेतुप्रातर्वृद्धिनिमित्तकमितिशातातपोक्तेः ॥ अ  
त्रप्रातःशब्दःसाह्रप्रहरपरः ॥ प्रहरोप्यर्धसंयुक्तः प्रातरित्यभिधीयतइतिगा  
र्ग्योक्तेरितिपृथ्वीचंद्रः ॥ इदंचपुत्रजन्मातिरिक्तविययम् (तदाहात्रिः) पूर्वा  
ह्णेवैभवेष्टुद्विर्विनाजन्मनिमित्तकम् । पुत्रजन्मनिकुर्वीतश्राद्धं तात्कालिकंबुध  
इति ॥ सतदनियतनिमित्तपरम् ॥ नियतेषुनिमित्तेषुप्रातर्वृद्धिनिमित्तकम् । ते  
यामनियतत्वेतुतदानंतर्यमिष्यत इतिलौगांसिरमृतेः ॥ आधानां गानांदीश्राद्धं  
त्वपराह्णम् ॥ आश्राद्धंतुपूर्वाह्णसिद्धान्तेनतुमध्यतः । पार्वणांचापराह्णेतुष्टु  
ष्टिश्चाङ्गंतथाग्निकर्मितिनिर्णयामृतेगालोक्तेः ॥ नांदीमुखेहवयप्रातरुद्धि  
कंत्वपराह्णतइतिविष्णोक्तेश्च ॥ इदंचमातृपितृमातामहादिक्रमेणा त्वदेवैत्यं  
कार्यम् ॥ तत्रमातामहाः सपत्नीकाः वृद्धप्रमातामहप्रमाताहमातामहानांसप  
त्नीकानामितिपृथ्वीचंद्रोदयेगारुडेगद्यरूपेणापाठात् (हेमाद्रौशाखः) नांदीमुखे  
सत्यवसुसंकीर्त्यैवैश्वदेविके (वृद्धपराशरः) नांदीमुखेभ्योदेवेभ्यःप्रदक्षिणाकु  
शासनम् । पितृभ्यस्तन्मुखेभ्यश्चप्रदक्षिणामितिमृतिः (यत्तुवृद्धवशिष्ठः) नां  
दीमुखेविवाहेचप्रपितामहपूर्वकम् । नामसंकीर्त्येद्विद्वानन्यत्रपितृपूर्वकम् (य  
च्चस्मृत्यर्थसारे) वृद्धमुख्यास्तुपितरोवृद्धिश्चाङ्गेषुभुंजतइति (यच्चगारुडे) व्युत्क्र  
मप्रतिपादनंतच्चशाखांतरविययम् ॥ पितृभ्यःपितामहेभ्यःप्रपितामहेभ्यइति  
बह्वृचपरिशिष्टेकात्यायनेनचानुलोम्याम्नातात् ॥ पृथ्वीचंद्रोदयेष्वेवम् ॥ य



तुकेचिद्वृद्धिपदं पित्रादियुप्रयुजतेतन्न॥ अतस्मद्वृत्तशब्दानामरूपाणामगोवि  
 णामा अनाम्नामतिलाद्यैश्च नां दीश्राद्धंतु सव्यवदिति पृथ्वी चंद्रोदये संग्रहोक्तेः॥  
 नच निषेधादेव विधिः कल्प्यत इति वाच्यम् ॥ प्रौष्ठपदीश्राद्धे प्रपितामहात्परेषां  
 वृद्धपित्रादीनां देवतात्वान्नां दीश्राद्धत्वसाम्येनेहापिततप्राप्तौ निषेधात् (गोत्राना  
 मानि निषेधस्तु) शुभार्थी प्रथमां तेन वृद्धौ संकल्पमाचरेदित्युपक्रम्यानस्मद्वृद्धश  
 ष्ढानामित्युक्तेः संकल्पश्राद्धपरः ॥ संपिंडकेतु सर्वभवातीति प्रयोगपारिजातः ॥  
 गोत्रनामभिरासंश्रयपितृभ्योर्ध्वं प्रदापयेदिति छंदोगपरिशिष्टे तद्विधानात् त (यत्तु  
 ब्राह्मे) पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः । त्रयोह्यशुमुखाद्येते पितरः परि  
 कीर्तिताः ॥ तेभ्यः पूर्वतराये च प्रजावंतः सुखीधिताः । ते तु नां दीमुखानां दीसमृद्धि  
 रितिकथ्यत इति (यच्च मार्कंडेयपुराणे) येस्युः पितामहादूर्ध्वं ते तु नां दीमुखाः स्मृ  
 ता इति तज्जीवत् पित्रादित्रिककर्तृकवृद्धिश्राद्धविषयम् ॥ तेन तस्येदमावश्यक  
 म (यत्तु विष्णुः) पितरि पितामये च जीवति नैव कुर्यादिति तद्वर्णादिविषयमिति  
 कल्प्यतरुः ॥ मदनपारिजातेऽप्येवम् (हेमाद्रिस्तु) नां दीमुखानां श्राद्धंतु कन्यारा  
 शिगतेरवौ । पौर्णमास्यांतु कर्तव्यं वराहवचनं यथेति ॥ प्रौष्ठपदीश्राद्धैकवा  
 क्यत्वात्तत्रैव पूर्वेषां देवतात्वमित्याह ॥ अत्र सत्यवसु विश्वे देवा विद्युक्तां प्राग्वत् (य  
 तु शुभातपः) मातुः श्राद्धंतु युग्मैः स्यादद्वैतं प्राङ्मुखैः पृथगिति तद्विन्नप्रयोगमा  
 तृश्राद्धभिन्नश्राद्धद्वये विश्वे देवविकल्पार्थम् (प्रयोगैक्येतु) विश्वे देवविहीनंतु केचि  
 दिच्छंति मानवा इति तद्विन्नप्रयोगमातृश्राद्धभिन्नश्राद्धद्वये विश्वे देवविकल्पार्थ  
 म् ॥ प्रयोगैक्येतु देवनियम इति हेमाद्रिः ॥ एतच्च मातृपजापर्वकं कार्यम् ॥ अह्म  
 त्वामातृयागंतु यः श्राद्धं परिवेषयेत् । तस्य क्रोधतमा विष्टा हिंसा मिच्छंति मातर  
 इति श्रातातपोक्तेः (कौर्मैपि) पुठपैर्धूपैः सनैवेद्यैर्गन्धाद्यैर्भूषणैरपि । पूजयित्वा  
 मातृगणं कुर्याच्छ्राद्धत्रयं बुध इति (छंदोगपरिशिष्टे) कर्मादियुतु सर्वेषु मातरः स  
 गणाधिपाः । पूजनीयाः प्रयत्नेन पूजिताः पूजयंति ताः ॥ प्रतिमासु च शुद्धासु लि  
 खितो वापरादियु ॥ अपि वास्तु पूजेयु नैवेद्यैश्च पृथग्विधैः ॥ कुड्यलग्नां वसोधा  
 रां सप्तधारं धृतेन तु । कारयेत्तपंच धारां वानातिनीचां चोच्छ्रिताम् ॥ आयुष्या

गिचशांत्यर्थजप्त्वातत्रसमाहितः । यदुभयः पितृभ्यस्तदनुश्राद्धदानमुपक्रमेत ॥  
 अत्र सर्वे ष्वितिग्रहणात्प्रहयज्ञतद्धिकारेऽवपिनित्यंश्राद्धम् ॥ नानिश्चातुपितृ न  
 श्राद्धे कर्म किंचित्समाचरेदिति शातातपोक्तेः च ॥ इयंचवसो धारितच्छास्वीया  
 नानिनयता अन्ये प्रांतवनियता ॥ बह्वत्पंवास्वगृह्योक्तमित्युक्तेः करणोत्वभ्युदयः ॥  
 यच्चात्मा तंस्वशाखायामित्युक्तेः ॥ आयुष्याणि आनेभद्रा इत्यादीनि ॥ यदुभय  
 तिमात्रादिविकोपतस्मात्तिसृष्टीचंद्रोदयः ॥ छंदोगानां यदुदेवत्यस्येषां न  
 वदेवत्यमित्याशार्कः ॥ समतुसंतको किलमतानुसारिणां मातृमातामहप्रमाताम  
 हा इतिमात्रासहैवमातामहश्राद्धकरणात् ॥ तद्विषयमिदं यदुभय इति ॥ मातरस्त  
 त्रैवोक्ताः ॥ गौरीपद्माशचीमेधासावित्रीविजयाजया । देवसेनास्वधास्वाहामात  
 रोलोकमातर इति सर्वविशेषां तेन चतुर्दशत्वम् ॥ यदाद्योऽंशेति पाठस्तदा देवतां  
 तरम् (चंद्रिकायां चतुर्विंशतिमते त्वन्या उक्ताः) तिस्रः पज्याः पितुः पक्षेति स्त्रोमा  
 ता महे तथा । इत्येतामातरः प्रोक्ताः पितुर्मातुः स्वसाष्टमी ॥ आसां जीवने प्रत्यक्षपूज  
 नम् ॥ मृतानां त्वस्तपुंजे ष्विति हेमाद्रिः ॥ ब्राह्मरायाद्यास्तथा सप्तदुर्गास्त्रैव गणा  
 धिपा ॥ वृद्ध्यादौ पूजयित्वा तु पश्चान्नां दीमुखान् पितृन् ॥ मातृपूर्वादिपितृन् पूज्य  
 तो मातामहानपि मातामहीस्ततः केचिद्युग्माभोज्या द्विजातय इति ॥ अत्र द्वादशत  
 देवतस्य देशाचाराद्व्यवस्था (ब्राह्मरायाद्याः) ब्राह्मीमाहेश्वरी चैव कौमारी वैष्ण  
 वी तथा । वाराही वतथेन्द्राणी चामंडाः सप्तमातर इत्यपरा र्के उक्ताः ॥ अत्र चोला  
 दीनां यौगपद्ये त्रयोक्ताः (छंदोगपरिशिष्टे) गणाशः क्रियमाणानां मातृभ्यः पूज  
 नं सकृत् । सकृदेव भवेच्छ्राद्धमादौ न पृथगादियु ॥ मातृभ्य इति यस्य चार्थे चतुर्थी ॥  
 गणाशः एकानेकपुत्राणां संस्कारेऽवेकदिने एकदेशकालकर्तव्यं कर्त्तव्यं इत्यर्थः (तथा)  
 असकृद्यानिकर्माणि क्रियेरन् कर्मकारिभिः । प्रतिप्रयोगानैव स्युर्मातरः सगणा  
 धिपाः कर्मवृत्तावपि कुत्रश्राद्धकार्यं क्वचिनेत्युक्तं तत्रैव ॥ आधाने होमयोश्चैव वै  
 श्वदेवे तथैव च । बलिकर्मणि दर्शे च पूर्णमासे तथैव च । नवयज्ञे च यज्ञज्ञावदत्येवं  
 मनीषिणाः ॥ एकमेव भवेच्छ्राद्धमेतैर्युतपृथक्पृथक् ॥ एतेषु प्रतिप्रयोगां चर्तते  
 किंत्वादौ ॥ एतद्विज्ञेयं मया गादौ प्रतिप्रयोगमावर्तते एव ॥ श्राद्धमित्यर्थः ॥ क



चिदादावपि निषेधमाह सख ॥ नाष्टकासु भवेच्छादं न श्राद्धे श्राद्धमिच्छते । न सो  
 ख्यंती जातकर्म प्रोषितागतकर्मसु ॥ विवाहादिः कर्मगणो यउक्तो गर्भाधानं शुश्रुमो  
 यस्य वांते ॥ विवाहादावेकमेवात्र कुर्याच्छादं न दौकर्मणाः कर्मणाः स्यात् । सोख्यं  
 त्याश्रमसन्नप्रसवायाः ॥ सोख्यंती मभ्युक्ष्येत्युक्तं कर्म ॥ कात्यायनोक्तस्य श्राद्धस्य  
 पाकस्य प्राधान्यात्तस्य च ॥ जातश्राद्धेन दद्यात्तु पक्वान्नं ब्राह्मणोऽथ पीति निषेधान्न  
 जातकर्मणां दीश्राद्धमित्याशार्कः ॥ आमात्रेण वा कार्यमित्यपि तेनैवोक्तं (गौ  
 डास्तु) जातकर्मण्येव निषेधः ॥ पुत्रजन्मनिमित्तकं तु कार्यमेव ॥ जन्मन्यथो  
 पनयने इत्युक्तेः ॥ नैमित्तिकमायेव द्ये श्राद्धमभ्युदयात्मकम् । पुत्रजन्मनित्त  
 कार्यं जातकर्मसमं नैरिति मार्कण्डेयपुराणाच्चेत्याहुः ॥ हारलतायां श्राद्धविवेके  
 चैवम् ॥ एतेन जातकर्मणा कालांतरे श्राद्धनिषेधेन पुत्रजन्मदिने इति वाचस्पतिम  
 तंपरास्तम् ॥ अत्र निषेककाले इति वचनात् गर्भाधानेन निषेधः ॥ निषेककाले सोमे  
 च सीमंते च यने तथा । ज्ञेयं पुंसवने श्राद्धं कर्माणां विधिवत्कृतमिति पारस्करः ॥  
 (प्रोषितेति) प्रोष्येत्यगृहानुपतिष्ठते पुत्रं दृष्ट्वा जपतीति विहितं कर्म विवाहादिग  
 र्भाधानां तेषां गृहप्रवेशचतुर्थी कर्मादिकर्मसमूह उक्तः सूत्रकारेण ॥ तत्रापि प्र  
 तिकर्मनेत्यर्थः ॥ अन्येऽपि हलाभियोगादयो अपवादविययास्तत्रैव ज्ञेयाः ॥ तद  
 हाप्रचारान्नोच्यंते (अत्राधिकारिणाः ॥ विष्णुपुराणो) जातस्य जातकर्मादिक्रि  
 याकांडमशेषतः । पिता पुत्रस्य कुर्वीत श्राद्धं चाभ्युदयात्मकम् ॥ अत्र केचित् ॥ जी  
 वत्पितुः साग्नेरेव वृद्धिश्चात्वेधिकारः ॥ न तु निरग्नेः ॥ न जीवत्पितृकः कुर्या  
 द्छात्त्वमग्निमृते द्विजः । येभ्य सर्वा पिता दद्यात्तेभ्यः कुर्वीत साग्निकः ॥ पिता स  
 हेऽप्येवमेव कुर्याज्जीवतिसाग्निकः । साग्निकोऽपि न कुर्वीत जीवति प्रपितामहे इ  
 ति चंद्रिकायां सुसंतुक्तेरित्याहुः ॥ प्रयोगापरिजातेऽप्यनाहिताग्निर्न कुर्यादिति  
 यद्व्याख्यातं तच्च ॥ अनाग्निकोऽपि कुर्वीत जन्मादौ वृत्तिर्कर्मणा । येभ्य सर्वा पि  
 ता दद्यात्तानेवोद्दिश्य तर्पयेदिति हारीतोक्तेः ॥ सौमंतवतु वृत्तिश्चात्त्वभिन्नश्चा  
 त्वपरमित्युक्तं सद्वत्ते ॥ श्राद्धपदं पंडपितृयज्ञपरमिति पृथ्वी चंद्रोदयः ॥  
 निर्यायसूते तु हारीतीयेनाग्निर्कोनाहिताग्निरभिप्रेतः ॥ पूर्ववचने तु साग्निकः श्रौ



तारिणः स्मार्त्तारिणश्चोच्यते ॥ तेनोभयाग्निहीनस्यनेत्युक्तं तन्न ॥ पूर्वोक्तदिशा  
 गतिसम्भवेनारिपदस्य स्मार्त्तारिणपरत्वे मानाभावात् ॥ बह्व्यमारागित्या नित्य  
 संयोगविरोधात् ॥ पितरो जनकस्येज्या यावद्व्रतमनाहितम् ॥ समाहितव्रतः प  
 ष्चात्स्वान्यजेत पितामहमिति पृथ्वी चन्द्रोदये यमवचो विरोधाच्च (अपरा  
 क्येपि) समावर्तने ब्रह्मचारी स्वयमेव नान्येष्ट्याङ्कुर्यादित्याहुः ॥ अतः पूर्वमेव सा  
 धु ॥ बोपदेवोप्येवमाह ॥ यत्तुमतं जीवति प्रतुः पञ्चमकर्मोपेतवृद्धिश्चासंहारी  
 तीये (जन्मादावित्यादिशब्देन तत्प्राप्तावधि) सङ्ग्राहे पुत्रजनने पित्र्येष्ट्यां सौमि  
 के मखे । तीर्थवाह्यरात्र्यायाते यदैते जीवतः पितुरिति ॥ सौमिर्प्राग्निष्टे उवाहस  
 वतस्योपसंहारात् ॥ सर्वयवतुसंस्कारादिपदं तद्व्याप्युवाहमिदं परमेवोक्तं तन्न ॥ उवा  
 हपदस्य स्वविवाहपरत्वे स्यापि सम्भवात् ॥ पञ्चविवाहपरत्वे मानाभावात् ॥ ना  
 मकर्मणिवाल्यानां चडकिमिदिकेतथेत्यादिभिर्नित्यं याङ्स्यचौल्लङ्घ्यगत्वावगातो  
 नित्या नित्यसंयोगविरोधाच्च ॥ अतो जन्मादाविति सर्वसंस्कारसंग्रहः (तथा  
 कात्यायनः) स्वपितृभ्यः पितादद्यात्सुतसंस्कारकर्मसु ॥ पिण्डापोडाहमात्तैवां  
 तस्याभावे तु तत्रासीत् ॥ सुतोषां चौल्लङ्घिसंस्कारेण पिता स्वपितृभ्यः पिण्डान्  
 याङ्गपिण्डादौ शहरण्यैवामिति दर्शनादौहृत्वा विवोहपर्यंतं दद्यात् ॥ विवोह  
 ष्च प्रथमः ॥ नादीयाङ्गमपि तः कुर्व्यादौघे पाणिग्रहे च ॥ अतः कर्म्मप्रकुर्वीत  
 स्वयमेव तु नान्द्रिकमिति स्मृतेः (तस्य पितुरभावे तत्कमात्) असंस्कृतास्तु संस्का  
 र्यां प्राहभिः पूर्वसंस्कृतैरिति ॥ यः कर्त्तृकमस्तेन क्रमेण ज्येष्ठप्राप्तारिर्दद्यादिति  
 चन्द्रिकादयः ॥ हेमाद्रिस्तु तस्य पितुरभावेऽपि पितृव्यमातुलादिः संस्कृत्य तस्मिन्  
 त्रकमात्संस्कार्योपि त्रकमादद्यात्तु स्वपितृभ्य इति न्याचख्यौ ॥ समावर्तनस्यापि  
 विवाहप्राप्तौ सुतसंस्कारत्वात् ॥ पितैव नादीयाङ्गं कुर्यात् ॥ तदभावे ज्येष्ठप्रातो  
 दिभिः ॥ तदभावे स्वयमेव कुर्यात् ॥ उपनयनेन कर्म्मकारस्य जातत्वात् ॥ अथ  
 माद्यविवाहेऽपि पृथ्वी चन्द्रोदये चन्द्रिकादयः ॥ सर्वचरत्त्रेयवसः ॥ यदा तु पि  
 तरिसंन्यस्ते प्रोषिते प्रतिते वा प्रमथिते तत्पुत्रसंन्यः संस्कृत्योत्तदा संस्कार्योपि तुः पि  
 त्वादिभ्यो दद्यात् ॥ पितरो जनकस्येज्या यावद्व्रतमनाहितम् । समाहितव्रतः पश्चा



त्त्वान्यजेतापितामहानिति पृथ्वीचन्द्रोदयेयमोक्तेः (जीवत्पितृकस्याविशेषमा  
 हकात्यायनः) वृद्धौतीर्थे च संन्यस्ते ताते च पतिते सति ॥ येभ्यः सर्वपितादद्यात्ते  
 भ्यो दद्यात्स्वयं सुत इति (अनुबहुवचनं परिशिष्टे) जीवत्पितासुतसंस्कारेषु मातृ  
 मातामहयोः कुर्यात् ॥ तस्यां जीवत्यां मातामहस्यैवेति तत्तच्छास्त्रवीथानामेवेति  
 दिक् ॥ स्मृतितत्त्वादि सौम्येयुतुवीर्यमातृकः प्रतामहादिभ्यो वृद्धौ दद्यात् ॥  
 जीवन्तमपि देद्यादप्येतायाचोदके विज्ञा इति कात्यायनोक्तेः ॥ जीवेतस्मिं सुताः  
 कुर्युः प्रतामह्या सहैव तु तस्यां चैव तु जीवत्यां तस्यां च प्रचेति निश्चय इति हारी  
 तोक्तेः चेत्युक्तम् ॥ तस्मिन् भर्तृरिहा सितात्यास्तु पर्वतसमिप्राडी करणादि  
 विप्रयत्नात् ॥ जीवेत्युपविष्टाद्यस्तं व्रतं प्रतिस्थजेदिति धावत्तासद्वर्गस्थलोपस  
 वेत्याहुः (अनुबहुवचनं प्रास्कारः) ॥ त्रिवेककाले सोमे च ग्रीसन्तो ज्ञयने तथा ॥  
 जेषां पुंसवने प्राज्ञं कर्मांगं द्विजं च तदिति ॥ जेषां भावानां कौकर्मां जातकर्मो वासु  
 कंतु वृद्धिप्राज्ञं पृथगेव विप्रिनिदित्युक्तेः (सौड निबन्धे मात्स्ये) ॥ अत्र प्रशिचसी  
 सन्ते पुत्रोत्पत्तिर्निमित्तके पुंसवे च विप्रे च नववे प्रम प्रवेशने ॥ (वेदवतजला  
 सीतां प्रतिष्ठाप्य तथैव च तीर्थप्राज्ञं च मात्स्ये) वृद्धिप्राज्ञं प्रकीर्तितम् ॥ अत्र भूत  
 निमित्तानां च द्विजं ॥ भाविनि सित्ताम्रमात्स्यम् ॥ वृद्धिप्राज्ञं च सौम्येयुतुवीर्यमाहः ॥  
 यदिति सौम्येयुतुवीर्यमाहः ॥ अन्येतु त्रिवेकादौ कर्मांगं वृद्धिप्राज्ञं च सौम्येयुतुवीर्यमाहः ॥  
 प्राज्ञं सौम्येयुतुवीर्यमाहः ॥ (अत्रैतिकर्तव्यता) ॥ पृथ्वीचन्द्रोदये वृद्धपरां प्रारः ॥ माल  
 त्याः प्राज्ञपरायाः सत्त्विकाकुञ्जयेऽपि ॥ केतकाः पातलोऽथवा देयाः मालानलो  
 हिताः ॥ प्राज्ञे माला नियोवस्यायमपवादः (तथा) सुवेद्यमयौ सवसांस्तारैस्त  
 यातारैः ॥ कुंकुमाद्यनुलिप्तं रौध्रं द्यन्तुकाहं शोः सह ॥ सौम्येयुतुवीर्यमाहः ॥  
 गीतवृत्त्यदिहरिताः (हेमद्रौ प्रह्लादे) कुप्रास्थाने च दुर्वाः सुगन्धालस्याभि  
 वृक्षये ॥ कुप्रा अपि वृक्षन्ते (कुन्देनापरिशिष्टे) ॥ प्रातरासं प्रिताव विप्रान्युत्सा  
 तुभयवस्तथा ॥ उभयत्र देवोऽपि ज्ञेयः ॥ चैव देवे द्वौ विप्रौ पित्रादीनामेकैकस्य द्वौ  
 द्वाविति विंशतिः ॥ त्रिकेनाह विप्रस्यै विप्रः (अत्र विप्रालसिस्त्रियोऽपि भोज्या  
 इत्याहाराकर्तव्यवर्गः) मातृप्राज्ञे तु विप्राणां मलाभे पूजयेदपि ॥ प्रतिपुत्रान्वि







जातेसंग्रहे । शुभार्थीप्रथमान्तेन वृद्धीसांकलपमाचरेत् ॥ नयसुखायदिवाकुर्या  
 न्महादोयोभिजायते । नासगोत्रादिनियेषोप्यवैवतुसपिशडकथाद्धेइतिसगवा ॥  
 अत्रायंक्रमः ॥ नान्दीयाद्धेदैवेसगाः क्रियतामितिद्वीयुगपन्निमंयत्रौतथेति वि  
 प्राभ्यांयुगपदुक्तेप्राप्नुतांभवन्तौप्राप्नुवावइतिवैश्वदेववत् पित्र्येचद्विवचनान्तेन  
 विप्रद्वयेप्रयोसंकुर्यात् (आहिताग्निस्तुहेमाद्रीवाहो) योपनीतुविद्यमानेपि वृद्धौ  
 पिराडाचनिर्वपेत् । पतन्तिपितरस्तस्यनरकेसचप्रच्यते (बहुवृपरिशिष्टे) द्वौद  
 भौपविषेपविश्रागिचत्वारि ॥ शन्नोदेवीत्यनुमंत्रितासुयवानावपति ॥ यवोसि  
 सोमदेवत्यो सोमवेदेवनिर्मितः । प्रक्षवद्विः प्रक्षः पुष्ट्या नान्दीमुखानपितृ मिमा  
 लोकाचंप्रीयायाहिमः स्वाहेतिस्वाहाद्या इतिपृच्छति ॥ विश्वेदेवाइदंवाअर्घ्यं  
 नान्दीमुखाः पितरइतियथास्त्रिंशसर्ग्यदानंगन्धादिदानंदिर्दिः ॥ पासाँहोमोअन  
 येकव्यवाइनायस्वाहा सोमायपितृमतेस्वाहेत्यतोदेवाअवन्तुनोइत्यंगुष्ठग्रहणौ ॥  
 पावसाँहीः प्रावसीरैस्प्रतिरथंच आवयेन्मधवातावृत्तच स्थानेउपास्मैगायतेतिपं  
 चमधुमतीः आवयेदसन्नमीनंदन्तेतिच यक्षोभुक्तयेयोगौकैकस्यद्वौद्वौपिराडौदद्या  
 दिति (चन्द्रकायांबृद्धवशिष्टः) पितृप्रप्नेतुसम्पन्नं देवेरुचितमित्यापि । दधि  
 कर्कषुमिश्राञ्च पिराडाः कार्यायथाक्रमम् (कात्यायनः) त्वमयुवाजिनमिति  
 विप्राञ्चविसर्जयेत् । नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्तामित्यस्यस्थानेस्वधावाचायि  
 यस्त्यस्थस्थानेनांवीमुखानपितृ नवाचयिष्येइति ॥ नस्वधांप्रयुंजीतेति ॥ अत्र  
 साग्निरनाग्निर्वाआदौवैश्वदेवंकुर्यात् ॥ आदौवृद्धीसंधेचांतिमध्येआद्धेतुपार्वणो ॥  
 एकोद्विष्टेतिवृत्तेतुवैश्वदेवोविधीयत इत्याशांकेषांस्वयनपरिशिष्टात् (हेमाद्रीतु)  
 शेषमन्नमनुजाप्यवैश्वदेवक्रियान्ततः । आद्धाहिआद्धशेषेणा वैश्वदेवंसमाचरेदि  
 ति चतुर्विंशतिमतान्नान्दीयाद्धेप्यन्तेवैश्वदेवउक्तः ॥ बहुवृचानामपिवृत्यालो  
 चनाज्ञथैव ॥ पूर्वोक्तान्तुयेषांपरिशिष्टंतिद्वयमन्यविययवाज्ञेयम् ॥ अत्रप्राडां  
 गतर्पणानेत्युक्तंप्राक् ॥

इतिनिर्यायसिन्धोवृद्धिआहुम्

( अथजीवतपितृकशास्त्रम् ) तत्रानेकपक्षादुच्यते ॥ जीवतंपितरंभोजयित्वाप  
रयोःश्राद्धंकुर्यादित्येकः ॥ होमांतमेवकुर्यादित्यन्यः ॥ होमांतःपितृयज्ञःस्या  
ज्जीवेपितरिजानतः । पितरंभोजयित्वावापिंडानिपूरायात्परावितित्यज्ञपार्श्वो  
क्तेः ॥ यदिजीवत्पितृतानदद्यादाहोमात्कृत्वाविरमेदित्यापस्तंबोक्तेश्च ॥ जीव  
तांपिंडानग्नौहुत्वापरेभ्योदेयमित्यपरः ॥ जुहुयाज्जीवेभ्य इत्याचलायनोक्तेः  
जीवतामजीवतांचपिंडदानमितीतरः ॥ जीवतामजीवतांवादेयमेवेतिहरराय  
केतुरित्तिनिगमात् ॥ तस्माज्जीवतपिताकुर्यात्तद्वाभ्यामेवनसंशयइतिभविष्योक्ते  
र्वाभ्यामेवेत्यन्यः ॥ एतेपक्षाःकलौनिघिद्धाः ॥ प्रत्यक्षमर्चनंश्राद्धेनिघिदंसनुर  
ब्रवीत् । पिंडनिर्वपणांचापिसहापातकसंसितमितिपृथ्वीचन्द्रोदयेभविष्योक्तेः  
चंद्रिकाप्येवं तस्मात्पितरिजीवतिश्राद्धानारंभएवेत्येकःपक्षः ॥ सपितुःपितृक  
त्येषुअधिकारो नविद्यतइतिकात्यायनोक्तेः ॥ जीवेपितरिवैपुत्रःश्राद्धकालंवि  
वर्जयेदितिहारोतीक्तेश्च ॥ पितुःपित्रादिभ्योदद्यादितिसिद्धांतः प्रियमाणोतु  
पितरिपूर्वेषामेवनिर्वपेदितिमनूक्तेः ॥ पितुःपितृभ्योवादद्यात्सपितेत्यपराश्रु  
तिरित्तिकात्यायनोक्तेश्च ॥ अयंबहुसंमतःपक्षः ॥ अन्येशाखाभेदेनज्ञेयाः ॥  
एवंजीवन्मातामहेनाप्यहेनकार्यम् ॥ मातामहानामप्येवंश्राद्धंकुर्याद्विचक्षणाः  
संत्रोहेनयथाग्रायंशे श्रीणांसंत्रवर्जितमितिब्रिष्याक्तेः ॥ एवंमात्रादिकस्यापितथा  
मातामहादिकेइतिपृथ्वीचन्द्रोदयेऽग्निपुराणाच्च ॥ पितरिजीवतितुस्वमातरिमृ  
ताग्रामपिपितुरेवमातृमातामहयोःकुर्यात् ॥ येभ्यएवपितादद्यादितिवक्ष्यमा  
णावचनादितिपितामहचरणाः ॥ मदनरत्नेतुजीवत्पितास्वमानामहयोर्दद्यादि  
त्युक्तं ॥ कालादर्शप्येवम् ॥ मृतेतुपितरिजीवन्मातृकःपितामह्यादिभ्योवृद्धौद  
द्यादितिस्मृतितत्त्वादिगौडग्रन्थाः ॥ ( दासिणात्यास्तु ) पितृवर्गमातृवर्गेतथा  
मातामहस्यच । जीवेत्तु यदिवर्गाद्यस्तंवर्गतुपरित्यजेदितिवचनात्तद्वर्गत्यागसवे  
त्याहुः ॥ एवंपतितसंन्यस्तेपितृकादेरपिज्ञेयं ॥ वृद्धौतीर्थेचसंन्यस्तेतातेचपति  
तेमिति । येभ्यएवपितादद्यात्तेभ्योदद्यात्स्वयंसुतइतियदुत्रिंशन्मतात् ॥ संन्यस्ते  
जीवतीत्यर्थः मृतेतुसंन्यस्तेतदाद्येएवदेयम् ॥ मृतेपिपरेभ्यएवेतिगौडाः ( का



त्यायनोपि ) ब्राह्मणादिहतेतातेप्रतितेसंगवर्जिते । व्युत्क्रमाचमतेदेयंयेभ्यस्य  
 ददात्यसौ ॥ अयंचसन्यस्तपित्रादेरपिशेषात्सर्वश्राद्धेधिकारः ॥ सतत्त्रिदंडिप  
 रस एकादशाहपार्वणावार्धिकाद्यपितस्यैव ॥ अहन्येकादशेप्राप्तेपार्वणांतुविधीय  
 ते । इत्युक्ता ॥ त्रिदंडग्रहणादेवप्रेतत्त्वंनैवजायतेइतुशनसाविशेषोक्तेः ॥ ब्राह्म  
 णादिहतेइत्यादिनिषेधस्त्वेकदंडादिपरः ॥ अतःपरमहंसानांवार्धिकादिक  
 मपिनकार्यमितिशूलपाणिश्राद्धतत्त्वादयोगौडग्रन्थाः इदमेवतुयुक्तं ॥ ( यत्तुहेमा  
 द्रौकौंडिरायः ) दर्शश्राद्धंगथाश्राद्धंश्राद्धंचापरपक्षिकम् । नजीवतुपितृकःकुर्या  
 त्तिलैस्तर्पणमेवचोततत्सन्यस्तपित्राद्यतिरिक्तविषयम् ( मैत्रायणीयपरिशिष्टे )  
 उद्वाहेपुत्रजननेपित्र्यष्ट्यांसौमिकेसखे । तीर्थेब्राह्मणाश्रायातेयडेतेजीवतः पि  
 तुः ( तत्रैव ) महानदीयुसर्वासुतीर्थेयुचगयामृते । जीवतुपितापिकुर्वीतश्राद्धं  
 पार्वणाधर्मवित् ॥ गयामृतेइतिमातृव्यतिरिक्तविषयम् ॥ अन्वष्टक्यं गयाप्राप्तौ  
 सत्यांयच्चमृतेहनि । मातुःश्रात्वंसुतःकुर्यात्पितर्यपिचजीवतीतितत्रैवोक्तेः ॥  
 गयाप्राप्तौप्रासंगिक्याम् ॥ गयांप्रसंगतो गत्वामातुः श्राद्धंसमाचरेदितिवचनात्  
 तेनमृतमातृको गयायांतत्पार्वणासांवकुर्वात् । तज्जीवनेतुतीर्थश्राद्धमपिनेतिका  
 लादर्शस्मृतिदर्पणादयः ॥ अन्येतु गत्वाश्राद्धं नेतिनिषेधार्थः ॥ सामान्यतःप्राप्तं  
 तीर्थश्राद्धंभवत्येवगयायामित्याहुः ॥ यदातुपितुःप्रीतिनिधित्वेनगयांयातित  
 दायजमानस्यपितृपितामहप्रपितामहाइत्येवंश्राद्धम् ॥ तत्रमातुःपितृपत्नीत्वेनै  
 कोद्विष्टंकृत्वामातृत्वेनपुनःपार्वणांकुर्यादितित्रिस्थलीसेतौ ॥ तच्चफलशुवि  
 ष्णुपदाक्षय्यवटेष्ट्वेवेतिकेचित् ॥ आद्यांतेसवेत्यन्ये ॥ मध्यमांतेइत्यपरे ॥ संकोचे  
 हेत्वभावात्तत्रत्यसर्वश्राद्धानिमातुःकार्याणीत्युक्तंप्रतिभाति ( यत्तुमदनपारि  
 जाते ) नजीवतुपितृकःकुर्याच्छ्राद्धमग्निमृतेद्विजः । देभ्यस्यपितादद्यात्तेभ्यः  
 कुर्वीतसाग्निकइतिमुसंतक्तेः ॥ साग्नेरेवजीवतुपितृकस्यतीर्थदिश्राद्धमुक्तं ॥  
 साग्नेरपिमैत्रायणीयशाखीयस्यैवनान्प्रेयसम् ॥ यडेतेजीवतःपितुरितितत्परि  
 शिष्टेएवोक्तेरितिरत्नावलीदिवोदासाद्यास्तदयुक्तम् सौमंतवंपिंडपितृयज्ञवि  
 ययंसंन्यस्तपित्राद्यतिरिक्तविषयंवेतिपृष्ट्वीचंद्रोदयोक्तेः ॥ वृद्धौतीर्थेचेत्यादेः

साधारण्येनास्यापितथात्वाच्च ॥ तथानिरग्नेरपिनांदीयाद्वमुक्तं प्राक् ॥ एवं  
पितामहजीवनेपिज्ञेयम् ॥ विशेषः पितृकृतं जीवतपितृकनिर्णयेज्ञेयः ॥ अथपिता  
महेजीवतिमृतेचपितरियद्यापिपितामहोवात्तच्छ्रद्धेभुंजीतेत्यब्रवीन्मनुरितिमनु-  
नाजीवतःपितामहस्यभोजनमुक्तम् ॥ तथापिप्रत्यक्षार्चनस्यपूर्वनिश्चिद्धत्वात्पिता  
महविहायपितृप्रपितामहवृद्धप्रपितामहेभ्योदेयम् । पितायस्यतुवृत्तः स्याज्जी  
वेचचापिपितामहः । पितुःसनामसंकीर्त्यकीर्तयेत्प्रपितामहमितिमनुक्तेः ॥ अ  
यमेवसर्वसमतःपक्षः ( यत्तु हृंदोरापरिशिष्टे ) पितामहेधियमागोपितुःप्रेतस्य  
निर्वपेत् ॥ पितुस्तस्यचवृत्तस्यजीवेचचेत्प्रपितामहइति एकपुस्त्यं द्विपुस्त्यं वा पा  
र्वणामाहततीर्थपितृयज्ञपरम् ॥ वृद्धौपूर्वाक्तमेव ॥ एवंपूर्वयोर्मृतयोः प्रपिताम  
हेजीवतिपितृमात्रेमृतेपरयोर्जीवतोप्रचवृद्धप्रपितामहादिभ्योज्ञेयं ॥ जीवन्तम  
तिदद्याद्वाप्रेतायान्नोदकेद्विजइतिकार्यायनोक्तेश्च ( सतत्सर्वमनसिक्त्वाऽह  
हेमाद्रौविष्णुः ) पितरिजीवतियाथाङ्कुर्याद्येथापिताकुर्यात्तिथापितरिपितामहे  
चजीवतियेथापितामहः पितरिपितामहेप्रपितामहेचजीवतिनैवकुर्यात् । यस्य  
पिताप्रेतः स्यात्सपित्रेपिंडनिधायपितामहात् पराभ्यांदाभ्यांदद्यात् ॥ यस्य  
पिताप्रपितामहश्च प्रेतौस्यातांसपित्रेपिंडनिधायपितामहात् पराभ्यांदद्यात्  
यस्यपितामहःप्रेतः स्यात्सतरसैपिंडनिधायप्रपितामहात्पराभ्यांदद्यात् ॥ यस्यपि  
तापितामहश्चप्रेतौस्यातांसताभ्यां पिराडौदत्वा पितामहप्रपितामहायदद्यात् ॥  
मातामहानासप्येवं आङ्कुर्याद्विचक्षणाः । संश्रौहेनयथान्यायं श्रेयारांमन्त्रव  
र्जितमिति ॥ अत्रापितृवन्मातामहेजीवति तत्पित्रादिभ्यःयथातत्रत्रियुजीवत्सुनै  
वकुर्यात्तथात्रापीत्यादिसर्वमतिदेश्यम् ॥ एवंमातृजीवनेपीतिशलपाणिशाला  
दर्शा ( तन्न ) येभ्यएवेत्यादौयच्छ्रद्धादेर्व्यक्तिविशेषवाचित्वेनैतदपिप्रसंगादि  
तिदिक् । उत्तरार्धव्याख्यातंप्राक् ॥ यत्त्ववविज्ञानेश्वरेणोक्तम् ॥ पित्रेपिंडनिधा  
येतिपितुरेकोद्विष्टविधिनाथाङ्कृत्वा प्रपितामहादिभ्यःपार्वणांकुर्यात् ॥ तद्व्यु  
त्क्रममृतसपिंडीकरणाभावपक्षेसपिंडीकरणास्थानापन्नंज्ञेयं ॥ व्युत्क्रमात्तु  
प्रसीतानानैवकार्यासपिंडतेतिवचनात् ॥ दशादौतुपितुरेकोद्विष्टमेवकार्यम् ॥



न जीवन्तमतिददातीति श्रुतेः ॥ जीवतपितामहो यस्य पिता चांतरितो भवेत् ॥ पितुरे  
कस्य दातव्यमेव साहुर्मनीषिणा इति यज्ञपापपूर्वाक्तेः ॥ पितामहे जीवति वै पितरि  
एव समापयेदिति हारो लोकेषु च ( शिष्टास्तु ) व्युत्क्रमात् प्रसीतानां नैव कार्यासि  
पिंडतायादिमातायादिपिताभर्तानैव विधिः स्मृत इति ॥ माधवीयेस्कांदोक्ते व्युत्क्र  
ममृतसपिंडीकरणाभावः पितृव्यादिविषय इत्याहुः ॥ एष विधिर्निषेधेरूपः ॥ त्रि  
युजीवत्सु विष्णुराह ॥ त्रियुजीवत्सु नैव कुर्यादिति तद्वर्णादिविषय ॥ नान्दी आह  
तु परेभ्यस्त्रिभ्यो भवत्येवेति कल्पतरुः ( पृथ्वी चन्द्रोदयस्तु ) दद्यात्त्रिभ्यः परेभ्य  
स्तु जीवे चेत त्रितयं यदीति मनुक्तेः ॥ सर्वत्र विकल्पः ॥ सच देशाचारा इदं न्यवतिष्ठत  
इत्याहुः ॥ सुदर्शनभाटये तु मांसिक आहं जीवतपित्रादिना व्युत्क्रममृतपित्रादिना च  
कार्यमेवेत्युक्तं ( मदनरत्ने क्रतुः ) असृकादियुसंक्रांतौ मन्वादियुयुगादियु । चंद्र  
सूर्यग्रहेपातेस्वेच्छयापउग्रयोगतः ॥ जीवतपितानैव कुर्याच्छ्राद्धं काम्यं तथादिल  
म् ॥ अन्ये विशेषाः श्रीपितृहृतजीवतपितृकनिर्णये भट्टकृतत्रिस्थलीसेतौ च ज्ञेयाः

इति निर्णयसिन्धौ जीवत्पितृकादियाहुः ॥

( अथ विभक्ताविभक्तनिर्णयः ॥ पृथ्वी चन्द्रोदये मरीचिः ) बहवः सूर्यदापु  
त्राः पितुरेकववासिनः । सर्वे यांतुमंतं कृत्वा ज्येष्ठे नैव तु यतकृतं ॥ द्रव्येणाचा विभक्ते  
न सर्वे रेव कृतं भवेत् ॥ ज्येष्ठस्य कर्तृत्वेऽपि सर्वे फलभागिन इत्यर्थः ॥ तेन ये ब्रह्मचर्या  
दिनियमास्ते फलितसंस्कारत्वात् सर्वे कार्याः ॥ एवं संसृष्टिनामपितृव्यत्वात् ( मि  
ताक्षरायानारदः ) भ्रातृणां विभक्तानामेको धर्मः प्रवर्तते । विभागेऽति धर्मोऽपि भ  
वेत्तेषां पृथक् पृथक् ( वृहस्पतिरपि ) एकपाकेन वसतां पितृदेवद्विजार्चनं । स  
कं भवेद्विभक्तानां तदेव स्याद्गृहे गृहे ॥ अथ यद्यप्यविशेषश्रवणात् ब्रह्मयज्ञसंध्या  
दिष्वप्यविभक्तानां पृथङ्निषेधः प्राप्नोति तथापि द्रव्यं साध्य आह वै श्रदेवादिष्वेव  
सः ॥ द्रव्यस्यानेकस्वामिकत्वेनैकस्य व्ययेनाधिकारात् ॥ यानितु द्रव्यासाध्यानि  
संब्रजपोपवाससंध्या ब्रह्मयज्ञपारायणादीनि नित्यनैमित्तिककाम्यानि तेऽप्युपयुगे  
वाधिकारः ॥ द्रव्यव्यघ्राभावेऽनुमत्यनपेक्षणात् ॥ द्रव्येणावा विभक्ते नैत्यस्वाविव्य  
यत्वात् ॥ पृथगाप्येकपाकानां ब्रह्मयज्ञो द्विजातिनाम् अग्निहोत्रं सुरार्चा च संध्या

नित्यं भवेत्तथेति प्रयोगपारिजाते अश्वलायनस्मृतेश्च ॥ अग्निहोत्रशब्दो ग्निसाध्य  
श्रौतस्मार्तनित्यकर्मपरः तेष्ठव्यन्यानुमत्वेवाधिकारेणान्यायसाम्यात् ॥ पितृश्रा  
द्धादियुतुल्यफलेषु नित्येष्ठवनुसर्तिविनाप्येकस्याधिकारः ॥ सकोपि स्यावरेकु  
र्यादानाध्ययनविक्रयस्य । आपत्काले कुटुम्बार्थधर्माथच विशेषत इति वचनात् ॥  
धर्मार्थेऽवश्यकर्तव्ये पितृश्राद्धादविति विज्ञानेश्वरः ॥ केचित्त्वविभक्तानामपि  
पृथक्पाकत्वे देशान्तरे च दार्शिकादिदकयोः पृथक्त्वमाहुः ॥ भ्रातृणामविभक्ता  
नां पृथक्पाको भवेद्यदि । वैश्वदेवादिकं श्राद्धं द्रुयुस्ते वै पृथक्पृथगिति हारीतो  
क्तेः ॥ अविभक्तेन पुत्रेण पितृमेधोमृताहनि ॥ देशान्तरे पृथक्कार्यो दर्शश्राद्धन्त  
र्धैवचेति यमोक्तेऽचेति तत्र मूलं चिंत्यम् ॥ तदयमर्थः ॥ यंचमहायज्ञमध्ये देवभूतपि  
तृमनुष्ययज्ञानन्यानुमत्याज्येष्वप्यवकुर्वीत ॥ होमाग्रदानरहितं न भोक्तव्यं कदा  
चन ॥ अविभक्तेषु संस्पृष्टेष्ठवेकेनापि कृतं कृतमिति व्यासोक्तेः ॥ यस्य तु ज्येष्ठे  
नाकृते वैश्वदेवेऽर्च्येऽर्च्ये तेन तूष्णीमग्नौ किंचित्सिप्त्वा भोक्तव्यम् ॥ यस्य त्वे  
यामग्रतो न संसिद्धोत्संनियुक्तमग्नौ कृत्वा ग्रंथाह्मणा यदत्वाभुंजीतेत्यविभक्ताधि  
कारे पृथ्वीचन्द्रोदये गोभिलोक्तेः ॥ आश्वलायनस्तु पाकपार्थक्ये पृथक्त्वं तदे  
कत्वेऽप्युक्तमाह ॥ वसतामेकपाकेन विभक्तानामपि प्रभुः । एकस्तु चतुरो  
यज्ञान् कुर्याद्वायज्यपूर्वकान् ॥ अविभक्ताविभक्तावापृथक्पाकाद्विजातयः ॥  
कुर्युः पृथक्पृथग्यज्ञान् भोजनात् प्राग्दिने दिन इति ॥ ब्रह्मयज्ञसंध्यास्नानतर्पणा  
दिनूक्तहेतोः पृथगेव ॥ देवपजातकवचनद्वयादेकत्र पृथग्वा ॥ दर्शग्रहणा  
श्राद्धादित्वेकस्यैव ॥ तीर्थश्राद्धाद्यपि युगपत्सर्वे ग्रामविभक्तानां प्राप्तावेकस्य  
भेदेन प्राप्तो भिन्नं ॥ गयाश्राद्धेऽप्येवं ॥ सष्टद्वयावहवः एवाः शीलवन्तो गुणान्वि  
ताः । तेषां तु समवेत्तानां यद्येकोपि गयां व्रजेत् ॥ तारितास्मो वयं तेन सयाति पर  
मां गतिमिति हेमाद्रौ कौर्मोक्तेः ॥ काम्येऽपि दानहोमादावन्यानुमत्यैवाधिका  
रः ॥ इव्यासाभ्यजपादौ तां विनापि (अपरार्कपैठीनसिः) विभक्तैस्तु पृथक्कार्यं  
प्रति संवत्सरादिकम् । एकेनैवाविभक्तेषु कृते सर्वैस्तु तत्कृतम् ॥ सांवत्सरात्प  
र्वीणिमासिकान्येकत्रैव (तदाह लघुहारीतः) सर्पिंडीकरणांतानि यानि श्राद्धा



निषोडश । पृथङ् नैव सुताः कुर्युः पृथक् द्रव्या अपि क्वचित् ॥ सपिंडनं सासिकोप  
लक्षणम् ॥ अर्वाकसंवत्सराज्येयः श्राद्धं कुर्यात्समेत्यतु । ऊर्ध्वसपिंडीकरणात्स  
र्वैकुर्युः पृथक् पृथगिति व्यासोक्तेः (उशनाः) नवश्राद्धसपिंडत्वं श्राद्धान्यपि च  
षोडश । एकेनैव तु कार्याणि सविभक्तधने ऽर्वापि ॥ सधात्रयोदशी श्राद्धं त्वविभ  
क्तानामपि पृथगित्युक्तं प्राक् (यत्तु वृद्धवशिष्ठः) सासिकं च तृयोत्सर्गसपिंडीक  
रणांतथा । ज्येष्ठे नैव प्रकर्तव्यमादिदं प्रथमतः येति तन्निर्मूलम् ॥ बह्वृचपरि  
शिष्टेन वश्राद्धं सह दद्युः ॥ अथ तीर्थश्राद्धम् ॥ तत्र यद्यप्यस्मत्पितामहकृतविस्थ  
लीसेतुरेव जागर्तितथापि किंचिदुच्यते (तत्र यात्रायां) सहाग्निर्वासपत्नीकोग  
च्छेतीर्थानि संयतः । प्रायश्चित्तीव्रतीर्थपत्नीविरहितोऽपि वा ॥ यज्ञेऽव न धि  
कारी वायश्च वामं वसाधक इति कौर्मिदिवचनात्सार्गनेः सपत्नीकस्यैवाधिकारः  
(भारते) ब्राह्मणाः क्षत्रियोः वैश्यः शूद्रो बाराजस्तम । तवियोनिं व्रजं त्येते स्नाना  
तीर्थे महात्मनः (स्कांदे विधवाधर्मेषु) स्नानं दानं तीर्थयात्रां विष्णुनामग्रहं मुहुः ।  
एतत्पुत्राद्यनुमत्यैव ॥ सधवायाः पत्या सहैवेति प्रागुक्तम् (काशीखंडे) सातुः पि  
तुः सेतुमनास्तथास्थितस्तु कुर्यात्स्वल्पीर्थयात्राम् (तद्विधिः स्कांदे) तीर्थया  
त्रां चिकुर्युः प्राग्विधायां पोषणांगृहे । गणेशं च पितृन् च प्राणसाधून् शक्त्या प्रपू  
ज्य च ॥ कृतपारणाकोत्सृष्टो गच्छेन्नियमधृक् पुनः । आगत्याभ्यर्च्य च पितृन् य  
थोक्तफलभागभवेत् ॥ उपवासात् प्रागमुंडनं च कार्यम् ॥ प्रयागे तीर्थयात्रायां पितृ  
माह वियोगतः । कचानां वपनं कुर्याद्यथानविकचो भवेदिति विष्णुः ॥ प्राय  
श्चित्तार्थयात्रायां गयायां चेतदित्येके ( केचित्तु हेमाद्रौ भारते ) केशप्रमथुन  
खादीनां वपनं च शस्यते । अतो न कार्यं वपनं गयाश्राद्धार्थिना सदा । ये भारते  
स्मिन् अपि त्वकर्म तत्पराः संधार्य केशान्तिभक्तिभाविताः । ऋणाक्षयार्थं पितृतीर्थ  
मागतास्ते ग्रामां संक्षयमेव्यतिष्ठु वमिति निषेधात् ॥ गयायात्रां वपनं न कार्यं  
मित्याहुः ( वस्तुतस्तु ) गयाधिकरणाकस्यैवायं निषेधः ॥ न तु यात्रांगस्य श्राद्धा  
र्थिनेत्युक्तेः ॥ विशालं विरजं गयामित्यनेनैकवाक्यत्वाच्च ॥ श्राद्धं च यराणां वहा  
दशैव तं वाधृतेन कार्यम् ॥ गच्छेद्देशांतरं यस्तु श्राद्धं कुर्यात्सर्पिष्येति विष्णुपुरा

गात् ॥ यात्रांगवृद्धिश्चाद्वोक्तेष्व ॥ आहञ्चपारणादिनम् ॥ उपोष्यरजनी  
मेकांप्रातःश्राद्धंविधायच । गणेशं ब्राह्मणान्जत्वाभुक्त्वाप्रस्थितवानसुधीरिति  
स्कांदलिंगात् (गौडनिबन्धेगौतमः) तीर्थयात्रासमारंभेतीर्थात्प्रत्यागमेपिच । वृ  
द्धिश्चाहंप्रकुर्वीतबहुसर्पिःसमन्वितम् ॥ वृद्धिपदंतद्वमर्थ्यश्चाद्वोत्तरंयात्रासंक  
ल्पइतिभट्टाः (वायवीये) उद्यतस्तुगयांगंतुंश्राद्धं कृत्वाविधानतः । विधायका  
परीवेयं ग्रामंगत्वाप्रदक्षिणाम् ॥ ततोग्रामांतरंगत्वाश्राद्धशेषस्यभोजनम् ॥  
घृतस्यभोजनंतच्चक्रोशमध्येश्राद्धोत्तरंक्रोशगमननियेधात् ॥ ततःप्रतिदिनंगच्छे  
त्प्रतिग्रहंविर्वर्जितः । गयायामेवतन्त्रान्यत्रेतिकेचित् (हेमाद्रिस्तु) गयायांश्रा  
द्धदिनेष्वप्रस्थानं ॥ तीर्थांतरेतुश्राद्धोत्तरदिनइत्याहुः (प्रभासखंडे) यच्चान्यंका  
रयेच्छक्त्यातीर्थयात्रानरेश्वरः । स्वकीयद्रव्ययानाभ्यांतस्यपुण्यंचतुर्गुणम् ॥  
यात्रासध्येआशौचेरजसिवाशुद्धिपर्यंतस्थित्वातदंतरेगच्छेत् ॥ मार्गवैयस्येत्व  
दोयः ॥ यात्रासध्येतीर्थांतरप्राप्तौश्राद्धादिकार्यमेव ॥ वाणिज्याद्यर्थगतेनतुमुंड  
नोपवासादिनकार्यमितिप्रयागसेतौभट्टाः ॥ वस्तुतस्तुतत्रापिमुंडनोपवासश्राद्धा  
दिकार्यम् ॥ अर्धतीर्थफलंतस्ययःप्रसंगेनगच्छतीतिब्राह्मोक्तेः (स्कांदे) द्विर्भोज  
नंतृतीयांशंहरेत्तीर्थफलस्यच । वाणिज्यंवींस्तथाभागानहंतिसर्वप्रतिग्रहः ॥  
यानंधर्मचतुर्थांशंकुत्रोपानहमेवचेत्युत्तरार्धपाठांतरम् (अत्रनदीयुविशेषः) मा  
र्गंतरानदीप्राप्तौ स्नानादिपरपारतः । अर्वागेवसरस्वत्या सयमार्गगताविधिः  
(यत्तु)पितृव्रतसर्पयित्वातुनदीस्तरतियोनरः । तस्यास्तृकपानकामस्तेभवंतिभृश  
दुःखिताइतितत्सरस्वतीपरं (शंखः) तीर्थंप्राप्यानुयंगेणस्नानंतीर्थेसमाचरेत् ।  
स्नानजंफलमाप्नोतितीर्थयात्राकृतंनतु ॥ सख ॥ नस्रवंतीमितिक्रामेत् (अनवसि  
च्यतीर्थंप्राप्नोतुप्रभासखंडे) यानानितुपरित्यज्यभाव्यंपादचरैर्नरैः । लुटित्वालो  
ठनींतवृकृत्वाकार्पाटिकाकृतिं ॥ कृत्वैतिगृहान्निर्गमसमयेकरणोद्दं ॥ प्रथमंचा  
लयेत्तीर्थंप्रगावेनजलंशुचि । अवगाह्यततःस्नायाद्यथावन्मंत्रयोगात् (मंत्रप्रचप्र  
भासखंडे) नमोस्तुदेवदेवायशितिकंठायर्दाडिने । रुद्रायचापहस्तायचक्रिणोवेधसे  
नमः ॥ सरस्वतीचसावित्रीवेदमातागरीयसी । सन्निधात्रीभवत्वन्नतीर्थेपापप्र



शार्शनीतिमंत्रवत्स्नानंचवपनोत्तरंकार्यम् ॥ पूर्वमावाहनंतीर्थेमुंडनंतदनंतरम् ॥  
 ततःस्नानादिकंकुर्यात्पश्चाच्छ्राद्धं समाचरेदित्युक्तेः (यत्तु) गत्वास्नानंप्रकुर्वीत  
 वपनंतदनंतरमिति तन्मुशलस्नानपरम (काशीखंडे) तीर्थोपवासः कर्तव्यः शिरसो  
 मुंडनंतथा ॥ उपवासेतवैवोक्तम् ॥ यद्वितीर्थप्राप्तिस्तत्तदहःपर्ववासरे । उपवा  
 सः प्रकर्तव्यः प्राप्ते ह्यग्राह्यो भवेत् (अत्र) उपवासंततः कुर्यात्तस्मिन् न हनिसुप्रत इति  
 प्राप्तिदिने उपवासोक्तेर्विकल्पः ॥ (मुंडने तु स्कांददेवतौ) मुंडनचोपवासश्च स  
 र्वतीर्थेष्वयं विधिः । वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालं विरजंगयां ॥ विरजं लोणारप्र  
 सिद्धमहातीर्थपरः सर्वतीर्थशब्दः ॥ (अत्र विशेषः स्मृत्यंतरे) ऊर्ध्वमब्दादेर्हिमा  
 सेनात्पुनस्तीर्थं व्रजेद्यदि । मुंडनचोपवासंच ततो यत्नेन कारयेत् ॥ तदा तद्वपनं श  
 स्तंप्रायश्चित्तमृते द्विजेति पाठः ॥ प्रयागे प्रतियात्रेतु योजनत्रय इष्यते ॥ सौरं क  
 त्वा तु विधिवत्ततः स्नायात्सितासिते (तथा च बृहस्पतिः) सौरं नैमित्तिकं कार्यं नि  
 येधे सत्यं पिबुवम । पित्रादिमृतिदीक्षासु प्रायश्चित्ते यतीर्थके (अपरार्कस्कांदे)  
 उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा वपनं कारयेत् सुधीः । केशश्मश्रुलोमनखान्युदकसंस्था  
 निवापयेत् ॥ इदं प्रयागे सध्वानामपि समूलं भवतीति भट्टाः (युक्तंतु) सर्वान् केशा  
 न् वसुत्वृत्य छेदयेदं गुणद्वयम् । सवमेव हिनारीणां शस्यते वपनं क्रियेति ॥ तच्चाकृत  
 चूडानां न कार्यमिति केचित् ॥ तत्त्वंतु नैमित्तिकत्वात् पित्रादिमृतवत् कार्यमेवेति ॥  
 तदपि प्रयागे नित्यं ॥ नान्यत्र ॥ तच्चर्यातिभिस्तीर्थेषु ऋतुसंधिष्वेव कार्यं नान्य  
 दा ॥ कक्षोपस्थशिखावर्जमृतुसंधिषु वापयेदिति स्मृतेः ॥ इदं जीवत्पितृकेणा  
 पि तीर्थं कार्यम् ॥ न च मुंडनं पिंडदानं चेतदस्वचनेन निषेधः ॥ विना तीर्थं विनाय  
 जं मातापित्रोर्मृतिं विना । यो वापयति लोमानि स पुत्रः पितृव्यात्क इति स्मृत्या त  
 त्संकेचात् ॥ तदपि प्रयागे प्रतियात्रा स न्यतीर्थे आद्यायात्रायामेवेति शिष्टाः ॥ त  
 तः स्नानस्य (परार्थं तु मार्कंडेयपुराणो) मातरं पितरं जायां भ्रातरं हृहंशुकं । यमुद्दि  
 श्यति मज्जेत अष्टसांशलभेतसः (पैठीनसिः) प्रति कृतिं कुशमयीं तीर्थवारिणिम  
 ज्जयेत् ॥ मज्जयेच्च यमुद्दिश्य सौष्ठभागफलं लभेत् । ततस्तर्पणाग्राह्ये पृथ्वी चंद्रोद  
 ये ब्रह्मदेवी पुराणा काशीखंडादियु ॥ अकालेऽप्यथवा काले तीर्थयात्रां च तर्पणम्

अविलंबेन कर्तव्यं नैव विद्वन्समाचरेत् (मात्स्ये) पितृणां चैव तर्पणमिति तुर्थपा  
दः ॥ तत्र देवतामहालये प्राणुक्ताः (शांख्यदेवलौ) तीर्थद्रव्यापपत्तौ च न कालमवधार  
येत् । पात्रं च ब्राह्मणं प्राप्य सद्यः श्राद्धं समाचरेत् (हारीतः) दिवा वा यदि वा रात्रौ  
भुक्ते वा पोषितोऽपि वा ॥ न कालनियमस्तत्र गंगां प्राप्य सरिद्धराम (भारते) भु  
क्ते वाप्यथवा भुक्ते रात्रौ वा यदि वा दिवा । पर्वकालेथवा कालेषु चिर्वाप्यथवा  
शुचिः ॥ यदैवावश्यते तत्र न दीचत्रिपथाप्रिय ॥ प्रसादादर्शनं तस्माच्च कालस्तत्र का  
रणां ॥ आशौचेऽपि कार्यम् ॥ विवाहदुर्गयज्ञेषु यात्रायां तीर्थकर्मणि । न तत्र सत  
कं तद्वत्कर्म यज्ञादिकारयेदिति पैडीनसिस्मृतेः ॥ तदानीमकरशोत्वाशौचांति एव  
कुर्यात् (प्रभासखंडे) नवारं न च नक्षत्रं न कालस्तत्र कारणात् । यदैव दृश्यते तीर्थं त  
दापर्वसहस्रकम् ॥ मलमासेऽपि कार्यम् ॥ नित्ये नैमित्तिके कुर्यात्प्रयतः सन्मलिन्यु  
चे । तीर्थश्राद्धं गजच्छायां प्रेतश्राद्धं तथैव चैतद्बृहस्पतिस्मृतेः ॥ एतच्चाशौचे प्रह  
तभोजनस्य रात्रौ वा स्नानश्राद्धादिकमाकस्मिकतीर्थप्राप्ता वामहेमश्राद्धविषयं  
हणादिवत् ॥ न तु बुद्धिपूर्वमाशौचादौ तीर्थप्राप्तिः कार्या ॥ मलमासे तु मासद्वये ती  
र्थश्राद्धं कार्यमिति चंद्रिकायां देवीपुराणे ॥ श्राद्धं च तत्र कर्तव्यमर्घ्यावाहनवर्जितम्  
(हेमाद्रौ) अर्घ्यमावाहनं चैव द्विजां गुह्यनिवेशनमाहृतिप्रश्नं च विकिरं तीर्थश्राद्धे  
विवर्जयेत् (भविष्ये) आवाहनं विसृष्टिश्च तत्र तेऽनविद्यते । आवाहनं न तीर्थे  
स्यान्नाद्यर्घदानं तथा भवेत् ॥ आहूताः पितरस्तीर्थे कृताः कर्माः संति वैयतः ॥ अग्नौ कर  
णां च नेति रत्नावल्यां ॥ अत्र यदुदेव ते श्राद्धेऽपि मात्रादीनां पिंडमात्रं देयम् । हविः  
शेषं ततो मुष्टिमादायैकैकमाहृतः । क्रमशः पितृपत्नीनां पिंडानिर्वपणं चरेदिति  
तीर्थोपक्रमदेवलोकतेरिति पृथ्वीचंद्रः ॥ ततः सामान्यपिंडं दद्यात् ॥ ततः पिंडमु  
पादाय हविः संस्कृतस्य च । ज्ञातिवर्गस्य सर्वस्य सामान्यं पिंडमुत्सृजेदिति तेनैवो  
क्तेः (पाप्मे) तीर्थश्राद्धं प्रकुर्वीत पक्वाच्चेन विशेषतः । आमाच्चेन हिररायेन कंद  
मूलफलैरपि (पिंडद्रव्याणां देवीपुराणे हेमाद्रौ ब्राह्मे च) संकुम्भिः पिंडदानं च  
संयावैः पायमेनवा । कर्तव्यमृषिभिः प्रोक्तं पिण्याकेन गुडेन वा । पिरडानां तीर्थ  
प्रसेपसवनान्याप्रतिपत्तिरित्युक्तं प्राक् ॥ एतच्च विधवयाऽप्युच्यते कार्यम् ॥ न स



पुत्रयेत्युक्तं प्राक् ॥ सपुत्रयानकर्तव्यं भर्तुः श्राद्धं कदाचनेति स्मृतेष्वच ॥ अनुपनी  
तेनापिकार्यम् ॥ एतच्चानुपनीतोपि कुर्यात्सर्वेषु पर्वस्विति पासे तीर्थश्राद्धमुपक्र  
म्योक्तेः ॥ एतच्च जीवत्पितृकेणापिकार्यमित्युक्तं प्राक् ॥ न कुर्यात्सतर्कभिसुः  
श्राद्धपिण्डोदकक्रियां । त्यक्तसंन्यासयोगेन ग्रहधर्मादिकं व्रतम् ॥ गौत्रादिचर  
णसर्वपितृमातृकुलंधनमिति स्मृतेः ( गयायां तक्तं वायवीये ) दण्डं प्रदर्शयेद्भि  
सुर्गयां गत्वानपिण्डदः । दण्डं स्पृष्ट्वा विष्णुपदे पितृभिः सह मुच्यते । गयायां मु  
ण्डपृष्ठे च कूपे यूपे वदे तथा । दण्डं प्रदर्शयन् भिसुः पितृभिः सह मुच्यते ( कृत्यरत्ने  
प्रभासखण्डे ) तीर्थे चैव प्रतिगृह्णाति ब्राह्मणो वृत्तिदुर्लभः ॥ दशांशमर्जितं द  
द्यादेवं कुर्वन् न होयते इति ॥ विशेषांतराणि भट्टकृतत्रिस्यलीसेतौ ज्ञेयानीति दिक् ॥

इति कमलाकरभट्टकृते निर्णयमिन्धौ तीर्थश्राद्धविधिः समाप्तः ॥

—\*—

## अथ आशौचप्रकरणम् ॥



नारायणात्मजः श्रीमद्रामकृष्णसूनुना । कमलाकरसंज्ञेनाशौचं निर्णय  
तेधुना १ ( मरीचिः ) आचतुर्थ्यद्वेत्स्रावः पातः पंचमयस्योः ॥ अत ऊर्ध्वं प्रसू  
तिः स्याद्दशाहं सूतकं भवेत् ॥ स्रावे मातुस्त्रिरात्रं स्यात्सपिण्डाशौचवर्जितम् । पाते  
मातुर्यथामासं सपिण्डानां दिनत्रयम् ॥ अत्र सर्वत्र मूलं मिताक्षरायां ज्ञेयम् ॥ अत्र  
मासत्रये विरात्रं स्यादित्यनुवादः ॥ रजस्वलात्वं नैव तत्सिद्धेः ( यद्यप्यनेन चतुर्थ्य  
मासेऽपि विरात्रं प्राप्नोति तथापि ) खरामासाभ्यन्तरं यावत् गर्भश्रावो भवेद्यदि ।  
तद्रामाससमैस्तासां दिवसैः शुद्धिरिष्यते ॥ इत्यादिपुराणात् । रात्रिभिर्मसितु  
ल्याभिर्भिर्मावे विशुद्ध्यतीति मनक्तेः ॥ गर्भश्रावे यथामासमचिरेतत्तमेव यद्

तिमरीच्युक्तेश्चतुरात्रंज्ञेयम् ॥ अचिरैर्विमासमध्ये ॥ उत्तमेब्राह्मणे ॥ अत्रस  
पिण्डानांस्नानम् ॥ सद्यःशौचंसपिण्डानां गर्भस्यपतनेसतीतितत्रैवोक्तेः ॥  
सतदाचतुर्थमासादपातेत्रिदिनस्योक्तेः ॥ अकारणायाः शुद्धेरसम्भवात्सद्यःप  
दंस्नानपरम् ॥ एवमग्रेपि ॥ गर्भस्त्रावेस्नानमात्रंपुरुषस्येतिवृद्धवशिष्टोक्तेः ॥ पु  
रुषस्येति सपिण्डोपलक्षणात् ॥ पूर्वोक्तवचनात् ॥ आचतुर्थमासंसपिण्डा नां  
स्नानंकिन्तुपुंसमव ॥ पातेत्रिदिनैर्निर्गुणापरम् (गुणावतस्तु) अजातदन्तेतनये  
शिशौगर्भच्युतेतथा । सपिण्डानान्तुसर्व्वेयामेकरात्रमशौचकमिति यमोक्तेरे  
काहर्जितमदनपारिजातः ॥ सप्तममासादिदशाहम् ॥ सतत्सर्व्ववर्णाविययम् ॥  
तुल्यं वयसि सर्व्वेयामतिक्रान्तेतथैवचेतिव्याघ्रोक्तेः (पराशरः) जातेविप्रोदशा  
हेन द्वादशाहेनभूमिपः । वैश्यः पंचदशाहेनशूद्रोमासेनशुद्धयति (संवर्तः) जाते  
पुत्रेपितुःस्नानं सचैलन्तुविधीयते । मातृशुद्धये द्वादशाहेनस्नानात्तुस्पर्शनंपितुः ॥  
पुत्रपदात्कन्यात्पत्नौनपितुःस्नानमितिहारलतायाम् ॥ तन्न पुत्रपदस्यपौत्रीमा  
तामहस्तेनेतिकन्यायामपिप्रयोगात् (यच्चतत्रैवोक्तम्) सूतकेतुमुखंदृष्ट्वा जात  
स्यजनकस्ततः । कृत्वासचैलंस्नानन्तु शुद्धोभवतितत्सणादित्यादित्यपुराणा  
न्मुखदर्शनेोत्तरमेवपितुःस्नानमिति ॥ तन्न ॥ विदेशेमुखदर्शनावध्यस्पृश्यताय  
त्तेः ॥ मुखदर्शनेोत्तरंपुनः स्नानार्थमिदमितिस्मार्तगौडाः ॥ तन्न ॥ मलैकेन  
ज्ञानमात्रपरत्वात् ॥ इदं सर्व्ववर्णसमम् ॥ सूतिकासर्व्ववर्णेषु दशरात्रेणशुद्धयति  
ऋतौचनपृथक्शौचं सर्व्ववर्णैवयंविधिरितिहारलतायांप्रचेतसोक्तेः (यत्तु  
ब्राह्मे) ब्राह्मणोसत्रियावैश्या प्रसूतादशाभिर्दिनैः । गतैःशूद्राचसंस्पृश्या त्रयो  
दशाभिरेवचेति (प्रयोगपारिजातेपारस्करः) द्विजातेसूतिकायास्यात्सादशाहे  
नशुद्धयति । त्रयोदशेहिसंप्राप्ते शूद्राशुद्धयत्यसंशय इति तदस्पृश्यत्वपरम्  
(अगिराः) सूतकेसूतिकावर्ज्यं संस्पर्शाननिधिद्वयते । संस्पर्शसूतिकायारतु  
स्नानमेवविधीयते ॥ नाशौचंसूतकेपुंसः संसर्गचेन्नगच्छति रजस्तत्राशुचिज्ञेयं  
तच्चपुंसिनविद्यते ॥ संसर्गोभैथुनम् ॥ स्पर्शइत्यन्ये ॥ मातुरेवसूतकम् ॥ तांस्पृश  
तप्रचेतिहारलतायांसुमन्तूक्तेरिति ॥ तन्न ॥ संस्पर्शसूतिकायास्तु स्नानमेववि



धीयत इति स्नानमात्रोक्तेः ॥ सौमन्तवचनस्य स्नानपर्यंतमस्पृश्यत्वमात्रबोध  
 कत्वात् ॥ सबकारोनालस्पृश्यत्वार्थः (माधवस्तु) यस्तैः सहस्रपिण्डोऽपि प्रकु  
 र्याच्छ्रयनाशनम् । बान्धवोवापरोवापि सदशाहेन शुद्ध्यतीति बृहस्पतिस्मृतेः  
 (शयनासनादिरूपसंसर्गमाह पराशरः) यदिपत्न्यां प्रसूतायां द्विजः संपर्कमृच्छ  
 ति । सूतक्रन्तुभवेत्तस्य यदि विप्रः षडंगवित् ॥ पितृवत्सापत्नमातुः प्राक् स्नाना  
 दस्पृश्यत्वम् ॥ सूतिकास्पृशेतुयावदाशौचम् ॥ अन्याप्रचमातरस्तद्वत्तद्वृंहं न  
 ब्रजन्ति चेदिति ब्राह्मोक्तेरिति शुद्धितत्त्वादयः ॥ तन्न ॥ तद्गोहंगत्वा सूतिकां य  
 दिनस्पृशन्ति तदास्पृश्याः ॥ अन्यथानेतितस्यार्थः ( कर्मनिधिकारमाह पैठीन  
 सिः ) सूतिकां पुत्रवतीं विंशतिरात्रेण कर्माणि कारयेन्मासेन स्त्रीजननीम् ॥ इद  
 माशौचोत्तरं ॥ अन्यथाशुद्ध्यः संपिंडानामाशौचेतदभावः स्याद्विध्यनुवादवि  
 रोधश्च ॥ सतचसायागादिश्रीतभिन् ॥ प्रजातायाश्च दशरात्रादूर्ध्वं स्नाना  
 दितिकात्यायनोक्तेः (व्यासः) प्रथमे दिवसस्य दशमे चैव सर्वदा । विष्टवे ते युनकुर्वी  
 तसूतकंपुत्रजन्मनि ॥ पुत्रशब्दोपत्यमात्रपरः (ब्राह्मो) देवाश्च पितरश्चैव पुत्रे जाते  
 द्विजन्मनामायां तितस्मात्तदहः पुरायं यश्च सर्वदा । जनने विशेषः प्रागुक्तः ॥ अत्र  
 प्रयोगपारिजातः पुं प्रसवे दशाहः स्त्र्यपत्येतुज्यहः ॥ पुंजन्मनिसंपिंडानां दशाहा  
 च्छुद्धिरिष्यते । ज्यहादेकोदकानां च यकाहं सूतकं क्वचित् ॥ स्त्रीजन्मनिसंपिंडानां  
 सोदकानां ज्यहाच्छुचिः । स्त्रीयुत्रिपुरुषं ज्ञेयं संपिंडत्वं द्विजोत्तमा इत्यग्निस्मृतेरि  
 त्याह (मेधातिथिरपि) अप्रत्तानां तु स्त्रीणां त्रिपुरुषी विज्ञायते ॥ इति वाशिष्ठा  
 क्त्वाशौचेऽथैतद्विवाहेतुर्वाधिर्दर्शितसवेत्याह ॥ अन्येतुत्रिपुरुषसांपिंड्यस्य का  
 नीनकन्यापरत्वमाहुः ॥ अप्रत्तानां तथा स्त्रीणां सांपिंड्यं साप्तपौरुषम् । प्रत्तानां  
 भर्तृ सांपिंड्यं प्राह देवः प्रजापतिरितिकौर्मविरोधाच्च ॥ अत्रेदंतत्त्वम् ॥ पंचमात्स  
 हमाहीमानयः कन्यामुदहेतुद्विजः ॥ गुरुतल्पी सविज्ञेय इत्यादिविरोधात् त्रिपुरुषं  
 प्रकरणान्मरणाशौचपरम् ॥ वाशिष्ठे तदग्रे उदकदानोक्तेः ॥ तेन कन्याप्रसवेऽपि  
 साप्तपौरुषं दशरात्रमेव ॥ नच कन्यापुत्रकृतं प्रसवे बलाबलं क्वाप्युक्तं ॥ अग्निस्मृ  
 तिस्त्वनुकल्पोऽभिगीताविति सर्वसिद्धांतः ॥ अन्यथा त्रिपुरुषसंपिंडानामष्टमादि

सोदकानां च ज्यहंसाभ्यायोगात् ॥ चतुर्थादिसप्तमांतानां च किमपि न स्यात् ॥ ते  
न कन्याप्रसवेदशाहस्य ( किंच ) स्त्रीजन्मोद्देशेन त्रिपुरुषं सापिड्यन्ते यांच त्रि  
रात्रिमित्यनेकार्थविधिः कथं स्यात् ॥ वाक्यभेदापत्तेः ॥ न च चतुर्थादीनां सोदकत्वं  
क्वापि सिद्धम् ॥ तेन त्रिपुरुषं चतुर्थादीनां स्त्रीजन्मनि सोदकत्वं विधाय पुनस्तेषां  
त्रिरात्राशौचविधीविध्यनुवादविरोधो वाक्यभेद इयं चेत्यसंवादा र्थारि न स्मृतिर्हे  
या ॥ अथ मृताशौचम् ( हारीतः ) जातमृते मृतजाते वा सर्पिण्डानां दशाहमिति स्वा  
शौचपरम् ॥ जातमृतेनालच्छेदो ध्वंसः ॥ यावन्न छिद्यते नालं तावन्नाप्रोतिसूतक  
म् । छिन्नेनाले ततः पश्चात्सूतकं तु विधीयते इति जैमिन्युक्तेः ॥ नाड्यां छिन्नाया  
माशौचमिति हारीतोक्तेः च ॥ नाडीच्छेदात्प्राक्मातुः स्पर्शोऽपि न दोष इति श्रुति  
तत्त्वोक्तिः परास्ता ( नाभिच्छेदात्प्राक्मृतौ तु बृहन्मनुः ) जीवनजातो यदि ततो मृ  
तः सूतक एव तु । सूतकं सकलं मातुः पित्रादीनां त्रिरात्रकम् ॥ इदं च प्रसवाशौचमे  
व ॥ शावनिमित्तं स्नानमात्रम् ॥ प्राक्नुनामकरणात्सद्यः शौचमिति शंखोक्तेः ( अ  
थ कश्चिदाह ) नामकरणा माशौचांतकालोपलक्षणम् ॥ आशौचव्यपगमेनाम  
धेयमिति विष्णोक्तेः ॥ आशौचे च व्यतिक्रान्तेनामकर्मविधीयते इति मनूक्तेः च  
नाम्नो नियतकालत्वात् ( नच ) नामधेयं दशम्यां तु द्वादश्यां वापि कारयेत् । पु  
रायेति यौमुहूर्तवानक्षत्रे वा शुक्लान्वित इति मनूक्तेरनियतकालत्वम् ॥ दशम्याम  
तीतायां विप्रः । द्वादश्यामतीतायां सत्रियः । वैश्यः श्रोत्रेण । शूद्र एकत्रिंशे इत्य  
पि ज्ञेयम् ॥ पुराय इत्यादनुकल्पः ॥ तेन नाम्नः कालोपलक्षणम् ॥ एवं दंतजननेऽपि ॥  
दंतजन्मसप्तमे मासीत्युपनिषदि नियतकालत्वात् ॥ चौले तु न कालोपलक्षणम् ॥  
प्रथमे द्देहतीये वा कर्तव्यं श्रुतिचोदनादिति मनूक्तेः ॥ ततः संवत्सरे पूर्णो चूडाकर्म  
विधीयते । द्वितीये वा तृतीये वा कर्तव्यं स्मृतिदर्शनादिति यमोक्तेः च ॥ तस्यानि  
यतकालत्वादिति तन्मंदम् ॥ चौलवन्नामदंतजननयोरपि स्वरूपेणानिमित्तत्वेऽप्य  
तेस्तद्विशिष्टकालानुवादे वाक्यभेदासप्तमसासादर्वाक्यदंतजनने तदभावप्रसंगाच्च ॥  
यस्तुपनिषद्वशेन निर्यायं कुर्व्यात्स नूनं शतायुः पुरुष इति श्रुतेरर्वाविषहमरशो तदं  
त्यकर्मपित्यजेत् ॥ ननु कालानुपलक्षणो नामोत्कर्षो तदभावे वा स्नानमात्राच्छुद्धिः



स्यात् ॥ ततः किम् ॥ अस्तु ॥ अतस्त्वोक्तं आदंतजन्मनः सद्य इति ॥ सा च विठगावच  
 नाहाहाभावविषयेति वक्ष्यामः ॥ त्रिवर्षादावपि स्यादिति चेत्तदाह दंतादिनिमित्तै  
 विशेषाशौचे पूर्वस्य बाधात् (तदुक्तम्) पूर्वाबाधेन नोत्पत्तिरुत्तरस्य हि सिद्धतीति ॥  
 जननादशरात्रे व्युष्टे शतरात्रे संवत्सरे चेति परिशिष्टे ॥ द्वादश्यामपरे रात्र्यां मासे पूर्ण  
 तथापरे अष्टादशे ह नितयावदं न्ये मनीषिणा इति (भविष्ये च) नाम्नः कालानिय  
 माच्च ॥ न च प्राथम्यादशरात्रे तीते इति मुख्यः कालः अन्यरत्वनुकल्प इति वाच्यम् ॥  
 चौलेपितयापत्तेः ॥ न च दंतजननकालानुपलक्षणो सदन्तजातमृतस्य दाहैकाहप्रसं  
 गः ॥ दशाहेन बाधात् ॥ नामकरणोत्तरमेव दाहप्रवृत्तेः ॥ दशाहाभ्यन्तरेवाले प्रमी  
 ते तस्य बांधवैः । शावाशौचं न कर्तव्यं सूत्याशौचं विधीयते इति बृहन्मनवतेऽप्युच्यते ॥  
 आशौचं दाहोपलक्षणम् ॥ सुतकवदिति पारस्करोक्तेः (यत्तु विठगाः) अतिवृत्ते  
 दशाहेतुपंचत्वं यदि गच्छति सद्य एव विष्णुर्द्विः स्यान्न प्रेतं नोदकक्रियेति (तदपि प्रे  
 ताशौचं नित्ये धार्थं न तु सद्यस्त्वपरम् ॥ वाक्यभेदात् (किंच) नामकालात्प्राक्मृतस्य  
 स्नानम् ॥ तदुत्तरं त्वेकाहादिनामकाले त्वेकादशाहेमृतस्य न किमपि स्यात् ॥ अथ  
 शंखवचने लयबलोपे पंचमीतदा प्रागिति नोपपद्येत ॥ नाग्निवापि कृते सतीति म  
 न्वादिविरोधात् ॥ कृतनाम्न इति माध्वमिताक्षरादिविरोधाच्च न कालोपलक्षणां  
 कापीति दिक् ॥ नामोत्तरं दंतोत्पत्तेः प्राग्दाहे सत्यहः ॥ अदंतजाते तनये शिशोः गर्भ  
 द्युते तथा । सपिंडानां तु सर्वेषामहोरात्रमशौचकमिति यमेवोक्तेः ॥ दाहाभावे तु स्ना  
 नमात्रम् ॥ अदंतजाते प्रेते सद्य एव नास्याग्नि संस्कार इति विष्णुना दाहाभावेऽदुक्तेः ॥  
 आदंतजन्मनः सद्य इति याज्ञवल्कीयाच्च (दाहविकल्पं चाह लौगाक्षिः) तूष्णीमे  
 वोदकं कुर्यात्तूष्णीं संस्कारमेव च । सर्वेषां कृतचूडानामन्यत्रापीच्छया इयम् ॥ अ  
 न्यत्राकृतचूडे ॥ अत्र चूडाकरणां तृतीयवर्षरूपकालोपलक्षणार्थमिति मेधाति  
 थिहरदत्तौ (मनुरपि) न त्रिवर्षस्य कर्तव्या बांधवैरुदकक्रिया ॥ जातदंतस्य वा  
 कुर्युर्नाग्निवापि कृते सतीति ॥ उदकं दाहोपलक्षणम् ॥ दंतोत्पत्त्यनंतरं प्राक् त्रि  
 वर्षातान्मृतेहः ॥ दंतजातेऽप्यकृतचूडे त्वहोरात्रेणाशुद्धिरिति विठगावक्तेः ॥ त्रिव  
 र्षाभ्यन्तरे कृतचूडे कृतचूडे वा प्राणुपनयनात्त्यहः ॥ यद्यप्यकृतचूडो वै जातदंतस्तु सं

स्थितः । तथापि दाहयिवैनमाशौचं ग्रहमाचरेदित्यंगिरसोक्तेः ॥ अकृतायाम  
पिचूडायां त्रिवर्षोर्ध्वदाहादिनियतम् ॥ नात्रिवर्षस्येति वचनात् ॥ कृतायां वर्षत्रया  
त्प्रागपि तन्नियतं तूष्णीमेव ॥ अत्र जातदंतत्वमुद्देश्य विशेषगतात्वादविवक्षितं दाह  
यित्वेयमनुवादः ॥ उभयविधौ वाक्यभेदात् ॥ त्रिवर्षात्प्राक्चूडाभावेऽग्निदाने  
ग्रहस्तदभावे विष्णुवक्त्रे रेकाह इति माधवः (यत्तु कश्चिदाह) अत्र त्रिवर्षवियया  
दस्मादेवार्थात् त्रिवर्षोर्ध्वमपि तत्सिद्धिः ॥ विज्ञानेश्वरोक्तं च त्रिवर्षोर्ध्वमकृतचू  
डाविषयत्वं चिंत्यम् ॥ जातदंतपदवैयर्थ्यादितितत्तुच्छम् ॥ दाहस्याविधेयत्वा  
त् ॥ नृणां सकृतचूडानामशुद्धिर्नोऽशुद्धिस्मृतेति मनुक्तेः ॥ त्रिवर्षोर्ध्वमेकाहाप  
त्तेरर्थः त्रिहासिद्धेः ॥ त्वयाप्यग्रे तथांगीकारात्पदवैयर्थ्यस्य साम्याद्वा कार्यार्थ  
ज्ञानार्थं त्यजंमिताक्षरार्थानभिज्ञदूषणेन ॥ प्रथमवर्षादौ कृतचूडस्य सदाग्रहः ॥  
निरुत्तचूडकानां तु विरात्राच्छुद्धिरित्यत इति मनुक्तेः ॥ एतत्सर्वं प्रागुक्तं संपिंडा  
नाम् ॥ मातापित्रोस्तु दशाहोर्ध्वमृते सर्वत्र विरात्रम् ॥ बालनाम जातदंतानां विरा  
त्रेण शुद्धिरितिकथ्यपोक्तेः ॥ वैजिकादभिसंबन्धादनुसृत्या दाद्यं ग्रहमिति मनु  
क्तेः च (शुद्धितत्त्वादयोगौडास्तु) अजातदंतमरणोपि विरेकाहमिदं यते । दंत  
जाते विरात्रस्याद्यदि स्यातां तु निर्गुणाविति कौमत्काप्रथमं शूद्रपरम् ॥ अनूढानां तु  
कन्यानां तथा वैशूद्रजन्मनामिति ग्रहानुवृत्तौ शंखोक्तेः ॥ विरात्रं तु भवेच्छूद्रेष  
रमासेपिशिशौ मृत इति मात्स्यसूक्ताप्रच ॥ दंतजाते शूद्रे तु पंचाहः (यथा हां गि  
राः) शूद्रे त्रिवर्षान्न्यूने तु मृते शुद्धिस्तु पंचभिः । अत ऊर्ध्वमृते शूद्रे द्वादशाहो वि  
धीयते ॥ यद्वर्षान्तमतीतो यः शूद्रः संप्रियते यदि । मासिकं तु भवेच्छूचमित्यां  
गिरसभाषितमिति ॥ यत्तु अनूढभार्यः शूद्रस्त्विति शंखोक्तं मासाशौचं तत्सगुण  
शूद्रपरम् ॥ निर्गुणोत्वनूढभार्ये शूद्रे त्रिवर्षोर्ध्वं द्वादशाहः ॥ यद्वर्षोर्ध्वमासः ॥  
यद्वर्षात् प्रागपि कृतो द्वादशमास इत्याहुः ॥ एतत्तुल्येव यमिसर्वेयामिति विरोधा  
च्छूद्रविगानाच्चादित्यमिति विज्ञानेश्वरादयः ॥ दाक्षिणात्यानां तथाैव ॥ अ  
न्यदेशे प्रागुक्तमिति गौडाः ॥ सर्वकन्यास्वयम् ॥ तास्वप्यजातदंताहुमृतासु  
पि विरेकरात्रमिति माधवः (यत्तु विज्ञानेश्वरोक्तं) ऊनद्विवर्ष उभयोः सू



तकंमातुरेवहीति याज्ञवल्क्योक्तेः ॥ गर्भस्थेप्रेतेमातुर्दशाहंजातेउभयोः कृ  
तनाम्निसेदरागां चेतिपेंग्योक्तेश्च पित्रोःसोदरागांचदशाहमस्पृश्यत्व  
मितितच्चेदानींप्रचरति ॥ अतस्वस्मृत्यर्थसारेतच्चादृतम् ॥ कन्यासुचौलात्प्राङ्  
मृतौस्नानम् ॥ अचूडायांतुकन्यायां सद्यःशौचंविधीयतइत्यापस्तम्बोक्तेः ॥ इ  
दंविपुसंयमध्वे ॥ अप्रत्तानांतुस्त्रीणांविपुसुयोविज्ञायत इतिवशिष्योक्तेः ॥ इदं  
वाग्दानोत्तरमितिगौडाः ॥ तच्च ॥ अप्रत्तानांतथास्त्रीणां सापिराड्यंसाप्तपौरु  
ष्यमितिवचनात् ॥ चौलोत्तरंवाग्दानात्पूर्वतास्वेकाहः ॥ अविशेषेणावर्णानाम  
र्वाक्संस्कारकर्मणाः । विरात्रात्तुभवेच्छुद्धिः कन्यास्वह्नाविधीयतइत्यंगिरसा  
वित्रात्रविषयेहोविधानात् ॥ अतःशूद्रस्योपनयनस्थानीयविवाहात्पूर्ववित्रात्र  
म् ॥ विवाहेत्कर्त्येतुयोडशाब्दमध्येवित्रात्रमेवेत्यपराकाद्याः ॥ शूद्रेनिर्गुणोतुज्य  
ब्दोर्ध्वपंचाहःषडब्दोर्ध्वविवाहाभावेद्वादशाहमितिगौडाः ॥ सुगुणानांयोडशा  
ब्दोर्ध्वतुविवाहाभावेपिपूर्णाशौचंवक्ष्यते ॥ तदुत्तरंप्राग्विवाहाद्भर्तृकुलेचसप्तपु  
रुषावधिविरात्रम् ॥ अवारिपूर्वंप्रत्तातु यानैवप्रतिपादिता । असंस्कृतातुसाज्ञेया  
वित्रात्रमुभयोःस्मृतमितिमरीच्युक्तेः (रत्नाकरेशुद्धितत्त्वेचशंखः)पितृवेषमनि  
यानारीरजःपश्यत्यसंस्कृता । तस्यांमृतायांनाशौचं कदाचिदपिशाम्यति॥याव  
ज्जीवमाशौचमितिवाचस्पतिमिश्राः ॥ अथानुपनीतेकिंचिदुच्यते॥ नास्नःपूर्व  
स्वननमेव ॥ तदूर्ध्ववर्यत्रयात्पूर्वचौलाभावेऽग्न्युदकदानविकल्पः ॥ नात्रिवर्यस्य  
कर्तव्याबांधवैरुदकक्रिया । जातदन्तंस्यवाकुर्युर्नाम्निवापिहृतेसतीतिमनूक्तेः ॥  
उदकक्रियासाहचर्याद्वाहोपलक्षणम् ॥ स्वननेतुनान्यदौर्ध्वदेहिकम् ॥ ऊनद्वि  
वर्यनिखनेचकुर्यादुदकंततइतियाज्ञवल्क्योक्तेः ॥ उदकसंत्यक्कर्मपरमित्यपरा  
र्कः(यमः)ऊनद्विवार्यिकंप्रेतंघृताक्तंनिखनेद्भुवि । यमगाथांगायमानोयमसक्त  
मनुस्मरन् ( माधवीयेब्राह्मेपि ) स्त्रीणांतुपतितोगर्भः सद्योजातोमृतोयवा । अ  
जातदन्तोमासैर्वा मृतःषडभिर्गतैर्बहिः ॥ वस्त्राद्यैर्भूयितंक्षत्वा निक्षिपेत्तन्तुका  
श्वत् ॥ खनित्वाशनकैर्भूमौ सद्यःशौचंविधीयते ॥ अलंकरणमपिवक्ष्यते ॥ कृ  
तचूडस्यतुविवर्यात्प्रागूर्ध्ववाग्न्युदकदानंनियतम् (यत्तुवशिष्यः) ऊनद्विवर्येप्रेते

गर्भपतनेवासपिण्डानविराजमिति तत्प्रथमाब्दचूडापरम् ॥ वर्षत्रयाद्धर्मक  
तचूडस्यापि नियतम् ॥ वर्षत्रयोर्ध्व उपनयनात्पूर्वचतुष्पासगन्युदकदानम् ॥ तू  
ष्पासमेवोदकं कुर्यात्तुष्पासंस्कारमेव चेति पूर्वोक्तलौगांसि स्मृतेः ॥ पिण्डदानम्  
पिकार्यम् ॥ असंस्कृतानां भूमौ पिण्डं दद्यात्संस्कृतानां कुशेष्ठिविति प्रचेतसोक्तेः ॥  
उदकदानं सपिण्डैः कृतचूडस्येति गौतमोक्तेः ॥ उदकग्रहणमौर्ध्वदेहिकपरमि  
ति हरदत्तः ॥ द्वादशाहत्सरादर्वाक् पौगण्डं मरसो सति । सपिण्डीकरणस्या  
देकोद्दिष्टानिकारयेदिति हरदत्तवृत्तदेवलोक्तेः प्रच (मरीचिरपि) प्रेतपिण्डं  
हिर्दद्याद्दर्भसंघविवर्जितमिच्छेतदनुपनीतपरमिति विज्ञानेश्वरः ॥ अत्र चूडैव पूर्वा  
वधिः ॥ पूर्ववाक्ये तु तद्ग्रहणात् ॥ उदकग्रहणास्योपलक्षणात्त्वाद्वाहः पूर्वविधि  
रितिकेचित् ॥ द्वादशाहत्सरादित्यनुपनीतद्विज्ञानदण्डविषयम् ( ज्येष्ठाशौचे  
पिण्डदानविधिमाह पारस्करः ) प्रथमे दिवसे देयास्त्रयः पिण्डाः समाहितैः ।  
द्वितीये चतुरोदद्यादस्ति संचयनं तथा ॥ त्रींस्तु दद्यात्तृतीये द्विवस्त्रादिक्षालयेत्तत  
इति ( अत्र देवयाजिकनिबन्धे विशेषः ) शिशुरादन्तजननाद्बालः स्याद्वावदा  
शिखः । कथ्यते सर्वशास्त्रेषु कुमारो मौजिवन्धनात् ॥ आपंचवर्षात्कौमारं पौ  
गण्डो नवहायनः ( तथा ) गर्भे नष्टे क्रियानास्ति दुग्धं देयं शिशौ स्मृते । परंचपायसं  
सीरं दद्याद्बालविपत्तितः ॥ एकादशं द्वादशाहं वृषोत्सर्गविधिं विना ( तथा ) यत्र  
प्रसीयते बालस्तत्र प्रायः प्रदीयते । किंचित्समानवयसां संस्कृत्यान्नं यथाविधि ॥  
भक्ष्यं भोज्यं च दातव्यं तथा च सुखभक्षिका । तद्वस्त्राणि प्रदेयानि सोपानत्कानित  
तमे कुमारानां च बालानां भोजनं वस्त्रवेष्टनम् । यच्चोपजीवते बालस्तद्विप्राय प्रदी  
यते ( तथा ) भूमिनिक्षेपणां बाले आवर्षद्वयमाशिखम् । ततः परं स्वगश्रेष्ठदेहदाहो  
यथाविधि ॥ अचूडेऽप्यूर्ध्वस्वनननिवृत्त्यर्थमावर्षद्वयमिति ॥ प्रागपि कृतचूडस्य  
तन्निवृत्त्यर्थमाशिखमिति ( तथा ) चूडाकर्मणि संजाते विपत्तिस्तु यदा भवेत्  
सूतकांते प्रकर्तव्यं वृषस्योत्सर्जनं तथा ॥ तत्र दाहः प्रकर्तव्य उदकं तत्र निश्चितम् ॥  
आह्वानियोद्ध्यापि स्युः सपिण्डीकरणां विना ॥ इदं पंचवर्षात्तरम् ॥ जन्मतः पंचव  
र्षाणि भुंक्तो दत्तमसंस्कृतम् । पंचवर्षाधिके बाले विपत्तिर्यदि जायते ॥ वृषोत्सर्गा



दिक्कर्मकर्तव्यमुदकंततः । अहन्यहनि संप्राप्ते कुर्यात्तथाहानि षोडश ॥ पाय  
 सेनगुडेनैव पिंडं दद्याद्यथाक्रमम् । उदकं भूप्रदानं च पददानं नित्यानि च ॥ दीपदाना  
 नित्यत्किंचित्पंचवर्षाधिके सदा । कर्तव्यं तु खगशेषव्रतावाक्प्रेततृप्तये ॥ स्वाहा  
 कारेणैव कार्यागये कोद्विष्टानि षोडश । ऋतुदर्भेऽस्तिलैः शुक्लैः प्राचीनावीतिना  
 तथेति तत्रैवोक्ते ॥ अन्नमूलं चिंत्यम् ॥ वार्षिकादितु न भवत्येव ॥ संपिंडनाभावेऽपि  
 तृत्वायोगाद्वचनाभावाच्च (दिवोदासीये) अत्र ते निधनं प्राप्ते विप्रादौ शूद्रजाति  
 वतः । क्रियाः सर्वाः समुद्दिष्टाः संपिंडीकरणां विना ॥ उदकं पिंडदानं च कृत्यं चूडे वि  
 धीयत इति ॥ स्त्रीणां तद्वाहात्प्राक् उदकं पिंडदानं विकल्पः ॥ स्त्रीणां चैके प्रत्ता  
 नां मिति गौतमोक्तेः ॥ स्त्रीशूद्राश्च सधर्माणा इति वचनात्तद्दृष्ट्येवम् ॥ एतद्वयो  
 निमित्ताशौचं सर्ववर्णसमम् ॥ तुल्यं वयसि सर्वेषां मितिक्रान्ते तथैव चेति व्याघ्रपा  
 दोक्तेः (यानितु) निवृत्तचूडके विप्रे विरात्राच्छुद्धिरित्येति ॥ निवृत्ते क्षत्रिये  
 षड्भिर्वैश्येन वभिर्बुध्न्यते । शूद्रे त्रिवर्षे न्युने तु मृते शुद्धिस्तु पंचभिः ॥ अत ऊर्ध्वं मृ  
 तं शूद्रे द्वादशाहं विधीयते ॥ षड्वर्षात्तमतीते तु शूद्रे मासमशौचकमित्यांगिरसादी  
 नि ॥ तानि विशिष्टविगानां चार्तव्यानीति विज्ञाने श्वरमदनपारिजातादयः ॥ ते  
 नैतद्वशाच्छूद्राणां व्यवस्था प्रागुक्ता हेयैव ॥ तुल्ये वयसि सर्वेषां मिति दाक्षिणात्य  
 परम् ॥ अन्यदेशे कौर्मोक्ता व्यवस्थेति शुद्धितत्त्वे ॥ अथ जात्याशौचम् ॥ तच्च हि  
 जपुंसां मुपनयनोर्ध्वं प्रवर्तते ॥ विरात्रमात्रतादेशाद्दशरात्रमतः परम् । क्षत्रस्य द्वा  
 दशाहानि विशः पंचदशैव तु ॥ त्रिंशद्दिनानि शूद्रस्य तदूर्ध्वं न्यायवर्तिन इति याज्ञव  
 ल्क्योक्तेः (यत्तु सगव) विरात्रं दशरात्रं वाशावमाशौचमिष्यत इत्याह ॥ तत्र दशाहे  
 विरात्रमस्पृश्यत्वं ॥ एकदिनेऽपि न्नेत्राशौचद्वये दशाहमस्पृश्यत्वम् ॥ मरणां य  
 दितुल्यं स्यान्मरणोत्तरं कथंचन । अस्पृश्यं तु भवेद्गोत्रं सर्वमेव सत्रांधर्वा मित्यांगिरसा  
 क्तेः ॥ दशाहाशौचपरस्वे दशरात्रमतः परमित्यनेन पौनरुक्त्यापत्तेरिति शुद्धिवि  
 वेकादयः ॥ तन्न ॥ स्मृतिभेदात् विरात्रं दशरात्रं वेति विकल्पायोगाच्च ॥ यस्तु पु  
 श्राणां विद्वानध्याप्यवर्ति विदधाति (तत्राहाश्वलायनः) द्वादशरात्रं महागुरुयुदा  
 नाध्ययने वर्जयेरन्निति ॥ अत्र यावदुक्तं निषेधो वास्पृश्यत्वसाधनं वा ॥ ननु कमर्णाधि

कारः ॥ सकादशाहंते वैश्वदेवोक्तेः ॥ सकादशाहिकं मुक्त्वा तत्र ह्यंते विधीयत इति (शुद्धितत्त्वे तु) त्रयः पुरुषस्य तिसुरवो भवंति माता पिता चार्यश्चेति विष्णोः ॥ पित्रादयो महाशिवः (भर्ताप्युक्तो रामायणे) पतिर्वन्धुरातिभर्ता देवतं गुरुरेव च (शातातपः) पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ॥ एकपदं मुहानां पितृ मातृ नियेधार्थम् ॥ सोदकानां त्रिरात्रम् ॥ अथ हातूदकदायिन इति मनुक्तेः (अग्निपुराणे) सपिंडता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते । समानोदकभावस्तु निवर्तते चतुर्दशे ॥ जन्मनामस्मृते वैकेतत्परंगो वमुच्यते (बृहस्पतिः) दशाहेन सपिंडास्तु शुद्ध्यंति प्रेतसूतके । त्रिरात्रेण सकुल्यास्तु स्नात्वा शुद्ध्यंति गोत्रजाः ॥ स्त्रीशूद्रयोस्तु विवाहो धर्मजात्या शौचम् ॥ वैवाहिको विधिः स्त्रीणामौपनायनिकः स्मृत इत्युक्तेः ॥ दत्तानां भर्तुरेव हि ॥ स्वजात्युक्तमशौचं स्यान्मृतके जातके तथेति ॥ माधवीये ब्राह्मणे च ॥ शूद्रस्य विवाहाभावे पितृशवर्षा धर्ममासः ॥ अनूढभार्यः शूद्रस्तु षोडशाहत्सरात्परम् । मृत्युं समधिगच्छेच्चैन्मासात्तस्यापि नांधवाः ॥ शुद्धिं समधिगच्छंति नात्र कार्या विचारणोत्पराकर्षांश्चोक्तेः ॥ निर्गायामृतमदनपारिजातादौ त्वन्यथोक्तम् (हारीतः) आर्मेजीवंधनादिप्रःसन्नियश्च धनुर्ग्रहात् । आप्रतोदग्रहाद्वैश्यः शूद्रो वस्त्रद्वयग्रहात् ॥ धनुःप्रतोदावष्टमे वदेद्वा दशे वस्त्रद्वयमिति (मेधातिथिस्तु) त्रिरात्रमात्रतादेशादित्यत्र त्रतं कालोपलक्षणार्थम् ॥ सचकालः स्वकीयः सर्वेषां चाष्टमवर्षरूपः ॥ तेन चतुर्णां मिपिवर्णानामुपनयनाभावेऽप्यष्टमादूर्ध्वपूर्णा मेवा शौचम् ॥ तत्रापि प्रागष्टमादिच्छशवः प्रोक्ता इति स्मृत्यंतरादूर्ध्वसंपूर्णमवर्कं त्रिरात्रम् ॥ येऽप्याष्टोडशाद्वेदाल इत्याहुस्तेऽयामप्यष्टमादूर्ध्वम् ॥ शूद्रे मास एव ॥ ऊर्ध्वमष्टम्योवर्षेभ्यः शुद्धिः शूद्रस्य मासिकीति वचनादित्याह ॥ हारलता शुद्धितत्त्वादिगौडग्रन्थेऽवप्युक्तम् (अनुपनीतो विप्र इत्युक्त्वा) अग्र्यते यत्र तत्र स्यादा शौचं न्यहमेव हि । द्विजन्मनामयं कालस्त्रयाणां तु षडाद्विदक इत्यादिपुराणोक्तेरुपनयनं कालोपलक्षणम् ॥ षडब्दपदं मासत्रयाधिकपरम् ॥ गर्भाष्टमेऽष्टमे वा वद इत्युक्तेः (यत्तु जावालः) व्रतचूडाद्विजानां च प्रतीतियुयथाक्रमम् । दशाहं च हसकाहैः शुद्ध्यंति परिहर्तिर्निर्गुणा इति ॥ द्विजादंताः ॥ इदं प्रतीति इत्युक्तेः पंचाब्दे



पनीतपरमिति ॥ तदेतन्नाद्रियतेवृद्धाः (यानितुपराशरः) सकाहाइब्राह्मणाः  
 शुद्धोद्योगिनवेदसमन्वितः । अथात्केवलवेदस्तु द्विहीनोदशभिर्द्वैः ॥ केवल  
 वेदः केवलश्रौतागनेरप्युपलक्ष्यमा ॥ अयंसंकोचोहोमाध्ययनपरस्वनतुसंध्यादा  
 वितिहारलतायां (अंगिराः) सर्वेषामेववर्णानांसतकेमृतकेतया । दशाहाच्छु  
 द्विरेतेयामितिशातातपोब्रवीत् (देवलः) आशौचंदशरात्रंतुसर्वेषामपरेविदुः ।  
 निधनेप्रसवेचैवपश्यंतःकर्मणाःक्षयम् ॥ अत्यंतोत्कृष्टस्यकर्महानौपीडावतोवि  
 प्रपरिचर्यापरम् ॥ शूद्रेदशरात्रमितिहारलतायाम् (दक्षः) सद्यःशौचंतथैकाह  
 स्रहश्चतुरहस्तथा । यत्तदशद्वादशाहश्चपक्षोमासस्तथैवच ॥ मरणांतंयथाचा  
 न्यदशपक्षास्तुसतके (मिताक्षरायांसमृत्यंतरे) चतुर्थेदशरात्रंस्यात्प्रगिनशाःपुं  
 सिपंचमे । यद्येचतुरहाच्छुद्धिःसप्तमेत्वहरेवतु ॥ इत्यादीनितान्यापदनापद्गुणा  
 वदगुणावद्विषयागिदेशांतरभेदाद्वाज्ञेयानि ॥ सद्यःशौचाद्विषडहांताःपक्षाया  
 यावरादिपराः ॥ अत्रमरणांतंजननादिनिमित्ताद्विज्ञम् ॥ शिष्टविगानाच्चादत्त  
 व्यानीतिविज्ञानेश्वरः ॥ अस्नात्वाचाप्यहुत्वाचअदत्वाञ्जंस्तथाद्विजः ॥ सर्ववि  
 धस्यविप्रस्यसर्वदःसतकंभवेदितिदक्षोक्ता ॥ अन्यपूर्वायस्यगेहेभार्यास्यात्तस्यनि  
 त्यशः । आशौचंसर्वकार्येषुदेहेभवतिसर्वदेतिब्राह्मादिवशाद्दृष्टव्येत्यपरार्कम  
 दनपारिजातादयः (साधवस्तु) वृत्तस्वात्प्रयायसापेक्षमद्यसंकोचनंतथेतिक्लि  
 वार्थेयक्तेः) दशाहस्रविप्रस्यसपिंडेमरगोसति । कल्पांतरागिक्वर्वाणाःकलौ  
 भवतिक्लिबधीतिहारीतोक्तेषुचन्यनाशौचपक्षायांतरविषयाः ॥ मरणां  
 तादिपक्षास्तुनिंदार्थवादः (अन्यथा) नामधारकविप्रस्तुदशाहंसूतकीभवेदि  
 तिविरोधःस्यादित्याह (यत्तु देवलः) दशाहादित्रिभागेनकृतेसंचयनेक्रमात् ।  
 अंगस्पर्शनमिच्छंतिवर्णानांतस्वदर्शनइतिपर्याशौचेस्पृश्यतामाह (यच्चानुप  
 नीतात्तिकांताशौचेविरमवादीतेनैवोक्तं) त्वाशौचकालाद्विज्ञेयंस्पर्शनंतुत्रिभा  
 गतइति) तदपियुगांतरेषु ॥ अस्थिसंचयतादूर्ध्वमंगस्पर्शनमेवचतिसाधवीये  
 कलौतन्निषेधात् (यत्तुहारलतायाम्) चतुर्थेहनिर्कृतव्यःसंस्पर्शोब्राह्मणास्य  
 स्त्वितिप्रचेतसेनतेस्व्यहेकाहाशौचेपिचतुर्थाहसर्वांगस्पर्शइति ॥ तन्न ॥ देवला

दिवशेनास्यदशाहगोचरत्वात् ॥ येनवर्गसंकरजामूर्धावसिक्ताद्यास्तेषामाशौ-  
चविशेषः कलौनोपयुक्त इति नोच्यते ॥ प्रतिलोमजानानाशौचम् ॥ मलापकर्ष-  
णार्थतुल्लानमात्रमिति विज्ञानेश्वरः (साधवस्तु) शौचाशौचे प्रकुर्वीरन् शूद्रवर्गस्य  
संकरा इति ब्राह्मोक्ते शूद्रवदाह ॥ हारलतायामप्येवम् ॥ दत्तक्रीतकृत्रिमादिपुत्रेषु  
अहीनवर्गा गामुस्त्रीयुच सपिंडत्वेऽपि प्रसवे मरणोच पूर्वापरपित्रोर्भर्तुश्च विरात्रमेव  
नदशाहादि ॥ अनौरसेषु पुत्रेषु जातेषु च मृतेषु च । परपूर्वसु भार्यासु प्रसूतासु मृतासु  
चेति विरात्रानुवृत्तौ विष्णोक्तेः ॥ सपिंडानां त्वेकाहः ॥ परपूर्वसु भार्यासु पुत्रेषु कृत-  
केषु च । भर्तृपित्रोस्त्रिरात्रस्यादेकाहस्तु सपिंडत इति साधवीये हारीतोक्तेः ॥ मृतके  
मृतके चैव विरात्रं परपूर्वयोः । एकाहस्तु सपिंडानां विरात्रं यत्र वै पितुरिति मरीच्यु-  
क्ते च (शंखः) अनौरसेषु पुत्रेषु भार्यास्त्वन्यगतासु च । परपूर्वसु च स्त्रीयु विरात्रा  
च्छुद्धिरिष्यते ॥ परपूर्वापुनर्भूः ॥ इदं शुवर्गासु (हीनवर्गास्तु शंखलिखितौ)  
परपूर्वसु भार्यासु पुत्रेषु कृतकेषु च । नानध्यायो भवेत्तस्य नाशौचं नोदकक्रिया (ब्रा-  
ह्मणं) आशौचं तु विरात्रं स्यात्समवर्गेषु निश्चितम् (यत्तु षडशीतौ) अन्यपूर्वा  
वरुद्धासु त्रिदिनाच्छुद्धिरिष्यते । तारवेवानन्यपूर्वाह् पंचाहोभिर्विशुद्ध्यतीति ॥  
तत्र पंचाहे मूलं चिंत्यम् (यत्तु ग्राजवल्क्यः) अनौरसेषु पुत्रेषु भार्यास्त्वन्यगतासु चेत्ये-  
काहमाह तद सन्निधौ ज्ञेयम् ॥ यदा पितुरेकाहस्तदा सपिंडानां स्नानम् ॥  
अन्याश्रिते युदारेषु परपत्नीमृतेषु च । गोविणः स्नानशुद्धाः स्युस्त्रिरात्रेणैव  
तत्पितेति प्रजापत्युक्तेः ॥ पितेति बोधुरुपलक्षणात् ॥ तथोपक्रमात् ॥ यत्तु  
दत्तकेपालकप्रतियोगिकपुत्रत्वात्पूर्वपितुर्न विरात्रम् ॥ पूर्वसंबन्धनिवृत्तेषु च  
नदशाहादितिकाश्चित् ॥ तन्न (जनकेऽपि) बीजिकादभिसंबन्धादनुसंध्यादयं ह-  
सितिवाचनिकाशौचस्यानिवार्यत्वात् ॥ पितृमरणोपि दत्तकादीनां विरात्रम्  
(शुद्धितत्त्वे ब्राह्मे) दत्तकश्च स्वयंदत्तः कृत्रिमः क्रीतस्य चेत्युपक्रम्य ॥ मृतके मृत-  
के चैव न्यहाशौचस्य भागिन इत्युक्तेः ॥ स्मृतिकौमुद्यां हारलतायामप्येवम् ॥  
दत्तकस्य पुत्रपौत्राणां जनने मरणोवा सपिंडानामेकाहः ॥ बीजिनश्चेति गौतमेन  
साप्तपौरुषसापिंड्योक्तेः ॥ सपिंडानां चैकाहस्योक्तत्वात् ॥ सपिंडेतु पुत्रीकृते



सपिंडदत्तोरसयोभ्रात्रोस्तत्पुत्रयोर्दशाहगव ॥ तत्राकांक्षाभावात्सपिंडत्वेनदशा  
हप्राबल्याच्च ॥ पर्वापरयोर्भर्तुस्तत्पन्नयोःपुत्रयोस्त्वाह (माधवीयेमरीचिः) मा  
तुरैक्यात्तद्विपित्कौभ्रातरावन्यगोत्रजौ । एकाहंसतकेतवत्रिरात्रंमृतकेतयोरिति  
दिक् (ऊढकन्यानांतुविष्णुराह) संस्कृतासुस्त्रीयुनाशौचम् ॥ पितृपक्षेतत्प्रसव  
मरणोचेत् पितृगृहेस्यातांतदैकरात्रंत्रिरात्रंमरणोत्रिरात्रमिति विज्ञानेश्वरापरार्कौ  
(माधवस्तु) प्रसवेपित्रिरात्रंपित्रोः ॥ एकरात्रंभ्रात्रादिवन्धुवर्गस्य ॥ दत्तानारीपि  
तुर्गोहेसयेताथप्रियेतवा । तद्वन्धुवर्गस्त्वेकेनशुचिस्तज्जनकस्त्रिभिरितिव्राह्मो  
क्तेरित्याह (यत्तुर्कश्चिदाह) पक्षपदेनभ्रातरौगृह्यन्ते ॥ वाक्यांतरेणभगिनीमृ  
तौत्रिरात्रोक्तेरितितर्चिंत्यम् ॥ तदभावेतद्विरोधाच्च ॥ भ्रातुःप्रसवेएकाहः ॥ मृ  
तौत्रिरात्रमतिकेचित् ॥ युक्तातुपक्षिणी ॥ परस्परंमृतौभ्रातृभगिन्योःपक्षि  
णीभवेदितिव्राह्मात् ॥ भ्रातृभिन्नानामेकाहः ॥ वर्गोक्तेः ॥ इतरेयांतुयथावि  
धीतिवक्ष्यमाणावचनाच्च ॥ यत्तुप्रधानगृहेमृतौपित्रोःपूर्णाभ्रातृश्चइतिकश्चि  
त्सन्निर्मूलत्वान्नाशौचम् ॥ पितृपक्षेइत्येतद्विरोधावाचांतः ॥ दत्तानारीपितुर्गो  
हेप्रधानेसूयतेयदा । प्रियतेवासदातस्याःपिताशुध्येत्त्रिभिर्दिनैरितिकल्पतरौ  
शुद्धितत्त्वेच्च ॥ पितृगृहेप्रसवेतुपित्रादीनामाशौचंनस्ति ॥ मृतौपित्रोस्त्रिरात्रम  
स्त्येव ॥ प्रत्ताप्रत्तासुयोषित्सुसंस्कृतासंस्कृतासुच । मातापित्रोस्त्रिरात्रंस्यादित  
रेयांतुयथावधि ॥ अजातदंतासुपित्रोरेकरात्रमितिमाधवीयेशंखकाष्ठाजिनि  
स्मृतेः ॥ बैजिकादभिसंबंधादित्युक्तेष्वच ॥ स्मृत्यर्थसारेष्वेवम् ॥ माधवस्तुइदंवि  
रात्रजातदंतपरम् ॥ दंतोत्पत्तेःप्रागेकरात्रंपित्रोः ॥ सद्यस्त्वप्रौढकन्यायांप्रौढा  
यांवासराच्छुचिः । प्रदत्तायांत्रिरात्रेणादत्तायांपक्षिणीभवेदितिपुलस्त्योक्तेः  
(अन्यप्रकन्यामृतौपित्रोःपक्षिणीत्याहयडशीतावपि) पितृगोहादतोन्यत्रयदिपु  
त्रीप्रसीयते । पक्षिणीतत्रपित्रोःस्यान्नान्येयामितिनिश्चयइति ॥ ग्रामांतरेइय  
मितिस्मृत्यर्थसारे ॥ भ्रातुस्तुपक्षिणी ॥ अशुरयोर्भगिन्यांचमातुलायांचमातु  
ले । पित्रोःस्वसरितद्वचपक्षिणींसपयेन्निशामितिवृद्धवृहस्पतिस्मृतेः (शुद्धित  
त्वेकौर्म) अदंतात्सोदरेसद्यश्चाचूडादेकरात्रम् । आप्रदानात्त्रिरात्रंस्यादशरात्र

मतः परम् ॥ पित्रोर्मृतौ स्त्रीणां विरात्रम् ॥ पित्रोरुपरमे स्त्रीणां सूठानां तु कथं भवेत् ॥ विरात्रेणैव शुद्धिः स्यादित्याह भगवान् यम इति साधवीये वृद्धमनुक्तेः ॥ इदं दशाहान्तः ॥ ऊर्ध्वतु पक्षिणी ॥ भ्रातुर्भगिनी गृहे तस्या वा तद्गृहे मृतौ विरात्रम् ॥ अन्यत्र तु पक्षिणी त्रिदशो तावुक्तम् (ब्राह्मेऽपि) परस्परमृतौ भ्रातुर्भगिन्योः पक्षिणी भवेत् । मातुलाशौचवत्पुत्र्याः पितृव्याशौचमिष्यत इति ॥ शिष्टास्त्वस्य निर्मूलत्वात् पितृव्ये स्नानमात्रमाहुः (त्रिंशच्छ्रुतीकां) प्रेतवाचार्यमातामहदुहितृभ्यस्तु श्रोत्रियैर्विक्रमयाज्यस्वस्त्रीयेषु विरात्रं विदिवसमशुचिः सोदकस्तु भयत्र । पक्षिरायाशौचमृत्विक्कदुहितृभ्यस्तु सहाध्यायिबन्धुव्रयांतेवासिश्च शूभ्रमिष्यश्च शूरभगिनी काभागिनिनेयप्रयातो ॥ मातामह्यांच पित्रोः स्वसरिचविरतौ मातुले मातुलान्यां चाथोसज्योतिरेव स्वविषयनृपतौ ग्रामनाथेन चष्टे । शिष्योपाध्यायबन्धुव्रयगुरुतनयाचार्यभार्यसिगोत्रानुचानश्रोत्रियेषु स्वगृहपरमृतौ मातुले चैकरात्रम् ॥ रात्रिं स ब्रह्मचारिरायथ तु कथमपि स्त्रलपसंबन्धयुक्ते स्नानं वा सोयुतं स्यादिदमपि सकलं सर्ववर्गेषु तुल्यमिति ॥ अत्र मूलं मिताक्षरादौ स्पष्टं ॥ दौहित्रभागिनेययो रूपनीतयोस्त्रिरात्रं ॥ अनुपनीतयोः पक्षिणी ॥ संस्थिते पक्षिणीं रात्रिं दौहित्रे भगिनी सुते । संस्कृते तु विरात्रं स्यादिति धर्मो व्यवस्थित इति वृद्धमनुक्तेः ॥ संस्कृते दाहेन ॥ ते दाहे विरात्रं नान्यथेति गौडाः ॥ तन्न ॥ विशेषवैयर्थ्येति ॥ मातुलादौ सन्निधिविदेशाभ्यां पक्षिरायेकाहयोर्व्यवस्था (मनुः) विरात्रमाहुराशौचमाचार्ये संस्थिते सति । तस्य पुत्रे च पत्न्यांच दिवारात्रमिति स्थितिः ॥ श्रोत्रिये स्वगृहे मृते विरात्रम् ॥ श्रोत्रिये तूपसंपन्नं विरात्रमशुचिर्भवेदिति स्मृतेरिति साधवः ॥ एकग्रामीणो त्वेकाहः ॥ ऋत्विक्सुबहुवल्पकाश्रौतस्मार्तयाजनपरे विरात्रैकरात्रे ज्ञेये ॥ यमुद्यपि कर्मकुर्वतस्य वाचकः शब्दो भवतीति शंभराचार्यैः कर्ममध्ये ऋत्विक्त्वत्तु कृतं तथापि कर्मरायाशौचनियेधात्तदुत्तरमेवैतत्तज्ज्ञेयम् (गौडास्तु) एकोदकानां ज्यहोगोत्रजानामहः स्मृतम् । मातृबन्धौ शूरो मित्रे मंडलाधिपतौ तथेति जाबालोक्तेर्मातृबन्धुत्वेकाहमाहुः ॥ शिष्ये स्वोपनीते ज्यहः ॥ शिष्यसतीर्थब्रह्मचारियुक्रमेणा विरात्रमहोरात्रमेकाह इति साधवीयेवैधायनोक्तेः (अन्यत्र तु मनुः) मातु



लेपक्षिणीं रात्रिं शिथयति क्वांधवेयुर्चेति (बन्धुवयस) आत्मपितृवस्तमातुलपु  
 त्राः ॥ पितुः पितृवस्तमातृवस्तमातुलपुत्राः ॥ मातुः पितृवस्तमातृवस्तमातुल  
 पुत्राश्चेति विज्ञानेश्वरः ॥ अत्रपक्षिणी ॥ पितृवस्मादिकन्यानामहानां त्वेका  
 हः ॥ तद्वधुवर्गस्त्वेकेनेति पूर्वोक्तब्राह्मण (यत्तु यडशीत्यास) सर्वपित्रोर्भगि  
 न्यौ ये ये पितृमहयोस्तथा । ये मातामहयोश्चैव भगिन्यौ तत्प्रजाप्रचयाः ॥ मातु  
 लाः स्वस्यापित्रोश्चपत्न्यश्चैवां प्रजाप्रचयाः ॥ भ्रातरश्चेति सर्वेषु पक्षिणीस्त्वगृ  
 हेऽग्रहम् ॥ सर्वं च गुरजामातृदौहित्रविपदि स्मृतम् (यच्चयसः) जामातरि स्मृ  
 तेषु द्विस्त्रिरात्रेणोभयोः स्मृता ॥ पक्षिणीशालकानां स्यादिति शातातपो ब्रवी  
 दिति ॥ निर्मूलत्वात्निमताक्षरादिविरोधाच्चोपेक्ष्यम् (मदनपारिजाते विठगाः) अ  
 सपिण्डेस्त्वेष्वनिमृतेष्वकरात्रम् (अत्रहरदत्तः) अंतःशवे चेत्यापस्तंबसूत्रमंतःशवे  
 ग्रामेऽधनुःशतादवगच्छन्मभोजयम् ॥ दीपमुदकुंभोपनिधाय तु भुंजीत ॥ यदि स मा  
 नवंशं न गृहमेवं सूतिकायामित्याह (प्रधानगृहमृतौ तु) गृहेयस्य मृतः कश्चिदसपि  
 ङः कथंचन । तस्याप्यशौचं विज्ञेयं त्रिरात्रं नात्र संशय इत्यंगिरसोक्तमिति साधवः ॥  
 स तेन त्रिरात्रमसपिण्डेषु स्वगृहे संस्थितेषु चेति कौर्मव्याख्यातम् (शुद्धितत्त्वे बृहन्म  
 नुः) च शूद्रपतिता प्रचात्यामृता प्रचेतद्विजमंदिरे । शौचं तत्र प्रवक्ष्यामि मनुना भाषितं  
 यथा । दशरात्राच्छुनिमृते मासाच्छूद्रे भवेच्छुचिः ॥ द्वाभ्यां तु पतिते गोहमंत्ये  
 मासचतुष्टयात् ॥ अत्यंतवर्जयेद्गोहमित्येवं मनुरब्रवीत् ॥ अत्यौस्लेच्छः ॥ अ  
 त्यंतः श्वपाक इति वाचस्पतिः (तत्रैवयसः) द्विजस्य मरणोत्प्रेषमविशुद्धातिदिनव  
 यात् (संवर्तः) गृहशुद्धिं प्रवक्ष्यामि अंतस्थशवदूषिते । प्रोत्सृज्य मृन्मयं भांडं सि  
 द्धमन्नं तथैव च ॥ गोमयेनोपलिप्याथ छागेन घ्रापयेद्बुधः ॥ ब्राह्मणैर्मंत्रपूतैश्च हि  
 रण्यकुशवारिभिः ॥ सर्वमभ्युक्षयेद्देष्मततः शुद्धात्यसंशयम् (बृहद्विष्णुः) ग्रा  
 ममध्यगतो यावच्छवस्ति स्य तिकस्य चित् । ग्रामस्य तावदाशौचं निर्गते शुचितामि  
 यात् ॥ गृहेऽपवादी मृतेऽप्येवम् ॥ यत्तु साधवीये प्रचेतसामातृवस्मादियुत्रिरात्र ॥  
 क्तम् ॥ मातृवस्तमातुलयोः च अग्रवशुरयोर्गुरोः ॥ मृते च त्विज्याज्ये च त्रिरा  
 त्रेण विशुद्धातीति ॥ गुरुराचार्यः ॥ ऋत्विक्कुलागतः ॥ तत्स्वगृहमृतौ ज्ञेयम्

श्वशुरयोरन्यत्रमृतावपिसन्निधौविरात्रम् ॥ असन्निधौपक्षिणी ॥ देशांतरेण  
करात्रं ॥ वक्ष्यमाणाविष्णुक्तेरितिमाधवगौडादयः ॥ अन्यत्रतुमातृवस्त्रादि  
युपक्षिणी ॥ पित्रोःस्वसरितद्वचपक्षिणीक्षपयेन्निशामितिवृद्धमनुक्तेः (यत्तु  
वृद्धमनुः) भगिन्यांसंस्कृतायांतुभ्रातृर्यपिचसंस्कृते । मित्रेजामातरिप्रेतेदौहि  
त्रेभगिनीसुते ॥ शालकेतत्सुतेचैवसद्यःस्नानेनशुद्धयतीतितत्तुभ्रातृदौहित्रादौदे  
शांतरे ॥ शालकेतुतजामात्रोःस्वदेशेज्ञेयम् ॥ शालकेतुस्वदेशेऽकाहः ॥ आचा  
र्यपत्नीपुत्रोपाध्यायमातुल्यश्वशुरश्वशू श्वशुर्यसहाध्यायिशिष्यैकरात्रमिति मा  
धवीयेविष्णुक्तेः ॥ हरदत्तीयेदशप्रलोक्यामप्येवम् ॥ श्वशुर्यःशालकः ॥ देशां  
तरेस्नानम् ॥ श्वशुरयोर्देशांतरेऽकाहः (जाबालः) एकोदकानांतुत्र्यहोर्गोत्र  
जानामहःस्मृतम् । सर्वत्रमूल्याभावोपिक्रियाकर्तुर्दशाहतः ॥ गुरोःप्रेतस्यशिष्य  
स्तुपितृमेधंसमाचरेत् । प्रेतोहारैःसमंतदशरात्रेणशुद्धयतीतिमनुक्तेः ॥ शिष्य  
इत्युपलक्षणात् ॥ निरन्वयेसपिंडेतुमृतेसतिदयान्वितः । तदशौचंपुराचीत्वाकु  
र्यात्तुपितृवत्क्रियामिति माधवीयेब्राह्मोक्तेः (दिवोदासीये) सगोत्रेवासगो  
त्रेवायोगिनंदद्यात्सखेनरः । सोपिकुर्यान्नवश्राद्धंशुद्धयैचदशमेहनि ॥ यत्रैक  
विषयेपक्षिण्येकाहादिपक्षद्वयमुक्तं तत्रसन्निधिविदेशमैव्यादिक्रतान्यवस्था ॥  
(त्रिंशच्छ्लोक्याम्) वानप्रस्थेयतौचोपरमतिकुलजेयंढकेवाप्तवः स्याद्योषिद्व  
गोविप्रगुप्त्यैमृतवतितुदिनंयुद्धविद्वेचसद्यः ॥ अत्रमूलमाकरेस्पृष्टम् ॥ युद्धमूर्ध्नि  
मृतस्यस्नानम् ॥ उद्यतैराहवेशस्त्रैःस्रवधर्महतस्यच । सद्यःसंतिष्ठतेयज्ञस्तथाशौच  
मितिस्थितिरितिमनुक्तेः ॥ यज्ञोत्थकर्म ॥ सर्वतदैवेत्यर्थः (यस्तुभारतेराजध  
र्मेषु) अशौच्योहिहृतःशूरःस्वर्गलोकेमहीयते । नहयत्रमुदकंतस्यतस्नानंनार्थ  
शौचकमिति ॥ श्राद्धादिनियेधःसंप्रवादभावपरः ॥ अतएवतत्रकर्णादीनांश्रा  
द्धमुक्तम् ॥ अन्येतुदशपिंडनियेधमाहुर्यतिवत् (यत्तुपराशरः) आहवेपिहता  
नांचणकरात्रमशौचकमितितद्युद्धसतेनकालांतरस्मृतेर्ज्ञेयम् ॥ असन्निधौस्नान  
मितिमाधवः (शुद्धितत्त्वेगिनपुराणो)दंष्ट्रिभिःशृङ्गिभिर्वापिहतास्लेच्छैश्चतस्क  
रैः । येस्त्वान्यर्थेहतायांतिराजन्स्वर्गनसंशयः ॥ सर्वेयामेववर्णानांसत्रियस्यवि



शेषतः (यत्तु बृहस्पतिः) डिंवाहवे विद्युताचराज्ञांगो विप्रपालने । सद्यः शौचं मृत  
 स्यादुस्त्रायं चान्ये महर्षयः ॥ तच्छस्त्रं विना पराङ्मुखं हते च विरात्रम् ॥ राज्ञाव  
 ध्ये हते सद्यः शौचमन्यत्र विरात्रम् (तथैव व्याधूः) क्षतेन प्रियतेयस्तु तस्या शौचं भ  
 वेद्विधा । आसन्नाह्वात् विरात्रं स्यादशरात्रमतः परम् ॥ शस्त्राघाते ज्यहादूर्ध्वं यदि  
 कश्चित् प्रसीयते । आशौचं प्राकृतं तस्य सर्ववर्गो युनित्यशः (शस्त्राघाते क्षतं विना  
 शवस्पर्शे तु हारीतः) शवस्पृशे शाग्रमनं प्रविशेयुरानक्षत्रदर्शनाद्वा व्रीचे दादित्य  
 स्य (यत्तु मनुः) अह्ना चैकेन राज्या च विरात्रैरेव च विभिः । शवस्पृशे विशुद्ध्यन्ति  
 ज्यहात्तूदकदायिन इति ॥ अह्नाराज्याचेत्यहोरात्रमित्युक्तम् ॥ विभिस्त्रिरात्रैरि  
 तिनवरात्रमेवं दशरात्रमित्यर्थः ॥ तत्तदन्नाशने तद्गृहवासेनापदि च ज्ञेयम् (अंगि  
 राः) आशौचं यस्य संसर्गादापतेद्गृहमेधिनः । क्रियास्तस्य न लुप्यन्ते गृह्याणां च  
 न तद्भवेत् ॥ अथ निहाराद्या शौचम् ॥ स्नेहेन सवर्गानि हरितदन्नाशने तद्गृहवासे  
 च दशाहः ॥ तदन्नानशने तद्गृहवासे ज्यहः ॥ गृहावासे च भक्षणो चैकाहः ॥ भू  
 तिग्रहणो न निहरिदाहे च तज्जात्या शौचम् ॥ यदि निहरति प्रेतं तु प्रलोभाक्रांतमान  
 सः ॥ दंशाहेन द्विजः शुल्भ्ये द्वादशाहेन भूमिपः ॥ मासार्धेन तु वैश्यस्तु शूद्रो मासेन  
 शुल्भ्यतीति कौर्मोक्तेः ॥ विजातीयनिहारितु शवजातीयमाशौचम् ॥ अप्रभृतिग्रहो  
 द्विगुणम् ॥ अवरप्रचेद्वरवर्गावरोधाप्यवरं यदि । वहेच्छब्दतदा शौचं द्व्यर्थे द्वि  
 गुणं भवेदिति व्याधीक्तेः ॥ कौर्ममेतदिति गौडाः ॥ दाहेप्येवम् (यत्तु ब्राह्मणो) यो  
 सवर्गान्मुल्येन नीत्वा चैव दहेन्नरः । अशौचं तु भवेत्तस्य प्रेतजातिसमं नृपेतिसदाप  
 दि ज्ञेयम् ॥ सोदके निहारितु दशाह इति माधवः (अलंकरसोतु शंखः) कृच्छ्रपादो  
 सर्पिण्डस्य प्रेतो लंकरो कृते । अज्ञानादुपवासः स्यादशक्तौ स्नानं मिथ्यते ॥ धर्मा  
 र्थमनाथसवर्गाहरसो क्रिया करसो च द्विजस्यानंतयज्ञफलम् ॥ स्नानं प्राणाध्यामो  
 ग्निस्पर्शश्चैतिसाधवीथे ॥ अग्निदेप्येवम् ॥ प्रेतसंस्पर्शसंस्कारैर्ब्राह्मणो नैव दु  
 र्यति । कोटा चैवाग्निदाता च सद्यः स्नात्वा विशुद्ध्यतीत्यपरा कर्तृद्वयपराशरोक्तेः ॥  
 मातुलत्वादिसंबन्धे विरात्रम् ॥ असंबन्धि द्विजान्वहित्वादिहत्वा च सद्यः शौचम् ॥  
 संबन्धे विरात्रमिति प्रेती न सिस्मृतेः (गौतममिताक्षरायां धृष्टाविः) सूतकादिभिः

गांशावं शावाद्द्विगुणामार्तवम् । आर्तवाद्द्विगुणासति ततोपिशवदाहकः ॥  
 अत्रपूर्वेणोत्तरनिवृत्तिरित्यर्थः ( विष्णुः ) मृतं द्विजं शूद्रेणाहारयेन्न शूद्रं द्विजेन  
 ( देवलः ) ब्रह्मचारीनकुर्वीत शववाहार्दिकक्रियाम् । यदिकुर्याच्चरेत्कृच्छ्रम्पुनः  
 संस्कारमेवच ( याज्ञवल्क्यः ) आचार्यापिनुपध्यायान्निहृत्यानिव्रतीव्रती । अनु  
 गमनेतुसपिण्डेनदोषः ॥ विहितं हि सपिण्डानां प्रेतनिर्हरणादिकम् । तेषां क  
 रोतियः कश्चित्तस्याधिकं न विद्यत इति देवलोक्तेः ॥ दोषस्यात्त्वसपिण्डस्य त  
 वनात्रक्रियां विनेति हारीतोक्तेश्च ( समोत्कृष्टवर्णोतुमाधवीयेकगवः ) अनुग  
 म्यशवं बुद्ध्यास्नात्वा स्पृष्ट्वा हुताशनम् । सर्पिः प्राप्रयपुनः स्नात्वा प्राणायामैर्विशु  
 दध्यतीति ॥ हीनवर्णोतुसत्रियेऽहः ॥ वैश्येऽपि सप्तमि ॥ शूद्रे त्रिरात्रम् ॥ सत्रिय  
 स्य वैश्येऽहः । शूद्रेऽपि सप्तमि वैश्यस्य शूद्रेऽहं रिति विज्ञानेश्वरः ( माधवस्तु ) वि  
 प्रस्य वैश्येऽहः ॥ सत्रस्य शूद्रेऽप्येवम् ॥ अन्यतः प्राग्वत् ॥ स्नानाग्निस्पर्शघृता  
 शनानि सर्वत्रेत्याह ( हीनवर्णस्य दाहौर्ध्वदेहिककरणोतुब्राह्मे ) ब्राह्मणो हीनव  
 र्णस्य न कुर्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ कामालोभात्तथा मोहात्कृत्वा तज्जातितां व्रजेत्  
 ( मनुः ) ब्रत्यानां याजनं कृत्वा परेषामन्त्यकर्मच । अभीचारमहीनं च त्रिभिः  
 कृच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ परेषां सर्ववर्णानां हीनेषु तत्र द्वैगुण्यवैगुण्यचातुर्गुण्याद्युद्दाम  
 ( अथरोदने ) समोत्तमवर्णायोः संचयनात्पूर्वं सचैलस्नानमूर्ध्वमाचमनम् ॥  
 हीनवर्णेषु तु संचयात्प्राक्सचैलमूर्ध्वं स्नानमात्रम् ( विप्रस्य सत्रवैश्यविषये तु ब्रा  
 ह्मे ) अस्थिसंचयने विप्रो रौतिचेत्सत्रवैश्ययोः । तदा स्नातः सचैलस्तु द्विती  
 ये हनिशुद्ध्यति ॥ कृते तु संचये विप्रः स्नानेनैव शुचिर्भवेत् ॥ सत्रस्य वैश्येऽप्येवम् ॥  
 शूद्रे तु संचयात्प्राक् विप्रस्य त्रिरात्रम् ॥ सत्रवैश्ययोर्द्विरात्रम् ॥ ऊर्ध्वं तु द्विजाना  
 मेकाहः ॥ शूद्रेऽप्यशूद्रेऽपि विना संचयात्पर्वमेकाहः ॥ ऊर्ध्वं सप्तयोतिरिति मा  
 धवीयेत्यस्य ( शुद्धितत्त्वे पारस्करस्तु ) अस्थिसंचयनादूर्ध्वमासंयावत्तद्विजातयः ॥  
 दिवसेनैव शुद्ध्यन्ति वाससाक्षालनेन च ॥ सजाते दिवसेनैव जगहात्सत्रियवैश्ययो  
 रित्युक्तम् ॥ सपिण्डाणां रोदनं निर्हारादावदोष इत्युक्तमप्राक् ( विज्ञानेश्वरस्तु )  
 मृतस्य बांधवैः सार्द्धं कृत्वा तु परिदेवतम् । वर्जयेत्तदहोरात्रं दानश्राद्धादिकर्मचेति



पारस्करोक्तेः सर्वत्रैकरात्रमाह (अथाशौचाक्षमसरोविष्णुः) ब्राह्मणादीनामा  
 शौचे यः सकृदेवान्नमश्नातितस्य तावदाशौचम् ॥ यावत्तेषामाशौचव्यपगमे प्राय  
 ष्विचत्तमिति (अज्ञानेत्वंगिराः) अन्तर्दशाहभुक्तान्सूतके मृतकेऽपि वा ॥ अस्या  
 शौचं भवेत्तावद्यावदन्नं व्रजत्यधः ॥ प्रायश्चित्तं त्वमत्याविप्रस्यवर्णाक्रमेणोक्ता हव्य  
 हपञ्चाहसप्ताहोपवासः ॥ दशविंशतिः षष्टिः शतञ्च प्राणायामाः पञ्चाग्न्याश  
 नञ्च ॥ अभ्यासे द्विगुणम् ॥ आपदितु प्राणायामशतं पञ्चशतमष्टशतमष्टसहस्रं  
 गायत्रीजपञ्च ॥ सत्यापदितुसवर्णाशौचे त्रिर्यमर्षाङ्गायज्यष्टसहस्रञ्च ॥ स  
 त्रियाशौचे उपवासस्तत्रैश्याशौचे त्रिरात्रोपवासञ्च ॥ शूद्राशौचे कृच्छ्रः ॥ सत्र  
 वैश्ययोः पञ्चशतमष्टशतं गायत्रीजपः ॥ उत्तमेषु शूद्रस्य सर्वत्र स्नानम् ॥ सत्याना  
 पदिविप्रस्यवर्णोऽयुसांतपनकृच्छ्रमहासांतपनचांद्राणि ॥ अभ्यासे तु मासिकद्वैमा  
 सिकत्रैमासिकयणमासिकानीत्यादिमाधवीयादौ ज्ञेयम् ॥ अपदासस्य स्वदास्युत्प  
 न्नस्य सर्पिण्डमृतौ स्नानमात्रेण स्वामिकार्ये स्पृश्यत्वम् ॥ भक्तदासस्य ज्यहोर्ध्व  
 म् ॥ सद्यः स्पृश्यो गर्भदासो भक्तदासस्य हाच्छुचिरिति स्मृत्यन्तरोक्तेः ॥ सत्य  
 कर्मकराः शूद्रदासीदासास्तथैव च ॥ स्नानेशरीरसंस्कारे ग्रहकर्मण्यदूयिता इति  
 शातातपोक्तेः च ॥ एतच्चानन्यसाध्ये तत्कार्यमात्रे ॥ अन्यत्र मासाद्याशौचमस्त्ये  
 व ॥ एवं दास्यामपि ॥ सूतिकायास्तस्याऽस्पृश्यत्वमपि मासमात्रम् ॥ दासीदा  
 सञ्च सर्वो वैयस्यवर्णस्यो भवेत् । तद्वर्णस्य भवेच्छौचं दास्यामासस्तु सूतकमित्यं  
 गिरसोक्तेः (यडशीतावपि) स्वामिशौचेन दासाद्याः स्पृश्यामासात्तु कर्मसु । यो  
 ग्याः स्युर्मासितो दासीसती चेत्स्पृश्यतामियात् ॥ दत्तदासादीनां स्वमपि ङ्गमरणा  
 दौ स्वाभ्याशौचमसंख्यदिनोर्ध्वं सत्यपि मासाद्याशौचे स्वामिकार्ये स्पृश्यतेति ह  
 रदत्तः ॥ दासांतेवासिभृतकाः शिष्याश्चैकत्रवासिनः । स्वामितुल्येन शौचेन शु  
 ध्यंति मृतसूतके इति बृहस्पतिस्मृतेः (दासश्चात्र) गृहजातस्तथा क्रीतोलुब्धो दा  
 यादुपागतः । अन्नकालभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः ॥ मेसितो महत्प्रचरार्थि  
 द्वप्राप्तः पणोजितः । तवाहमित्युपगतः प्रवज्यावसितः कृतः ॥ भक्तदासश्च विज्ञेय  
 स्तथैव बडवाहतः ॥ विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पंचदशस्मृता इति ॥ नास्दोक्त्यु



गर्भभक्तदासौ विनाज्ञेयाः ॥ वडवादासीतया हतस्तामुद्वाह्यदासो जात इत्यर्थः ॥ अन्ते  
 वास्यपितेनैवोक्तः ॥ स्वशिल्पमिच्छन्नाहर्तुर्बाधवानामनुज्ञया । आचार्यस्य वसेदन्ते  
 कृत्वा कालं मुनिश्चितम् ॥ आचार्यः शिष्ये देनं स्वगृहे दत्तं भोजनमिति ॥ शिष्य  
 स्तत्तुल्यो विद्यार्थी (दासादेः स्वामितत्सपिंडमरसोतुविठ्णः) पत्नीनां दासनामा  
 नुलोम्येन स्वामितुल्यमाशौचम् ॥ मृते स्वामिन्यात्मीयमिति प्रतिलोमदासाना  
 माशौचाभावः ॥ वर्यान्तामानुलोम्येन दास्यं न प्रतिलोमत इति याज्ञवल्क्योक्तेः  
 (अथरात्रौ जनने मरसोवा) रात्रिं विभागां कृत्वा द्यभादये चेत्पूर्वदिनमंत्येतत्तरमि  
 तिमिताक्षरायाम् ॥ यत्तु प्रागर्धरात्रात् प्राक्वासूर्योदयात् पूर्वदिनमित्युक्तं तत्र दे  
 शाचारतो व्यवस्था ॥ सर्वत्राशौचसाहितो गनेर्दाहं तद्विज्ञस्य मरणासारस्य ज्ञेय  
 म् ॥ अतस्मिन्मतमुत्क्रांतेराशौचादिद्विजातियु । दाहादग्निमते विद्याद्विदेशस्थे  
 मृते सतीति पैठीनसि स्मृतेः ॥ साग्निराहिताग्निः ॥ आहिताग्निश्चेत्प्रवसन्नि  
 येत पुनः संस्कारं कृत्वा शववदाशौचमिति विशिष्टे विशेषोक्तेः ॥ दाहादेव तु कर्त  
 व्यं यस्य वैतानिको विधिरिति ब्राह्मण (यत्तु) धर्तस्वामिनारामांडारेणाचोक्त  
 साहितो गनेरपि मरणाद्येव दशरात्रं दशाहं शवमाशौचमिति मरणानिमित्तत्वात्  
 स्य ॥ यत्तु दाहादेव तस्याशौचमुक्तं तत्संस्कारनिमित्ताशौचं पृथगेव ॥ तेन गृह्या  
 ग्नेः संस्काराणां विराजम् ॥ श्रौताग्नेस्तु दशरात्रम् ॥ मरणानिमित्तं तु भयोर्दशाह  
 म् ॥ दाहात्प्रागपीतितद्वचनविरोधात् पूर्वस्यैवोत्कर्षान्मल कल्पनालाघवाच्च  
 चिन्त्यम् ॥ अथातिक्रान्ताशौचम् ॥ तत्राशौचमध्ये जननादौ जाते तच्छेयेणाशु  
 द्विः ॥ विगतंतु विदेशस्थं शणायाद्योहनिर्दशम् । यच्छेयं दशरात्रस्य तावदेवाशु  
 चिर्भवेदिति मनूक्तेः ॥ अत्र कोचिदेतत्पुत्रांतरक्तविषयम् ॥ तेयांत्वाशौचमध्ये  
 अवसोपितदाद्येव दशाहादि ॥ पितरौ चेन्मृतौ स्यातां दूरस्थोपि हि पुत्रकः । शु  
 त्वातदिनसारस्य दशाहं सूतकीर्भवेदित्यस्य सर्वापवादत्वादित्याहुस्तत्र ॥ ज्ञातम  
 रणास्य निमित्तत्वादनग्निमतमुत्क्रांतेरित्यादिविरोधाच्च (स्मृत्यर्थसारेपि) जनने  
 मरसोवा प्रथमदिना दूर्ध्वज्ञाते पुत्रादीनां शेषेणैव शुद्धिरिति ॥ यडशीतावपरार्क  
 चैवम् (दशाहादूर्ध्वज्ञाते तु दृढवशिष्टः) मासत्रये विराजं स्यात्परमासेपसिणीत



या । अहस्तुनवमादवागध्वस्नानेन शुद्ध्याति ॥ जननेत्वत्क्रांताशौचं नास्त्येव ॥  
 नाशुद्धिः प्रसवाशौचेन्यतीतेषु दिनेष्वपीति देवलोकतेः ॥ पितुः स्नानं तत्रापि भवत्ये  
 व ॥ निर्देशं ज्ञातिमरणांशुत्वापुत्रस्य जन्मच । सवासाजलमाप्नुत्य शुद्धो भवति मानव इ  
 तिमनक्तेः ॥ तच्चातिक्रांताशौचं दशाहादिजात्याशौचविषयम् ॥ जन्तुपनीता  
 दिनिमित्तविरात्राद्रौ ॥ उपनीते तु विषयं तस्मिन्नेवातिकालजर्मितिव्याघ्रोक्तेः ॥  
 निर्देशं ज्ञातिमरणांशुत्वादिदशाहेत्विति सूक्तेः च (माधवीये देवलस्तु) आत्रि  
 पक्षात्त्रिरात्रं स्यात्परासासात्पक्षिणीतः । परमेकाहमावर्थादूर्ध्वस्नातो विशुद्ध  
 तीत्याह ॥ तत्रापदनापि द्विषयत्वेन व्यवस्था ॥ इदं चैकदेशे ॥ देशान्तरे तु स्नानमात्र  
 म् ॥ देशान्तरमृतंशुत्वाक्तीवैवैस्नानमेयतौ । मृते स्नानेन शुद्ध्यातिगर्भस्य विच्छागोवि  
 रादिति पराशरोक्तेरिति विज्ञानेश्वरः ॥ स्नानं वत्सरांते ॥ अर्वाकत्रिपक्षात्त्रिजि  
 रां यरासासाच्च दिवानिशम् । अहः संवत्सरादवागदेशान्तरमृतेष्वपीति विद्याकतेरि  
 तिसाध्वर्गः ॥ इदं वपिंडानां देशान्तरे स्नानं होदकानामित्युक्तम् (लक्षणां त्वाहबृह  
 स्पतिः) महानद्यन्तरं यत्र सिरिर्वाव्यवधायकः । वाचोयत्र विभिद्यते तद्देशान्तरमु  
 च्यते ॥ देशान्तरं वदं त्येकोऽयि योजनमायतम् । चत्वारिंशद्वदं त्ये त्रिंशदं त्ये तथै  
 व चेति ॥ सत्सर्वमातापितृभिन्नविषयम् ॥ तयोस्तु पितरौ चेदिति पूर्वपैठीनसि  
 वाक्यात्सदापूरांमेव दशाहं हि (स्मृत्यर्थसारेऽपि) मातापितृमरणोदूरदेशेऽपि संवत्स  
 रोर्ध्वमपि पुत्रादशाहादिकं पूरांसाशौचं कुर्यात् ॥ स्त्रीपुंसयोः परस्परं सपत्नीयुच्चैव  
 मिति (शुद्धितत्त्वादयो गौडीस्तु) ऊर्ध्वं संवत्सरादवागध्वं शुद्धेच्छु ते मृतः । भवेदे  
 काहमेवात्र तच्च संन्यासिनां न त्विति देवलोकतेः ॥ ॥ ॥ अत्रो रन्दमध्वे विरात्रसूध्वमे  
 काहः ॥ बंधुमार्तापितामर्ताच ॥ पूर्वोक्तदशाहस्तु कर्त्तव्यं गादिदेशपर इत्याहुः ॥  
 ते बंधुपक्षस्य पुत्रादिपरत्वे मानाभावाद्दुष्येद्याः ॥ (सापत्नमातुस्तु दक्षः) पितृप  
 त्न्यासपेतायां मातृवर्जं द्विजोत्तमः ॥ ॥ संवत्सरेन्यतीतेषु विरामशुचि भवेत् ॥  
 हीनवर्गमातृपुत्रसपत्नीयुच्चैव मिति स्मृत्यर्थसारे ॥ केचित्पितुः प्रत्न्यां प्रसीतायासौ र  
 मेतयेतयोर्विद्याकतेरौ रमे प्रोदमाहुः ॥ यदंशोत्तवर्षे च ॥ सत्सर्ववर्गातुल्य  
 म् ॥ तद्वर्षे वासि सर्वेयामतिक्रांते तथैव चेति व्याघ्रोक्तेः ॥ अथाशौचसंपाते



च्यते ॥ तत्र शाविशावंसूतकैर्मतकस ॥ शाविमूतकंसूतकेशावंवा ॥ तथाप्युत्तरं का  
लतः पूर्वशासमन्यूनमधिकं चेति द्वादशभेदाः ॥ यदैकदिने समन्यूनमधिकं वा शौ  
चद्वयं तत्र तंत्रेणान्यसिद्धिः ॥ द्वयोरेककालत्वात् ॥ यदा तु द्वितीयादिदिने युत्तरं  
सजातीयं शावेजननं वा समकालं न्यूनकालं वा परं स्यात्तदा यदमुपसेषु पूर्वशेषेण शु  
द्धिः ॥ अंतराजन्मसमरसोशेषाहोभिर्विशुद्ध्यतीति याज्ञवल्क्योक्तेः ॥ अंतराज्ञा  
ते इत्यर्थः ॥ ज्ञातस्यैव जननादेर्निमित्तत्वात् ॥ पूर्वाशौचोत्तरं तन्मध्योत्पन्ने जाते तु  
सरमेव कार्यम् (शुद्धितत्त्वेऽप्युक्तम्) पूर्वाशौचांतरं तत्पक्षं समानं लघुवानिमित्तं त  
त्कालादुपरिश्रुतं स्वाशौचहेतुरेव ॥ अज्ञातं तु वा अविज्ञातेन दोषः स्याच्छाब्दादियु  
कथंचनेत्यस्य शौचसांकर्येऽपि प्रवृत्तेः ॥ तेनाज्ञानाद्वयोत्सर्गादौक्ये प्रश्चात्तज्ञाते  
पि नावृत्तिरिति (साधवीयेयमोपि) जनने जननं चेत्स्यान्मरसोमरसांतथा । पूर्वशेषे  
ण शुद्धिः स्यादुत्तराशौचवर्जनम् ॥ अत्र केचिदंतर्दशाहेस्यातां चेत्पुनर्मरसाजन्मनी।  
तावत्स्यादशुचिर्विप्रोयावत्तस्यादनिर्दशमिति ॥ मनुपराशराद्यैर्दशाहस्य  
तुपराशौचेऽप्युक्तं पूर्वशेषेण शुद्धिः ॥ अथ हाद्यत्पाशौचसंपाते तु तत्रैव शुद्धिरित्या  
हुः ॥ हरदत्तोऽप्येवमाह ॥ गौडाग्रप्येवम् ॥ तन्न ॥ याज्ञवल्क्यादिवक्त्रेण दशाहस्य  
तुल्यकालाशौचोपलक्षणात्त्वात् ॥ समानाशौचसंपाते प्रथमेन समापयेत् ॥ अस  
मार्तद्विनायेन धर्मराजवचोयथेति साधवीये शाखोक्तेः ॥ अपराकर्मितासरादि  
विरोधाच्च ॥ यदा तु सूतकेशावंसमन्यूनमधिकं वा तदानुपूर्वशेषाच्छुद्धिः (तदाहं  
गिराः) सूतकैर्मूतकं चेत्स्यान्मूतकैस्त्वथ सूतकम् । तत्राधिकृत्य मूतकं शौचं कुर्याच्च  
सूतके (यद्विंशन्मते) शावाशौचे समुत्पन्ने सूतकं न्तु यदा भवेत् ॥ शावेन शुद्ध्यते  
सूतिर्न सूतिः शावशौचिनी (चतुर्विंशतिमतेऽपि) मृतेन शुद्ध्यते जातं न मृतं जातके  
नतु ॥ अतोऽत्र दशाहजननमध्योतदंते वा अथ हादिशावंतदा पूर्वशावावपितानि  
मित्तं संपृश्यत्वं भवत्येव ॥ मरसोत्पत्तियोगे तु गरीयो मरसां भवेदिति कौर्मि  
(गौतमसंन्यायायां बृहद्विरपि) सूतकाद्विदुषां शावं शावात्तद्विशुद्धा सार्तवम् ।  
अर्तवत्तद्विशुद्धा सति स्तुतेऽपि शिवदीहकः ॥ ॥ अत्र पूर्वपूर्वशातोत्तरेऽपि नित्यं  
स्पृश्यत्वाधिक्यादित्यर्थः (यद्विशोतावपि) स्वभाववहुसूतिस्तु न्यूनशावविशो



विनीतिराविशेषादौर्वर्धिताद्विविदिनैरागतुं कौःसूतैर्बहुत्वं न स्वभावेन ॥ अतस्तत्र  
न्यूनशावस्यापि न पूर्वगा शुद्धिरितिवक्तुं स्वभावेनेत्युक्तम् ( ब्राह्मेपि ) नागतुं कौर  
थाहोभिराशौचमपनुद्यते । न च पातनिमित्तेन शावस्यान्यस्य शोधनमिति ॥ एवं  
नवपक्षाः ॥ यदा तु ज्यहाद्यल्पाशौचमध्ये सजातीयं विजातीयं वा दीर्घकालमुत्तरं  
तदाप्युत्तरं पूर्णाकार्यम् ॥ न पूर्वगा शुद्धिः ॥ स्वल्पाशौचस्य मध्ये तु दीर्घाशौचं भवे  
द्यदि । न पूर्वगा विशुद्धिः स्यात्स्वकालेनैव शुध्यतीत्युक्तं न सोक्तेः ॥ तेन ज्यहादि  
शावमध्ये दशाहादिसूतकोपि न पूर्वगा शुद्धिरित्यप्रसक्तः ॥ शावनिमित्तमस्पृश्य  
त्वं च भवत्येव ( शुद्धिविवेके तु ) शावेन शुद्ध्यते सूतिरिति प्राशुक्ये स्तत्राप्युत्तरा  
शौचनिवृत्तिरुक्ता ॥ तत्र ॥ उत्तरस्य कालाधिक्येन बलवत्त्वात् ( माधवीयेय  
मोपि ) अथ वृद्धिमदाशौचं पश्चिमेन समापयेत् । यथा विरात्रे प्रकांते दशाहं प्रवि  
शेद्यदि ॥ आशौचं पुनरागच्छेत्तत्समाप्य विशुद्ध्यति ( हारीतोपि ) गुरुणालघुशु  
द्धये तु लघुना नैव तदुर्विति शुक्लत्वं लघुत्वं च कालकृतमेव ॥ पूर्वनिरोधात् ॥ सतच्च  
हरदत्तेन स्पष्टमुक्तम् ॥ मितक्षरायामप्येवम् ( यत्तु ) आद्यानां यौगपद्ये तु ज्ञेया  
शुद्धिर्गरीयसी । सरणात्प्रतियोगे तु गरीयो मरणां भवेदिति हारीतकौर्मदितत्रा  
स्पृश्यत्वाभिप्रायं शावस्य गुरुत्वं ज्ञेयम् ( क्वचिदल्पकालेनापि दीर्घकालाशौच  
निवृत्तिमाह देवलः ) परतः परतो शुद्धिर्घट्टद्वौ विधीयते ॥ स्याच्चेत्पंचतमादहः  
पूर्वगौवा विशिष्यते ॥ अस्यार्थः । अथ वृद्धौ दीर्घाशौचे परतो शुद्धिः परमाशौचम् ॥  
यदि पूर्वाशौचमुत्तरस्य पंचमदिनात् परतो नुवर्तते तदा पूर्वगौवशुद्धिः ॥ पूर्वस्योत्तरा  
शौचाधौ च कालव्यापित्वे पूर्वशेषाच्छुद्धिरित्यर्थः ॥ यथा वयस्य मासे गर्भपात  
निमित्तं षडहाशौचमध्ये दशाहपाते पूर्वगौत्तरनिवृत्तिः ॥ यथा वा ज्यहमध्ये स्रा  
वपातनिमित्तं चतुरहपंचाहयोरितिकश्चित् ॥ तत्र ॥ दशाहावधि पूर्वशेषशु  
द्ध्या विदक्रवाक्यविरोधान्न ॥ यथादिदिने पूर्वाशौचमंतरावौ तु द्व्यह इत्यनौ  
चित्याच्च ॥ अस्मदगुरुवस्तु पंचतमादहं आशौचं ततो न्यूनं ज्यहादिचेत्स्यादस्मि  
न्विषये पूर्वगौवा शुद्धिः शिष्यते ॥ दशाहादिराविशेषे ज्यहादिपाते ज्यहाद्यल्पा  
शौचानां परस्परं राविशेषे सपाते च न द्व्यहादिवृद्धिरित्यत्यं माहुः ( क्वचित्पूर्व



शेषेणाशुद्धेरपवादमाह गौतमः ) रात्रिशेषे सति द्वाभ्यां प्रभाते तिसृभिरिति ॥  
 प्रभातेत्ययामे ॥ विशेषे तु द्वाहाच्छुद्धिर्यामिशेषेषु चिच्छयहादिति शातातपो  
 क्तेः ॥ इदं शावांते सतकपाते सजातीये वा तुल्यम् ॥ अत्र केचित् ॥ रात्रिशब्दोऽहो  
 रात्रपरः ॥ अहःशेषे द्वाभ्यां प्रभाते तिसृभिरिति शंखलिखितोक्तेः ॥ अथ यदिद  
 शरात्राः सन्निपतेयुराद्यं दशरात्रमाशौच मानवमादिवसादत ऊर्ध्वद्विरात्रेणाव्यु  
 ष्यायां विरात्रेणोतिबोधायनोक्तेः ॥ पुनः पतेदशाहात्प्राक्पर्वणासहगच्छति दश  
 मेह्निपतेद्यस्याहर्द्वयात्सविशुद्ध्यतीति ॥ प्रभाते तु विरात्रेणादशरात्रेऽवयं विधि  
 रिति देवलोक्तेः ॥ नवमदशमशब्दौ चोपात्यां त्यदिनपरौ ॥ तेन सत्रियादा  
 र्वापतयेत्याहुः ॥ साधवीयेऽप्येवम् ( अन्येत्वाहुः ) अन्तर्दशाहेस्यां तां चेत् पुनर्म  
 रणाजन्मनी । तावत्स्यादशुचिर्विप्रो यावत्तस्यादनिर्दशमिति ॥ मनुपराशरा  
 द्यौर्दशमदिनेनोत्तरस्य शुद्धेरुक्तत्वाद्विरोधः स्पष्ट एव ॥ विरोधे च ॥ यद्वै किञ्चनम  
 नुरवदत्ततद्भेदजम् । कलौ पाराशरस्मृतिरित्यनेन पूर्ववचसां बाधः अतस्त्ववाचस्प  
 तिना ते ग्रामनाकरत्वमुक्तम् ॥ साकरत्वेऽपि जातिमात्रविप्रादिविषयदेशांतरविष  
 यमवायुगान्तरविषयं वास्तु ॥ तेन गौतमीये रात्रिशब्दो नाहोरात्रपरः ॥ रात्रिमात्रा  
 वशिष्टे इति मित्ताक्षरोक्तेः ॥ न कुकविह्वतिरिवान्यथा व्याख्यायुक्ता ( माध  
 वस्तु ) अनिर्गतदशाहमिति पूर्वस्वग्रन्थविरोधादुपेक्ष्य इति ( अस्मत्पितृचर  
 णास्तुबोधायनीये ) आनवमादिवसादिति द्वितीयाशौचस्य नवमं दिनं प्रथमस्य द  
 शममेवाहः ॥ द्व्यहादिवृद्धेः ॥ पूर्वशेषापवादत्वात्तस्य च न्यायतो द्वितीयदिना  
 देवप्रवृत्तेः ॥ अत ऊर्ध्वमिति दशमरात्रिपरम् ॥ शंखलिखितोक्तौ देवलोक्तौ चा  
 हःशेषे दशमेह्निचातीतेरात्रौ पतेदित्यर्थः ॥ दशम्यां पितानामकुट्यादिति वत् ॥  
 तेन न सन्वाद्यैर्विरोधो नापि मित्ताक्षराद्यैरित्याहुः ॥ अपरार्कनिर्यायामृतस्वरसो  
 प्येवम् ( यत्तु तत्रैव ब्राह्मे ) आद्यम्भागद्वयं यावत्सतकस्य तु सतके । द्वितीये पतिते  
 त्वाद्यात्सतकाच्छुद्धिरिष्यते ॥ अत ऊर्ध्वद्वितीयात् सतकान्ताच्छुचिस्मृतः ॥  
 सवमेव विचार्यस्यान्मृतके मृतकान्तरे । मृतकस्यान्तरे यत्र सतकं प्रतिपद्यते ॥ सत  
 कस्यान्तरे वाथ मृतकं यत्र विद्यते ॥ मृतकान्ते भवेत्तत्र शुद्धिर्वर्णायुसर्व्वश इति ॥



अस्यार्थस्तत्रैवोक्तः ॥ पूर्वाशौचचरमाहोरात्रस्य दिनरूपेऽप्राद्यभागद्वयेऽन्याशौ-  
 चपाते पूर्वराशुद्धिः ॥ भागद्वयोर्ध्वरात्रौ सतकान्तरेऽद्वितीयात्पूर्वभिन्नात्सतकांता-  
 द्वयहादिरूपाच्छुद्धिरिति ॥ अपराकृत्वाशौचकालं त्रिधा विभज्य निशु-  
 यत्वेनेदमुक्तम् ॥ अस्यवचनस्य निर्मूलत्वात्किरजोक्तिरेव ॥ अतः पूर्वाशौचान्त्य-  
 रात्रावन्याशौचेहोरात्रद्वयमधिकं रात्रेरन्त्ययामेतु दिनत्रयमिति भेदचरणोपदि-  
 श्यः पन्थाः ॥ सतत्सम्पूर्णाशौचसम्पातेऽप्येव ॥ रात्रिशेषेऽत्रिरात्रादिसम्पाते तु पूर्व-  
 शेषेणैव शुद्धिः ॥ द्विरात्रादिवृद्धेः पूर्ववाक्यैर्दशाहविषयत्वादपवादाभावे शेष-  
 शुद्धेरेव सामान्यतः प्रवृत्तेः ॥ षडशीतौ तु दशाहान्तेऽप्यहपातेऽपि द्वित्रिदिनवृद्धि-  
 रुक्ता ॥ रात्रिशेषेऽप्यदाशौचं पूर्वमधिकमापतेत् । ऊर्ध्वदिनद्वयपूर्व्याद्यामशेषे-  
 दिनत्रयमिति ॥ अनधिकं समन्यनं वा तत्तुच्छम् ॥ निर्मूलत्वादन्तेऽपि क्षिराद्यादि-  
 पातेऽपि द्विरात्रादिवृत्त्यापत्तेः प्रच ॥ पूर्वाशौचांतरवर्धितद्वित्रिदिनमध्येऽधिका-  
 शौचांतरपाते तु वर्धितस्याल्पत्वादधिकेनैव शुद्धिः ॥ न च वर्धितस्य पूर्वशेषात्त्रयं शं-  
 कनीयम् ॥ रात्रिशेषपूर्वशेषशुद्ध्यापवादेनैमित्तिकावृत्तिन्यायोऽजीवनात् ॥  
 अपवादाभावेऽतस्मात्स्य प्राप्तेः ( अपवादांतरमाहशंखः ) मातर्यग्रे प्रसीताया मशु-  
 द्धौ म्रियते पिता । पितुः शेषेण शुद्धिस्तान्मातुः कुर्यात्तु पक्षिणीम् ॥ पादत्रयं स्पष्ट-  
 म् ॥ तुर्यस्य त्वयमर्थः ॥ पित्राशौचमध्ये मातृमृतौ पित्राशौचान्ते मातुः पक्षिणीम्  
 धिकां कुर्यादिति ॥ अत्राशुद्धावित्युक्तेरात्महादेः पितुराशौचाभावान्मातृमरणो-  
 नपक्षिणी ॥ किन्तु पूर्णमेवाशौचम् ॥ इयंच पक्षिणी तृतीयादिदिनपरा ॥ नाद्य-  
 दिनद्वये ॥ प्रतिनिमित्तनैमित्तिकावृत्तिन्यायापवादपूर्वशेषापवादत्वादिति पितृ-  
 चरणाः ॥ सपिण्डाद्याशौचेन मातापित्रोराशौचापगमेनास्त्येव ॥ एवं भर्तुरपि ॥  
 इयंच पक्षिणी दशमदिनात्पूर्वमातृमरणो ज्ञेया ॥ दशम्यां रात्रौ तत्प्रभाते वा मातृम-  
 रणोऽप्यहद्वयसमुच्चीता पक्षिणीति कश्चित् ॥ तन्न ॥ संख्यांतरोपजननापत्त्याऽप्य-  
 हादिश्रुति बाधापत्तेः ॥ अतस्त्वैकादेया यद्देया इत्यादौ श्रुतसंख्याबाधापत्तेः स-  
 मुच्चयोऽतिरस्तेऽहद्वये ॥ गुरुशालधोरंतरगतेः ॥ गुरुशालधुशुद्धेऽदित्युक्तेः प्रच ॥  
 मातुस्त्वारोहगतुनपक्षिणी ॥ यदानारीविशेदग्निं प्रियस्याप्रियवांछया । तदा

शौचं विधातव्यं भर्वा शौचक्रमेणाहीति पृथ्वीचन्द्रोदये लघुहारीतोक्तेः ( तत्रैव  
यडशीतिमतेऽपि ) मृतं पतिमनुव्रज्य पत्नी चेदनलंगता । न तत्र पक्षिणी कार्या पैतृ  
कादेव शुल्क्यति ॥ पुत्रो न्योवारि न दस्तस्यास्तावदेवाशुचिस्तयोः । नवश्राद्धञ्च  
पिराडं च युगपत्तु समापयेत् ॥ गृहीता शौचानां पुत्राणां पितुः संस्कारे मातुः सपिंड  
स्य वामरगो नायं निर्णयः ॥ अतिक्रान्तकालाद्विद्यमानमिमित्तस्य बलवत्त्वात् ॥  
द्वादशवर्षात्तरं संस्कारा शौचमध्ये सपिराडमरगोऽप्येवम् (यत्तु अपरार्कब्राह्मे) न  
खेदेवादात्साध्वीस्त्री न भवेदात्मघातिनी । ज्येष्ठा शौचे तु निवृत्ते श्राद्धं प्राप्नोति शा  
स्त्रादितितद्भर्तुराशौचोत्तरमन्वारो हरो विरात्रा शौचपरमिति पृथ्वीचन्द्रः ॥  
ब्राह्मणादेः क्षत्रियाद्यनुगमनेत्पाशौचपरमित्यपरार्कः ( शुद्धितत्त्वादयोगौडा  
स्तु ) भर्तुराशौचोत्तरमन्वारो हरो विरात्रम् ॥ सहगमने तु संपूर्णम् ॥ युद्धहतस्य  
सद्यः शौचे न्वारो हरो ब्राह्मोक्तेस्त्रिरात्रत्वात् ॥ भर्तुरपि ज्येष्ठा पिराडदानम् ॥  
यकचिन्नोत्तु सद्यः शौचमित्याहुः ॥ अन्यत्प्रागुक्तम् ॥ पूर्वशेषेणाशुद्धेरपवादांतर  
मुक्तं यडशीत्याम् ॥ पूर्वाशौचेन याशुद्धिः सूतके मृतके च सा । सूतिकामग्निर्दाह  
त्वा प्रेतस्य च सुतानपि ( निर्णयामृते स्मृतिसंग्रहेऽपि ) इयं विशुद्धिरुदिता सूतिका  
मग्निर्दस्विना ॥ इदं मूल्येन दाहकरो मातुलादिसम्बन्धेन दाहमात्रकरो तु विरा  
त्रमेवेत्युक्तं प्राक् ( वृद्धात्रिः ) सूतकात्तद्विशुद्धां शावं शावात्तद्विशुद्धां मातृवम् । आ  
र्तवात्तद्विशुद्धां सूतिस्ततोऽपि शवदाहकः ॥ तथा शौचसंपातेऽपि न शावजननमि  
त्तकार्यप्रतिबन्धः ॥ आशौचे तु समुत्पन्ने पुत्रजन्मयदा भवेत् । कर्तुं स्तात्कालि  
की शुद्धिः पूर्वाशौचेन शुल्क्यतीति प्रजापतिस्मृतेः ( आशौचे तु द्विविधेऽपि शाता  
तपः ) अन्तर्दाहे च जननात्पश्चात्स्यान्मरणाद्यदि । प्रेतमुद्दिश्य कर्तव्यं पिराडदानं  
यथाविधि ॥ प्रारब्धे प्रेतपिराडे तु मध्ये चेज्जननं न भवेत् । तथैवाशौचपिराडांस्तु  
शेषान्दद्याद्यथाविधि ॥ मातुः पक्षिणी ॥ मध्ये पितुरेकादशाहं कुर्यात् ॥ आद्यं  
श्राद्धमशुद्धोऽपि कुर्यादेकादशे हनोऽतिस्मृतेः ॥ केचित्त्रिदं क्षत्रियादिपरम् ॥ विप्रा  
देस्त्वाशौचांतरसकादशाहश्राद्धं नेत्याहुः ( अतस्त्वविज्ञाने श्वरेणा ) दशमं पिराडमु  
त्सृज्य रात्रिशेषे शुचिर्भवेदिति शुचित्वं न ह्यैकोद्विष्टांगविप्रनिमंत्रणपरमिति वद



तातवशुद्धेरंगत्वं दर्शितम् ॥ सर्ववृषोत्सर्गशय्यादानादावपि देवयज्ञिकेन त्वाशौ-  
 चांतरेऽपि भवत्येवेत्युक्तम् ॥ अथाशौचापवादः ॥ सचपञ्चधा ॥ कर्तृतः द्रव्यतः मृ-  
 तदोषतः विधानाच्च ॥ आद्यो ब्रह्मचारी इत्यादिषु ॥ नैष्ठिकानां वनस्थानां यती-  
 नां ब्रह्मचारिणां ॥ नाशौचं कीर्तितं सद्भिः पतिते च तथा मृत इति कौर्मोक्तेः ॥ तु-  
 र्युपादेशावेवापि तथैव चेति देवतपाठः ॥ आशौचमन्त्यकर्मोपलक्षणम् ॥ ब्रह्म-  
 चारी न कुर्वीत शववाहादिकाः क्रियाः । यदि कुर्याच्चरेत्कृच्छ्रं पुनः संस्कार-  
 मेव चेति देवोक्तेः ॥ सतत्पित्राद्यतिरिक्तविषयम् ॥ आचार्यस्वमुपाध्यायं मातरं  
 पितरं गुप्तम् । निर्हृत्य तु ब्रती प्रेतं न ब्रतेन वियुज्यत इति मनुक्तेः (हारीतः) आचार्य-  
 स्वमुपाध्यायं पितरं मातरं गुरुम् । निर्हृत्य तु ब्रती प्रेतं न ब्रतेन वियुज्यते ॥ मातापित्रो-  
 र्स्तु यत्प्रोक्तं ब्रतचारी तु पुत्रकः । ब्रतस्थोऽपि हि कुर्वीत पिंडदानोदकक्रियाम् ॥ भव-  
 त्यशौचं नैवास्य न वाग्निस्तस्य लुप्यते । स्वाध्यायं च प्रकुर्वीत पूर्ववद्विधिदर्शितम्  
 (संवर्तः) अन्यगोत्रोपसंबंधः प्रेतस्याग्निं ददाति यः । पिंडं चोदकदानं च सदशाहं स-  
 माचरेत् ॥ निर्हरणमन्त्यकर्मपरम् ॥ एवं मातामहस्य ॥ यथा ब्रतस्थोऽपि सुतः पितुः  
 कुर्यात्क्रियां नृप । तथा मातामहस्यापि दौहित्रः कर्तुमर्हतीत्यपरा कर्माविष्ठयोक्तेः ॥  
 मातापित्रोरुपाध्यायाचार्ययो रौर्ध्वदेहिकम् ॥ कुर्वन्मातामहस्यापि ब्रती न भ्रष्ट-  
 ते ब्रतादिति कालादर्शाच्च ॥ तत्रान्त्यकर्मनिमित्तमस्पृश्यत्वं दशाहमस्त्येव ॥ सगो-  
 त्रो वा सगोत्रो वा योऽग्निं दद्यात्सखेनरः । सोऽपि कुर्यान्न वश्राद्धं शुद्धोत्तु दशमे हनीति  
 दिवो दासोक्तवचनात् ॥ अतएव ब्रह्मचारिणाः शवकर्मिणां ब्रतान्निवृत्तिरन्यत्र मा-  
 तापित्रोर्गुरोश्चेति गौतमीये ब्रतनिवृत्तेरेव पर्युदासो नाशौचस्य ॥ संध्यादिकर्मलो-  
 पस्तु नास्ति ॥ नत्यजेत्सूतके कर्म ब्रह्मचारी स्वकं कचिदिति छंदोगपरिशिष्टात् ॥  
 पित्रोर्गुरोर्विपत्तौ तु ब्रह्मचार्यपियः सुतः । सुब्रतश्चापि कुर्वीत अग्निपिंडोदक-  
 क्रियाम् ॥ तेनाशौचं न कर्तव्यं संध्याचैव न लुप्यते । अग्निकार्यं च कर्तव्यं सायं प्रात-  
 र्प्रचनित्यश इति चंद्रिकायां संवर्तोक्तेः च ॥ अत्र कर्मनिधिकाररूपाशौचनियेध-  
 एव (अपरार्कमाधवादयस्तु) सकाहमाशौचमाहुः आचार्यवाप्युपाध्यायं गुप्तं वा  
 पितरं च वा ॥ मातरं वा स्वयंदग्ध्वा ब्रतस्थस्तत्र भोजनम् ॥ कृत्वा पतति नेतस्मात्तप्रे

तान्नं तत्र भक्षयेत् अन्यत्र भोजनं कुर्यान्न च तैः सह संवसेत् ॥ सकाहमशुचिर्भूत्वा द्विती  
येह निशुल्क्यतीति ब्राह्मोक्तेः ॥ तदन्नं भोजने तु प्रायश्चित्तं पुनरुपनयनमाशौचं च ॥  
दिवोदासादयस्तु ब्राह्मोक्तेः प्रथमे द्विसंध्यादिलोपः ॥ ब्रह्मचारी यदा कुर्यात् पिण्डं  
निर्वपणां पितुः ॥ तावत्कालमशौचं स्यात् पुनः स्नात्वा विशुद्ध्यतीति प्रजापतिवचना  
त् ॥ द्वितीयाहादौ पिण्डदानकाले सवात्पृथग्यत्वं मात्रं नान्यदेत्याहुः ॥ दशाहमस्पृश्य  
त्वेऽपि कर्मागस्नानविधानार्थमेतदिति युक्तम् ॥ अंत्यकर्म करणोत्तु ब्रह्मचारिणाः पि  
त्रादिसरगोप्याशौचाभाव एव ॥ सोऽपि ब्रह्मचार्यकाल एव ॥ समावर्तनोत्तरं तु पूर्वमृ  
तानां ज्येष्ठाशौचं भवत्येव ॥ आदिष्टीनोदकं कुर्यादाव्रतस्य समापनात् । समाप्ते तु  
दकंदत्वा त्रिरात्रमशुचिर्भवेदिति मन्यते ॥ तत्रापि विकल्पः ॥ पितर्यपि मृते नै  
वां दोषो भवति कर्हि चित् । आशौचं कर्मणो ते स्यात् ज्येष्ठा ब्रह्मचारिणामिति  
कुंदोगपरिशिष्टात् ॥ तथा कृतजीवच्छादनेन किमप्याशौचं न कार्यमिति हेमाद्रिः  
( शुद्धितत्त्वे कौर्म ) सद्यः शौचं समाख्यातं दुर्भिक्षे चाप्युपद्रवे । डिं बाहवहतानां च  
विद्युतापाथि वैर्द्विजः ॥ उपद्रवे त्यंतमरके ॥ उपसर्गमृते चैव सद्यः शौचं विधीयत  
इति पराशरोक्तेः ॥ उपसर्गो त्यंतमरक इति शूलपाठान्निरुद्धभट्टादयः ( याज्ञव  
ल्क्योऽपि ) आपद्यपि च कष्टायां सद्यः शौचं विधीयत इति मरणा समयेऽपि नाशौचम्  
( तथा च शुद्धिरत्नाकरेदसः ) स्वस्थकाले त्विदं सर्वं सूतकं परिकीर्तितम् । आपद्ग  
तस्य सर्वस्य सूतकेऽपि न सूतकम् ॥ अतः सति वैराग्ये संन्यासेऽप्यातुरस्य भवतीति के  
चित् ( अथ कर्मतः त्रिंशच्छ्लोकां ) तत्तत्कार्येषु सत्त्विब्रति नृप नृपवद्दीक्षितस्त्विक्  
स्वदेशं शपत्स्वप्यनेकश्रुतिपठनभिर्यक्ता रुशिल्पातुराणाम् ॥ संप्रारब्धेषु दानो  
पनयनयजनश्राद्धयुद्धप्रतिष्ठाच्छूडातीर्थार्थयात्राजपपरिणायनाद्युत्सवेऽथेतदर्थे ॥  
नाशौचमिति शेषः ॥ सत्त्वी अन्नसत्रवान् ॥ मुख्यसत्रस्य दीक्षितपदात्सिद्धेः ॥ ब्र  
ह्मो अनंतव्रतादिनियमवान् ॥ नव्रतिनां व्रते इति विष्णुक्तेः ( प्रचेताः ) कारवः शि  
ल्पि नो वैद्यदासीदासास्तथैव च । राजानो राजभृत्याश्च सद्यः शौचाः प्रकीर्तिताः ॥  
कारवः संपकाराद्याः ॥ शिल्पिनश्चैलनिर्गोजकाद्याः ॥ आतुरस्य व्याधिना  
शार्थदानादौ तुलादानादेः ॥ प्रारंभो नादीश्राद्धसंकल्पो वा ॥ यजनंतडागोत्सर्ग



कोटिहोमादिः ( लघुविष्णुः ) व्रतयज्ञविवाहेयुग्राह्येहोमेऽर्चनेजपे ॥ आरब्धे  
 सतकंनस्यादना रब्धेतुसतकम् ॥ प्रारम्भोवरगांयज्ञेसंकल्पोव्रतसत्त्वयोः । नां  
 दीश्राद्धंविवाहादीश्राद्धेषाकपरिक्रियेति ॥ पाकस्यपरिसमंतात्क्रिया ॥ पाक  
 प्रोक्षणमिति शुद्धिप्रदीपस्तन्मंदं ॥ सूढेर्योगादलवत्वात् ॥ तीर्थेति आशौचे आ  
 कस्मिन्तीर्थप्राप्तौ ॥ विवाहदुर्गायज्ञेषुयात्रायांतीर्थकर्मणि । नतत्रसतकंत  
 द्रव्यकर्मयज्ञादिकारयेदितिपैठीनसिरमृतेः ॥ अत्रविशेषःप्रागुक्तः ॥ जपःपुर  
 प्रचरणादिःस्तोत्रपाठः ॥ अविच्छेदेनसंकल्पितहरिवंशश्रवणादिषुच ( अत  
 एवोक्तंब्राह्मे ) गृहीतनियमस्यापिनस्यादन्यस्यकस्यचिदिति ॥ एवंदेवपूजादि  
 (मदनपारिजातेयमोपि) शिवविठ्ठावर्चनंदीक्षायस्यचारिणपरिग्रहः । श्रौतक  
 र्माणि कुर्वीतस्नातःशुद्धिमवाप्नुयात् (गौडशुद्धितत्त्वमंत्रमुक्तावल्ल्यां) जपोदेवा  
 र्चनविधिःकार्यादीक्षान्वितैरैः । नास्तिपापंयतस्तेषांसतकंवायतात्मनाम्  
 (राघवभट्टीयेनारदः) अथसतकिनःपूजांवक्ष्याम्यागमचोदिताम् । स्नात्वानि  
 त्यंचनिर्वर्त्यमानस्याक्रिययातुवै ॥ बाह्यपूजाक्रमेणैवध्यानयोगेनपूजयेत् ॥ य  
 दिकामोचचेत्कामीनित्यंपूर्ववदाचरेत् (यत्तुनृसिंहकल्पे) सदामंत्रजपंमुक्ताय  
 दिस्यादशुचिर्नरः । मनसावहितस्तवस्मरेन्मन्त्रंनतचरेत् ॥ तन्मन्त्राद्याशौचप  
 रम् (रामार्चनचन्द्रिकायां) अशुचिर्वाशुचिर्वापिगच्छंतियुन्त्स्वपन्नपि । मंत्रै  
 कस्मरणांविद्वान्मनसैवसदाभ्यसेत् ॥ कालनियमाभावेतुस्तोत्रहरिवंशादिहे  
 यमेव ॥ उत्सवोरथयात्रादिः ॥ सयुनाशौचम् ॥ अयंचाशौचाभावोन्नयगतित्वे  
 आर्तोचज्ञेयः ॥ अत्रमूलमाकरेस्पष्टम् ॥ अत्रदीक्षितस्यअवभृथात्पूर्वमेवाशौचाभा  
 वः ॥ तत्रादित्वाशौचमस्त्येव ॥ तेनवैतानोपासनाःकार्याइतिवैतानत्वेप्यवभृ  
 थादिनभवत्येव (अतएवोक्तंमाधवीयेब्राह्मे) तद्वद्गृहीतदीक्षस्यवैविध्यस्यमहा  
 मखे । स्नानेत्ववभृथेयावत्तावत्तस्यनसतकमिति ॥ वैतानोपासनाःकार्याइत्यनेनै  
 वसिद्धेऽहं त्विजांदीक्षितानांचेतिपुनर्दीक्षितग्रहणां यजमानेस्वयंकर्तृत्वार्थस्नान  
 प्राप्त्यर्थवेतिविज्ञानेश्वरः ॥ वस्तुतस्तुदीक्षयासंस्कृतस्यप्रागवभृथात्कर्मप्राप्त्यर्थं  
 दीक्षितग्रहणम् ॥ तेनततःपूर्वनियेधसव ॥ यत्तु प्रारम्भोवरगांयज्ञेइतितद्वृत्ति

कूपरम् (तथा च छन्दोगपरिशिष्टे) नदीक्षिणयाः परं यज्ञेन कृच्छ्रादितपश्चरन्ति ॥  
 शुद्धितत्त्वेऽप्येवम् ॥ ऋत्विजांचमधुपर्कान्तरमाशौचाभावः ॥ गृहीतमधुपर्कस्य  
 यजमानातु ऋत्विजः । पश्चादशौचेऽपि तत्तेन भवेदिति निश्चय इति ब्राह्मणम् ॥  
 (अतस्त्वरामांडारः) चतुर्णां वरणापक्षेऽन्येषामाशौचेऽन्यत्रागमयितव्य इत्याह  
 एवं स्मार्तेऽपि ॥ तुलाकोटिहोमादौ मधुपर्कसति दोषाभावो ज्ञेयः ॥ यत्तु प्रारम्भो व  
 रणां यज्ञ इति तत्रापि मधुपर्कान्तं ज्ञेयम् ॥ तेनाधानेष्टिपशुबन्धादौ तदभावादन्ये भवं  
 तीति सिद्धम् (अपवादांतरमाह याज्ञवल्क्यः) वैतानोपासनाः कार्याः क्रियाश्च शु  
 त्तचोदनात् ॥ तत्र त्यागमात्रे स्नानोत्तरं स्वयं कर्तृत्वम् ॥ श्रौते कर्मणि तत्कालं स्नातः  
 शुद्धिमवाप्नुयादिति स्मृतेः ॥ त्यागातिरिक्ते तु श्रौते स्मार्ते चान्यस्यैव कर्तृत्वम् ॥  
 सूतकेऽपि सूतके चैव अशक्तौ श्राद्धभोजने । प्रवासादिनिमित्ते युहावये च तुहापयेदिति  
 बृहस्पत्युक्तेः ॥ नित्यानि निवर्तेरन्यैतानवर्ज्यम् ॥ शालाग्नौ चैकेऽन्यस्य तानि कुर्यु  
 रिति पैठीनसि स्मृतेऽर्चोति विज्ञानेश्वरः ॥ एकग्रहणं प्रजार्थं ॥ तेन स्मार्तकार्यमेवे  
 ति हारलतायाम् ॥ दाक्षिणात्यास्तु विकल्पमाहुः (अपराकादिनिबन्धास्तु)  
 श्रौतं सर्वं स्वयं कार्यं ॥ स्मार्ते तु त्यागातिरिक्तेऽन्यस्यैव कर्तृत्वम् (त्यागमात्रे तु स्व  
 स्य) कर्मवैतानिकं कार्यं स्नानोपस्पर्शवान् स्वयमिति हारीतोक्तेः ॥ दर्शचपरां मा  
 संच कर्मवैतानिकं च यत् । सूतकेऽपि त्यजेन्मोहात् प्रायश्चित्तोपतेर्द्विज इति मरी  
 च्युक्तेः ॥ जन्महान्योर्वितानस्य कर्मत्यागो न विद्यते । शालाग्नौ केवलो होमः का  
 र्यवान्यगोत्रजैरिति जाबालोक्तेऽप्येत्याहुः ॥ आशार्क्येवम् ॥ याज्ञिका अप्ये  
 वम् ॥ सूतके तु समुत्पन्ने स्मार्तकर्म कथं भवेत् । पिण्डयज्ञं च रुहोमससगोत्रेणाकार  
 येदिति जातु करार्योक्तेऽप्यत्र ॥ चरुः स्मार्तस्थालोपाकः ॥ अवरणाकर्मादिश्चेति  
 विज्ञानेश्वरः ॥ प्रारब्धं तु संपिंडेनापि कार्यम् ॥ न च तत्कर्म कुर्वाणाः सनाभ्याप्यश  
 चिर्भवेदिति मनूक्तेः (छन्दोगपरिशिष्टेऽपि) होमः श्रौते तु कर्तव्यः शुठकाच्चेन फले  
 न वा । अकृतं हावयेत् स्मार्ते तदभावे कृताकृतम् ॥ अकृतं वीह्यादि ॥ कृताकृतं तुला  
 दि ॥ स्मार्तहोमादौ तु विकल्पो ज्ञेयः ॥ शालाग्नौ चैक इति प्रागुक्तेः ॥ यदा करणां  
 तदान्यद्वारा ॥ अत्रेदं तत्त्वम् ॥ येषां बह्वृचादीनां द्वादशरात्रमहोमेऽपि नाग्निवि



च्छेदस्तैर्नकार्यम् ॥ तैत्तिरीयाद्यैः कार्यम् ॥ विराजमहूयमानोग्निर्लौकिकः संप्र-  
 द्यते इति सुदर्शनभाटयेवचनात् ॥ समाख्येदेव नौतेनापिन कार्यम् ॥ किंतु पुनरा-  
 धानमेव ॥ समारोपप्रत्यवरोहयोराशौचापवादाभावादनन्यकर्तृकत्वाच्च ॥ अ-  
 न्यथा पुनराधानमपि स्यात् ( यत्त्वाश्चलायनः ) सौचापिसूतकेशावपर्वणीष्टिंम-  
 हापदि । पुठपवत्यांचभार्यायां न कुर्यात्तां कदाचन ॥ स्मार्तग्निरः सूतकेशावेस्त्वयं  
 न जुहुयात् द्विजः । श्रौतग्निरस्तु स्रद्धुत्वासमाप्ते वास्त्वयं हुनेदिति तदपि समाख्येदप-  
 रम् ( तदाह सख्ये ) स्मार्तग्निरात्मनो न्येयामभावे सूतकादिषु । समारोप्यतदंतेषु  
 विहृत्य जुहुयात्स्त्वयमिति ( तथाच मनुः ) प्रत्युद्देनाग्निं युक्रिया इति वैश्वदेवस्त्वत्त्व-  
 ग्निसाध्यत्वेऽपि वचनान्निवृत्तिः ॥ विप्रोदशाहमासीत् वैश्वदेव विवर्जित इति सं-  
 वर्तकतेः ( यद्यपि ) पंचयज्ञविधानंतु न कुर्यान्मृतजन्मनो रितितेनैवोक्तेः पर्वनि-  
 येषोऽवग्रहस्तथाप्यापस्तंबादीनां वैश्वदेवस्य पंचयज्ञभिन्नत्वात् पृथङ्निषेधः ॥ हर-  
 दत्तस्त्वाशौचेऽपि बहुचैव वैश्वदेवः कार्यः ॥ तस्य हवनध्यायौ यदात्मा शुचिर्यद्देश-  
 इति ब्रह्मयज्ञस्यैवाशौचेऽपि शिष्यनिषेधात् ( संध्यादीनामप्यवादमाहा परार्कपु-  
 लस्त्यः ) संध्यामिष्टिं च संहोमं यावज्जीवं समाचरेत् । न त्यजेत् सूतके वापि त्यजन्ना-  
 च्छेदधो द्विजः ॥ सूतके मृतके चैव संध्याकर्म समाचरेत् । मनसोच्चारयेन्मंत्रान् प्रा-  
 गायाममृते द्विजः ( यत्तु चंद्रिकायां जाबालः ) संध्या पंचमहायज्ञानैत्यकं स्मृ-  
 तिकर्म च । तन्मध्ये हापयेत्तेषां दशाहं ते पुनः क्रियेति ( यच्च संवर्तः ) सूतके कर्मणां  
 त्यागः संध्यादीनां विधीयते ( यच्च विष्णुपुराणम् ) सर्वकालमुपास्यातु संधययोः  
 पार्थिवेऽयते । अन्यत्र सूतकाशौचविभ्रमात्तुरभीतित इति तत्पूर्णा संध्या परम् ॥ अ-  
 र्थ्यातामानसी संध्या कुशवारिविवर्जितेति शुद्धिदीपे च्यवनोक्तेः ॥ पैठो न सिस्त्व-  
 र्यं संवोच्चारणमाह ॥ सूतके सावित्र्यां जलैर्प्रक्षिप्य सूर्यं व्यायज्ञमस्कुर्यात् ( प्र-  
 योगपारिजाते भारद्वाजोऽपि ) सूतके मृतके कुर्यात् प्राणायामममंत्रकम् । तथा सा-  
 र्जनमंत्रांस्तु मनसोच्चार्य मार्जयत् ॥ गायत्रीं सूर्यगुच्चार्य सूर्याया र्थ्यानि वेदयेत् । मा-  
 र्जनंतु न वा कार्यं मुपस्थानिन चैव हि ( ग्रहगोश्राद्धादिव्याशौचापवादमाह व्या-  
 घ्रः ) स्मार्तकर्मपरित्यागो राहो रन्यत्र सूतके इति ( लैंगेऽपि ) सूतके मृतके चैव न दोषो

राहुदर्शने । तावदेवभवेच्छुद्धिर्यविन्मुक्तिर्नदृश्यते (प्रयोगपारिजातेवृहस्पतिः)  
 कन्याविवाहेसंक्रान्तौ सतकंनक्रदाचन (वृद्धशातातपः ) यदाभोजनकालेतु अ  
 शुचिर्भवतिद्विजः । भर्मानिस्निप्यतंग्रासं स्नात्वाविप्रोविशुद्ध्यति ॥ भक्षयित्वा  
 तुतंग्रासमहोरात्रेणशुद्ध्यति । अभित्त्वासर्वमेवाचं विरात्रेणविशुद्ध्यति ॥ इद  
 मविशेषात्सूतकादिपरमपीतिशुद्धितत्त्वेषूलपाराच ॥ अथद्वयतः (सरीचः)  
 लवणमधुमांसेच पुरुषसूलफलेषुच । शाककायतण्डुलपुष्पदधिसर्पिःपयःसुच ॥  
 तिलौषधाजिनेचैवपक्वापक्वेस्वयंग्रहः ॥ पुण्येषुचैवसर्वेषुनाशौचंमृतसूतके ।  
 स्वयमेवस्वास्थ्यनुयज्याग्राह्यंनतद्वस्तादित्यर्थः ॥ क्रयेतुतद्वस्तादपिनदीयः ॥  
 पक्कलडुकादि ॥ अपक्कलंडुलादि ॥ एतदन्नसत्रपरम ॥ अन्नसत्रेप्रवृत्तानामास  
 न्नसर्गाहृतम् । भुक्त्वापक्वान्नमेतेषां विरात्रंतुव्रतीभवेदित्यंगिरसोक्तेः ॥ पक्वान्न  
 मादेनादि ॥ नतुभक्ष्यम् ( यद्विंशन्मते ) उभाभ्यामपरिज्ञातेसतकंनैवदीयकृत  
 सकेनापिपरिज्ञातेभोक्तुर्दीयमुपावहेत् ॥ विवाहेत्सवयज्ञेयुत्वंतरामृतसूतके ।  
 पेरन्नंप्रदातव्यंभोक्तव्यंचद्विजोत्तमैः ॥ भुंजानेषुतुविप्रेयुत्वंतरामृतसूतके । अन्य  
 गेहेदकाचान्तःसर्वतेशुचयःस्मृताः (बृहस्पतिः) विवाहेत्सवेत्याद्युक्त्वापूर्वसं  
 कल्पितान्नेषुनदीयःपरिकीर्तितः ( यद्विंशतौ ) संसर्गाद्यस्यवाशौचंयस्याति  
 क्रांतकालता । तदीयस्यपदार्थस्यनाशौचंविद्यतेक्वचित् ( शुद्धितत्त्वे ) शुद्धे  
 दित्यनुवृत्तौविष्णुः ॥ प्रोक्षणेनपुस्तकमिति(अथमृतदीयेहेमाद्रौयद्विंशन्मतेकौ  
 र्मेच) व्यापादयेद्यआत्मानंस्वयमन्युदकादिभिः । विहितंतस्यनाशौचनापि  
 कार्योदकक्रिया ॥ शवदर्शनंयावदाशौचमस्त्येव ॥ हतानांनृपगोविप्रैरन्वसंचा  
 त्मघातिनामितियाज्ञवल्क्योक्तेः ( शुद्धितत्त्वेकौर्मे ) सद्यःशौचंसमाख्यातंशा  
 पादिसरगोतथा । आदिपदादभिचारहते ( भविष्ये ) स्वेच्छयामरणाविप्रा  
 च्छं गिदंष्ट्रिसरीसृपैः । अंत्यांत्यजविषोद्वैरात्मनाचैवताडनैः । पाखंडमाश्रिता  
 ष्चैवमहापातकिनस्तथा ॥ स्त्रियश्चव्यभिचारिरायआरूढपतितास्तथा ॥ नतेषां  
 स्नानसंस्कारौनग्राह्यंनसपिंडनम् ( गौतमः ) प्रायोनाशकशस्त्राभिनविषोदको  
 दधनप्रपतनैश्चेच्छतामिति ॥ नाशौचमितिशेषः ( अंगिराः ) चंडालादुदका



त्सर्पाद्ब्राह्मणाद्वैद्यतादपि । दंष्ट्रिभ्यश्चपशुभ्यश्चमरणांपापकर्मणां ॥ उदकं  
 पिंडदानंचप्रेतेभ्योयत्प्रदीयते । नोपतिष्ठतितत्सर्वमंतरिक्षेविनश्यति ॥ यद्विं  
 शन्मतेष्वेवम ( ब्राह्मोपि ) शृङ्गिदंष्ट्रिनखव्यालविषवह्निक्रियाजलैः ॥ व्यालो  
 राजः ॥ सुदूरात्परिहर्तव्यः कुर्वन्नक्रीडामतस्तुयः । नागानांविप्रियंकुर्वन्नहतश्चा  
 प्यथविद्युता । निगृहीतःस्वयंराज्ञाचौर्यदोषेणाकुर्वचित् । परदारान्नहरंतश्चद्वे  
 यात्तु पतिभिर्हताः ॥ असमानैश्चसंकीर्णैश्चंडालाद्यैश्चविग्रहात् ॥ कृत्वातैर्निह  
 तास्तद्वचंडालादीन्समाश्रिताः ॥ शस्त्राग्निगर्दाश्चैवपाखंडाः कूरबुद्धयः ॥ क्रो  
 धात्प्रायंविषंवह्निशस्त्रमुद्वधनंजलम् ॥ गिरिवृक्षप्रपातंचयेकुर्वन्तिनराधमाः । कु  
 शल्यजीविनोयेचसूनालंकारधारिणाः ॥ मुखेभगास्तुयेकेचित्तत्तीव्रप्रायानपुंस  
 काः ॥ ब्रह्मदंडहतायेचयेचापिब्राह्मणौर्हताः । महापातकिनोयेचपतितस्तैश्च  
 कीर्तिताः ॥ पतितानांनदाहःस्यान्नांत्येष्टिर्नास्थिसंचयः । नचाशुपातःपिंडोवा  
 कार्यश्चाद्वादिकंचचित् ॥ सतानिपतितानांतुयःकरोतिविमोहितः । तप्तकृच्छ्र  
 द्वयेनैवतस्यशुद्धिर्नचान्यथा ॥ सतद्बुद्धिपूर्व ( सर्वथांकराणामुमाधवीयेवशिष्यः )  
 यत्रात्मत्यागिनांकुर्यात्स्नेहात्प्रेतक्रियां द्विजः । सतप्तकृच्छ्रसहितंचरेच्चांद्रायणा  
 व्रतम् ( अज्ञानेन ) कृत्वाग्निमुदकंस्नानंसंस्पर्शवहनंकथाम् । रज्जुच्छेदाशुपातं  
 चतप्तकृच्छ्रेणाशुत्थ्यतीतिज्ञेयम् ॥ प्रत्येकंबुद्धिपूर्वमतदितिसदनपारिजातः ॥ प्र  
 त्येकंतुस्पर्शाश्रुणोर्मिताक्षरायाम् ॥ तच्छ्रवणंकेवलंस्पृष्टमश्रुवापतितंत्यदि । पूर्वा  
 क्तानामकारीचेदेकराबमभोजनम् ॥ एकरात्रंतुनाश्रीयात्त्रिरात्रंबुद्धिपूर्वकमि  
 तिसाधवीयेउत्तरार्द्धम् ( अन्येषुसंवर्तः ) स्यामन्यतमंप्रेतंयोवहेतदहेतवा । क  
 रोदकक्रियांकृत्वाकृच्छ्रंसांतपनंचरेत् ॥ अज्ञानेत्वर्धम् ॥ सतदनाहिताग्नेः ॥ आ  
 हिताग्नेःकृच्छ्रसवेतिमाधवः ( मिताक्षरायां ) आत्मनस्त्यागिनांनास्तिपतिता  
 नांतथाक्रिया । तेषामपितथागंगातोयेसंस्थापनंहितम् ( आहिताग्नेस्तुविशे  
 षोहेमाद्रौभविष्ये ) वैतानंप्रक्षिपेदप्सुआवसथ्यंचतुष्टयम् । पात्राणितादुदहेदग्नौ  
 सारिकेपापकर्मणि ( कंदोरापरिशिष्टेपि ) महापातकसंयुक्तोदौरात्म्यादग्नि  
 मान्यदि । पुत्रादिःपालयेदग्नौन्युक्तआदोयसंसयात् ॥ प्रायश्चित्तंनकुर्याद्यः

कुर्वन्वाप्रियते यदि । गृह्यनिर्वापयेच्छौतमस्वस्येत्सपरिच्छदम् ॥ पात्राग्निद  
द्याद्विप्रायदहेदस्वेववासिपेत् (माधवीयेपराशरः) आहिताग्निमृतोविप्रश्चं  
डालेनात्मघातकः । दहेतब्राह्मणाविप्रोलोकाग्नौसंवर्जितं ॥ प्राजापत्यंचरेत्प  
प्रचाद्विप्राणामनुशासनात् । दग्धवास्थीनिपुनर्गृह्यसीरेणाक्षालयेत्ततः ॥ स्वे  
नारिग्ननास्वमंत्रेणापृथगेनंपुनर्दहेत् (हेमाद्रौतु) दाहयित्वाशवंतेषांशूद्वैरविधिप  
र्वकमित्युक्तम् ॥ सतद्वर्षादिनामरगोज्ञेयम् ॥ तांस्तेप्रेत्याभिगच्छंतियेकेचात्महनो  
जनाइतिश्रुतावात्महननेष्वदोषोक्तेः ॥ प्रमादमरगो त्वाशौचादिसर्वभवत्येव  
( तदाहंगिराः) अथकश्चित्प्रमादेनप्रियेताग्न्युदकादिभिः । तस्याशौचंविधा  
तव्यंकर्तव्याचोदकक्रिया ( ब्राह्मेपि ) प्रमादादपिनिःशंकस्त्वकस्माद्विधिचो  
दितः । शृङ्गिदंष्ट्रिणखिव्यालवियविद्युज्जलादिभिः । चंडालैरथवाचोरेर्निहतो  
वापिकुत्रचित् ॥ तस्यदाहादिकंकार्यंयस्मान्नपतितस्तुसइति ॥ प्रमादमरगोत्रि  
रात्रमाशौचमितिगौडाःशुद्धितत्त्वादयः ॥ दशाहादीतिदाक्षिणात्याः (अस्या  
पवादोहेमाद्रौभविष्ये ) प्रमादादिच्छयावापिनकुर्यात्सर्पतोमृते । नागपजांवि  
नानकुर्यादित्यर्थः ( बौधायनोपि ) बुद्धिपूर्वमहंतृणांक्रियालोपोविधीयते ॥  
क्रियान्त्यकर्म ॥ तत्रदुर्मरसानिमित्तंदानादिकार्यम् ॥ तच्चविश्वप्रकाशादौ  
शातातपीयेत् ॥ व्याघ्रंणानिहतेविप्रेविप्रकन्यांविवाहयेत् । सर्पदष्टेनागबलि  
र्देयःसर्पश्चक्रांचनः ॥ चतुर्निष्ठकमितंहैमंगजंदद्याद्गजैर्हते । राज्ञाविनिहतेदद्या  
त्पुरुषंतुहिरण्मयं ॥ चौरेणानिहतेधेनुर्वैरिणानिहतेवृषम् । वृषेणानिहतेदद्याद्य  
थाशक्त्यातुकांचनं ॥ शय्यामृतेप्रदातव्याशय्यातलीसमन्विता । निष्ठकमात्र  
सुवर्गास्यविष्णुनासमधिष्ठिता ॥ शौचहीनेमृतेचैवद्विनिष्ठकंस्वर्गाजंहरिम् । सं  
स्कारहीनेचमृतेकुमारमुपनाययेत् । निष्ठकत्रयंस्वर्गमितंदद्यादश्वंहयाहते । शु  
नाहतेक्षेत्रपालंस्थापयेच्चिजशक्तितः ॥ सूकरेणाहतेदद्यान्महियंदक्षिणान्वितं ।  
कर्मिभिश्चमृतेदद्याद्गोधूमान्पंचखारिकाः ॥ वृषंसंवृषहतेदद्यात्सौवर्गावस्त्रसंयुतं  
शृङ्गिणानिहतेदद्याद्वृषभंस्त्रसंयुतं । शकटेनहतेदद्याद्द्वयंसेपस्करान्वितम् ॥  
भृशपातमृतेचैवप्रदद्याद्धान्यपर्वतम् । अग्निनानिहतेकार्यमुदपानंस्वशक्तितः ॥



दासगानिहतेचैवकर्तव्यासदनेसभा । शस्त्रगानिहतेदद्यान्महिषींदक्षिणान्वि  
 ताम् ॥ अप्रमत्तानिहतेदद्यात्सवत्सांगांपयस्विनीं ॥ विद्येराचमृतेदद्यान्मेदिनींहे  
 मनिर्मितां ॥ उद्धन्वनेनचमृतेकपिंकनकनिर्मितम् । मृतेजलेनवरुणांहेमंदद्याद्विनि  
 ठकजं ॥ विधूचिकामृतेस्वादुभोजयेच्चशतं द्विजान् । घृतधेनुःप्रदातव्याकंदान्नक  
 वलेमृते ॥ कासरोगेराचमृतेअष्टहृच्छ्रं व्रतंचरेत् । अतिसारमृतेलक्षगायत्र्याःप्र  
 यतो जपेत् ॥ शार्किन्यादिग्रहप्रस्तेजपेद्रुद्रंयथोदितम् । विद्युत्पातेननिहतेवि  
 द्यादानंसमाचरेत् । अन्तरिक्षमृतेकार्यवेदपारायणांतथा ॥ सच्छास्त्रपुस्तकंदद्या  
 दस्पृश्यस्यर्शतोमृते । पतितेचमृतेकुर्यात्प्राजापत्यांस्तुषोडश ॥ मृतेचापत्यरहिते  
 हृच्छ्राणांनवतिंचरेत् ॥ एवंकृतेविधानेतुविदध्यादौर्ध्वदेहिकं ॥ तथावेधमरणोपि  
 नदोयः ( तदाहतुर्मनुवृद्धगार्यौ ) वृद्धःशौचमृतेलुप्तप्रत्याख्यातभिक्षकक्रियः ।  
 आत्मानंघातयेद्यस्तुभृग्वग्न्यनशनांबुभिः ॥ तस्यधिरात्रमाशौचं द्वितीयेत्वस्थि  
 संचयः । तृतीयेतूदकं कृत्वाचतुर्थेऽष्टांशमाचरेदिति ( हेमाद्रौविठ्ठाधर्मेपि ) न  
 रस्तुव्याधिरहितोनत्यजेदात्मनस्तनुम् ॥ असूर्यानामतेलोकाअंधेनतमसावृताः  
 तांस्तेप्रेत्याभिगच्छंतियेकेचात्महनोजनाः ॥ अरिष्टैरात्मनोज्ञात्वामृत्युकाल  
 मुपस्थितम् । व्याधितोभियजात्यक्तःपूर्वोवायुषिचात्मनः ॥ यथायुगानुसारेणा  
 संत्यजेदात्मनस्तनुं । तस्मिन्कालेतनुत्यागाद्यथेष्टंफलमाप्नुयात् ॥ आयुषस्तुपुरा  
 दृष्टंमरणांब्रह्मणस्यच ॥ नेतिगौडानामपपाठः ॥ उत्तरार्धेअसंगतेः ॥ क्षत्रियस्य  
 तुसंग्रासेमृतेभर्तरियोयितः ( अपरार्केब्रह्मगर्गः ) योजीवितुंनशक्नोतिमहाव्या  
 ध्युपपीडितः । सोमन्युदकंमहायात्रां कुर्वन्नावमदुष्यति । अत्रोक्तवक्ष्यमाणावचो  
 निचयात्प्रयागातिरिक्तेऽचिकित्स्यरोगाद्युपहतानामधिकारः ॥ सोऽपिजीर्णा  
 वानप्रस्थस्यैवेतिविज्ञानेश्वरदेवयज्ञिकादयः ॥ अतएवमिताक्षरादौभृगुपाता  
 नशनादिकंवानप्रस्थस्यैवोक्तम् ( मनुरपि ) आसांमहर्षिचर्याणांत्यक्त्वान्यत  
 मयातनुम् । वीतशोकभयेविप्रो ब्रह्मभयायकल्पतइति ॥ तेनान्यत्रापितद्विष्य  
 यतैवासलैक्यादितिकेचित् ॥ तन्न ॥ वानप्रस्थमरणांआशौचनिषेधात् ॥ तेनग्रह  
 स्थ्यादिपरमेवेदं ॥ तेनयतेर्नाधिकारः ॥ काम्येऽनधिकाराच्च ॥ नैमित्तिकत्वेत्व

करोदोद्योनित्यताचस्यात् । प्रयागेत्वरोगिणांरोगिणाञ्च ( यत्तु ) शूद्राश्च  
 सत्रियावैप्रयाञ्चत्यजाश्चतथाधमाः । एतेत्यजेयुः प्राणान्वैवर्जयित्वा द्विजं नृप ॥  
 पतित्वा ब्राह्मणास्तत्र ब्रह्महाचात्महाभवेदितितन्निर्मूलमिति भट्टाः ॥ तत्त्वं तु हेमा  
 द्रौ व्रतकाण्डेऽलिखन्नान्निर्मूलत्वं चिंत्यमेव ॥ प्रकृमातुपतित्वेपि भृगुपातमात्रपरं यु  
 क्तम् ॥ ब्राह्मणास्याप्यनुज्ञातमिति वक्ष्यमाणा विरोधाच्च ( यत्त्वादित्यपुराणो ) अब्रा  
 ह्मणो वास्वर्गादिमहाफलजिगीयसा । प्रविशेज्ज्वलनंतोयं करोत्यनशनंतथेति ॥  
 तत्प्रयागातिरिक्तापरमिति कोचित् ॥ हेमाद्रौ त्वेतदग्रे प्रयागवटशाखायादित्युक्ते  
 ब्राह्मणास्य प्रयागोपि नेति प्रतीयते ( माधवीयेऽपराक्रेचादित्यपुराणो ) दुष्चिकि  
 त्स्थैर्महारोगैः पीडितस्तु पुमानपि । प्रविशेज्ज्वलनंदीप्तं करोत्यनशनंतथा ॥ अगा  
 धतो यराशिं च भृगोः पतनमेव च । गच्छेन्महापथं वापितुश्चारगिरिमादरात् ॥ प्र  
 यागवटशाखायाद्देहत्यागं करोति च । स्वयंदेहविनाशस्य काले प्राप्ते महामतिः ॥  
 उत्तमानुप्राप्नुयात् लोकानात्मघातो भवेत्क्वचित् ॥ महापापसयात्स्वर्गे दिव्यान्  
 भोगानुसमप्रनुते ॥ एतेषां अधिकारस्तु सर्वेषां सर्वजंतुषु ॥ नराणां मय नारीणां स  
 र्ववर्गेषु सर्वदा ॥ ईदृशं मरणां येयां जीवतां कुत्रचित् ज्ञेयम् । आशौचं स्यात्स्नानं हंतेषां  
 वज्रानलहते तथा ॥ वाराणास्यां प्रियेद्यस्तु प्रयागव्यातमिषकृत्क्रियः । काशपाशा  
 रामध्यस्थो जाह्नवीजलमध्यगः ॥ अविमुक्तोन्मुखस्तस्य कर्णमूलगतो हरः । प्रणा  
 र्वतारकं ब्रूते नान्यथा कुत्रचित्क्वचित् ॥ हेमाद्रौ चैवम् ॥ अवप्राप्ते काले इत्युक्ते र  
 प्राप्ते मरणा कालायाः स्त्रिया अन्वारो हरो सम्पूरा भिवाशौचम् ॥ पृथ्वीचन्द्रस्त्वत्रा  
 पि न्यहमाह ॥ शुद्धितत्त्वादिगौडग्रन्थेऽप्येवम् ॥ एतच्च वृद्धादिमरणां कलौ नि  
 यिद्धम् ॥ भृगवग्नपतनैश्चैव वृद्धादिमरणांतथेति ॥ माधवेन पृथ्वीचन्द्रेणाचकलि  
 वर्ज्यक्तेः न चात्र यावदुक्तं निषेधः ॥ विशिष्टोद्देशे वाक्यभेदात् ॥ न च कलौ वानप्र  
 स्थायिनिषेधादेव सिद्धेर्मरणां निषेधोऽव्यर्थ इति वाच्यम् ॥ सर्ववर्गोऽवित्यादिभि  
 स्तद्विज्ञस्यापि प्राप्तेः कास्यं भवत्येव ॥ ये वै तन्वा विस्मजंतीति श्रुतेः स्मृत्या संकाचा  
 योगात् ॥ न च येन स्वाभाविकमृत्युप्रराधीरपदोक्तेः ( मात्स्यभारतादिषु ) न लोक  
 वचनात्तातनवेदवचनादपि । मतिस्तत्क्रमणीया ते प्रयागमरणां प्रतीयुक्तेः ॥ अ



तस्यैव विष्णुधर्मैरोग्यादिमरणा मुक्तोक्तम् ॥ यथायुगानुसारिणामंत्यजेदात्मनस्तनु  
मिति (काश्यामप्युक्तं मात्स्ये) अग्निप्रवेशं ये कुर्युरविमुक्ते विधानतः । प्रविशं  
ति मुखं ते मे निःसंदिग्धं वरानने (हेमाद्रौ विवस्वान्) सर्वेन्द्रियविमुक्तस्य स्वव्यापा  
राक्षसस्य च । प्रायश्चित्तमनुज्ञातमग्निपातो महापथः ॥ धर्मार्जना समर्थस्य क  
र्तुः पापांकितस्य च । ब्राह्मणास्याप्यनुज्ञातं तीर्थे प्राणा विमोक्षणम् ॥ अपरा कर्के चै  
वम् ॥ सहगमनं कलौ भवत्येव ॥ कलौ नान्या गतिः स्त्रीणां सहानुगमना द्रुत इति  
ब्रह्मवैवर्तम् ॥ एतेन मरणांतिक प्रायश्चित्तं काशी खण्डादौ चातुर्वार्यस्य ॥ त  
नुत्यागविधयश्च युगांतरपरासव (प्रयागोपि त्रिस्थली सेतौ स्कांदे) यथा कथंचि  
त्तीर्थे स्मिन्प्राणा त्यागं करोति यः । तस्यात्मघातदोषो न प्राप्नुयादीप्सितान्यपि  
(पाप्मे विष्णुः) देहत्यागं तथा धीराः कुर्वन्ति मम सन्निधौ । मत्तनुं प्रविशंत्येव न पुन  
र्जन्मनेनराः (कौर्मै) व्याधितो यदिवादीनः क्रुद्धो वापि भवेन्नरः । गङ्गायमुनसा  
साद्ययस्तु प्राणान्परित्यजेत् ॥ ईप्सितान्नलभते कामान्वदंति मुनिपुंगवाः (तथा)  
यागतिर्योगयुक्तस्य सत्त्वस्थस्य मनीषिणाः । सागतिस्त्यजतः प्राणान्नगंगायमुनसं  
गमे (वाराहे) तत्र यो मुंचति प्राणान्न वटमूले यु सुंदरि । सर्वलोकानति क्रम्य समलो  
कं प्रपद्यते (तथा) अकामो वासकामो वा वटमूले यु सुंदरि ॥ शीघ्रं प्राणान्प्रमुंचेत्  
यदीच्छेत्परमां गतिम् (तथा) पंचयोजनविस्तीर्णो प्रयागस्य तु मण्डले । न्यती  
तान्पुरुषान्सप्त भविष्यांश्च चतुर्दश ॥ नरस्तारयते सर्वान्यस्तु प्राणान्परित्यजेत् ।  
(ब्राह्मे) ध्यात्वा विष्णुषदां भोजं प्रयागे विष्णुतत्परः । तनुं त्यजति वै साधे तस्य मु  
क्तिर्न संशयः ॥ दुष्टकृतेऽपि दुराचारो ब्रह्महत्यादिपातकी । हरिं ध्यात्वा त्यजेद्देहं  
प्रायशो मुक्तिमान्भवेत् (भविष्योत्तरे) समासहस्राणि तु सप्त वै जले दशैकमरनोपत  
ने च षोडश । महाहवे यद्विरशीति गोश्वे अनाशके भारत चाक्षया गतिः ॥ इति  
सामान्यतोऽपि फलम् ॥ सर्वमन्येऽपि विधये ज्ञेयाः ॥ यत्तु गौडाः प्रयागादिमरणां  
ब्राह्मणाभिन्नविषयमित्याहुस्तद्व्यापिता महचरगौः प्रयागविधौ कृतमिति ना  
बोध्यते ॥ अत्र दशाहमाशौचम् ॥ विराजस्थ प्राप्तकाल गोचरत्वादिति भट्टाः ॥  
युक्तं तु विराजम् ॥ दिवोदासीयेऽप्येवम् (शुद्धितत्त्वेऽपि काश्यपः) अनशनमृताना

मशानिहतानामग्निजलप्रविष्टानां भृगुसंश्रामदेशांतरमृतानां जातदन्तानां च विरा  
चमिति ॥ एवं मरणांतरप्रायश्चित्तेऽपि ॥ पूर्वोक्तप्रचात्महादेर्दाहाशौचादिनिषे  
धस्तदानीमेव ॥ वत्सरांतुसर्वमौर्ध्वदेहिकंकुर्यात् ॥ गोब्राह्मणाहतानां च पति  
तानांतथैव च । ऊर्ध्वसंवत्सरात्कुर्यात्सर्वमेवौर्ध्वदेहिकमिति हेमाद्रौ षट्त्रिंश  
न्मतात् ॥ एवं स्लेच्छीकृतानामपि ॥ गयाश्राद्धमपि कार्श्यम् ॥ ब्रह्महाचकृतद्व  
प्रचगोघातीपंचपातकी । सर्वे ते निष्कृतिं यांति गयायां पिण्डपातनादित्यग्निपुरा  
णात् ( एवं ब्राह्मणेऽपि ) क्रियते पतितानां तु गते संवत्सरे कश्चित् । देशधर्मप्रमाणात्वा  
दगयाकूपेस्त्वबंधुभिः ॥ मार्तण्डपादमले वा श्राद्धं हरिहरौ स्मरन् ॥ सूर्यपद इत्यर्थः ॥  
( तत्र वयमध्वेकृत्य मुक्तमपरा कर्तव्यं पुराणो ) शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां कुर्यात् श्राद्धं तु व  
त्सराम् । द्वादशाहनि वा कुर्याच्छुक्लौ च प्रथमे हनि ( चारालेयः ) नारायणाबलिः  
कार्यो लोकगर्हभियां चरैः । तथा ते यां भवेच्छौचं नान्यथेत्यब्रवीद्यमः ( व्यासः )  
नारायणांसमुद्दिश्य शिवं वायत्प्रदीयते । तस्य शुद्धिकरं कर्म तद्वेचैतदन्यथेति ॥  
सचात्मघातादिप्रायश्चित्तं कृत्वा कार्यः ( तदुक्तं हेमाद्रौ षट्त्रिंशन्मते ) कृत्वा चां  
द्रायणां पूर्वं क्रियाकार्या यथाविधि । नारायणाबलिः कार्यो लोकगर्हभियां चरैः ॥  
पिण्डोदकक्रियाः पञ्चाह्नयोत्सर्गादिकं च यत् । एकोद्दिष्टानि कुर्वीत स पिण्डी  
करान्तथा ( दिवोदासीयेऽष्टदशशातातपस्तु ) पतिते च मृते शुद्धौ प्राजापत्यांस्तुष्टौ  
डश । मृते चापत्यरहिते कृच्छ्राणां नवतिश्चरेदित्याह ॥ इदं प्रायश्चित्तार्हपि त्रा  
दिविद्यम् ॥ इन्द्रियैरपरित्यक्ता ये च मुढा विद्यादिनः ॥ घातयन्ति स्वमात्मानं  
चारण्डालादिहताश्च ये ॥ तेषां पुत्राश्च पौत्राश्च दयया समभिप्लुताः । यथाश्रा  
द्धं प्रतन्वन्ति विष्णुनामप्रतिष्ठितम् ॥ तथा ते संप्रवक्ष्यामि नमस्कृत्य स्वयम्भुवदिति  
हेमाद्रौ तेन बोक्तेः ( तत्रैव बोधायनेऽपि ) नारायणाबलिं व्याख्यास्यामोऽभिशास्त  
पतितसुरापात्मत्यागिनां ब्राह्मणाहतानाञ्च द्वादशवर्षाणि त्रीणि वा कुर्वीतेति  
( गृह्यपरिशिष्टे ) चारण्डालादित्याद्युक्ता ॥ दग्धवाशरीरं प्रेतस्य संस्थाप्या  
स्थीनियत्नतः । प्रायश्चित्तन्तु कर्तव्यं पुनैश्चांद्रायणावयमित्युक्तम् ( मद्वरत्ने  
ब्राह्मणे ) प्रमादादपि निःशङ्कस्त्वकस्माद्विधिचोदितः । चारण्डालैर्ब्राह्मणैश्चोरे



निहतोयत्रकुर्वचि ॥ तस्यदाहादिकंकार्यं यस्मान्नपतितस्तुसः । चांद्रायणांतप्त  
 कृच्छ्रद्वयंतस्यविशुद्धये ॥ यद्वाकृच्छ्रान्पञ्चदशकृत्वातुविधिनादहेत । बुद्धिपूर्वमृ  
 तानांतुविंशत्कृच्छ्रं समाचरेदित्युक्तम् (स्मृतिरत्नावल्ल्यान्तु) द्विगुणांप्रायश्चित्तं  
 कृत्वावागप्यब्दात्सर्वकार्यमित्युक्तं ॥ आत्मनोघातशुद्ध्यर्थं चरेच्चांद्रायणाद्वयं ।  
 तप्तकृच्छ्रचतुष्टयं च विंशत्कृच्छ्राणिवापुनः ॥ अर्वाकसंवत्सरात्कुर्याद्दिहनादि  
 यथोदितम् । कृत्वानारायणावलिमनित्यत्वात्तदायुष इति ॥ इदञ्चात्मवधनिमित्त  
 न्तज्जातिवधप्रायश्चित्तेन समुचितं कार्यम् ॥ अतएवबोधायनेनोक्तं द्वादशवर्गाणि  
 त्रीणि वेति (मदनपारिजातेस्मृत्यर्थसारेच) ब्रह्महादीनांतद्योग्यंप्रायश्चित्तं कृ  
 त्वानारायणावलिः कार्य इत्युक्तम् ॥ एवं प्रलेखीकृतानामपि (यत्तुकश्चिदाह )  
 पुत्रकृतेन प्रायश्चित्तेनपितुः पापनाशेमानाभावः ॥ आत्मघातेतुवचनादस्तु ॥ म  
 हापातकेतुकथंस्यादिति ॥ सः स्वयमेवात्मवधप्रायश्चित्तस्य जातिवधनिमित्तेन  
 समुच्चयवदनहृदय शन्यसव ॥ नहिजातिवधनिमित्तम्पुत्रैः कार्यमितिवचनमस्ति ॥  
 पुत्रकर्तृकसर्वप्रायश्चित्तादिविज्ञवापत्तेः ॥ प्राणकृतबोधायनवचनाच्चेतिदिक् ॥  
 इदंप्रायश्चित्ताहर्णामेव ॥ प्रायश्चित्तानहर्णान्तु पतितोदकमात्रंकार्यमिति  
 केचित् ॥ मदनपारिजातादिस्वरसेाप्येवम् ॥ वस्तुतस्तु ॥ तदहर्निर्हयेत्तत्रचनेनु  
 पादानादिविशेषात्तत्रापिनारायणावलिर्ग्राह्या इत्युक्तम् ॥ पतितोदकवि  
 धिस्तुपिवाद्यतिरिक्तविषयइत्यपरे (सयथाहेमाद्रौब्राह्मे) पतितस्यतुकासुराया  
 द्यस्तृप्तिं कर्तुमिच्छति । सहिदासीं समाहूय सर्वगांदत्तवेतनाम् ॥ अशुद्धघटहस्तां  
 तां यथावृत्तम्ब्रवीत्यपि । हेदासिगच्छमूल्येन तिलानानयसत्वरम् ॥ तोयपूर्णं  
 घटञ्चेमं सतिलंदक्षिणामुखी । उपविष्टातुवामेन चरणोत्ततःक्षिप ॥ कीर्तयेः  
 पातकीं संज्ञां त्वं पिबेतिमुहुर्वदेः । निशम्यतस्यवाक्यं सालब्धमूल्याकरोतितत् ॥  
 एवं कृते भवेत्तृप्तिः पतिनाञ्जनान्ययेति ॥ इदञ्चमृताहेकार्यम् ॥ पतितस्यदासी  
 मृताह्नियदाघटमपवर्जयेदेतावतायमुपचरितोभवतीति मदनरत्नेविष्णोक्तेः ॥ इदं  
 चात्मत्यागिविषयम् ॥ आत्मत्यागिनः पतितास्तेनाशौचोदकभाजः स्युरित्यु  
 पक्रम्यविष्णुनामस्तस्याभिधानादितिगौडाः ॥ यत्तुकश्चिदाह ॥ यः पतितो घट

स्फोटोत्पन्नान्धर्वैर्बहिर्दृष्टतस्तद्विषयाणां क्रियानियेषवाक्यानि ॥ जीवत्येव तस्मिन्नन्त्यकर्मणाः कृतत्वात्तत्पुनः करणाभावादिति ॥ सबन्धुत्यागेन जातवैराग्यस्य कृतप्रायश्चित्तस्याप्यकरणापत्तेर्मिताक्षरादिविरोधमपश्यन् सर्वइत्युपेक्षणीयः ॥ न च कृतघटस्फोटस्य संग्रहविधिर्नैतिवाच्यम् ॥ मनुना कृतघटस्फोटस्य त्यागमुक्त्वा ॥ प्रायश्चित्ते तु चरिते पूर्णाकुम्भमपांनवम् । तेनैव सार्धं प्रास्येयुः स्नात्वा पुराये जलाशये इत्युक्तेः ॥ अन्यथा प्रायश्चित्तमात्रेण तत्प्रसंगात् ॥ अतो घटस्फोटोत्पन्नान्धर्वैर्दृष्टतस्यापि पित्रादेरब्दं तेनारायणाबलिः नियेषास्तु पितृव्यादिपरा इति तत्त्वम् ॥ केचित्तु नारायणाबलौ कृतेऽप्यन्त्यकर्मसंपिंडनवर्जकार्यम् ॥ गोब्राह्मणाहतानां चर्पितानां तथैव च । व्युत्क्रमाच्च प्रसीतानां नैव कार्यासंपिंडतेति वचनात् ॥ ब्राह्मणादिह ते तातेर्पिते संगवर्जित इति आह प्रकारोक्ते प्रचेत्याहुस्ते हेमाद्रिस्थपूर्वाक्ताष्टविंशन्मतविरोधान्निर्मूलत्वाच्छास्त्रप्रकारस्य वृद्धिश्चाह विषयत्वादुपेक्ष्याः ॥ नारायणाबलिस्तु हेमाद्याद्यनुसारेणोच्यते ॥ तत्रादौ क्रियानिवन्धे गारुडे तर्पणमुक्तम् ॥ कार्यपुरुषसूक्तेन मंत्रैर्विष्णावैरपि । दक्षिणाभिमुखो भूत्वा प्रेतं विष्णुमिति स्मरन् ॥ अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः । अस्यः पुंडरीकाक्षः प्रेतसोक्षप्रदो भवेति ॥ शुक्लैकादश्यां देशकालौ संकीर्त्या मुकगोत्रस्या मुकस्य दुर्मरणात्संघातजदोषनाशार्थं और्ध्वदेहि कसंप्रदानत्वयोग्यतां सिध्यर्थं नारायणाबलिकं रित्येति संकल्प्य ॥ ब्रह्मणां विठगां शिवं यमं प्रेतं च पंचकुंभेषु ॥ विष्णुः स्वर्गमयः कार्यो रुद्रस्ताम्रमयस्तथा । ब्रह्मारौप्यमयस्तत्र यमो लोहमयो भवेत् ॥ प्रेतो दर्भमयः कार्य इति देवप्रकल्पनेति गारुडे क्तासु सर्वा सुहेमीषु वा प्रतिमासु षोडशोपचारैः पुरुषसूक्तेनाभ्यर्च्य अग्नीं प्रतिष्ठाप्य चरुं पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचं नारायणायेदमिति हुत्वा ॥ देवानामग्रे दक्षिणाग्रदर्भेषु विष्णुरूपां प्रेतं स्मरन्नाम गोत्राभ्यां सधुवर्ततिलयुतान् दशपिंडान् यज्ञोपवीत्येवामुकगोत्रामुकशर्मन् प्रेतविष्णुरूपाय तैपिंड उपतिष्ठतामिति दत्त्वा पुरुषसूक्तेनाभिमन्त्र्य तेनैव शंखोदकेनाभिर्धियाभ्यर्च्यामुकशर्मणाममुकगोत्रं विष्णुरूपां प्रेतं तर्पयामीति पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचं तर्पयित्वा ॥ एकमा मां ब्रह्मादिपिं



चभ्योदद्यात् ( संवस्तु ) ब्रह्मविष्णुमहादेवायमश्चैवसकिंकरः । बलिगृहीत्वा  
 कुर्वतुप्रेतस्यचशुभांगतिमिति ॥ मिताक्षरायांतुहेमबल्यादिनोक्तम् ॥ ततःप्रति  
 देवतंत्रिविधंफलंशर्करामधुगुडघृतानिच निवेद्यापिंडानभ्यर्च्यनद्यांसिप्त्वारारात्रौ  
 नवसप्तपंचवाविप्रान्निसंज्योपोयितोजागरंकृत्वा श्वाभूतेपुनर्विष्णुंयमसंपूज्यैको  
 द्विष्टविधिना आह्वपंचकंकरिठ्यइत्युक्त्वाविठगांयमप्रेतानस्मरन् विप्रानुपवे  
 श्यप्रेतस्थानेचैकंविष्णुंस्मरन् पाद्यावाहनाद्ययुतंतृप्तिप्रश्नांतंकृत्वोल्लेखनादि  
 कृत्वाक्षशेषेणाविष्णावेब्रह्मणो शिवाययमायसपरिवारायचतुरःपिंडानदत्त्वाप्रेत  
 नामगोत्रेस्मृत्वाविष्णुनाम्ना पंचमंदत्वाभ्यर्च्यचांतेभ्यो दक्षिणांदत्त्वैकंप्रेतं  
 स्मृत्वा विशेषतः संतोष्यविप्रैः प्रेतायेदंतिलोदकं मुपतिष्ठतामितिसतिलमुदकं  
 दापयित्वाभुंजीतेति ॥ अत्रविशेषांतरंभट्टकृतांत्येष्टिपद्धतौज्ञेयम् सर्पहतेतुवर्ष  
 पर्यंतंपूर्वेह्यैकभक्तपूर्वशुक्लपंचम्यामुपवासंनक्तंवाकृत्वा पिष्टमयंनागमनंतवा  
 सुकिशंखपद्मकंबलकर्कोटकाश्चतरधृतराष्ट्र शंखपालकालियतक्षककपिलेति  
 नामभिःप्रतिमासंपूज्य पायसेनविप्रान्संभोज्य वत्सरांतेहैमन्नागंगांचदत्त्वाना  
 रायणाबलिंकुर्यात् ॥ एतन्मलंतुहेमाद्रौज्ञेयम् ॥ बौधायनसूत्रेसर्पमृतानांनमोस्तु  
 सर्पेभ्यइतितिस्रआहुतीहु त्वौदकेमृतानां समुद्रायवयुनायहुत्वेतिक्रियांकुर्यादि  
 तिशेषः ( व्यासः ) सौवर्गाभारनिष्पन्नंनारांकृत्वातथैवगास । व्यासायदत्त्वावि  
 धिवत्पितुरानृणायमाप्तवान् ( हेमाद्रौभविष्ये ) पंचम्यांपन्नगंहैमंस्वर्गानैकेनकार  
 येत् । क्षीराज्यपात्रमध्यस्थंपूज्यविप्रायदापयेत् ॥ प्रायश्चित्तमिदंप्रोक्तंनारा  
 दुष्टस्यशंभुनेति ( अपरार्कस्मृत्यंतरेपि ) तदैवशुद्धयतिप्रेतानारायणाबलौकते ।  
 योददातिक्रियापिंडंतस्मैप्रेतायवैसुतः ॥ तस्यैवाशौचमुद्दिष्टंयहमेवसंप्रायः ।  
 विष्णुआह्वसमाप्तौतुवयोदश्यांदिनत्रयम् ॥ आशौचंपिंडदःकुर्याच्चतुर्द्वंधुगो  
 व्रजाः ॥ यस्यवैमृत्युकालेतुव्युच्छिन्नासंततिर्भवेत् ॥ सवसेन्नरकेनित्यंपंकमरनः  
 करीयथेत्युपक्रम्य ॥ बलिनारायणां कुर्यात्तस्योद्देशेनभक्तिमानितिगारुडो  
 क्तेरपुत्रस्यापिपत्न्याद्यैःकार्यइत्युक्तंदेवयाज्ञिकेन ॥ अथविधानादाशौचाभा  
 वः ( यथायतिशुद्धमृतादिषु ) त्रयाणामाश्रमाणांचकुर्याद्वाहादिकाःक्रियाः ।

यतेः किञ्चिन्नकर्तव्यं नचान्येयां करोतिस इति ब्राह्मात (उशनाः) सकोद्विष्टं न  
 कुर्वीत यतीनां चैव सर्वदा । अहन्येकादशे प्राप्ते पार्वरांतु विधीयते ॥ सर्पिण्डी  
 कररांत्येयां नकर्तव्यं सुतादिभिः । त्रिदंडग्रहणादेव प्रेतत्वं नैव जायते ॥ अथ तत्सं  
 स्कारं वक्ष्यामः (दत्तात्रेयः) सकोद्विष्टं जलं पिण्डमाशौचं प्रेतसत्क्रिया । न कुर्या  
 द्वार्यिकादन्यद्ब्रह्मीभूताय भिक्षवे ॥ वार्यिकादिति पूर्वभाविमासिकादिनिये  
 धो न तु दशादिः ॥ संन्यासिनोऽप्यादिदकादिपुत्रः कुर्याद्यथाविधीति वायवीयोक्तेः  
 (पृथ्वीचंद्रोदये प्रजापतिः) अहन्येकादशे प्राप्ते पार्वरांतु विधीयते । सर्पिण्डी क  
 ररांतस्य नकर्तव्यं सुतादिभिः ॥ सयुसर्पिण्डनादिनिये धानुवादेन पार्वरांतोक्तेस्त  
 दस्थानापन्नत्वं पार्वरांतस्य गम्यते ॥ नगिरागिरेति ब्रूयादैरं कृत्वो हेयमिति वत् ॥ इदं  
 वार्यिकादिविधानं च त्रिदंडिनामेव ॥ सकदंडिपरमहंसादीनां तु न किमपि कार्यम् ॥  
 पूर्वोक्ते शनो वा को त्रिदंडिग्रहणादिति शूलपारायादयोगौडाः ॥ त्रिदंडिशब्देन  
 मनोदंडादिदण्डत्रयोक्तेः ॥ यस्यैते नियता दण्डाः स त्रिदंडीति चोच्यत इति स्मृतेः  
 (बौधायनः) नारायणावलिपञ्चास्य कर्तव्योद्वादशे हनि ॥ अस्य पार्वरांतो न समुच्च  
 योज्ञेयः (तंच स एवाह) कृत्वा विष्णोर्महापूजां पायसं विनिवेदयेत् । अग्नौ कृत्वा  
 तु तच्छेयं व्याहृतीभिः समाहितः ॥ यतीनां गृहस्थान्साधून्वानिमंज्य द्वादशावरान् ।  
 अभ्यर्च्य गंधपुष्पाद्यैर्मन्त्रैर्द्वादशनामभिः ॥ संभोज्य हव्येनान्येन दक्षिणां च निवे  
 दयेत् । त्रयोदशं द्विजश्रेष्ठमात्मजं संयतेन्द्रियम् ॥ विष्णुं यथा तथा अभ्यर्च्य पाद्याद्यै  
 र्च विधानतः । दद्यात्पुरुषसूक्तेन गंधपुष्पादिकं क्रमात् ॥ वस्त्रालंकरणादीनि  
 यथाशक्ति प्रदापयेत् । उच्छिष्टं सन्निधौ तस्य दर्भानास्तीर्य भूतले ॥ भूर्भुवः स्वः स्व  
 धायुक्तेस्तस्मै दद्याद्बलित्रयम् । अश्वमेधसहस्रस्य वा जपेयं शतस्य च ॥ तत्फलं ल  
 भते देवयः करोति यतिं क्रियाम् (शौनकास्तु) शौनकोऽहं प्रवक्ष्यामि नारायणाव  
 लिं परम् । चराडालादुदकात् सर्पिर्द्वादशरागाद्वैद्युतादपि ॥ दंष्ट्रिभ्यश्च पशुभ्य  
 ष्च रज्जुशस्त्रविद्याभ्यः । देशान्तरमृतानां च मृतानां वा न्यसाधनैः ॥ जीवच्छ्रा  
 द्मृतानां च कनिष्ठानां तथैव च । यतीनां योगिनां युंसामन्येयां मोक्षकां क्षिणाम् ॥  
 पुरायायाधस्यार्थाय द्वादशे हनिकारयेत् ॥ द्वादश्यां श्रवणोद्वांते पंचम्यां पार्व



गोस्तुवेत्युक्त्वापूर्वोक्तं सर्वविधमुक्त्वा अतो देवेति यद्विः पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचं प्रा-  
 यसंहुत्वा केशवादि द्वादशनामभिस्तद्रूपिणोपि त्रे द्वादशविप्रानुसंभोजयते रेव द्वादश  
 पिंडान्दद्यादित्यधिकमाह ॥ युद्धमृते तु प्रागुक्तम् ॥ कृतजीवच्छूद्रमृते सपिंडैराशौ-  
 चादिकार्यं न वा (तदुक्तं हेमाद्रौ लैंगे) मृते कुर्यान्न कुर्याद्वा जीवन्मुक्तो यतः स्वयम् ॥  
 कालंगते द्विजे भूमौ खने द्वापि दहेत्वा ॥ पुत्रकृत्यमशेषं च कृत्वा दोषो न विद्यते ॥ जी-  
 वत्यपि विशेषस्तत्रैवोक्तः ॥ नित्यं नैमित्तिकं यत्तु कुर्याद्वासं त्यजेत्वा । बांधवेऽपि मृ-  
 ते तस्य नैवाशौचं विधीयते ॥ सूतकंचनसंदेहः स्नानमात्रेण शुद्ध्यति ॥ सतद्योगवि-  
 शयम् ॥ योगमार्गं रतोऽपि चेति तस्याप्युक्तेः ॥ तथाऽहिताग्नौ प्रोक्षितमृते तदस्थिदा-  
 हात्पूर्वापन्नादीनामाशौचं संध्यादिकर्मलोपप्रचनास्ति । अनग्निमत उत्क्रांते राशौ  
 चादि द्विजातिषु । दाहादग्निमतो विद्याद्विदेशस्थे मृते सतीति स्मृतेः ॥ आहिताग्ने-  
 र्दाहात्प्रागपि दशाहः ॥ संस्कारांगं च भिक्षोदशाह इति धर्तस्वामी रामांडारश्च ॥  
 तच्चिंत्यम् ॥ मलैक्यादौ विरोधाच्च ॥ सतत्प्रागुक्तम् ॥ अत्र देहस्यैव संभवे दाहः ॥ आ-  
 हिताग्नौ विदेशस्थे मृते सति कलेवरम् ॥ निर्वेयं नाग्निभिर्यावत्तदीयैरपि दह्यत इति  
 ब्राह्मोक्तेः (तदभावे छंदोगपरिशिष्टे) विदेशमरणोस्थीनि आहृत्याभ्यज्य सपिंडम् ॥  
 दाहयेद्वर्हिषाच्छाद्य पावन्यासादिपर्ववत् ॥ अस्थनामलाभे पराग्निशकलान्युक्त-  
 यावता ॥ दाहयेदस्थिसंख्या निततः प्रभृति सूतकम् (हेमाद्रौ षट्त्रिंशन्मते) कुर्या-  
 द्दूर्ध्वमयं प्रेतं दूर्ध्वं त्रिंशति यष्टिभिः । पालांशभिः समिद्धिर्वासंख्या चैव प्रकीर्तिता  
 (भविष्ये) चत्वारिंशच्छिरस्थानेषो वायां च दशैव तु । बाह्वोश्चैव शतं दद्याद्विंशतिं  
 च तथोरसि ॥ उदरे विंशतिं दद्यात्त्रिंशतं कटिदेशयोः ॥ ऊर्वोश्चैव शतं दद्यात्त्रिंशतं  
 जानुजंघयोः ॥ पादांगुलीषु दशवैमया च प्रेतकल्पना (सदनरत्ने यज्ञपापर्वः) शिर-  
 स्यशीत्यर्धं दद्यात्तयो वायां तु दशैव तु । बाह्वोश्चैव शतं दद्याद्दशचैवांगुलीषु च ॥  
 उरसि त्रिंशतं दद्याद्विंशतिं जठरे दरे । द्वादशाद्वैद्यरायो रसार्धं शिश्नस्य तु ॥ ऊर्वो-  
 श्चैव शतं दद्यात्त्रिंशतं जंघयोर्द्वयोः । पादांगुलीषु द्वे दद्यादेतत्प्रेतस्य कल्पनम् ॥ स-  
 स्तकेनारिकेरंतु अलाबुं तालुके तथा । पंचरत्नं मुखे न्यस्य जिह्वायां कदलीफलम् ॥  
 चक्षुषोस्तुकपर्दादौ नासिकायां तु कालकम् । कर्णयोर्वह्मपत्राणि केशे वटप्ररोह

काः ॥ नालकंकमलानांतुअंस्थानेविनिक्षिपेत् । मृत्तिकातुनसाधातुर्हरितालक  
गंधकौ ॥ शुक्रेतुपारदंदद्यात्पुरीषेपित्तलंतथा । संधीयुतिलपिष्टंतुमांसेस्याद्यव  
पिष्टकम् ॥ सधुस्यालोहितस्थानेत्वचास्थानेमृगतृचा । स्तनयोर्जर्जकेदेयेना  
सायांशतपत्रकम् ॥ कमलं नाभिदेशेस्याद्दन्ताकेवृषणाश्रिते । लिंगेचरक्तमूलंतु  
परिधानंदुकूलकम् ॥ गोमूत्रंगोमयंगंधं सर्वौषध्यादिसर्वतइति ॥ इदंनिरग्नेरपि  
( तत्रैववृत्तमनुः ) प्रोषितस्यतथाकालोगतश्चेतद्वादशाब्दिकः । प्राप्तेवयोद  
शेवर्षेप्रेतकार्याणि कारयेत् ( बृहस्पतिः ) यस्यनश्रयतेवार्तायावत्तद्वादशवत्स  
रात् । कुशपुत्रकदाहनेतस्यस्यादवधारणा ( भविष्ये ) पितरिप्रोषितेयस्यनवा  
र्तनैवचागमः । ऊर्ध्वपंचदशाब्दयत्किंत्वातत्प्रतिरूपकम् ॥ कुर्यात्तस्यतुसंस्कारं  
यथोक्तविधिनाततः । तदादीन्येवसर्वाणिप्रेतकर्माणि कारयेत् । द्वादशाब्दप्र  
तीक्षापितृभिन्नविषयेतिमदनरत्नेउक्तम् ( गृह्यकारिकायांतु ) तस्यपूर्ववयस्क  
स्यविंशत्यब्दोर्ध्वतः क्रिया । ऊर्ध्वपंचदशाब्दात्तुमध्यमेवयसिस्मृता ॥ द्वादशाब्द  
त्सरादूर्ध्वमुत्तरेवयसिस्मृता । चांद्रायणावयंकृत्वात्रिंशत्तृचक्षुर्वावाप्तैः ॥ कु  
शैः प्रतिकृतिंदग्धवाकार्याः शौचादिकाः क्रिया इत्युक्तम् ( पराशरः ) देशांतरा  
तो नष्टास्तिथिर्नज्ञायते यदि ॥ कृष्णाष्टमीह्यमावास्याकृष्णाचैकादशीचया ॥ उ  
दकंपिंडदानंचतत्रग्राहंचकारयेत् । इदंमासज्ञाने ॥ तत्राहिताग्नेः पूजांशौचम् ॥  
अनाहिताग्नेस्तुत्रिरात्रम् ॥ अनाहिताग्नेर्देहस्तुदाह्योगृह्याग्निनास्त्रयम् । तद  
भावेपलाशानांतुन्तैः कार्यः पुमानपि ॥ वेष्टितव्यस्तथायत्नात्कृष्णासारस्यचर्मणा  
ऊर्णासित्रेणावत्ध्वातुप्रलेप्तव्योयवैस्तथा ॥ सुपिष्टैर्जलसंमिश्रैर्दग्धव्यश्चतथा  
ग्निना । असौस्वर्गायलोकायस्वाहेत्युक्त्वासर्वांधवैः ॥ सर्वपराशरंदग्ध्वात्रिरा  
त्रमशुचिर्भवेदितिब्राह्मोक्तेः ॥ इदंत्रिरात्रंदशाहमध्येदाहे ॥ तत्रप्रोषितेकाल  
शेषः स्यादित्युक्तेः ॥ किंतुतदूर्ध्वम् ॥ तत्रपत्नीपुत्रयोः पूर्वमगृहीदाशौचयोर्दशा  
हाद्येव ॥ गृहीताशौचयोस्तुत्रिरात्रम् ॥ पत्नीमृतौभर्तुश्चैवं ॥ सपत्न्योश्चैव  
मितिस्मृत्यर्थसारे ॥ अन्यसंपिंडनांतुसर्वपराशरदाहेत्रिरात्रम् ( तदाहंगिराः )  
देशांतरमृतंश्रुत्वानाशौचंचेतकथंचन ॥ गृहीतमितिशेषः ॥ कालात्ययेपिकुर्वीत



दाहकालेदिनत्रयमिति (स्मृत्यर्थसारेण) गृहीताशौचानां स्नानमात्रमुक्तं बह्वच  
परिशिष्टेऽपि (अथातीतसंस्कारः) सचेदंतर्दशाहं स्यात्तत्रैव सर्वसमापयेद्दूर्ध्वमाहि  
ताग्नेर्दाहात्सर्वमाशौचं कुर्यादन्येषु पत्नीपुत्रयोः पूर्वमगृहीताशौचयोः सर्वमा  
शौचं । गृहीताशौचयोः कर्माणि मिति त्रिरात्रम् ॥ यदंशीतावप्येवं ॥ विप्रवादश्च  
तु प्रतिष्ठातिदहनेत्वग्निदेस्यात्त्रिरात्रमित्युक्तम् ॥ द्वादशवर्षादिप्रतीक्षोत्तरं दाहे तु  
पुत्रादीनां सर्वेषां त्रिरात्रमिति कल्पतरुदिवोदासादयः (अथ प्रेतसंस्कारे कालः)  
( हेमाद्रौ गार्ग्यः ) प्रत्यक्षशवसंस्कारे दिनैर्विनिश्चयेत् । आशौचमध्ये संस्का  
रे दिनं शोध्यंतु संभवे ॥ आशौचविनिवृत्तौ चेत्पुनः संस्क्रियते मृतः । संशोध्यैव दिनं  
ग्राह्यमर्ध्वसंवत्सराद्यदि ॥ प्रेतकार्याणि कुर्वीत श्रेष्ठं तत्रोत्तरायणम् । कृत्वापि  
क्षप्रचतत्रापि वर्जयेत्तु दिनत्रयम् ( वाराहे ) चतुर्थसिंहे च द्वादशे च विवर्जये  
त् । प्रेतकृत्यं व्यतीपाते वैधृतौ परिधेतथा । करणो विष्टिसंज्ञे च शनैश्चरति ते तथा  
अथोदश्यां विशेषेण जन्मतारात्रये तथा ॥ जन्मदशमे को न विंशानि जन्मताराः ॥  
( भारते ) नक्षत्रे तु न कुर्वीत यस्मिन् जातो भवेत्तरः ॥ न पौषपदयोः कार्यं तथाग्नेये  
च भारत ॥ दारुणेषु च सर्वेषु प्रत्यारे च विवर्जयेत् ( काश्यपः ) भरण्यां द्रुमिघाश्ले  
षामलं द्विचरणानि च । प्रेतकृत्येति दुष्टानि धनिस्याद्यं च पंचकम् ॥ फाल्गुनी द्वित  
यं रौहिण्यनराधापनर्वसु । आषाढे द्वे विशाखा च भानि द्विचरणानि च ( ज्योति  
र्नारदः ) चतुर्दशी तिथिर्न दंभद्रां शुक्रारवासरौ । सिते जययोरस्तमयं दंभद्रां वि  
यमांघ्रिभं ॥ शुक्लपक्षं च संत्यज्य पुनर्दहनमुत्तमम् । वसुत्तरार्धतः पंचनक्षत्रेषु त्रिज  
न्मसु ॥ पौषा ब्रह्मर्षयोऽथैव दहनात्कुलनाशनम् ( अस्यापवादमाह तत्रैव वैज  
वापः ) प्रेतस्य साक्षाद्गन्धस्य प्राप्ते त्वेकादशे हनि । नक्षत्रतिथिवारादिशोधनीयं  
न किंचन ॥ युगमन्वादि संक्रांतिदर्शे प्रेतक्रियायदि । दैवादापतिता तत्र नक्षत्रादि  
न शोधयेत् ( विश्वप्रकाशेऽपि ) गुरुभार्गवयोर्मौल्ये पौषमासे मलिम्लुचे । नातीतः  
पितृमेव स्याद्गयां गोदावरीं विना ( दानमपि तत्रैवोक्तम् ) भद्रायां भूमिदानं स्या  
त्त्रिपादस्यैहिरण्यदः । वारेयुतत्तद्वर्गां तु वा सोदानं विधीयते ॥ धनिस्या पंचकमृते  
पंचारत्नानि दापयेत् । एकाशीतिपलं कांस्यं तदर्धवातदर्धकम् ॥ नवयद्द्विपलं वा

पिदद्याद्विप्रायशक्तितइत्यलंप्रसंगेन (हेमाद्रौवृद्धमनुः) अमृतंमृतमाकर्ण्यकृतंय  
 स्यौध्वदेहिकम् । प्रायश्चित्तमसौस्मार्तकृत्वाग्नीनादधीतच । जीवन्यादिसमा  
 गच्छेतघृतकुंभेनिसज्यतम् ॥ उत्पृत्यस्नापयित्वास्यजातकर्मादिकारयेत् । द्वाद  
 शाहंव्रतचर्याविरात्रमथवास्यतु ॥ स्नात्वोदहेततांभार्यामन्यांवातदभावता । अ  
 ग्नीनाधायविधिवत्त्रात्यस्तोमेनवायजेत् ॥ अथेद्राग्नेनपशुनागिरिंगत्वाचतत्र  
 तु । इष्टिमायुधमतीकुर्यादीप्सितांप्रचक्रतंस्ततः ॥ अनाहिताग्नेस्तुचरुः (मृतवा  
 र्ताश्रवणोत्वाश्चलायनः) सुरभयसवयस्मिन्जीबेमृतशब्दइति ॥ यस्यतुजीवतसव  
 मृतिवार्ताश्रुत्वास्त्रियासहगमनंकृतंतदातद्वैधमेव ॥ भर्तुर्मरणाज्ञानस्यैवनिमित्त  
 त्वात् ॥ प्रमात्वस्यगौरवेणायुक्तत्वाच्चेतिकेचित् ॥ तन्न ॥ मरणाज्ञानस्यनिमित्त  
 त्वेतीतानागतयोरपितत्त्वापत्तेः ॥ भर्तुर्वैधदाहाभावेनतस्याःसहगमनाभावाच्च ॥  
 तस्मादाशौचवज्ज्ञातमरणस्यैवनिमित्तत्वं ॥ नचाव्रतदस्ति ॥ परंक्राम्यंमरणम  
 स्तु ॥ अतआत्महननदोयोस्तीतितातपादाः ॥ तथासर्पसंस्कारेकृतेविरात्रमा  
 शौचंतद्विधिंचाह ( शौनकः ) अथवक्ष्यामिसर्पस्य संस्कारविधिमुत्तमम् ॥  
 सिनीवाल्यांपौर्णमास्यां पञ्चम्यांवापिकारयेत् ॥ कृतसर्पवधोविप्रःपूर्वज  
 न्मनिवायदि । वधंप्रख्यापयेत्पापी चरेत्कच्छांप्रचतुर्दश ॥ विप्रायलोहदण्ड  
 ज्च तन्मल्यंवापिदापयेत् ( सुल्यमाह ) निठकत्रयंद्विनिठकंवा निठकमेकंक  
 नोयसं ॥ अनुसत्यादिकर्तुं शांनिठकमर्धतदर्धकं॥ इदंस्वर्गाहूप्ययोःशक्याज्ञेयम्  
 (संस्कारमाह) प्रियंगुत्रीहिगोधूमतिलपिष्टेनवापुनः । कृत्वासर्पकृतिंशूर्पेनि  
 धायप्रार्थयेदहिं ॥ सहिपूर्वमृतःसर्पअस्मिन्पिष्टेसमाविश ॥ संस्कारार्थमहंभ  
 क्त्याप्रार्थयामिसमासतः ॥ वस्त्रोपवीतगंधाद्यैःसंपूज्यचहरेद्वहिः । कुर्यात्संस्का  
 रसंकल्पंप्राणायामपुरःसरं ॥ यज्ञोपवीतिनाकार्यसर्पसंस्कारकर्मतु । लौकि  
 कारिणंप्रतिष्ठाप्यसमिदाधानमाचरेत् ॥ ततोऽग्नेरग्निदिग्भागे भूमिसंप्रोक्ष्यवा  
 रिभिः । चितिकृत्वायसंस्तीर्यकुशैराग्नेयकाग्रकैः ॥ पर्युक्ष्याग्निंपरिस्तीर्य  
 परिधिचयसमर्चयेत् । कृत्वेधमाधानमाधारौचसुग्रीचयथाविधि ॥ सर्पगृही  
 त्वायत्नेनचितिमारोपयेत्सुधीः । सुवेराजुहुयादाज्यमरनौव्याहृतिभिस्त्रिभिः॥



सर्पास्येजुहुयादाज्यंव्याहृत्याचसमग्रया । आज्यशेषं सुवेगौवसर्पदेहेनियेचयेत् ॥  
 च समस्थैर्जलैः सर्पव्याहृत्याभ्युक्ष्यपाणिना । अग्नेरक्षाण्डित्यनयासर्पायाग्निं  
 प्रदापयेत् । उपतिष्ठेदह्यमानं नमोस्तु सर्पसंव्रतः ॥ ज्ञानतो ज्ञानतो वापि कृतः सर्प  
 ब्रधो मया । पूर्वजन्मनिवासर्पतत्सर्वसंतुमर्हसि ॥ क्षीराज्येन तत्पचाग्निं प्रोक्ष्य  
 व्याहृतिभिर्जलैः । नास्ति संचयनं कुट्यातिस्नात्वा च मृगहं ब्रजेत् ॥ ब्रह्मचर्यं  
 दिक्कं कार्यं विरात्रा शौचमिष्यते ॥ सचैलंतु चतुर्थे हि स्नात्वा विप्रान्समर्चयेत् ॥  
 सर्पानंतस्तथा शेषः कपिलो नाग एव च । कालिकः शंखपालश्च भधरश्चेति ना  
 मभिः ॥ गंधपुष्पास्तैर्धूपदीपाद्यैरर्चयेत् द्विजान् । घृतपायसभक्ष्यैश्च द्विजान् द्यू  
 तुभोजयेत् ॥ एवं कृते विधानेन सर्पसंस्कारकर्मणि ॥ सर्पहिंसा कृतात्पापान्मुच्य  
 तेनात्र संशयः ॥ इति सर्पसंस्कारः ॥ क्वचित्तु जीवतोऽप्यंत्यकर्म शौचं च कार्यम्  
 ( यथा । प्रायश्चित्तानिच्छोः पतितस्य घटस्फोटे ) पतितस्योदकं कार्यं सर्पिं  
 डैर्बांधवैः सह । निंदिते हनि सायाह्ने ज्ञातृत्विग्गुरुसन्निधौ ॥ दासी घटमपां पूर्णं  
 पर्यस्येत् प्रेतवत्तदा । अहोरात्रमुपासीरन्नाशौचं बांधवैः सहेति मनक्तेः ॥ निंदिते  
 रिक्तादौ ( अपरार्कैर्वशिष्ठोऽपि ) वेदविज्ञावकशूद्रयाजकोत्तमवर्गावर्गपतिता  
 स्तेषां पात्रनिनयनमपात्रसंस्कारादकृत्स्नं पात्रमादाय दासी सवर्गापुत्रो वा बंधुरस  
 दृशो वा गुणाहीनः सव्येन पादेन प्रवृत्ताग्रानुदभानुलोहितानुवोपस्तीर्यापिः पूर्णं पा  
 त्रमस्मै निनयेन्निनेतारं चास्य प्रकीर्णकेशाज्ञातयोन्वाले भेरन्तपसव्यं कृत्वा गृहेयु  
 स्त्वेरमापद्येरन्त ऊर्ध्वं तेन तं धर्मयेयुस्तद्धर्मिणास्तं धर्मयंत इति ॥ उत्तमवर्गा ब्राह्म  
 णादयः ॥ तेषां वर्गः समहस्तस्मात्पतिता ब्रह्मादयः ॥ अपात्रसंस्कारः कुतिसतपा  
 त्रसमूहः ॥ प्रवृत्ताग्राः छिन्नाग्राः ॥ स्त्रैर्यथेच्छं धर्मादिकार्यं कुर्युः ॥ अस्माद्वच  
 नसामिष्ट्यात्पात्रनिनयनात्प्राक्पतितज्ञातीनां धर्मकार्येऽवधिकारो नास्तीत्यप  
 रार्कः ॥ तस्य विद्यागुरुयोनि संबंधांश्च सन्निपात्य सर्वगयुदकानि प्रेतकार्याणि कु  
 र्युः ॥ पात्रं वास्य विपर्यस्येयुर्दासः कर्मकरो वाऽवकरादमेध्यं पात्रमानीय दासी  
 घटात्पूरयित्वा दाक्षिणामुखः पदाविपर्यस्येदमनुदकं करोमीति । नामग्राहं सर्वे  
 वालभेरन् ॥ प्राचीना वीतिनो मुक्ता शिखा अप उपस्पृश्य ग्रामं प्रविशेयुरिति गौत

मोक्तेश्च ॥ उदकादीत्युक्तेर्दाहनिवृत्तिः ॥ प्रेतकार्याण्येकादशाहश्राद्धांतानि  
 दास्याहोतुंबुधरोदासीघटः ॥ तेनोदकेनामेध्यपात्रंपूरयित्वादासांदिन्युबजंवा  
 सपादेनकुर्यादितिहरदत्तः ॥ अत्रनामग्राहवचनमुदकादिप्रेतकार्येतद्वर्जनत्वार्थं ॥  
 तेनतत्तुष्णींभवति ॥ सतच्चप्रायश्चित्तानिच्छोः ॥ तस्यगुरोर्वाधवानांराज्ञश्चस  
 मक्षंदोधानभिख्याप्यतमनुभाष्यपुनःपुनराचारंलभस्वेति सपद्येवमप्यनवस्थि  
 तमतिः स्यात्ततोऽस्यपात्रंविपर्यस्येदितिशांखोक्तेः ॥ जीवंतमेवोद्दिष्यपिंडोद  
 कश्राद्धानिनाम्नादद्यादित्यपरार्कः ॥ कृतप्रायश्चित्तस्यघटस्फोटोदकतेऽपिसंग्रह  
 विधिसाहगौतमः ॥ यस्तुप्रायश्चित्तेनशुद्धोत्तस्मिन्शुद्धेशातकुंभमयंपात्रंपुराय  
 हृदात्पूरयित्वास्रवंतीभ्योवा ॥ ततस्सनमुपस्पर्शयेद्युथास्मै तत्पात्रंदद्युस्तत्सं  
 प्रतिगृह्यजपेच्छांताद्यौःशांतापृथिवीशांतंविश्वमंतरिक्षं योरोचनस्तमिहगृह्णा  
 मीत्येतैर्यजुर्भिःपावमानोभिस्तरत्समंदीभिःकूटमांडैश्चाज्यंजुहुयाद्विरायंदद्या  
 इगांचाचार्याय ॥ यस्यतुप्राणांतिकंप्रायश्चित्तंसमृतःशुद्धोत्सर्गायेवतस्मि  
 न्नुदकादीनिप्रेतकर्माणिाकुर्युरेतदेवशांत्युदकसर्वेषुपपातकेठवति ॥ घटस्फोट्ये  
 त्तरंप्राणांतिकंप्रायश्चित्तेकृतेतुमृतमवशुद्धोन्नतवसंग्रहविधिः ॥ अतस्तेनवि  
 नापिप्रेतकर्मकुर्यादित्यर्थः ॥ उतपातकेठवपिघटस्फोटोदकतेस्त्वकार्यमित्यर्थः(या  
 जवल्क्यः) चरितव्रतत्रायातेनितयेरन्नबंधतः । जुगुप्सेरन्नचाप्येनंसंवसेयुप्रचस  
 र्वशः ॥ कृतघटस्फोटस्यैवायंपरिग्रहविधिरितिमिताक्षरायामपरार्कश्च । अ  
 न्यथाप्रायश्चित्तमात्रेणतत्प्रसंगात् (मनुरपिघटस्फोटमुक्त्वा) निवर्त्तेरस्ततस्त  
 स्मात्संभाषणसहासनैरित्युक्त्वा ॥ प्रायश्चित्तेतुचरितेपूर्णाकुंभमपांनवस । तेनै  
 वसाईप्रास्येयुःस्नात्वापुरायेजलाशयेइतितच्छब्दंप्रायुक्त (अपरार्कवशिष्टोपि)  
 पतितानांचरितव्रतानांप्रत्युद्धारोऽथाप्युदाहरति ॥ अग्रेऽभ्युद्धरतांगच्छेत्क्रीड  
 न्निब्रह्मसच्चिव । पश्चात्पातयतांगच्छेच्छेच्छेच्चिबुरुदन्निवेत्याचार्यमाहपितृहं  
 तारस्तत्प्रसादादपगतपापास्तेषांप्रत्यापत्तिः ॥ पूर्णाहृदात्प्रवृत्ताद्वा सकांच  
 नंपात्रंमाहेयंवाद्भिः पूरयित्वापोहिष्योयाभिरेनमद्भिरभियिंचेयुः ॥ सर्वस्रवा  
 भियिक्तस्यप्रत्युद्धारःपुत्रजन्मनाद्याख्यातइति ॥ प्रत्युद्धारःपरिग्रहः ॥ तत्रो



इरतांहसन्निवाशे सरः स्यात् ॥ पातयतांघटस्फोटं कुर्वतांशोचन्निवपश्चाद्ग  
 च्छेत् ॥ मातापित्रादिहंतृणां परिग्रहेन कार्यः ॥ तत्प्रसादे सति चोर्गात्रतानां का  
 र्यः ॥ प्रवृत्तनिर्भरः ॥ पुत्रजन्मनेत्यभिधेकोत्तरं जातकर्मदयः संस्काराः पुत्रज  
 न्मवत्कार्या इत्यपरा कौटिल्याचख्यौ ॥ अतस्त्वविज्ञानेश्वरो घटे पर्वाजिते जातिमध्य  
 स्थो यवसंगवासः ॥ प्रदद्यात्प्रथमं गोभिः सत्कृतस्य हि सत्क्रियेत्यत्र गवां भक्षणभा  
 वे पुनर्व्रतं चरेदित्येतत्प्रकृते ॥ एवं चरितव्रतविधौ विशेषो यमिति वदन् घटस्फोटो  
 त्तरं परिग्रहसर्वैतन्नसर्व्ववेत्याह ॥ तस्मात्कृते पिघटस्फोटे प्रायश्चित्तं परिग्रहवि  
 धिः पुनः संस्कारा भवन्तीति सिद्धम् (तथा जीवच्छ्राद्धे कृते हेमाद्रौ बौधायनः) तत्रा  
 शौचं दशाहं स्यादित्यलं प्रसंगेन ॥ एवं सापवादे आशौचे उक्ते प्रतिशाखं भिक्षेप्यं  
 त्यकर्मणि साधारणां किंचिदुच्यते ॥ तत्राधिकारिणाः प्रायुक्ताः ॥ सर्वाभावे धर्मपु  
 त्रो वा कार्यः ॥ अपुत्रेणासुतः कार्यो यादृक्तादृक्प्रयत्नतः ॥ पिंडोदकक्रियाहेतो  
 र्नामसंकीर्तनाय चेति व्यासवचनात् (गृह्यपरिशिष्टे) असगोत्रः सगोत्रो वा यदि  
 स्त्री यदि वा पुमान् । प्रथमेऽह्नियः कुर्यात्स दशाहं समापयेत् ॥ दद्यात्पिंडमिति शे  
 षः (भविष्ये) यत्राद्यो दीयते पिंडस्तत्र सर्व्वं समापयेत् (ब्राह्मेऽपि) प्रथमेऽह्नियो  
 दद्यात्प्रेतायान्नं समाहितः । अन्नं न वसुचान्येषु स एव प्रददात्यपि (विज्ञानेश्वराद  
 यस्तु) केचित्तु अग्निं दद्यादिति व्याचक्षते ॥ सगोत्रो वाऽसगोत्रो वा योऽग्निं दद्या  
 त्सखेनरः । सोऽपि कुर्यान्न वशाद्दंशुद्योत्तुदशमेऽहनोति दिवो दासीये वचनाच्च  
 (तत्रैव) दुष्वासंस्थानस्थमासन्नधर्म्मोन्मीलितलोचनम् । भूमिं पितरं पुत्रो यदि दा  
 नं प्रदापयेत् ॥ तद्विशिष्टगयाश्चाद्वादशमेधशतादपि (तानियथा) मोक्षं देहिह  
 वीकेशमोक्षं देहि जनार्दन । मोक्षधेनुप्रदानेन मुकुंदः प्रीयतां ममेति मोक्षधेनुमंत्रः ॥  
 ऐहिकामुटिसकं यच्च सप्तजन्मार्जितं ऋणम् ॥ तत्सर्व्वं शुद्धिमायातु गामेतां ददतो म  
 मेति ऋणाधेनोः ॥ आजन्मोपार्जितं पापं मनोवाक्कायकर्मभिः ॥ तत्सर्व्वं नाशमाया  
 तु गोप्रदानेन केशवेति पापधेनोः (भारते) शुक्लपक्षे दिवा भूमौ गंगायां चोत्तराय  
 गो । धन्यास्ता तस्मिन् तिहृदयस्थे जनार्दने (हेमाद्रौ वाराहे) व्यतीपातोऽथ संक्रां  
 तिस्तथैव ग्रहणारवेः ॥ पुरायकालास्तदा सर्व्वयदा मृत्युरुपस्थितः (व्यासः) आ

सन्नमृत्युना देया गौः सवत्सातु पूर्ववत् । तदभावे तु गोरे वनरकोत्तारणाय वै ॥ तदा  
यदि न शक्नोति दातुर्वै तरिणीं तु गाम् । शक्नो न्यो रुक्ता दादत्वा दद्याच्छे यो मृतस्य तु  
(मदनरत्ने जातकार्यः) उत्क्रांत्या दीनिदानानि दश दद्यान्मृतस्य तु । गोभूतिलहि  
ररायाज्यवासौ धान्यगुडानि च ॥ रौप्यं लवणमित्याहुर्दशदानान्यनुक्रमात् ॥ एता  
नि दशदानानि न रराणां मृत्युजन्मनोः ॥ कुर्यादिभ्युदयार्थं तु प्रेतेऽपि हि परस्य वै (ब्रा  
ह्मे) ताम्रपात्रं तिलैः पूर्णं प्रस्थमात्रं द्विजाय तु ॥ सहिररायं च यो दद्याच्छृङ्गावित्ता  
नुसारतः ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा लभते गतिमुत्तमा ॥ उत्क्रांतवै तरिणी च दश  
दानानि चैव हि । प्रेतेऽपि कृत्वा तं प्रेतं शवधर्मणा दाहयेत् (तत्रैव परिशिष्टे) प्रियमा  
णस्य कर्णोत्पुण्यमंत्रान्जपेत्ततः ( क्रियानिबन्धे गारुडे त्वष्टौ दानान्युक्तानि ) तु  
लसी संनिधौ कृत्वा शालग्रामशिलां तथा । तिललोहं हिररायं च कर्पासं लवणां तं  
था ॥ सप्तधान्यं क्षितिर्गविसकैकं पावनं स्मृतमिति ॥ दशदानवै तरिणी धेनुत्क्रां  
तधेनुदानादिभट्टकृतांत्येष्टिपद्धतौ ज्ञेयम् ॥ कृतांत्यकर्मधिकार्थं श्रीचक्रच्छात्र  
कुर्यादिति तत्रैवोक्तम् ॥ अत्र देवयाज्ञिकेन समुख्यैर्मधुपर्कदानमुक्तम् (तदुक्तं वारा  
हे) दृष्ट्वा सुविह्वलं ह्येनं यममार्गानुसारिणम् । प्रयाणा काले तु नरो मंत्रेणाविधि  
पूर्वकम् ॥ मधुपर्कत्वरन गृह्यइमं मंत्रमुदाहरेत् ॥ ओं गृहाणा चे मं मधुपर्कमाद्यं स  
सारनाशनकरं ह्यमृतेन तुल्यम् । नारायणो नरचितं भगवत्प्रियाणां दाहे च शांति  
करां सुरलोकपूज्यम् ॥ अनेनैव तु मंत्रेणा दद्याच्च मधुपर्ककम् । नरस्य मृत्युकाले तु  
परलोकसुखावहम् (अथ दुर्मरणादिवोदासीये) चंडालादिमृते विप्रेत्वं तरिणमृते  
पिवा । कृच्छ्राति कृच्छ्रचंद्रे स्तु शुद्धिस्तत्र प्रकीर्तिता (देवजानीये जावालिः)  
शूद्रेणादग्धो यो विप्रो न लभेच्छाश्च तीर्गतिम् । प्रायश्चित्तं प्रकुर्वीत ब्राह्मणाः पा  
पशुद्धये ॥ चंद्राय सांपराकंच प्राजापत्यं विशोधनम् (गृह्यकारिकायाम्) उद  
क्यासु तिकावापि यदि प्रेतं स्पृशति हि । तस्यैवा विधिरादिष्टो वात्स्येनैव महात्म  
ना ॥ एवमतिकोक्तः (मदनरत्ने स्मृत्यंतरे) ऊर्ध्वोच्छिष्टाधरोच्छिष्टोभयोच्छि  
ष्टेतथैव च । अस्पृश्यस्य स्पर्शने चैव खट्वादिमरणापि च । एतद्देयानुसारेणा प्रायश्चि  
त्तं समाचरेत् ॥ कृच्छ्रांस्त्रियत्पंचदशांश्चंद्रयमथापिवा । शुद्धौ तदानीं संपा



द्य शवधर्मैरादाहयेत् ( गृह्यकारिकायाम् ) खद्यांमरणोच्चैव त्रींस्त्रींकृच्छ्रा  
 नप्रकल्पयेत् । सप्तात्यजैस्तुसंपृष्टोमृतोदैवात्कथञ्चन ॥ एकत्रिंशत्कृच्छ्रै  
 स्तुशुद्धिरुक्तामनीयिभिः । कुशापेत्वर्धदग्धेतुचितास्पृष्टांत्यजातिभिः । तत्स्प  
 र्शनेदूयगाञ्च त्रिभिःकृच्छ्रैर्विशुद्ध्यति ( धर्मप्रदीपे ) चागडालसूतिकोदक्या  
 स्पृष्टेप्रेतेतथैवच । तस्यपापविशुद्ध्यर्थंकृच्छ्रानपञ्चदशाचरेदित्युक्तम् ( मनुः )  
 अस्त्वग्याह्वाहुतिः सास्याच्छुद्रसंपर्कदूयिता ॥ अत्रापिकृच्छ्रत्रयम् ॥ अस्पृश्यस्य  
 र्शनेचैवेत्युक्तेः ( तत्रैवधर्मप्रदीपे ) रात्रौवारात्रिशेषेवाग्निंयतेचेत्तद्विजायतः ।  
 दाहंकृत्वायथान्यायंदौपिगडौनिर्व्वपेत्सुतः ॥ रजस्वलागर्भिरायादिमृतौतुव  
 स्यामः ( निर्णयामृतेपारिजातेयसः ) संध्यायांवातथारात्रौ दाहःपाथेयक  
 र्मच । नवश्राद्धंचनोकुर्यात्कृतंनिष्ठफलतांब्रजेत् ॥ एतद्दिनमृतस्यरात्रिनिषेधा  
 र्थम् ( यत्तुस्कांदे ) यदिरात्रौदहेत्तस्यसमाप्तिर्दहनस्यतु । परेऽहन्युदितेसूर्ये  
 कार्यातस्योदकक्रिया ॥ दग्धस्यतुनवैकार्यारात्रौजातदकक्रियेति ॥ तन्निर्मू  
 लं ( रात्रिमृतस्यतुतत्रैवसंग्रहे ) रात्रौदग्ध्वातुपिंडांतंकृत्वावपनवर्जितम् ॥ वप  
 नंनेष्यतेरात्रौश्वस्तनीवपनक्रियेति ॥ वपनंतुप्रातः ॥ तच्चसर्वैःपुत्रैःकार्यम् ॥ गं  
 गायांभास्करक्षेत्रेमातापित्रोर्गुरोर्मृतौ । आधानेसामयागेचवपनंसप्तसुस्मृतमि  
 त्तिमिताक्षरायांस्मृतेः ॥ मरणास्याऽनंगित्वान्नैमित्तिकमिदम् ॥ तदेवसंग्रहवच  
 नेनपरेद्युस्तद्व्यतेतीर्थवत् ॥ तेनकस्यचिद्दाहांगत्वोक्तिश्चिंत्या ( मदनरत्नेगा  
 लवः ) प्रथमेऽहनिकर्त्तव्यंवपनंचानुभाविनाम् । प्रेतस्यकेशश्मश्रूदिवापयित्वा  
 ऽथदाहयेत् ॥ आशौचांतेतुपुनःकार्यविधिवत् ॥ मदनपारिजातेऽप्येवम् ॥  
 तेनसर्वस्याऽस्यनिर्मूलत्वोक्तिरज्ञोक्तिरेव ( स्मृतिरत्नावल्याम् ) शवंरात्र्युधि  
 तंचेतपीनकृच्छ्रानकृत्वादहेत्सुतः ( मदनरत्नेऽगिराः ) ऊर्ध्वोच्छिष्टाधरोच्छि  
 ष्टेह्यंतरिक्षमृतेपिवा । कृच्छ्रत्रयंप्रकुर्वीतआशौचेमरणोपिच ॥ अथसाग्नेविशे  
 यः ( कारिकायाम् ) कृष्णापक्षेप्रसीयेतयद्यह्निप्रातराहुतीः । शेषास्तुजुहुयाद्  
 र्शपर्यताःपक्षहोमवत् ॥ प्रतिपत्प्रातर्होमांताइत्यर्थः ॥ यद्याहिताग्निरपरपक्षे  
 प्रियेताहुतिभिरेनंपूर्वपक्षेहरयुरित्याप्रबलायनोक्तेः ॥ तदानीमेवजुहुयात्सायंका

लाहुतीरपि । सायंप्रियेतचेत्सायमाहुतीर्जुह्यादथ । तदानीमेवजुह्यात्प्रातः  
 कालाहुतीरपि । सकृदगृहीतमंत्रेष्टंभिन्नतंत्रंचहोमयोः ॥ दार्शचापिप्रकुर्वीतस्था  
 लीपाकृतदेवतु ( रुंदोरापरिशिष्टे ) हुतायांसायमाहुत्यांदुर्बलश्चेदगृहीभवेत् ।  
 प्रातर्होमस्तदेवस्यावजीवेच्चसपुनर्जना ॥ इदंशुक्लपक्षपरम् ॥ दुर्बलोमुस्युः ( वि  
 कांडमंडनः ) दर्शष्टिंचतदाकुर्यादिष्टिर्यदित्तसंभवेत् । देवतानांप्रधातानामेकैक  
 स्य हुनेत्पृथक् ॥ पुरोनुवाक्यायाज्याभ्यांचतुरात्तघृताहुतीः ( तथा ) अग्रावर  
 रायोराहूदेप्रसीयेतपतिर्यदि । प्रेतंस्पृष्ट्वामथित्वाग्निं ज्ञप्त्वाचोपावरोहणम  
 घृतञ्चद्वादशोपात्तंतूष्णींहुत्वाशवक्रिया ॥ विच्छिन्नश्रोतारनेमृतौतुप्रेताधानं  
 तत्रैवोक्तम् ॥ प्रेतंस्वाभ्यालयेष्वाप्तवामथितारन्यानलेरणी । सन्निधायारणीमंधे  
 तयस्येतियजुयात्ततः ॥ यस्याग्नयोजुह्वतोमांसक्रामाःसंकल्पयंत्येयजमानमांस  
 म् ॥ जायंतुतेहविषेसादितायस्वर्गलोकमिमंप्रेतंनयंत्वितिमंत्रतः ॥ प्राणीयपा  
 वकंतूष्णींद्वादशोपात्तसर्पिषा । तूष्णींहुत्वाततःकुर्यात्प्रेतेमात्याइतिक्रियास ॥  
 नष्टेष्टवरिनष्टवथाररायीनांशेस्वामीप्रियेतचेत् । आहरेदरणीद्वंद्वमनोज्ञोतिक्व  
 चाततः ( यज्ञपापवः ) यजमानेचिताहूदेपात्रन्यासकृतेसति । वर्षाद्यभिहतेव  
 ह्नौक्रथंकुर्वीतियाजिकाः ॥ तदर्धदग्धक्राष्टेनमंथनंतवकारयेत् । तच्छेद्यालाभतो  
 न्येनदग्धशेषेणावापुनः ॥ हुत्वाज्यंलौकिकेवह्नौहुतशेषंदहेत्तुवा । अत्राग्नियुस  
 त्सुपर्णाशरैःशरीरोत्पत्तिः ॥ शरीरेवासतिप्रेताधानेनारन्युत्पत्तिः ॥ उभयाभावे  
 तुप्रेताधानेनाधिकाराद्वाहादिसंस्कारलोपः ॥ उदकदानाद्येवकार्यमितिकेशवी  
 कारशतद्वयीप्रमुखाः ॥ तन्न ॥ नियेकाद्याःप्रमशानांतास्तेषांबैमंत्रतःक्रियाइ  
 तिविरोधात् ॥ क्रियालोपगतायेचेतिनियेधात्तदभावेपलाशानांवृतेःकार्यः ॥  
 पुमानधीत्यभावेविधानस्याग्न्याभावेपिसाभ्याच्च । तेनप्रेताहुत्यभावेपिस्वष्टक  
 द्रव्यांतरोक्तेरुद्घात्यत्वात् ॥ प्रेताधानंदाहोपिभवत्येव ॥ प्रतिकृतेरगनीनांचप्रे  
 ताधानप्रयोजकत्वाक्षतेः ॥ पत्न्याअप्येवम् ॥ दाहयित्वाग्निहोत्रेणास्त्रियंत्रत  
 वतींमतिरिति याज्ञवल्क्योक्तेः ( यत्तु ) द्वितीयांचैवयोभार्या दहेद्वैतानिका  
 ग्निभिः ॥ जीवंत्यांप्रथमायांतुसुरापानसमस्मृतमितितदाधानेसहानधिकृतावि



ययमिति विज्ञानेऽश्वरः ( मदनरत्नेब्राह्मेऽपि ) आहिताग्न्योऽचदंपत्यो र्यस्त्वा  
दौघ्रियतेभुवि । तस्यदेहःसपिराडैश्च दग्धव्यस्त्रिभिरग्निभिः ॥ पप्रचान्मृतस्य  
देहस्तुदग्धव्योलौकिकाग्निना । अनाहिताग्निदेहस्तुदाह्योगृह्याग्निनाद्विजैः  
( त्रिकांडमंडनस्तुविकल्पमाह ) ज्येष्ठायांविद्यमानायां द्वितीयायैस्वयोनिते ।  
काम्यंनित्याग्निहोत्रंवानकथंचित्प्रयच्छति ॥ स्त्रीमात्रमविशेषेणादग्धवान्यैर्वै  
दिकादिभिः । विवाह्यादधतेयद्वाधानमेवास्तिचेदध्वरिति ॥ अत्रेदंतत्त्वम् ॥ सा  
ग्नेःपत्नीमृतौद्वौपक्षौ ॥ पुनर्विवाहेऽद्यां पूर्वाग्निभिर्देहेदित्येकःपक्षः ॥ भार्या  
यैर्पूर्वसारिरायैदत्वाग्नीनंत्यकर्मणि । पुनर्दार्क्रियांकुर्यात्पुनराधानमेवचेतिम  
नक्तेः ॥ दाहयित्वाग्निहोत्रेणास्त्रियंतृत्तवतींपतिरिति याज्ञवल्क्योक्तेःप्रच ॥  
पुनर्विवाहाशक्तौनिर्मम्येनतांदग्धवापूर्वाग्निठवेवाग्निहोत्रेष्ट्यादिकार्यमित्य  
र्थः ॥ आहार्येणाहिताग्निंपत्नीचैत्याश्वलायनोक्तेः ( भारद्वाजोऽपि ) निर्मम्येन  
पत्नीमिति ॥ पूर्वाग्न्येकदेशेनदेहेदितियाज्ञपार्श्वदेवयाज्ञिकादयः ( यानिच )  
तस्मादपत्नीकोऽप्यग्निहोत्रमाहरेदितिश्रुतिः ( विष्णुःछन्दोगपरिशिष्टं ) मृता  
यामपिभार्यायांलौकिकाग्निनंहित्यजेत् । उपाधिनापितत्कर्मयावज्जीवंसमा  
चरेत् ॥ उपाधिर्हंसकुशपत्न्यादिः ॥ अन्येकुशमयींपत्नींकृत्वातुगृहमेधिनः ।  
अग्निहोत्रमुपासंतेयावज्जीवमनुव्रताइत्यपरार्कस्मृत्यंतरात् ( कात्यायनोऽपि ) रा  
मोपि कृत्वासौवर्णीं सीतांपत्नींयशस्विनीं । ईजेबहुविधैर्यज्ञैःसहभ्रातृभिरच्युतइ  
त्यादीनि ॥ तानिपूर्वाग्निठवेवाग्निहोत्रादिपरारिणा ॥ नत्वपत्नीकस्याधानार्था  
नि ॥ ऋतुधोनामाधानांप्रयोजकत्वात् ॥ अपत्नीकस्याधानांप्रवृत्तिरितिमानव  
परिशिष्टाच्च ॥ सोमो नभवत्येव ॥ अपत्नीकोऽप्यसोमपद्मतिश्रुतेः ( यत्तुभरद्वाजा  
षस्तंबसूत्रम् ) दारकर्मणायद्यशक्तआत्मार्थमग्न्याधेयमिति ॥ अस्यार्थः ॥ पु  
नर्विवाहाशक्तौयदग्न्याधेयंपूर्वकृतमस्तितदात्मार्थमेव ॥ नपत्न्यैदद्यादिति ॥  
ब्राह्मणभाष्यापराकाशार्करोमाण्डारादितत्त्वमप्येवम् ॥ त्रिकाण्डमण्डनस्तुप  
क्षयमाह ॥ अन्येऽप्यपत्नीकस्याधानमाहुस्तदाशयंचविष्णुः ( तृह्ययाज्ञवल्क्यः )  
आहिताग्निद्वयंयान्यायंदग्धव्यस्त्रिभिरग्निभिः । अनाहिताग्निरेकेनलौकिके

नापरोजनः (क्रतुः) एवंवृत्तांसवर्णास्त्रौ द्विजातिः पूर्वमारिणीं । दाहयेदग्निहे  
 वेगायज्ञपात्रैश्चधर्मवित्त (कारिकायास) पत्नीमपि दहेदेवंभर्तुः पूर्वमृतायदि ।  
 अग्निकांदहेदेवंकपालेन हविर्भुजा (आशौचप्रकाशे क्रतुः) विधुरं विधवां चैव  
 कपालस्याग्निना दहेत् । ब्रह्मचारियती चैव दहेदुत्तपनाग्निना ॥ तुयाग्निना च द  
 ग्धव्यः कन्यकावालणवच । अग्निवर्णां कपालन्तु कृत्वा तत्र विनिक्षिपेत् ॥ का  
 रोयादिततो वह्निर्जातोयः सकपालजः । अनुपनीतेययद्यपि जाताररायग्निः कै  
 श्चिदुक्तस्तथापितस्य कलौ निविद्धत्वा क्लोरयमेव ज्ञेयः (स्मृत्यन्तरे) गृहस्थो ब्रह्म  
 चारी च विधुरो विधवाः स्त्रियः ॥ औपासनप्रचोत्तपनस्तु याग्निस्तु कपालजः ॥  
 (उत्तपनस्तु) दर्भाग्निं ननु प्रज्वाल्य पुनर्दभस्तु संयुतः । पुनर्दभस्तु तीये ग्निरय उ  
 त्तपनस्मृतः (यसः) यस्यानयति शूद्रो ग्निं तृणाकाशहवींश्च । प्रेतत्वं च सदा त  
 स्य स चाधर्मो गालिप्यते (देवलः) चण्डालाग्निरमेध्याग्निः सूतिकाग्निश्च कर्हि  
 चित् । पतिताग्निश्च तताग्निश्च नाशश्च ग्रहणोचितः (मनुः) दक्षिणो नमृतं शु  
 पुरदारेणानिर्हरेत् । पश्चिमोत्तरपुर्वस्तु यथासंख्यं द्विजातयः ॥ अत्र प्रातिलौ  
 म्येन क्रमः ॥ पूर्वमुखस्तु नेतव्यो ब्राह्मणो बांधवैर्गृहात् । उत्तराभिमुखो राजा वै  
 श्यः पश्चान्मुखस्तथा ॥ दक्षिणाभिमुखः शूद्रो निर्हर्तव्यः स्वबांधवैरित्यादिपुरा  
 णादित्यपराकर्कः ॥ तेन त्रिंशच्छ्लोक्युक्तो नुलोमक्रमो हेयः (आश्वलायनः) ज्ये  
 ष्ठप्रथमाः कनिष्ठजघन्या गच्छेयुः ॥ आधानोत्तरं द्वितीयविवाहे कृते यजमानमरणो  
 औत्तस्मात्तान्योः संसगः (बौधायनसूत्रे) अथ यद्याहिताग्निर्दभार्ये विदेत प्राक्  
 संयोगान् ग्रीयेतौपासनं संपरिस्तीर्य ज्यं विलाप्य चतुर्गृहीतं गृहीत्वा समिद्धाग्नौ  
 जुहोति ॥ संमितं संकल्प्येयामिति मिंदाहुतीव्याहृतीश्च हुत्वा थैतमग्निमयं तेयो  
 निऋतिवज्र इति समिधिसमारोप्य गार्हपत्ये समिधसभ्या दधाति भवतं नः समनसा  
 विति गार्हपत्यं आज्यं विलाप्य चतुर्गृहीतं गार्हपत्ये जुहोत्यग्नां वग्निश्चरति प्र  
 विष्ट इत्यपरं चतुर्गृहीत्वा चित्तिः सुगिति सग्रहं जुहोत्यथ गार्हपत्ये सुवाहुती जुहो  
 ति ब्राह्मणासकहेतैति दशभिरथ प्राचीनावीत्यन्वाहार्यपचने जुहोति ये समाना ये  
 सजाता इति द्वाभ्यामथ तत्रैव सुवाहुतिं जुहोत्यग्नये कव्यवाहनाय स्विष्टकृते स्वधा



नमः स्वाहेत्यथयज्ञोपवीती द्वादशगृहीतेनमुचंपूरयित्वा पुरुषसूक्तेनादवनीये  
 जुहोत्यथस्रवाहुतीजुहोत्यग्नयेविविचयेस्वाहाग्नयेव्रतपतयेग्नयेपवमानायग्न  
 येपावकायग्नयेषुचयेस्वाहाग्नये पथिकृतेस्वाहाग्नयेतंतुमतेग्नयेवैश्वानराये  
 त्यथचतुर्गृहीतंजुहोतिसनोज्योतिरित्यत ऊर्ध्वपैतृक्रं कर्म प्रतिपद्यते इति ॥ आहि  
 तारनीविदेशमृतेपथिकृतीष्टिमृताग्निहोत्रंतद्वाहः पात्रयोजनंचकल्पसत्रादिभ्यो  
 स्मत्पितामहकृतपद्धतेष्वचज्ञेयमिति बहुवक्तव्येषुपरम्यते (स्मात्तर्गिनसूत्रेमदन  
 रत्नेच्छंदोगपरिशिष्टेच) दुर्बलंस्त्रापयित्वातुशुद्धचैलाभिसंवृतम् । दक्षिणाशिर  
 संभूमौवर्हिषस्यांनिवेशयेत् ॥ घृतेनाभ्यक्तमाप्लाव्यशुद्धवस्त्रोपवीतितम् । चं  
 दनोक्षितसर्वांगसुमनोभिर्विभूययेत् ॥ हिरण्यशकलान्यस्यक्षिप्त्वाछिद्रेषुसप्त  
 सु । मुखेठ्वथापिधायैर्नानहरेयुःसुतादयः ॥ आसंपात्रेग्निसादायप्रेतमग्निपुरः  
 सरम् । सकोनुगच्छेत्तस्यार्धमर्धपथ्युत्सृजेद्भुवि ॥ ऊर्ध्वमादहनंकार्यमासीनोद  
 क्षिणामुखः । संव्यजान्वाच्यशानकैःसतिलंपिंडदानवत् ॥ अथपुत्रादिराप्नुत्यकु  
 र्याद्धारुचयंसहत् । तत्रोत्तानंनिपात्यैर्नंदक्षिणाशिरसंमुखे ॥ आज्यपूर्णासुवदद्या  
 दक्षिणाग्रांनसिसुचम् । पादयोरधरांप्राचीमरणीमुरसीतराम् ॥ पार्श्वयोःशूर्प  
 चमसौसव्यदक्षिणायोःक्रमात् । सुसमेतुन्यसेन्युद्वजसंतस्त्वर्वाकूलखलम् ॥ चां  
 क्रोविलीढमत्रैवअग्नयेरप्ययंविधिः । अपसव्येनकृत्वैतद्वाग्यतःपितृदिङ्मुखः ।  
 अथाग्निं सव्यमावृत्तकौदद्यादक्षिणातःशनैः ॥ अस्मात्त्वमधिजातोसित्वदयंजाय  
 तांपुनः । असौस्वर्गायिलोकायस्वाहेतिपरिकीर्तयेत् ( तथा ) एवमेवाहितारने  
 च्चपात्रन्यासादिकंभवेत् । कृष्णाजिनादिकंचावविशेषोऽध्वर्युर्चोदितः ( तत्रैव )  
 अनयैवावृत्तानारीदधव्यायाव्यवस्थिता । अग्निप्रदानमंत्रोस्यानप्रयोज्यइति  
 स्थितिः ( इदंछन्दोगानामेव ) पात्रन्यासोक्तेरुत्तानदेहत्वंसाग्निपरम् ॥ निर  
 ग्नस्तुपुमानधोमुखास्त्रीतूत्तानादाह्या ॥ सगोत्रजैर्गृहीत्वातुचितामारोप्यतेश  
 वः । अधोमुखोदक्षिणादिकंचरणास्तुपुसानिति । उत्तानदेहानारीतुसंपिंडैरपिबं  
 धुभिरित्यादित्यपुराणादितिशुद्धितत्त्वहारलतादयः ॥ उत्तराशिरस्त्वंसामुगेतर  
 परम् ॥ धारहेत्वग्निदानेऽन्येऽमंत्रः ॥ कृत्वातुदुष्टकृतंकर्मजानतावाप्यजानता ॥

मृत्युकालवशांप्राप्यनरपंचत्वमागतम् ॥ धर्ममधिर्ममसायुक्तंलोभमोहसमावृतम् ॥  
 दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यां लोकान्सगच्छतु ॥ ज्वलमानं महावह्निं शिरःस्थाने प्रदा-  
 पयेत् ॥ चतुर्वर्गोऽयं संस्थानमेवं भवति पुत्रके (अत्र क्रियानिबन्धे गारुडेयदृपिंडदानमु-  
 क्तं) मृतस्योत्क्रांतिसमये यदृपिंडान् क्रमशो ददेत् । मृतिस्थाने तथा द्वारिचत्वरे ता-  
 दृशकारणात् ॥ विश्रामेकाद्यचयने तथा संचयने च यत् (तथा) आदौ देयास्तु यदृपिंडा-  
 दश देया दशाहिकाः । स्थाने चार्धपथे तीर्ते चितायां शवहस्तके ॥ प्रमशानवांसिभू-  
 तेभ्यः यद्यसंचयने तथा (ततः) त्वं भूतकृज्जगद्योने त्वं लोकपरिपालकः ॥ उक्तः  
 संहारकस्तस्मादेनं स्वर्गमृतं नयेत्यग्निं दत्त्वा २ स्मात्त्वमिति संवेगार्धदग्धे आज्याहु-  
 तिरुक्ता (आहिताग्नीपराशरः) शम्यां शिथे विनिक्षिप्य अरणीमुठकयोरपि ।  
 जुहूं च दक्षिणो हस्ते वामे तु पभृतं न्यसेत् ॥ शिथे तु लूखलं दद्यात्पृष्ठे च मुसलं न्यसेत् ॥  
 उरसि क्षिप्य दृष्टं तं राडुलाज्यतिलान्मुखे । श्रोत्रे च प्रोक्षणीं दद्यादाज्यस्थालीं च  
 चक्षुषोः ॥ कर्णे नेत्रे मुखे घ्राणे हिरण्यशकलं न्यसेत् । अग्निहोत्रोपकरणमशे-  
 यंतं विनिक्षिपेत् (प्रचेताः) स्नानं प्रेतस्य पुत्राद्यैर्वस्त्राद्यैः पूजनं ततः । नग्नदेहं दहे-  
 न्नैव किंचिद्देयं परित्यजेत् (यमः) प्रेतं दहेच्छुभैर्गर्भैः स्नपितं सग्विभूषितम् (आश्व-  
 लायनसूत्रे) संस्थिते प्रेतालंकारान् कुर्वति केशश्मश्रुलोमनखानि वापयति न  
 लदेनानुलिंपति न लदमालां प्रतिमुंचतीति (माधवीये ब्राह्मे) दरिद्रोऽपि न दग्धव्यो  
 नग्नः कस्यांचिदापि (तथा) निःशेषस्तु न दग्धव्यः शेषं किंचित्यजेन्नरः (दा-  
 हकाले २ ग्निना शेतुमदनरत्ने यज्ञपार्थः) यजमाने मृते क्वापि चितादौ वा प्रवेशिते ।  
 वर्षाद्यभिहतेऽनौ तु कथं प्रेतविकल्पना ॥ शेषं दग्ध्वा प्रदग्धे युनिर्मथ्यैव तु कारये-  
 त् (अथ पराशरादिदाहेनाग्निना शेषश्चात्तद्देहालाभे मदनरत्ने ब्राह्मे) अथ परा-  
 शरे दग्धे पात्रन्यासे कृते सति । गतेऽवग्नियुतद्देहाय दूर्ध्वं लभ्यते क्वचित् ॥ तदार्ध-  
 दग्धकाष्ठानि तानि निर्मथ्य तं दहेत् ॥ यद्यर्धदग्धकाष्ठं तु तदयि वै न लभ्यते ॥ तदा त-  
 दस्थिखंडं तु निक्षिप्य संहाजले (दंपत्योरेकदा मृतौ विशेषमाहापस्तंबः) तथैव प्रे-  
 ते सहैव पितृमेधो द्विवचनलिंगान् संवाच संधारयति ॥ पितृमेधो दाहांतं कर्म ॥ दा-  
 हांतमेकतंत्रत्वमिति बौधायनोक्तेः ॥ अस्थिसंचयनमप्येवम् ॥ उदकपिण्डदा



नादिपृथगेव ॥ सगमनेप्येवम् (तदाहमदनरत्नेभाष्यार्थसंग्रहकारः) एककाल  
मृतौभार्या भर्ताचयदिचेतद्वयोः ॥ तंत्रेणादहनंकुर्यात्पिराड्प्राङ्मृथक्पृथक् ॥  
एककालेमृतौजायां पतीयदितदापितुः । विभज्याग्निंक्रियांकुर्यादितित्यत्तद  
सांप्रतम् ॥ दाहान्तमेकतंत्रत्वमितियाज्ञिकसंमतम् ॥ मृतंपतिसनुव्रज्य यानारी  
ज्वलनंगता । अस्थिसंचयनांतोस्या भर्तुःसंस्कारसर्वाह ॥ कीकसानान्तुसंस्का  
रो न्यायसिद्धोपियोमतः । एककालेमृतेप्येवं कीकसानांविधिःस्मृतः ॥ नव  
प्राङ्मृथक्पिराडांतं भिन्नकालमृतौयथा ( कपर्दिकारिकापि ) मृतेभर्तुरितदाहा  
त्प्राक्पत्नीप्रियतेयदि । पत्न्यांवाप्राक्प्रमीतायांदाहादवक्रियतिमृतः ॥ तत्रतं  
त्रेणादाहःस्यान्मंत्रेषुद्वित्वमूह्यते । कीकसानान्तुसंस्कारः पृथगेवतयोर्भवेत् ॥  
सकाहमृत्युयुगपन्नवप्राङ्माकरंतयोः । मृतंपतिसनुव्रज्यपत्नीचेदनलंगता ॥ तत्रा  
पिदाहस्तंत्रेणा पृथगस्थिक्रियाभवेत् ॥ अस्थिसंचयनपृथक्त्वेविकल्पः (सहग  
मनेसर्वत्रपाकैक्यमाहप्रचेताः) एकचित्यांसमाकूढौ प्रियेतेदम्पतीयदि । तंत्रेणा  
अपरांकुर्यात्पृथक्पिराड्समाचरेत्(अथोदकदानंवाशिष्टः) शरीरमग्नौसंयोज्या  
नवेक्षमाणाअपोभ्यवयन्तिसव्योत्तराभ्यांपाशाभ्यामुदकक्रियांकुर्वन्त्ययुग्मस  
(आपस्तम्बः)मातुश्चयोनिसंबन्धेभ्यःपितुश्चासप्तमातृपुरुषाद्यावतांवासंबन्धोज्ञा  
यतेतेषांप्रेतेयुदकक्रियेति (याज्ञवल्क्यः) सप्तमादशमाहापि ज्ञातयोभ्युपयंत्य  
पः । अपनःशौशुचदधमनेनपितृदिङ्मुखाः ॥ सक्तप्रसिंचंत्युदकं नामगोत्रेणा  
वाग्यताः । सप्तमादशमाहादिवसादातदन्तमिति विज्ञानेश्वरः ॥ कातीयास्तुस  
प्तमादशमाहापुरुषादित्याहुः ॥ सप्तमादशमाहापुरुषात्समानग्रामवासे यावत्स  
स्वन्धमनुस्मरेयुरितिपारस्करोक्तेः ॥ मंत्रस्नानांगमेवेतिहेमाद्रिः ( प्रचेताः )  
प्रेतस्यबांधवायथावृद्धमुदकमवतीर्यनेह्ययेयुरुदकांते प्रसिंचेयुरपसव्ययज्ञोप  
वीतवाससोदक्षिणामुखाब्राह्मणस्योदङ्मुखाप्राङ्मुखाश्च राजन्यवैश्ययोः ॥  
सख नदीकूलं ततो गत्वेत्युक्त्वा ॥ सचैलस्तुततःस्नात्वा शुचिःप्रयत्मानसः ।  
पाथारान्ततत्रादाय विप्रेदद्यादशांजलीन् ॥ द्वादशस्रवियेदद्याद्वैश्येपंचदशस्मृ  
ताः ॥ त्रिंशच्छूद्रायदातव्या ततस्तुप्रविशेद्गृहम् ॥ ततःस्नानंपुनःकार्यं गृहशौ

चंचकारयेत् ॥ प्रेतस्नानेविशेषः (शुद्धितत्त्वेऽदिपुराणो) आदौवस्त्रंचप्रक्षाल्य  
तेनैवाच्छादितस्ततः । कर्तव्यं तैः सर्वैलन्तस्नानं सर्वमलापहम् ॥ पूर्वपरिहितं  
स्त्रंचप्रक्षाल्यपुनःपरिधायस्नायादित्यर्थः ॥ अपनइतिमंत्रेणावामहस्तानामिकया  
जलालोडनम् ॥ अवतरणोत्थपुरःसरत्वेोक्तेर्यथाबालंपुरस्कृत्येतिबोधायनीय  
म् ॥ जलादुत्थानपरिमितिहारलतादयः (आप्रवलायनः) सव्यावृतोत्रजन्तयनी  
समागायत्रोदकमवहद्वर्तिततत्प्राप्यसकृदुन्मृज्यैकांजलिमुत्सृज्यतस्यगोत्रं नाम  
गृहीत्वेति ॥ प्रचेतसाऽन्वहमंजलित्रयमायुक्तं ॥ त्रिःप्रसेकंकुर्युः प्रेतस्तृप्यत्व  
ति (तथा) दिनेदिनेऽजलीवूपूर्णानिप्रदद्यात्प्रेतकारणात् । तावद्वृद्धिश्चकर्तव्या  
यावत्पिण्डः समाप्यते ॥ एकवृद्धिस्त्रिकवृद्धिर्वेत्यर्थः ॥ मदनरत्नेभरद्वाजगृह्ये  
द्विकवृद्धिरप्युक्ता ॥ आशौचान्तेप्रदद्यात्प्रेतपुत्रस्तिलांजलीन् । प्रथमेद्विसकृ  
द्व्यात्पिण्डयज्ञावृतादिवा ॥ त्रींश्चदद्याद्द्वितीयेऽह्नि तृतीयेपंचसवच । चतुर्थे  
सप्तसंख्यांस्तु पंचमेनवचोत्सृजेत् ॥ षष्ठेद्विचैकादशकाः सप्तमेतुत्रयोदश । अष्ट  
मेपंचदशका नवमेदशसप्तच ॥ सकोनविंशतिंचाग्रेषतांजलिमतंस्मृतम् ॥ केचि  
दृषांजलीन्प्रोचुः केचिदाहुः शतांजलीन् । पंचपंचाशतंचान्ये स्वशाखोक्तव्य  
वस्थया (कुंदोरापरिशिष्टे) अथानवेशयेत्पापः सर्वेचैवशवस्पृशः । गोत्रनामप  
दान्तेतुतर्पयामित्यनन्तरम् ॥ दक्षिणाशान्कुशान्कृत्वा सतिलन्तुपृथक् पृथक्  
(विष्णुपुराणो) सपिण्डीकरणायावदृजुर्धैःपितृक्रिया । सपिण्डीकरणादूर्ध्व  
द्विगुणौर्विधिवद्भवेत् (रामायणो) इदंपुरुषशार्दूल विसर्लंबिद्व्यमस्यस ॥ पितृ  
लोकेषुपानीयं महत्तमुपतिष्ठताम् ॥ दानवाक्येविकल्पः (याज्ञवल्क्यः) कामो  
दकंसखिप्रत्ता स्वस्वीयश्चशुरर्त्विजास ॥ कामइच्छा ॥ प्रेततृप्तीच्छायांदेयमन्य  
थानेत्यर्थः (शांख्यपारस्करौ) आचार्येचैवम् ॥ मातामहयोप्रचस्त्रीणांचाप्रत्तानां  
कुर्वीरंस्ताप्रचतेयामिति ॥ द्विवचनान्मातामह्याअपि (शांख्यलिखितौ) उदक  
क्रियाकामंश्चशुरमातुलयोः शिष्येसहाध्यायिनिराजनिचेति (वृद्धसनुः) क्ली  
वाद्यानोदकंकुर्युस्तेनाव्रात्याविधर्मिणाः । गर्भभर्तृद्रुहश्चैवसुराप्यप्रचैवयोयि  
तः (याज्ञवल्क्यः) नब्रह्मचारिणाः कुर्युस्तदकंपतितस्तथा ( षडशीतौ ) स्त्रीया



चारादिपभ्रष्टाः पतितायेचदूयिताः । नक्तुर्युसदकंतेवै तेभ्योप्यन्नेनचैवहि (म  
 दनरत्नेहारीतः) पतितामपवृद्धानांचरन्तीनांचकामतः । प्रत्तानांचैवकन्यानां  
 निर्वर्त्यसलिलक्रिया (अपराकेशंखलिखितौ) अपपात्रितस्यरिक्थपिण्डोद  
 कानिध्यावर्तते ॥ अपपात्रितःकृतघटस्फोटः ॥ तस्यापिसंग्रहविधौकृते आशौ  
 चोदकादिकुर्यादेवेत्याशौचप्रकाशः (अथाशौचेनियमाः । याज्ञवल्क्यः) इति  
 संश्रुत्यगच्छेयुर्गृहं बालपुरःसराः ॥ विदश्यन्निम्बपत्राणिनियताद्वारिवेशमनः ॥  
 आचम्याग्न्यादिसलिलं गोमयंगौरसर्यपान । प्रविशेयुःसमालभ्य कृत्वाश्वनि  
 पदंशनैः ॥ प्रवेशनादिकंकर्म प्रेतसंस्पर्शनामपि । क्रीतलब्ध्वाशनाभूमी  
 स्वपेयुस्तेपृथक्क्षितौ ॥ इदंचाद्येहि (वशिष्ठः) अद्यप्रस्तेरगृहमनश्रंतआसी  
 रन्क्रीतोत्पन्नेनवावर्तेरन् (शुद्धितत्त्वेवैजवापः) शमीमालभन्तेशमीपापं शम  
 यत्विति ॥ अश्वमानमश्वमेवस्थिरोभूयासमिति ॥ अग्निमग्निर्नःशर्मयच्छ  
 त्विति ॥ ज्योतित्वंतरागामजमुपस्पृशन्तःक्रीत्वालब्ध्वावान्यगोहादेकान्नमलव  
 सामेकरात्रम् ॥ दिवाभुंजीरंस्त्रिरात्रंचकर्मोपरमणम् ॥ क्रीताद्यशनमुपवासा  
 शक्तस्य (आश्वलायनस्तु) नैतस्यांरात्र्यासन्नंपचेरंस्त्रिरात्रमशारालवणाशि  
 नः स्युर्द्वादशरात्रंचेत्याह (अशक्तौरत्नाकरेआपस्तंबः) भार्याःपरमगुरुसंस्थायां  
 चाकालभोजनानिकुर्वीरन् ॥ यदास्मृतिःपरदिनेतावत्कालमित्यर्थः (बृह  
 स्पतिः) अधःशय्यासनादीनामलिनाभोगवर्जिताः । अक्षारालवणाच्चाःस्यु  
 र्लब्धक्रीताशनास्तथा ॥ भोगोभ्यंगताम्बूलादिः ॥ साराःपरिभाषायामुक्ताः  
 (यत्तुमार्कंडेयपुराणो) तैलाभ्यंगोबान्धवानामंगसंवाहनंचयत् । तेनचाप्या  
 पतेज्जंतुर्यच्चाश्रन्तिस्त्वबान्धवाः ॥ प्रथमेह्निहृतीयेच सप्तमेनवमेतथा । वस्त्रत्यागं  
 बहिःस्नानं कृत्वादद्यात्तिलोदकमिति ॥ तदन्त्यदिनपरम् ॥ आशौचान्तेतिल  
 कल्कैःस्नातागृहंप्रविशेयुरिति विष्णुः ॥ विष्णुपुराणोत्वस्थिसंचयोर्ध्वंभोगो  
 प्युक्तः ॥ शय्यासनोपभोगस्तु सर्पिण्डानामपीष्यते । अस्थिसंचयनादूर्ध्वसंयो  
 गस्तुनयोयिताम् (भारते) तिलान्नददतपानीयं दीपंददतजाग्रतः । जातिभिःसह  
 भोक्तव्यमेतत्प्रेतेषुदुर्लभम् (मनुः) सांसाशनंचनाश्रीयुः शयीरंश्चपृथक्क्षितौ

( देवजानीयेकारिकायाम् ) लवणाक्षीरमायान्ना पपमांसानिपायसम् । वर्जये  
दाहताक्षेयु बालवृद्धातुरैर्विना ॥ उपवासोऽगुरौप्रेते पत्न्याः पुत्रस्यवाभवेत् ( मरी  
चिः ) प्रथमेऽद्वितीये च सप्तमे दशमे तथा । ज्ञातिभिः सह भोक्तव्यमेतत्प्रेतेषु दुर्ल  
भम् ॥ भोजनं च दिवैव ॥ दिवा चैव भोक्तव्यममांसमनुजय भेति विष्णुपुराणात् ॥  
क्रीत्वा लब्ध्वा वा दिवान्नमश्नीयुरिति पारस्करोक्तेः च ( मदनरत्नेहारीतः )  
पाणिगुमृन्मयेषु पर्णापुटकेषु वा शीरन् ( देवजानीये ब्राह्मणशुद्धितत्त्वेऽदिपुराणो )  
आशौच मध्येयत्वेन भोजयेच्च स्वगोत्रजान् ( अन्त्यादिने तु मदनरत्ने ब्राह्मे ) यस्य  
स्य तु वर्णास्य यद्यत्स्यात्प्राश्चित्तमन्तवहः । स तत्र गृहशुद्धिं च वस्त्रशुद्धिं करोत्यपि ॥  
अन्त्यकर्मकालीनवस्त्रयोस्तु तत्रैव गोवोक्तम् ॥ ग्रामाद्वहिस्ततो गत्वा प्रेतपृष्ठे तु वा स  
सी ॥ अन्त्यानामाश्रितानां च त्यक्त्वा स्नानं करोत्यथेति ( शांखः ) दानं प्रतिग्रहाद्वा  
मः स्वाध्यायः पितृकर्म च । प्रेतपिंडक्रियावर्ज्यमाशौचे विनिवर्तते ( कठकगृह्ये )  
यत्र प्राणोक्तमस्तवान्वहं महाबलं कुर्यादिति ( पारस्करः ) तदानीमेव वस्त्रं तंडु  
लं दीपकांस्यभाजनं प्रेताय दद्यात् ( आशौचप्रकाशे भरद्वाजः ) वासोऽन्नं च जलं कु  
म्भे प्रदीपं कांस्यभाजनम् । नगरप्रच्छादनेऽष्टाद्वे ब्राह्मणाय निवेदयेत् ( भृगुः )  
तिलोदकं तथा पिंडान्नं नगरप्रच्छादनादिकम् । रात्रौ न कुर्यात्संध्यायां यदिकुर्या  
न्निरर्थकम् ( अथ प्रेतपिंडः यद्यपि हेमाद्रौ पारस्करेण ) ब्राह्मणो दशपिंडांस्तु क्ष  
त्रिये द्वादशस्मृताः । वैश्ये पंचदशप्रोक्ताः शूद्रे त्रिंशत्प्रकीर्तिताः ( इत्युक्तं तथा  
पि ) प्रेतेभ्यः सर्ववर्गोभ्यः पिंडान्दद्याद्दशैव त्वितितेनैवोक्तेः ॥ सर्वेषां दशैव ज्ञेया  
मदनरत्नेऽप्येवम् ( तथा च हेमाद्रौ ब्राह्मणपात्रयोः ) जात्युक्ताशौचतुल्यांस्तु वर्णा  
नां क्वचिदेव हि । देशधर्मान्पुरस्कृत्य प्रेतपिंडान्वपंत्य पीत्युक्त्वा ॥ विप्रान्नेषु दशम  
पिंडोत्कर्ष उक्तः ॥ देयस्तु दशमः पिंडो राज्ञा वै द्वादशेऽहनि । वैश्यानां वै पंचदशे दे  
यस्तु दशमस्तथा ॥ शूद्रस्य दशमः पिंडो मासे पर्णोऽद्वितीयते ॥ इति युद्धस्मृतादेः सद्यः  
शौचेऽप्यहादौ च तेनैवोक्तम् ॥ सद्यः शौचे प्रदातव्यः सर्वेऽप्युपपत्तया । ज्येष्ठाशौ  
चे प्रदातव्यः प्रथमेऽहन्येकसर्व हि । द्वितीयेऽहनि चत्वारस्तृतीये पंचचैव हि । ज्येष्ठा  
प्रकारांतरं प्राणुक्तम् ( शातातपः ) आशौचस्य च द्वासेति पिण्डान्दद्याद्दशैव तु ।



तत्रैकपात्रे सकृत्कृत्वा दद्यात् । उत्तरीयशिलापात्रकर्तृद्रव्यविपर्यये ।  
 पूर्वदत्तांजलीदद्यात्पूर्वपिंडांस्तथैव चेति ॥ गृह्यकारिकायां पात्रविपर्यये दोषो  
 क्तः ॥ शिलाविपर्यये घटस्फोटादेर्नावृत्तिः ॥ अस्माभ्यंजनादिपदकर्मणा सकृद्वा  
 यन्नियतवदप्रयोजकत्वात् ॥ तद्वचात्रालौकिकग्रहणम् ( केचित्तु ) नवान्या  
 दायभाराडानि आसकञ्चसकन्तयेति प्रचेतसोक्तेः पात्रानेकत्वमाहुः । क्रियाक  
 र्तृनां शेषेऽन्येन शेषः समापनीयः ॥ सर्वक्रियाप्रवृत्तानां यदि कश्चिद्विषयते । तद्वं  
 धुना क्रियाकार्या सर्वैर्वासहकारिभिरिति शुद्धितत्त्वे बृहस्पतिस्मृतेः ॥ पत्न्याः  
 कर्तृत्वे रजोदर्शने च तदन्ते कुर्यात् ॥ शावातु द्विगुणमार्तवमित्युक्तेः ॥ आशौचांते  
 आर्तवे कर्तुरस्त्वास्थ्येवान्येन क्रिया सर्वा निवर्तनीया कर्तुर्विपर्ययात्कालातिक्रम  
 योगाच्च ( वाराहे ) स्थंडिले प्रेतभारांतु दद्यात्पूर्वाल्लस्यतु । कृत्वा तु पिंडसंकल्प  
 नाम गोत्रेणाहुन्दरि ( मरीचिः ) प्रेतापराडं बहिर्दद्याद्दर्भसंघविर्वर्जितम् । प्रायुदी  
 च्यांच संकृत्वा स्नातः प्रयतमानसः ॥ दर्भवर्जनमनुपनीतपरम् ॥ असंस्कृतानां भूमौ  
 पिंडं दद्यात्संस्कृतानां कुशेऽथिति प्रचेतसोक्तेः ( मिताक्षरायां स्मृत्यन्तरे ) भूमौ  
 माल्यं पिंडं पानीयमुपलेवादद्युः ॥ शुनः पुच्छः ॥ फलमूलैश्च पयसा शकेन च गु  
 डेन च । तिलमिश्रन्तु दर्भेषु पिंडं दक्षिणातो हरेत् ॥ तृणां प्रसेकं पुष्टं च धूपं दीपं तथै  
 व च । शालितासकतुभिर्वापि शाकैर्वाप्यथ निर्वपेत् ॥ प्रथमेहनियतद्रव्यंत देव  
 स्याद्दशाहिकम् ( मदनरत्ने मात्स्ये ) तैजसं मृन्मयं वाथ पात्रं संशोध्य यत्नतः । लौ  
 किकारणावधि श्रित्यपचेदन्नं घृतप्लुतम् ॥ स्नात्वाथ तिलसंमिश्रं प्रदद्याद्दर्भसंस्तरे  
 ( शुद्धितत्त्वे देवजानीये च ब्राह्मे ) प्रथमेहनियो दद्यात्प्रेतायान्नं समाहितः । अ  
 न्नं वसुचान्येषु स एव प्रददात्यपि ॥ मृन्मयं भांडमादाय नवं स्नातः संयुतः । तंडुल  
 प्रसृतितत्रत्रिः प्रक्षाल्य पचेत्स्वयम् ॥ सपवित्रैस्तिलैर्मिश्रं कृमिकेशविर्वर्जितम् ।  
 द्वारोपांते दत्तः क्षिप्त्वा शुद्धां वा गौरमृत्तिकाम् ॥ भूपृष्ठे संस्तरे दर्भान्याभ्याग्राह्यदेश  
 संभवान् । ततो वने जनं दद्यात्संस्मरन् गोत्रनामनी ॥ तिलसर्पिर्मधुक्षीरैः संसिक्तं त  
 त्तमेव हि ॥ दद्यात्प्रेताय पिंडं तु दक्षिणाभिमुखः स्थितः ॥ अर्घ्यैः पुष्टैस्तथा धूपै  
 र्दीपैस्तोयैश्च शीतलैः । ऊर्णां तंतुमयैः शुद्धैर्वासाभिर्पिंडमर्घयेत् ॥ दिवसे दिवसे

देयः पिंडसर्वक्रमेणातु । सद्यः शौचे प्रदातव्याः सर्वेऽप्युपपत्तया ॥ अथ शौचे पिंदा  
तव्याश्च यः पिंडाः समाहितैः ॥ द्वितीये चतुरोदद्यादस्थिसंचयनंतथा ॥ त्रींस्तु द  
द्यात्तृतीये द्विवस्त्रादिसालयेत्ततः । दशाहेऽपि च दातव्यः प्रथमे त्वेकसर्वहि ॥ एक  
स्तोयांजलिस्त्वेवं पात्रमेकं च दीयते ॥ द्वितीये द्वौ तृतीये त्रीनित्याद्युक्त्वा सर्वस्युः पं  
चपंचाशतोयस्यांजलयः क्रमात् ॥ तोयपात्राणि तावन्तिसंयुक्तानि तिलादिभिरि  
ति ॥ पात्रं कुंभः ॥ अत्राहः पदमहोरात्रपरम् ॥ तेन रात्रावपि देय इति गौडाः ॥ दि  
वसपदाद्वात्रौ नैतिमैथिलाः ॥ ससवेत्युक्ते सः पिंडेन दशपिंडे प्रक्रान्तिपुत्रागमेऽपि सन  
दद्यात् असगोत्रः सगोत्रो वेति प्राशुक्तेः ॥ दाहकर्तव्यदशाहं कुड्यादिदिति मित्तसरा  
याम् ( शुद्धितत्त्वे वायवीयेऽपि ) असगोत्रः सगोत्रो वा यदि स्त्री यदि वा पुमान्नाय प्रचा  
गिनदाता प्रेतस्य पिंडं दद्यात्सम्यग्हीति ( तत्रैव ) पूरकेणातु पिंडेन दोहो निठपाद्यते  
यतः । कृतस्य कारणायोगात् पुनर्नान्वर्तते क्रिया ( शुद्धिप्रकाशे वायवीयेऽपि )  
निवर्तयति यो मोहात् क्रियामन्यनिवर्तिताम् । विधिघ्नस्तेन भवति पितृहाचोप  
जायते ॥ तस्मात् प्रेतक्रियायेन केनापि च कृता यदि । न तां निवर्तयेत्प्राज्ञः सतां ध  
र्ममनुस्मरन्निति ( आदिपुराणो ) पितृशब्दं स्वधांचैव न प्रयुंजीत कर्हिचित् । अ  
नुशब्दं तथा चेह प्रयत्नेन विवर्जयेत् ॥ उपतिष्ठतामयं पिंडः प्रेतायेति समुच्चरेत् ( क्रिया  
निबन्धे व्यासः ) प्रेताय पिंडं दत्त्वा तु ततो श्रोयाद्दिनात्यये ( भविष्ये ) ओदनामियसक्त  
नां शाकमूलफलानि द्यु । प्रथमे ह नित्यदद्यात्तदद्यादुत्तरे ह नि । गृहद्वारि प्रमशाने वा  
तीर्थे देवगृहेऽपि वा ॥ यत्राद्ये दीयते पिंडस्तत्र सर्वसमापयेत् ( ब्राह्मे ) शिरस्त्वाद्येन पिं  
डेन प्रेतस्य क्रियते सदा । द्वितीयेन तु कर्णाक्षीनासिकाप्रचसमासतः ॥ गलांसभुजव  
क्षांसितृतीयेन यथाक्रमम् । चतुर्थेन तु पिंडेन नाभिलिंगादुदानि च ॥ जानुजंघेतथा  
पादौ पंचमेन तु सर्वदा । सर्वमर्माणि यद्येन सप्तमेन तु नाड्यः ॥ दंतलोमान्यष्टमेन वीर्यं  
तु नवमेन च । दशमेन तु पूर्णात्वं तृप्ततां सुद्विपर्यय इति ( याज्ञवल्क्येन तु ) पिंडयज्ञावृ  
त्तादेयं प्रेतायान्नं दिनत्रयमित्युक्तम् ॥ अत्र फलतारतम्यं ज्ञेयमिति विज्ञाने प्रवरः ॥  
तेन अथ शौचपरत्वं देवयाज्ञिके कर्तव्यं चिंत्यम् ॥ आशौचस्य हासेऽपि पिंडान्दद्याद्  
शौचं त्विति वचनाच्च ॥ दिनत्रयावश्यं कृत्वा तर्प्यमिति हारलतादयः ( शातातपः )



जलमेकादशाहमाकाशेस्थाप्यंक्षीरंचमृन्मये(पारस्करः) मृन्मयेतारात्रिंक्षीरो  
दकेविहायसिनिदध्युः ॥ प्रेतावस्नायीत्युदकंपिबचेदमितिक्षीरम् ॥ इदंरात्रावे  
वेतिगौडाः(गास्तुडेतु) अपक्वेमृन्मयेपात्रेदुग्धंदद्याद्दिनत्रयमित्युक्तम् ( हेसाद्रौपा  
येतुदशाहमुक्तम्)तस्मान्निधेयमाकाशेदशरात्रंपयोजलम् । सर्वतापोपशांत्यर्थम्  
ध्वञ्चमविनाशनं(देवजानीयेकारिकायाम्) तत्रप्रेतोपकृतयेदशरात्रमखंडितम् ।  
कुर्यात्प्रदीपंतैलेनवारिपात्रंचमार्तिकम् । भोज्यात्भोजनकालेतुभक्तमुष्टिंचनि  
र्वपेत् ॥ नामगोत्रेणसंबुध्याधरिच्यंपितृयज्ञवत् ( शातातपः) भूलोकात्प्रेतलो  
कंतुगंतुश्राद्धंसमाचरेत् ॥ तत्पाथेयंहिभवतिमृतस्यमनुजस्यतु ( अथदशाहम  
ध्येदर्शपातेनिर्णयः । भविष्ये ) प्रवृत्ताशौचतंत्रस्तुयदिदर्शंप्रपद्यते । समाप्य  
चोदकंपिराडाचस्नानमात्रंसमाचरेत् ( ऋष्यशृंगः) आशौचमन्तरादर्शोयदिस्या  
त्सर्ववर्णानाम् । समाप्तिंप्रेततंत्रस्य कुर्यादित्याहगौतमः ( पैठीनसिः) आद्येदावे  
वकर्तव्या प्रेतपिराडोदकक्रिया । द्विरेंदवेतुकुर्वाणाः पुनःशावंसमप्रनुते ( साता  
पित्रोस्तु । श्लोकगौतमः) अन्तर्दशाहेदर्शंप्रचेत्तत्रसर्वंसमापयेत् । पित्रोस्तुयाव  
दाशौचं दद्यात्पिराडाचजलाञ्जलीन् ॥ इदमपिच्यहमध्येदर्शपाते ॥ तदूर्ध्वदर्शं  
तुपित्रोरपितंत्रंसमाप्यमेव ॥ पित्रोराशौचमध्येतु यदिदर्शःसमापतेत्तातावदेवो  
त्तरंतंत्रंपर्यवस्येत्तत्र्यहात्परमितिगालवोक्तेः ॥ अन्येषान्तुच्यहमध्येपिसमाप्ति  
रितिपराशरमाधवीयेनिर्णयामृतेचोक्तम् ( कालादर्शेपि) दर्शोदशाहमध्येस्या  
दूर्ध्वतंत्रंसमापयेत् । त्रिरात्रादुत्तरंपित्रोर्मृताविति विनिश्चयः ॥ मदनपारिजा  
तेतुगालवीयमापदनौरसपुत्रादिविषयम् ॥ अथहोर्ध्वमपिपित्रोर्नतंत्रसमाप्तिरि  
त्युक्तम् ॥ मदनरत्नेष्येवम् ॥ ममतुदेशाचाराद्व्यवस्थेतिप्रतिभाति ( अथास्थि  
संचयः ) तत्राश्वलायनेनचक्षुषापक्षेकादशीत्रयोदशीदर्शेषुआषाढी फाल्गुनी  
प्रौष्ठपदीभिन्नर्सेउक्तम् ॥ तदाशौचमध्येऽसम्भवेतदूर्ध्वंचप्रागब्दात्करगोज्ञेयम्  
( आशौचमध्येतुमंदजरत्नेसंवर्तः) प्रथमेद्वितीयेवासप्तमेनवमेतथा । अस्थिसंचय  
नंकार्यदिनेतद्गोत्रजैःसह ( कुंदोगपरिशिष्टेतु) अपरेद्युस्तृतीयेवाअस्थिसंचयनं  
भवेदितिद्वितीयेप्युक्तम् । विष्णुकात्यायनौसंचयनंचतुष्टयमिति(माधवीयेयम्)

भौमार्कसंदवारयुतिथियुरमेविवर्जयेत् वर्जयेदेकपादस्यैद्विपादस्यैस्थिसंचयस प्र  
दाहजन्मनक्षत्रेविपादस्यैविशेषतः ( ब्राह्मे ) चतुर्थेब्राह्मणानांतुपंचमेहनिभूभृता  
स । नवमेवैष्यजातीनांशूद्राणांदशमात्परस ॥ दशमेहनीतिवापादः ( शौनकः )  
पालाशेठवस्थिदाहेचसद्यःसंचयनंभवेत् ॥ काम्यमरशोतुतस्यत्रिरात्रमाशौचस ॥  
द्वितीयेत्वस्थिसंचयइत्युक्तस ( अंगिराः ) प्रेतोभूतंतथोद्दिष्ययःशुचिर्नकरोति  
चेत् । देवतानांतुयजनंतंशपत्यथदेवताः ॥ तद्विधिःस्वस्वसूत्रेभदृक्तौज्ञेयः ( हेमा  
द्रौनागरखंडे ) त्रीणांसंचयनस्यार्थेतानिवैश्वर्यासांप्रतस । यत्रस्थानेभवेन्मृत्युस्त  
त्रश्राद्धंप्रकल्पयेत् ॥ सकोद्दिष्टंततोमार्गेविश्रामोयत्रकारितः ॥ ततःसंचयनस्या  
र्थेतृतीयेश्राद्धमिष्यते ( अपराकर्मदनरत्नेचब्राह्मे ) सद्यःशौचेतथैकाहेसद्यःसंचय  
नंभवेत् । इयहाशौचेतृतीयेह्निकर्तव्यस्त्वस्थिसंचयः ( तत्रैव ) प्रमशानदेवतायागं  
चतुर्थेदिवसेचरेत् । मृन्मयेयुचभांडेयुक्तुंभेयुरुचकेयुवा ॥ सुपक्वैर्भक्ष्यभोज्यैश्चपा  
यसैःपानकैस्तथा । फलैर्मूलैर्वनोत्थैश्चपुण्याःक्रव्याददेवताः ॥ धूपोदीपस्तथा  
माल्यमध्यंदेयंत्वरान्वितैः । तत्रपात्राणिपूर्यानिप्रमशानाग्नेःसमंततः ॥ निवेदय  
द्विर्वक्तव्यंतैः सर्वैरनहंकृतैः ॥ नमःक्रव्यादंमुख्येभ्योदेवेभ्यइतिसर्वदा ॥ येषप्रमशा  
नेदेवाःस्युर्भगवंतःसनातनाः । तेस्मत्सकाशादगृह्णंतुबलिमष्टांगमक्षयं ॥ प्रेतस्या  
स्यशुभानलोकावप्रयच्छंतुचशाश्वतान् । अस्माकमायुरारोग्यंसुखंचददतांचिर  
म् ॥ एवंकृत्वाबलीन्सर्वान्क्षीरेणाभ्युक्ष्यवाग्यतः । एवंदत्त्वाबलिंचैवदद्यात्पिंडत्र  
यंबुधः ॥ सकंप्रमशानवासिभ्यःप्रेतार्यैवतुमध्यमम् । तृतीयंतत्सखिभ्यश्चदक्षिणा  
संस्थमादरात् ॥ ततोयज्ञियवृक्षोत्थांशाखामादायवाग्यतः ॥ प्रेतस्यास्थीनिगृ  
ह्णातिप्रधानांगोद्वानिच ॥ शिरसेवक्षसोःपारायोःपार्श्वाभ्यांचैवपादतः । पंच  
गव्येनसंस्नाप्यक्षौमवस्त्रेणावेश्यच ॥ प्रक्षिप्यमृन्मयेभांडेनवेसाच्छादनेशभे ॥  
अररायेवृक्षमूलेवाशुद्धेसंस्थापयत्यपि । गृहीत्वास्थीनितद्वस्मनोत्वातोयेर्विनि  
क्षिपेत् ॥ ततःसंमार्जनंभूमेःकर्तव्यंगोमयांबुभिः । पूजांचपुठपधूपाद्यैर्बलिभिःपूर्व  
वत्क्रमादिति ( अथतीर्थेस्थिक्षेपविधिः ( तत्रैव ) तत्स्थानाच्छनकैर्नीत्वाकदा  
चिज्जाल्वीजले । कश्चित्सिपतिसत्पुत्रोदौहित्रोवासहेदरः ॥ मातुःकुलंपितृ



कुलं वर्जयित्वानराधमः । अस्थीन्यन्यकुलस्थस्य नीत्वा चांद्रायणां चरेत् ( तत्रैव  
 ब्रह्मांडपुराणो ) अस्थीनिमातापितृपर्वजानां नयंति गंगामपियेकथञ्चित् । सद्वां  
 धवस्यापि दयाभिभूतास्तेषां तु तीर्थानि फलप्रदानि ॥ स्नात्वा ततः पंचगव्येन सि  
 स्क्ता हिरण्यमध्वाज्यतिलैश्च योज्य । ततस्तु मृत्पिंडपुटे निधाय पश्यन् दिशं प्रेतग  
 णोपसृढां ॥ नमोस्तु धर्माय वदेत् प्रविश्य जलं समेप्रीत इति सिपेच । उत्थाय भास्वं  
 तम वेष्ट्य सूर्यसदक्षिणां विप्रमुखाय दद्यात् ॥ एवं कृते प्रेतपुरस्थितस्य स्वर्गो गतिः स्या  
 तु महेन्द्रतुल्या (यमः) गंगातोयेषु यस्यास्थि सिप्यते शुभकर्मणाः न तस्य पुनरावृ  
 त्तिर्ब्रह्मलोकात्सनातनात् (तथा) अस्तंगते गुरौ शुक्रे तथा मासे मलिम्लुचे । गं  
 गायामस्थिनिक्षेपं न कुर्यादिति गौतमः ॥ दशाहं तर्न दोषः ॥ दशाहस्यांतरे यस्य  
 गंगातोये स्थिमज्जति । गंगायां मरणां यादृक्तादृक् फलमवाप्नुयादिति मदनरत्ने  
 वृद्धमनुक्तेः (शौनकः) शौनकोऽहं प्रवक्ष्यामि अस्थिक्षेपविधिकं मातृ । आदौ  
 ग्रामाद्वहिर्गत्वा स्नानं कुर्यात्सिचैलकं ॥ प्रोक्षयेत्पंचगव्येन भुवं मंत्रैर्विचक्षणाः ।  
 गायत्र्याद्यैः पंचगव्यमंत्रैर्निखातास्थिभूमिं प्रोक्षेदित्यर्थः ॥ उपसर्पादिभिर्मंत्रैः प्रा  
 र्थनं खननं तथा । मृत्तिकोद्धराणां चास्थिनां ग्रहाणां च यथाक्रमम् ॥ उससर्पेति चतुर्भि  
 र्मंत्रैः क्रमेणाप्रार्थनादिज्ञेयम् ॥ स्नात्वा स्थिशुद्धिं कुर्वीत सतोन्विद्रं तिसृक्ततः । स्पृ  
 ष्वास्पृष्टा ततः स्नानं पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥ दशस्नानानि कुर्वीत तत्तन्मंत्रैर्विचक्ष  
 णाः । गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम् । भस्ममृन्मधुआदीनि संव्रतस्तानि  
 वैदश ॥ कुशैः संमाज्जयेदस्थीन्यतो देवेति संव्रतः । सतोन्विद्रं शुद्धिर्व्यतिनतमं  
 हृदतीति च ॥ पावसानिर्ममाणे च रुद्रसूक्तं यथाक्रमम् ॥ सतैः कुशैर्मज्जि  
 नम् ॥ हेमश्चाद्वततः कुर्यात्पितृनुहि शययन्ततः । पिण्डदानं प्रकुर्वीत ततश्च त्रि  
 लतर्पणम् ॥ अस्थिक्षेपांगंचेदम् ॥ अजिनं कंबलादध्वा गोकेशाः शारामेव च ।  
 भर्जपत्रं ताडपत्रं सप्तधा वेष्टनं स्मृतम् ॥ हेमञ्चमौक्तिकं रौप्यं प्रवालं नीलकन्तथा ।  
 तिसिपेदस्थिमध्ये तु शुद्धिर्भवति नान्यथा ॥ ततो होमं प्रकुर्वीत तिलाज्येन विच  
 क्षणाः । उदीरते तिसूक्ते नहुने दष्टोत्तरं शतम् ॥ ततो गत्वा सिपेत्तोर्ये स्पृशेद्यो न  
 विद्यते ॥ मूर्धपुरीषा च मनं कुर्वन् अस्थीनिधारयेत् । अत्र दशदानं वैतरणी ऋणामो

सपापधेनुदानमुक्तसदिवोदासीयेकाशीखराडे) धनंजयोपिधर्मात्मा सात्वभक्तिप  
 रायणाः । आदायास्थोन्यथीमातुरंगामार्गस्थितोभवत् ॥ पंचगव्येनसंचाप्यत  
 थापंचामृतेनवै । यस्यकर्दमलेपेनसिप्त्वापुठपैःप्रपूज्यच । आवेक्ष्यनेत्रवस्त्रेणात  
 तःपट्टांबरेणाच ॥ ततःसुरसवस्त्रेणाततोमांजिस्रवाससा ॥ नेपालकंबलेनाथमृदा  
 चाथविशुद्धया ॥ ताम्रसंपुटकेकृत्वासातुरंगान्यथोवहेत्(व्यासः)पट्टवस्त्रंचकौशे  
 यंमांजिस्रंश्चेतवस्त्रकस । कंबलंशारापट्टंचअजिनंचतथोत्तरम् ॥ स्यांविकल्पः ॥  
 अन्यप्रचात्रविशेषस्त्रिस्थलीसेतौदिवोदासीयेचज्ञेयः (संचयनेत्तरंश्राद्धमाहाश्व  
 लायनः) श्राद्धमस्मैदद्युरितिस्मृत्यर्थसारे ॥ संचयनेकृतेमनुष्यलोकंगच्छतःपा  
 थेयश्राद्धसामेनकार्यमिति ॥ अनुपनीतस्यनसंचयनम् (अथनवश्राद्धंपृथ्वीचं  
 द्रोदर्येगिराः) प्रथमेह्निहृतीयेचपंचमेसप्तमेतथा । नवमेकादशेचैवतत्तवश्राद्धमु  
 च्यते (शिवस्वामी) नवश्राद्धानिर्पंचाहूराश्वलायनशाखिनः । आपस्तंबाःषडि  
 त्याहुर्विभाषात्वितरेषुहि ॥ पंचसकादशाहिकंविना ॥ सरणाद्विषमेषुदिनेष्वे  
 कौकनवश्राद्धंकुर्यादानवमाद्यदिनवसंवच्छिद्यतेकादशेत त्कुर्यादितिमदनरत्नेवौ  
 धायनोक्तेः ॥ (भविष्ये) नवसप्तविंशाराज्ञां नवश्राद्धान्यनुक्रमात् । आद्यंतयो  
 र्वर्गायोस्तुषडित्याहुर्महर्षयः (हेमाद्रौवृद्धवशिष्ठः)अलब्ध्वातुनवश्राद्धं प्रेतत्वा  
 न्नवमुच्यते । अर्वाक्तुद्वादशाहस्यलब्ध्वातरतिदुष्टकृतम् ॥ अतःषडेव ॥ सतान्ये  
 ववियमश्राद्धानीत्युच्यते (नागरखंडेतु) पंचमेसप्तमेतद् दस्यमेनवमेतथा । दशमे  
 कादशेचैवनवश्राद्धानितानिचेत्युक्तम् (कात्यायनस्तु) चतुर्थेपंचमेचैवनवमेका  
 दशेतथा । यदत्रदीयतेजंतोस्तन्नवश्राद्धमुच्यते ॥ प्रथमेसप्तमेचैवेत्याद्यपादेव्या  
 सपाठः(बह्वृचानांतु) नवश्राद्धदशाहानि नवमिश्रंतुयडुक्कृतनित्युक्तंनारायणा  
 वृत्तौ (दीपिकायास) अथतनुयादाद्येचतुर्थेदिनेश्राद्धं ॥ पंचमसप्तमाष्टनवदिशु  
 द्रेषुयुग्मद्विजैः ॥ प्रथमेह्निहृतीयेह्निपंचसप्तनवस्वपि । द्वौद्वौपिंडौप्रदातव्यौशे  
 षेठवेकंतुविन्यसेत् ॥ सकोवियमश्राद्धेवयर्वापिंडश्चैकइति द्वावित्यर्थः ॥ अत्र  
 शाखाभेदाद्वयवस्था (अपरार्कभविष्ये)नवश्राद्धं त्रिपक्षंचयरासासंमासिकानि  
 च । नकरोतिसुतोयस्तुतस्याधःपितरोगताः ( वाराहे ) गतोसिदिव्यलोकंत्वं



कृतांतविहितात्पथः । मनसावायुभूतेनविप्रेत्वाहंनियोजये । पूजयिष्यामिभो  
 गैस्त्वामेवंविप्रं निसंवयेत् (आवाहनेपितत्रैव) इहलोकंपरित्यज्यगतोसिपरसां  
 गतिम् । मनसावायुभूतेनविप्रेत्वाहंनियोजयइति(तत्रैवबहुचपरिशिष्टे ) अनू  
 दकमधूपंचगंधमाल्यविवर्जितम् ॥ नवश्राद्धमसंवञ्चपिण्डोदकविवर्जितम् ॥  
 उदकमर्घ्यः ॥ पिण्डोदकंशुभंतांपितरइत्यवनेजनादि ॥ एकोद्दिष्टेषुसर्वेषु  
 नस्त्वधानाभिरम्यताम् । नाग्नौकरणमंत्रश्च एकंवात्रतिलोदकम् ॥ अनपत्ये  
 सुसर्वेषु नस्त्वधानाभिरम्यताम् । स्वस्त्यस्तुविसृजेदेवं सकृत्प्रणाववर्जितम् ॥  
 एकोद्दिष्टस्यपिण्डेतु अनुशब्दो न विद्यते । पितृशब्दनकुर्वीत पितृहाचोपजा  
 यते ॥ सपिण्डनात्प्रागितिहेमाद्रिः ॥ तेनस्वधांप्रयंजीत प्रेतश्राद्धेदशाहिके ॥  
 इति ऋष्यशृङ्गोक्तौदशाहिकोक्तेरेकादशाहेस्वधांप्रयोगसवेति हारलतापरा  
 स्ता ( रत्नावल्याम् ) आशिषोद्दिशुणादर्भाजयाशीःस्वस्तिवाचनम् । पितृ  
 शब्दःस्वसंबद्धःशर्मशब्दस्तथैवच ॥ पात्रालंभोवगाहश्चउल्मुकोल्लेखनादि  
 कम् । तृप्तिप्रश्नश्चविकिरःशेषप्रश्नस्तथैवच ॥ प्रदक्षिणाविसर्गश्चसीमांत  
 गमनंतथा । अष्टादशपदार्थाश्चप्रेतश्राद्धेविवर्जयेत् ॥ अत्रस्वधांपितृतमःशब्दा  
 नांतिलोमीतिमंत्रेप्रेतशब्दोहेनतृतीयांवातिलावनम् ॥ तृतीमर्घ्यदानम् ॥ अमु  
 ऽमैस्त्वादेतिप्रेतनाम्नापाणिहोमः ॥ नाम्नासकःपिण्डः ॥ निनयनमंत्रेऊहः ॥  
 अनुसंव्रणादित्वमंत्रकम् ॥ अभिरम्यतामिति विसर्जनम् ॥ एवंनवश्राद्धवर्जं  
 कोद्दिष्टेषु ॥ नवश्राद्धेत्वमंत्रकंसर्वमिति नारायणारुत्तिः (क्रियानिबन्धे) उत्तानं  
 स्थापयेत्पात्रमेकोद्दिष्टेसदाबुधः । न्युञ्जंतुपार्वणोक्त्वात्तस्योपरिकुशान्यसेत् ॥  
 नवश्राद्धं गृहेकुर्याद्धार्यायित्राग्नयोपिवा । सपिंडीकरणांतानिप्रेतश्राद्धानियानि  
 वै ॥ तानिस्थूलौकिकेवद्वावित्याहत्वाश्रलायनः ॥ इदंसंभवेत्तेनकार्यम् ॥ नव  
 श्राद्धेषुयच्छिष्टं गृहपर्युयितञ्चयत् । दंपत्योर्भुक्तशेषञ्चनतद्वंजीतकर्हिचिदित्यं  
 गिरोवचनलिङ्गात् ॥ द्वाभ्यांतदातुक्कच्छूभ्यांशुद्धिः स्यात्तुर्विवेकिनामितिब्राह्मो  
 उक्तम् (विधनेतुनिर्यायामृतेकरावः) नवश्राद्धंमासिकंचयद्यदंतरितंभवेत् । तत्तदु  
 त्तरसातंज्यादनुष्ठेयंप्रचक्षते (हेमाद्रीगालवः) श्रावेतुसूतकंचेस्यात्निशायांचमृ

तौ तथा । नवश्राद्धानि देयानियथा कालं यथाक्रमम् ॥ निशाया माशौचांते द्वयह  
 वृद्धौ (अन्वारोहगोतु) नवश्राद्धानि सर्वाणि सपिंडीकरणां पृथक् । एकस्य वृद्धो  
 तस्यर्गो गौरेका तत्र दीयते (आशौचांत्यदिने कार्यमुक्तं ब्राह्मे) यस्य यस्य तु वर्णास्य  
 यद्यत्स्यात्पि च मन्त्रवहः । स तत्र वस्त्रशुद्धिं च गृहशुद्धिं करोत्यपि ॥ समाप्य दशमं  
 पिंडं प्रेतस्पृष्टे तु वा ससी । अंत्यानामाश्रितानां च त्यक्त्वा स्नानं करोति च ॥ प्रमथ्य  
 लोमनखानां च यत्त्याज्यं तज्जहात्यपि । गौरस्य पकल्लेन तिलकल्लेन संयुतम् ॥  
 शिरः स्नानं ततः कृत्वा तोयेनाचम्य वाग्यतः । वृषभंगां सुवर्गां च स्पृष्ट्वा शुद्धो भवेत्त  
 रः (क्रियानिबन्धे गृह्यकारिकायां) अत्र पिंडत्रयं दद्यात्सखिभ्यस्तथादि सप्त ॥  
 प्रेताय मध्यमं तद्वत्तृतीयं च यमाय वै (तथा) कर्त्रा विप्रार्थिताः संतो ज्ञाति संबंधि बांध  
 वाः । दद्यात्सख्यंगतः पूर्ववीं स्त्रीन्धर्मोदकाञ्जलीम् ॥ पूर्ववन्नाम गोत्राभ्यां नियमो  
 नेह कश्चन (मदनरत्ने विष्णुहारीतौ) आशौचांते कृत्स्नं शुक्रमणिं स्तिलकल्लैः  
 स्य पकल्लैर्वस्त्राजः शुक्लवाससे गृहं प्रविशेयुस्तत्र शांतिकं कृत्वा ब्राह्मणापूजनं क  
 र्युरिति (देवतः) दशमेह नि संप्राप्ते स्नानं ग्रामादुर्वाहं भवेत् । तत्र त्याज्यानि वासां  
 सिकेशप्रमथ्य नखानि च (अपरा कर्त्रहस्पतिः) नवमेवासंत्यागो नखरोम्णां त  
 थांतिमे (तत्रैव व्यासः) आशौचांत्यदिने सौरं जनन्यां च शरीरमृते ॥ स तत्प्रेताल्प  
 वयसामित्याहापस्तंभः ॥ अनुभाविनां च परिवापनमिति ॥ अनुभाविनः कनि  
 ष्ठा इति विज्ञाने श्वरत्नाकरादयः ॥ आशौचमनुभवतां पुंसां सर्वाशौचे तु मुंडनम् ॥  
 आज्ञयानरपतेर्द्विजन्मनां दारकर्ममृतसूतकेषु च । बंधमोक्षमखदीक्षगोष्ठ्यापि  
 सौरमिष्टमखिलेषु चोद्युः ॥ इति रत्नमालोक्तेर्जननाशौचे पीतिशुद्धितत्त्वादयः ॥  
 अत्र देशाचारतो व्यवस्था ॥ परं शिखावर्ज्यम् ॥ केशप्रमथ्य नखलोमानि वापयी  
 त शिखावर्ज्यमिति गोभिलोक्तेः (यत्त्वापस्तंभः) न समावृत्तावपेयुरन्यत्र विहा  
 रादित्येके ॥ विहारोदशादिधागः ॥ तेन विना समावृत्ता गृहस्थानवपेयुरित्यर्थः  
 (यच्च) वृथा छिनत्ति यः केशान् तमाहुर्ब्रह्मघातिनमिति तत् ॥ केशप्रमथ्य धारयता  
 मग्र्या भवति संततिरिति दानधर्मोक्तं काश्यपस्य ॥ अनुभाविनः पुत्रादय इत्येके ॥  
 पुत्रः पत्नी च वपनं कुर्यादित्यथाविधि । पिंडदानोचितान्योपि कुर्यादित्यसमा



हित इत्यपरा क्वया सोक्तेः (यत्तुमितासरायाम्) द्वितीये हनिकर्तव्यं सूरकर्म प्र  
यत्नतः । तृतीये पंचमेवापि दशमेवाप्रदानत इति ॥ आप्रदानत इति चतुर्थादीनि ॥  
तत्प्रथमदिने सम्भवे ज्ञेयम् ॥ अलुप्तकेशो यः पूर्वं सोत्रकेशान् प्रवापयेत् । द्वितीये  
द्वि तृतीये द्विपञ्चमे सप्तमेऽपि वा ॥ यावच्छ्राद्धं प्रदीयेत् तावदित्यपरं सतमिति सा  
धवीये सदनरत्ने च बौधायनोक्तेः ॥ सदनपारिजाते तु दशमे प्रथमे च समुच्चय उक्तः  
( यत्तु ) दशमं पिण्डमुत्सृज्य रात्रिशेषेषु चर्चयेदिति ॥ तदेकादशाहश्राद्धं  
गविप्रतिमंत्रणात् ज्ञेयम् (अथैकादशाहः मनुः) विप्रः शुध्यत्यपः स्पृष्ट्वा सत्रियो  
वाहनायुधैः । वैश्यः प्रतोदं रस्मीन्वायसिंशूद्रः कृतक्रियः ( शुद्धितत्त्वे देवलः )  
आद्याहः सुनिवृत्तेषु सुस्नाताः कृतसंगलाः । आशौचात् द्विजमुच्यन्ते ब्राह्मणा  
न्स्त्रिस्तवाच्यच ( याज्ञवल्क्यः ) आद्यमेकादशे हनि सत्रियाद्यैराशौचेऽप्येकाद  
शे द्वि त्रि त्रिंशदंकार्यम् ॥ आद्यं श्राद्धमशुद्धोऽपि कुर्यादेकादशे हनि ॥ कर्तुं स्तात्का  
लिकी शुद्धिरशुद्धिः पुनरेव स इति हेमाद्रौ शंखोक्तेः ( पैनीनसिः ) सकादशे द्वि  
यच्छ्राद्धं तत्सामान्यमुदाहृतम् । चतुर्णामपि वर्णानां सतकं तु पृथक् पृथक् ( यत्तु  
मरीचिः ) आशौचांते ततः सम्यक् पिण्डदानं समाप्यते । ततः श्राद्धं प्रदातव्यं स  
र्ववर्णोऽथ विधिरिति ॥ तत्सर्ववर्णानां दशाहाशौचपरम् ( यत्तु विष्णुः ) अ  
थाशौचापरम इति ( यच्च गौडग्रंथे हारीतः ) शोभते सको द्विंशं कुर्यात् ( यच्च वै  
जवापः ) ऊर्ध्वदशम्या अपरेद्युरितित द्विप्रविषयम् ॥ एतेन दशमपिण्डापकर्षपक्षे  
अवयवपिण्डासमाप्तौ कथमेकादशाहश्राद्धमिति मूर्खोक्तिः परास्ता ॥ वचनादा  
शौचमध्ये इव तत्राप्यविरोधात् ( भविष्ये ) सकादशभ्यो विप्रेभ्यो दद्यादेकादशे  
हनि । भोजनं तत्र वैकस्मै ब्राह्मणाय महात्मने ( यत्तु मातस्ये ) सकादशे हनि तथा  
विप्रानेकादशैव तु । सत्रादिः सतकांते तु भोजयेद्युजो द्विजानिति ॥ तदुद्वाराश्रा  
द्धपरिमितसदनपारिजातः ॥ गौडास्त्वस्माद्वचनात् सत्रियादीनामाशौचान्तस  
वेत्याहुः ( रामायणोऽपि ) समतीते दशाहेतु कृतशौचो यथाविधि । चक्रे द्वादशि  
कं श्राद्धं त्रयोदशिकमेव च । द्वादशिकं द्वादशाहेन निवर्त्य त्रयोदशाहश्राद्धं त्रयोद  
शिकं चतुर्दशाहविधेयं सपिण्डनपायेयादि ॥ सत्रियाणां द्वादशाहाशौचे त्रयोद

शेसहैकोद्विष्टचतुर्दशेषापरिगणनम् ॥ द्विविधवाक्यादेकादशाहाशौचांतयोर्चि  
कल्पइत्येके ॥ सद्यःशौचादौयुद्धहतादेरेकादशाहः ॥ अन्येषांआशौचांतइति  
वयम् ( कौर्म ) एकादशेद्विकुर्वातप्रेतमुद्दिश्यभावतः । द्वादशेवाह्निकर्तव्यम्  
निंद्येय्यवाहनि ॥ निंद्यप्रेतक्रियाकालयुक्तम् ॥ एकादशेतुननियेधइत्युक्तं  
प्राक् ( रुहस्पतिः ) वस्त्रालंकारशय्यादिपितुर्यद्वाहनादिकम् ॥ गंधमाल्यैःस  
मभ्यर्च्यश्राद्धभोक्तेतदर्पयेत् ॥ श्रोत्रिणाभोजनीयास्तुनवसप्तत्रयोदश । जातयो  
बांधवानिःस्वास्तथाचातिथयोपरे ( देवयान्तिकनिबन्धे ) एकादशसुविप्रेयुप्रे  
तमावाह्यभोजयेत् ॥ तत्राद्यायचशय्यादिदद्यादाद्यमितिस्मृतम् ( विष्णुः ) सक्रव  
न्मंत्रानूहेनैकोद्विष्टबहुवचनांतानेकवचनांतान्वदेदित्यर्थः ॥ एतत्तद्वृष्टार्थत्वे ( अस्य  
विधनेगौराकालमाहहेमाद्रौबौधायनः ) एकोद्विष्टंस्वसवस्यातद्वादशेहनिवापु  
नः ॥ अत ऊर्ध्वमयुग्मेयुक्कुर्वीताहःस्वशक्तितः ॥ अर्धमासेयवामासिचतुर्तीसंवत्स  
रेपिवेति ( तत्रैवलघुहारीतः ) एकोद्विष्टंतुक्कुर्वीतपाकेनैवसदास्वयम् । अभावे  
पाकपात्राणांतदहःसमुपोषणम् ( गोभिलः ) ब्राह्मणांभोजयेदाद्येहोतव्यमनलेथ  
वा । पुनश्चभोजयेदेकाद्विराट्तिर्भवेदिति ॥ एतदाद्यमासिकाद्याद्विदकयोःसि  
त्थ्यर्थमितिभट्टाः । तेनसहैकोद्विष्टोदशश्राद्धाद्विज्ञमेव ॥ अतएवाद्यंसर्वैको  
द्विष्टप्रकृतिभूतमेकादशइतिविज्ञानेप्रवरः ॥ अन्येत्वाद्यमासिकाद्विदकयोराद्य  
मेकादशेहनीतिनियमादभेदमाहुः ॥ द्वयोस्तंत्रत्वबाधार्थं गालवीयमित्यन्ये ( यु  
द्धहतादौतुहेमाद्रौपृथ्वी चंद्रोदयेपैठीनसिः ) सद्यःशौचेपिदातव्यंप्रेतस्यैकादशे  
हनि । सद्यःदिवसस्तस्यश्राद्धशय्यासनादियु ॥ एवमेकादशाहादौ ॥ अतोत्रद्वि  
तीयेह्यैकादशाहंवदन्तौहूःशूलपाणिःस्मार्तगौडप्रचपरास्तः ॥ एतेनाद्यमेकाद  
शेहनीत्याशौचानंतरदिनेपरमिति विष्णुवक्तेः ॥ प्रागुक्तशंखादिवचनानांचाना  
करत्वादिति वदंतः कल्पतरुवाचस्पतिप्रमुखाः सर्वमहानिबन्धविरोधादुपेक्ष्याः  
( उशनाः ) इयहाशौचेपि कर्तव्यमाद्यमेकादशेहनि । अतीतविययेसद्यस्त्र्यहोर्ध्व  
वातदिष्यते ( याज्ञवल्क्यः ) एकोद्विष्टंदैवहीनमेकाद्व्यैकपवित्रकम् । आवाहना  
न्तौकरगारहितंत्वपसव्यवत् ॥ उपतिष्ठतामित्यसद्यस्थानेः विप्रविसर्जनेअभि



रम्यतामिति वदेयुस्तेभिरताः स्महे इति । अग्नौ करणानियेधोन्यपरः ॥ बह्वृचा  
नांसर्वे कोहिष्येयुतद्ववत्येवेत्युक्तं प्राक् ॥ स्वदिति मिति त्विप्रश्न इति कात्यायनः ॥  
प्रथमे पात्रे संस्त्रवानित्यस्य तृतीयेनापि धानस्य च बाधान्न पात्रन्युज्जतेति गूलपा  
गाः (प्रचेताः) नात्र पात्रालंभो नाशियः प्रार्थयेत् (अत्र विशेषो हेमाद्रौ वाराहे) अम  
शु कर्म तु कर्तव्यं न खच्छेदंस्तथैव च । स्रपनाभ्यंजनं दद्याद्विप्राय विधिपूर्वकम् ॥  
(तथा) उपवेश्यासने भद्रे छत्रं तत्र प्रकल्पयेत् । पश्चादुपानहौ दद्यात्सर्वाग्याभर  
णानि च (विठ्ठाः) दक्षिणां तं श्राद्धमुक्त्वा दत्तासद्योदकेषु चतुरंगुलपृथ्वीस्ता  
वदंतरालस्तावदधः स्वातावितस्त्यायतास्तिस्रः कर्षूः कुर्यात् ॥ कर्षूणां समीपेऽग्नि  
माधाय परिस्तीर्यैकैकस्मिन्नाहुतित्रयं जुहुयात् ॥ सोमाय पितृमते स्वधानमोग्न  
ये कव्यवाहनाय यमायां गिरस्वते इति । स्थानत्रये प्राग्वापिंडं निर्वपणां दधिमधुघृ  
तमांसैः कर्षूत्रयं पूरयित्वैतत्तदिति जपेत् ॥ शेषं नवश्राद्धवत् ॥ अत्र साग्नेरप्यंतैवे  
प्रवदेव इत्युक्तं प्राक् ॥ इदं दशाहकर्वा पुत्रेणावाकार्यमित्युक्तं क्रियानिबन्धे (गृह्य  
कारिकायां) तिलोसिप्रेतदेवत्यः प्रेतलोकाह्निनोत्तकम् । संवमुक्त्वा तिलानि  
वंप्रक्षिपेदध्यपात्रतः ॥ दक्षिणामुदकं भंचसान्नं दत्त्वा तथैव गात्रम् । तस्मै दद्याद्भुक्त  
शेषं तद्वागडान्यपि भाजनम् ॥ विप्राभावे गनावेको हिष्टम् ॥ अग्नौ प्रायसं प्रपयि  
त्वा ज्यभागां तैतदग्रे श्राद्धप्रयोगं कृत्वा ग्नौ प्रेतमावाह्यगंधाद्यैः संपूज्य पृथिवीते  
पात्रमित्यादिना च संकल्प्योदीरतामवर इत्यष्टाभिश्चतुरावृत्ताभिर्द्वाविंशदाहु  
तीर्हुत्वा पिंडदानादि श्राद्धं समापयेदिति (याज्ञवल्क्यः) स तत्सपिंडीकरसामे  
को हिष्टं स्त्रियां अपि (अथ बृहोत्सर्गः) स च नित्यः काम्यः ॥ न करोति वृथोत्स  
र्गं सुतीर्थे वा जलांजलिम् ॥ न ददाति सुतोयस्तु पितु रुच्चारणवसः ॥ उच्चारः पुरीयं ॥  
सष्टव्या बहवः पुत्राय चोकोपि गयां व्रजेत् । यजेत वा श्वमेधेन नीलं वा बूयमुत्सृजेद  
ति मत्स्यकौर्मोक्तेः ॥ एकादशे हि प्रेतस्य यस्य नोत्सृज्यते वृषः । प्रेतत्वं सुस्थिरं  
तस्य दत्तैः श्राद्धशतैरपीति यद्विंशन्मते निंदाश्रुतेः ॥ सर्वं कृत्वा ह्यसाप्नोति फलं  
वाजिमखोदितम् । यमुहिप्रयोत्सृजेत् नीलं सलभेत् परांगतिम् ॥ वृथोत्सृष्टः पुना  
त्येव दशतीतान्दशापरानिति देवीपुराणे भविष्यादौ फलश्रुतेः च (अयं द्वादशाहे

उक्तोभविष्ये) चैत्र्यांवापितृतीयायां वैशाखांद्वादशे हिवेति ॥ विष्णुधर्मसुमृताहे  
 प्युक्तः ॥ विष्णुवद्वितये चैवमृताहेवांधवस्य चेति ॥ अयंगृहेनकार्यः ॥ नगृहेमोचये  
 नीलं कामयन्पुष्कलं फलमिति कार्त्तिकपूराणां ( कामधेनौ ) वत्सराभ्यन्तरेपि  
 चोर्चय स्योत्सर्गकर्मणि । वृद्धिश्चाद्वनकुर्वीत तदन्यत्र समारभेत् ( तल्लक्षणांतुवा  
 ह्ये ) लोहितोयस्तुवर्गो न मुखे पुच्छे च पांडुरः । प्रवेतः खुरविषाणाभ्यां सनीलो वृ  
 य उच्यते ॥ प्रवेतवर्गस्य मुखादीनि प्र्यामानि प्र्यामस्य वा प्रवेतानि यस्य सोपिनी  
 ल उक्तो मात्स्यादौ ( देवीपुराणे ) च तस्मै वत्सिका भद्रा ज्ञेया संभवतोपि वा ॥ य  
 तु पठंति ॥ वृषोत्सर्जनवेलायां वृषाभावः कथंचन । मृद्धिः पिष्टैश्च दभैर्वृषं कृ  
 त्वा विमोचयेत् ॥ न शक्यते वृषोत्सर्गो होमं वा तत्र कारयेदिति तन्निर्मूलम् ॥ तद्वि  
 धिर्होमाद्रौ भद्रकृतौ च ज्ञेयः ॥ अत्र देवयज्ञिकेन वृषोत्सर्गात् पूर्वपुस्त्यसूक्तेन विष्णु  
 रूपि प्रेतोद्देशेन विष्णुतर्पणमुक्तम् ॥ तत्र मूलं चिंत्यम् ( पारस्करः ) सव्येन पाणि  
 ना पुच्छं समालंब्य वृषस्य तु । दक्षिणेनापश्चादाय सतिलाः सकृशस्ततः ॥ प्रेतगोत्रं  
 समुच्चार्य अमुकस्मै इति ब्रुवन् । वृषस्य वमयादत्त स्तं तारयतु सर्वदा ॥ सहेमसतिलं भू  
 मा विद्युच्चार्यं विनिक्षिपेत् ( तथा ) विधारयेन्न तं कश्चित् न च कश्चन वा हयेत् ।  
 न दोहयेच्च ताधेनून् च कश्चन बंधयेत् ( स्त्रीषु विशेषः संग्रहे ) पतिपुत्रवती नारी भ  
 तुरप्रेमृतायदि । वृषोत्सर्गं न कुर्वीत गां दद्याच्च पयस्विनीम् ॥ पतिपुत्रयोः साहित्यं  
 विवक्षितम् ॥ अन्वारोहणोपि गोदानमेवेत्युक्तं प्राक् ॥ आशौचांतरेपि वृषोत्स  
 र्गाद्यमासिकशय्यादि दद्यादेवेत्युक्तम् ( क्रियानिबन्धे स्मृत्यन्तरे ) मृतके मृतके चै  
 व द्वितीयं मृतकं यदि । पिंडदानं प्रकुर्वीत वृषोत्सर्गतथैव च ॥ न हन्यात् मृतके कर्म द्वा  
 दशैकादशाहिकमा शुद्धोवायदि वा शुद्धः कुर्यादेवा विचारयन्निति ( अत्र पददान  
 मुक्तदेवजानीये गारुडे । एकादशाहं प्रक्रम्य ) तद्विदीयते सर्वे द्वादशाहे विशेषतः  
 पदानि सर्ववस्तुनि विरिद्यान्नित्रयोदशे ॥ यो ददाति मृतस्येह जीवतोप्यात्महेतवे । सु  
 खी भूत्वा सहामार्गे वै न ते यः स गच्छति ( तथा ) आसनोपानहौ च त्र्यमुद्रिकाचक्रमंड  
 लः । भाजनं भाजनाधारो वस्त्राण्यष्टविधं पदम् ( तथा ) भाजनासनदानेन मुद्रिका  
 भोजनेन च । आड्यग्रजोपवीतेन पदं संपूर्णां तां व्रजेत् ॥ सहिषीरयगोदानात्सुखी भ



वर्तिनिप्रिचतम् । सर्वोपस्करयुक्तानिपदान्यत्रयोदश ॥ योददातिमृतस्येहजीव  
 न्नप्यात्महेतवे । सगच्छतिपरंस्थानंमहाकष्टविवर्जितः ॥ त्रयोदशपदानीत्यंप्रेता  
 यैकादशेहनि । दातव्यानि यथाशक्तितेनाशौ प्रीणातो भवेत् ॥ अन्नं चैवोदकं चैवो  
 पानहौ चकमंडलुः । छत्रं वस्त्रं तथा यष्टिं लोहदंडं तथा घृमम् ॥ अग्नीष्टिकां च दीपं च  
 तिलां स्तांबलमेव च । चंदनं पुठपदानं चोपदानानि चतुर्दश ॥ योऽष्टवंशं गजं वा पित्रा  
 ह्यगो प्रतिपादयेत् । स्वमहिम्नोनुसारेणातत्तत्सुखमवाप्नुयादिति ॥ अवमूलं चिं  
 त्यम् (अथ शय्यादानम् ॥ हेमाद्रौ भविष्ये) तस्माच्छय्यां समासाद्य सारदारुमयीं  
 दृढाम् । दंतपत्रचितां रम्यां हेमपदैरलंकृताम् ॥ हंसतूलीप्रतिच्छन्नां शुभदंडोपधा  
 निकासम् ॥ प्रच्छादनपटीयुक्तां गन्धधूपदिवासिताम् । तस्यां संस्थापयेद्देमं हरि  
 लक्ष्म्या समन्वितम् ॥ अत्र हरिस्थाने प्रेतम् ॥ उच्छीर्षके घृतभृतं कलशं परिकल्प  
 येत् ॥ ताम्बूलं कुंकुमसौद कर्पूरागरुचन्दनम् ॥ दीपिकोपानहौ छत्रं चामरासन  
 भाजनम् । पार्श्वेभ्युस्थापयेद्भक्त्या सप्तधान्यानि चैव हि ॥ शयनस्थस्य भवति य  
 दन्यदुपकारकम् । भृङ्गारकरकाद्यंतु पंचवर्गावितानकम् (मंत्रस्तु) यथानकृशा  
 शयनं शून्यं सागरजातया ॥ शय्यामसाप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि ॥ य  
 स्माद शून्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च । अर्धतदेव ॥ दत्तवैवंतस्य सकलं प्रणिपत्य  
 विसर्जयेत् । एकादशाहेपितथा विधिरेयः प्रकीर्तितः ॥ विशेषं चात्र राजेन्द्र-क  
 थ्यमानं निशामय । तेनोपभुक्तं यत्किंचिद्वस्त्रवाहनभाजनम् ॥ यद्यदिष्टं तस्या  
 शीतत्सर्वं परिकल्पयेत् । तमेव पुरुषं हेमं तस्यां संस्थापयेत्तदा ॥ पूजयित्वा प्रदा  
 तव्या मृतशय्यायथोदिता (पात्रे) मृतकांते द्वितीये द्विशय्यां दद्यात्सलक्षणां ॥  
 कांचनं पुरुषं तद्वत्फलवस्त्रसमन्वितम् । संपूजयद्द्विजदांपत्यं नानामृगाविभक्षितम्  
 उपवेश्य तु शय्यायां सधुपकर्ततो वदेत् ॥ रजतस्य तु पात्रेणादधिदुग्धसमन्वितम् ।  
 अस्थिलालाटिकं गृह्य सुक्ष्मं कृत्वा सपायसम् ॥ भोजयेत्तद्विजदांपत्यं विधिरेयः स  
 नातनः ॥ एष सर्वविधिर्दृष्टः पार्श्वतीर्थैर्द्विजोत्तमैः (एतत्प्रतिगृहेतयैवोक्तम्)  
 गृहीतायां तु तस्यां वै पुनः संस्कारमर्हति ॥ (शय्यादानफलं भविष्ये) स्वर्गोपूरन्द  
 रपुरे सूर्यपुत्रालये तथा । सुखं वसत्यसौ जन्तुः शय्यादानप्रभावतः ॥ आभूतसंस्तवं

यावत्तिष्ठत्यातंकवर्जित इति ( अथोदकुम्भः । हेमाद्रौस्मृतिसमुच्चये ) एकाद  
 शाहात्प्रभृतिद्यदस्तेयान्नसंयुतः । दिनेदिनेप्रदातव्यो यावत्संवत्सरंस्तैः ( लौ  
 गाक्षिः ) यस्यसंवत्सरादवाक् सपिण्डीकरणाभवेत् । मासिकंचोदकुम्भच दे  
 यंतस्यापि वत्सरस ( उत्तरार्धे ) तस्याप्यन्नं सोदकुम्भं दद्यात्संवत्सरं द्विजे इति या  
 ज्ञवल्क्यपाठः ॥ सपिण्डनापकर्षेऽस्यापकर्षप्राप्तेबाधकमिदमिति शूलपाणिः  
 तन्न ॥ प्रकृतिविकाराभावेन तदन्तन्यायविषयत्वात् ( मात्स्ये ) यावदब्दञ्चयो  
 दद्यादुदकुम्भं विसत्सरः । प्रेतायान्नसमायुक्तं सोश्चमेधफलं लभेत् ॥ केचित्तत्रयो  
 दशाहमारभ्याहुस्तन्निर्मलम् ( देवयान्निकः ) सपिण्डनापकर्षे संवत्सरं यावदुद  
 कुम्भं अर्वागेव दद्यान्नो ध्वं प्रेतलोकगतस्यान्नं सोदकुम्भं प्रयच्छतेति गोविन्दराज  
 धृतविष्णुवक्तेः ॥ अन्नंचैव सशक्त्या तु संख्यां कृत्वा द्विदकावधि । दातव्यं ब्राह्मणो  
 रकन्द घटादौ निट्कयन्तुवा ॥ अपिश्चाद्वशतैर्दत्तैरुदकुम्भं विना नराः । दरिद्रा  
 दुःखिनस्तान् भ्रमन्ति च भवार्णवे ॥ तेनापकृत्य दातव्यं प्रेतस्याप्युदकुम्भकमिति  
 गोभिलभाट्येस्कांदाच्च सपिण्डनात्प्रागेव तस्य विधानादूर्ध्वं नियेधादित्याह ॥ तन्न ॥  
 उदकुम्भे पार्वणाविधिनानुपपत्तेरेवं व्याख्यायां मानाभावात् क्षिताक्षरादि विरोधा  
 च ॥ वचनञ्च यदि सूलंतदावृद्धावपकर्षे विधत्ते ॥ प्रेतश्चाद्वानि सर्वाणि सपिण्डी  
 करणान्तथेति हेमाद्रौ शाह्यायने वक्तेः ॥ तस्याप्यन्नं सोदकुम्भमिति याज्ञवल्क्य  
 विरोधाच्च ( मदनरत्ने गौतमः ) अर्धे पार्वणां श्राद्धं सोदकुम्भमधर्मकम् । कुर्यात्प्र  
 त्याद्विदकाच्छ्राद्धात्संकल्पविधिनान्वहम् ॥ अधर्मकं ब्रह्मचर्यादिनियमहीनम् ॥  
 एतन्मासिकवदेकोद्विष्टपार्वणां कार्यम् ॥ अपरार्कस्तु सपिण्डीकरणोत्पत्तेः पृथक्त्वे  
 नेपपद्यते । पृथक्त्वे तु कृते पश्चात् पुनः कार्या सपिण्डनेति ( लघुहारीतोक्तावपि )  
 तस्याप्यन्नं सोदकुम्भं देयं संवत्सरं द्विजे इति ॥ याज्ञवल्कीये तस्येत्येकत्वे वक्तेः स  
 पिण्डनोत्तरमप्येकोद्विष्टमेवेत्याह ॥ अत्र पिण्डदानं कृताकृतम् ॥ अहरहरन्नम  
 स्मै ब्राह्मणा ये उदकुम्भञ्च दद्यात्पिण्डमप्येके निपृणांतीति हेमाद्रौ पारस्करोक्तेः ॥  
 श्राद्धाशक्तो पिण्डमात्रमिति गौडाः ॥ तन्न ॥ अपिश्चाद्वबाधापत्तेः ( हारीतः )  
 मृतेपितरिवैपुत्रः पिण्डमहंसमाचरेत् । अन्नं कुम्भं च विप्राय प्रेतनिर्देशधर्मतः



प्रेतशब्दे चारणेनेति हलायुधः ॥ यद्वा प्रेतस्य निर्देशो यत्र तदेके। द्विष्टं तद्धर्मकमि  
 त्यर्थः ॥ अत्राशौचादिनाद्यब्दांत्यावद्वत्सरापत्तेः शौचनाधिकारो विशेषणम् ॥  
 तेन मृतदिनमारभ्यैतत्कार्यमिति केचित् ॥ तन्न ॥ हेमाद्रिधृतवचोविरोधात् ॥  
 मध्ये आशौचादिनावाधेतुलोपगवदार्शवत् ॥ तथा प्रथमाब्दे दीपदानमुक्तम् (देव  
 जानीये गारुडे) प्रत्यहं दीपको देयो मार्गे तु विप्रमेतैः । यावत्संवत्सरं वापि प्रेत  
 स्य सुखं तप्सया ॥ प्राङ्मुखो दङ्मुखं दीपं देवागारे द्विजालये । कुर्याद्यान्यमुखं  
 पित्र्ये अङ्घ्रिः संकल्प्य सुस्थितम् (अथ मासिकानि) तानि च कृत्वाैव सपिण्डनं  
 कार्यम् ॥ तथा गोभिललौगाक्षि ॥ आद्यानियोडशादत्वा नैव कुर्व्यात्सपिण्डनम् ।  
 आद्यानियोडशाप्याथ विदधीत्सपिण्डनम् (तानित्वाह जानकार्यः) द्वादश  
 प्रतिमास्यानि आद्यग्रामासिकान्तथा । त्रैपक्षिकाद्विकेचेति आद्यान्येतानि  
 योडश ॥ आद्यग्रामासिकाद्विकशब्दा ऊनमासिकेन यद्येनाद्विकपरः ॥  
 हेमाद्रौ तु सपिण्डीकरणं चैव इत्येतत्तथा द्वादशमित्युत्तरार्द्धे पाठः ॥ तदा आद्यसू  
 नमासिकं द्वादशाहे ॥ ग्रामासिकं ऊनयद्येनाद्विके इत्यर्थः ॥ कात्यायनस्त्व  
 न्यथाह ॥ द्वादशप्रतिमास्यानि आद्यग्रामासिकेतथा । सपिण्डीकरणञ्चैव  
 इत्येतच्छाब्दयोडशम् ॥ एकाहेन तु ग्रामासायदास्युरपि वा त्रिभिः । न्यनाः सं  
 वत्सराश्चैव स्यातां ग्रामासिकेतदा ॥ द्विवचनादूनयद्येनाद्विके इत्यर्थे माह पृ  
 थ्वीचन्द्रः ॥ व्यासस्त्वन्यथाह ॥ द्वादशाहे त्रिपक्षे च ग्रामासे मासिकाद्विके ॥  
 आद्यानियोडशैतानि संस्मृतानि मनीषिभिः ॥ द्वादशाहपदमूनमासिकपरम् ॥  
 तस्य द्वादशाहेऽप्युक्ते रितिकालादर्शः ॥ मदनरत्ने ब्राह्मेत्वन्यथोक्तम् ॥ नृणां  
 न्तुत्यक्तदेहानां आद्याः योडशसर्वदा । चतुर्थेऽपञ्चमे चैव नवमैकादशे तथा ॥  
 ततो द्वादशभिर्मसैः आद्याद्वादशसंख्ययेति ॥ चतुर्थ्यादीनि दिनानि ॥ भविष्ये  
 त्वन्यथोक्तम् ॥ अस्थिसञ्चयनं आद्यां त्रिपक्षे मासिकानितु । रित्तयोश्च तथाति  
 थ्योः प्रेत्याद्यानियोडशेति ॥ रित्तयोस्तिथ्योरिति न्यूनयद्येनाद्विकपरमि  
 ति हेमाद्रिः ॥ अत्र देशकुलशाखाभेदाद्व्यवस्थेति सर्व्वनिबन्धाः (गालवः) ऊ  
 नग्रामासिकं यद्ये मासेवान्यूनमासिकम् ॥ त्रैपक्षिकं त्रिपक्षे स्यादूनान्दं द्वादशे

तथा ( ऊनमासिकेतुगोभिलः ) सरगातद्वादशाहेस्या न्मास्यनेचोनमासिकम्  
 ( सदनरत्नेकालादर्शेचप्रलोकगौतमः ) एकद्वित्रिदिनेरूने त्रिभागेनोनसववा ।  
 आद्यान्यूनान्दिक्कादीनि कुर्यादित्याहगौतमः ( क्रियानिवन्धेकतुस्तु ) सार्द्धं  
 कादशेमासे सार्द्धेवैपञ्चमेतथा । ऊनान्दमनयरासासंभवेतांश्राद्धकर्मणी  
 त्युक्तम् ॥ तत्रमूलं चिन्त्यम् ( ऊनेयुवज्यान्याहमरीचिः ) द्विपुष्टकरेचनंदासुसि  
 नीवाल्यांभूगोर्दिने । चतुर्दश्यांचनोनानिकृत्तिकासुत्रिपुष्टकरे ( ज्योतिषे ) त्रिपा  
 दस्यतिथिर्भद्राभौमेज्यरविभिः सह । तदात्रिपुष्टकरोयोगो द्वयोर्योगोद्विपुष्टकरः  
 ( गालवः ) त्रिभिर्वादिवसैरूनेत्वेकेनद्वितयेनवा ॥ आद्यादियुचमासेयुकुर्या दूना  
 न्दिक्कादिकम् ॥ एकन्यूनपक्षेपंचम्यामृतस्यतृतीयायांत्रिभिर्न्यूनप्रतिपदिद्युने  
 द्वितीयायामितिकेचित्त ( साधवस्तु ) घासमासिकादिक्कादशेस्यातांपूर्वेद्युरेव  
 ते । मासिकानिस्त्रकीयेतुदिवसेद्वादशेपिचेतिपैठीनसिवाकोऊनयरासासिकं स  
 प्तममासगतमृताहात्पूर्वेद्युः कार्यम् ॥ ऊनान्दिकंतुद्वितीयान्देमृताहदिनात्पूर्वेद्युः  
 कार्यमित्यर्थमाह ॥ मासिकानिस्त्रकीयेतुदिवसेदित्युक्तेः ॥ इदमेवयुक्तम् ॥ स  
 दनरत्नेष्वेवम् ( याज्ञवल्क्यः ) मृतेहनितुकर्तव्यं प्रतिमासंतुवत्सरम् । प्रतिसंवत्स  
 रंचैवमाद्यमेकादशेहनि ॥ अत्राद्यमासिकमादिक्कादशेहोतिनिर्णयामृता  
 दयः ॥ ब्राह्मरांभोजयेदाद्येहोतव्यमनलेयवा ॥ पुनश्चभोजयेद्विप्रंद्विरावृत्ति  
 भवेद्वितीतिगोभिलीयंचतद्विषयमाहुः ॥ अन्येतुमासपक्षतिथिस्पृष्टेत्यादिवि  
 रोधादादिक्कादशेवैव ॥ मासिकंतुमासादौ ॥ द्विरावृत्तिस्तुसकादशाहिका  
 द्यमासिकपरा ॥ देवयाज्ञिकेऽप्येवमाह ( लौगाक्षिरपि ) मासादौमासिकंका  
 र्यमादिक्कादशेकार्यमधिकेत्वाधिकंभवेत् ( दीपिकायांतु )  
 आद्यंरुद्रमितेर्कसमितदिनेवास्यादित्युक्तम् ॥ गौडास्तुमृतातिष्ठप्रवधिकेएकदि  
 नाधिकेमाससंवत्सरपदंगौरां ॥ पूर्णोददेशेतिइयदसमाप्तपरत्वमितिशूलपाणिः ॥  
 तेनद्वितीय मासादावाद्यमासिकादीनितमौख्यकृतं ( अशक्तौतुहारीतः ) मुख्यं  
 श्राद्धंमासिमासिअपयान्तिवृत्तुंप्रति । द्वादशाहेनवाभोज्यायकाहेद्वादशापिवा ॥  
 ऋतुंप्रतिद्वेद्वेइत्यर्थः ॥ यदापितुसरगात्त्रयोविंशतितमेदिनेदर्शावृद्धिर्वास्यात्त



दाद्वादशदिनेषु द्वादशमासिकानि कार्याणीत्यर्थः ॥ त्रैपक्षिकं तु त्रिपक्षेऽतीते मृता  
 हे कार्यम् ॥ त्रैपक्षिकं भवेद्भूते त्रिपक्षे तदनन्तरं मिति भविष्योक्तेरिति मदनरत्ने उ-  
 क्तम् (पृथ्वीचन्द्रकालादर्शानिर्णयामृतादयस्तु) ऊनान्यूनेषु मासेषु विद्यमाना हेम-  
 मेपि वा । त्रैपक्षिकं त्रिपक्षेऽस्या नमृता हेतुवत्तराणि त्वितिकायां जि निस्मृतेः ॥  
 पूर्ववृत्ते प्रवृत्ते इत्यर्थमाहुस्ते तदनन्तरशब्दविरोधात् त्रैपक्षिकं द्वितीयमासिक-  
 योः संकरापत्तेरेवं व्याख्यायां मानाभावाच्चोपेक्षयाः ॥ त्रिपक्षस्य पिण्डने त्वेवं श-  
 ब्दाभावाद् अधिकरणात्त्वमेव ज्ञेयम् (यत्तु-- क्रियानिबन्धे गारुडे) त्रैपक्षिकं त्रिपक्षे तु  
 प्रवृत्ते विद्यमाने दिने । मासिकान्यपि चो नानि अष्टाविंशतिमे दिने इति तन्निर्मूलम्  
 (स्मृतिरत्नावल्याम्) द्वादशाहेयदा कुर्यात्पितुः पुत्रः स पिण्डनम् । स कादशे हि  
 कुर्वीत प्रेतश्चाद्यानि योऽष्टा (पैठीनसिः) स पिण्डीकरणादूर्ध्वं कुर्वन् अष्टादिनि  
 योऽष्टा । स कोऽष्टविधेन कुर्वन् सर्वाणि तानि तु ॥ स पिण्डीकरणादूर्ध्वं यदा  
 कुर्यात्तदा पुनः । प्रत्यब्दं यो यथा कुर्यात्तथा कुर्यात्स तान्यपि (मदनरत्ने कात्याय-  
 नः) आह्वमग्निमतः कार्यं द्वादशे कादशे हनि । ध्रुवाणि तु प्रकुर्वीत प्रमीता हनि  
 सर्वं ॥ ध्रुवाणि त्रैपक्षिकादूर्ध्वानि (क्रियानिबन्धे गारुडे) त्रिपक्षात्पूर्वतः सारणे  
 भवेत्संस्कारवासरे । ऊर्ध्वमृतदिनेऽनग्नेः सर्वाण्येव मृताहतः ॥ एतानि च यदा स  
 पिण्डनात्पूर्वयुः पत्तु कुर्यात्तदा देशकालकर्त्रेण तन्वत्त्वादेकः पाक इति केचित् ॥ पा-  
 कभेद इति भट्टचरणाः ॥ अत्र केचिदाहुः ॥ देशकालदैवतैक्ये तन्वत्त्वात् आह्वका-  
 लातिक्रमापत्तेः ॥ द्वादशाहेयसर्वाणामसंक्षेपेण समापयेत् । तान्येव तु पुनः कुर्यात्  
 त्रेतशब्दं नकारयेदिति कात्यायनोक्तेः ॥ नैव आह्वयं कुर्यात्समाने हानि कुर्वन् चि-  
 दयस्य दैवतैक्यपरत्वेऽप्यत्र तत्सत्त्वात् ॥ आह्वं कृत्वा तु तस्यैव पुनः आह्वं नकारयेदि-  
 ति जात्रात् युक्तेः ॥ योऽष्टासंख्यायां प्रचवाजपेये प्राजापत्ययागसप्तदशत्ववत्सा-  
 न्नाययागादित्ववच्च दर्शापातसंक्रांतिश्चाह्वयगपदनुष्ठाने प्युपत्तेराद्यमासि-  
 काद्यनाब्दिक्रांतियुयोऽष्टा आह्वयचक्षणाः क्रियतामित्येवं प्रयोगेणैकोविप्रः पिं-  
 डोर्ध्वं चेति ॥ विरुद्धविधिविध्वंसेऽप्येवं तन्मंदम् ॥ द्वादशाहेन वा भोज्यागकाहे  
 द्वादशार्पणेति हेमाद्रौ हारीतवचे विरोधात्तेन विप्रभेदात् पिण्डादयश्चिपिभिन्न

मिति सिद्धम् ॥ यतानि द्वादशाहादौ सपिण्डता तत्पूर्वकृतान्यपि बृद्धिं विनापकर्ष्य  
 पुनः स्वकाले कार्याणि ॥ यस्य संवत्सरादर्वाक्सपिण्डीकरणांकृतम् । मासिकं  
 चोदकुम्भं च देयं तस्यापि वत्सर्मिति मदनरत्ने गिरसोक्तेः ॥ न चेदं मासिकानामपि  
 कार्यविधत्ते किन्तु सपिण्डनोर्ध्वस्वकालेनुष्ठानमेवेति वाच्यम् ॥ आद्यानि योडशा  
 दत्त्वा न तु कुर्यात्सपिण्डतामिति विरोधात् ॥ यस्य संवत्सरादर्वाक् विहिता तु सपि  
 ण्डता । विधिवत्तानि कुर्वीत पुनः आद्यानि योडशेति माधवीये गोभिलोक्तेः च ॥  
 अर्वाक्संवत्सराद्यस्य सपिण्डीकरणांकृतम् । योडशानां द्विरावृत्तिं कुर्यादित्याह  
 गौतम इति तत्रैव गालोक्तेः ॥ योडशत्वचैकादशाहासपिण्डनपक्षे ॥ तत्राद्यमा  
 सिकस्य कालसत्त्वादन्यपक्षे युयथासंभवं ज्ञेयम् ( यत्तु दीपिकायाम् ) अनुमासि  
 कानि तु चरेत्तान्येव सापिण्ड्यतः पश्चात् । द्वादशेत्युक्ते स्वनानां पुनः कृतिरित्युक्तं  
 तदेतद्विरोधाच्चिन्त्यम् ( यत्तु गौडाः ) सपिण्डीकरणां तातु ज्ञेयाप्रेतक्रियाबुधै र्  
 ति शातातपोक्तेर्मासिकानां प्रेतत्वविमोक्षार्थत्वात् सपिण्डनापकर्ष्यं तदंतन्यायेन  
 तेषामपकर्ष्यमासिकानां पुनः कृतिः ॥ यत्तु मासिकं चोदकुम्भं चेत्तिलो ग्रास्थादि  
 वचनं तन्निर्मूलम् ॥ समलत्वेऽपि दार्शपरंचेत्याहुः ॥ ते उक्तवक्ष्यमाणावचो निबन्ध  
 विरोधान्मूर्खा इत्युपेक्ष्याः ॥ यत्तु मितक्षरायां सपिण्डनोर्ध्वं स्वकालेऽप्यकार्या  
 णि अपकर्ष्यस्त्वनुकल्प इत्युक्तं तदपि पूर्वविरोधाच्चिन्त्यम् ॥ तेन बृद्धिं विनापकर्ष्यं  
 पुनः कृतिः । अर्वाक्संवत्सराद्यस्य सपिण्डीकरणां भवेत् ॥ प्रेतत्वमिहतस्यापि ज्ञेयं  
 संवत्सरं नृपेत्यग्निपुराणात् ॥ बृद्धिनिमित्तापकर्ष्यत्वस्त्येव तन्निवृत्तिः ॥ अन्यथा  
 वृद्धावसंभवादि तिशूलपाणिः ( कायार्जिनिः ) सपिण्डीकरणादर्वागपक्ष्यकृ  
 तान्यपि । पुनरप्यपक्ष्यते वृद्ध्युत्तरनिषेधनात् ( निषेधं चाह कात्यायनः ) नि  
 र्वर्त्य बृद्धितंत्रं तु मासिकानि न तंत्रयेत् ॥ अथातया संसरणां भवेत् पुनरस्य त्विति ॥  
 द्विरनुष्ठानं चोत्तरेयामेव न पूर्वेषां स्वस्वकालकृतानाम् ( तदाह माधवीये कायार्जि  
 निः ) अर्वागद्वादशवयवसपिण्डीकरणांकृतम् । तदूर्ध्वमासिकानां स्याद्यथाकाल  
 मनुष्ठितिः ( हेमाद्रौ शाक्यायनिः ) प्रेत आद्यानि शिष्टानि सपिण्डीकरणांतथा ।  
 अपक्ष्यापि कुर्वीत कर्तुं नादीमुखं द्विजः ( वृद्धिं विनापकर्ष्यं दोषमाहो ग्रानाः ) वृद्धि



आह्वयिहीनस्तु प्रेतश्चाह्वानियच्छरेत् सश्चाह्वीनरकेधोरे पितृभिः सह मज्जतीति  
 (आधानेपकर्ममाह्वेसाद्रावुशनाः ) पितुः सपिण्डीकरणां वार्यिके मृतिवासरे ।  
 आधानाद्युपसंप्राप्ता वेतत्प्रागपि वत्सरात् (विशेषस्तूक्तो विवाहनिर्णयेकरावः)  
 नवश्चाह्वमासिकं च यद्यदंतरितं भवेत् ॥ तत्तदुत्तरमातृज्या दनुष्येयं प्रचक्षते ( गारु  
 डेपि ) आपदाद्यकृतं यत्तु कुर्याद्दूर्ध्वमृताहनि ॥ अथ सपिण्डीकरणम् ( माध  
 वोयेहारीतः ) यातुपूर्वममावास्या मृताहादशमी भवेत् ॥ सपिण्डीकरणांतस्यां  
 कुर्यादेव सुतोऽग्निमान् ॥ मृताहादूर्ध्वदशमी सकादशीत्यर्थः ॥ सपिण्डीकरणां  
 कुर्यात्पिपूर्ववच्चाग्निमान्भुतः । परतो दशरात्राच्चेत्कुहूरुद्वे परेतर इति कात्या  
 ञ्जिनस्मृतैः ॥ आहिताग्नेस्तेन विनाशौ तपिंडपितृयज्ञासिद्धेः ( तदाह गालवः )  
 सपिंडीकरणात्प्रेते पैतृकं पदमास्थिते । आहिताग्नेः सिनीवाल्यां पितृयज्ञः प्रव  
 र्त्तते ( मदनरत्ने प्रजापतिः ) नासपिंड्याग्निमान् पुत्रः पितृयज्ञं समाचरेत् ( अपरा  
 र्ककात्यायनः ) एकादशाहं निर्वर्त्य पूर्वदशाद्यथाविधि । प्रकुर्वीतोऽग्निमान् विप्रो  
 मातापित्रोः सपिंडताम् । आशौचांतप्रथमदर्शयोर्मध्ये कस्मिंश्चिदह्नीत्यर्थः ॥  
 पित्रादीनां सपत्नीकानां देवतात्वेन मातुरपि प्राग्दशति सपिंडनं युक्तमित्यपरा र्कः ॥  
 सर्वपितामहादेरपि सपिंडनं प्राक्दशात्कार्यम् ॥ तेन विना पार्दगा यो गातद्वादशा  
 हेवाकार्यम् ॥ साग्निनस्तु यदा कर्त्ता प्रेतश्चानग्निमान् भवेत् । द्वादशाहे भवेत्का  
 र्यं सपिंडीकरणां सुतैरिति गोभिलोक्तेः ॥ साग्नेः प्रेतस्य तु त्रिपक्षे ॥ प्रेतश्चेदाहिता  
 ग्निः स्यात्कर्त्तानग्निन्यदा भवेत् । सपिंडीकरणांतस्य कुर्यात्पक्षे तृतीयक इति सुमंत  
 ऋतेः ( मदनरत्ने लघुहारीतोपि ) अनाग्निस्तु यदा वीर भवेत्कुर्यात्तदा गृही ॥ प्रेत  
 श्चेदाग्निमांस्तु स्यात्त्रिपक्षे वै सपिण्डनम् ॥ द्वयोः साग्निनत्वे द्वादशाहस्य साग्नि  
 नस्तु यदा कर्त्ता प्रेतो वाप्यग्निमान् भवेत् ॥ द्वादशाहे तदा कार्यं सपिंडीकरणां पितु  
 रितितेनैवोक्तेः ( द्वयोरनाग्निनत्वे तु भविष्ये ) सपिंडीकरणां कुर्याद्यजमानस्त्वन  
 ग्निमान् ॥ अनाहिताग्नेः प्रेतस्य पर्णोद्वेभरत्यम् ॥ द्वादशाहं निधरामासे त्रिपक्षे  
 वा त्रिमासि वा ॥ एकादशेऽपि वामासि मंगलस्याप्युपस्थितौ ( कात्यायनगोभिलौ )  
 यदहर्वावृद्धिरापद्यतेति वाचस्पतिः ॥ तन्न ॥ प्रातर्बृद्धिनिमित्तकमिति नियमात्

सपिंडनस्य चापराक्तकालीनत्वेन पूर्वत्वबाधापत्तेः ॥ वृद्धिदिनेतत्पूर्वदिनेचेति  
 श्रीदत्तः ( स्मार्तगौडास्तु ) वृद्धिपूर्ववर्षात्प्रचक्षणाः सपिंडनस्य प्रेतत्वनाशसह  
 कारी ॥ तेन परेद्युर्विघ्नाद्वृत्त्यभावेऽपि तत्कर्तव्यतानि प्रचयसहितमेव कालांतर  
 क्रियमाणा वृद्धिपूर्वक्षणासहकृतं प्रेतत्वनाशकमित्याह ॥ तन्न ॥ अकाले कृतस्य फला  
 जनकत्वात् ॥ एतेन निमित्तनिप्रचयवत एवाधिकाराद्वृत्त्यभावेऽपि न क्षतिरिति सि  
 श्रोक्तिः परास्ता ॥ वृद्धिपूर्वदिनस्य च कालस्यांगत्वेन निमित्तत्वाभावात्तेन पुनः  
 कार्यमित्यन्ये ( मदनरत्ने पुलस्त्यः ) निरग्निकः सपिंडत्वं पितुर्मतिप्रचयमर्तः ॥  
 पूर्णसंवत्सरे कुर्याद्वृद्धिर्व्यायदहर्भवेत् ( चतुर्विंशतिमते ) सपिण्डीकरणां  
 चाब्दे संपूर्णभ्युदयेऽपि वा । द्वादशाहेतुकेषां चिन्मतं चैकादशे तथा ( पृथ्वीच  
 न्द्रोदये बौधायनः ) अथ सपिण्डीकरणां त्रिपक्षे वा तृतीये वा मासि यद्येकैकादशे  
 वा द्वादशे वा द्वादशाहे चेति ( एतत्प्रक्रमे विष्णुः ) मासिकार्थं द्वादशाहं आहं  
 कृत्वा त्रयोदशे हि वा कुर्यात् नमंत्रवर्ज्यं हि शुद्राणां ॥ द्वादशे हि संवत्सराभ्यन्तरे य  
 दधिमासे भवेत्तदा मासिकार्थं दिनमेकैव धेयेदिति ॥ आशौचोत्तरं द्वादश  
 स्वहस्तमासिकानितेऽवेवाद्य यद्यद्वादशादिने युमासिकादीनि कृत्वा त्रयोदशे हि स  
 पिण्डनं कुर्यात् ॥ अधिमासे तु चतुर्दशे हि कुर्यात् ॥ शुद्धस्त्रयोदशे द्वादशे ह्येत  
 स्य मासिकां त्यदिनपरत्वादिति पृथ्वीचन्द्रः ( पैठीनसिः ) संवत्सरांते संसर्जनं  
 नवमे मासीत्येके ॥ अत्र सागनेरनगनेर्वोक्तकालाभावे त्रिपक्षादिसंवत्सरांतामनुक  
 ल्पाज्ञेयाः ॥ कल्पतरुस्त्वग्रे वृद्धिनिप्रचयस्य सर्वेष्वप्येकप्रकारा इत्याह ॥ तन्न ॥  
 यदहर्चैति स्वातंत्र्यश्रुतेः ॥ यद्यपि वृद्धिनिमित्तोप कर्षो निरगनेरेवोक्तस्तथापि  
 सागनावपि ज्ञेयः ॥ उक्तकालासंभवे वर्षातादिगौणाकालवद्द्वेऽपि प्राप्तेः ॥ व  
 द्यमाणा गोभिलवचनात् ॥ अथातया संसरां न भवेत्पुनरस्य त्वितदोयश्रुत्य विशेषे  
 याच्च ॥ अपरार्कपृथ्वीचंद्रादिस्वरसोप्येवम् ॥ अत्र वृद्धिपदं चूडोपनयनविवाह  
 मात्रपरम् ॥ सीमंतादौ तु वृद्धिश्चाद्वलोपसवेत्याचार्यचूडामणिः ॥ पुंसवनाद्यन्न  
 प्राशनांतेऽवावश्यकैवप्येकैति आह विवेकः ( श्रुतिसागरेऽपि बृहस्पतिः ) प्र  
 त्यवाये भवेद्यस्मिन्नकृते वृद्धिकर्मणि । तन्निमित्तं समाह्वय्यपि त्रयोः कुर्यात्सपिंड



नम ॥ गर्भाधानस्यत्वंतरेपिसंभवात् ॥ अन्यथाद्वंपराचंचगंधमालयंचमैथुनमि  
तिदेवलेनप्रथमाब्देमैथुननियेधाचनतत्रापकर्षइतिश्राद्धकौमुद्यादयस्तच्च ॥ ऋ  
तुस्नातांतुयोभार्यामितिनिधेधाद्व्रह्मचार्येवपर्वारियाद्यश्चतस्रश्च वर्जयेदिति  
मैथुनेदोषाभावाच्चपितामहसरणोपौत्रस्यवृद्धौनापकर्षः ॥ तस्यमहागुरुत्वाभावा  
त् ॥ तत्रतदूर्ध्वेभ्योवृद्धिश्राद्धमितिश्राद्धचंद्रिका ॥ तन्न ॥ भ्राताचेत्यादौतदभावे  
प्यपकर्षोक्तेः ॥ तेननिर्देशोप्युपलक्षणात् (व्याघ्रः) आनंत्यात्कुलधर्माणांपुं  
सांचैवायुयःक्षयात् । अस्थितेष्वशरीरस्यद्वादशाहःप्रशस्यते ॥ एतदशौचांतो  
पलक्षणात् ॥ सर्वेयामेववर्णानामाशौचांतिसंपिंडनमितिनिर्णयामृतेकात्यायनो  
क्तेः ॥ सर्वेयामितित्रैवर्णाकपरम् ॥ शूद्राणांत्वाशौचमध्ये ॥ संवज्र्यहशूद्रा  
णांद्वादशेहनिर्कीर्तितमितिबिष्णुक्तेः ॥ एतद्वर्णश्राद्धकारिशूद्रविषयमित्य  
परार्ककल्पतरौच (वृद्धमनुः) द्वादशेहनिर्विप्राणामाशौचांतितुभुजात् । वै  
श्यानांतुविपक्षादावथवास्यात्सपिण्डनम् (निर्णयामृतेगोभिलः) द्वादशाहा  
दिकालेषु प्रमादादननुष्ठितम् । सपिण्डीकरणांकुर्यात् कालेषुत्तरभाविष्यु ॥ इदं  
साग्नेरक्तकालासम्भवेगौणाकालाविधानार्थमितिमदनपारिजातः ॥ मदनरत्ने  
प्येवम् (ऋष्यशृङ्गः) सपिण्डीकरणांश्राद्ध मुक्तकालेनचेत्कृतम् । रौद्रेहस्तेचरो  
हिगायां मैत्रमेवासमाचरेत् (कालादर्शपि) एकादशेद्वादशेह्नि विपक्षेवाविमा  
सिवा । यद्येचैकादशेवाब्दे सम्पूर्णावाशुभागमे ॥ सपिण्डीकरणास्येत्यमष्टौका  
लाःप्रकीर्तिताः । साग्नौकर्तयुभावाद्यौ प्रेतेसाग्नौतृतीयकः ॥ अनग्नेस्तुद्विती  
याद्यः सप्तकालामुनोरिताः । रोहिणीरौद्रहस्तेषु मैत्रमेवापितचरेत् (नारदसं  
हितायांतु) सपिण्डीकरणांकार्यं वत्सरेवार्धवत्सरे । विमासेवाविपक्षेवासासि  
वाद्वादशेह्वेत्युक्तम् ॥ वत्सरेतीतेपिज्ञेयम् ॥ ततःसपिण्डीकरणांवत्सरात्पर  
तःस्थितमितिभविष्योक्तेः ॥ पितुःसपिण्डीकरणांवत्सरादूर्ध्वतःस्थितमितिना  
गरखण्डोक्तेः ॥ पितुःसपिण्डीकरणांवार्धिकेमृतवासरेइत्युग्रनसाक्तेश्च ॥  
पूर्वोसंवत्सरेपिण्डः षोडशःपरिकीर्तितः । तेनैवचसपिण्डत्वं तेनैवाब्दिकमि  
ष्यतइतिहेमाद्रौवचनाच्च ॥ अस्यानाकरत्वोक्तिर्मूर्खोक्तिरेव (यत्तु) पूर्वोसंवत्सरे

कुर्यात् सपिण्डीकरणांतुतः । सकोद्विष्टं च तत्रैव मृताहनि समापयेदिति धवलनि  
बन्धे जाबाल्युक्तेः ॥ पुत्रः सपिण्डनं कृत्वा कुर्यात्स्नानं सचैलकम् । सकोद्विष्टं ततः  
कुर्यात् कुतपनविचारयेदिति स्वल्पमात्स्योक्ते प्रचाब्दिकं तद्दिने पुनः कार्यमि  
तिकोचितं ॥ तेनिर्मूलत्वाच्चेमाद्रिविरोधाचोपेक्षयाः ॥ योडशत्वञ्च सपिण्डन  
स्य योडशश्राद्धान्तर्भावपक्षे ॥ स्मृत्यर्थसारे तु वर्यात्यदिने संवत्सरविमोक्षश्राद्धं स  
पिण्डनं च कृत्वा परेद्युर्मृताहेवार्थिकं कार्यमित्युक्तम् ॥ गौडाग्रयेवमाहुः ॥ तत्पू  
र्वविरोधाच्चिन्त्यम् ॥ तच्च पुनरेव सति नान्यः कुर्यात् ॥ श्राद्धानियोडशादत्वा न तु कु  
र्यात्सपिण्डताम् । प्रोयितावसिते पुत्रः कालादपि चिरादपीति वायवीयोक्तेः ॥  
योडशश्राद्धानां वर्षादूर्ध्वकालाभावेऽपि तान्यदत्वान् कुर्व्यात् ॥ किन्तु दत्तवैव ॥  
नित्यादिकानि सुभ्रात्रादिना कृतानि तदा सपिण्डनमेव कुर्यादित्यपरार्कः ॥ सपि  
ण्डने तु कनिष्ठानां नैवाधिकार इत्यर्थः ( तत्रैव ) अज्ञानादयवामोहान्न कृता चेत् स  
पिण्डता । तत्रापि विधिवत् कार्या कालादपि चिरादपि ॥ तेऽवपि ज्येष्ठस्यैवा  
धिकारः ॥ ज्येष्ठेन जातमात्रेण पुत्री भवति मानव इति मनुक्तेः ( अपरार्कप्रचेता  
अपि ) सकादशाद्याः क्रमशो ज्येष्ठस्तु विधिवत् क्रियाः । कुर्यान्नैकैकशः श्राद्धमा  
ब्दिकं तु पृथक् पृथक् ( मरीचिः ) सर्वेषां तु मत्तं कृत्वा ज्येष्ठेनैव तु यत्कृतम् । द्रव्ये  
णावा विभक्तेन सर्वैरेव कृतम् भवेत् ॥ यत्तु वाचस्पतिशूलपाणिभ्यामुक्तं द्रव्यदा  
नानुसृत्य भावे कनिष्ठैः पृथक् कार्यमिति ॥ तन्न ॥ एवकारस्य तदभावेऽपि पृथक्करणा  
भावात्त्यत्वात् ॥ अन्धादेरिव ज्येष्ठे सति कनिष्ठानामनाधिकाराच्च ॥ अतस्तेषां प्र  
त्यवायमात्रम् ॥ आहिताग्निः कनिष्ठस्तु कुर्यादेव ॥ अन्यथापि त्वयज्ञासिद्धेः ॥  
एवमावश्यकवृद्धावपि कनिष्ठोऽन्यः सपिण्डो वा कुर्यात् ॥ भ्रातावाभ्रातृपुत्रो वा स  
पिण्डः शिष्य एव च ॥ सहपिण्डक्रियां कृत्वा कुर्यादभ्युदयन्ततः । तथैव काम्यं  
यत्कर्म वत्सरात्प्रथमाहुते इति मदनरत्ने लघुहारीतवचनात् ॥ वृत्त्यनन्तरं प्रथ  
माहदमध्योपिकाम्यं कुर्यात् ॥ वृत्त्यभावे तु प्रथमाहदादूर्ध्वमेवेत्यर्थः ॥ काम्योक्ते  
रनावश्यक इष्टापत्तौ नापकर्षः ॥ एतद्भ्रातृपुत्रादिसंस्कारे प्राप्ताधिकारस्य नां  
दीश्राद्धाधिकार इत्यस्य ॥ अभ्युदयपदं च नां दीश्राद्धनिमित्तकर्ममात्रपरमिति हे



माद्रिः ॥ तेन ज्येष्ठे देशांतरस्थे कनिष्ठः सपिण्डनं विनैव वृद्धिं कृत्वा पुत्रसंस्कारं कुर्यादिति श्रीदत्तोक्तिः परास्ता ॥ भ्रातृशिष्याद्युक्तेनान्दीयाद्वेज्यदेवतामात्रपरा प्रकर्ष इत्यपास्तम् ॥ अस्य क्रममात्रपरत्वाद् वृद्धिर्नैव सपिण्डनं कुर्यादिति न नियम इति गौडाः ॥ अतएव कन्याया मातृमरणो भ्रात्रा सपिण्डने कृते पितुर्नाधिकारः (शल पाणिस्तु) महाशूरौ प्रेतभते वृद्धिर्कर्मनयुज्यत इति नियेधात् ॥ मृतस्य भ्रात्रादिः सपिण्डनं कृत्वा तत्पुत्रकन्यादेरभ्युदयं कुर्यान्न तु स्वपुत्रसंस्कारे संस्कार्यपि तु सपिण्डनं विना वृद्धौ देवतात्वाभावादित्याह ॥ तन्न ॥ विदेशस्थेन ज्येष्ठेन पुनः कार्यम् ॥ यवीयसा कृतं कर्म प्रेतशब्दं विहाय तु । तज्याय सापि कर्तव्यं सपिण्डीकरणां पुनरिति स्मृतेः ॥ ज्येष्ठेन वा कनिष्ठेन सपिण्डीकरणो कृते । आद्यपादे सा तापित्रोः कनिष्ठेनेति वा पाठः ॥ देशान्तरगतानां च पुत्राणां तु कथं भवेत् । श्रुत्वा तु वपनं कार्यं दशाहान्तं तिलोदकम् ॥ ततः सपिण्डीकरणां कुर्यादेकादशे हनि । द्वादशाहेन कर्तव्यमिति शातातपो ब्रवीदिति वचनाच्चेति भट्टाः ॥ सिंगाभट्टीयेष्वेवम् ॥ पूर्ववचने च सलं चिन्त्यम् ॥ स्मृत्यर्थसारे तु विभक्ता ऋद्धिकामाश्चेत्पुत्राः पृथक् सपिण्डीकरणां कुर्युरित्युक्तम् ॥ अत्र दत्तकस्य तत्पुत्रादीनां विशेषः प्रागुक्तः ॥ केचित्तु वृद्धिं विनापि कनिष्ठस्य सपिण्डनमाहुः ॥ मातापित्रोर्मृते काले ज्येष्ठे देशांतरस्थिते । कनिष्ठेन प्रकर्तव्यं सपिण्डीकरणांतर्धेति काष्ठाजिनि स्मृतेः ॥ गते वारो धिते ज्येष्ठे पित्रा वा प्रेषिते सति । यरा मासाश्च निवर्तेत तदा कार्यं कनीयसा (संवर्तः) पुनः सपिण्डीकरणां आद्यं पार्वणावचरेत् । अर्घ्यसंयोजनं नैव पिण्डसंयोजनं नर्चेति ॥ तेषां वचसां निर्मलत्वात् ॥ प्रेषिता वसिते पुत्र इत्यादि विरोधाच्चोपेक्ष्याः (व्युत्क्रममृती तु हेमाद्रौ ब्राह्मणे) मृते पितरियस्याथ विद्यन्ते च पितामहाः । तेन देयास्त्रयः पिण्डाः प्रपितामहपूर्वकाः ॥ तेभ्यश्च पैतृकः पिण्डो नियोज्यस्तु पूर्ववत् । मातर्यथ मृतायां च विद्यते च पितामही ॥ प्रपितामही पूर्वस्तु कार्यस्तत्राप्ययं विधिः ॥ एवं प्रपितामहजीवने तत्पित्रादिभिर्ज्ञेयम् (तदा ह्यमुमन्तुः) प्रयाणामपि पिण्डानां मेकेनापि सपिण्डने । पितृत्वमप्यनुते प्रेत इति धर्माद्यवस्थितः (यत्तु) व्युत्क्रमात्तु प्रसीतानां नैव कार्या सपिण्डनेति तन्मोतापितृ

भर्तृभिन्नविषयस ॥ व्युत्क्रमेणामृतानांनसपिंडीकृतिरिठ्यते । यदिमातायदि  
पिताभतनैयविधिः स्मृत इतिमाधवीयेस्कांदोक्तेः ॥ मदनरत्नादौचैवस ॥  
अत्रप्रपितामहादिभिः पितुःसपिंडनेकृतेपितामहेमृतेतत्सपिंडनेसतिपुनस्तेनस  
हपितुःसपिंडनकार्यमितिहेमाद्रिमतमाह ॥ अन्येनैवतन्मन्यंते ॥ तत्त्वंतुपितुः  
सपिंडनाभावेपितामहेनसहपुनःकार्यंनतत्सत्त्वे ॥ त्रयाणांसपिपिंडानामेकेनापि  
सपिंडने । पितृत्वमश्रुतेप्रेतइतिधर्मोव्यवस्थितइतिविष्णाधर्मोक्तेः ॥ पितामहे  
प्रपितामहेवापुत्रांतरैरसंस्कृतेप्यसंस्कृताभ्यामेवपितुःसपिंडनंकुर्यात् ॥ असंस्कृ  
तौनसंस्कार्यौपूर्वौपौत्रप्रपौत्रकौ ॥ पितरंतत्रसंस्कुर्यादितिकात्यायनोब्रवीदि  
तिछंदोगपरिशिष्टात् ॥ असंस्कृतौदाहाद्येतिरितिकेचित् ॥ असपिंडीकृतावितितु  
तत्त्वं ॥ अतएवोक्तंतत्रैव ॥ पापिष्ठमपिशुद्धेनशुद्धपापकृतापिवा । पितामहेन  
पितरंसंस्कुर्यादितिनिश्चयः ॥ पापिष्ठमकृतसपिंडनंतुपतितादि । अभिशस्त  
पतितभूराद्यन । स्त्रियश्चातिचारिणीनसंसृजेदितिबैजवापोक्तेः ॥ पापकर्मि  
णोनसंसृजेरन्नितिगौतमोक्तेश्चेत्युक्तंनिरायासमृते ॥ पूर्वयोःपुत्रभावेतुपौत्रः  
कुर्यादेव ॥ पितामहःपितुःपश्चात्पंचत्वंयदिगच्छति । पौत्रैरौकादशाहादिक  
तव्यंश्राद्धयोडशम ॥ नैतत्पौत्रेणकर्तव्यंपुत्रवांश्चेत्पितामहः । पितुःसपिण्डतां  
कृत्वाकुर्यान्मासानुमासिकमितिकात्यायनोक्तेः ॥ अपरार्केशूलपाणौचैवस ॥  
तेनसपिण्डनस्यानित्यत्वादकृत सपिण्डनयोरेवपार्वणानुप्रवेशइतिसर्वाक्तिः प  
रास्ता ॥ कृतेसपिण्डीकरणेप्रेतःपार्वणाभाभवेदितिहारीतविरोधीच ॥ केचि  
त्पुत्रांतराभावेपितामहवार्षिकमग्न्याहुस्तन्न ॥ श्राद्धयोडशमितिनियमात् ॥ इ  
च्छयाभवत्येव ॥ पितामहस्यचेदद्यादे कोद्विष्टंनपार्वणामितिवाचस्पतिधृतराशौ  
क्तेः ॥ त्रयाणांयौगपद्येतुप्राधान्यात्पितुःसपिण्डनंकृत्वापूर्वयोःकुर्यात् ॥ पि  
तामहेमृतेदशाहंतःपितुर्मृतौपितुःसंस्कारंकृत्वापितामहस्यपुनःसर्वमावर्तयेत् ।  
वृत्तेदशाहेनैव ॥ अशक्त्यापित्रानुज्ञातेनपौत्रेणपितामह श्राद्धेप्रक्रांतेपितृमृतौत  
दाशौचंवहन्नेवपौत्रःपितामहकर्मकुर्यात्प्रक्रांतत्वादितिमदनपारिजातपृथ्वीचं  
द्रौ (यत्तु)उत्तरात्रितयरीद्ररोहिणीयान्यसर्पपितृभेषुचारिणभे । प्रमश्रुकर्मसक



लंचवर्जयेत्प्रेतकार्यमपिबुद्धिमान्नरइति सपिण्डनप्रकरणोपाठान्मुख्यकालेनि  
 यिद्धर्सेसपिण्डनापकरणः ॥ सर्वकालेषुतद्वत्वेतद्वर्ज्यान्येव ॥ पूर्वोक्तब्राह्मोक्ता  
 नियोडशआद्यानिकार्याणीतिवाचस्यतिमिश्रास्तन्न ॥ अस्यपरिभाषात्वेनवा  
 क्वात्सावकाशकर्मपरत्वात् ॥ अस्यप्रेतमात्रदेवत्यभावाच्च (अथस्त्रीयचते । हेमा  
 द्रौबृहस्पतिः) भर्तृगोत्रेणानाम्नाचमातुःकुर्यात्सपिण्डनम् (यत्तुभविष्ये)पितृगो  
 त्रंसमुत्सृज्यनकुर्याद्वर्तृगोत्रतइतिसदासुरादिविवाहेऽप्यपरम् ॥ आसुरादिविवाहे  
 युपितृगोत्रेणाधर्मविदितिवृद्धशातातपोक्तेः ॥ तच्चानेकवचनेयुपितामह्यापत्या  
 मातामहेनवासहोक्तम् (तत्रव्यवस्थोक्ताभविष्ये) जीवत्पितापितामह्यामातुःकु  
 र्यात्सपिण्डनम् । प्रसीतपितृकःपित्रातत्पित्रापुत्रिकासुतः ॥ तत्पित्रामातुःपित्रा  
 (लौगाक्षिः) पितामह्यादिभिःसार्द्धमातरंतुसपिण्डयेत् । पितरिधियमागोतुते  
 नैवोपरतेसति (शंखः)मातुःसपिण्डीकरणांकथंकार्यंभवेत्सतैः । पितामह्यादि  
 भिःसार्द्धसपिण्डीकरणांस्मृतस्येनकेनापिमातुःसपिण्डयेत् ॥ यत्रान्वष्टकादीना  
 तुःआद्यंपृथगुक्तंतत्रापितामह्यासहकार्यम् ॥ नांदीमुखेऽष्टकायाद्वेगयायांचमृते  
 २हनि ॥ पितामह्यादिभिःसार्द्धमातुःआद्यंसमाचरेदितिशातातपोक्तेः (अपुत्रा  
 यांतुपैठीनसिः)अपुत्रायांमृतायांतुपतिःकुर्यात्सपिण्डनम् । अथवादिभिःसहैवा  
 स्याःसपिण्डीकरणांभवेत्(यत्तुलघुहारीतः)पुत्रैर्गौवतुकर्तव्यंसपिण्डीकरणांस्त्रि  
 याः । पुरुषस्यपुत्ररत्नन्येभ्रातृपुत्रादयोऽपिप्रे इति(यच्चमार्कंडेयपुराणे)सपिण्डी  
 करणांस्त्रीणांपुत्राभावेनविद्यतइति ॥ तत्पुत्रपत्यभावेज्ञेयम् ॥ अत्रसपत्नीपुत्रोपि  
 ज्ञेयः ॥ बह्वीनामेकपत्नीनामेकाचेत्पुत्रिणीभवेत् । सर्वास्तास्तेनपुत्रेणाप्राहपुत्र  
 वतीर्मनुरितिमनकतेरेतत्परत्वात् (यत्तु शातातपः) मृतेपितरिमातुस्तुनकार्यासि  
 हपिण्डता । पितुरैवसपिण्डत्वेतस्याअपिपुत्रतंभवेदितितदशक्तपरम् ॥ केयांचिद्वा  
 मर्तमितिहेमार्द्रः ॥ अन्वारोहगोतुभवेत्सपिण्डयम् ॥ मृतायानुगतानाथंसातेन  
 सहपिण्डताम् । अर्हतिस्वर्गवासंचयावदाभूतसंज्ञवमितिशातातपोक्तेः ॥ पत्याच्चै  
 केनकर्तव्यंसपिण्डीकरणांस्त्रियाः । सामृतापिहितेनैक्यंगतामंत्राहुतिव्रतैरितिय  
 मोक्तेष्वच ॥ अत्रैकशब्दःपितामह्यादिपञ्चनिवृत्त्यर्थः ॥ पतिपदवर्गपरम् ॥

संपिंडनस्य पार्वणौ को द्विष्टरूपत्वादिति साधवकल्पतरुमदनरत्नादयः ॥ अन्येतु  
भवे वैकेनाहुः ॥ स्वेन भवसि हैवास्या संपिंडीकरणां भवेदित्येवकारश्च वगात् ॥ पृ  
थ्वीचंद्रोदयोपिविकल्पउक्तः ॥ इदंतु तत्त्वम् ॥ यदा हेमाद्यादिमते द्वयोरेकः पिंड  
स्तदा वर्गो ग्रासहः ॥ यदा साधवपृथ्वीचंद्रादिमते पृथक् पिंडस्तदैकेन पत्यैकवचना  
चैकेनापि ॥ अतो मातृपिंडमसंपिंडीकृते नैव पतिपिंडेन संयोज्यैकीकृतं पिंडद्वयं त  
त्पित्रादिभिः संयोजयेत् ॥ अंत्यपक्षस्य युक्तः (स्मृत्यर्थसारे तु) अन्वारो हरो नैक  
दिनमरगोस्त्रियाः पृथक् संपिंडनं नास्ति ॥ भर्तुः कृते स्त्रिया अपि कृतं भवतीत्युक्तम् ॥  
तन्मतांतरमस्तु ॥ इदं ब्रह्मादिविवाहे युज्येत (आसुरादियुतुशातातपः) तन्मा  
त्रातत्पितामह्यातच्छ्वसं च पिंडनम् । आसुरादिविवाहे युविज्ञानां योयितां  
भवेत् ॥ मातामह्यामातुः पितामह्यातत्प्रपितामह्याचेत्यर्थः (सुमंतुः) पिता  
पितामहे योज्यः पूर्णो संवत्सरे सुतैः । मातामातामहेतद्वदित्याह भगवान् शिवः ॥ इ  
दमासुरादिपरं पुत्रिकापुत्रपरं चोक्तं प्राक् ॥ हेमाद्रिस्तु ब्राह्मादिष्वपि सर्वत्र देश  
भेदाद्विकल्पमाह । अतो गुर्जरे युको किलमतानुसारिणां मातृमातामहप्रमाताम  
हा इति आह प्रयोगसंपिंडनं च दृश्यते (हेमाद्रावापस्तंबोपि) को किलस्य यथा  
पुत्रा अन्यसंचयजीविनः । पुष्टास्ते स्वकुलं यांति एवं नारीमृतासती ॥ यदापि विज्ञा  
ने पुत्रो मातामहेन मातुः संपिंड्येन पितृश्राद्धवन्मातृश्राद्धं नित्यमित्याह (यच्च वृ  
द्धिश्राद्धे छंदोगपरिशिष्टम्) यद्भ्यः पितृभ्यस्तदनुश्राद्धदानमुपक्रमेदिति तदेतद्वि  
षयमेव ॥ मातुः पृथक् श्राद्धाभावात् (अतएव हेमाद्रौ भविष्ये ॥ मातुः संपिंडनं प्र  
क्रम्य) उदितेनुदिते चैव हेमभेदो यथा भवेत् । तथा कुलक्रमायातमाचारं च चरे  
हुध इत्युक्तम् ॥ अस्य वृद्धावपवादमाह तत्रैव व्याघ्रपातः ॥ कुर्यान्मातामहश्राद्धं सर्व  
दामातृपूर्वकम् । विधित्तो विधिमास्याय वृद्धो मातामहादिवत् ॥ केचिदेतत्पुत्रि  
कापुत्रपरमाहुः (पत्युः संपिंड्यमाह लौगाक्षिः) सर्वाभावे स्त्रयं पत्न्यः स्वभर्तु  
गामसं व्रकम् । संपिंडीकरणां कुर्युस्ततः पार्वणमेव चेति (यत्तु वचनं) अपुत्रस्य परेत  
स्य नैव कुर्यात्संपिंडतामिति (यच्चापस्तंबः) अपुत्राये मृता केचित्तपुरुषावास्त्रि  
योपिवा । तेषां संपिंडनाभावादेको द्विष्टनपार्वणां मिति ॥ तत्पुत्रोत्पादनविधिप्र



शंसार्थमितिमाधवः ॥ सपिंडीकरणादूर्ध्वमेकोद्दिष्टं विधीयते । अपुत्राणां च स  
 र्वेषां सपत्नीनां तथैव चेति हेमाद्रौ प्रचेतसेवतेषु च ॥ अन्येतु द्विविधवाक्यदर्शना  
 द्विकल्पमाहुः ( स्मृत्यर्थसारेपि ) ब्रह्मचारिणामनपत्यानां च सपिंडनं नास्ति ते  
 षां सदैकोद्दिष्टमेव ॥ व्युत्क्रममृतानां सापिंड्यं कार्यं न वा ॥ केचित्सर्वत्र सपिंडनमाहु  
 रिति ॥ अपुत्रे व्युत्क्रममृते विशेषो रेणुकारिकायां ॥ भ्रातावाभ्रातृपुत्रो वा स  
 पिंडः शिष्यसववा ॥ सपिंडीकरणां कुर्यात्पुत्रहीने मृते सति ॥ सर्वबंधुविहीनस्य प  
 त्नी कुर्यात्सपिंडताम् ॥ ऋत्विजं कारयेद्वापि पुरोहितमथापि वा । वसुरुद्रादिति  
 सुतैः कार्यातिषां सपिंडता । व्युत्क्रमाच्च प्रसीतायेतद्विना प्रेततां ध्रुवम् ॥ पुनः सपिं  
 डनं तेषां कुर्यात्प्रेते पितामह इति ॥ अत्र मलं मृगयम् ॥ यतीनां सपिंडनं नास्ति किंत्वे  
 कादशे द्विपार्वणां कार्यम् ॥ तदपि त्रिदंडिनः ॥ एकदंड्यादीनां तदपि नेत्युक्तं प्राक्  
 दंडग्रहणात्पूर्वमृते तु दाहादिसपिंडनांतं सर्वकार्यमिति भट्टचरणाः ( सपिंडनवि  
 धिमाह वैजवापः ) समाप्ते संवत्सरे च त्वार्युदपात्राणां प्रयुनक्त्येकं प्रेतायत्रोणापि  
 तृभ्यः प्रेतपात्रं पितृपात्रेष्ठवासिंचतिये समाना इति ॥ द्वाभ्यामेवं पिंडोऽथाभिमृश  
 ति ॥ स्यवोनुगतः प्रेतः पितरस्तंददामिवः । शिवं भवतु शेषाणां जायंतां चिरजी  
 विनः ॥ समानीवः संगच्छध्वं संवदध्वमिति ( यद्यपि ) तच्चापि देवरहितमेका  
 ध्यैकप्रवित्रकम् । नैवाग्नौ करणांतत्र तच्चावाहनवर्जितमिति मार्कंडेयेनोक्तं तथा  
 पिसपिंडीकरणां आहं देवपूर्वनियोजयेदित्यादिविरोधाद्विकल्पः प्रेतांशे वा ज्ञेयं ॥  
 अत्र कामकालौ वैश्वदेवावपीत्युक्तं प्राक् ( मैत्रायणीयपरिशिष्टे ) पित्र्यविप्र  
 करे होमः सारनेरपि भवेदिह ( यत्तु गोभिलः ) अनुक्तकालेष्वपि तु व्युत्क्रमेण मृ  
 तावपि । अमेनवापि सापिंड्यं हेम्नावापि प्रकल्पयेदिति तदायदिमाता  
 पितृभिन्नपरम् ॥ आपन्नोपिन कुर्वीत आहं मामेन कर्हि चिदितिते नैवोक्तेः ॥  
 ( शुद्धितत्त्वकाम धेनौ चलघुहारीतः ) सपिण्डीकरणां यावत्प्रेतश्चाहं तु यो  
 डशम् । पक्वान्नेनैव कर्तव्यं सामिषेणाद्विजातिभिः ( विप्रवप्रकाशे ) प्रेतः सपि  
 ण्डनादूर्ध्वपितृलोके नुगच्छति । कुर्यात्तस्य तु पाथेयं द्वितीये द्विसपिण्डनात् ॥  
 स्मृत्यर्थसारेप्येवम् ॥ ततो वृद्धिश्चाहं कुर्यात् ॥ सतन्मलमासेपि कार्यम् ॥ अधि

मासेनकर्तव्यं श्राद्धमाभ्युदयंतथातथैवकाम्यंयत्कर्मवत्सरात्प्रथमाहुतइतिहेमा  
द्रौहारीतोक्तेः ॥

इति भट्टकमलाकरकृतेनिर्णयसिन्धौसपिंडीकरणम् ॥

(अथप्रथमाह्नेनिर्णयिद्धानिहेमाद्रौ) स्नानंचैवमहादानंस्वाध्यायंचाग्नितर्पणा  
म् । प्रथमेह्नेनकुर्वीतमहाशुरुनिपातने ॥ अग्नितर्पणालक्षणेमादि ॥ नत्वाधान  
म् ॥ तत्तुप्रथमाह्नेभवत्येव ( तदाहहेमाद्रावुशनाः ) पितुःसपिंडीकरणावधि  
केसृतवासरे । आधानाद्युपसंप्राप्तावेतत्प्रागपिवत्सरात् ॥ अन्यतर्पणमितिशु  
द्धितत्त्वेपाठः ॥ आदिपदं वृद्धिनिमित्तनित्यकर्मपरम् ( दिवोदासीये ) महा  
तीर्थस्यगमनमुपवासव्रतानिच । संवत्सरनकुर्वीतमहाशुरुनिपातने ॥ इदंश्राद्धकौ  
मुद्यांदेवीपुराणास्थमुक्तम् ( गौडनिबन्धेमात्स्ये ) सपिण्डीकरणादूर्ध्वप्रेतःपार्व  
णाभुम्भवेत् । वृद्धीष्टापूर्तयोग्यश्चगृहस्थश्चसदाभवेत् ॥ वर्धातसपिण्डनाभावेना  
धिकारीत्यर्थः ॥ गृहस्थःसपिण्डीपीत्यर्थःअतएवप्रेतकर्मागयनिर्वर्त्यचरेन्नाभ्यु  
दयक्रियाम् । आचतुर्थततःपुंसिपञ्चमेशुभदंभवेदितिज्योतिषेउक्तम् ( माधवी  
येदेवलः ) प्रसीतौपितरौयस्यदेहस्तस्याशुचिर्भवेत् । नदेवंनापिवापिज्यंयाव  
त्पूर्णांनवत्सरः ॥ इदंवर्धातसपिण्डनपरम् ॥ तथैवकाम्यंयत्कर्मवत्सरात्प्रथमाहु  
तइतिधुहारीताद्येकवाक्यत्वात् ॥ वृद्धिनिमित्तापकर्षेतुकाम्यादिभवत्येवेतिगौ  
डाः ॥ पिज्यंसपिण्डनम् ( अतएवलौगाक्षिः ) अन्येषांप्रेतकार्याणिमहाशुरुनि  
पातने । कुर्यात्संवत्सरादूर्वाक्श्राद्धमेकंतुवर्जयेत् । दाहाद्येकावशाहंतंकार्यम्  
तत्राशौचांतरस्याप्रतिबन्धकत्वात् ॥ आद्यंश्राद्धमशुद्धोपि कुर्यादेकादशेहनीत्यु  
क्तेश्च । एकंसपिण्डनम् ( पत्न्यादौत्वपवादमाहमाधवीयेऋष्यशृङ्गः ) पत्न्याः  
पुत्रस्तत्पुत्रश्चाप्युक्तस्तनयेयुश्च । स्नुयांस्वस्रोश्चपित्रोश्च संघातमरणांयदि ॥  
अर्वागिह्नान्माहपितृपुत्रसपिण्डयमाचरेत् ( लौगाक्षिः ) पत्नीपुत्रस्तथापौत्रोभ्रा  
तातत्पुत्रकाअपि । पितरौचयदैकस्मिन्नत्रियेरन्वासरेतदा ॥ आद्यमेकादशेकु  
र्यात्त्रिपक्षेतुसपिण्डनम् ( धवलनिबन्धे ) महाशुरुनिपातेतुप्रेतकार्यंयथाविधि ।



कुर्यात्संवत्सरादवांगिकोद्दिष्टं न पार्वणम् ( भृशः ) माता चैव तथा भ्राता भार्या पुत्र  
 स्तथा स्नुषा । स्यामृतौ चरेच्छाद्वमन्यस्य न पुनः पितुः ॥ एतदपि संपिंडनपरम्  
 पितुर्मृतावन्यस्य आद्वं चरेदित्यर्थः ( शुद्धितत्त्वे देवलः ) अन्य आद्वं परान्नं च  
 गंधमाल्यं च सैथुनम् । वर्जयेद्गुरुपाते तु यावत्पुण्यं न वत्सरः ( पारस्करभाष्ये वृह  
 स्पतिः ) पितर्युपरते पुत्रो मातुः आद्वान्निवर्तते । मातर्यपि च वृत्तायां पितृ आद्व  
 दृते समम् ॥ समपितरं विना अन्य आद्वं नेत्यर्थः ( शुद्धितत्त्वे देवलः ) महागुरुनिपा  
 ते तु काम्या किंचिन्न चाचरेत् । आर्त्विज्यं ब्रह्म चर्यं च आद्वं देवक्रियां तथा ॥ एतत्स  
 पिंडनात्प्रागितिकेचित् ॥ तदुत्तरमपीत्यन्ये ( आद्वकौमुद्यां कालिकापुराणोप  
 वर्धि ) विशेषतः शिवपूजां प्रसीतपितृको नरः । यावद्वत्सरपर्यंतं मनसा पिनचा  
 चरेत् ( केचित्तु ) पित्रोरब्दमशौचं स्यात्परासां मातुरेव च । त्रैमासिकं तु भा  
 र्यायास्तदध्वं भ्रातृपुत्रयोरिति स्मृतेः ॥ सपत्नमातुरब्दार्धमाहुः ( आद्वकौमुदीकार  
 स्तु ) इयोरैव महागुरोरब्दमेकमशौचकम् । नान्येभ्योऽधिकशौचं स्वजातिवि  
 हितात्कलेतिसमूलजातुकार्यविरोधाच्चिर्मूलमाह ( हेमाद्रौ भविष्ये ) गया आ  
 द्वं मृतानां तु पूर्णोत्सवप्रशस्यते ( त्रिस्थलीसेतौ गरुडे ) तीर्थ आद्वं गया आद्वं आद्व  
 मन्यच्चैतद्वत्कम् । अद्भ्यश्च न कुर्वीत महागुरुविपत्तियु ॥ इदं बृहत्संज्ञं संपिंडनाभा  
 वे ॥ ब्रह्मो संपिंडनापकर्षेऽद्भ्यश्चैपि दर्शादिकार्यमेव ॥ पितुः संपिंडनां कृत्वा  
 कुर्यान्मासानुमासिकमिति छंदोगपरिशिष्टात् ॥ संपिंडीकरणादूर्ध्वप्रेतः पार्व  
 णाभुवभवेदिति मात्स्यात् ॥ ततः प्रभृतिवैप्रेतः पितृसामान्यमश्नुते । विंदते पितृ  
 लोकं च ततः आद्वं प्रवर्तते इति हारीताच्चेति श्रुत्वा परिणामः ( यत्तु कातीयं ) संपिंडी  
 करणादूर्ध्वं न दद्यात्प्रतिमासिकम् । एकौद्दिष्टविधानेन दद्यादित्याह शौनकादिति  
 तत्रैकोद्दिष्टविधानात्तदद्यादित्यन्वयः ॥ सूर्यप्रादेजपार्वणो विकल्परुक्तः ( ब्रह्म  
 वैवर्त्ते ) उद्वाहश्चोपनयनं प्रथमेन्द्रे महीप्रते । कृते संपिंडनेऽप्यध्वमस्थनां चोद्भवां  
 त्यजेत् ॥ तथापि कर्तुमिच्छंति त्रीणि शौचानि वैमुताः । मासिकान्यवशिष्टानि च  
 पञ्चम्यचरेत्पुनः ॥ अत्रेदं तत्त्वम् ॥ ब्रह्मि विनावांगिपिसंपिंडनापकर्षे पितृत्वप्राप्ति  
 र्यथा तस्य ॥ कृते संपिंडी करणोत्तरं संवत्सरात्परं प्रेतदेहं परित्यज्य भोगदेहं प्रपद्यत

इतिविष्णुधर्मोक्तेः ॥ अर्वाक्संवत्सराद्यस्यसंपिंडीकरणांभवेत् । प्रेतत्वमपि त  
 स्यापि विज्ञेयंवत्सरं नृपेत्यग्निपुराणाच्च ॥ तेनतत्सत्त्वेपितृद्विदैवपित्र्येष्टवनधिका  
 रः ॥ बृद्धिनिमित्तेत्वनंतरमेव ॥ अर्वाक्संवत्सराद्द्वौपूर्वोसंवत्सरोपिवा । येस  
 पिंडीकृताःप्रेतानतेषांतुपृथक्क्रियेतिशातातपोक्तेः ॥ तथैवक्राम्यमितिहेमा  
 द्विभृतहारीतादिवशाच्चैवमिति ( तथा ) अस्थिसंपांयाश्चाद्वंश्चाद्वंचापरपक्षि  
 कम् । प्रथमेन्द्रेपिकुर्वीतयदिस्याद्वक्तिमान्भुतः ॥ भक्त्यारव्यंश्चाद्वंतद्वानितिस  
 दनपारिजातादयः ॥ अन्येयथाश्रुतमाहुः ( तत्त्वंतु ) यदीदंसमलंतदाबृद्धिंवि  
 नापकर्षेपूर्ववृद्धयर्थेतुपरमिति योज्यम् ( पतितानांगयायांविशेषोब्राह्म ) क्रि  
 यतेपतितानांचगतेसंवत्सरेक्वचित् । देशधर्मप्रमाणात्वाद्गयाश्चाद्वंस्त्वबंधुभिः ॥  
 अथविधानानानि ( तत्रपंचकमृतेमदनरत्नेगास्तडे ) आदौकृत्वाधनिसाध्व मेत  
 चक्षत्रपंचकम् । रेवत्यंतंसदादूष्यमशुभंदाहकर्मणि ॥ शवस्यतुसमीपेतुक्षेत्रव्या  
 पुत्तलास्तदा । दभमयथास्तुचत्वारश्चक्षमंत्राभिमंत्रिताः ॥ ततोदाहःप्रकर्तव्य  
 स्तैश्चपुत्तलकैःसह । सूतकांतिततःपुनैःकार्यशांतिकपौष्टिकम् । पंचकेषुमृतो  
 योवैनगांतिलभतेनरः ॥ तिलांश्चैवहिरण्यंच तमुद्दिश्ययृतंदहेत् ( क्रियानिवंधे )  
 भाजनोपानहौद्धवंहैममुद्रांचवासमी । दक्षिणादीयतेविप्रेसर्वपातकमोचनी ( म  
 दनरत्नेगार्ग्यः ) यदिभद्रातिथीनांस्याद्भानुभौमशनैश्चरैः । त्रिपादक्षैश्चसंयोगो  
 द्वयोयोगोद्विपुठकरः ॥ द्वित्रिपुठकरयोगेतुमृतिमृत्यंतरावहा । दहनेमरणोचै  
 वत्रिगुणांस्यात्त्रिपुठकरे ॥ खलनेप्येवमेवस्यादेतद्वोषोपशांतये । तिलपिष्टैर्यवैर्वा  
 पिशरीरंकारयेत्ततः ॥ शूर्पेनिवायालंकृत्य दाहयेत्पैतृकोपरि ( तद्दाहेसंत्रमा  
 ह्वौआयनः ) अस्मात्त्वमितिमंत्रेणा तिलपिष्टंप्रदाहयेत् । द्वित्रिपुठकरयोर्दोष  
 स्त्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति ॥ वासवेसरसांचेत्स्यात्तृहेवापिपुनर्मृतिः । सुवर्गाद  
 क्षिणांदद्यात्क्षणावस्त्रसंयापिवा ॥ दासबंधनिसा ( ब्राह्मे ) कुंभमीनस्थितेचंद्रे  
 सरसांयस्यजायते । नतस्योर्ध्वगतिर्दृष्टासंततौतशुभंभवेत् ॥ नतस्यदाहःकर्तव्यो  
 विनाशास्त्रेयुजंतुषु । अथवातद्दिनेकार्योदाहस्तुविधिपूर्वकम् ॥ धनिसापंचके  
 जीवोमृतोयदिकथंचन । त्रिपुठकरेयाम्यभेवाकृतजान्मारयेत्तद्वधम् ॥ तत्रानि



दृष्टिनाशार्थं विधानं समुदीर्यते । दर्भाणां प्रतिमाः कार्याः चोर्गासूत्रवेष्टिताः ॥ य  
 वपिष्टेनानुलिप्तास्ताभिः सह शवं दहेत् ॥ प्रेतवाहः प्रेतसखः प्रेतपः प्रेतभूमिपः । प्रेत  
 हर्ता पंचमस्तु नामान्येतानि च क्रमात् ॥ अत्र प्रतिमागंधपठपैः पूजयित्वा ॥ प्रथ  
 मां शिरसि । द्वितीयां नेत्रयोः । तृतीयां वामकुक्षौ । चतुर्थीं नाभौ । पंचमीं पादयो  
 र्न्यस्य तदुपरि नामभिर्घृतं हुत्वा । यमाय सेमं मय्यं वक्रमिति संवाभ्यां प्रत्येकं तां स्वा  
 ज्यं हुनेदिति भट्टाः ॥ सूतकान्ति ततः पुनः कुर्याच्छांतिकपौष्टिकम् । कांस्यपात्रस्थ  
 तं तैलं वीक्ष्यादद्याद्द्विजन्मने ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशैर्द्रव्यरूपा प्रीतये ततः । मायमुद्राय व  
 ब्रीहिप्रियंगवादिप्रयच्छति ॥ स्वर्गादानं रुद्रजाप्यं लक्षहोमो द्विजार्चनम् । गोभू  
 दानं यडं शेनकुर्याद्द्वयोपशांतये (अपरार्क) धनिष्ठा पंचकमृते पंचरत्नानि तन्मुखे ।  
 प्राप्रयाहुतित्रयं तत्र हुनेत्तद्वहवपासिति । ततो निर्हरां कुर्याद्द्वयोपशांतये विधिः स्मृ  
 तः । इतरं निखने देवजले वा प्रतिपादयेत् ॥ त्रिपादसंमृते तद्वद्विराजशकलं मुखे ।  
 तस्य पिष्टमयं कुर्यात्पुस्त्यत्रितयं ततः । होमः प्रतिमुखं कुर्यात्तथा वहवपासिति ॥  
 काष्ठायां संचकापसिं कुसुमं प्रतिपाद्य च । निर्यात्य सारिणं संस्कुर्याद्भुज्यग्रनौवान्य  
 मुत्सृजेत् (तत्रैव) कनकं हीरकं नीलं पञ्चरागं च मौक्तिकम् । पंचरत्नमिदं प्रोक्तमृ  
 धिभिः पूर्वदर्शिभिः ॥ रत्नानां चाप्यभावे तु स्वर्गाकर्षार्धमेव च । सुवर्गास्याप्य  
 भावे तु अज्यं ज्ञेयं विचक्षणाः ॥ मदनरत्नेष्वेवम् (तथा) एकाशीतिपलं कांस्यं तद  
 र्धं वा तदध्वकम् । नवग्रहं त्रिपलं वापि दद्याद्द्विप्राय शक्तितः (तथान्यत्र) स्वगृह्यो  
 क्तविधानेन कृत्वाग्नेः स्थापनं ततः । अन्वाधानं निर्वपणां देवतानां तथाहुतिः यमा  
 यधर्मराजाय मृत्यवे चांतकाय च । वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च ॥ औदुंब  
 राय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने । वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै क्रमात् ॥ विधि  
 नाश्रपशां कृत्वा एकैका माहुतिं हुनेत् । कृष्णां गां कृष्णावस्त्रां च हैमनिष्ठकसमन्वि  
 ताम् ॥ दद्याद्द्विप्राय शांताय प्रीते भवतु मेयमः ॥ त्रिपादसंमृते देव (अपरार्क) पुन  
 र्वसूत्तराया द्वाकृत्तिकोत्तरफाणुनी । पर्वभाद्रा विशाखा च ज्ञेयमेतत्त्रिपादभं (मयूर  
 चित्रगर्गाः) मृतः स्मशानं यो नीत उपजीवति मानवः । गृहे यस्य प्रविष्टो सौतिस्ते देश  
 कदाचन ॥ अचिरान्मृत्युमायातिहृतदारपरिग्रहः । तत्र शांतिप्रवक्ष्यामि धर्मराज

सतंयथा ॥ सक्षीरासांघृताक्ताना मग्नेर्हुत्वासुखेबुधः ॥ औदुम्बरीणांविधिवत्  
ततःशांतिहताभवेत् ॥ सावित्र्यसहस्रेणाक्षीरशांतिचकारयेत् । कपिलांतिल  
कांस्यञ्च हुतान्तेभूरिदक्षिणोति ( अथब्रह्मचारिमृतौशौनकः ) ब्रह्मचारिमृतौ  
रीतिं कथयामिसमासतः । तत्रावकीर्णादेषस्य प्रायश्चित्तप्रशान्तये ॥ द्वाद  
शाब्दंयडब्दंवा त्र्यब्दंशक्तयाथवाचरेत् । स्नातकोब्रह्मचारीच निधनंप्राप्नुयाद्य  
दि ॥ संयोज्यचार्कविधिना संयोज्यौतौततःपरम् ॥ देशकालौस्मृत्वा२मुकगो  
त्रा२मुकनाम्नोमृतस्यब्रह्मचारिणोब्रतविसर्गकरिष्य इत्युक्त्वाहेम्नानान्दीश्राद्धं  
कृत्वा२ग्निप्रतिष्ठाप्याधारान्तेचदहृत्भिर्व्याहति भिरनयेत्ब्रतपतयेत्ब्रतानुष्ठानम  
स्पादनाय विश्वेभ्योदेवेभ्यश्चाज्यंहुत्वा स्विष्टकृदादिसमाप्यपुनर्देशकालौस्मृ  
त्वाकर्कविवाहंकरिष्यइत्युक्त्वाहेम्नानान्दीश्राद्धंकृत्वाकर्कशाखांशवञ्चहरिद्रयालि  
प्त्वापीतसुत्रेणावस्त्र युग्मेनचावेष्ट्याग्निप्रतिष्ठाप्याधारान्तेनयेवहस्पतयेविवा  
हविधियोजकायच यस्मैत्वंकामंकासायेतिकासायव्याहतिभिश्चाज्यंहुत्वा  
स्विष्टकृदादिसमाप्यार्कशाखांशवंचदहेत् ( विधानमालायास ) येषांकुलेब्रह्म  
चारीनिधनंप्राप्नुयाद्यदि । तत्कुलंस्यमाप्नोतिसोपिदुर्गतिमाप्नुयात् । मृतस्य  
प्रियमाणास्ययडब्दंव्रतमादिशेत् ॥ त्रिंशद्भ्योब्रह्मचारिभ्योदद्यात्कौपीनकान्न  
वान् हस्तमात्राःकर्णमात्रादद्यात्कृष्णांजिनानिच । पादुकाञ्चमाल्यानिगोपी  
चंदनमेवच ॥ मणिप्रवालमालाप्रचभूषणादिसमर्पयेत् । एवंकृतेविधानेचविघ्नः  
कोपिनजायते ॥ अत्रमलंमृग्यम् ( कुष्ठिमृतौतुयम् ) मृतस्यकुष्ठिनोदेहंनिखने  
दुगोष्मभूमियु । वासरत्रितयंपश्चादुत्थृत्यान्यव्रतंदहेत् ॥ नगंगाल्लवनंकार्यनिक्षेपे  
विधिरुच्यते । यडब्दव्रतपूर्णेनविधिनांत्यंक्रतुंचरेत् ॥ ततोस्थिसंचयंतस्यगंगा  
यांप्रक्षिपेत्सुधीः । मासिमासिततःकुर्यान्मासिश्राद्धानिपार्वणात् ॥ इत्येतत्कुष्ठि  
मरणेकथितंशास्त्रकोविदैः ( शुद्धितत्त्वेभविष्ये ) शृणुकुष्टगाणांविप्रउत्तरोत्तरतो  
युसम् । विचर्चिकातुदुप्रचर्चरीयस्तृतीयकः । विकर्चूर्वाताम्रीचकृष्णाप्रवे  
तेतथाष्टकमित्युक्त्वामृतेतुप्रापयेत्तीर्थमथवातरुमलकम् । नपिंडनोदकंकार्यं  
नचदानक्रियांचरेत् ॥ अगमासीयत्रिमासीयमृतःकुष्टीकदाचन । यदिस्नेहाचरे



हाहंयतिप्रचांद्रायणांचरत् ॥ अकृतप्रायश्चित्तकुष्ठ्यादिदाहेइदंप्रायश्चित्तम् ॥  
 अतएवकुनख्यादिवत्कुष्ठिनोपिद्वादशरात्रंशूलपाणिनोक्तम् ॥ अतएवान्यदीयं  
 कुष्ठिनोमरणांतमाशौचमुक्तं (कौर्मै) क्रियाहीनस्यसूर्वस्यमहारोगिणाएवच ।  
 यथेष्टाचरणास्याहुर्मरणांतमशौचकम् (महारोगास्तु) वातव्याध्यश्मरीकुष्ठमे  
 होदरभगंदराः ॥ अर्शासिग्रहाणीत्यष्टौमहारोगाः प्रकीर्तिताइति (रजस्वलाया  
 स्तुवृद्धशातातपः) रजस्वलायाःप्रेतायाःसंस्कारादीनिनाचरेत् । ऊर्ध्वत्रिरात्रा  
 तस्नातांतांशवधर्मैरादाहयेत् ॥ अतःप्रक्षाल्यकाष्ठवदग्ध्वव्यहो नंदहेतु (संकटेतुम  
 दनरत्नेस्मृत्यंतरे) उदक्यासूतिकावापिमृतास्याद्यदितांतदा । आशौचेत्वनति  
 क्रांतेदाहयेदंतरायदि ॥ उद्धृतेनतुतोयेनस्नापयित्वातुमंत्रतः । आपोहिष्येतिति  
 सृभिर्हिरण्यवर्णाश्चित्तसृभिः ॥ पवमानानुवाकेनयदंतीतिचसप्तभिः । ततोयज्ञ  
 पवित्रेणागोमूत्रेणाथतेद्विजाः ॥ स्नापयित्वान्यवसनेनाच्छाद्यशवधर्मतः । दाहा  
 दिकंततःकुर्यात्प्रजापतिवचोयथा ॥ यज्ञपवित्रमापो अस्मानितिमिताक्षराया  
 म् ॥ पंचभिःस्नापयित्वातुगव्यैःप्रेतारजस्वलां । वस्त्रांतरातृतंकृत्वादाहयेद्विधि  
 पूर्वकम् (गृह्यकारिकायां) अंतरिक्षमृतायेचवह्नावपुःप्रसादतः ॥ उदक्यासूति  
 कानारीचरेचांद्रायणात्रयम् ॥ ततोयवपिष्टेनानुलिप्याद्येत्तरशतंशर्षोदकैः सं  
 स्नाप्यभस्मगोमयसूतकुशोदकपंचगव्यशुद्धोदकैरापोहिष्यापावमानोभिःसंस्ना  
 प्यान्यवस्त्रेधृतेदहेदितिभट्टाः (अवप्रायश्चित्तमाहबौधायनः) उदक्यासूतिका  
 मृत्यौचरेचांद्रायणात्रयमिति (सूतिकायास्तुमिताक्षरायाम्) सूतिकायामृत्यां  
 तुकथंकुर्वेदित्याज्ञिकाः । कुंभेसलिलमादायपंचगव्यंक्षिपेत्ततः ॥ पुरायान्भिरमं  
 ज्याथोवाचाशुद्धिलभेत्ततः ॥ तेनैवस्नापयित्वातुदाहंकुर्याद्यथाविधि ॥ अब्लिं  
 गाभिर्मंत्रिताभिर्वसिदेव्याभिरेवच ॥ अन्यैश्चवास्तुगौर्मत्रैःसंस्नाप्यविधिनादहे  
 त् (गृह्यकारिकायाम्) सूतिकासरणोप्राप्ते सर्वोयध्यनुलेपनम् । असूतकीतुसंपृ  
 ष्ठाशूर्पाणांतुशतंक्षिपेत् (प्रायश्चित्तेविशेषस्तत्रैव) सूतिकातुयदासाध्वीविस्त्रा  
 तांमरणांगता । त्रिवर्यपूर्णपर्यंतंशुत्थ्येत्कृच्छ्रं रासर्वदा ॥ इदंचाद्यज्यहे ॥ सति  
 कातुयदानारीरजसातुपरिष्नुता । श्रियेतचेत्तु सानारीद्विवर्यकृच्छ्रमाचरेत् ॥ इ





धनपुत्रादिवृद्धिदम् ॥ देशकालौस्मृत्वाऽसंशयोसमाचरत्वस्वर्गलोकमहीयमान  
 त्वमनुव्यलोमसंख्याब्दावच्छिन्नस्वर्गवासभर्तृसहितचतुर्दशैर्द्रा वच्छिन्नकालि  
 कक्रीडमानत्वमाहपितृश्वशुरकुलत्रयपतत्वब्रह्मघनमिवघनकृतघन पतिपतत्वप  
 त्यवियोगकामाभर्तृज्वलाचिंतारोहणंकरिष्ये ॥ अनुगमनेतुफलमुल्लिख्योन्वारो  
 हणंकरिष्ये इत्युक्त्वा हरिद्राकुंकुमांजना दियुतशूर्पांगिसुवासिनीभ्योदद्यात् (सं  
 वस्तु) लक्ष्मीनारायणो देवो बलसत्त्वगुणाश्रयः । ग्राहं सत्त्वं च मे देया हाराकैः परि  
 तोयितः ॥ सोपस्करांगि शूर्पांगि वाराकैः संयुतानि च । लक्ष्मीनारायणप्रीत्यै  
 सत्त्वकामाददास्यहम् ॥ अग्नेः समीपमागत्य पंचरत्नानि पल्लवे । नीलांजनं तथा  
 बध्वामुखे मुक्ताफलं न्यसेत् ॥ ततोऽग्निप्रार्थनं कृत्वा संवेद्यानेन मिश्रितम् । स्वाहा  
 संप्लेयनिर्विरागा सर्वगो ब्रह्मताशन ॥ सत्त्वं मार्गं प्रदानेन नय मां भर्तु रंतिकम् ॥ ततो  
 ग्नावाज्येनाग्नयेतेजोधिपतये विष्णावे सत्त्वधिपतये कालाय धर्माधिपतये पृथिव्यै  
 लोकाधिपतये इन्द्रो रसाधिष्ठात्रीभ्यः । वायवे बलाधिपतये आकाशाय सर्वाधि  
 पतये कालाय धर्माधिष्ठात्रेभ्यः सर्वसाक्षिणीभ्यः । ब्रह्मणे वेदाधिपतये रुद्राय प्रम  
 शानाधिपतये चहुत्वाग्निं प्रदक्षिणी कृत्य द्वयमुपलांचं संपूज्य पुठपांजलिं गृहीत्वा  
 ग्निं प्रार्थयेत् ॥ त्वमग्ने सर्वभूतानां संतप्रचरसि साक्षिवत् । त्वमेव देवजानीयेन वि  
 दुर्यानिमानुयाः ॥ अनुगच्छामि भर्तारं वैधव्यभयपीडिता । सत्त्वमार्गं प्रदानेन  
 नय मां भर्तु रंतिकम् ॥ मंत्रमुच्चार्य शनकैः प्रविशेच्चहुताशनम् ( गौडास्तु ) इमाना  
 रीरविधवा इति ॥ ओं इमाः प्रतिव्रतापरायाः स्त्रियोयायाः सुशोभनाः । सहभर्तुः  
 शरीरेणासंवि संतु विभावसु मिति च विप्रः पठेदित्याहुः ( कातरांतु ) प्रेतोत्तरे सुप्तां  
 देवरः शिष्यो वा उदीर्येति द्वाभ्यामुत्थापयेत् ॥ एतन्महिमा मिताक्षरा दौजेयः  
 ( पृथ्वी चंद्रोदये स्कांदे ) अनुब्रजति भर्तारं गृहात्पितृवत्तं मुदा । पदे पदे प्रवमेधस्य  
 फलं प्राप्नोत्यनुत्तमम् ( यस्त्वं गिराः ) यास्त्री ब्राह्मणा जातीयामृतं पतिमनुब्रजेत् ।  
 सा स्वर्गमात्मघातेन नात्मानं न पतिं न येदिति ( यच्च व्याघ्रपात ) न प्रियेत समं भर्तु  
 ब्राह्मणो शोककषिंता । न ब्रह्मगतिमाप्नोति मरणादात्मघातिनीति पृथक् क्वचि  
 ति परम् ॥ पृथक् चिंतितं समाकृत्य न विप्रागंतुमर्हति । अन्यासां चैव नारीणां स्त्री

धर्मायंपरः स्मृतस्त्युशनसोक्तेः ॥ पृथक्चित्तस्तुष्टात्रियादिपरा (तद्विधिब्राह्मे)  
 देशांतरे मृते पत्यो साध्वी तत्पादुकाद्वयम् । निधायोरसिसंशुद्धाप्रविशेज्जातवेद  
 सम ॥ ऋग्वेदवादात्साध्वीस्त्रीनभवेदात्मधातिनी । अथाशौचेनितृतेतुश्राद्धं प्रा  
 प्रोतिशास्त्रवत् ॥ इमानारोरविधवा इति ऋग्वेदवादः ॥ अथाशौचमन्वारो हरा  
 परमिति स्मार्ताः ॥ नियेधवाक्यानि प्रायश्चित्तार्थमृतेन पतितेन वा सहमरणानिये  
 धपराणीत्याहुः ॥ अस्थिदाहे पलाशदाहे वा न पृथक्चित्तिदोयः ॥ अंगत्वेन स्था  
 नापत्यावाशरीरतुल्यत्वात् (यत्तु) ब्रह्मघ्नो वा ह्यघ्नो वा मित्रघ्नो वा भवेत्पतिः ।  
 पुनात्यविधवानारी तमादाय मृता तु येति हारी तीर्थं तत्पतितदाहादिनियेधेन सह  
 मनस्यदूरतोपास्तत्वादर्थवादमात्रमिति पृथ्वीचंद्रः ॥ जन्मांतरो यपापवता सह  
 मरणो नोद्धार इति स्मार्तगौडाः (शुद्धितत्त्वे व्यासः) दिनैकगम्य देशस्था साध्वी चे  
 त्कृतनिश्चया । नदहेत्स्वामिनंतस्यायावदागमनं भवेत् (तत्रैव भविष्ये) तृतीये हि  
 उदकायामृते भर्तारिवैद्विजाः । तस्यानुमरणार्थमिच्छा पथे देकरात्रकम् ॥ एकां  
 चितां समासाद्य भर्तारं यानुगच्छति । तद्वर्तुः क्रियाकर्ता स तस्याप्रचक्रियां चरेत् ॥  
 सप्तदशाहंतरम् ॥ यश्चाग्निदाताप्रेतस्य पिंडं दद्यात्स सबहीति वायवीयोक्तेः  
 (आपस्तम्बः) चितिं भ्रष्टा तु यानारी मोहादिचलिता भवेत् ॥ प्राजापत्येन शुद्धो तत्  
 स्माद्वै पापकर्मणाः (तथा) अन्वारो हेतुनारीणां पत्युश्चैकोदकक्रिया । पिण्डदान  
 क्रिया तद्वच्छ्राद्धं प्रत्यादिदकं तथा ॥ अन्वारो हेतुते पत्न्याः पृथक् पिंडांस्तिलांजली  
 च । पृथक् शिलेन कुर्वीत दद्यादेकशिलेतथा ॥ अन्यत्प्रायुक्तम् । इदं गर्भिणी बालाप  
 त्यासूतिकारजस्वलाव्यभिचारिणीभिर्नकार्यं ॥ स्त्रीरणीनां गर्भिणीनां पतिता  
 नां च योयिताम् । नास्ति पत्याग्नि संवेशः पतितौ हितथा उभाविति मदनरत्ने स्मृति  
 संग्रहेऽक्तेः (मदनरत्ने बृहस्पतिः) बालसंवर्धनं मुक्त्वा बालापत्या न गच्छति । ब्र  
 तोपवासनियतारक्षेद्गर्भं च गर्भिणी ॥ तृतीयपादे रजस्वलासूतिकार्चेति पृथिवी  
 चंद्रोदये गौडीयशुद्धितत्त्वे च पाठः (तत्रैव बृहचारदीयेऽपि) बालापत्या च गर्भिणीयो  
 ह्यदृष्टं मृतवस्तथा । रजस्वलाराजसुतेनारोहंति चितां तुता इति (अत्र) पतिव्रतासा  
 संदीप्तं प्रविशेद्याहुताशनमिति भारतादृग्वेदवादात्साध्वीस्त्रीति ब्राह्माच ॥ पतिव्र



तानामेवाधिकारो न दुर्वृत्तानाम् (यत्तु) अवसत्यचयाः पूर्वपतिंदुष्टेन चेतसा । व  
र्ततेयाप्रचसततंभर्तृणांप्रतिकूलतः ॥ तत्रानुमरणांकालेयाः कुर्वन्ति तथाविधाः ।  
कामात्क्रोधाद्भयान्मोहात्सर्वाः पूता भवन्त्युतेति भारतं ॥ तत्तकैमुत्तिकन्यायेन स्ता  
वकमिति पृथ्वीचंद्रः ॥ ब्राह्मराया एकचित्तिरेव न पृथक्चित्तिः ॥ सत्रियादीनां  
पृथगेकावेतिकल्पतरुत्नाकरमदनपारिजातादयः ॥ शुद्धिचिंतामणौ चैवम् ॥  
तत्रान्वारोहरोभर्तृशौचमध्ये ॥ तदूर्ध्ववाकृतेत्रिरात्रमध्ये एव दशपिंडाः ॥ सह  
गमने तु भर्तृराशौ चतुल्यमाशौचं पिंडदानं च ॥ अन्वितायाः प्रदातव्या दशपिण्डा  
स्त्यहेरातु । स्वाभ्याशौचेन्यतीते तु तस्याः श्राद्धं प्रदीयत इति शुद्धितत्त्वेशूलपा  
शौचपैठीनसिस्मृतेः ॥ संस्थितं पतिमालिङ्ग्य प्रविशेद्याहुताशनम् । तस्यापि  
गडादिकंदेयं क्रमशः पतिपिण्डवदिति शूलपाशाशुद्धितत्त्वधृतव्यासेकतेः ॥  
अन्यत्प्राशुक्तम् ॥ यदा तुरजस्वलापि पत्नी मृते पत्यौ देशकालवशात्तदैवानुग  
च्छतिनशुद्धिप्रतीक्षते तत्र विधिः ( देवयाज्ञिकनिबन्धे ) यदा स्त्रियामुदकयायां  
पतिः प्राणान्समुत्सृजेत् । द्रोणमेकंतण्डुलानामवहन्याद्विशुद्ध्यै । मुसलाघातैस्त  
दसृक् स्रवतेयोनिमण्डलात् । विरजस्कामन्यमानास्त्रेचित्ते तदसृक् क्षयम् ॥ इ  
द्वाशौचं प्रकुर्वीत पंचमृत्तिकया पृथक् । त्रिंशद्विंशतिर्दशचगवांदत्वात्त्वहः क्रमा  
त् ॥ विप्राणां वचनाच्छुद्धासमारोहेद्भुताशनम् । नारीणां सरजस्काणामियं शु  
द्धिरुदाहता ॥ अवश्याद्वा दौर्निर्णयः पूर्वमुक्तः ॥

इति श्रीभट्टकमलाकरकृते निर्णयसिन्धावन्त्यकर्मनिर्णयः ॥

( अग्निप्रवेशाशक्तौ तु विष्णुः ) मृते भर्तरि ब्रह्मचर्यं तदन्वारोहणांचेति ( ब्र  
ह्मवैवर्ते ) सहानुगमनं शस्तं वैधव्यस्याथ पालनम् (यत्तु तत्रैव) कलौ नान्या गतिः  
स्त्रीणां सहानुगमनाद्भवति ब्रह्मचर्याशक्यत्वं परम् ( तथाचमनुः ) ब्रह्मचर्यचरे  
द्वापि प्रविशेद्याहुताशनम् ( काशीखण्डेऽपि ) पत्यौ मृते पियायोषिद्वैधव्यं पाल  
येत्कचित् । सा पुनः प्राप्य भर्तारं स्वर्गलोकं समप्नुते ॥ अनुयाति न भर्तारं यदि दै  
वात्क्रयं च न । तत्रापि शीलं संरक्षेच्छीलभंगात्पतत्यधः ॥ तद्वैगुरायादपि स्वर्गा

त्पतिःपततिनान्यथा । तस्याःपिताचमाताच भ्रातृवर्गस्तथैवच ( अथविधवा  
धर्माः मदतरत्नेस्कांदे ) विधवाकवरीबन्धोभर्तृबन्धायजायते । शिरसोवपनं  
तस्मात्कार्यविधवयासदा ॥ एकाहारःसदाकार्यो न द्वितीयःकदाचन । मासोप  
वासंवाकुर्याच्चांद्रायणमयापिवा ॥ पर्यंकशायिनीनारीविधवापातयेत्पतिम् ।  
नैवांगोद्वर्तनंकार्यस्त्रियाविधवयाक्वचित् ॥ गन्धद्रव्यस्यसंभोगोनैवकार्यस्तथा  
पुनः । तर्पणंप्रयहंकार्यभर्तुस्तिलकुशोदकैः ॥ तत्पितुस्तत्पितृचापिनामगो  
त्रादि पर्वकम् ॥ इदमपुत्रपरमितिमदनपारिजातः ॥ नाधिरोहेदनडवाहंप्रागौः  
कंडुगैरपि । कंचुकंनपरीदध्याद्वासेनविहृतं वसेत् ॥ वैशाखेकार्तिकेमाघेवि  
शेप्रनियमंचरेत् ( प्रचेताः ) तांबूलाभ्यंजनंचैवकांस्यपात्रेचभोजनम् । यत्तिष्ठ  
ब्रह्मचारीचविधवाचविवर्जयेत् ( आद्यादौतुविशेषःप्रागुक्तः । यत्तुबोधायनः )  
संवत्सरंप्रेतपत्नीमधुमांसंविवर्जयेत् । अधःशयीतयगमासानितिमौद्गल्यभा  
षितमितितदसत्रणापरमित्यपरार्कः(अथसंन्यासः । याज्ञवल्क्यः ) वनाद्गृहा  
द्वाह्मत्वेसिंसार्ववेदसदसिणां । प्राजापत्यांतदंतेतानरनीनारोप्यचात्मनि ॥ अ  
थोतवेदोजग्रहपुत्रवानन्नदोगिनमात्र । शक्याचयज्ञहन्मोक्षेनःकुर्यात्तुनान्य  
था ॥ सतदाश्रमसमुच्चयपक्षे ॥ जाबालश्रुतौत्वन्येपिपक्षाउक्ताः ॥ यदिचेतरथा  
ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेद्गृहादनादा ॥ अथपुनरव्रतीवास्नातकोवास्नातकोवात्सन्ना  
गितकोवायदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेदिति ( अंगिराः ) प्रव्रजेद्ब्रह्मचर्याद्वा  
प्रव्रजेद्वागृहादपि । वनाद्वाप्रव्रजेद्विद्वानातुरोवायदुःखितः ॥ आतुरोमुमर्युः ॥  
दुःखितश्चौरव्याघ्रादिभीतः ( भारते ) आतुराणांचसंन्यासे नविधिर्नैवच  
क्रिया । प्रेयसात्रंसमुच्चार्यसंन्यासंतत्रपूरयेत् ( जाबालश्रुतावपि ) यद्यातुरः  
स्यान्मनसावाचावासंन्यसेदिति ॥ अत्रविप्रस्यैवाधिकारः ॥ ब्राह्मणाःप्रव्रजं  
तीतिजाबालश्रुतेः ॥ आत्मन्यरनीन्समारोप्यब्राह्मणाःप्रव्रजेतगृहादितिमनूक्ते  
प्रचेतिविज्ञानेश्वरादयः ( वृद्धयाज्ञवल्क्योपि ) चत्वारोब्राह्मणास्योक्ताआश्र  
माःश्रुतिचोदिताः । सत्रियस्यत्रयःप्रोक्ताद्वावेकोवैश्यशूद्रयोरिति ( साधव  
स्तु ) ब्राह्मणाःसत्रियोवाथवैश्योवाप्रव्रजेद्गृहा दितिकौष्मांड्युक्तेर्वर्णात्रयस्या



प्यधिकारः ॥ पूर्ववाक्यंतुकायायदण्डादिनियेधार्थं ॥ सुखजानामयंधर्मोय  
द्विषोर्लिङ्गधारणम् । राजन्यवैश्ययोर्नेतिदत्तात्रेयमुनेर्वचइतिबोधायनोक्तेरि  
तिपक्षांतरमाह ॥ तत्त्वंतुकुटीचकादिपरमेतदिति ॥ योपिसंन्यासंपलपैतक  
मितिकलौनियेधःसोपिबिदण्डादिपरइत्युक्तंप्राक् ॥ सचसंन्यासश्चतुर्थेत्याह  
( हारीतः ) कुटीचकोबहुदकोहंसश्चैवतृतीयकः । चतुर्थःपरमोहंसोयोयः  
पञ्चात्सउत्तमः ॥ आद्यःपुत्रादिनाकुटींकारयित्वातत्रगृहेवावसनकायायवा  
साःशिखोपवीतत्रिदण्डवान्बन्धुसुखगृहेवाभुंजानआत्मज्ञोभवेत् ॥ सतदत्यंता  
शक्तपरम ॥ द्वितीयस्तुबन्धुनहित्वासप्तागाराणिभैसंचरन्पूर्वाक्तवेषःस्यात् ॥  
हंसस्तुपूर्वाक्तवेषोप्येवदण्डः ॥ एकन्तुवैशावंदण्डंधारयेन्नित्यमादरादितिस्कां  
दात्( विष्णुरपि ) यज्ञोपवीतंदण्डं च वस्त्रंजन्तुनिवारणम् । तावानपरिग्रहः  
प्रोक्तोनान्योहंसपरिग्रहः (चतुर्थोपिस्कांदे) परहंसस्त्रिदंडंचरज्जंगोवालनिर्म  
ताम् । शिखांयज्ञोपवीतंचनित्यंकर्मपरित्यजेत् ॥ अयमप्येकदंडसव ॥ येतुशि  
खोपवीतादित्यागनियेधास्तेकुटीचकादिपराः (यत्तुमेधातिथिः) यावन्नस्युच्च  
योदंडास्तावदेकेनवर्तयेदिति ॥ तदपितत्परमेव (यच्चात्रिः) चतुर्धाभिस्तवःप्रो  
क्ताःसर्वेचैवत्रिदांडिनइति ॥ तद्वदण्डादिपरम् ॥ नयाष्टिपरम् ॥ वाग्दंडोयम  
नोदंडःकर्मदंडस्तथैवच । यस्यैतेनियतादंडाःसत्रिदंडीतिचोच्यतेइतिमनक्तेः ॥  
तस्मात्परमहंसस्यैकदंडसव ॥ सोप्यविदुयः ॥ विदुयस्तुसोपिनास्ति ॥ नदंडं  
शिखांनाच्छादनंचरतिपरमहंसइतिमहोपनिषदुक्तेः ॥ ज्ञानमेवास्यदंडइतिवा  
क्यशेषाच्च (यत्तुयमः) काष्ठदंडोधृतोयेनसर्वाशीज्ञानवर्जितः । सयातिनरकान्  
घोरान्महारौरवसंज्ञितानितितद्वैराग्यंविनाजीवनार्थसंन्यासपरम् ॥ एकदंडं  
समाश्रित्यजीवंतिबहवोनराः । नरकोरौरवेधोरेकर्मत्यागात्पतंतितइतिस्मृतेः  
(यच्चाश्वमेधिके) एकदंडीत्रिदंडीवाशिखामुंडितसववा । कायायमात्रसारोपि  
यतिःपूज्योयुधिष्ठिरेतितस्यापिपूर्वाक्तव्यवस्थान्नेया (अथतद्विधिःबोधायनः)  
कृत्वाश्राद्धानिसर्वाणिपित्रादिभ्योऽष्टकंपृथक् ॥ वापयित्वाचकेशादीन्मार्जये  
न्मातृकामाः ॥ सर्वाणीतिस्वस्यनवश्राद्धश्राद्धादिकृत्वेत्यर्थः (स्मृत्यर्थ

सारेपि) एकोद्विष्टविधानेन कुर्याच्छाङ्गानिषोडश । अग्निमान्पार्वगोनैवविधि  
नानिष्पेत्स्वयमिति (कात्यायनः) कृच्छ्रांस्तुचतुरःकृत्वापावनार्थमनाश्रमी  
आश्रमीचेत्तप्तकृच्छं तेनासौयोग्यतां व्रजेत् (बौधायनः) सदैवमार्यिकंदिव्यं पि  
व्यंमातृकमानुषे । भौतिकं चात्मनश्चांते अष्टौश्राद्धानिनिर्वपेत् (अत्रकममाह  
हेमाद्रौशौनकः) देवश्राद्धे ब्रह्मविष्णुमहेश्वरादेवताः ॥ आर्यदेवर्षिब्रह्मर्षिसत्र  
र्ययः ॥ देवर्षिसत्रर्षिमनुष्यर्ययोवा ॥ मरीच्यादिऋषय इति संन्यासपद्धतौ त  
च्चिंत्यम् ॥ दिव्ये वसुस्तद्वादित्याः ॥ मानुषे सनकसनंदनसनातनाः ॥ भूतश्राद्धे पृथि  
व्यादिभूतानि च सुरादिकरणानि चतुर्विधे भूतग्रामश्चेति तिस्रः ॥ पित्र्ये पित्रा  
दित्रयो मातामहाश्च ॥ मातृक्रेमात्रादयस्त्रिस्तः ॥ आत्मश्राद्धे आत्मपितृपिता  
महादेवताः ॥ आत्मश्राद्धं परमात्मदेवत्यमितिसंन्यासपद्धतौ तच्चिंत्यम् ॥ सर्व  
वनादीमुखत्वं विशेषराज्ञेयम् ॥ सर्वत्रपिंडदानम् ॥ युग्माविप्राः ॥ दक्षकृतसत्य  
वसूवाविष्वेदेवौ ॥ अन्यन्नां दीश्राद्धवदिति हेमाद्रिः (स्मृत्यर्थसारे) केशश्मश्रु  
लोमनखं वापयित्वोपकल्पयेत् । दंडं जलं पवित्रं च शिष्यं पात्रं कंसं डलुम् ॥ आस  
नं कौपीनमाच्छादनं कथां पादुके इति दशपंचवा ॥ एतच्च पूर्वैर्द्युनां दीमुखं कृत्वा परे  
द्यः पूरायाहवाचनं कृत्वा कार्यमिति शौनकः (बौधायनः) श्रीन्दंडानंगुलीरथुला  
वैगावानुसूर्ध्वसंमितान् । एकादशनवद्विचतुःसप्तान्यपर्वकान् । वेष्टिता मूक  
ष्णा गोवा लरज्ज्वातु चतुरंगुलान् । एकोवातादृशो दंडो गोवालसदृशो भवेत् ॥ अ  
नग्निरग्निमुत्पाद्य नित्येन विधिना ततः । पृष्टे दिवि विधानेनेत्यर्थः ॥ स्वाग्नावे  
वाग्निमान् कुर्यादपवर्गोक्तमादितः । आज्यं पयोदधीत्येतत्त्रिवृद्धाजलमेव वा ॥  
ओं भूरित्यादिना प्राश्रयरात्रिं चोपवसेत्ततः । अथादित्यास्तमयात्पूर्वमग्नीन् विह  
त्यसः ॥ आज्यमग्नीगार्हपत्ये संस्कृत्यैतेन च सुचा ॥ पूरायाहवनीये तु जुहुया  
त्प्राग्नेन ततः । ब्रह्मान्वाधानमेतत्स्यादग्निहोत्रे हुनेत्ततः ॥ संस्तीर्य गार्हपत्यस्या  
दर्भानुत्तरतो व्रतु । पात्राणां साद्यदर्भेषु ब्रह्मायतन एव तु ॥ जागृयाद्रात्रिमेतां तु  
यावद्ब्राह्मो मुहूर्तकः । अग्निहोत्रं स्वकाले तु हुत्वा प्रातस्तनंततः ॥ इष्टिर्वैश्रवा  
नरीं कुर्यात्प्राजापत्यमथापि वा (जावालश्रुतौ) तदैके प्राजापत्यमेवेष्टिं कुर्वन्ति



दुतथानकुर्यादग्नेयीमेवकुर्यात्पश्चात्तत्रैधातवीयामेवकुर्यादित्युक्तम् ॥ तेनात्रवि  
 कल्पः (अत्राहुः) त्रेताग्नेः प्राजापत्या तद्वाक्येशे प्राग्नीतिबहुत्वश्रुतेः ॥ अकारग्ने  
 स्त्वाग्नेयीति ॥ अनाहिताग्नेरिष्टिस्थानेदैश्चानरआग्नेयोवाचरितिमाधवः  
 (कात्यायनः) आत्मन्यग्नीन्समारोप्यवेदिसधस्थितोहरिम् । ध्यात्वाहृदित्वनु  
 ज्ञातोऽगुरुणा प्रैथमीरयेत् (कपिलः) विधिवत्प्रैथमुक्त्वाथत्रिरुपांशुत्रिरुचक्रैः ।  
 अभयंसर्वभूतेभ्योसत्तः स्वाहेत्यथोभुवि ॥ निनीयदंडशिक्यादिगृहीत्वाथबहिर्ब्र  
 जेत (बौधायनः) सखेमेत्यादिनादराड्येनदेवाः पवित्रकम् । यदस्यपारे शिक्यं  
 तुपात्रं व्याहृतिभिस्तथा ॥ युवा सुवासाः कौपीनं गृहीत्वा बांधवांस्त्यजेत् (अथ  
 क्रमः) तत्र संन्यासे विकारसिद्धयर्थं स्वस्य नवग्राह्योद्देशाद्वा द्वसपिण्डानां निशा  
 रितः पार्वणान्यजग्निस्तत्वेकोऽिष्टविधिना कृत्वा ८ नाश्रमी चेत्कृच्छ्रचतुष्टयसंन्य  
 स्तुतप्तकृच्छ्रं कृत्वा दगयने सकादप्रयां द्वादप्रयां वा साग्निरमावास्यायां पौर्णमा  
 स्यांचतुर्दश्यां वा यथा पर्वणि प्राजापत्यं स्यात् । तत्र देशकालौ स्मृत्वा परमहंसादि  
 संन्यासग्रहणां करिष्येति संकल्प्य गणेशं संपूज्य पुरां याहं वाचं चित्वा मातृकापू  
 जां च द्विष्ट्राद्वंच कृत्वा ८ स्तमयात् प्रागौपासनं समिध्या हिताग्निस्तुगार्हपत्ये ॥  
 विधुरोऽग्निहेत्री तु विकाराडमण्डनोक्तदिशा कुशप्रतन्यासह पवमानेष्ट्यन्तं पूजां  
 हुत्यंतं वाधानं कुर्यात् ॥ ब्रह्मचारी चेलौकिके विधुरश्चेद्व्याहृतिभिः प्रगावेन च  
 ग्निसादायान्त्रग्निरुग्रसामित्यानीयपृष्ठोदिवीति निवायते नैव समिधयस्तत्सवितु  
 स्तांसवितुर्विश्वा निनर्इति तिस्रः समिधोभ्यादद्यात् ॥ सवसर्गौ सिद्धे कक्षोपस्थव  
 ज्यं वपनं कृत्वा पयोदधियुतमाज्यमपोवा ॥ ओम्भूः सावित्रीं प्रविशामि तत्सवितु  
 र्वरेण्यमिति प्राश्या चम्य पुनरादाय ॥ ओम्भुवः सावित्रीं प्रविशामि भर्गो देव  
 स्य धीमहीति द्वितीयम् ॥ ओम्स्वः सावित्रीं प्रविशामि धियो यो नः प्रचोदयादि  
 तितृतीयं ॥ समस्तया चतुर्थं ॥ ओम्भर्भुवः स्वः सावित्रीं प्रविशामि ० तत्सवितु  
 यात इति ॥ संन्यासपद्धतौ तु विवृदसीति प्रथमं प्रवृदसीति द्वितीयं विवृदसीति तृ  
 तीयं प्राश्यापः पुनं त्विति जलं प्राश्या सावित्री प्रवेश उक्तः ॥ तत आहवनीयं विहृत्य ब्र  
 ह्माणामुपवेश्याज्यंसंस्कृत्य चतुर्द्वादशवागृहीत्वा समित्पूज्यां सोऽस्वाहा परमात्मन

इदमितिहुत्वोपवसेत् ॥ ततःसायंहोमं वैश्वदेवं चकृत्वा अग्नेरुदक्कुशानास्तोर्यदंडा  
दीनिदशपंचवासाद्यब्रह्मासनेकृष्याजिनोपविष्टोरात्रौ जागरं कृत्वा प्रातर्होमानंत  
रंप्राजापत्या वैश्वानरीं वाकृत्वा ऋत्विग्भ्यः सुर्वरवं ब्रह्म गोचमधुपर्गां तैजसपात्रंद  
त्वादारुपात्रारायाहवनीये प्रसमृन्मयानि च जले क्षिपेत् ॥ कृष्याजिनं त्वाददीत् ॥  
अनाहितारिग्नस्तु वैश्वानरमाग्नेयं वाचसंहुत्वा पात्रारायग्नौ क्षिप्त्वा भूर्भुवःस्वरि  
त्यपःस्पृष्ट्वा तत्समं दीतिजप्त्वा विप्रान्संभोज्य पुरायाहं वाचयित्वा अववाचपनं कृ  
त्वा हैमरूप्यकुशजलैः स्नात्वा पुरुषाय च सं कृत्वा प्राणाय स्वाहेति पंचाहुती हुत्वा  
पुरुषसक्तेन प्रत्यृचमाज्यचसं च जुहुयात् ॥ अत्र विरजाहोमं केचिदाहुः (यथोक्तं  
शिवगीतासु) जुहुयाद्विरजामंत्रैः प्राणापानादिभिस्ततः । अनुवाकान्तमेकाग्नेः स  
मिदाज्यचसं स्पृथक् ॥ आत्तन्ग्रहीन्समारोप्य याते अग्नेति मन्वतः । भस्मादा  
यारिग्निरित्याद्यैर्विमृज्यांगानि संस्पृशेत् ॥ पापैर्विमृच्य ते सत्यं मुच्यते नात्र संशयः  
(तथा) प्राणापानव्यानोदानसमानामे शुद्ध्यन्ताम् ॥ ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भू  
या संस्वाहा ॥ सर्वत्र लिङ्गोक्तदेवताभ्य इदमितित्यागः ॥ वाङ्मनश्चक्षुश्रोत्रजिह्वा  
घ्राणारेतो बुद्ध्या कूर्तिः संकल्पामे शुद्ध्यन्ताम् ॥ ज्योतिः० त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदे  
मज्जास्त्रायवोस्थीनि मे शुद्ध्यन्ताम् ॥ ज्योतिः० शिरःपाणिपादपाश्र्वपृष्ठो ह्रदरजंघ  
शिष्णोपस्थपायवामे शुद्ध्यन्ताम् ॥ ज्योतिरहं० उत्तिष्ठ पुरुष हरिर्तापिङ्गललोहि  
तासि देहि देहि ददाप इता मे शुद्ध्यन्ताम् ॥ पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशमे शुद्ध्यन्ता  
म् ॥ ज्योतिरहं० शब्दस्पर्शरूपरसगंधामे शुद्ध्यन्ताम् ॥ ज्योतिः० मनोवाक्कायक  
र्मागामे शुद्ध्यन्तां ज्योतिः अव्यक्तभावे रहंकारे ज्योतिः ॥ आत्मा मे शुद्ध्यन्ताम् ॥  
सुधेस्वाहा । क्षुत्पिपासाय स्वाहा । विविद्धौ स्वाहा । ऋग्विधानाय स्वाहा । क  
योत्काय स्वाहा ॥ क्षुत्पिपासामलं ज्येष्ठा मलस्मीनां शय्याभ्यहम् । अभूति सममृ  
द्धिं च सर्वान् निर्गुदमे पाप्मानं रवं स्वाहा ॥ अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमयान  
न्दमय मात्मा मे शुद्ध्यन्ताम् ॥ ज्योतिः० ॥ ततः स्विष्टकृदादि हुत्वा ब्रह्म गोहिरण्य  
माज्यपात्रं धेनुं च दत्त्वा समसिंचित्वित्युपतिष्ठेत् ॥ अत्र केचिदनग्नेः सावित्री प्रवेशं  
पूर्णाहुतिं चाहुः ॥ ततो याते अग्नेयज्ञियातनूरिति त्रिस्तुभिरेकैकां जिघ्रन्नात्मन्य



३ नो न समारोध्य गुरवे सर्वस्वदत्त्वा ॥ यो ब्रह्माणां विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्र  
 हिणोति तस्मै तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणा म हं प्रपद्य इत्युपस्थाय ॥  
 दक्षिणां जान्वाद्य पादावुपसंगृह्याधीहि भगवो ब्रह्मेति वदेत् ॥ ततो गुरुरात्मानं  
 ब्रह्मरूपं ध्यात्वा शंखं द्वादशप्रणवैरभिमन्त्र्य तेन शिष्यमभिधाय शन्नो मित्र इति  
 शांतिं पठित्वा तच्छिरसि हस्तं दत्त्वा पुरुषसक्तं जप्त्वा ॥ समव्रते हृदयं ते दधामी  
 ति च जप्त्वा दङ्मुखः प्रणवार्थमनुसंदधद्दक्षिणोत्कर्णं प्रणवमुपदिश्य तदर्थं च पंची  
 करणाद्यवबोध्य अथ मात्मा ब्रह्मतत्त्वमसि प्रज्ञानं ब्रह्मेत्याद्युपदिशेत् ॥ तदर्थं च व  
 देत् ॥ ततो नाम दद्यात् । ततः शिष्यस्तेनोपदिष्टो हरिं स्मरन्नुर्ध्वबाहुस्तिष्ठन् देवा  
 न्साक्षिणाः कृत्वा ॥ ओम् भूर्भुवः स्वः स न्यस्तं मयेति त्रिसृपांशु त्रिसृचैस्त्रिरत्युच्चै  
 र्चोक्त्वा वाजलसमीपं गत्वा स्नात्वा ॥ अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः स्वाहेति त्रिरंजली  
 नृक्षिप्त्वा युवासुवासा इति कायायं कौपीनं वा स च परिधाय स खामे गोपायेति मु  
 ख्यवैशाखं पालाशं वैल्वमौदुंबरं वा दंडं गृह्णीयात् ॥ अत्र पुत्रकामो गृहस्थः शंखेन  
 पुरुषसूक्तेन दंडमभिधाय दद्यादित्याचारः ॥ ततः शिखामुत्पाद्य ॥ ओम् भूः  
 स्वाहेत्यग्नौ जले वा हुत्वा तथैवोपवीतं हुत्वा ॥ येन देवाः पवित्रेणोति जले पवित्रं यदा  
 स्य पार इति शिष्यं सा विद्या क मंडलं सप्तव्याहृतिभिर्भोजनपात्रमिदं विठ्णुरित्या  
 मनं वृषां वा गृहोत्वा ॥ ओम् भूस्तर्पयामीति व्यस्तसमस्ताभिर्महर्नम इति तर्पयि  
 त्वा ॥ भूः स्वर्वाः भुवस्वर्वाः स्वः स्वर्वाः भूर्भुवः स्वर्म्महर्नमः स्वधेति पितृस्तर्पयि  
 त्वोदुत्यं चित्रं तच्च सुहंसः शुचि यज्ञमो मित्रस्येति स्नात्वा हुरभिमतीभिरापोहि  
 ष्ठेति हरिणयवगार्भिः पावमानीभिर्व्याहृतिभिश्च मार्जयित्वा षोत्तरशतवारम  
 घमर्षणां प्राणायामांश्च कृत्वा ॥ ओम् भूर्भुवः सुवरिति च पठित्वा ॥ नमः सवित्र  
 इति सूर्यचोपस्थाय पुनः स्नात्वा जघ्ने क्षालयित्वा ॥ ओम् मिति ब्रह्मो मिति दंसर्वमो  
 मिति ब्रह्मवा सयज्योतिर्यस्य वेदो यस्य तपति वेद्यमेवैतद्यस्य वेदो यद्वनमस्ती  
 ति जपित्वा स्रुसहस्रं गायत्रीं जपेदिति ( अथ यतिधर्माः ) प्रातस्तथ्याय ब्रह्मणस्प  
 ते इति जपित्वा दंडादीनि मृदं च निधाय सूत्रपुरीषयो गृहस्थचतुर्गुणां शौचं कृत्वा  
 ८ चम्यपर्वद्वादशी विज्यं प्रणावेन दंतधावनं कृत्वा तेनैव मुदा बहिः कटिं प्रक्षाल्य जल

तर्पणावर्ज्यस्नात्वा पुनर्जघे प्रसात्यवस्त्रादीनि गृहीत्वा मार्जनांतं कृत्वा केशवादिन  
मौतनामभिस्तर्पयित्वा ॥ ओं भूस्तर्पयामीत्यादिव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्महर्ज  
नस्तर्पयामीतितर्पयेत् ॥ ओं भूः स्वाहेति स्वाहाशब्दांतैः स्वधाशब्दांतैश्चेभिरेव  
पुनस्तर्पयेदितिकेचित् ॥ ततश्चाचम्यांजलिना प्रणावेन जलमादाय व्याहृतिभिरु  
द्धृत्य गायत्र्या त्रिः क्षिप्त्वा गायत्रीं जपेत् ॥ उदिते सूर्ये प्रणावेन व्याहृतिभिर्वाध्या  
धिर्दत्त्वा मित्रस्य चर्यणीत्याद्यैः पूर्वोक्त सौरीभिरिदं विष्णुस्त्रिदेवो ब्रह्मजज्ञानमि  
ति चोपस्थाय सर्वभूतेभ्यो नम इति प्रदक्षिणांमावर्तते ॥ ततो नत्वा ॥ आदित्याय  
विष्णवे सहस्राक्षाय धीमहि ॥ तन्नः सूर्यः प्रचोदयादिति त्रिजपेत् ॥ सर्वत्रिकालं  
विष्णुपूजां ब्रह्मयज्ञं च कुर्यात् ( अथ भिक्षा ) विधुमे सन्नमुसले व्यंगारे भुक्तवर्ज  
ने । काले पराल्लेभूयिष्टे नित्यं भिक्षां यतिप्रचरोदित्युक्तकाले ॥ उदयमिति चत  
सृभिरादित्यमुपस्थाय तेनैक्यं ध्यात्वा ॥ आकृष्योनेति प्रदक्षिणां कृत्वा येते पंथान  
इति जप्त्वा ॥ यो सो विठरावाख्य आदित्ये पुरुषो तर्हृदि स्थितः । सो हं नाराय  
णो देव इति ध्यात्वा प्रणम्य तम् ॥ त्रिदण्डं दक्षिणोत्तं गेततः संधाय बाहुना ॥ पात्रं  
वामकरे क्षिप्त्वा प्रलेपयेद्दक्षिणोत्तं त्विति बौधायनोक्तदिशा त्रीं पंचसप्तवागृहान्  
गत्वा भवत्पूर्वां भिक्षां याचित्वा ॥ पूर्णमसि पूर्णमेभूया इत्यागत्य शुचिरन्नं प्रोक्ष्य ।  
ओं भूः स्वधानम इत्यादिव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिः सूर्यादिदेवेभ्यो भूतेभ्यश्च भूमौ  
क्षिप्त्वा भुक्त्वा प्रणावेन योऽष्टा प्राणायामान् कुर्यादिति संक्षेपः ( गौतमव्याख्या  
यां भृगुः ) यतिहस्ते जलं दत्त्वा भैक्ष्यं दद्यात् पुनर्जलम् । भैक्षं पर्वतमात्रं स्यात्तज्जलं  
सागरोपमम् ॥ अत्र सर्वत्र मूलं माधवा परार्कमदनरत्नस्मृत्यर्थं सारादौ ज्ञेयम् ( क  
रावः ) सकरात्रं वसेत्तग्रामे नगरे पंचरात्रकम् । वर्षाभ्योन्यत्र वर्षासु मासांस्तु चतु  
रो वसेत् ( जाबालश्रुतौ ) शून्यागारे देवगृहहृत्पाकुटीवलमीकटुक्षुलकुलाल  
शालाग्निहोत्रगृहनदीपुलिनगिरिकुहरनिर्भर स्थंडिलेऽवनि केतन इति ( सा  
हस्ये ) अष्टौ मासान्विहारः स्याद्यतीनां संयतात्मनाम् । सकत्र चतुरो मासान् वा  
र्यिकांश्च वसेत् पुनः ॥ अविमुक्तप्रविष्टानां विहारस्तु न विद्यते ( अत्रिः ) भिक्षा  
हं जपं शनानं ध्यानं शौचं सुरार्चनम् । कर्तव्यानि यदेतानि सर्वं यानृपदण्डवत् ॥



संचक्रंशुक्लवस्त्रं च स्त्रीकथां लौल्यमेव च । दिवास्वापंचयानंचयतीनां पतनानि  
यत् ॥ आसनं पात्रलोभप्रचसंचयः शिठयसंग्रहः । दिवास्वापो वृथा जलपोयते बंध  
कराणि यत् ( दक्षः ) नाध्येतव्यं न वस्तव्यं न श्रोतव्यं कथंचन । यतिपात्राणि मृदे  
गुदारवलांबुमयानि च ( मदनरत्ने अत्रिः ) पित्रर्थं कल्पितं पर्व मन्त्रं देवादिकारणा  
त् । वज्रजयेत्तादृशीं भिषां परवाधा करीन् तथा ( वृहस्पतिः ) नतीर्त्यवासी नित्यं  
स्यान्नोपवासपरो यतिः । न चाध्ययनशीलः स्यान्न व्याख्यानपरो भवेत् ॥ स तद्धे  
दार्यभिन्नपरम ( अत्रिः ) स्नानं सुरार्चनं ध्यानं प्राणायामो बलिस्तुतिः । भिषातनं  
जपः संध्या त्यागः कर्मफलस्य च ॥ स ते यतिधर्मा इत्यर्थः ॥ अन्येऽपि माधवमि  
ताक्षरादौ ज्ञेयाः ( यतिधर्मसमुच्चये ) न स्नानमाचरेद्भिषुः पुत्रादिति धने शुते ।  
न पितृमातृस्यंश्चुत्वा स्नात्वा शुद्ध्या तिसां वरः ( अथ यति संस्कारः । स्मृत्यर्थ  
सारे ) सर्वसंगतिवृत्तस्य ध्यानयोगरतस्य च । न तस्य दहनं कार्यं माशौचं नो  
दकं क्रिया ( तथा ) कुटीचकं तु प्रदहेत् पूरयेत्तु बहूदकम् । हंसे जले तु निक्षेप्यः  
परहंसं प्रपूरयेत् ॥ पालाशमूलेन दीतीरे न्यत्र वा गन्धपुठपालं कृतं शवं वाद्यघोषे  
रानीत्वा दण्डमात्रं व्याहृतिभिः स्नात्वा सप्तव्याहृतिभिः प्रोक्ष्य दक्षभानास्ती  
र्य नवघटे पंचरत्नोदकं क्षिप्त्वा नारायणाः परंब्रह्मेत्यभिमंज्य तेनैव संस्नाप्याष्टा  
क्षरेणा वस्त्रं गन्धं पुठपं धूपदीपादीन् दत्वा विष्णोर्हृदयं रक्षस्वेति शवं गर्ते निधा  
येदं विष्णुरिति दक्षिणा हस्ते दण्डं यस्य पारे इति सव्ये शिष्यं येन देवाः पवित्रेणो  
तिमुखे जलपवित्रं सावित्र्योदरे पात्रं भूमिः अश्वेति गुह्ये कमण्डलुं निधाय चित्तिः  
स्तुतिं गतिं दशाहोत्राभिर्मन्त्रयेदिति विश्वादर्शटीकायां स्मृत्यर्थसारे च ( बृहच्छ्रौ  
नकस्तु ) यतिं पुरुषसूक्तेन स्नापयित्वा वतंततः । प्रणावेनाष्टवारं तं प्रोक्षयेदथ स-  
र्वतः ॥ विष्णोर्हृदयं रक्षस्वेति यजुषा प्रणावेन च । गर्ते प्रेतं विनिक्षिप्य चेदं विष्णु  
र्विचक्रमे ॥ इति मंत्रेणादंडं तु दद्याद्दक्षिणा हस्तकोसूर्धानं भूभुवः स्वप्चेत्युक्त्वा शं  
खेन भेदयेत् ॥ गर्तं पुरुषसूक्तेन लवणो न प्रपूरयेत् । सृगालप्रवादिरक्षार्थं सम्यग् गर्तं  
प्रपूरयेदिति ॥ कुटीचकस्य तु दाहः कार्यः ॥ यथा सर्वं प्राग्वत् कृत्वा गिनं प्रज्वाल्य  
साग्नेर्दक्षिणा करेऽपावरो हेत्यवरोह्य निर्मथ्य वागर्तं चित्तिं कृत्वा गिननाग्निः समि

अत इत्यग्निदत्त्वासावित्र्याप्रणावेनवादहेतुः ॥ ततोऽष्टशतं प्रणावं नारायणाः परं ब्रह्मेति  
जप्त्वा साशिरः प्रणावदग्राह्या गायत्र्या तदस्मास्थो नितीर्थे सिप्त्वा स्नानात् शुचिः  
नास्यन्यदौर्ध्वदेहिकम् ॥ त्रिदशग्रहणादेव प्रेतत्वं नैव जायत इति उग्रानसः स्मृते  
एकादशे ह्निपार्वणांतदपि त्रिदंदिनः ॥ हंसपरमहंसादीनापार्वणादिकमपि न का  
र्यमिति शूलपाणिः (आह्वयितामणौ दत्तात्रेयः) एको द्विष्टं जलं पिंडमाशौचं प्रेत  
सत्क्रियासु ॥ न कुर्याद्धार्यिकादन्यद्वह्नीभूताय भिसवे ॥ प्रेतक्रिययैको द्विष्टुनि  
येधे सिद्धे पुनस्तदग्रहणमादिकपरम् ॥ तेन तत्पार्वणमेवं त्रिदंदिनां द्वादशे नाराय  
णार्वालिः ॥ तद्विधिरन्यश्च विशेषः प्रागुक्तः ॥ इत्यलंबहुना ॥ एवं निरूपितं मिदं ग  
हनंतु धर्मतत्त्वं विचार्य वचनैश्च नयैश्च सम्यक् । तद्दोषदृष्टिमपहाय विवेचनीयं  
विद्वद्भिरित्यविरतं प्रणातोऽस्मि ते यु ॥ १ ॥ मया सहायदिह गदितं मंदमतिना किमे  
तच्छक्यं वाध्यवसितुमपि स्वल्पमतिना । तदेवं किंचिद्भदितमिह विख्यातम  
हिमाप्रतापोऽयं सर्वो विकसिततुषिप्रचरणायोः ॥ २ ॥ यो भावतंत्रगणानां विक  
र्णधारः शास्त्रांतरेषु निखिलेष्वापि मर्मभेत्ता । दोषश्चमः किल कृतः कमलाकरेण  
प्रीतो मुनास्तु कृती बुधरा मकृष्णाः ॥ ३ ॥ श्रीभट्टरामे प्रवरसूरिसूनु श्रीभट्टनारा  
यणसूरिसूनुः ॥ श्रीरामकृष्णस्य सुतः कृती मन्व्यधान्निबन्धकमलाकराख्यः ॥ ४ ॥  
नाना निर्णयवत्त्वान्निर्णयसिन्धुः प्रोच्यतां विबुधाः । निर्णयसरोजवत्त्वान्निर्णय  
कमलाकरोऽप्यस्तु ॥ ५ ॥ वसुधैव कुटुम्बकमिति गतेऽनेन रपतिविक्रमतोऽथ याति री  
द्रे । तपसि शिवतिथौ समापितोऽयं रघुपतिपादसरोरुहेर्पितश्च ॥ जगति सकल  
विद्यां सिन्धुमुष्टिंधयानां परभरिणतिपरीक्षायुज्यते सज्जनानाम् । तदिह मनिबन्धे  
दूषणां भूषणां वायदि भवति विदग्धैस्तद्व्यवस्थं विमृश्यम् ॥

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारपारीण श्रीमद्रामेश्वरभट्टसूरिसूनु नारायणभट्टसूनु विद्वन्मुकुटहोरांकुर  
श्रीरामकृष्णभट्टात्मजदिनकरभट्टानुजकमलाकरभट्टकृते निर्णयसिन्धौ तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥

इस पुस्तक को पंडित रामबिहारी और पंडित रामेश्वर ने शुद्ध किया है ॥

मुंशीनवलकिशोर प्रेस लखनऊ में छपी अगस्त सन् १८८८ ई० ॥





**मार्कण्डेयपुराण, तर्जुमानागरी और उर्दू सफे १६६६ जुज़ १०६ क्रीमत ३॥**

जिसका उल्था श्रीबाबू देवनन्दनसिंह रईस खानदान राजशिवहर और जमींदार परगनात जिले तिरहुतवचम्पारनने कराया श्लोककेनीचे श्लोकके अनुसार भाषा टीका है और उर्दूटीका भी संयुक्तकर दोनों टीकाओंमें श्लोकवारअंक लगाकर भूषित किया है पैमाना ११+०<sup>१</sup>/<sub>४</sub> छपो सन् १८८४ ई० ॥

**दुर्गास्तोत्र मूलसफे २६४ जुज़ १६ वर्क ८ क्रीमत ॥ पुस्तक**

इसको क्रीमत पहले १) थी अब कम करदीगई जैसी कि लिखी है इसमें नीचेलिखेहुये स्तोत्र भी संयुक्त हैं कात्यायनी तंत्रोक्त प्रयोग विधि, शतचण्डी पिधान, कवच, कोलक, नवार्ण मंत्रविधि, रात्रि सूक्त, न्यासध्यानयुक्त तेरहों अध्याय, देवीसूक्त, उत्तरन्यास, सप्तशती रहस्यत्रय, और भी कई स्तोत्र संयुक्त हैं कागज बहुतमोटा गुन्दा अक्षर टैपके बहुतसुष्ट बहुतसुद्ध पैमाना ९+४<sup>१</sup>/<sub>४</sub> छपोहुई सन् १८८१ ई० पत्रानुमा है ॥

**दुर्गापाठ संस्कृत टीकासहित सफे १७६ जुज़ ११ क्रीमत ॥**

पैमाना १०+६ छपो सन् १८८१ ई० सनाभि है ॥

**श्रीविष्णुभागवत सफेबड़े २५१६ जुज़ १५९ वर्क २ क्रीमत ७ पुस्तक**

श्रीभरजीकी टीकासहित यह पुस्तक महाराजा टंगला की आज्ञानुसार धर्मभण्डार के निमित्त छापीगई थी बहुत मोटे अक्षर कि बालक और बूढ़भी पढ़सकें पत्थरका छापा और बहुतही शुद्धकीगई पत्रानुमा अर्थात् सनाभि मध्यमें मूल और ऊपर नीचे टीका है पैमाना १३+६ छपो सन् १८७६ ई० ॥

**तथा श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध सफे ६४४ जुज़ ४० वर्क २ क्री ० ४ पुस्तक**

इसके नव अलंकारों सनेत है अर्थात् उसोका यह दशमस्कन्ध है ॥

**तथा श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धभाषाटीकासहितसफे ८१६ जुज़ ५१ क्री ० ४**

इसका उल्था साधारण मनुष्योंके समझनेकेलिये ठेठव्रजकी बोलीमें है और सनाभि अर्थात् बीच में मूल और ऊपर नीचे अर्थ है श्लोकार्थ जाननेके निमित्त अंकभी लगादिये यहपुस्तक मुख्य करके कथा वांचने और पाठ करनेकेलियेभी बहुत उपयोगी है पैमाना ११+६ छपोहुई सन् १८८५ ई० छापा पत्थर कागज गुन्दा ॥

**अपराधभंजनस्तोत्र सफे ६ वर्क ३ क्रीमत ॥**

जिसके पाठहोमात्रसे मनुष्यके सब पाप दूरहोते हैं पैमाना ६+५<sup>१</sup>/<sub>४</sub> छपाहुआ सन् १८८४ ई० छापा मोटेअक्षर टैप ॥

**कायस्थकुलभास्कर सफे १०८ जुज़ ६ वर्क ६ क्रीमत ॥**

लक्ष्मीनारायण रचित जिसमें सर्वपरायों और अनेक प्रमाणोंसे कायस्थोंका चर्चयत्न प्रति पादन है पैमाना १०+६<sup>१</sup>/<sub>४</sub> छपोहुई सन् १८७७ ई० ॥



## कायस्थविनोद सफे १२ वर्क ६ क्रीमत-

भविष्यत्पुत्रादिपुराणांतर्गत कायस्थ जाति निर्णय है कागज़ चिकना सफेद पैमाना ११×९ छपी सन् १८८२ ई० ॥

## कर्मविपाकसंहिता सफे १४२ जुज़ ८ वर्क ७ क्रीमत ।

उमामहेश्वर सम्बाद जो ब्रह्मपुराण से ली गई है जिसमें पूर्वजन्म के पापोंसे जो मनुष्योंपर दुःख होते हैं उनका प्रायश्चित्त नक्षत्रोंके चरणोंसे है जिनसे मनुष्यों को बहुतकारके कल्याणप्राप्त होसकता है पैमाना १०+६ छपी सन् १८८४ ई० छापा टैप ॥

—\*—

## इश्रितहार

—\*—

माह मार्च सन् १८८६ ई० से सुमालिक मगरवी व शिमाली का बुकडिपो इलाहाबाद क्यूं बुक-डिपो से मतवा मुंशीनवलकिशोर मुकाम लखनऊ में आगया है इस बुकडिपो में मगरवी व शिमाली यूजकेशनल बुकडिपो के सिवाय और भी हर एक बिद्या की किताबें मौजूद हैं इन हर एक किताबों की खरीदारी जो कुल शर्त क्रीमत के सहित इस छापेखानेकी छपी हुई फ़ेहरिस्त में दर्ज हैं जो दरखास्त करनेपर हर एक चाहने वालों को बिला क्रीमत मिलसकती है जिन साहबों को इन किताबों का खरीद करना होवे इसे खरीद करें और फ़ेहरिस्त तलब करें ॥

द० मनेजर अवध अखबार  
लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज

—\*—